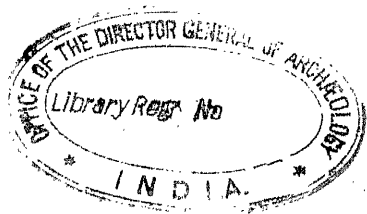
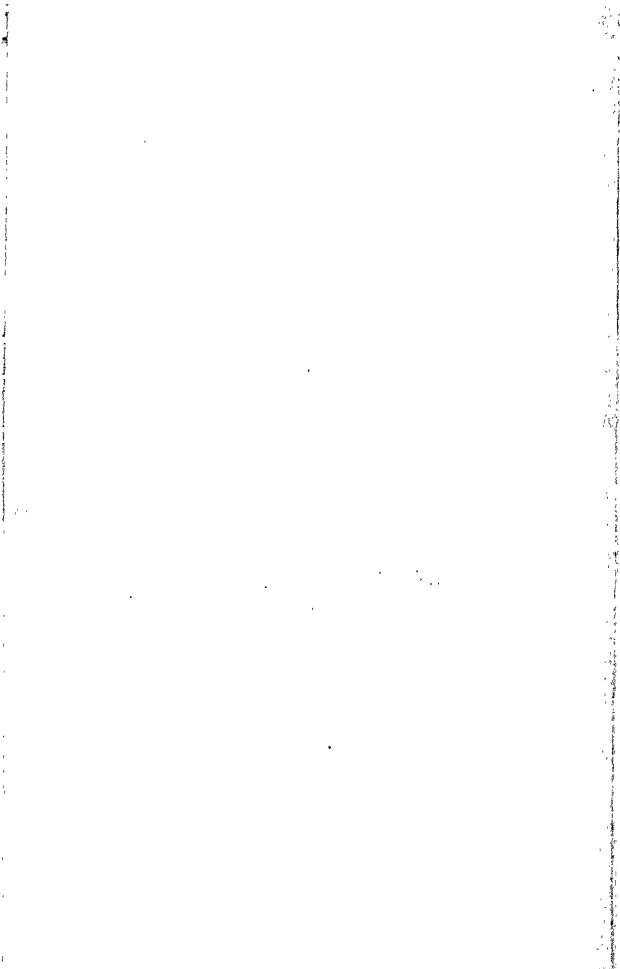


GOVERNMENT OF INDIA
ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA
ARCHÆOLOGICAL
LIBRARY

SERIES NO. 13471

No. 910/st2





NOT TO BE ISSUED

STRABONIS GEOGRAPHICA Vol. 2

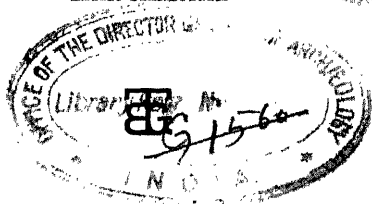
RECOGNOVIT

AUGUSTUS MEINEKE

13471

VOLUMEN SECUNDUM

EDITIO STEREOTYPA



LIPSIAE

IN AEDIBUS B. G. TEUBNERI

MDCCCXCIX

1899

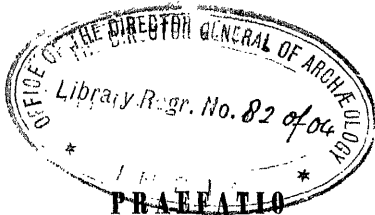
910
56

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No.....13471.....

Date.....14.2.1960.....

Call No.....910.....val (2)
Str.



1100

Nostrae lectionis a Krameriana in iis, quos secundum volumen Strabonis complectitur, libris haec est discrepantia :

397, 28. λέγομεν 398, 8. 9. διὸ δίκαιά μοι 31. μέρη
 399, 8. Λούλους 9. Σιβινούς 26. Γαμβρόλουι 400, 17.
 διεύχον 29. Ουάρον 401, 1. 2. Οὐκρομίρου 9. Καθύλκιον καὶ
 Ἀμφάνων 22. † τριακοσίων 402, 2. Οὐνδολικὸι † καὶ ἡ Βοίων
 5. Ἀλπίων 8. ἐπὶ τὰδε] Rectius ἐπίταδε 15. ἐξελασθεῖεν 31. 32.
 τοσαντάς 403, 13. Ταῦτα δὲ δικάως 16. καὶ ἡ 19. Βοίους] Ita ubi-
 que scripsi vel scribere volui pro Βοίους 404, 7. ἀναβάσα ὑπερπετής
 16. παρήκουσι 21. οὐδένα 21. 22. πεποιημένον 405, 28. Φοῖβον
 τε παλαιόν 30. Σωκράτης] Fort. add. ἔα 406, 11. [δὲ] ὀρθῶς
 19. Τρωάδι 25. τοὺς † μὴ ὀπισθεν 407, 25. 26. χρημάτων †
 ἐκτίμῃσιν 410, 10. ἀποθεν 411, 10. Παγγαίαν 11. ἄμμου,
 ἐκ δὲ 15. εἰ γάρ, αὐτὸ χρῆναι 412, 7. τὰ ὑπὸ] τὰ delet Spenge-
 lius 23. πρότερον 28. πλὴν ἢ φόρτον 413, 15. 16. κακο-
 τεχνίας εἰς πλεονεξίας 414, 9. ἐς 20. οὐδένα 415, 28. γενεᾷ
 19. [δὲ] ἐν 27. ἦν ἔξενξε Δαρεῖος] Haec suspectat Kramerus, fort.
 recte 416, 3. καὶ ἐπὶ σοφῶν ἕνα τελεία 4. εὐρέματα 7. οὔτε
 ἀληθέστατα 8. εὐρεμα 11. ὕστερον 17. πλάσματα 417, 27.
 τέσσαρας 418, 4. Δάοι 24. Μυσοῖς 27. ἐς 419, 2. εἴκοσι
 μυριάδας ἐκπέμπειν † στρατείας 24. εἴκοσι 420, 2. ἐννακίοιοι
 7. τεσσαράκοντα 422, 3. Φαναγορίαν 4. καὶ † πηλὸν εἶναι
 4. Νεοπτόλεμον — i τὸ μέγεθος 10. 25. τεσ-
 σάρων 423, 1. τοῦ 4. 5. σταδίων τεσσαρά-
 κοντα 16. καὶ ἄλλος ort. ἅμα 424, 2. αὐτῇ
 15. Παρισάδου, et sic etiam in sqq. 425, 11. εὐγαιον 14. εὐ-
 γαιος 17. στάδιοι περὶ πεντακίοιοι 19. Νυμφαῖον 31. ὅς om.
 426, 9. Φαναγορίαν 29. ἐννανισχίλων 427, 15. 16. † τριά-
 κοντα γούν ἀποδίδωσι 428, 11. καθίσταντο Spengelius 12.
 στάδιον δέκα 22. Διοφάντου, Μιθριδάτου στρατηγούντα 430,
 14. 15. ἐφ' ἐκάτερα δ' αὐτῆς, ἐπὶ μὲν τὰ Θράκῃα ἢ Ῥοδόπη, ὁμο-
 ρον ὑψηλὸν ὄρος 21. Παιτούς καὶ Τοινίους 431, 6. πολὺν]
 Recte Coraes πολλοὶ 8. ὑπερθεῖσι 18. Σαῖον 20. Νόαρος πλῆ-
 θει 433, 4. Φάριος. καὶ ἡ τῶν 8. Περιάμωνα 10. Δάλμιον
 17. μέσον 29. τὸ ἔθνος om. 434, 1. Αὐταριάται et hic et
 in sqq. 6. ὁ † Ῥιζαίων κόλπος 13. 14. Θουνάται] Rectius
 a*

fort. *Θουνᾶται* 435, 29. τὰ πελάγη ἀπὸ] Indicavi lacunam ante ἀπὸ. excidisse videtur *τεκμαιρόμενος* vel simile verbum 436, 11. *σὺ πού τι* 437, 23. 24. περὶ τὸν Αἴμον καὶ οἱ ὑπ' αὐτοῦ 26. δὲ ὑπὲρ 438, 2. Ὑβριᾶνες 26. ὅπου om. 439, 5. 6. *Σηλυβρία* 6. *Πολυνοβρία* 8. ἢ add. post αὐτῇ ib. ἐστὶ καὶ ἡ 30. προσεχὲς 440, 10. *Φαρνακίας* ib. πρότερον 29. πρότερον πλεῖσταντες [εἰς] τοὺς 441, 10. ὄρεσι Ἰλλυρικοῖς 12. ἀρξαμένων 442, 2. *Αἰκλος* 15. *Δελégια* 443, 4. γαίης † ἀλέους 21. δ' οὖν 444, 16. Ἐόρδων 449, 9. 10. *Δαμαστίω*, *Περισάδυνες* τε συνεστήσαντο 10. καὶ † Ἐγγελέους καὶ 11. *Ανγκησταί* 12. *τριπολίτις Πελαγονία* καὶ Ἐορδοί 14. Ἐγγελλοί 17. *Ανγκησταί* 19. Ἰρρα 21. *Νεοπτολέμω*] De Pyrrho Neoptolemi filio v. Vindic. p. 89. ubi adde schol. ad Euripidis Androm. 24. 26. *Ανγκηστὸν* 28. *Κερνύρας* 450, 1. *Ῥωμαίοις* 10. *τριπολίτις* 13. *Στύμβαρα· Κῦδρια* 451, 22. 23. *Σελλήεντος* . . . ἐν δὲ *Θεσπρωτοῖς* 452, 1. τε 15. ἐπιτετμημένως † τμάρους οἶον 17. *καταχρηστικῶς* [ως] καὶ 25. μὲν τοῖς 28. *Πελασγίας*] Malim *Θετταλίας* 29. *Θετταλίας* fort. del. ib. δὲ 453, 8. *Σκότουσαν* 28. κρατοῦντα. recte κρατοῦντα i. e. manu tenentem 20. 21. 31. *χαλκεῖον* 454, 6. ὑπέρκειται] Rectius esset καίται 7. ἐπὶ τὰ πρὸς] Quae sequitur decem literarum lacuna, in ea stenὰ scriptum fuisse, nescio a quo notatum memini 27. *γεῖᾱται*] λέγεται? 30. 31. *τινῶν*] Spengelius *δαινῶν* 455, 24. *λούση* 26. *παραλληλογραμμον* 456, 7. *Ἰδωνες*] Ὀδονες? 9. δὲ] Spengelius γὰρ 457, 16. ἐν δὲ δεξιᾷ τῇν Ὀσαν, ἐγγὺς om. 22. *Θράκης* 458, 12. 13. om. 20. *φασί* 23. *μεῖζονα* 459, 1. τῆς † *Πελλαίας* 8. *ὀνομάζουσι* 460, 2. *Αἰνέα* 461, 5. *κάλλιστον* † τῆς γῆς τῇ ὄψει κίδνεται ἀλλὰ τὸ τῆς πηγῆς τῷ Ἀξιῷ] Spengelius *κάλλιστον* τῇ ὄψει ἐπικίδνεται, ἀλλὰ τὸ τῆς Αἴης τῷ Ἀξιῷ 24. *Αἰνέαν* 462, 27. *Μηκρύβεργα* 31. *πέριξ* τῆς 464, 11. *ἀγαθίδες* 14. *χρύσεια* 15. *ἀργύρεα* 465, 25. *ἀγαθίδας* 466, 25. καὶ [γὰρ] αὐτοὺς Spengelius 466, 32. *Πελαγόνες* 467, 28. *Ἰσμαρα*] Imo Ἰσμαρα 468, 11. *εἰκοσι* 15. *Ὀρθαγορία* 17. *χαράκωμα* 18. *ἀποθεν* 19. *χαράκωματος* 469, 25. *εὐρόνοτον*] *λιβόνοτον*? 470, 9. Ἐλεοῦς 19. *βάλλει*] Corrige operarum errorem *ἐκ βάλλει* pro *ἐκβάλλει* 22. 23. *Ανσιμαχία* 24. Ἐλεοῦς 26. Ἐλεοῦντα 472, 17. *μέμηλε* 26—32 om. 473, 5. πάντα] πάντα τὰ Spengelius 6. μέρος † τῆς *Μακεδονίας* ἀποδάσκειν 474, 3. [Τῆς] Ἑλλάδος μὲν οὖν 5. *τεσσάρων* 7. *Ἰωνες*] Corr. Ἰωνες 17. μὲν εἶναι] μείναι? 18. *φησὶν ὁ Θουκυδίδης*] Haec fort. delenda 21. *ἐτεροεθνοῦς* 29. *Αἰολικοῦ ἔθνους*] V. Heyne Op. Ac. 2 p. 7. 475, 9. δ' ἐτι 11. *τοιαῦτα* 12. 13. *δὴ ἰδίᾳ λαβόντες* 18. γῆν ἀρχὴν ib. *θάλασσαν* 26. δὲ ταῦτα δύο 28. ἐκτὸς † *Πυλῶν* μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ καὶ τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ *Θετταλικόν*. ἐστὶ δὲ 476, 14. δ' cm. 16. τῇν μὲν *Βοιωτίαν*] τῇν μὲν [*Ἀττικὴν καὶ*] *Βοιωτίαν*? Vidit etiam Spengelius. cf. Vindic. p. XII.

477, 16. αὐ om. 30. ἦ om. 478, 12. καὶ om. 16. τέρμοσιν
 479, 7. † πόλιν ib. * τὴν δὲ παρ' 20. σχεδὸν δὲ] Add. videtur
 τι 23. ὀνομάζει ib. δεῖ om. 31. προσκτις[θεισῶν] 481, 14.
 τῇ † ἐπιθαλασσίῳ 15. Βοιωτῶα 19. 20. ἐκεῖ — στρατεῖται ante
 τὴν ἄγετ' ἐξ 21. δὲ 24. ἡ Ἀθηναῖα om. 31. ἄνδρα, φήσας,
 * ἄνδρα Μούλιον 482, 4. καὶ add. ante Κραννώνιοι 20. καὶ
 περὶ] καὶ τὸ περὶ? 21. οὖν] Fort. delendum 25. αἰοδῆς· φησὶ γὰρ
 Οὐκαλλήθεν ἴοντα παρ' Εὐρύτου Οὐκαλλῆος. εἰ μὲν γὰρ ἦν Θετα-
 λικῇ 483, 1. δὲ τῆς τοῦ Πηνειοῦ καὶ τοῦ Σελλήεντος] Correxii
 Ernestus Curtius, nisi quod καὶ τῆς τοῦ Σ. scripsit. quod sequitur ἐκ-
 βολῆς, idem recte scripsit ἐμβολῆς 32. corr. ἐφ' 484, 6. 13. τέσ-
 σαρα et τέσσαρας 485, 2. Αἰσχύλος] Ἀρχίλοχος? 17. ἐνέμοντο
 πολιτείαν 486, 4. ἐχόμενον — Λαμπείας] Haec recte delere videtur
 Curtius 487, 4. Πάροιο] Scribendum videtur Πιέροιο 10. Λέπρεον
 ut in sqq. 21. τῷ ἐγγυτάτῳ 22. ἐστὶ 488, 12. Γυνθίου 13.
 τὸν τς Κελάδοντα 18 et 26. Ἀλφειονίας] Scripsi Ἀλφειωνίας.
 praestat fortasse Ἀλφειῶας 24. ἀνθέων ὥς τὸ 489, 7. Φέλλωνο
 10. ὁ om. 12. ἐκ τῶν ἐπῶν τῶν Ὀμήρου τεκμαίροιο 14. καὶ
 Ἀρκαδικός] Haec fort. transponenda 10. post Λεπρεατικός 21. ἀπα-
 τηθεῖσαν 490, 1. πολεῖδια] Quod revocandum 24. * δ' * et hypo-
 stigma post διήγησιν. delenda potius verba τὸ δ' ἀπέχεσθαι προσήκε
 μᾶλλον 491, 30. μὲν] Delendum videtur ib. Σωτάδῃ 492, 2.
 πορεύεσθαι 29. lacunam om. 493, 22. Μινυήιον] Ἐλινυήιον?
 30. Ὑπαισία 494, 4. ἐπέδειξαν 7. καὶ τάφος· καὶ Ἀχαιοὶ εἰσὶ
 δὲ] καὶ τάφος καὶ αἱ Χαιαί· εἰσὶ δέ? 17. Παδινῇ 19. λιγεῖ ib.
 αἰοδῆς, ἐρατῶν ὕμνους 21. Παδινῇ 495, 11. Κελάδοντι 23.
 Κυπαρισσεῦσι 496, 1. Ἐρανα] Rectius videtur Ἐρανα 2. καὶ ἡ
 ἄκρα om. 30. μὲν] Delendum videtur 497, 3. φυσικῶς] Hoc
 abesse malim 17. 18. ὁμωνύμως μὲν οὖν 24. 25. Πτελεάσιμον
 28. Ἠλείας 30. οἱ δὲ πολίδιον (sive potius πολεῖδιον) om.
 498, 22. δύσετό 501, 17. ὑπῆρχε 504, 9. εὐρεμα] Quod for-
 tasse revocandum 22. οὕτε 505, 16. Λέπρεον 19. ὅσας δ' 27.
 διὰ om. 30. πολλὰ † καὶ νομίζουσιν 506, 7. Πίσαν et sic in sqq.
 9. ὁρῶν 25. post φησὶ verba in margine posita 26. τεσσαρά-
 κοντα 31. Ἐνισέα] Scripsi Ἐλισέα, at debebam Ἐλιπέα. Hesychius
 Ἐλιπεύς· ὁ Ἐνιπεύς ποταμός. Quod confirmat titulus Thessalicus edi-
 tus ab Ussingo Inscr. gr. 2, 7. ἐκ τοῦ Εὐρωποῦ ἐν τὸν Ἐλιπῇ, ἀπὸ
 τοῦ Ἐλιπέος ἐν τὸ νέμος. Itaque Ἐλιπεύς pro Ἐνιπεύς dicebatur, ut
 λίτρον pro νίτρον, et alia. Hinc corrigenda quae dixi in Vind. Strab.
 p. 111 sq. 507, 3. Φηραῖαν ib. post ἰόντων verba in margine
 posita, quorum partem (inde ab ὑπέρεκται) suspectavit Kramerus in
 zotis 5. ἐξηλείφθη 508, 10. † Ἀχαιοὶ 510, 8. καὶ ἡ Κυπα-
 ρισσία add. post Κορυφάσιον 14. καὶ pro ἐπὶ 16. προσκειμένη
 511, 8. Κιναίδιον 10. Βαίτυλος 18. Θαλάμους 20. ἀγόμε-
 νος 22. τῆς add. ante Ἀθηναῖς 23. καὶ et 25. Τράχιον sine aste-
 risis; non videntur haec Strabonis esse 512, 19. Ἐρανα] Malim

**Ἐραυνα* 513, 17. ἀμφοῖν pro κρατῶν 514, 11. 12. ἐλθὼν ἐξ Ἐρινεῶ om. 515, 31. κατὰ τούτου] Volebam καὶ τούτου cum Corae 516, 8. Ἀμαθοῦς 9. Γύδιον ut in seqq. 26. τὸν [Θοῤ᾽]κα, Scribendum videtur κατὰ τὸν [Θόρνα]κα 28 — 517, 7. non videntur Strabonis esse 517, 13. post προσηγορεύθησαν sequuntur ea quae ego in margine posui 24. 25. πολε . . . γὰρ 25. Φεραία δ . . . ἀπὸ ἐντὸς] Volebam ἐντὸς. V. Vind. Strab. p. 115. ubi recte probavi Φαραία, pro quo per errorem Φάριδι editum est. ibidem πολεμίους conieci, non πολέμους 520, 3. ἀποδίδοται 6. ἐμβαλλούσης 19. γαίης 29. πρόσω sine aster. 29. 30. κἀθηται 521, 4. τῶν [Λεπερα]ῶν? ib. Μεσσαίων] Μανιστίων? 8. τῶν τε 522, 12. δοκεῖ . . . πίπτειν 523, 9. τεσσαράκοντα 27. Ἀσίνης sine ast. 524, 2. Σαρωνικόν. καλεῖται δὲ πᾶς 11. ἀλλὰ νῦν τὰ μὲν 15. Ἀχαϊκόν 25. Ἀχαικόν om. 525, 25. 26. Ἀργος ἄνδρον θεοὶ δ' αὐτὸν θέσαν Ἀργος ἄνδρον] Pro θεοὶ δ' αὐτὸν scripsi ut par erat ἐὼν Δανααί. at Strabo nonnisi priora Ἀργος ἄνδρον apposuisse videtur. Δαναοὶ error est typographicus 29. δὴ 526, 8. δέχονται κατὰ τὴν συναλοιφήν 9. ἐλέγχιστον] Fort. errore operarum, quamquam fuerint qui ita scriberent 16. ὄρνις 28. χωρίῳ μὲν κεῖσθαι 20. om. parentheses signa, quibus quae inclusi verba fortasse ne sunt quidem Strabonis 527, 1. εἰπεῖν] Fort. ἐκπεσεῖν 4. † ἐν εὐπορίᾳ 11. Πάλινθος 29. ἡγεμονίδας οὐσας 528, 9. Λακωνικήν 15. συνέβη om. 529, 4. τῆς Ναυπλίας 7. Μίδεια pro Μίδεια 8. Πρόσυμμα [καὶ] αὕτη 11. οἱ δὲ ἐ[ξ Ἐρμιόνης] εἰς 12. ἔστιν αὕτη 14. ὅπου om. 23. αὐδ'? 25. καὶ sine ast. 32. Νισαίαν 530, 6. αὕτη 531, 2. on] Fort. [πλατύτερον] 3. ἢ ante Ἐπίδανρος abesse malim ib. φησὶ γὰρ 23. Τροιζήνι 25. τοῦ om. 532, 4. ὑπ' αὐτόν 534, 5. γοαῖδίου 26. Τροικονόφω 535, 18. ὦν om. 20. lacunae signa om. 27. τὸν ἐπὶ 27. εἰς Κόρινθον add. post πλοῦν 28. τὸν φόρτον· αὐτόθι καὶ περὶ † τε τῶν ἐκκοιμιζομένων 536, 11. Διός om. 537, 23. 24. φρέατα sine ast. An φλεβία? 31. ὑποπεσοῦσαν] Scripsi ὑποῦσαν cum Plethone, nisi praestat υποπεπτάσαν 32. λευκῷ λίθῳ] Fort. λευκοῦ λίθου 538, 5. Βοιωτίδος 17. τῆς περὶ τὸ 539, 15. λῳίον 30. ἐγένοντο ib. ἐν ἄλλοις] Fort. εἰς ἄλλους 540, 14. ἀφίεται Spengelius 541, 3. 4. κατορθομένων 11. πάντες] An πα[ί]ζοντες? 15. Εὐφρόνιος 24. Σικνωτῶν 26. Τανάγραν 542, 2. Αἰγιαλοῦς ib. ἀνφελίσθαι 3. σταδίου 4. Δήμητρος 27. Τρικόρουθον 543, 1. φυλάς] Fort. βίους 2. βίους] Fort. φυλάς 544, 4. συνοῦσαι 6. οὐ συνελθούσης] Curtius Pelop. I p. 451. οὐ συνεστάσης, quo sensu οὐκ ἐτι συνεστάσης requirerem. nil mutandum videtur 9. δ 30. ἐστήκει] Fort. ἔστηκεν vel ἐστήκοι 545, 1. θαλάσσης 12. 13. Ἡσιόδος — Θετταλικῆς in marginem reicienda videntur 546, 2. post βουλομένην add. quae in margine posui 10. παρ' ὃν [Παῖρος] ποταμὸς ib. μέγας * Μέλας] Μέλας Curtius Pelop. I p. 450. 547, 22.

πόλιν pro χώραν 548, 7. post Φαριεῖς quae in marginem reieci, in
 quibus Βούραν [κα]θ' scribendum videtur 549, 3. Φαράται 7. τριά-
 κοντα om. 30. αὐτῇ 550, 17. πεντήκοντα] πέντε Müllerus Dor.
 Π p. 439. 32. περὶ Στύμφαλον 551, 13. εἰς Θανυμακοὺς om.
 14. καὶ τὸν Πηνειὸν om. 552, 7. 8. ὥστε — Κορινθίων post Δο-
 κωῶν 10. 11. λεκτέον om. 13. ἐπὶ] Fort. καὶ 18. σφάδρα pro
 οὐτως 21. ποιοῦντα τὸν κόλπον τὸν om. 22. οὐδ' ἂν om. 25.
 ὅπον τὸ pro εἰ μὴ τὸ 26. ἐποίει om. 27. τὰ περὶ . . . τὸν
 μυχὸν 553, 9. δὲ om. 11. ἡ Ἀττικὴ om. 28. lacuna pro πάλ-
 λιν ἀπὸ τῆς 30. Ἀττικῆς] Fort. ἀκτῆς 554, 4. ὃν recte post
 ὑψηλὸν add. Coraes 5. ληξιμένων 9. Μινῶα et sic constanter
 10. Νισαία 555, 3. τεσσάρων 3. Νίσος 12. νεῖμας . . . α 13.
 νέμων 26. παροξυνάντων 32. ante ἐποίησαν fort. excedit καλεῖ-
 σθαι, quod in similibus locis addere solet Strabo 556, 15. Νισαίαν
 21. 22. καθάπερ — πνοάς non videntur Strabonis esse 25. 26.
 Κυκχεῖα 31. Δήμητρην 557, 8. 9. Βάκαρος — καλούμενος non
 videntur Strabonis esse. postrema ὁ νῦν — καλούμενος suspectavit etiam
 Kramerus in addendis 558, 15. Ἐλευσιν 30. Ψυτταλία 559,
 1. Ψυτταλία 6. στομίω] ἰσθμίω? 16. τὸ] τό τε? 560, 1. 2.
 περὶ τῆς 2. ἐκεῖ τι 5. αὐτοῖς [ἔδρυσιν] καταλαβόντων? 6.
 ἡρώων [ἐστὶν ἱερὸν]? 26. καὶ εἰς τὸ 27. Θησεῖον . . . υς ἔχει
 27. 28. καὶ τὸ Διονυσιακόν, [καὶ δὴ καὶ τὸ] Ὀλύμπιον? 31.
 πλείστα om. 561, 4. Ἀττικὴν 12. φιλότιμον] Libri φιλόδημον.
 an φιλεῖδημον? 18. [ἀλλ'] εἰσὶ? 28. προσθήσειν, ὅτι 562, 5.
 οἱ om. 563, 8. Θορεῖς 12. Θορέας 13. Φάβρα] an Φάγρα?
 ib. Ἐλεοῦσσα 19. φρίζουσι 24. 25. Πρασία 564, 5. τετραορί-
 στῶ 565, 6. Κηφισσοῖς] Debebam Κηφισσοῖς 22. [κείμενα . . .] η
 πρὸς 24. ἡ Ἀττικὴ σὺν τῇ om. 27. 28. Πηγὰς 28. ὄρων pro
 τόπων 29. ἀπὸ τοῦ pro τῇν ἀπὸ 566, 20. χρησαμένους ἐπι[με-
 λεῖ] μηδὲ? 21. τί om. 569, 14. αἱ om. ib. ἀνάλογον] Hoc re-
 vocandum 570, 9. σύριγξ 20. θαλάσσης 25. Σιγηλοῦ] Imo Σι-
 γήλου 30. Ἀμφιάρειον 571, 1. τὴν ἐκ om. ib. post Χαλκίδα
 add. καλοῦσι δὲ Βοιωτιακῶς Μυκαληττόν, quod Μονυκαληττόν scri-
 bendum 3. Μυκαληττόν 23. ἀπionti 24. Τάναγρα κ[ώμη] ἡ δὲ
 Φαραλ κώμη] ἐν δεξιᾷ? 572, 14—17. δάκρυα — πολλὸν ἑλάττους]
 Haec fortasse post Ὀρόβιαι uae sequuntur 17. κείται
 — Ὀρόβιαι delenda 32. πόλις τῇ] Μεγαρικῇ?
 573, 1. πρόσχωρος το ὑπῆρξε 576, 10. οὐτε
 24. 25. τόπω[ν σημῆναι]ντ' ἂν ὥστε τῶ] λόγῳ 27. ἀξί[ων
 μνήμης καὶ τῶν μῆ:] χαλεπὸν [δ'] ἐν 577, 2. περὶ ὠμ[ε]θα τὰς
 ἀρχὰς λαβεῖν] ἐνταῦθα 4. 5. χρήσιμον ἡ [ληφθῆν ἐξ] ἄλλων]
 ἡμῶν 20. post ἔειπ' add. εἰσὶ [δὲ] καὶ — τοῦτ' , quae in margine po-
 sui 578, 19. αὐτὸς ἐ τοῦ πατρὸς 20. μ τερον
 579, 1. εἰκοσι 21. θέαν 580, 5. [ὑφ' ἐτέρ]ων 6 et 10.
 Ὠνάλοι 581, 10. Κορωνείας] Libri Κορωνίας. Fort. Κορωνίας
 ib. ἐπιλαῖω] Operarum error pro ἐπὶ λαῖω. λαῖον loci nomen fuisse

videtur prope Coroneam. Cf. Hippocrates Epid. III p. 134 et 142 ed. Liutr. ἐπὶ τοῦ Ἀηῖον, de quo dixi nuper in Commentatione de Hippocratis Epidemiis in Relatt. menstr. Acad. Berol. 1852. 25. Βοιωτίας pro Μεγαρίδος ib. pro αἰ lacuna 582, 8. πολεῖδιον] Hoc revocandum 23. [κι]νηθεῖς 583, 2. 6. Πτώον 4. Πτώον 17. οὔτε 21. τέκτονος 585, 12. 13. πολυχρηματίσαντας 27. οὔτε μὴ om. 586, 3. ὦν pro ὅν 26. καὶ διάγωσιν 29. πλείστην om. 587, 12. καθήκειν 15. Ἀντίκυρα 588, 5. πᾶσα om. 589, 12. Πηληϊαδῶ ἀνακτος 590, 7. ὁ per errorem irrepsit ib. Κίρφι 591, 1. ἐτιμήθη om. 592, 31. ἱερὸν χρημάτων δὲ χάριν τῶν ἀναθημάτων 593, 22. καταρῶχθαι 594, 16. ἀνάγκουσιν 19. ἐπιπαιωνισμόν 21. ὡς καὶ τὸ λαμβίνειν add. post κακισμοῖς 23. εἰς add. ante ἐσχάτους 595, 27. παιωνισμόν 596, 11. Ἀλκμαίονος 13. Ἐξ ἀρχῆς γὰρ 14. ὀπισθεν ὁ Μάραθος 23. Θουκυδίδης δ' ἐν Μεγάρους φησὶ add. post μυθεύονσι 597, 7. οἱ δ' ἐνοικοῦντες Τραχίνοι λέγονται] Haec fort. delenda 21. ἐκείνης 598, 11. Πανόπην Γλήχωνα 18. post Σκύρῳ add. quae nos in margine posuimus 599, 13. κατέληξεν 18. τοῦσδε ποτὲ φθ. 19. 20. Δοκρῶν κεύθει ὁμῶς Ὀπόεις 600, 16. εἰκοσι 601, 7. οἰκεῖται, [ἀλλὰ νῦν εὐήροτον] τι πεδίον 8. καλοῦσιν οὕτως 9. 10. [αἰ Λύγεια, ὦν τὴν χώ]ραν 11. 16. σῆγμα 14. ἀγνωῶν . . . Δάπην] Excidisse videtur οὐκ εὖ. Ceterum vide ne iniuria erroris accuset Strabo (si tamen haec Strabonis sunt) Hellenicum; Δάπη enim dici potuit quae aliis Νάπη, ut Ἐλιπεύς dicebatur Thessalis, qui aliis Ἐνιπεύς. vide supra p. V. 27. ἀλλ' οὔποτε ἄλλων 604, 10. Ἀντίκυραν 29. ἀπαντα τελευτᾷ πᾶσι 605, 32. ἔφα 607, 5. καὶ οἱ [Θεταλιῶται] ἐφεξῆς Bultmannus Mythol. vol. 2 p. 277. 608, 4. post στρατείας add. λαῖον δ' ἐσχατιὴν Δολόπεσιν ἀνάσσω 5. αὐτῷ om. 6. post μόνον add. ὀλίγων ἐστὶν 12. γὰρ om. οἱ μὲν om. nec necessaria sunt 22. ὅταν οὕτως om. 29. Θετίδιον 30. Θετιδίου 610, 17. ἐντεῦθεν δὲ 21. συνώκισαν Φαρσάλιοι] Ita haec suppleverunt critici; non minus recte possis συνώκισεν Φίλιππος 611, 2. Τραχίνα] Τραχινίαν? 13. Δαμίαν 613, 3. πρὸς ἔω δὲ om. 18. τὴν Οἰταίαν om. 22. θαλάσσης 25. μεσογείῳ 614, 25. Φυλλαίου 615, 8. ἐννεήκοντα 9. εἰκοσι 18. Νηλίας et 20. Νηλίαν 616, 10. Μεθώνη 617, 2. καὶ τῆς Δευκαλλίας] Haec delenda videntur 3. Ἱεραπολιτικῆς] Hoc delendum videtur 5. λιθίας, ὅφ' ἧς 618, 6. μυθεῖσθαι sine ast. 10. 11. ὀνούριον 21. ἄλλοι om. 619, 4. εἰκοσιν 10. Κερκάρων 620, 5. λευκόγαλον 14. post ἐκείνους add. εἰς τὴν ἐν τῇ μεσογαίᾳ ποταμίαν 621, 13. πεδίον νῦν] Cod. A. πεδίον ἐστὶν ὁ νῦν. Fort. igitur πεδίον ἔτι νῦν 18. 19. καὶ [ἡ] ἐν Συρίᾳ 21. καὶ — Λάρισα] Haec fort. delenda 29. καὶ Ὀδησσοῦ om. 30. Ὀλοσσῶν 622, 10. ἐπειληφότας] Fort. ἐπειληχότας 11. ὑπὸ] Fort. [οἱ] ὑπὸ 11. 12. Περραιβικαί] Fort. Περραιβικοί 623, 11. τοιοῦτον 624, 5. δὲ ἰδίους] Fort. Διδύμοις 7. κολωνοῖς] Fort. Κόρωνις 29. καὶ om. 626, 13. Ἐπειδὴ

ἡ Εὐβοία 627, 15. τὸν om. 20. Αἰκλον 24. Περιάδα 25. ἐν
 φ] Fort. ἐνθα 26. καὶ add. ante τοῦ 628, 24. πλησίον om.
 28. πολειδίον] Quod revocandum 629, 6. τὸν πίνον 8. Μα-
 λικῶ 24. Αἰκλός 630, 16. 17. ὥστερ — τάργυρεϊα om. 23.
 Εὐβοῖδα] Imo Εὐβοῖδα ib. καμπήν] Fort. κάμπτων 631, 1.
 post Ἐρετρια add. ἐν δὲ τῇ Ἐρετρικῇ πόλει ἦν Ταμύναι, quae cum
 πλησίον τοῦ πορθμοῦ coniuncta (in libris haec leguntur post αὐτὸν 3.)
 post κευαμώδηται 19. transponenda esse vidit Kr. in notis 3. αὐ-
 τὸν] Fort. ἐνιαυτὸν 19—21. ἐν δὲ — πορθμοῦ] De his vide ad 1.
 632, 1. ὅς γε καὶ 4 et 5. lacunas om. 5. ὥστε τῷ 6. δρᾶν]
 Corrige δρᾶν 27. οὐδὲν 32. lacuna om. 633, 10. Ἄβαντες pro
 ἀποβαίνοντες 634, 10. Λαμίαν 21. Παλαιρός 636, 31. Γαρ-
 γάσσον 637, 13. τηλεφανοῦς· ἀλλὰ κατ' 24. Ἀλκμαιωνίδα
 638, 26. ποιεῖσθαι 642, 1. Ταφιοῦς 10. Κεφαλλήνες, καὶ [οἱ
 μὲν] ὑπ' Ὀδυσσεῖ 26. Αἰνος add. post αὐτῇ 644, 5—7. μέμνη-
 ται — ἐθέλων] Haec fort. ex lib. 12 p. 549 addita sunt 11. ἔστιν
 ὁ κύκλος 15. τριακόσιοι 22. πλείους εἰσὶ 23. καὶ add. ante
 πρὸ 645, 9. βούπρωρος 30. Ταφιοῦς 646, 14. 15. Κριθωτὴ
 15. αἶ om. 16. ἐνικῶς λεγομένη add. post κόλπον 647, 4. οὐχ
 ante οὕτω om. 21. Λυσισμαχία, ut in sqq. 649, 15. ἐπιμεῖναι
 25. Ἀλκμαιωνα hic et in sqq. 653, 16. † λέγων post Ἐπειῶν 19.
 πιστὸν om. 24. ἀπελθόντος 654, 12. lac. signa om. Excidit
 fort. νέμειν 656, 25. καὶ — ἐμπλέκεσθαι om. 658, 3. γένηται
 659, 22. Ἀγδιστιν] Ἀγγδιστιν C. Keilius 24. Σικυληήν 24.
 25. καὶ Κυβήβην om. 660, 10. διὰ τε Ὀμηρον 11—13 ἄς ἐν
 — μητρὸς om. 13. pro μητρὸς pone μητρὸς] 14. post εὐρήματα
 dele parenttheseos notam 29. Παλημῆδη 30. οὐ σὺν] Fort. θύσαν
 ib. καμᾶν, ὅς] Fort. κοιλᾶν ὅς 661, 24. 25. Κοτύτια 28
 σεμνὰ Κότυς] V. Hermannum Aeschyl. 31. δακτυλόδεικτον 662,
 22. δάσσαν] Fort. ἀράσσαν, ut sit paroemiacus 663, 4. εὐροι om.
 9. ὄρειαι ib. ἐγάζοντο 665, 4. Κορυβάντιον 10. ἡἴδειοι
 667, 4. αὐτῇ 25. ὑπὸ τὸ μέγεθος] Fort. ὃ ὅπου ἔστι μέγιστον
 668, 5. Λυκίων 669, 9. Βοῖον 23. 27. 30. Λύκτον 670, 5.
 ὁμώνυμος] Malim ὁμωνύμως 671, 2. Ζεὺς om. 673, 14. λόγῳ·
 † ἄθλων 15. φησὶν 674, 21. 22. καὶ Ὀλίσσην 675, 14. ποιη-
 τῆς] Fort. Νέστωρ 21. [οὐτε] κατὰ τὴν στρατείαν — ἐκείθεν add.
 post αὐτῷ 676, 7. † ἐν 8. ἀνδρεῖα συσσίτια, ὅπως 677, 8.
 Κρῆς 19. malim Κισσοῦ 680, 11. lac. signa om. 26. ἀλαχρόν
 post τυχεῖν 681, 18. Θήρα 682, 18. ἐπιβαίνειν 27. δ' οὐν
 πεντεκαίδεκα om. 683, 6. κάμιον] Quod revocandum 14. ἡ
 με] Fort. οὐ με 15. δειλὴ ἡ] Fort. ἡ δειλῇ 30. 31. Πήνια] Imo
 Πήνεια, ut monuit Lobeckius ib. τετρασι] Quod fortasse cupidius
 reieci quam debebam 684, 6. 7. Κορησίαι hic et in sqq. 685, 3.
 μῆκύνουσι — συλλαβὴν in parenth. 686, 2. Λερία 12. post Λερός
 add. quae nos in margine posuimus 689, 12. πλησιάζοντα] Fort.
 ἐπιπολάζοντα 690, 16. ἐς 691, 2. καὶ om. 25. ὑπέρκεινται

693, 12. ἐλάσσων 694, 20. ὧ ante ὄνομα add. ib. Ἄκρα
 695, 2. Φαναγορία et sic constanter 24. Τορεάται 696, 17.
 ῥένας 697, 13. Ζυγίων 24. τοῦ] Malim τῷ, vel τῷ τοῦ 29
 μέγαν] λιμένα? 699, 6. οὔτω δεῖ δέξασθαι post δρόμος 7. 700,
 3. πολλήν τε 6. 7. ἐπεκόμιζον 14. 15. κακῶθεισης — Εὐριπί-
 δης] Haec fort. delenda 701, 4. περὶ δὲ τὴν Διοσκουριάδα ῥεῖ ὁ
 Χάρης ποταμός add. post Κολχίδος 14. δὲ om. 21. 22. θανμα-
 στοῖς, [α] καὶ τοὺς φαρμάκοις τετρωμένους 26. μὲν om. nec neces-
 sarium est 29. καὶ δὴ καὶ ἦ γε] Corrige operarum errorem δὴ καὶ
 ib. δὴ κ' ἦ γε operarum error pro δὴ ἦ γε ib. Ἰβηρία * καὶ * οἰκεῖ-
 ταί 702, 10. Ἀράγωνα 14. ἄλλους om. 29. γενόμενος 703,
 4. ἐπ' αὐτῷ 24. ἀγχιστεῖαν] Fort. add. αἰ 704, 16. προπί-
 πτουσα? 22. ἐπιγελῶντα] Fort. ἐπίπεδα ὄντα 705, 2. ἀλλὰ τὰ-
 γαθὰ ἄσπαρτα 3. ἅπαντα 5. γοῦν 11. ἐκείνῳ 12. δὲ pro δ'
 αἰ 13. δὲ om. 27. στρατιάς 28. δισμυροὺς 706, 13. εἰκοσι
 707, 4. καὶ add. ante τὸ 708, 28. τῷ om. 710, 1. 2. θρυ-
 ληθέντα + καὶ ὁμολόγηται 5. ἐῶαν 7. καὶ ast. incl. 711, 12.
 Χαιανοῖται 18. lac. om. 21. ἔστειλε 712, 24. προσβόρους
 26. πρότερον] πορρωτέρω Hermannus ad Aeschylum vol. II p. 163.
 30. ἀκριβῶς 713, 8. μήτε om. 8. 9. παρὰ γε εἰδόντων, † σκα-
 ποῦντες δ' αὐτὸ δὲ μόνον τοῦτο, ὅτι 714, 22. τετρακοσίους. καὶ
 † διὰ τὸ μὲν εἶδος τῆς εὐδαιμονίας σημεῖα ἡγοῦνται ἢ μὲν γὰρ
 715, 5. καὶ pro ἀλλ', quod nunc revocaverim, deleta cum Corae par-
 ticula μὲν 716, 1. οὖν add. ante συνήγον 6. προσφέρεται 14.
 προσέθεσαν * καὶ * τοῦτω 717, 6. 7. ἡλιαζόμενοι· ἄλλως δ' ἄλλοι
 13. ἀρξάμενον 718, 2. Δάαι 720, 2. ἅμα τε] Malim aut
 ἅμα sine τε aut τε ἅμα 4. ὦν 721, 8. ἦ add. ante δλαιτα 10.
 11. σκαιὸς δὲ 722, 8. 9. δισχίλιοι δισμύριοι] Transposuit etiam
 Spengelius 723, 14. † ἀλλήλοις 724, 20. διαρρεῖται· ποτίζουσι
 δ' αὐτὰ] Scribendum διαρρεῖται ποτίζουσιν αὐτὰ 725, 1. Ἀχαῖα]
 Corruptum videtur 19. Ἰσάμου 21. Πατταληνὴν 28. 29. ἐνβάλλ-
 λων] Corrigit ἐμβάλλων. malim εἰσβάλλων 29. Δάραψα 30. Εὐ-
 κρατιδίᾳ 726, 2. 3. Τοριούαν 10. ἦθεσι 26. ποιεῖν] Thy-
 whitus νοεῖν. malim ὑπονοεῖν, quamquam etiam alia hic miserrime
 corrupta sunt 727, 8. Ὅξον 22. om. lacunae signa 23. τοῦνομο
 om. 728, 20. ἔξω 729, 1. 9. Ἰμάιον 5. μέλουρον et hic et in
 sqq. 730, 26. δύνανται 31. Ταπυρίων] Hoc fortasse ex Ταπύρων
 δ' ἔδιον corruptum est 731, 11. οὖν om. 27. ἐκτεινόμενος
 732, 14. 15. προσβόρῳ 733, 13. πρόσβορα 21. αἰ add. ante
 τοῦ 734, 21. Τίγρι 735, 19. χειμερινὸν δὲ om. ib. Οὔερα
 736, 8. εἰκὸς 22. χειμάδιον] Fort. χρηματιστήριον 737, 15.
 Ῥάγαις] An Ῥάγα? 16. Ἡράκλεια om. 738, 8. Μηδικὴν 17.
 πλάτος 740, 3. νέμειν] Fort. νέμ[οντας ἐχ]εῖν, viam monstrante
 Kramero qui coni. ἔχοντας νέμειν 742, 3. θάλασσαν 10. προσ-
 βορώτατοι 15. αἶς om. 19. περιεχούσας] De his v. Vindic. p. 190

743, 15. ἔχουσα om. 20. Ἀρτάγηρας 21. Ἄδωρ 744, 19. Ὑσπικράτιδι 21. ἀπήχθη 749, 10. lacunae signa om. ib. δ' om.
 752, 9. δ' pro ἤν 753, 2. † ἀπλώτω 10. ὀχετοῦ πλάτει] Recte, ut videtur, Kramerus in notis ὀχετῶ οὐ πλατεῖ 24. εὐρυοδί-
 νης 30. post Ἀλγύπτῳ add. τρίτη — φανεράν, quae 754, 24. post
 ἐκείνον transponenda esse Kr. vidit in notis 754, 17. δ' om. 22.
 δ' om. 24. 25. Διὸς Δακίη οὐ λειπομένη 31. Διὸ δὲ ἔχουσι
 μόνον στρατηγίαι πόλεις 755, 31. καὶ ἐμβελεῖς] Fort. κἀννεμ-
 λεῖς vel καὶ ἐμβελεῖς 756, 25. λιθίαν 757, 18. αὐτῶν 19. ἐκ
 pro καὶ ib. τῶν add. ante ἐν 24. Κυρίνου 758, 7. καὶ add.
 ante καρποῖς 9. Βαγαδαονία 24. ἄλλος δ' [εἰς] τὰς διόπτρας
 759, 30. μὲν] Fort. μέντοι, vel μὲν δὴ 760, 2. τε 761, 9.
 οὐδὲν 764, 4. μεσημβρίας 5. ἐξήσει ib. εἰς 13. διεῖπον
 765, 16. ἑκατόν] Hoc corruptum 767, 27. ἡ om. 32. Γαδιλω-
 νίτις 768, 13. Γαδιλώνα 14. ἐννακοσίους 27. 28. Σιδηνήν
 ut in sqq. 769, 29. εὐφορίαν 770, 4. 5. τῷ † Ἰκενι γεωμέτρῃ
 15. εἰτα † Κῦτωρος 28. Ἀππαῖται 771, 28. προαλείστερον.
 δελεαζόμενους μόνοι οὗτοι] V. Vindic. p. 193. 772, 14. Βρύγοι
 22. οὐν om. 773, 2. ὦν om. 17. καὶ πᾶς] Delendum videtur καὶ
 22. Ἀλαξία] Malim Ἀλαξίη 23 et 26. Ὀδρύσσης 774, 1. 2.
 Ἀμαζόνων 2. δ' ἐν pro δὲ 775, 4. οὐδ' 7. Ἐνέαν 27. πο-
 λεμήσαντας 30. συμμαχήσαντας 32 et sqq. Φρυξίν. οἱ ῥα πόν-
 τῆλθον Ἀμαζόνες 776, 3. οὐδ' 5. οὐδ' 20. Βαμωνίτιδι
 21. Πιμπολίτιδι καὶ τῇ Γαζαλονίτιδι 31. καίπερ 777, 12. ἂν
 add. ante διὰ 15. ἂν om. 778, 2. τούτων καὶ om. 18. καὶ
 Δάμον add. post λέγων 779, 9. δεικνύηται 780, 16. Φαρνα-
 κίας] Rectius fuerit Φαρνακίας 781, 24. περὶ τε 786, 6. καὶ
 ἡ τοῦ 28. πόλιν om. 787, 1. Γαζηλωτὸς 30. 31. πόλεως ἅμα
 τε καὶ 788, 24. Ξιμνηῆς 27. Τρόκιμων 28. Ξιμνηῇ 789,
 11. οὐδ' 16. et 20. Σανδαρακούργιον 792, 19. τὸ add. ante
 φῶλον 20. τε 31. τι om. 794, 10. οἶεται pro οἷ' ἔστι 19
 Ἀντιγούλιαν 795, 14 — 16. Κλεοφάνης τε ῥήτωρ, ὁ Μυρλεανός,
 Ἀσκληπιάδης τε ἰατρός, ὁ Προυσιεύς] Correxuit et supplevit Lehrsus
 796, 19. Τρόκοι, quod ubique correxi 24. * Βογοδιατάρῳ] Βρογι-
 τάρῳ C. 797, 7.
 τνισὸν
 Fort. τὰ Ἰσαύρα numero duali 29. [τὴν δὲ] Εὐερκῇ 799, 10.
 Ἰσαυρίαν] Praestat fort. Ἰσαύραν pro eo quod posui Ἰσαυραν 10.
 καὶ † Κιλίκων add. post οὐσαν 800, 29. προσβόροις 801, 20.
 ὀρθήλῳ] Ex ὀρθόκανλον corruptum (s e suspicatur Lobeckius 803,
 14. post ἀλλήλους add. πρὸς μὲν ἀλλήλους 805, 26. αἱ ante Κιμ-
 μερίαν fort. delendum 27. τε om. 809, 24. Δορυλάων 810,
 29. μικρὰς 811, 10. καταφερεῖ 13. γενόμενος [μέγας] Μαίαν-
 δρος 24. ἀπέδειξεν? 30. ὑπολείβεσθαι 812, 22. † συνέπεσαν

813, 12. μεσόγαιαν 18. ὁμῶνυμον 29. διὰ τὸν λίθον καὶ
τὴν ἀπὸ 814, 13. ὑπόνομον 20. συνέστηκε 24. τι συμβαίνει
36. βρυχήμασιν ἔρπουσι πᾶν δ' ἐρέχθει] πᾶν τ' Ἐρέχθειον
πέδον? an πᾶν δ' ἐρέχθεται πέδον?

Berolini d. XXVI. m. Ianuarii a. MDCCCLIII.

Augustus Meineke.

Εἰρηκόσι δ' ἡμῖν περὶ τῆς Ἰβηρίας καὶ τῶν Κελ-^{C.289}
*τικῶν ἐθνῶν καὶ τῶν Ἰταλικῶν σὺν ταῖς πλησίον νή-*¹
σοις ἐφεξῆς ἂν εἴη λέγειν τὰ λειπόμενα τῆς Εὐρώπης
5 μέρη, διελούσι τὸν ἐνδεχόμενον τρόπον. λείπεται δὲ
*τὰ πρὸς ἑω * μὲν τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου μέχρι τοῦ Τανά-*
δος καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος λίμνης, καὶ ὅσα
μεταξὺ τοῦ Ἀδρίου καὶ τῶν ἀριστερῶν τῆς Ποντικῆς
10 Ἑλλάδος καὶ τῆς Προποντίδος ὁ Ἰστρος· διαιρεῖ γὰρ
οὗτος ἅπασαν ὡς ἐγγυτάτω δίχα τὴν λεχθεῖσαν γῆν,
μέγιστος τῶν κατὰ τὴν Εὐρώπην ποταμῶν, ῥέων πρὸς
νότον κατ' ἀρχάς, εἴτ' ἐπιστρέφων εὐθὺς ἀπὸ τῆς δύ-
σεως ἐπὶ τὴν ἀνατολήν καὶ τὸν Πόντον. ἄρχεται μὲν
15 οὖν ἀπὸ τῶν Γερμανικῶν ἄκρων τῶν ἐσπερίων, πλη-
σίον δὲ καὶ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδριατικοῦ, διέχων αὐτοῦ
περὶ χιλίους σταδίους· τελευτᾷ δ' εἰς τὸν Πόντον οὐ
πολὺ ἄπωθεν τῶν τοῦ Τύρα καὶ τοῦ Βορυσθένους
ἐκβολῶν, ἐκκλίνων πῶς πρὸς ἄρκτους. προσάρκτια
20 μὲν οὖν ἐστὶ τῷ Ἰστρῷ τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου καὶ τῆς
Κελτικῆς· ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ τε Γαλατικά ἐθνη καὶ τὰ
Γερμανικά μέχρι Βασταρῶν καὶ Τυρεγετῶν καὶ τοῦ
ποταμοῦ τοῦ Βορυσθένους, καὶ ὅσα μεταξὺ τούτου καὶ
Τανάιδος καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος εἰς τε τὴν
25 μεσόγαιαν ἀνατείνει μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ καὶ τῇ Πον-
τικῇ κλύζεται θαλάττῃ· μεσημβρινὰ δὲ τὰ τε Ἰλλυ-
ρικὰ καὶ τὰ Θράκια καὶ ὅσα τούτοις ἀναμείμνεται τῶν
Κελτικῶν ἢ τινων ἄλλων, μέχρι τῆς Ἑλλάδος. λέγωμεν

δὲ πρῶτον περὶ τῶν ἐκτὸς τοῦ Ἰστροῦ· πολὺ γὰρ ἀπλούστερα τῶν ἐπὶ θάτερα μερῶν ἐστίν.

C.290

2

Εὐθὺς τοίνυν τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου μετὰ τοὺς Κελτοὺς πρὸς τὴν ἕω κεκλιμένα Γερμανοὶ νέμονται, μικρὸν ἐξαλλάττοντες τοῦ Κελτικοῦ φύλου τῷ τε πλε- 5 ονασμῷ τῆς ἀγριότητος καὶ τοῦ μεγέθους καὶ τῆς ξανθότητος, τὰλλα δὲ παραπλήσιοι καὶ μορφαῖς καὶ ἥθεσι καὶ βίοις ὄντες, οἷους εἰρήκαμεν τοὺς Κελτοὺς. διὸ δὴ καὶ μοι δοκοῦσι Ῥωμαῖοι τοῦτο αὐτοῖς θέσθαι τοῦ- νομα ὥς ἂν γνησίους Γαλάτας φράζειν βουλόμε- 10 νοι· γνήσιοι γὰρ οἱ Γερμανοὶ κατὰ τὴν Ῥωμαίων διά- λεκτον.

3

Ἔστι δὲ τὰ μὲν πρῶτα μέρη τῆς χώρας ταύτης τὰ πρὸς τῷ Ῥήνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν ἀπὸ τῆς πηγῆς ἀρ- 15 ξαμένοις· σχεδὸν δέ τι καὶ τοῦτ' ἐστὶ τὸ ἐσπέριον τῆς 15 χώρας πλάτος, ἡ ποταμία πᾶσα. ταύτης δὲ τὰ μὲν εἰς τὴν Κελτικὴν μετήγαγον Ῥωμαῖοι, τὰ δ' ἔφθη μετα- στάντα εἰς τὴν ἐν βάθει χώραν, καθάπερ Μαρσοί· λοιποὶ δ' εἰσὶν ὀλίγοι καὶ τῶν Σουγάμβρων μέρος. μετὰ δὲ τοὺς παραποταμίους τὰλλα ἐστὶν ἔθνη τὰ με- 20 ταξὺ τοῦ Ῥήνου καὶ τοῦ Ἀλβίου ποταμοῦ, ὃς παράλ- ληλός πως ἐκείνῳ ρεῖ πρὸς τὸν ὠκεανόν, οὐκ ἐλάττω χώραν διεξιὼν ἢ περ ἐκείνος. εἰσὶ δὲ μεταξὺ καὶ ἄλλοι ποταμοὶ πλωτοὶ (ὧν ἐν τῷ Ἀμασίᾳ Δροῦσος Βρουκτέ- 25 ρους κατεναυμάχησε), ῥέοντες ὁσαύτως ἀπὸ νότου 25 πρὸς βορρᾶν καὶ τὸν ὠκεανόν. ἐξῆρται γὰρ ἡ χώρα πρὸς νότον καὶ συνεχῇ ταῖς Ἀλπεσι ποιεῖ ῥάχιν τινα πρὸς ἕω τεταμένην, ὥς ἂν μέρος οὔσαν τῶν Ἀλπεων· καὶ δὴ καὶ ἀπεφῆναντό τινες οὕτως διὰ τε τὴν λεχθεῖ- 30 σαν θέσιν καὶ διὰ τὸ τὴν αὐτὴν ὕλην ἐκφέρειν· οὐ μὴν 30 ἐπὶ τοσοῦτό γε ὕψος ἀνίσχει τὰ ταύτῃ ὄρη. ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ Ἐρκύνιος ὄρυμός καὶ τὰ τῶν Σοήβων ἔθνη,

τὰ μὲν οἰκοῦντα ἐντὸς τοῦ δρυμοῦ, ἐν οἷς ἐστὶ καὶ τὸ
 Βουλαιμον τὸ τοῦ Μαροβόδου βασίλειον, εἰς ὃν ἐκεῖ-
 νος τόπον ἄλλους τε μετανέστησε πλείους καὶ δὴ καὶ
 τοὺς ὁμοεθνεῖς ἑαυτῷ Μαρκομμάνους. ἐπέστη γὰρ
 5 τοῖς πράγμασιν οὗτος ἐξ ἰδιώτου μετὰ τὴν ἐκ Ῥώμης
 ἐπάνοδον· νέος γὰρ ἦν ἐνθάδε καὶ εὐεργετεῖτο ὑπὸ
 τοῦ Σεβαστοῦ, ἐπανελθὼν δὲ ἐδυνάστευσε καὶ κατε-
 κτήσατο πρὸς οἷς εἶπον Λουγίους τε, μέγα ἔθνος, καὶ
 Ζούμους καὶ Γούτωναs καὶ Μουγίλωνας καὶ Σιβίνους
 10 καὶ τῶν Σοήβων αὐτῶν μέγα ἔθνος, Σέμνωνας. πλήν
 τά γε τῶν Σοήβων, ὥς ἔφην, ἔθνη τὰ μὲν ἐντὸς οἰκεῖ,
 τὰ δὲ ἐκτὸς τοῦ δρυμοῦ, ὅμορα τοῖς Γέταιs. μέγιστον
 μὲν οὖν τὸ τῶν Σοήβων ἔθνος· διήκει γὰρ ἀπὸ τοῦ
 15 τοῦ Ῥήνου μέχρι τοῦ Ἀλβιος· μέρος δέ τι αὐτῶν καὶ πέραν
 τοῦ Ἀλβιος νέμεται, καθάπερ Ἑρμόνδοροι καὶ Λαγκό-
 βαρδοι· νυνὶ δὲ καὶ τελέως εἰς τὴν περαιάν οὗτοί γε C.291
 ἐκπεπτῶκασιν φεύγοντες. κοινὸν δ' ἐστὶν ἅπασιν τοῖς
 ταύτῃ τὸ περὶ τὰς μεταναστάσεις εὐμαρὲς διὰ τὴν λι-
 τότητα τοῦ βίου καὶ διὰ τὸ μὴ γεωργεῖν μηδὲ θησαν-
 20 ρίζειν, ἀλλ' ἐν καλυβίοις οἰκεῖν ἐφήμερον ἔχουσι πα-
 ρασκευήν· τροφὴ δ' ἀπὸ τῶν θρεμμάτων ἢ πλείστη
 καθάπερ τοῖς νομάσιν, ὥστ' ἐκείνους μιμούμενοι τὰ
 οἰκεῖα ταῖς ἁρμαμάξαις ἐπάραντες ὅπη ἂν δόξῃ τρέ-
 πονται μετὰ τῶν βοσκημάτων. ἄλλα δ' ἐνδεέστερά
 25 ἐστὶν ἔθνη Γερμανικὰ Χηροῦσκοί τε καὶ Χάττοι καὶ
 Γαμαβρίσιοι καὶ Χαττουάριοι· πρὸς δὲ τῷ ὠκεανῷ
 Σούγαμβροί τε καὶ Χαῦβοι καὶ Βρούκτεροι καὶ Κίμ-
 βροι Καῦκοί τε καὶ Καοῦλκοι καὶ Καμψιανοὶ καὶ ἄλ-
 λοι πλείους. ἐπὶ ταῦτά δὲ τῷ Ἀμασίᾳ φέρονται Βί-
 30 σουργίς τε καὶ Λουπίας ποταμός, διέχων Ῥήνου περὶ

1. post δρυμοῦ: καθάπερ τὰ τῶν κολδούων (Κοαδούων)

ἑξακοσίους σταδίους, ῥέων διὰ Βρουκτέρων τῶν ἐλαττόνων. ἔστι δὲ καὶ Σάλας ποταμός, οὗ μεταξὺ καὶ τοῦ Ῥήνου πολεμῶν καὶ κατορθῶν Δροῦσος ἐτελεύτησεν ὁ Γερμανικός. ἐχειρώσατο δ' οὐ μόνον τῶν ἐθνῶν τὰ πλεῖστα, ἀλλὰ καὶ τὰς ἐν τῷ παράπλῳ νήσους, ὧν ἔστι ὁ καὶ ἡ Βυρχανίς, ἣν ἐκ πολιορκίας εἴλε.

- 4 Γνώριμα δὲ ταῦτα κατέστη τὰ ἔθνη πολεμοῦντα πρὸς Ῥωμαίους, εἴτ' ἐνδιδόντα καὶ πάλιν ἀφιστάμενα ἢ καὶ καταλείποντα τὰς κατοικίας· καὶ πλείω δὲ γνώριμα ὑπῆρξεν, εἰ ἐπέτρεπε τοῖς στρατηγοῖς ὁ Σεβαστὸς 10 διαβαίνειν τὸν Ἄλβιν μετιοῦσι τοὺς ἐκεῖσε ἀπανιστάμενους. νυνὶ δ' εὐπορώτερον ὑπέλαβε στρατηγεῖν τὸν ἐν χειρὶ πόλεμον, εἰ τῶν ἔξω τοῦ Ἄλβιος καθ' ἡσυχίαν ὄντων ἀπέχοιτο καὶ μὴ παροξύνει πρὸς τὴν κοινωनीαν τῆς ἐχθρας. ἤρξαντο δὲ τοῦ πολέμου Σούγαμβροι πλη- 15 σίον οἰκοῦντες τοῦ Ῥήνου, Μέλωνα ἔχοντες ἡγεμόνα· καὶ κείθεν ἤδη διεδέχοντο ἄλλοι ἄλλοι δυναστεύοντες καὶ καταλνόμενοι, πάλιν δ' ἀφιστάμενοι, προδιδόντες καὶ τὰ ὄμηρα καὶ τὰς πίστεις. πρὸς οὓς ἡ μὲν ἀπιστία μέγα ὄφελος, οἱ δὲ πιστευθέντες τὰ μέγιστα κατέβλα- 20 ψαν, καθάπερ οἱ Χηρούσκοι καὶ οἱ τούτοις ὑπήκοοι, παρ' οἷς τρία τάγματα Ῥωμαίων μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Ὀἶαρου Κουντιλλίου παρασπονδηθέντα ἀπώλετο ἐξ ἐνέδρας. ἔτισαν δὲ δίκας ἅπαντες καὶ παρέσχον τῷ νεωτέρῳ Γερμανικῷ λαμπρότατον θρίαμβον, ἐν ᾧ 25 ἐθριαμβεύθη τῶν ἐπιφανεστάτων ἀνδρῶν σώματα καὶ γυναικῶν, Σεγμιμύντός τε Σεγέστου υἱός, Χηρούσκων ἡγεμῶν, καὶ ἀδελφὴ αὐτοῦ, γυνὴ δ' Ἀρμενίου τοῦ πολεμαρχήσαντος ἐν τοῖς Χηρούσκοις ἐν τῇ πρὸς Ὀἶαρον
- C.292 Κουντιλλιον παρασπονδήσει καὶ νῦν ἔτι συνέχοντος 30 τὸν πόλεμον, ὄνομα Θουσνέλδα, καὶ υἱὸς τριετῆς Θουμέλικος· ἔτι δὲ Σεσίθακος, Σεγμῆρου υἱὸς τῶν Χη-

- ροῦσκων ἡγεμόνος, καὶ γυνὴ τοῦτου Ῥαμῖς, Οὐκρομή-
 ρου θυγάτηρ ἡγεμόνος Χάττων, καὶ Λευδόριξ, Βαιτό-
 ριγος τοῦ Μέλωνος ἀδελφοῦ υἱός, Σούγαμβρος. Σε-
 γέστης δὲ ὁ πενθερὸς τοῦ Ἀρμενίου καὶ ἐξ ἀρχῆς διέστη
 5 πρὸς τὴν γνώμην αὐτοῦ καὶ λαβὼν καιρὸν ἠντομόλησε
 καὶ τῷ Θριάμβῳ παρῆν τῶν φιλτάτων, ἐν τιμῇ ἀγό-
 μενος. ἐπόμεπυσε δὲ καὶ Λίβης τῶν Χάττων ἱερεὺς,
 καὶ ἄλλα δὲ σώματα ἐπομπεύθη ἐκ τῶν πεπορθημένων
 ἔθνων, Καούλων Καμψανῶν Βρουκτέρων Οὐσίπων
 10 Χηρούσκων Χάττων Χαττουαρίων Λανδῶν Τουβατ-
 τίων. διέχει δὲ τοῦ Ἀλβιος ὁ Ῥῆνος περὶ τρισχιλίους
 σταδίους, εἴ τις εὐθυπορούσας ἔχοι τὰς ὁδοὺς· νυνὶ
 δὲ διὰ σκολιᾶς καὶ ἐλώδους καὶ δρυμῶν κυκλοπορεῖν
 ἀνάγκη.
- 15 Ὁ δὲ Ἑρκύνιος δρυμὸς πυκνότερός τε ἐστὶ καὶ με- 5
 γαλόδενδρος ἐν χωρίοις ἐρυμνοῖς κύκλον περιλαμβά-
 νων μέγαν, ἐν μέσῳ δὲ ἴδρυνται χώρα καλῶς οἰκείσθαι
 δυναμένη, περὶ ἧς εἰρήκαμεν. ἐστὶ δὲ πλησίον αὐτῆς
 ἢ τε τοῦ Ἰστρου πηγῇ καὶ ἢ τοῦ Ῥήνου καὶ ἢ μεταξὺ
 20 ἀμφοῖν λίμνη καὶ τὰ ἔλη τὰ ἐκ τοῦ Ῥήνου διαχεόμενα.
 ἐστὶ δ' ἡ λίμνη τὴν μὲν περίμετρον σταδίων πλειόνων
 ἢ πεντακοσίων, διάγραμμα δὲ ἐγγὺς διακοσίων. ἔχει δὲ
 καὶ νῆσον, ἣ ἐχρήσατο ὀρμητηρίῳ Τιβέριος ναυμαχῶν
 πρὸς Ὑνδολικούς. νοτιωτέρα δ' ἐστὶ τῶν τοῦ Ἰστρου
 25 πηγῶν καὶ αὕτη, ὥστ' ἀνάγκη τῷ ἐκ τῆς Κελτικῆς ἐπὶ
 τὸν Ἑρκύνιον δρυμὸν ἰόντι πρῶτον μὲν διαπερᾶσαι
 τὴν λίμνην, ἔπειτα τὸν Ἰστρον, εἴτ' ἡδη δι' εὐπετεστέ-
 ρων χωρίων ἐπὶ τὸν δρυμὸν τὰς προβάσεις ποιεῖσθαι
 δι' ὀροπεδίων. ἡμερήσιον δ' ἀπὸ τῆς λίμνης προελθὼν
 30 ὁδὸν Τιβέριος εἶδε τὰς τοῦ Ἰστρου πηγὰς. προσάπτου-

ται δὲ τῆς λίμνης ἐπ' ὀλίγον μὲν οἱ Ῥαιτοί, τὸ δὲ πλεόν
Ἑλεήττιοι καὶ Ῥινδολικοί . . . καὶ ἡ Βοίῳν ἐρημία.
μέχρι Παννουρίων πάντες, τὸ πλεόν δ' Ἑλεήττιοι καὶ
Ῥινδολικοί, οἰκοῦσιν ὄροπέδια. Ῥαιτοὶ δὲ καὶ Νωρι-
κοὶ μέχρι τῶν Ἀλπειῶν ὑπερβολῶν ἀνίσχουσι καὶ πρὸς 5
τὴν Ἰταλίαν περινεύουσιν, οἱ μὲν Ἰνσούβροις συνά-
πτουντες οἱ δὲ Κάρνοις καὶ τοῖς περὶ τὴν Ἀκυληίαν χω-
ρίοις. ἔστι δὲ καὶ ἄλλη ὕλη μεγάλη Γαβρητὰ ἐπὶ τὰδε
τῶν Σοήβων, ἐπέκεινα δ' ὁ Ἐρκύνιος δρυμός· ἔχεται
δὲ καὶ κείνος ὑπ' αὐτῶν. 10

2 Περὶ δὲ Κίμβρων τὰ μὲν οὐκ εὖ λέγεται, τὰ δ'
ἔχει πιθανότητος οὐ μετρία. οὔτε γὰρ τὴν τοιαύτην
αἰτίαν τοῦ πλάνητας γενέσθαι καὶ ληστρικοὺς ἀποδέ-
ξαιτ' ἂν τις, ὅτι χερρόνησον οἰκοῦντες μεγάλη πλημ-
μυρίδι ἐξελαθεῖεν ἐκ τῶν τόπων· καὶ γὰρ νῦν ἔχουσι 15
C.293 τὴν χώραν ἣν εἶχον πρότερον, καὶ ἔπεμψαν τῷ Σε-
βαστῷ δῶρον τὸν λεγόμενον παρ' αὐτοῖς λέβητα, αἰ-
τούμενοι φιλίαν καὶ ἀμνηστίαν τῶν ὑπηργμένων, τυ-
χόντες δὲ ὧν ἡξίου ἀπῆραν· γελοῖον δὲ τῷ φυσικῷ
καὶ αἰωνίῳ πάθει δις ἐκάστης ἡμέρας συμβαίνουντι 20
προσοργισθέντας ἀπελθεῖν ἐκ τοῦ τόπου. εἰκε δὲ
πλάσματι τὸ συμβῆναί ποτε ὑπερβάλλουσαν πλημυ-
ρίδα· ἐπιτάσεις μὲν γὰρ καὶ ἀνέσεις δέχεται, τεταγμέ-
νας δὲ καὶ περιοδιζούσας, ὁ ὤκεανός ἐν τοῖς τοιούτοις
πάθεισιν. οὐκ εὖ δ' οὐδὲ ὁ φήσας ὅπλα αἵρεσθαι πρὸς 25
τὰς πλημμυρίδας τοὺς Κίμβρους, οὐδ' ὅτι ἀφοβίαν οἱ
Κελτοὶ ἀσχοῦντες κατακλύζεσθαι τὰς οἰκίας ὑπομέ-
νουσιν, εἴτ' ἀνοικοδομοῦσι, καὶ ὅτι πλείων αὐτοῖς
συμβαίνει φθόρος ἐξ ὕδατος ἢ πολέμου, ὅπερ Ἐφορός
φησιν. ἡ γὰρ τάξις ἡ τῶν πλημμυρίδων καὶ τὸ τὴν 30
ἐπικλυζομένην χώραν εἶναι γνώριμον οὐκ ἔμελλε τοι-
αύτας τὰς ἀτοπίας παρέξειν. δις γὰρ ἐκάστης ἡμέρας

τούτου συμβαίνοντος τὸ μηδ' ἄπαξ αἰσθάνεσθαι φυσικὴν οὐσίαν τὴν παλίρροϊαν καὶ ἀβλαβῆ, καὶ οὐ μόνους τούτοις συμβαίνουσιν ἀλλὰ τοῖς παρωκεανίταις πᾶσι, πῶς οὐκ ἀπίθانون; οὐδὲ Κλείταρχος εὖ· φησὶ
 5 γὰρ τοὺς ἱππέας ἰδόντας τὴν ἑφοδὸν τοῦ πελάγους ἀφιππάσασθαι καὶ φεύγοντας ἐγγὺς γενέσθαι τοῦ περικαταληφθῆναι. οὔτε δὲ τοσοῦτον τάχει τὴν ἐπίβασιν ὁρμωμένην ἱστοροῦμεν, ἀλλὰ λεληθότως προσιοῦσαν τὴν θάλατταν· οὔτε τὸ καθ' ἡμέραν γινόμενον καὶ
 10 πᾶσιν ἑναυλον ἤδη ὃν τοῖς πλησιάζειν μέλλουσι πρὶν ἢ θεάσασθαι, τοσοῦτον ἔμελλε παρῆξεσθαι φόβον ὥστε φεύγειν, ὡς ἂν εἰ ἐξ ἀδοκῆτου προσέπεσε.

Ταῦτά τε δὴ δικαίως ἐπιτιμᾷ τοῖς συγγραφεῦσι 2
 Ποσειδώνιος καὶ οὐ κακῶς εἰκάζει, διότι ληστροικοὶ ὄν-
 15 τες καὶ πλάνητες οἱ Κίμβροι καὶ μέχρι τῶν περὶ τὴν Μαιῶτιν ποιήσαιντο στρατείαν, ἀπ' ἐκείνων δὲ καὶ ὁ Κιμμέριος κληθεῖη Βόσπορος, οἷον Κιμβρικός, Κιμμερίους τοὺς Κίμβρους ὀνομασάντων τῶν Ἑλλήνων. φησὶ δὲ καὶ Βοίους τὸν Ἐρκύνιον δρυμὸν οἰκεῖν πρό-
 20 τερον, τοὺς δὲ Κίμβρους ὁρμήσαντας ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, ἀποκρουσθέντας ὑπὸ τῶν Βοίων ἐπὶ τὸν Ἰστρον καὶ τοὺς Σκορδίσκους Γαλάτας καταβῆναι, εἴτ' ἐπὶ Τευρίστας καὶ Ταυρίσκους, καὶ τούτους Γαλάτας, εἴτ' ἐπὶ Ἑλσηττίους, πολυχρύσους μὲν ἄνδρας εἰρη-
 25 ναίους δέ· ὁρῶντας δὲ τὸν ἐκ τῶν ληστηρίων πλοῦτον ὑπερβάλλοντα τοῦ παρ' ἑαυτοῖς τοὺς Ἑλσηττίους ἐπαρθῆναι, μάλιστα δ' αὐτῶν Τυγυρίνους τε καὶ Τωγένους, ὥστε καὶ συνεξορμηῆσαι. πάντες μέντοι κατε-
 λύθησαν ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων αὐτοὶ τε οἱ Κίμβροι καὶ
 30 οἱ συναράμενοι τούτοις, οἱ μὲν ὑπερβαλόντες τὰς Ἀλπεῖς εἰς τὴν Ἰταλίαν οἱ δ' ἔξω τῶν Ἀλπεων.

Ἔθος δέ τι τῶν Κίμβρων διηγοῦνται τοιοῦτον, 3

ὅτι ταῖς γυναιξὶν αὐτῶν συστρατευούσαις παρηκολού-
θουν προμάντεις ἰέρειαι πολιότριχες, λευχείμονες,
καρπασίνας ἐφαπτίδας ἐπιπεπορημέναι, ξῶσμα χαλ-
κοῦν ἔχουσαι, γυμνόποδες· τοῖς οὖν αἰχμαλώτοις διὰ
τοῦ στρατοπέδου συνήντων ξιφῆρεις, καταστέψασαι δ' 5
αὐτοὺς ἦγον ἐπὶ κρατῆρα χαλκοῦν ὅσον ἀμφορέων εἰ-
κοσιν· εἶχον δὲ ἀναβάθραν, ἣν ἀναβάσα . . . ὑπερπετῆς
τοῦ λέβητος ἐλαιμοτόμει ἕκαστον μετεωρισθέντα· ἐκ
δὲ τοῦ προχεομένου αἵματος εἰς τὸν κρατῆρα μαν-
τείαν τινὰ ἐποιοῦντο, ἄλλαι δὲ διασχίσασαι ἐσπλάγ- 10
χνευον ἀναφθεγγόμεναι νίκην τοῖς οἰκείοις. ἐν δὲ τοῖς
ἀγῶσιν ἔτυπτον τὰς βύρσας τὰς περιτεταμένας τοῖς
γέροισι τῶν ἀρμαμαξῶν, ὥστ' ἀποτελεῖσθαι ψόφον
ἐξαίσιον.

- 4 Τῶν δὲ Γερμανῶν, ὡς εἶπον, οἱ μὲν προσάρκτιοι 15
παροικοῦσι τῷ ὤκεανῳ, γνωρίζονται δ' ἀπὸ τῶν ἐκ-
βολῶν τοῦ Ῥήνου λαβόντες τὴν ἀρχὴν μέχρι τοῦ Ἄλ-
βιος. τούτων δ' εἰσὶ γνωριμώτατοι Σούγαμβροί τε καὶ
Κίμβροι. τὰ δὲ πέραν τοῦ Ἄλβιος τὰ πρὸς τῷ ὤκεανῳ
παντάπασιν ἄγνωστα ἡμῖν ἐστίν. οὔτε γὰρ τῶν προ- 20
τέρων οὐδένας ἴσμεν τὸν παράπλουν τοῦτον πεποιη-
μένους πρὸς τὰ ἐσθινὰ μέρη τὰ μέχρι τοῦ στόματος
τῆς Κασπίας θαλάττης, οὔθ' οἱ Ῥωμαῖοί πω προῆλθον
εἰς τὰ περαιτέρω τοῦ Ἄλβιος· ὡς δ' αὐτῶς οὐδὲ πεξῆ
παρωδεύκασιν οὐδένες. ἀλλ' ὅτι μὲν κατὰ μήκος ἰοῦ- 25
σιν ἐπὶ τὴν ἕω τὰ κατὰ τὸν Βορυσθένη καὶ τὰ πρὸς
βορρᾶν τοῦ Πόντου χωρία ἀπαντᾷ, δῆλον ἐκ τῶν κλι-
μάτων καὶ τῶν παραλλήλων διαστημάτων. τί δ' ἐστὶ
πέραν τῆς Γερμανίας καὶ τί τῶν ἄλλων τῶν ἐξῆς, εἴκε
Βαστάρνας χρὴ λέγειν, ὡς οἱ πλείους ὑπονοοοῦσιν, εἴτ' 30

ἄλλους μεταξὺ ἢ Ἰάξυγας ἢ Ῥωξολανούς ἢ τινας ἄλλους τῶν ἀμαξοίκων οὐ ῥάδιον εἰπεῖν, οὐδ' εἰ μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ παρήκουσι παρὰ πᾶν τὸ μῆκος, ἢ ἐστὶ τι αἰοίκητον ὑπὸ ψύχους ἢ ἄλλης αἰτίας, ἢ εἰ καὶ γένος
 5 ἀνθρώπων ἄλλο διαδέχεται μεταξὺ τῆς θαλάττης καὶ τῶν ἐσίων Γερμανῶν ἰδρυμένον. τοῦτο δὲ τὸ αὐτὸ ἀγνόημα καὶ περὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐφεξῆς προσαρκτίων ἐπέχει. οὔτε γὰρ τοὺς Βαστάρνας οὔτε τοὺς Σαυρομάτας καὶ ἁπλῶς τοὺς ὑπὲρ τοῦ Πόντου οἰκοῦντας ἴσμεν,
 10 οὔθ' ὅπόσον ἀπέχουσι τῆς Ἀτλαντικῆς θαλάττης, οὔτ' εἰ συνάπτουσιν αὐτῇ.

Τὸ δὲ νότιον μέρος τῆς Γερμανίας τὸ πέραν τοῦ **Β**
 Ἄλβιος τὸ μὲν συνεχὲς ἀκμὴν ὑπὸ τῶν Σοήβων κατέ-
 χεται· εἴτ' εὐθύς ἡ τῶν Γετῶν συνάπτει γῇ, κατ' ἀρ-
 15 χὰς μὲν στενὴ, παρατεταμένη τῷ Ἰστρῳ κατὰ τὸ νότιον μέρος, κατὰ δὲ τοῦναντίον τῇ παρωρείᾳ τοῦ Ἑρκυνίου ὀρυμοῦ, μέρος τι τῶν ὄρων καὶ αὐτὴ κατέχουσα, εἶτα πλατύνεται πρὸς τὰς ἄρκτους μέχρι Τυρεγετῶν· τοὺς δὲ ἀκριβεῖς ὄρους οὐκ ἔχομεν φράζειν.
 20 διὰ δὲ τὴν ἄγνοιαν τῶν τόπων τούτων οἱ τὰ Ρίπαϊα ὄρη καὶ τοὺς Ὑπερβορείους μυθοποιοῦντες λόγου ἡξίωται, καὶ ἂ Πυθίας ὁ Μασσαλιώτης κατεψεύσατο * ταῦτα τῆς παρωκεανίδος, προσχήματι χρώμενος τῇ περὶ τὰ οὐράνια καὶ τὰ μαθηματικὰ ἱστορίᾳ. ἐκεῖνοι μὲν οὖν
 25 ἐάσθωσαν· οὐδὲ γὰρ εἴ τινα Σοφοκλῆς τραγωδεῖ περὶ τῆς Ὀρειθυίας λέγων ὡς ἀναρπαγεῖσα ὑπὸ Βορέου κομισθεῖν „ὑπὲρ τε πόντον πάντ' ἐπ' ἔσχατα χθονὸς „νυκτός τε πηγὰς οὐρανοῦ τ' ἀναπτυχάς, Φοῖβον πα-
 „λαιὸν κῆπον,“ οὐδὲν ἂν εἴη πρὸς τὰ νῦν, ἀλλ' ἐα-
 30 τέον, ὥσπερ καὶ ἐν τῷ Φαίδρῳ ὁ Σωκράτης. ἃ δὲ ἐκ τῆς παλαιᾶς ἱστορίας καὶ τῆς νῦν παρειλήφαμεν, ταῦτα λέγωμεν.

2 Οἱ τοίνυν Ἕλληνες τοὺς Γέτας Θρᾷκας ὑπελάμ-
 βανον· ὥκουν δ' ἐφ' ἐκάτερα τοῦ Ἴστρου καὶ οὗτοι
 καὶ οἱ Μυσοὶ Θρᾷκες ὄντες καὶ αὐτοὶ καὶ οὓς νῦν Μοι-
 σοὺς καλοῦσιν, ἀφ' ὧν ὠρμήθησαν καὶ οἱ νῦν μετα-
 ξὺ Λυδῶν καὶ Φρυγῶν καὶ Τρώων οἰκοῦντες Μυσοί. 5
 καὶ αὐτοὶ δ' οἱ Φρύγες Βρίγες εἰσί, Θράκιόν τι ἔθνος,
 καθάπερ καὶ Μυγδόνες καὶ Βέβρυκες καὶ Μαιδοβι-
 θυνοὶ καὶ Βιθυνοὶ καὶ Θυνοὶ, δοκῶ δὲ καὶ τοὺς Μα-
 ριανδυνούς. οὗτοι μὲν οὖν τελέως ἐκκλειοίπασι πάντες
 τὴν Εὐρώπην, οἱ δὲ Μυσοὶ συνέμειναν. καὶ Ὅμηρον 10
 δ' ὀρθῶς εἰκάζειν μοι δοκεῖ Ποσειδῶνιος τοὺς ἐν τῇ
 Εὐρώπῃ Μυσοὺς κατονομάζειν (λέγω δὲ τοὺς ἐν τῇ
 Θράκῃ) ὅταν φῇ „αὐτὸς δὲ πάλιν τρέπεν ὅσσε φαιινῶ,
 „νόσφιν ἐφ' ἱπποπόλων Θρηκῶν καθορώμενος αἶαν
 „Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων.“ ἐπεὶ εἰ γε τοὺς κατὰ τὴν 15
 Ἀσίαν Μυσοὺς δέχοιτό τις, ἀπηρτημένος ἂν εἴη ὁ λό-
 γος. τὸ γὰρ ἀπὸ τῶν Τρώων τρέψαντα τὴν ὄρασιν ἐπὶ
 τὴν Θρακῶν γῆν συγκαταλέγειν ταύτῃ τὴν τῶν Μυ-
 σῶν, τῶν οὐ νόσφιν ὄντων ἀλλ' ὁμόρων τῇ Τρωάδι
 καὶ ὀπισθεν αὐτῆς ἰδρυμένων καὶ ἐκατέρωθεν, διειρ- 20
 γομένων δ' ἀπὸ τῆς Θράκης πλατεῖ Ἑλλησπόντῳ, συγ-
 χέοντος ἂν εἴη τὰς ἡπείρους καὶ ἅμα τῆς φράσεως οὐκ
 ἀκούοντος. τὸ γὰρ „πάλιν τρέπεν“ μάλιστα μὲν ἐστὶν
 εἰς τοῦπίσω· ὁ δ' ἀπὸ τῶν Τρώων μεταφέρων τὴν
 ὄψιν ἐπὶ τοὺς μὴ ὀπισθεν αὐτῶν ἢ ἐκ πλαγίων ὄντας 25
 προσωτέρω μὲν μεταφέρει, εἰς τοῦπίσω δ' οὐ πάνν.
 C.296 καὶ τὸ ἐπιφερόμενον δ' αὐτοῦ τούτου μαρτύριον, ὅτι
 τοὺς ἱππημολγοὺς καὶ γαλακτοφάγους καὶ ἀβίους συν-
 ῆψεν αὐτοῖς, οἵπερ εἰσὶν οἱ ἀμάξοικοι Σκύθαι καὶ
 Σαρμάται. καὶ γὰρ νῦν ἀναμείμικται ταῦτα τὰ ἔθνη 30
 τοῖς Θραξὶ καὶ τὰ Βασταρνικά, μᾶλλον μὲν τοῖς ἐκτὸς
 Ἴστρου, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἐντός. τούτοις δὲ καὶ τὰ Κελ-

τικά, οἳ τε Βόιοι καὶ Σκορδίσκοι καὶ Ταυρίσκοι. τοὺς δὲ Σκορδίσκους ἔτιοι Σκορδίστας καλοῦσι· καὶ τοὺς Ταυρίσκους δὲ Τευρίσκους καὶ Ταυρίστας φασί.

Λέγει δὲ τοὺς Μυσοὺς ὁ Ποσειδώνιος καὶ ἐμφύ- 3
 5 χων ἀπέχεσθαι κατ' εὐσέβειαν, διὰ δὲ τοῦτο καὶ θρεμ-
 μάτων· μέλιτι δὲ χρῆσθαι καὶ γάλακτι καὶ τυρῷ ζῶν-
 τας καθ' ἡσυχίαν, διὰ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι θεοσεβεῖς τε
 καὶ καπνοβάτας· εἶναι δὲ τινας τῶν Θρακῶν οἳ χωρὶς
 γυναικὸς ζῶσιν, οὓς κτίστας καλεῖσθαι, ἀνιερωσθαι
 10 τε διὰ τιμὴν καὶ μετὰ ἀδείας ζῆν· τούτους δὴ συλλή-
 βδην ἅπαντας τὸν ποιητὴν εἰπεῖν ἀγανοὺς ἱππημολ-
 γοὺς γλακτοφάγους ἀβίους τε, δικαιοτάτους ἀνθρώ-
 πους. ἀβίους δὲ προσαγορεύειν μάλιστα ὅτι χωρὶς γυ-
 ναικῶν, ἡγούμενον ἡμιτελῆ τινα βίον τὸν χῆρον, κα-
 15 θάπερ καὶ τὸν οἶκον ἡμιτελῆ τὸν Πρωτεσιλάου διότι
 χῆρος· ἀγχεμάχους δὲ τοὺς Μυσούς, ὅτι ἀπόρθητοι,
 καθὰ οἱ ἀγαθοὶ πολεμισταί· δεῖν δὲ ἐν τῷ τρισκαιδεκά-
 τῳ γράφειν ἀντὶ τοῦ „Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων“ „Μοι-
 σῶν τ' ἀγχεμάχων.“

20 Τὸ μὲν οὖν τὴν γραφὴν κινεῖν ἐκ τοσοῦτων ἐτῶν 4
 εὐδοκιμήσασαν περιπτὸν ἴσως· πολὺ γὰρ πιθανώτε-
 ρον ὠνομάσθαι μὲν ἐξ ἀρχῆς Μυσούς, μετωνομάσθαι
 δὲ ὥς νῦν. τοὺς ἀβίους δὲ τοὺς χήρους οὐ μᾶλλον ἢ
 τοὺς ἀνεστίους καὶ τοὺς ἀμαξοίκους δέξαιτ' ἂν τις· μά-
 25 λιστα γὰρ περὶ τὰ συμβόλαια καὶ τὴν τῶν χρημάτων
 κτήσιν συνισταμένων τῶν ἀδικημάτων, τοὺς οὕτως ἀπ'
 ὀλίγων εὐτελῶς ζῶντας δικαιοτάτους εὖλογον κληθῆ-
 ναι· ἐπεὶ καὶ οἱ φιλόσοφοι τῇ σωφροσύνῃ τὴν δικαιο-
 σύνην ἐγγυτάτω τιθέντες τὸ αὐτάρκες καὶ τὸ λιτὸν ἐν
 30 τοῖς πρώτοις ἐξήλωσαν· ἄφ' οὗ καὶ προεκπιτώσεις τι-
 νὰς αὐτῶν παρέωσαν ἐπὶ τὸν κυνισμόν. τὸ δὲ χήρους
 γυναικῶν οἰκεῖν οὐδεμίαν τοιαύτην ἔμφασιν ὑπογρά-

φει, καὶ μάλιστα παρὰ τοῖς Θοῤῥῶ καὶ τούτων τοῖς
 Γέταις. ὄρα δ' ἃ λέγει Μένανδρος περὶ αὐτῶν οὐ
 C.297 πλάσας, ὥς εἰκός, ἀλλ' ἐξ ἱστορίας λαβῶν „πάντες
 „μὲν οἱ Θοῤῥῶες, μάλιστα δ' οἱ Γέται ἡμεῖς ἀπάντων (καὶ
 „γὰρ αὐτὸς εὖχομαι ἐκείθεν εἶναι τὸ γένος) οὐ σφόδρ' 5
 „ἐγκρατεῖς ἐσμέν.“ καὶ ὑποβὰς μικρὸν τῆς περὶ τὰς
 γυναικῆς ἀκραςίας τίθησι τὰ παραδείγματα „γαμεῖ
 „γὰρ ἡμῶν οὐδὲ εἷς, εἰ μὴ δέκ' ἢ ἔνδεκα γυναικῆς δώ-
 „δεκά τ' ἢ πλείους τινάς. ἂν τέτταρας δ' ἢ πέντε γε-
 „γαμηκῶς τύχῃ καταστροφῆς τις, ἀννυμέναιος ἄθλιος 10
 „ἀννυφος οὗτος ἐπικαλεῖτ' ἐν τοῖς ἐκεῖ.“ ταῦτα γὰρ
 ὁμολογεῖται μὲν καὶ παρὰ τῶν ἄλλων, οὐκ εἰκός δὲ
 τοὺς αὐτοὺς ἅμα μὲν ἄθλιον νομίζειν βίον τὸν μὴ
 μετὰ πολλῶν γυναικῶν, ἅμα δὲ σπουδαῖον καὶ δίκαιον
 τὸν τῶν γυναικῶν χῆρον. τὸ δὲ δὴ καὶ θεοσεβεῖς νο- 15
 μίζειν καὶ καπνοβάτας τοὺς ἐρήμους γυναικῶν σφό-
 δρα ἐναντιοῦται ταῖς κοιναῖς ὑπολήψεσιν. ἅπαντες
 γὰρ τῆς δεισιδαιμονίας ἀρχηγοὺς οἴονται τὰς γυναι-
 κῆς· αὐταὶ δὲ καὶ τοὺς ἄνδρας προκαλοῦνται πρὸς τὰς
 ἐπὶ πλέον θεραπείας τῶν θεῶν καὶ ἑορτὰς καὶ ποτνι- 20
 ασμούς· σπάνιον δ' εἴ τις ἀνὴρ καθ' αὐτὸν ζῶν εὐρί-
 σκεται τοιοῦτος. ὄρα δὲ πάλιν τὸν αὐτὸν ποιητὴν ἃ λέ-
 γει εἰσάγων τὸν ἀχθόμενον ταῖς περὶ τὰς θυσίας τῶν
 γυναικῶν δαπάναις καὶ λέγοντα „ἐπιτρίβουσι δ' ἡμᾶς
 „οἱ θεοὶ μάλιστα τοὺς γήμαντας· ἀεὶ γὰρ τινα ἄγειν 25
 „ἑορτὴν ἐστ' ἀνάγκη.“ τὸν δὲ μισογύνην αὐτὰ ταῦ-
 τα αἰτιώμενον „ἐθύομεν δὲ πεντάκις τῆς ἡμέρας, ἐκνυ-
 „βάλιζον δ' ἐπὶ τὰ θεράπαινα κύκλω, αἱ δ' ὠλόλυ-
 „ξον.“ τὸ μὲν οὖν ἰδίως τοὺς ἀγύνους τῶν Γετῶν
 εὐσεβεῖς νομίζεσθαι παράλογόν τι ἐμφαίνει· τὸ δ' 30
 ἰσχύειν ἐν τῷ ἔθνει τούτῳ τὴν περὶ τὸ θεῖον σπουδὴν

ἐκ τε ὧν εἶπε Ποσειδάωνιος οὐκ ἀπιστητέον καὶ ἐκ τῆς ἄλλης ἱστορίας.

Λέγεται γάρ τινα τῶν Γετῶν ὄνομα Ζάμολξιν δου- 5
λεῦσαι Πυθαγόρα καὶ τινα τῶν οὐρανίων παρ' ἐκεί-
νου μαθεῖν, τὰ δὲ καὶ παρ' Αἰγυπτίων πλανηθέντα
καὶ μέχρι δεῦρο· ἐπανελθόντα δ' εἰς τὴν οἰκείαν σπου-
δασθῆναι παρὰ τοῖς ἡγεμόσι καὶ τῷ ἔθνει προλέγοντα
τὰς ἐπισημασίας, τελευτῶντα δὲ πεῖσαι τὸν βασιλέα
κοινωνὸν τῆς ἀρχῆς αὐτὸν λαβεῖν ὥς τὰ παρὰ τῶν
10 θεῶν ἐξαγγέλλειν ἱκανόν· καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν ἱερέα
κατασταθῆναι τοῦ μάλιστα τιμωμένου παρ' αὐτοῖς
θεοῦ, μετὰ ταῦτα δὲ καὶ θεὸν προσαγορευθῆναι, καὶ 0.29
καταλαβόντα ἀντρῶδες τι χωρίον ἄβατον τοῖς ἄλ-
λοις ἐνταῦθα διαιτᾶσθαι, σπάνιον ἐντυγχάνοντα τοῖς
15 ἐκτὸς πλὴν τοῦ βασιλέως καὶ τῶν θεραπόντων· συμ-
πράττειν δὲ τὸν βασιλέα ὁρῶντα τοὺς ἀνθρώπους
προσέχοντας ἑαυτῷ πολὺ πλεόν ἢ πρότερον, ὥς ἐκφέ-
ρουντι τὰ προστάγματα κατὰ συμβουλήν θεῶν. τουτὶ
δὲ τὸ ἔθος διέτεινεν ἄχρι καὶ εἰς ἡμᾶς, ἀεὶ τινος εὐρι-
20 σκομένου τοιούτου τὸ ἥθος, ὃς τῷ μὲν βασιλεῖ σύμ-
βουλος ὑπῆρχε, παρὰ δὲ τοῖς Γέταις ὠνομάζετο θεός·
καὶ τὸ ὄρος ὑπελήφθη ἱερόν, καὶ προσαγορεύουσιν
οὕτως· ὄνομα δ' αὐτῷ Κωγαίονον ὁμώνυμον τῷ πα-
ραρρέοντι ποταμῷ. καὶ δὴ ὅτε Βυρεβίστας ἦρχε τῶν
25 Γετῶν, ἐφ' ὃν ἤδη παρεσκευάσατο Καῖσαρ ὁ θεὸς στρα-
τεύειν, Δεκαίνεος εἶχε ταύτην τὴν τιμὴν, καὶ πῶς τὸ
τῶν ἐμψύχων ἀπέχεσθαι Πυθαγόρειον τοῦ Ζαμόλξιος
ἔμεινε παραδοθέν.

Τοιαῦτα μὲν οὖν [οὐ] κακῶς ἂν τις διαποροίῃ περὶ 6
30 τῶν κειμένων παρὰ τῷ ποιητῇ περὶ τε Μυσῶν καὶ

1. post ἀπιστητέον : καὶ ἐμψύχων ἀπέχεσθαι δι' εὐσέβειαν

ἀγανῶν ἱππημολγῶν· ἃ δ' Ἀπολλόδωρος ἐν τῷ δευ-
 τερῳ περὶ νεῶν προοιμιαζόμενος εἰρηκεν ἥκιστα λέγοιτ'
 ἄν. ἐπαινεῖ γὰρ Ἑρατοσθένους ἀπόφασιν, ὅτι φησὶν
 ἐκεῖνος καὶ Ὅμηρον καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς παλαιοὺς τὰ
 μὲν Ἑλληνικὰ εἰδέναι τῶν δὲ πόρρω πολλὴν ἔχειν⁵
 ἀπειρίαν, ἀπείρους μὲν μακρῶν ὁδῶν ὄντας ἀπείρους
 δὲ τοῦ ναυτίλλεσθαι. συνηγορῶν δὲ τούτοις Ὅμηρόν
 φησι τὴν μὲν Αὐλίδαν καλεῖν πετρήεσσαν, ὥσπερ καὶ
 ἔστι, πολύκνημον δὲ τὸν Ἑτεύωνόν, πολυτρήρωνα δὲ
 τὴν Θίσβην, ποιήεντα δὲ τὸν Ἀλάρτον· τὰ δ' ἄπωθεν¹⁰
 οὔτ' αὐτὸν εἰδέναι οὔτε τοὺς ἄλλους. ποταμῶν γοῦν
 περὶ τετταράκοντα ῥεόντων εἰς τὸν Πόντον μηδὲ τῶν
 ἐνδοξοτάτων μηδενὸς μεμνησθαι, οἷον Ἴστρου Ταναί-
 δος Βορουσθένους Ὑπάνιος Φάσιδος Θερμώδοντος Ἀλ-
 υος· ἔτι δὲ Σκυθῶν μὲν μὴ μεμνησθαι, πλάττειν δὲ¹⁵
 ἀγανούς τινας ἱππημολγοὺς καὶ γαλακτοφάγους ἀβί-
 ους τε, Παφλαγόνους τε τοὺς ἐν τῇ μεσογαίᾳ ἱστορηκέ-
 ναι παρὰ τῶν πεξῇ τοῖς τόποις πλησιασάντων, τὴν πα-
 ραλίαν δὲ ἄγνωεῖν· καὶ εἰκότως γε. ἄπλουν γὰρ εἶναι
 τότε τὴν θάλατταν ταύτην καὶ καλεῖσθαι Ἀξενον διὰ²⁰
 τὸ δυσχεαίμερον καὶ τὴν ἀγριότητα τῶν περιοικούντων
 ἔθνων καὶ μάλιστα τῶν Σκυθικῶν, ξενοθυτούντων
 καὶ σαρκοφαγούντων καὶ τοῖς κρανίοις ἐκπώμασι χρω-
 C.299μένων· ὕστερον δ' Εὐξεινον κεκλησθαι τῶν Ἰώνων
 ἐν τῇ παραλίᾳ πόλεις κτισάντων· ὁμοίως δ' ἄγνωεῖν²⁵
 καὶ τὰ περὶ Αἴγυπτον καὶ Αἰβύην, οἷον τὰς ἀναβάσεις
 τοῦ Νείλου καὶ προσχώσεις τοῦ πελάγους, ὧν οὐδα-
 μοῦ μεμνησθαι, οὐδὲ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ μεταξὺ τῆς Ἑρ-
 θρᾶς καὶ τῆς Αἰγυπτίας θαλάττης, οὐδὲ τῶν κατὰ τὴν
 Ἀραβίαν καὶ Αἰθιοπίαν καὶ τὸν ὠκεανόν, εἰ μὴ Ζή-³⁰
 νωνι τῷ φιλοσόφῳ προσεκτέον γράφονται „Αἰθιοπίας
 „θ' ἰκόμεν καὶ Σιδονίους Ἀραβάς τε.“ οὐ θαυμαστὸν

δ' εἶναι περὶ Ὀμήρου· καὶ γὰρ τοὺς ἔτι νεωτέρους ἐκεί-
 νου πολλὰ ἀγνοεῖν καὶ τερατολογεῖν, Ἡσίοδον μὲν
 Ἡμίκκνας λέγοντα καὶ Μεγαλοκεφάλους καὶ Πυγμαί-
 ους, Ἀλκμᾶνα δὲ Στεγανόποδας, Αἰσχύλον δὲ κυνο-
 5 κεφάλους καὶ στερνοφθάλμους καὶ μονομμάτους καὶ
 ἄλλα μυρία. ἀπὸ δὲ τούτων ἐπὶ τοὺς συγγραφέας βα-
 διζεῖ Ριπαῖα ὄρη λέγοντας καὶ τὸ Ὠγύιον ὄρος καὶ τὴν
 τῶν Γοργόνων καὶ Ἑσπερίδων κατοικίαν, καὶ τὴν παρὰ
 Θεοπόμπῳ Μεροπίδα γῆν, παρ' Ἑκαταίῳ δὲ Κιμμε-
 10 ρίδα πόλιν, παρ' Εὐνήμερῳ δὲ τὴν Παργαῖαν γῆν, παρ'
 Ἀριστοτέλει δὲ ποταμίους λίθους ἐξ ἄμμου... ἐκ δὲ τῶν
 ὄμβρων τήκεσθαι, ἐν δὲ τῇ Διβύῃ Διονύσου πόλιν εἶ-
 ναι, ταύτην δ' οὐκ ἐνδέχεσθαι δις τὸν αὐτὸν ἐξευρεῖν.
 ἐπιτιμᾷ δὲ καὶ τοῖς περὶ Σικελίαν τὴν πλάνην λέγουσι
 15 καθ' Ὅμηρον τὴν Ὀδυσσεῶς· εἰ γὰρ * αὖ χρῆναι τὴν
 μὲν πλάνην ἐκεῖ γεγονέναι φάσκειν, τὸν δὲ ποιητὴν
 ἐξωκεανικῆναι μυθολογίας χάριν. καὶ τοῖς μὲν ἄλλοις
 συγγνώμην εἶναι, Καλλιμάχῳ δὲ μὴ πάνυ μεταποιου-
 μένῳ γε γραμματικῆς, ὃς τὴν μὲν Γαῦδον Καλυψοῦς
 20 νῆσόν φησι, τὴν δὲ Κόρκυραν Σχερίαν. ἄλλους δ' αἰ-
 τιᾶται ψεύσασθαι περὶ Γερήνων καὶ τοῦ Ἀκακησίου
 καὶ Δήμου ἐν Ἰθάκῃ, Πελεθρονίου δ' ἐν Πηλίῳ, Γλαυ-
 κωπίου δ' ἐν Ἀθήναις. τούτοις δὲ μικρά τινα προσθεῖς
 τοιαῦτα παύεται, τὰ πλεῖστα μετενέγκας παρὰ τοῦ
 25 Ἑρατοσθένους, ὥς καὶ πρότερον ἐμνήσθημεν, οὐκ εὖ
 εἰρημένα. τὸ μὲν γὰρ τοὺς ὕστερον ἐμπειροτέρους γε-
 γονέναι τῶν πάλαι περὶ τὰ τοιαῦτα καὶ Ἑρατοσθένει
 καὶ τούτῳ δοτέον· τὸ δ' οὕτω πέρα τοῦ μετρίου προά-
 γειν καὶ μάλιστα ἐφ' Ὀμήρου, δοκεῖ μοι καὶ ἐπιπλη-
 30 ξαί τις δικαίως καὶ τούναντίον εἰπεῖν, ὥς περὶ τῶν

5. post μονομμάτους: ἐν τῷ Προμηθεΐ φησι,

Ο.300 ἄγνοοῦσιν αὐτοί, περὶ τούτων τῷ ποιητῇ προφέρουσι.
τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα οἰκείας μνήμης
τυγχάνει, τὰ δ' ἐν τοῖς καθόλου.

- 7 Νυνὶ δὲ περὶ Θρακῶν ἐλέγομεν, „Μυσῶν τ' ἄρχε-
„μάχων καὶ ἀγαυῶν ἱππημολγῶν, γλακτοφάγων ἄβι- 5
„ων τε, δικαιοτάτων ἀνθρώπων,“ βουλόμενοι συγκρί-
ναι τὰ τε ὑφ' ἡμῶν καὶ τὰ ὑπὸ Ποσειδωνίου λεχθέντα
καὶ τὰ ὑπὸ τούτων· πρότερον δ' ὅτι τὴν ἐπιχείρησιν
ὑπεναντίαν τοῖς προτεθεῖσι πεποιήνται. προὔθεντο
μὲν γὰρ διδάξαι διότι τῶν πόρρω τῆς Ἑλλάδος πλείων 10
ἦν ἄγνοια τοῖς πρεσβυτέροις ἢ τοῖς νεωτέροις, ἔδειξαν
δὲ τὰναντία, καὶ οὐ [κατὰ] τὰ πόρρω μόνον ἀλλὰ καὶ
τὰ ἐν αὐτῇ τῇ Ἑλλάδι. ἀλλ', ὥς ἔφην, τὰ ἄλλα μὲν
ὑπερκείσθω, τὰ δὲ νῦν σκοπῶμεν. Σκυθῶν μὲν γὰρ
[μὴ] μεμνησθαι κατ' ἄγνοιάν φασι, μηδὲ τῆς περὶ τοὺς 15
ξένους ὁμότητος αὐτῶν, καταθύνωντων καὶ σαρκοφα-
γούντων καὶ τοῖς κρανίοις ἐκπώμασι χρωμένων, δι'
οὓς Ἀξενος ὠνομάζετο ὁ πόντος, πλάττειν δ' ἀγαυούς
τινας ἱππημολγοὺς γαλακτοφάγους ἄβιους τε, δι-
καιοτάτους ἀνθρώπους, τοὺς οὐδαμοῦ γῆς ὄντας. πῶς 20
οὖν Ἀξενον ὠνόμαζον, εἰ μὴ ἥδεισαν τὴν ἀγριότητα,
μηδ' αὐτοὺς τοὺς μάλιστα τοιούτους; οὗτοι δ' εἰσὶ δῆ-
που οἱ Σκύθαι. πρότερον δ' οὐδ' ἱππημολγοὶ ἦσαν οἱ
ἐπέκεινα τῶν Μυσῶν καὶ Θρακῶν καὶ Γετῶν, οὐδὲ
γαλακτοφάγοι καὶ ἄβιοι; ἀλλὰ καὶ νῦν εἰσιν ἁμάξοι- 25
κοι καὶ νομάδες καλούμενοι, ζῶντες ἀπὸ θρεμμάτων
καὶ γάλακτος καὶ τυροῦ καὶ μάλιστα ἱππέου, θησαν-
ρισμὸν δ' οὐκ εἰδότες οὐδὲ καπηλείαν πλὴν εἰ φόρ-
τον ἀντὶ φόρτου. πῶς οὖν ἡγνόει τοὺς Σκύθας ὁ ποι-
ητής, ἱππημολγοὺς καὶ γαλακτοφάγους τινὰς προσ- 30
γορεύων; ὅτι γὰρ οἱ τότε τούτους ἱππημολγοὺς ἐκά-
λουν, καὶ Ἡσίοδος μάρτυς ἐν τοῖς ὑπ' Ἐρατοσθένους

παρατεθείσιν ἔπεσιν „Αἰθίοπας τε Αἴγυς τε ἰδὲ Σκύ-
 ,,θας ἱππημολγούς.“ τί δὲ θαυμαστόν, εἰ διὰ τὸ πλεο-
 νάζειν παρ' ἡμῖν τὴν περὶ τὰ συμβόλαια ἀδικίαν δι-
 καιοτάτους εἶπεν ἀνθρώπους τοὺς ἥκιστα ἐν τοῖς συμ-
 5 βολαίοις καὶ τῷ ἀργυρισμῷ ζῶντας, ἀλλὰ καὶ κοινὰ κε-
 κτημένους πάντα πλὴν ξίφους καὶ ποτηρίου, ἐν δὲ τοῖς
 πρῶτον τὰς γυναῖκας πλατωνικῶς ἔχοντας κοινὰς καὶ
 τέκνα; καὶ Αἰσχύλος δ' ἐμφαίνει συνηγορῶν τῷ ποι-
 ητῇ φήσας περὶ τῶν Σκυθῶν „ἀλλ' ἱππάκης βρωτῆρεςC.301
 10 „εὐνομοὶ Σκύθαι.“ αὕτη δ' ἡ ὑπόληψις καὶ νῦν ἔτι συμ-
 μένει παρὰ τοῖς Ἑλλήσιν· ἀπλουστάτους τε γὰρ αὐτοὺς
 νομίζομεν καὶ ἥκιστα κακεντρεχεῖς εὐτελεστεροὺς τε
 πολὺ ἡμῶν καὶ αὐταρκεστεροὺς· καίτοι ὁ γε καθ' ἡμᾶς
 βίος εἰς πάντας σχεδόν τι διατέτακε τὴν πρὸς τὸ χεῖρον
 15 μεταβολήν, τρυφήν καὶ ἡδονὰς καὶ κακοτεχνίας καὶ
 πλεονεξίας μυρίας πρὸς ταῦτ' εἰσάγων. πολὺ οὖν τῆς
 τοιαύτης κακίας καὶ εἰς τοὺς βαρβάρους ἐμπέπτωκε τοὺς
 τε ἄλλους καὶ τοὺς νομάδας· καὶ γὰρ θαλάττης ἀψάμε-
 νοι χεῖρους γεγόνασι ληστεύοντες καὶ ξινοκτονοῦντες,
 20 καὶ ἐπιπλεκόμενοι πολλοῖς μεταλαμβάνουσι τῆς ἐκεί-
 νων πολυτελείας καὶ καπηλείας· ἃ δοκεῖ μὲν εἰς ἡμε-
 ρότητα συντείνειν, διαφθείρει δὲ τὰ ἥθη καὶ ποικι-
 λίαν ἀντὶ τῆς ἀπλότητος τῆς ἄρτι λεχθείσης εἰσάγει.

Οἱ μέντοι πρὸ ἡμῶν καὶ μάλιστα οἱ ἐγγύς τοῖς 8
 25 Ὀμήρου χρόνοις τοιοῦτοί τινες ἦσαν καὶ ὑπελαμβά-
 νοντο παρὰ τοῖς Ἑλλήσιν ὁποίους Ὀμηρὸς φησιν. ὅρα
 δὲ ἃ λέγει Ἡρόδοτος περὶ τοῦ τῶν Σκυθῶν βασιλέως,
 ἔφ' ὃν ἐστράτευσε Δαρεῖος, καὶ τὰ ἐπεσταλμένα παρ'
 αὐτοῦ. ὅρα δὲ καὶ ἃ λέγει Χρύσιππος περὶ τῶν τοῦ Βο-
 30 σπόρου βασιλέων τῶν περὶ Λεύκωνα. πλήρεις δὲ καὶ
 αἱ Περσικαὶ ἐπιστολαὶ τῆς ἀπλότητος ἧς λέγω, καὶ τὰ
 ὑπὸ τῶν Αἰγυπτίων καὶ Βαβυλωνίων καὶ Ἰνδῶν ἀπο-

μνημονεύόμενα. διὰ τοῦτο δὲ καὶ ὁ Ἀνάχαρσις καὶ Ἀβαρις καὶ τινες ἄλλοι τοιοῦτοι παρὰ τοῖς Ἕλλησιν εὐδοκίμουν, ὅτι ἔθνικόν τινα χαρακτηῖρα ἐπέφαινον εὐκολίας καὶ λιτότητος καὶ δικαιοσύνης. καὶ τί δει τοὺς πάλαι λέγειν; Ἀλέξανδρος γὰρ ὁ Φιλίππου κατὰ τὴν 5 ἐπὶ Θρᾷκας τοὺς ὑπὲρ τοῦ Αἵμου στρατεῖαν ἐμβαλὼν εἰς Τριβαλλοὺς, ὁρῶν μέχρι τοῦ Ἰστρου καθήκοντας καὶ τῆς ἐν αὐτῷ νήσου Πεύκης, τὰ πέραν δὲ Γέτας ἔχοντας, ἀφίχθαι λέγεται μέχρι δεῦρο, καὶ εἰς μὲν τὴν νῆσον ἀποβῆναι μὴ δύνασθαι σπάνει πλοίων (ἐκεῖσε γὰρ κα- 10 ταφυγόντα τὸν τῶν Τριβαλλῶν βασιλέα Σύρμον ἀντισχεῖν πρὸς τὴν ἐπιχειρήσιν), εἰς δὲ τοὺς Γέτας διαβάντα ἐλεῖν αὐτῶν πόλιν καὶ ἀναστρέφαι· διὰ ταχέων εἰς τὴν οἰκείαν, λαβόντα δῶρα [παρὰ] τῶν ἔθνων καὶ παρὰ τοῦ Σύρμου. φησὶ δὲ Πτολεμαῖος ὁ Λάγου κατὰ 15 ταύτην τὴν στρατεῖαν συμμῖξαι τῷ Ἀλεξάνδρῳ Κελτοὺς τοὺς περὶ τὸν Ἀδρίαν φιλίας καὶ ξενίας χάριν, δεξάμε- 0.302 νον δὲ αὐτοὺς φιλοφρόνως τὸν βασιλέα ἐρέσθαι παρὰ πότον, τί μάλιστα εἴη ὃ φοβοῦντο, νομίζοντα αὐτὸν ἐρεῖν· αὐτοὺς δ' ἀποκρίναςθαι ὅτι οὐδὲν πλὴν εἰ ἄρα 20 μὴ ὁ οὐρανὸς αὐτοῖς ἐπιπέσοι, φιλίαν γε μὴν ἀνδρὸς τοιοῦτου περὶ παντὸς τίθεσθαι. ταῦτα δὲ ἀπλότητος τῆς τῶν βαρβάρων ἐστὶ σημεῖα, τοῦ τε μὴ συγχωρήσαντος μὲν τὴν ἀπόβασιν τὴν εἰς τὴν νῆσον, δῶρα δὲ πέμπσαντος καὶ συνθεμένου φιλίαν, καὶ τῶν φοβεῖσθαι 25 μὲν οὐδένα φαιμέναν, φιλίαν δὲ περὶ παντὸς τίθεσθαι μεγάλων ἀνδρῶν. ὃ τε Δρομικαίτης κατὰ τοὺς διαδόχους ἦν Γετῶν βασιλεὺς· ἐκεῖνος τοίνυν λαβὼν ξωγρία Ἀυσίμαχον ἐπιστρατεύσαντα αὐτῷ, δεῖξας τὴν πενίαν τὴν τε ἑαυτοῦ καὶ τοῦ ἔθνους, ὁμοίως δὲ καὶ 30

την αὐτάρκειαν, ἐκέλευσε τοῖς τοιούτοις μὴ πολεμεῖν, ἀλλὰ φίλοις χρῆσθαι· ταῦτα δ' εἰπὼν, ξενίσας καὶ συνθέμενος φιλίαν ἀπέλυσεν αὐτόν.

- Ἐφορος δ' ἐν τῇ τετάρτῃ μὲν τῆς ἱστορίας Εὐ- 9
 5 ρώπῃ δ' ἐπιγραφομένη βίβλῳ, περιοδεύσας τὴν Εὐ-
 ρώπην μέχρι Σκυθῶν ἐπὶ τέλει φησὶν εἶναι τῶν τε ἄλ-
 λων Σκυθῶν καὶ τῶν Σαυροματῶν τοὺς βίους ἀνομο-
 ους· τοὺς μὲν γὰρ εἶναι χαλεποὺς ὥστε καὶ ἀνθρώπο-
 φραγεῖν, τοὺς δὲ καὶ τῶν ἄλλων ζώων ἀπέχεσθαι. οἱ μὲν
 10 οὖν ἄλλοι, φησί, τὰ περὶ τῆς ὁμότητος αὐτῶν λέγουσιν,
 εἰδότες τὸ δεινόν τε καὶ τὸ θαυμαστὸν ἐκπληκτικὸν ὄν·
 δεῖν δὲ τάναντία καὶ λέγειν καὶ παραδείγματα ποιεῖ-
 σθαι· καὶ αὐτὸς οὖν περὶ τῶν δικαιοτάτοις ἦθεσι χρω-
 μένων ποιήσεσθαι τοὺς λόγους· εἶναι γὰρ τινες τῶν
 15 νομάδων Σκυθῶν γάλακτι τρεφομένους ἵππων τῇ τε
 δικαιοσύνῃ πάντων διαφέρειν· μεμνηῆσθαι δ' αὐτῶν
 τοὺς ποιητάς, Ὅμηρον μὲν „γλακτοφάγων ἄβίων τε,
 „δικαιοτάτων ἀνθρώπων“ φήσαντα τὴν γῆν καθορᾶν
 τὸν Δία, Ἡσίοδον δ' ἐν τῇ καλουμένῃ γῆς περιόδῳ
 20 τὸν Φινέα ὑπὸ τῶν Ἀρπυιῶν ἄγεσθαι „γλακτοφάγων
 „εἰς γαῖαν ἀπῆναις οἰκί' ἐχόντων.“ εἴτ' αἰτιολογεῖ
 διότι ταῖς διαίταις εὐτελεῖς ὄντες καὶ οὐ χρηματισταὶ
 πρὸς τε ἀλλήλους εὐνομοῦνται, κοινὰ πάντα ἔχοντες
 τὰ τε ἄλλα καὶ τὰς γυναῖκας καὶ τέκνα καὶ τὴν ὅλην
 25 συγγένειαν, πρὸς τε τοὺς ἐκτὸς ἄμαχοί εἰσι καὶ ἀνίκη- C.303
 τοι, οὐδὲν ἔχοντες ὑπὲρ οὗ δουλεύσουσι. καλεῖ δὲ καὶ
 Χοιρίλον εἰπόντα ἐν τῇ διαβάσει τῆς σχεδίας ἣν ἔξευξε
 Δαρεῖος „μηλονόμοι τε Σάκαι, γενεῇ Σκύνθαι· αὐτὰρ
 „ἔναιον Ἀσίδα πυροφόρον· νομάδων γε μὲν ἦσαν ἅποι-

3. post αὐτόν: καὶ Πλάτων δὲ ἐν τῇ πολιτείᾳ τὴν θάλατταν ὥς πονηροδιδάσκαλον φεύγειν οἶεται δεῖν ὅτι πορρωτάτω τοὺς εὐ πολιτευσομένους καὶ μὴ οἰκεῖν ἐπ' αὐτῇ.

„κοι, ἀνθρώπων νομίων.“ καὶ τὸν Ἀνάχαρσιν δὲ σοφὸν καλῶν ὁ Ἐφορος τούτου τοῦ γένους φησὶν εἶναι· νομισθῆναι δὲ καὶ τῶν ἑπτὰ σοφῶν ἐπ’ εὐτελείᾳ σωφροσύνη καὶ συνέσει· εὐρήματά τε αὐτοῦ λέγει τὰ τε ζώπυρα καὶ τὴν ἀμφίβολον ἄγκυραν καὶ τὸν κεραμικὸν 5 τροχόν. ταῦτα δὲ λέγω σαφῶς μὲν εἰδῶς ὅτι καὶ οὗτος αὐτὸς οὐ τάληθέςτατα λέγει περὶ πάντων, καὶ δὴ καὶ τὸ τοῦ Ἀναχάρσιδος· πῶς γὰρ ὁ τροχὸς εὐρημα αὐτοῦ, ὃν οἶδεν Ὀμηρος πρεσβύτερος ὢν; ἀλλ’ ἐκεῖνα διασημῆναι βουλόμενος ὅτι κοινῇ τινι φήμῃ καὶ ὑπὸ τῶν 10 παλαιῶν καὶ ὑπὸ τῶν ὑστέρων πεπιστεῦσθαι συνέβαινε τὸ τῶν νομάδων, τοὺς μάλιστα ἀπωκισμένους ἀπὸ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων γαλακτοφάγους τε εἶναι καὶ ἀβίους καὶ δικαιοτάτους, ἀλλ’ οὐχ ὑπὸ Ὀμήρου πεπλάσθαι.

- 10 Περὶ τε τῶν Μυσῶν δίκαιός ἐστιν ὑποσχεῖν λόγον 15 τῶν ἐν τοῖς ἔπεσι λεγομένων Ἀπολλόδωρος, πότερ’ ἡγεῖται καὶ τούτους εἶναι πλάσμα, ὅταν φῇ ὁ ποιητῆς „Μυσῶν τ’ ἀρχεμάχων καὶ ἀγανῶν ἱππημολγῶν,“ ἢ τοὺς ἐν τῇ Ἀσίᾳ δέχεται. τοὺς μὲν οὖν ἐν τῇ Ἀσίᾳ δεχόμενος παρερμηνεύσει τὸν ποιητὴν, ὡς προείρηται, 20 πλάσμα [δὲ] λέγων, ὡς μὴ ὄντων ἐν τῇ Θράκῃ Μυσῶν, παρὰ τὰ ὄντα [ἔρει]. ἔτι γὰρ ἐφ’ ἡμῶν Αἰλλίος Κάτος μετῴκισεν ἐκ τῆς περαιᾶς τοῦ Ἰστροῦ πέντε μυριάδας σωματίων παρὰ τῶν Γετῶν, ὁμογλώττου τοῖς Θραξίν 25 ἔθνοισι, εἰς τὴν Θράκην· καὶ νῦν οἰκοῦσιν αὐτόθι Μοισοὶ καλούμενοι, ἦτοι καὶ τῶν πρότερον οὕτω καλουμένων, ἐν δὲ τῇ Ἀσίᾳ Μυσῶν μετονομασθέντων, ἢ ὅπερ οἰκειότερόν ἐστι τῇ ἱστορίᾳ καὶ τῇ ἀποφάσει τοῦ ποιητοῦ, τῶν ἐν τῇ Θράκῃ Μυσῶν καλουμένων

9. post ὢν: „ὡς δ’ ὅτε τις κεραμεὺς τροχὸν ἄρμενον ἐν πάλμῃσι“ καὶ τὰ ἑξῆς.

πρότερον. περὶ μὲν δὴ τούτων ἄλλης· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν ἐξῆς περιήγησιν.

Τῶν δὴ Γετῶν τὰ μὲν παλαιὰ ἀφείσθω, τὰ δ' εἰς 11
 ἡμᾶς ἤδη τοιαῦτα ὑπῆρξε. Βοιρεβίστας ἀνὴρ Γ' ἔτης, ἐπι-
 5 στὰς ἐπὶ τὴν τοῦ ἔθνους ἐπιστασίαν, ἀνέλαβε κεκακω-
 μένους τοὺς ἀνθρώπους ὑπὸ συχνῶν πολέμων καὶ το-
 σοῦτον ἐπῆρεν ἀσκήσει καὶ νήψει καὶ τῷ προσέχειν τοῖς
 προστάγμασιν, ὥστ' ὀλίγων ἐτῶν μεγάλην ἀρχὴν κα-0.304
 τεστήσατο καὶ τῶν ὁμόρων τοὺς πλείστους ὑπέταξε τοῖς
 10 Γέταις· ἤδη δὲ καὶ Ῥωμαίοις φοβερὸς ἦν, διαβαίνων
 ἀδεῶς τὸν Ἰστρον καὶ τὴν Θράκην λεηλατῶν μέχρι Μα-
 κεδονίας καὶ τῆς Ἰλλυρίδος, τοὺς τε Κελτοὺς τοὺς ἀνα-
 μεμιγμένους τοῖς τε Θραξὶ καὶ τοῖς Ἰλλυριοῖς ἐξεπόρθη-
 σε, Βόλους δὲ καὶ ἄρδην ἠφάνισε τοὺς ὑπὸ Κριτασίρρ
 15 καὶ Ταυρίσκους. πρὸς δὲ τὴν εὐπειθείαν τοῦ ἔθνους
 συναγωνιστὴν ἔσχε Δεκαίνεον ἄνδρα γόητα, πεπλανη-
 μένον κατὰ τὴν Αἴγυπτον καὶ προσημασίας ἐκμεμα-
 θηκότα τινάς, δι' ὧν ὑπεκρίνετο τὰ θεῖα· καὶ δι' ὀλί-
 γου καθίστατο θεός, καθάπερ ἔφαμεν περὶ τοῦ Ζα-
 20 μόλξεως διηγούμενοι. τῆς δ' εὐπειθείας σημείον· ἐπεί-
 σθησαν γὰρ ἐκκόψαι τὴν ἄμπελον καὶ ζῆν οἴνου χωρὶς.
 ὁ μὲν οὖν Βοιρεβίστας ἔφθη καταλυθεὶς ἐπαναστάν-
 των αὐτῷ τινων πρὶν ἢ Ῥωμαίους στείλαι στρατείαν
 ἐπ' αὐτόν· οἱ δὲ διαδεξάμενοι τὴν ἀρχὴν εἰς πλείω μέρη
 25 διέστησαν. καὶ δὴ καὶ νῦν, ἥνίκα ἐπεμψεν ἐπ' αὐτοὺς
 στρατείαν ὁ Σεβαστὸς Καῖσαρ, εἰς πέντε μερίδας, τότε
 δὲ εἰς τέτταρας διεστῶτες ἐτύγχανον· οἱ μὲν οὖν τοι-
 οῦτοι μερισμοὶ πρόσκαιροι καὶ ἄλλοι' ἄλλοι.

Γέγονε δὲ καὶ ἄλλος τῆς χώρας μερισμὸς συμμέ- 12
 30 νων ἐκ παλαιοῦ· τοὺς μὲν γὰρ Δακοὺς προσαγορεύ-
 ουνσι τοὺς δὲ Γέτας, Γέτας μὲν τοὺς πρὸς τὸν Πόντον
 κεκλιμένους καὶ πρὸς τὴν ἕω, Δακοὺς δὲ τοὺς εἰς τὰ-

ναντία πρὸς τὴν Γερμανίαν καὶ τὰς τοῦ Ἰστρου πηγάς, οὓς οἶμαι Δάους καλεῖσθαι τὸ παλαιόν· ἅφ' οὗ καὶ παρὰ τοῖς Ἀττικοῖς ἐπεπόλασε τὰ τῶν οἰκετῶν ὀνόματα Γέται καὶ Δάοι. τοῦτο γὰρ πιθανώτερον ἢ ἀπὸ τῶν Σκυθῶν οὓς καλοῦσι Δάας· πόρρω γὰρ ἐκεῖνοι 5 περὶ τὴν Τρκανίαν, καὶ οὐκ εἰκὸς ἐκεῖθεν κομίζεσθαι ἀνδράποδα εἰς τὴν Ἀττικὴν. ἐξ ὧν γὰρ ἐκομίζετο, ἢ τοῖς ἔθνεσιν ἐκείνοις ὁμωνύμους ἐκάλουν τοὺς οἰκέτας, ὥς Λυδὸν καὶ Σύρον, ἢ τοῖς ἐπιπολάζουσιν ἐκεῖ ὀνόμασι προσηγόρευον, ὥς Μάνην ἢ Μίδαν τὸν Φρύ- 10 γα, Τίβιον δὲ τὸν Παφλαγόνα. ἐπὶ τοσοῦτον δ' ὑπὸ τοῦ Βοιρεβλίστα τὸ ἔθνος ἐξαφθὲν ἐταπεινώθη τελέως ὑπὸ τε τῶν στάσεων καὶ τῶν Ῥωμαίων· ἱκανοὶ δ' ὅμως εἶσιν ἔτι καὶ νῦν στέλλειν τέτταρας μυριάδας.

- 13 Ῥεῖ δὲ δι' αὐτῶν Μάρισος ποταμὸς εἰς τὸν Δα- 15
 νούιον, ᾧ τὰς παρασκευὰς ἀνεκόμεζον οἱ Ῥωμαῖοι τὰς
 πρὸς τὸν πόλεμον· καὶ γὰρ τοῦ ποταμοῦ τὰ μὲν ἄνω
 καὶ πρὸς ταῖς πηγαῖς μέρη μέχρι τῶν καταρακτῶν Δα-
 νούιον προσηγόρευον, ἃ μάλιστα διὰ τῶν Δακῶν φέ-
 C.305 ρεται, τὰ δὲ κάτω μέχρι τοῦ Πόντου τὰ παρὰ τοὺς Γέ- 20
 τας καλοῦσιν Ἰστρον· ὁμόγλωττοι δ' εἰσὶν οἱ Δακοὶ
 τοῖς Γέταις. παρὰ μὲν οὖν τοῖς Ἑλλήσιν οἱ Γέται γνω-
 ρίζονται μᾶλλον διὰ τὸ συνεχεῖς τὰς μεταναστάσεις
 ἑφ' ἑκάτερα τοῦ Ἰστρου ποιεῖσθαι καὶ τοῖς Μοισοῖς
 ἀναμεμῖχθαι· καὶ τὸ τῶν Τριβαλλῶν δ' ἔθνος, Θρακι- 25
 κὸν ὄν, τὸ αὐτὸ πέπονθε τοῦτο. μεταναστάσεις γὰρ
 δέδεκται, τῶν πλησιοχώρων εἰς τοὺς ἀσθενεστέρους
 ἐξαναστάντων, τῶν μὲν ἐκ τῆς περαιᾶς Σκυθῶν καὶ
 Βασταρνῶν καὶ Σαυροματῶν ἐπικρατούντων πολλά-
 κισ, ὥστε καὶ ἐπιδιαβαίνειν τοῖς ἐξελαθεῖσι καὶ κατα- 30
 μένειν τινας αὐτῶν ἢ ἐν ταῖς νήσοις ἢ ἐν τῇ Θράκῃ·
 τῶν δ' ἐκ θατέρου μέρους ὑπ' Ἰλλυριῶν μάλιστα κα-

τισχυομένων. ἀνξηθέντες δ' οὖν ἐπὶ πλείστον οἳ τε
 Γέται οἳ τε Λακοί, ὥστε καὶ εἰκοσιμυριάδας ἐκπέμπειν
 στρατείας, νῦν ὅσον εἰς τέτταρας μυριάδας συνεσταλ-
 μένοι τυγγάνουσι, καὶ ἐγγὺς μὲν ἤκουσι τοῦ ὑπακού-
 5 εἰν Ῥωμαίων, οὐπω δ' εἰσὶν ὑποχείριοι τελέως διὰ τὰς
 ἐκ τῶν Γερμανῶν ἐλπίδας πολεμίων ὄντων τοῖς Ῥω-
 μαίοις.

Μεταξὺ δὲ τῆς Ποντικῆς θαλάττης τῆς ἀπὸ Ἰστρου 14
 ἐπὶ Τύραν καὶ ἡ τῶν Γετῶν ἐρημία πρόκειται πεδιάς
 10 πᾶσα καὶ ἄνυδρος, ἐν ἣ Ἀραεῖος ἀποληφθεὶς ὁ Ὑστά-
 σπew, καθ' ὃν καιρὸν διέβη τὸν Ἰστρον ἐπὶ τοὺς Σκύ-
 θας, ἐκινδύνευσε πανστρατιᾷ δίψῃ διαλυθῆναι· συν-
 ἦκε δ' ὁπὲ καὶ ἀνέστρεψε. Λυσίμαχος δ' ὕστερον
 στρατεύσας ἐπὶ Γέτας καὶ τὸν βασιλέα Δρομιχαίτην
 15 οὐκ ἐκινδύνευσε μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐάλω ζωογρίᾳ· πάλιν
 δ' ἐσώθη τυχὼν εὐγνώμονος τοῦ βαρβάρου, καθάπερ
 εἶπον πρότερον.

Πρὸς δὲ ταῖς ἐκβολαῖς μεγάλη νῆσός ἐστιν ἡ Πεύ- 15
 κη· κατασχόντες δ' αὐτὴν Βαστάρναι Πευκῖνοι προση-
 20 γορεύθησαν· εἰσὶ δὲ καὶ ἄλλαι νῆσοι πολὺ ἐλάττους,
 αἱ μὲν ἀνωτέρω ταύτης αἱ δὲ πρὸς τῇ θαλάττῃ. ἐπτά-
 στομος γάρ ἐστι· μέγιστον δὲ τὸ ἱερὸν στόμα καλού-
 μενον, δι' οὗ σταδίων ἀνάπλους ἐπὶ τὴν Πεύκην ἑκα-
 τὸν εἴκοσιν, ἧς κατὰ τὸ κάτω μέρος ἐποίησε τὸ ξεῦγμα
 25 Ἀραεῖος· δύναιτο δ' ἂν ξευχθῆναι καὶ κατὰ τὸ ἄνω.
 τοῦτο δὲ καὶ πρῶτόν ἐστι στόμα ἐν ἀριστερᾷ εἰσπλέ-
 οντι εἰς τὸν Πόντον· τὰ δ' ἑξῆς ἐν παράπλῳ τῷ ἐπὶ τὸν
 Τύραν· διέχει δ' ἀπ' αὐτοῦ τὸ ἔβδομον στόμα περὶ
 τριακοσίους σταδίους. γίνονται οὖν μεταξὺ τῶν στο-
 30 μάτων νησίδες. τὰ μὲν δὴ τρία στόματα τὰ ἐφεξῆς τῷ
 ἱερῷ στόματι ἐστὶ μικρά, τὰ δὲ λοιπὰ τοῦ μὲν πολὺ
 ἐλάττονα τῶν δὲ μέζονα· Ἐφορος δὲ πεντάστομον

εἰρηκε τὸν Ἰστρον. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ Τύραν ποταμὸν
C.306 πλωτὸν ἐνακόσιοι στάδιοι· ἐν δὲ τῷ μεταξὺ δύο λίμναι
μεγάλαι, ἡ μὲν ἀνεφωγμένη πρὸς τὴν θάλατταν ὥστε
καὶ λιμένι χρῆσθαι, ἡ δ' ἄστομος.

16 Ἐπὶ δὲ τῷ στόματι τοῦ Τύρα πύργος ἐστὶ Νεοπτο- 5
λέμου καλούμενος καὶ κώμη Ἑρμώνακτος λεγομένη.
ἀναπλεύσαντι δὲ ἑκατὸν τετταράκοντα σταδίους ἐφ'
ἐκάτερα πόλεις, ἡ μὲν Νικωνία ἡ δ' ἐν ἀριστερᾷ Ὀφι-
οῦσσα· οἱ δὲ προσοικοῦντες τῷ ποταμῷ * πόλιν φασὶν
ἀνιόντι ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίους. διέχει δὲ τοῦ στό- 10
ματος ἡ νῆσος ἡ Λευκὴ διάγραμμα πεντακοσίων σταδίων,
ἰερὰ τοῦ Ἀχιλλέως, πελαγία.

17 Εἴτα Βορυσθένης ποταμὸς πλωτὸς ἐφ' ἑξακοσίους
σταδίους καὶ πλησίον ἄλλος ποταμὸς Ὑπανις καὶ νῆ-
σος πρὸ τοῦ στόματος τοῦ Βορυσθένου ἔχουσα λι- 15
μένα. πλεύσαντι δὲ τὸν Βορυσθένη σταδίους διακο-
σίους ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ πόλις· ἡ δ' αὐτὴ καὶ Ὀλ-
βία καλεῖται, μέγα ἐμπόριον, κτίσμα Μιλησίων. ἡ δὲ
ὑπερκειμένη πᾶσα χώρα τοῦ λεχθέντος μεταξὺ Βορυ-
σθένου καὶ Ἰστρον πρώτη μὲν ἐστὶν ἡ τῶν Γετῶν ἐρη- 20
μία, ἔπειτα οἱ Τυρεγέται, μεθ' οὓς οἱ Ἰάξυρες Σαρμάται
καὶ οἱ Βασίλειοι λεγόμενοι καὶ * Οὔργοι, τὸ μὲν πλέον
νομάδες, ὀλίγοι δὲ καὶ γεωργίας ἐπιμελούμενοι· τού-
τους φασὶ καὶ παρὰ τὸν Ἰστρον οἰκεῖν, ἐφ' ἐκάτερα
πολλάκις. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ Βαστάρναι μὲν τοῖς Τυ- 25
ρεγέταις ὄμοροι καὶ Γερμανοῖς, σχεδὸν τι καὶ αὐτοὶ
τοῦ Γερμανικοῦ γένους ὄντες, εἰς πλείω φῦλα διηρη-
μένοι. καὶ γὰρ Ἀτμονοὶ λέγονται τινες καὶ Σιδόνες, οἱ
δὲ τὴν Πεύκην κατασχόντες τὴν ἐν τῷ Ἰστροῦ νῆσον
Πευκῖνοι, Ῥωξολανοὶ δ' ἀρκτικώτατοι τὰ μεταξὺ τοῦ 30
Ταναΐδος καὶ Βορυσθένου νεμόμενοι πεδία. ἡ γὰρ
προσάρκτιος πᾶσα ἀπὸ Γερμανίας μέχρι τῆς Κασπίας

πεδιάς ἐστίν, ἣν ἴσμεν· ὑπὲρ δὲ τῶν Ῥωξολανῶν εἴ-
 τινες οἰκοῦσιν οὐκ ἴσμεν. οἱ δὲ Ῥωξολανοὶ καὶ πρὸς
 τοὺς Μιθριδάτου τοῦ Εὐπάτορος στρατηγοὺς ἐπολέ-
 μουν ἔχοντες ἡγεμόνα Τάσιον· ἦκον δὲ Παλάκῳ συμ-
 5 μαχήσοντες τῷ Σκιλούρου, καὶ ἐδόκουν μὲν εἶναι μά-
 χιμοι, πρὸς μέντοι συντεταγμένην φάλαγγα καὶ ὥπλι-
 σμένην καλῶς τὸ βάρβαρον φῦλον ἀσθενὲς πᾶν ἐστὶ
 καὶ τὸ γυμνητικόν. ἐκείνοι γοῦν περὶ πέντε μυριάδας
 πρὸς ἑξακισχιλίους τοὺς Διοφάντῳ, τῷ τοῦ Μιθριδά-
 10 του στρατηγῷ, συμπαραταξαμένους οὐκ ἀντέσχον,
 ἀλλ' οἱ πλεῖστοι διεφθάρησαν. χρῶνται δὲ ὠμοβολῆνις
 κρᾶνεσι καὶ θώραξι, γερροφόροι, ἀμυντήρια δ' ἔχοντες
 καὶ λόγχας καὶ τόξον καὶ ξίφος· τοιοῦτοι δὲ καὶ τῶν
 ἄλλων οἱ πλείους. τῶν δὲ νομάδων αἱ σκηναὶ πιλωταὶ 0.30*
 15 πεπήγασιν ἐπὶ ταῖς ἀμάξαις, ἐν αἷς διαιτῶνται· περὶ δὲ
 τὰς σκηναὺς τὰ βοσκήματα, ἀφ' ὧν τρέφονται καὶ γά-
 λακτι καὶ τυρῷ καὶ κρέασιν· ἀκολουθοῦσι δὲ ταῖς νο-
 μαῖς μεταλαμβάνοντες τόπους ἀεὶ τοὺς ἔχοντας πόαν,
 χειμῶνος μὲν ἐν τοῖς ἔλεσι τοῖς περὶ τὴν Μαιῶτιν, θιέ-
 20 ρους δὲ καὶ ἐν τοῖς πεδίοις.

Ἄπασα δ' ἡ χώρα δυσχεύμερός ἐστι μέχρι τῶν ἐπὶ 18
 θαλάττῃ τόπων τῶν μεταξὺ Βορυσθένους καὶ τοῦ στό-
 ματος τῆς Μαιώτιδος· αὐτῶν δὲ τῶν ἐπὶ θαλάττῃ τὰ
 ἀρκτικώτατα τὸ τε στόμα τῆς Μαιώτιδος καὶ ἐτι μᾶλ-
 25 λον τὸ τοῦ Βορυσθένους [καὶ] ὁ μυχὸς τοῦ Ταμυράκου
 κόλπου, [τοῦ] καὶ Καρκινίτου, καθ' ὃν ὁ ἰσθμὸς τῆς
 μεγάλης χειρρονήσου. δηλοῖ δὲ τὰ ψύχη, καίπερ ἐν πε-
 δίοις οἰκοῦντων· ὄνους τε γὰρ οὐ τρέφουσι (δύσριγον
 γὰρ τὸ ξῶν), οἳ τε βόες οἱ μὲν ἄκερῳ γεννῶνται, τῶν
 30 δ' ἀπορρινῶσι τὰ κέρατα (καὶ γὰρ τοῦτο δύσριγον τὸ
 μέρος), οἳ τε ἵπποι μικροί, τὰ δὲ πρόβατα μεγάλα· ῥήτ-
 τονται δὲ χαλκαὶ ὑδρίαι, τὰ δ' ἐνόντα συμπήττεται.

τῶν δὲ πάγων ἡ σφοδρότης μάλιστα ἐκ τῶν συμβαινόντων περὶ τὸ στόμα τῆς Μαιώτιδος δηλὸς ἐστίν. ἀμαξεύεται γὰρ ὁ διάπλους ὁ εἰς Φαναγόρειαν ἐκ τοῦ Παντικαπαίου, ὥστε καὶ πλοῦν εἶναι καὶ ὁδόν· Νεοπτόλεμον δὲ φασὶ τὸν τοῦ Μιθριδάτου στρατηγὸν ἐν 5 τῷ αὐτῷ πόρῳ θέρους μὲν ναυμαχίᾳ περιγενέσθαι τῶν βαρβάρων, χειμῶνος δ' ἱππομαχίᾳ. ὀρυκτοὶ τέ εἰσιν ἰχθυῖες οἱ ἀποληφθέντες ἐν τῷ κρυστάλλῳ τῇ προσαγορευομένῃ γαγγάμῃ, καὶ μάλιστα οἱ ἀντακαῖοι, δελφῖσι πάρισοι τὸ μέγεθος. φασὶ δὲ καὶ τὴν ἄμπελον 10 ἐν τῷ Βοσπόρῳ κατορύττεσθαι χειμῶνος, ἐπαμῶντων πολὺ τῆς γῆς. λέγεται δὲ καὶ τὰ καύματα σφοδρὰ γίνεσθαι, τάχα μὲν τῶν σωμάτων ἀηδιζομένων, τάχα δὲ τῶν πεδίων ἀννηνεμούντων τότε, ἢ καὶ τοῦ πάχους τοῦ ἄερος ἐκθερμαινομένου πλέον, καθάπερ ἐν τοῖς νέφε- 15 σιν οἱ παρήλιοι ποιοῦσιν. Ἀτέας δὲ δοκεῖ τῶν πλείστων ἄρξαι τῶν ταύτῃ βαρβάρων ὁ πρὸς Φίλιππον πολεμήσας τὸν Ἀμύντου.

- 19 Μετὰ δὲ τὴν πρὸ τοῦ Βορυσθένους νῆσον ἐξῆς πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ὁ πλοῦς ἐπὶ ἄκραν τὴν τοῦ Ἀχιλ- 20 λείου δρόμου, ψιλὸν μὲν χωρίον καλούμενον δ' ἄλσος, ἱερὸν Ἀχιλλέως· εἶθ' ὁ Ἀχιλλεῖος δρόμος, ἀλιτενῆς χειρόνησος· ἐστὶ γὰρ ταινία τις ὅσον χιλίων σταδίων μῆκος ἐπὶ τὴν ἑω, πλάτος δὲ τὸ μέγιστον δυεῖν σταδίων, ἐλάχιστον τεττάρων πλέθρων, διέχουσα τῆς 25 ἐκατέρωθεν τοῦ αὐχένος ἡπείρου σταδίους ἐξήκοντα, C.308 ἀμμῶδης, ὕδωρ ἔχουσα ὀρυκτόν· κατὰ μέσσην δ' ὁ τοῦ ἰσθμοῦ αὐχὴν ὅσον τετταράκοντα σταδίων· τελευτᾷ δὲ πρὸς ἄκραν ἣν Ταμυράκην καλοῦσιν, ἔχουσαν ὕφορμον βλέποντα πρὸς τὴν ἡπειρον· μεθ' ἣν ὁ Καρ- 30 κινίτης κόλπος εὐμεγέθης, ἀνέχων πρὸς τὰς ἄρκτους ὅσον ἐπὶ σταδίους χιλίους, οἱ δὲ καὶ τριπλασίους φασὶ

μέχρι τοῦ μυχοῦ καλοῦνται δὲ Τάφριοι. τὸν δὲ
κόλπον καὶ Ταμυράκην καλοῦσιν ὁμωνύμως τῇ ἄκρᾳ.

Ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ ἰσθμὸς ὁ διείργων τὴν σα- 4
πρὰν λεγομένην λίμνην ἀπὸ τῆς θαλάττης σταδίων
5 [ᾧν] τετταράκοντα καὶ ποιῶν τὴν Ταυρικὴν καὶ Σκυ-
θικὴν λεγομένην χειρρόνησον· οἱ δὲ τριακοσίων ἐξή-
κοντα τὸ πλάτος τοῦ ἰσθμοῦ φασιν. ἡ δὲ σαπρὰ λίμνη
σταδίων μὲν καὶ τετρακισχιλίων λέγεται, μέρος δ' ἐστὶ
τῆς Μαιώτιδος τὸ πρὸς δύσιν· συνεστόμωται γὰρ αὐτῇ
10 στόματι μεγάλῳ. ἐλώδης δ' ἐστὶ σφόδρα καὶ ῥαπτοῖς
πλοίοις μόγῃς πλόιμος· οἱ γὰρ ἄνεμοι τὰ τενάγῃ ῥα-
δίως ἀνακαλύπτουσιν, εἴτα πάλιν πληροῦσιν, ὥστε τὰ
ἔλη τοῖς μεῖζοσι σκάφουσιν οὐ περάσιμά ἐστιν. ἔχει δ' ὁ
κόλπος νησίδια τρία καὶ προσβραχῇ τινα καὶ χοιρα-
15 δώδη ὀλίγα κατὰ τὸν παράπλου.

Ἐκπλέοντι δ' ἐν ἀριστερᾷ πολίχνη καὶ *ἄλλος λι- 2
μὴν Χερρονησιτῶν. ἔκκειται γὰρ ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν
ἄκρα μεγάλη κατὰ τὸν παράπλου ἐφεξῆς, μέρος οὖσα
τῆς ὅλης χειρρόνησου, ἐφ' ἣ ἵδρυται πόλις Ἡρακλεω-
20 τῶν ἄποικος τῶν ἐν τῷ Πόντῳ, αὐτὸ τοῦτο καλουμένη
Χερρόνησος, διέχουσα τοῦ Τύρα παράπλου σταδίων
τετρακισχιλίων τετρακοσίων· ἐν ἣ τὸ τῆς Παρθένου
ἱερὸν, δαίμονός τινος, ἧς ἐπώνυμος καὶ ἡ ἄκρα ἡ πρὸ
τῆς πόλεως ἐστὶν ἐν σταδίοις ἑκατόν, καλουμένη Παρ-
25 θένιον, ἔχον νεᾶν τῆς δαίμονος καὶ ξόανον. μετὰ δὲ
τῆς πόλεως καὶ τῆς ἄκρας λιμένες τρεῖς· εἰδ' ἡ παλαιὰ
Χερρόνησος κατεσκαμμένη καὶ μετ' αὐτὴν λιμὴν στε-
νόστομος, καθ' ὃν μάλιστα οἱ Ταῦροι, Σκυθικὸν ἔθνος,
τὰ ληστήρια συνίσταντο τοῖς καταφεύγουσιν ἐπ' αὐτὸν
30 ἐπιχειροῦντες· καλεῖται δὲ συμβόλων λιμὴν. οὗτος δὲ
ποιεῖ πρὸς ἄλλον λιμένα Κτενοῦντα καλούμενον τετ-
ταράκοντα σταδίων ἰσθμόν· οὗτος δ' ἐστὶν ὁ ἰσθμὸς ὁ

κλείων τὴν μικρὰν χειρόνησον, ἣν ἔφραμεν τῆς μεγάλης χειρόνησου μέρος, ἔχουσαν ἐν αὐτῇ τὴν ὁμωνύμως λεγομένην πόλιν Χερρόνησον.

- 3 Αὕτη δ' ἦν πρότερον αὐτόνομος, πορθουμένη δὲ ὑπὸ τῶν βαρβάρων ἠναγκάσθη προστάτην ἐλέσθαι 5
C.309 Μιθριδάτην τὸν Εὐπάτορα, στρατηγιῶντα ἐπὶ τοὺς ὑπὲρ τοῦ Ἰσθμοῦ μέχρι Βορυσθένους βαρβάρους· ταῦτα δ' ἦν ἐπὶ Ῥωμαίους παρασκευή. ἐκείνος μὲν οὖν κατὰ ταύτας τὰς ἐλπίδας ἄσμενος πέμψας εἰς τὴν Χερρόνησον στρατιὰν ἅμα πρὸς τε τοὺς Σκύθας ἐπολέμει Σκί- 10 λουρόν τε καὶ τοὺς Σκιλούρου παῖδας τοὺς περὶ Πάλακον, οὓς Ποσειδώνιος μὲν πεντήκοντά φησιν Ἀπολλωνίδης δὲ ὀγδοήκοντα· ἅμα δὲ τούτους τε ἐχειρώσατο βία καὶ Βοσπόρου κατέστη κύριος παρ' ἐκόντος λαβὼν Παιρισάδου τοῦ κατέχοντος. ἐξ ἐκείνου δὴ τοῦ χρόνου 15 τοῖς τοῦ Βοσπόρου δυνάσταις ἡ τῶν Χερρονησιτῶν πόλις ὑπήκοος μέχρι νῦν ἐστι. τὸ δ' ἴσον ὁ Κτενοῦς διέχει τῆς τε τῶν Χερρονησιτῶν πόλεως καὶ τοῦ συμβόλων λιμένος. μετὰ δὲ τὸν συμβόλων λιμένα μέχρι Θεοδοσίας πόλεως ἡ Ταυρικὴ παραλία, χιλίων ποντα- 20 δίων τὸ μῆκος, τραχεῖα καὶ ὀρεινὴ καὶ καταιγιζουσα τοῖς βορέαις ἴδρυνται. πρόκειται δ' αὐτῆς ἄκρα πολὺ πρὸς τὸ πέλαγος καὶ τὴν μεσημβρίαν ἐκκειμένη κατὰ Παφλαγονίαν καὶ Ἀμαστριν πόλιν, καλεῖται δὲ Κριοῦ μέτωπον. ἀντίκειται δ' αὐτῇ τὸ τῶν Παφλαγόνων 2· ἀκρωτήριον ἡ Κάραμβις τὸ διαιροῦν εἰς πελάγη δύο τὸν Εὐξείνου πόντον τῷ ἐκατέρωθεν σφριγγομένῳ πορθμῷ. διέσθηκε δ' ἡ Κάραμβις τῆς μὲν τῶν Χερρονησιτῶν πόλεως σταδίους δισχιλίους καὶ πεντακοσίους, τοῦ δὲ Κριοῦ μετώπου πολὺ ἐλάττους τὸν ἀριθμόν· 30

7. post βαρβάρους: καὶ τοῦ Ἀδρίου·

συχνοὶ γοῦν τῶν διαπλευσάντων τὸν πορθμὸν ἅμα
φασὶν ἰδεῖν ἀμφοτέρως ἐκατέρωθεν τὰς ἄκρας. ἐν δὲ
τῇ ὄρεινῇ τῶν Ταύρων καὶ τὸ ὄρος ἐστὶν ὁ Τραπεζοῦς,
ὁμώνυμον τῇ πόλει τῇ περὶ τὴν Τιβαρανίαν καὶ τὴν
5 Κολχίδα· καὶ ἄλλο δ' ἐστὶν ὄρος Κιμμέριον κατὰ τὴν
αὐτὴν ὄρεινὴν, δυναστευσάντων ποτὲ τῶν Κιμμερίων
ἐν τῷ Βοσπόρῳ· καθ' ὃ καὶ Κιμμερικὸς Βόσπορος κα-
λεῖται τοῦ πορθμοῦ πᾶν ὃ ἐπέχει τὸ στόμα τῆς Μαι-
ώτιδος.

- 10 Μετὰ δὲ τὴν ὄρεινὴν τὴν λεχθεῖσαν ἡ Θεοδοσία 4
κεῖται πόλις, πεδίον εὗγεων ἔχουσα καὶ λιμένα ναυσὶ
καὶ ἑκατὸν ἐπιτήδειον· οὗτος δὲ ὄρος ἦν πρότερον τῆς
τῶν Βοσποριανῶν καὶ Ταύρων γῆς· καὶ ἡ ἐξῆς δ' ἐστὶν
εὗγεως χώρα μέχρι Παντικαπαίου, τῆς μητροπόλεως
15 τῶν Βοσποριανῶν ἰδρυμένης ἐπὶ τῷ στόματι τῆς Μαι-
ώτιδος. ἔστι δὲ τὸ μεταξὺ τῆς Θεοδοσίας καὶ τοῦ Παν-
τικαπαίου σταδίων περὶ πεντακοσίων καὶ τριάκοντα,
χώρα πᾶσα σιτοφόρος, κώμας ἔχουσα καὶ πόλιν εὐλί-
μενον τὸ Νύμφαιον καλούμενον. τὸ δὲ Παντικάπαιον
20 λόφος ἐστὶ πάντῃ περιεικόμενος ἐν κύκλῳ σταδίων
εἴκοσι· πρὸς ἕω δ' ἔχει λιμένα καὶ νεώρια ὅσον τρι-
άκοντα νεῶν, ἔχει δὲ καὶ ἀκρόπολιν· κτίσμα δ' ἐστὶ C.310
Μιλησίων. ἐμοναρχεῖτο δὲ πολὺν χρόνον ὑπὸ δυνα-
στῶν τῶν περὶ Λεύκωνα καὶ Σάτυρον καὶ Παιρισάδην
25 αὕτη τε καὶ αἱ πλησιόχωροι κατοικίαι πᾶσαι αἱ περὶ τὸ
στόμα τῆς Μαιώτιδος ἐκατέρωθεν μέχρι Παιρισάδου
τοῦ Μιθριδάτη παραδόντος τὴν ἀρχήν. ἐκαλοῦντο δὲ
τύραννοι, καίπερ οἱ πλείους ἐπιεικεῖς γεγονότες, ἀρξά-
μενοι ἀπὸ Παιρισάδου καὶ Λεύκωνος. Παιρισάδης δὲ
30 καὶ θεὸς νενομίσται· τούτῳ δὲ ὁμώνυμος καὶ ὁ ὕστα-
τος, ὃς οὐχ οἷός τε ὦν ἀντέχειν πρὸς τοὺς βαρβάρους
φόρον πραττομένους μείζω τοῦ πρότερον Μιθριδάτη

τῷ Εὐπάτορι παρέδωκε τὴν ἀρχήν· ἐξ ἐκείνου δ' ἡ βασιλεία γεγενηται Ῥωμαίοις ὑπήκοος. τὸ μὲν οὖν πλεόν αὐτῆς μέρος ἐστὶν ἐπὶ τῆς Εὐρώπης, μέρος δέ τι καὶ ἐπὶ τῆς Ἀσίας.

- 5 Τὸ δὲ στόμα τῆς Μαειώτιδος καλεῖται μὲν Κιμμε-
 ρικὸς Βόσπορος, ἄρχεται δὲ ἀπὸ μελίζονος πλάτους
 ἑβδομήκοντά πον σταδίων· καθ' ὃ διαίρουσιν ἐκ τῶν
 περὶ Παντικάπαιον τόπων εἰς τὴν ἐγγυτάτω πόλιν τῆς
 Ἀσίας τὴν Φαναγόρειαν· τελευτᾷ δ' εἰς πολὺ στενω-
 10 τερον πορθμόν. διαιρεῖ δ' ὁ στενωπὸς οὗτος τὴν Ἀσίαν
 ἀπὸ τῆς Εὐρώπης καὶ ὁ Τάναϊς ποταμός, καταντικρὺ
 ῥέων ἀπὸ τῶν ἄρκτων εἰς τε τὴν λίμνην καὶ τὸ στόμα
 αὐτῆς· δύο δ' ἔχει τὰς εἰς τὴν λίμνην ἐκβολὰς διεχού-
 15 σας ἀλλήλων ὅσον σταδίους ἑξήκοντα. ἔστι δὲ καὶ πό-
 λιν ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ, μέγιστον τῶν βαρβάρων
 ἐμπόριον μετὰ τὸ Παντικάπαιον. ἐν ἀριστερᾷ δ' εἰς-
 πλέοντι τὸν Κιμμερικὸν Βόσπορον πολίχνιον ἔστι
 Μυρμηκίον ἐν εἰκοσι σταδίοις ἀπὸ τοῦ Παντικαπαίου.
 τοῦ δὲ Μυρμηκίου διπλάσιον διέχει κώμη Παρθένιον,
 20 καθ' ἣν στενωτάτος ὁ εἰσπλους ἐστὶν ὅσον εἰκοσι στα-
 δίων, ἔχων ἀντικειμένην ἐν τῇ Ἀσίᾳ κώμην Ἀχίλλειον
 καλουμένην. ἐντεῦθεν δ' εὐθυπλοία μὲν ἐπὶ τὸν Τά-
 ναϊν καὶ τὴν κατὰ τὰς ἐκβολὰς νῆσον στάδιοι δισχίλιοι
 διακόσιοι, μικρὸν δ' ὑπερβάλλει τοῦ ἀριθμοῦ τούτου
 25 πλέοντι παρὰ τὴν Ἀσίαν· πλεόν δ' ἢ τριπλάσιον ἐν
 ἀριστερᾷ πλέοντι μέχρι τοῦ Ταναΐδος, ἐν ᾧ παράπλω
 καὶ ὁ ἰσθμὸς ἴδρυνται. οὗτος μὲν οὖν ὁ παράπλους ἔρη-
 30 μος πᾶς ὁ παρὰ τὴν Εὐρώπην, ὁ δ' ἐν δεξιᾷ οὐκ ἔρη-
 μος· ὁ δὲ σύμπας τῆς λίμνης κύκλος ἐνακισχιλίων ἰστο-
 ρεῖται σταδίων. ἡ δὲ μεγάλη χερρόνησος τῇ Πελοπον-
 νήσῳ προσέεικε καὶ τὸ σχῆμα καὶ τὸ μέγεθος. ἔχουσι
 δ' αὐτὴν οἱ τοῦ Βοσπόρου δυνάσται κεκακωμένην πᾶ-

σαν ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων. πρότερον δ' εἶχον
 ὀλίγην μὲν τὴν πρὸς τῷ στόματι τῆς Μαιώτιδος καὶ
 τῷ Παντικαπαίῳ μέχρι Θεοδοσίας τῶν Βοσπορίων τῷ—C.311
 ραννοι, τὴν δὲ πλείστην μέχρι τοῦ ἰσθμοῦ καὶ τοῦ κόλ-
 5 που τοῦ Καρκινίτου Ταῦροι, Σκυθικὸν ἔθνος· καὶ
 ἐκαλεῖτο ἡ χώρα πᾶσα αὕτη, σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ ἕξω τοῦ
 ἰσθμοῦ μέχρι Βορυσθένους, μικρὰ Σκυθία· διὰ δὲ τὸ
 πληθὺς τῶν ἐνθένδε περαιουμένων τόν τε Τύραν καὶ
 τὸν Ἰστρον καὶ ἐποικούντων τὴν γῆν καὶ ταύτης οὐκ
 10 ὀλίγη μικρὰ προσηγορεύθη Σκυθία, τῶν Θρακῶν τὰ
 μὲν τῇ βίᾳ συγχωρούντων τὰ δὲ τῇ κακίᾳ τῆς χώρας·
 ἐλῶδης γάρ ἐστιν ἡ πολλὴ αὐτῆς.

Τῆς δὲ χειρρονήσου, πλὴν τῆς ὀρεινῆς τῆς ἐπὶ τῇ 6
 θαλάττῃ μέχρι Θεοδοσίας, ἥ γε ἄλλη πεδιάς καὶ εὐγεῶς
 15 ἐστὶ πᾶσα, σίτω δὲ καὶ σφόδρα εὐτυχῆς, τριακοντά-
 χουν ἀποδιδούσα διὰ τοῦ τυχόντος ὀρυκτοῦ σχιζομένη.
 φόρον τε ἐτέλουν ὀκτωκαίδεκα μυριάδας μεδίμνων
 Μιθριδάτῃ, τάλαντα δ' ἄργυρίου διακόσια σὺν τοῖς
 Ἀσιανοῖς χωρίοις τοῖς περὶ τὴν Σινδικήν. κἂν τοῖς
 20 πρόσθεν χρόνοις ἐντεῦθεν ἦν τὰ σιτοπομπεῖα τοῖς Ἑλ-
 λησι, καθάπερ ἐκ τῆς λίμνης αἰ ταριχεῖαι. Λεύκωνα
 δὲ φασιν ἐκ τῆς Θεοδοσίας Ἀθηναίοις πέμψαι μυριάδας
 μεδίμνων διακοσίας καὶ δέκα. οἱ δ' αὐτοὶ οὗτοι καὶ
 γεωργοὶ ἐκαλοῦντο ἰδίως διὰ τὸ τοὺς ὑπερκειμένους
 25 νομάδας εἶναι, τρεφομένους κρέασιν ἄλλοις τε καὶ ἱπ-
 πείοις, ἱππείῳ δὲ καὶ τυρῷ καὶ γάλακτι καὶ ὀξυγάλακτι
 (τοῦτο δὲ καὶ ὄψημά ἐστιν αὐτοῖς κατασκευασθέν
 πῶς)· διόπερ ὁ ποιητῆς ἅπαντας εἰρηκε τοὺς ταύτη
 γαλακτοφάγους. οἱ μὲν οὖν νομάδες πολεμισταὶ μᾶλ-
 30 λόν εἰσιν ἢ ληστρικοί, πολεμοῦσι δὲ ὑπὲρ τῶν φόρων.
 ἐπιτρέψαντες γὰρ ἔχειν τὴν γῆν τοῖς ἐθέλουσι γεωρ-
 γεῖν ἀντὶ ταύτης ἀγαπῶσι φόρους λαμβάνοντες τοὺς

συντεταγμένους μετρίους τινάς, οὐκ εἰς περιουσίαν ἀλλ' εἰς τὰ ἐφήμερα καὶ τὰ ἀναγκαῖα τοῦ βίου· μὴ δόντων δὲ αὐτοῖς πολεμουσιν. οὕτω δὲ καὶ δικαίους ἅμα καὶ ἀβίους ὁ ποιητὴς εἴρηκε τοὺς αὐτοὺς τούτους ἄνδρας, ἐπεὶ τῶν γε φόρων ἀπευτακτουμένων οὐδ' ἂν καθίσταντο εἰς πόλεμον. οὐκ ἀπευτακτοῦσι δ' οἱ δυνάμει πεποιδότες, ὥστε ἢ ἀμύνασθαι ῥαδίως ἐπιόντας ἢ κωλύσαι τὴν ἐφοδον· καθάπερ Ἀσάνδρον ποιῆσαι φῆσιν Ὑψικράτης, ἀποτειχίσαντα τὸν ἰσθμὸν τῆς χερρονήσου τὸν πρὸς τῇ Μαιώτιδι τριακοσίων ὄντα 10 καὶ ἐξήκοντα σταδίων, ἐπιστήσαντα πύργους, καθ' ἕκαστον στάδιον ἓνα. οἱ δὲ γεωργοὶ ταύτῃ μὲν ἡμερώτεροί τε ἅμα καὶ πολιτικώτεροι νομίζονται εἶναι, χρηματισταὶ δ' ὄντες καὶ θαλάττης ἀπτόμενοι ληστηρίων C.312 οὐκ ἀπέχονται, οὐδὲ τῶν τοιούτων ἀδικιῶν καὶ πλεο- 15 νεξιῶν.

7 Πρὸς δὲ τοῖς καταριθμηθεῖσι τόποις ἐν τῇ χερρονήσῳ καὶ τὰ φρούρια ὑπῆρξεν, ἃ κατεσκεύασε Σκίλουρος καὶ οἱ παῖδες, οἷσπερ καὶ ὁρμητηρίοις ἐχρῶντο πρὸς τοὺς Μιθριδάτου στρατηγούς, Παλάκιόν τε καὶ 20 Χάβον καὶ Νεάπολιν· ἣν δὲ καὶ Εὐπατόριόν τι, κτίσαντος Διοφάντου, [τοῦ] Μιθριδάτου στρατηγοῦ. ἔστι δ' ἄκρα διέχουσα τοῦ τῶν Χερρονησιτῶν τείχους ὅσον πεντεκαίδεκα σταδίους, κόλπον ποιουῖσα εὐμεγέθη νεύοντα πρὸς τὴν πόλιν· τούτου δ' ὑπέρεκκεται 25 λιμνοθάλαττα ἀλοπήριον ἔχουσα· ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ Κτενοῦς ἦν. ἔν' οὖν ἀντέχοιεν, οἱ βασιλικοὶ πολιορκούμενοι τῇ τε ἄκρᾳ τῇ λεχθείσῃ φρουρὰν ἐγκατέστησαν τειχίσαντες τὸν τόπον, καὶ τὸ στόμα τοῦ κόλπου τὸ μέχρι τῆς πόλεως διέχωσαν, ὥστε πεξεύεσθαι ῥα- 30 δίως καὶ τρόπον τινα μίαν εἶναι πόλιν ἐξ ἀμφοῖν· ἐκ δὲ τούτου ῥᾶον ἀπεκρούοντο τοὺς Σκύθας. ἐπεὶ δὲ καὶ

τῷ διατειχίσματι τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ πρὸς τῷ Κτενοῦντι προσέβαλον καὶ τὴν τάφρον ἐνέχουν καλὰ μῶ, τὸ μεθ' ἡμέραν γεφυρωθὲν μέρος νύκτωρ ἐνεπίμπρασαν οἱ βασιλικοὶ καὶ ἀντεῖχον τέως ἕως ἐπεκράτησαν. καὶ νῦν ὑπὸ τοῖς τῶν Βοσπορανῶν βασιλεῦσιν, οὓς ἂν Ῥωμαῖοι καταστήσωσιν, ἅπαντά ἐστιν.

Ἴδιον δὲ τοῦ Σκυθικοῦ καὶ τοῦ Σαρματικοῦ παν- 8
τὸς ἔθνους τὸ τοὺς ἵππους ἐκτέμνειν εὐπειθείας χάριν· μικροὶ μὲν γάρ εἰσιν, ὀξεῖς δὲ σφόδρα καὶ δυσπειθεῖς. 10
Θῆραι δ' εἰσιν ἐν μὲν τοῖς ἔλεσιν ἐλάφων καὶ συάγρων, ἐν δὲ τοῖς πεδίοις ὀνάγρων καὶ δορκάδων. Ἴδιον δέ τι καὶ τὸ ἀετὸν μὴ γίνεσθαι ἐν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δὲ τῶν τετραπόδων ὁ καλούμενος κόλος, μεταξὺ ἐλάφου καὶ κριοῦ τὸ μέγεθος, λευκός, ὀξύτερος τούτων 15
τῷ δρόμῳ, πίνων τοῖς ῥώθωσιν εἰς τὴν κεφαλὴν, εἰτ' ἐντεῦθεν εἰς ἡμέρας ταμιεύων πλείους ὥστ' ἐν τῇ ἀνύδρῳ νέμεσθαι ῥαδίως. τοιαύτη μὲν ἡ ἐκτὸς Ἰστρου πᾶσα ἢ μεταξὺ τοῦ Ῥήνου καὶ τοῦ Ταναΐδος ποταμοῦ μέχρι τῆς Ποντικῆς θαλάττης καὶ τῆς Μαιώτιδος.
20 Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς Εὐρώπης ἡ ἐντὸς Ἰστρου καὶ 5
τῆς κύκλω θαλάττης, ἀρξαμένη ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδριατικοῦ μέχρι τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ Ἰστρου, ἐν ᾗ ἔστιν ἡ τε Ἑλλὰς καὶ τὰ τῶν Μακεδόνων καὶ τῶν Ἡπειρωτῶν ἔθνη καὶ τὰ ὑπὲρ τούτων πρὸς τὸν Ἰστρον 25
καθήμεντα καὶ πρὸς τὴν ἑφ' ἐκάτερα θάλατταν τὴν τε C.313
Ἀδριατικὴν καὶ τὴν Ποντικὴν, πρὸς μὲν τὴν Ἀδριατικὴν τὰ Ἰλλυρικά, πρὸς δὲ τὴν ἑτέραν μέχρι Προποντίδος καὶ Ἑλλησπόντου τὰ Θράκια καὶ εἴτινα τούτοις ἀναμέμικται Σκυθικὰ ἢ Κελτικὰ. δεῖ δ' ἀπὸ τοῦ Ἰστρου 30
τὴν ἀρχὴν ποιήσασθαι τὰ ἐφεξῆς λέγοντας τοῖς περιοδευσθεῖσι τόποις· ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ συνεχῆ τῇ Ἰταλίᾳ τε καὶ ταῖς Ἀλπεσι καὶ Γερμανοῖς καὶ Λακοῖς καὶ Γέταις.

δίχα δ' ἂν τις καὶ ταῦτα διέλοι· τρόπον γάρ τινα τῷ Ἰστρῷ παράλληλά ἐστι τὰ τε Ἰλλυρικά καὶ τὰ Παιονικά καὶ τὰ Θράκια ὄρη, μίαν πως γραμμὴν ἀποτελοῦντα διήκουσαν ἀπὸ τοῦ Ἀδρίου μέχρι πρὸς τὸν Πόντον· ἧς προσάρκτια μὲν ἐστὶ μέρη τὰ μεταξὺ τοῦ Ἰστρου καὶ τῶν ὄρων, πρὸς νότον δ' ἦ τε Ἑλλὰς καὶ ἡ συνεχὴς βάρβαρος μέχρι τῆς ὀρεινῆς. πρὸς μὲν οὖν τῷ Πόντῳ τὸ Αἷμον ἐστὶν ὄρος, μέγιστον τῶν ταύτη καὶ ὑψηλότατον, μέσην πως διαιροῦν τὴν Θράκην· ἀφ' οὗ φησι Πολύβιος ἀμφοτέρως καθοραῖσθαι τὰς θαλάσσας, οὐκ ἀληθῆ λέγων· καὶ γὰρ τὸ διάστημα μέγα τὸ πρὸς τὸν Ἀδρίαν καὶ τὰ ἐπισκοτοῦντα πολλά. πρὸς δὲ τῷ Ἀδρίᾳ πᾶσα ἡ Ἀρδιά σχεδόν τι, μέση δ' ἡ Παιονία καὶ αὐτὴ πᾶσα ὑψηλὴ. ἐφ' ἑκάτερα δ' αὐτῆς ἐπὶ μὲν τὰ Θράκια ἡ Ροδόπη ὁμορεῖ, ὑψηλότατον ὄρος μετὰ τὸν Αἷμον, ἐπὶ δὲ θάτερα πρὸς ἄρκτον τὰ Ἰλλυρικά ἢ τε τῶν Αὐταριατῶν χώρα καὶ ἡ Δαρδανικὴ. λέγωμεν δὴ τὰ Ἰλλυρικά πρῶτα συνάπτοντα τῷ τε Ἰστρῷ καὶ ταῖς Ἀλπεσιν, αἱ κεῖνται μεταξὺ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Γερμανίας, ἀρξάμεναι ἀπὸ τῆς λίμνης τῆς κατὰ τοὺς Ὀινδο-20 λικοὺς καὶ Ραιτοὺς καὶ Ἑλεητίους.

- 2 Μέρος μὲν δὴ τι τῆς χώρας ταύτης ἠρῆμωσαν οἱ Λακοὶ καταπολεμήσαντες Βοίους καὶ Ταυρίσκους, ἔθνη Κελτικά τὰ ὑπὸ Κριτασίρῳ, φάσκοντες εἶναι τὴν χώραν σφετέραν, καίπερ ποταμοῦ διείργοντος τοῦ Πα-25 ρίσου, ῥέοντος ἀπὸ τῶν ὄρων ἐπὶ τὸν Ἰστρον κατὰ τοὺς Σκορδίσκους καλουμένους Γαλάτας· καὶ γὰρ οὗτοι τοῖς Ἰλλυρικοῖς ἔθνεσι καὶ τοῖς Θρακίοις ἀναμιξέσθην· ἀλλ' ἐκείνους μὲν οἱ Λακοὶ κατέλυσαν, τούτοις δὲ καὶ συμμάχοις ἐχρήσαντο πολλάκις. τὸ δὲ λοι-30 πὸν ἔχουσι Παννόνιοι μέχρι Σεγεστικῆς καὶ Ἰστρου πρὸς ἄρκτον καὶ ἕω· πρὸς δὲ τὰλλα μέρη ἐπὶ πλέον

διατείνουσιν. ἡ δὲ Σεγεστικὴ πόλις ἐστὶ Παννονίων ἐν
 συμβολῇ ποταμῶν πλειόνων, ἀπάντων πλωτῶν, εὐ-
 φυνὲς ὁρμητήριον τῷ πρὸς Λακοὺς πολέμῳ· ὑποπέ-
 πτωκε γὰρ ταῖς Ἑλλεσπιν, αἱ διατείνουσι μέχρι τῶν Ἰα-
 5 πόδων, Κελτικῶν τε ἅμα καὶ Ἰλλυρικῶν ἔθνη· ἐντεῦθεν—C.314
 θεὸν δὲ καὶ ποταμοὶ ῥέουσι πολὺν καταφέροντες εἰς αὐ-
 τὴν τὸν τε ἄλλον καὶ τὸν ἐκ τῆς Ἰταλίας φόρτον. εἰς
 γὰρ Ναύπορτον ἐξ Ἀκυληίας ὑπερτιθεῖσι τὴν Ὀκραν
 εἰς ἑστὰς τριακόσιοι πεντήκοντα, εἰς ἣν αἱ ἄρμαμα-
 10 ξαι κατάγονται, τῶν Ταυρίσκων οὖσαν κατοικίαν·
 ἔθνη δὲ πεντακοσίους φασίν. ἡ δ' Ὀκρα ταπεινότατον
 μέρος τῶν Ἑλλεσπιν ἐστὶ τῶν διατεινουσῶν ἀπὸ τῆς
 Ραιτικῆς μέχρι Ἰαπόδων· ἐντεῦθεν δ' ἐξαίρεται τὰ ὄρη
 πάλιν ἐν τοῖς Ἰάποσι καὶ καλεῖται Ἑλλεσπιν. ὁμοίως δὲ
 15 καὶ ἐκ Τεργέστε κώμης Κερνικῆς ὑπερθεσὶς ἐστὶ διὰ
 τῆς Ὀκρας εἰς ἕλος Δούγεον καλούμενον. πλησίον δὲ
 τοῦ Ναυπόρτου ποταμός ἐστὶ Κορκόρας ὁ δεχόμενος
 τὰ φορτία· οὗτος μὲν οὖν εἰς τὸν Σάβον ἐμβάλλει,
 ἐκεῖνος δ' εἰς τὸν Δράβον, ὁ δὲ εἰς τὸν Νόαρον κατὰ
 20 τὴν Σεγεστικὴν. ἐντεῦθεν δ' ἤδη ὁ Νόαρος * πλήθει
 προσλαβὼν τὸν διὰ τῶν Ἰαπόδων ῥέοντα ἐκ τοῦ Ἑλ-
 λείου ὄρους Κόλαπιν συμβάλλει τῷ Δανούῳ κατὰ τοὺς
 Σκορδίσκους. ὁ δὲ πλοῦς τὰ πολλὰ τοῖς ποταμοῖς ἐπὶ
 τὰς ἄρκτους ἐστίν· ὁδὸς δ' ἀπὸ Τεργέστε ἐπὶ τὸν Δα-
 25 νούιον σταδίων ὅσον χιλίων καὶ διακοσίων. ἐγγὺς δὲ
 τῆς Σεγεστικῆς ἐστὶ καὶ ἡ Σισκία φρούριον καὶ Σίρ-
 μιον ἐν ὁδῷ κείμεναι τῇ εἰς Ἰταλίαν.

Ἑθνη δ' ἐστὶ τῶν Παννονίων Βρεῦκοι καὶ Ἀνδι- 3
 ζήτιοι καὶ Διτίωνες καὶ Πειροῦσται καὶ Μαζαῖοι καὶ
 30 Δαισιτιᾶται, ὧν Βάτων ἡγεμῶν, καὶ ἄλλα ἀσημότερα
 μικρά, ἃ διατείνει μέχρι Δαλματίας σχεδὸν δέ τι καὶ
 Ἀρδιαίων ἰόντι πρὸς νότον· ἅπασα δ' ἡ ἀπὸ τοῦ μυ-
 3*

χοῦ τοῦ Ἀδρίου παρήκουσα ὄρεινὴ μέχρι τοῦ Ριζονι-
κοῦ κόλπου καὶ τῆς Ἀρδιαίων γῆς μεταξὺ πλ-
πτουσα τῆς τε θαλάττης καὶ τῶν Παννονίων ἐθνῶν.
σχεδὸν δέ τι καὶ ἐντεῦθεν τὴν ἀρχὴν ποιητέον τῆς συν-
εχοῦς περιοδείας ἀναλαβοῦσι μικρὰ τῶν λεχθέντων 5
πρότερον. ἔφαμεν δ' ἐν τῇ περιοδείᾳ τῆς Ἰταλίας
Ἴστρους εἶναι πρώτους τῆς Ἰλλυρικῆς παραλίας συνε-
χεῖς τῇ Ἰταλίᾳ καὶ τοῖς Κάρνοις, καὶ διότι μέχρι Πόλας,
Ἰστρικῆς πόλεως, προήγαγον οἱ νῦν ἡγεμόνες τοὺς
τῆς Ἰταλίας ὄρους. οὗτοι μὲν οὖν περὶ ὀκτακοσίους 10
σταδίους εἰσὶν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ. τοσοῦτοι δ' εἰσὶ καὶ ἀπὸ
τῆς ἄκρας τῆς πρὸ τῶν Πολῶν ἐπὶ Ἀγκῶνα ἐν δεξιᾷ
ἔχοντι τὴν Ἑνετικὴν. ὁ δὲ πᾶς Ἰστρικός παράπλους
χίλια τριακόσια.

4 Ἐξῆς δ' ἐστὶν ὁ Ἰαποδικὸς παράπλους χιλίων στα- 15
δίων· ἴδρυνται γὰρ οἱ Ἰάποδες ἐπὶ τῷ Ἀλβίῳ ὄρει τε-
λευταίῳ τῶν Ἀλπεων ὄντι ὑψηλῷ σφόδρα, τῇ μὲν ἐπὶ
τοὺς Παννονίους καὶ τὸν Ἴστρου καθήκοντες τῇ δ' ἐπὶ
τὸν Ἀδρίαν, ἀρειμάνιοι μὲν ἐκπεπονημένοι δὲ ὑπὸ
τοῦ Σεβαστοῦ τελέως· πόλεις δ' αὐτῶν Μέτουλον 20

315 Ἀρουπῖνοι Μονήτιον ὕενδων· λυπρὰ δὲ τὰ χωρία, καὶ
ξειᾷ καὶ κέγχρῳ τὰ πολλὰ τρεφομένων· ὁ δ' ὀπλισμὸς
Κελτικός· κατάστικτοι δ' ὁμοίως τοῖς ἄλλοις Ἰλλυρι-
οῖς καὶ Θραξί. μετὰ δὲ τὸν τῶν Ἰαπόδων ὁ Λιβυρνικός
παράπλους ἐστὶ, μείζων τοῦ προτέρου σταδίοις [πεν- 25
τακοσίοις], ἐν δὲ τῷ παράπλῳ ποταμὸς φορτίοις ἀνά-
πλουν ἔχων μέχρι Δαλματέων, καὶ Σκάρδων Λιβυρνή
πόλις.

5 Παρ' ὅλην δ' ἦν εἶπον παραλίαν νῆσοι μὲν αἱ
Ἀψυρτίδες, περὶ αἷς ἡ Μήδεια λέγεται διαφθεῖραι τὸν 30
ἀδελφὸν Ἀψυρτον διώκοντα αὐτήν. ἔπειτα ἡ Κυρι-
κτικὴ κατὰ τοὺς Ἰάποδας· εἰδ' αἱ Λιβυρνίδες περὶ τετ-

ταράκοντα τὸν ἀριθμὸν· εἴτ' ἄλλαι νῆσοι, γνωριμώ-
 ται δ' Ἰσσα, Τραγούριον, Ἰσσεών κτίσμα, Φάρος ἢ
 πρότερον Πάρος, Παρίων κτίσμα, ἐξ ἧς Δημήτριος ὁ
 Φάριος. εἶτα ἡ τῶν Δαλματέων παραλία καὶ τὸ ἐπί-
 5 νειον αὐτῶν Σάλων. ἔστι δὲ τῶν πολὺν χρόνον πολε-
 μησάντων πρὸς Ῥωμαίους τὸ ἔθνος τοῦτο· κατοικίας
 δ' ἔσχεν ἄξιολόγους εἰς πεντήκοντα, ὧν τινὰς καὶ πό-
 λεις, Σάλωνά τε καὶ Πρώμωνα καὶ Νινίαν καὶ Σινώ-
 τιον τό τε νέον καὶ τὸ παλαιόν, ἃς ἐνέπρησεν ὁ Σεβα-
 10 στός. ἔστι δὲ καὶ Ἀνθήτριον ἐρυμνὸν χωρίον, Δέλμιον
 δὲ μεγάλη πόλις, ἧς ἐπώνυμον τὸ ἔθνος· μικράν δ'
 ἐποίησε Νασικᾶς καὶ τὸ πεδίον μηλόβοτον διὰ τὴν πλε-
 ονεξίαν τῶν ἀνθρώπων. ἰδιον δὲ τῶν Δαλματέων τὸ
 διὰ ὀκταετηρίδος χώρας ἀναδασμὸν ποιεῖσθαι· τὸ δὲ
 15 μὴ χρησθαι νομίσμασι πρὸς μὲν τοὺς ἐν τῇ παραλίᾳ
 ταύτῃ ἰδιον, πρὸς ἄλλους δὲ τῶν βαρβάρων πολλοὺς
 κοινόν. Ἀδριον δὲ ὄρος ἐστὶ μέσην τέμνον τὴν Δαλμα-
 τικὴν, τὴν μὲν ἐπιθαλάττιον τὴν δ' ἐπὶ θάτερα. εἰθ'
 ὁ Νάρων ποταμὸς καὶ οἱ περὶ αὐτὸν Δαόριζοι καὶ Ἀρ-
 20 διαῖοι καὶ Πληραῖοι, ὧν τοῖς μὲν πλησιάζει νῆσος ἢ
 μέλαινα Κόρκυρα καλουμένη καὶ πόλις, Κνιδίων κτί-
 σμα, τοῖς δὲ Ἀρδιαίοις ἢ Φάρος, Πάρος λεγομένη πρό-
 τερον· Παρίων γὰρ ἔστι κτίσμα.

Ἰαρδαίους δ' οἱ ὕστερον ἐκάλεσαν τοὺς Ἀρδιαί- 6
 25 οὺς· ἀπέωσαν δ' αὐτοὺς εἰς τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς
 θαλάττης Ῥωμαῖοι, λυμαινομένους αὐτὴν διὰ τῶν λη-
 στηρίων, καὶ ἠνάγκασαν γεωργεῖν. τραχεῖα δὲ χώρα
 καὶ λυπρὰ καὶ οὐ γεωργῶν ἀνθρώπων, ὥστ' ἐξέφθαρ-
 ται τελέως [τὸ ἔθνος], μικροῦ δὲ καὶ ἐκλέλοιπε. τοῦτο
 30 δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις ἔθνεσι τοῖς ταύτῃ συνέβη· οἱ γὰρ
 πλεῖστον δυνάμενοι πρότερον τελέως ἐταπεινώθησαν
 καὶ ἐξέλιπον, Γαλατῶν μὲν Βοῖοι καὶ Σκορδίσται, Ἴλ-

λυριῶν δὲ Ἀνταριᾶται καὶ Ἀρδιαῖοι καὶ Δαρδάνιοι,
Θρακῶν δὲ Τριβαλλοί, ὑπ' ἀλλήλων μὲν ἐξ ἀρχῆς,
C.316 ὕστερον δ' ὑπὸ Μακεδόνων καὶ Ῥωμαίων ἐκπολεμού-
μενοι.

7 Μετὰ δ' οὖν τὴν τῶν Ἀρδιαίων καὶ Πληραίων 5
παραλίαν ὁ Ῥιζονικὸς κόλπος ἐστὶ καὶ Ῥίρων πόλις
καὶ ἄλλα πολίχνια, καὶ Δρίλων ποταμὸς ἀνάπλουν
ἔχων πρὸς ἕω μέχρι τῆς Δαρδανικῆς, ἣ συνάπτει
τοῖς Μακεδονικοῖς ἔθνεσι καὶ τοῖς Παιονικοῖς πρὸς
μεσημβρίαν, καθάπερ καὶ οἱ Ἀνταριᾶται καὶ Δασα- 10
ρήτιοι, ἄλλοι κατ' ἄλλα μέρη συνεχεῖς ἀλλήλοις ὄν-
τες καὶ τοῖς Ἀνταριάταις. τῶν δὲ Δαρδανιατῶν εἰσι
καὶ οἱ Γαλάβριοι, παρ' οἷς ... πόλις ἀρχαία, καὶ οἱ Θου-
νάται, [οἱ] Μαΐδοις ἔθνει Θρακίῳ πρὸς ἕω συνάπτου-
σιν. ἄγριοι δ' ὄντες οἱ Δαρδάνιοι τελέως, ὥσθ' ὑπὸ 15
ταῖς κοπρίαις ὀρυζάντες σπῆλαια ἐνταῦθα διαίτας ποι-
εῖσθαι, μουσικῆς δ' ὅμως ἐπεμελήθησαν ἀεὶ χρώμε-
νοι καὶ αὐλοῖς καὶ τοῖς ἐντατοῖς ὀργάνοις. οὗτοι μὲν
οὖν ἐν τῇ μεσογαίᾳ· μνησθησόμεθα δ' αὐτῶν καὶ
ὕστερον. 20

8 Μετὰ δὲ τὸν Ῥιζονικὸν κόλπον Αἰσσος ἐστὶ πόλις
καὶ Ἀκρόλίσσος καὶ Ἐπίδαμνος Κερκυραίων κτίσμα, ἣ
νῦν Δυρράχιον ὁμωνύμως τῇ χερσονήσῳ λεγομένη
ἐφ' ἧς ἵδρυσται. εἰθ' ὁ Ἄψος ποταμὸς καὶ ὁ Ἄωος, ἐφ'
ᾧ Ἀπολλωνία πόλις εὐνομωτάτῃ, κτίσμα Κορινθίων 25
καὶ Κερκυραίων, τοῦ ποταμοῦ μὲν ἀπέχουσα σταδίους
δέκα τῆς θαλάττης δὲ ἐξήκοντα. τὸν δ' Ἄωον Αἰάντα
καλεῖ Ἐκαταῖος καὶ φησιν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ τόπου τοῦ
περὶ Δάκμον, μᾶλλον δὲ τοῦ αὐτοῦ μυχοῦ, τόν τε Ἴνα-
χον ρεῖν εἰς Ἄργος πρὸς νότον καὶ τὸν Αἰάντα πρὸς 30

17. ante ἀεὶ: μουσικοῖς

ἔσπεραν καὶ πρὸς τὸν Ἀδρίαν. ἐν δὲ τῇ χώρᾳ τῶν Ἀπολλωνιατῶν καλεῖται τι νυμφαῖον· πέτρα δ' ἐστὶ πῦρ ἀναδιδούσα, ὑπ' αὐτῇ δὲ κρῆναι ῥέουσι χλιαροῦ καὶ ἀσφάλτου, καιομένης, ὥς εἰκός, τῆς βώλου τῆς ἀσφαλ-
 5 τίτιδος· μέταλλον δ' αὐτῆς ἐστὶ πλησίον ἐπὶ λόφον· τὸ δὲ τμηθὲν ἐκπληροῦται πάλιν τῷ χρόνῳ, τῆς ἐγχων-
 νυμένης εἰς τὰ ὀρύγματα γῆς μεταβαλλούσης εἰς ἄσφαλ-
 τον, ὥς φησι Ποσειδώνιος. λέγει δ' ἐκεῖνος καὶ τὴν ἀμ-
 πελῆτιν γῆν ἀσφαλτώδη τὴν ἐν Σελευκείᾳ τῇ Πιερίᾳ
 10 μεταλλενομένην ἄκος τῆς φθειριώσης ἀμπέλου· χρι-
 σθεῖσαν γὰρ μετ' ἐλαίου φθείρειν τὸ θηρίον πρὶν ἐπὶ
 τοὺς βλαστοὺς τῆς ῥίζης ἀναβῆναι· τοιαύτην δ' εὗρε-
 θῆναι καὶ ἐν Ῥόδῳ πρυτανεύοντος αὐτοῦ, πλείονος
 δ' ἐλαίου δεῖσθαι. μετὰ δ' Ἀπολλωνίαν Βυλλιακὴ καὶ
 15 Ὠρικὸν καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτοῦ ὁ Πάνορμος καὶ τὰ Κε-
 ραύνια ὄρη, ἡ ἀρχὴ τοῦ στόματος τοῦ Ἰονίου κόλπου
 καὶ τοῦ Ἀδρίου.

Τὸ μὲν οὖν στόμα κοινὸν ἀμφοῖν ἐστὶ, διαφέρει 9
 δὲ ὁ Ἰόνιος διότι τοῦ πρώτου μέρους τῆς θαλάττης C.317
 20 ταύτης ὄνομα τοῦτ' ἐστίν, ὁ δ' Ἀδρίας τῆς ἐντὸς μέχρι
 τοῦ μυχοῦ, νυνὶ δὲ καὶ τῆς συμπάσης. φησὶ δ' ὁ Θεό-
 πομπος τῶν ὀνομάτων τὸ μὲν ἦκειν ἀπὸ ἀνδρὸς ἡγη-
 σαμένου τῶν τόπων ἐξ Ἰσσης τὸ γένος, τὸν Ἀδρίαν
 δὲ ποταμοῦ ἐπάννυμον γεγενῆσθαι. στάδιοι δ' ἀπὸ τῶν
 25 Λιβυρνῶν ἐπὶ τὰ Κεραύνια μικρῷ πλείους ἢ δισχίλιοι.
 Θεόπομπος δὲ τὸν πάντα ἀπὸ τοῦ μυχοῦ πλοῦν ἡμε-
 ρῶν ἐξ εἴρηκε, πεζῇ δὲ τὸ μῆκος τῆς Ἰλλυρίδος καὶ
 τριάκοντα· πλεονάζειν δέ μοι δοκεῖ. καὶ ἄλλα δ' οὐ
 πιστὰ λέγει, τό τε συντετρεῖσθαι τὰ πελάγη ἀπὸ
 30 τοῦ εὗρισκεσθαι κέραμόν τε Χῖον καὶ Θάσιον ἐν τῷ
 Νάρωνι, καὶ τὸ ἄμφω κατοπτεύεσθαι τὰ πελάγη ἀπό-
 τινος ὄρους, καὶ τῶν νήσων τῶν Λιβυρνίδων * τιθεῖς,

ὥστε κύκλον ἔχειν σταδίων καὶ πεντακοσίων, καὶ τὸ τὸν Ἰστρον ἐν τῶν στομάτων εἰς τὸν Ἀδρίαν ἐμβάλλειν. τοιαῦτα δὲ καὶ τοῦ Ἑρατοσθένους ἐνια παρακούσματα ἐστὶ λαοδογματικά, καθάπερ Πολύβιος φησι καὶ περὶ αὐτοῦ καὶ τῶν ἄλλων λέγων συγγραφῶν. 5

- 10 Τὸν μὲν οὖν παράπλουν ἅπαντα τὸν Ἰλλυρικὸν σφόδρα εὐλίμενον εἶναι συμβαίνει καὶ ἐξ αὐτῆς τῆς συνεχοῦς ῥόνης καὶ ἐκ τῶν πλησίον νήσων, ὑπεναντίως τῷ Ἰταλικῷ τῷ ἀντικειμένῳ ἁλιμένῳ ὄντι· ἄλλοι δὲ καὶ χρηστόκαρποι ὁμοίως· ἐλαιόφυτοι γὰρ καὶ 10 εὐάμπελοι, πλὴν εἰ τί που σπάνιον ἐκτετράχυνται τελέως. τοιαύτη δ' οὐσα ὀλιγωρεῖτο πρότερον ἢ Ἰλλυρικὴ παραλία, τάχα μὲν καὶ κατ' ἄγνοιαν τῆς ἀρετῆς, τὸ μέντοι πλέον διὰ τὴν ἀγριότητα τῶν ἀνθρώπων καὶ τὸ ληστρικὸν ἔθος. ἡ δ' ὑπερκειμένη ταύτης πᾶσα 15 ὄρεινή καὶ ψυχρὰ καὶ νιφόβολός ἐστιν, ἡ δὲ προσάρκτιος καὶ μάλλον, ὥστε καὶ τῶν ἀμπέλων σπάνιν εἶναι καὶ ἐν ταῖς ὑψώσεσι καὶ ἐν τοῖς ἐπιπεδωτέροις. ὁροπέδια δ' ἐστὶ ταῦτα ἃ κατέχουσιν οἱ Παννόνιοι, πρὸς νότον μὲν μέχρι Δαλματῶν καὶ Ἀρδιαίων διατείνοντα, 20 πρὸς ἄρκτον δὲ ἐπὶ τὸν Ἰστρον τελευτῶντα, πρὸς ἑω δὲ Σκορδίσκοις συνάπτοντα τῇ δὲ παρὰ τὰ ὄρη τῶν Μακεδόνων καὶ Θρακῶν.

- 11 Ἀνταριᾶται μὲν οὖν τὸ μέγιστον καὶ ἄριστον τῶν Ἰλλυριῶν ἔθνος ὑπῆρξεν, ὃ πρότερον μὲν πρὸς Ἀρδι- 25 αῖους συνεχῶς ἐπολέμει περὶ ἁλῶν ἐν μεθορίοις πηγνυμένων ἐξ ὕδατος ῥέοντος ὑπὸ ἄγκει τιμὴ τοῦ ἕαρος· ἀρυσάμενοις γὰρ καὶ ἀποθεῖσιν ἡμέρας πέντε ἐξεπήγνυντο οἱ ἄλλες. συνέκειτο δὲ παρὰ μέρος χρῆσθαι τῷ ἄλοπηγίῳ, παραβαίνοντες δὲ τὰ συγκείμενα ἐπολέ- 30 μουν· καταστρεψάμενοι δὲ ποτε οἱ Ἀνταριᾶται Τριβαλλοὺς ἀπὸ Ἀγριάνων μέχρι τοῦ Ἰστρου καθήκοντας

ἡμερῶν πεντεκαίδεκα ὁδὸν ἐπῆρξαν καὶ τῶν ἄλλων
 Θρακῶν τε καὶ Ἰλλυριῶν· κατελύθησαν δ' ὑπὸ Σκορ-
 δίσκων πρότερον, ὕστερον δ' ὑπὸ Ῥωμαίων, οἳ καὶ
 τοὺς Σκορδίσκους αὐτοὺς κατεπολέμησαν πόλυν χρό-
 5 νον ἰσχύσαντας.

Ῥωίκησαν δ' οὗτοι παρὰ τὸν Ἰστρον διηρημένοι 12
 δίχα, οἳ μὲν μεγάλοι Σκορδίσκοι καλούμενοι οἳ δὲ μι-
 κροί· οἳ μὲν μεταξὺ δυεῖν ποταμῶν ἐμβαλλόντων εἰς
 τὸν Ἰστρον, τοῦ τε Νοάρχου τοῦ παρὰ τὴν Σεγεστικήν
 10 ῥέοντος καὶ τοῦ Μάργρου (τινὲς δὲ Βάργου φασίν), οἳ δὲ
 μικροὶ τούτου πέραν, συνάπτοντες Τριβαλλοῖς καὶ
 Μυσοῖς. εἶχον δὲ καὶ τῶν νήσων τινὰς οἳ Σκορδίσκοι·
 ἐπὶ τοσοῦτον δ' ἠϋξήθησαν ὥστε καὶ μέχρι τῶν Ἰλλυ-
 ρικῶν καὶ τῶν Παιονικῶν καὶ Θρακίων προῆλθον
 15 ὁρῶν· κατέσχον οὖν καὶ τὰς νήσους τὰς ἐν τῷ Ἰστρον
 τὰς πλείους, ἦσαν δὲ καὶ πόλεις αὐτοῖς Ἐόρτα καὶ Κα-
 πέδουννον. μετὰ δὲ τὴν τῶν Σκορδίσκων χάραν παρὰ
 μὲν τὸν Ἰστρον ἢ τῶν Τριβαλλῶν καὶ Μυσῶν ἔστιν,
 ὧν ἐμνήσθημεν πρότερον, καὶ τὰ ἔλη τὰ τῆς μικρᾶς
 20 καλουμένης Σκυθίας τῆς ἐντὸς Ἰστροῦ· καὶ τούτων
 ἐμνήσθημεν. ὑπεροικοῦσι δ' οὗτοί τε καὶ Κρόβυχοι
 καὶ οἳ Τρωγλοδύται λεγόμενοι τῶν περὶ Κάλλατιν καὶ
 Τομέα καὶ Ἰστρον τόπων. εἶθ' οἳ περὶ τὸ Αἶμον καὶ
 οἳ ὑπὲρ αὐτοῦ οἰκοῦντες μέχρι τοῦ Πόντου Κόραλλοι
 25 καὶ Βέσσοι καὶ Μαίδων τινὲς καὶ Δανθηλητῶν. πάντα
 μὲν οὖν ταῦτα ληστροικώτατα ἔθνη, Βέσσοι δέ, οἳ περ
 τὸ πλεον τοῦ ὄρους νέμονται τοῦ Αἶμου, καὶ ὑπὸ τῶν
 ληστῶν λησται προσαγορεύονται, καλυβίται τινες καὶ
 λυπρόβιοι, συνάπτοντες τῇ τε Ῥοδόπῃ καὶ τοῖς Παί-
 30 οσι καὶ τῶν Ἰλλυριῶν τοῖς τε Αὐταριάταις καὶ τοῖς

8. post ποταμῶν: οἰκεῖν

Δαρδανίοις. μεταξύ δὲ τούτων τε καὶ τῶν Ἀρδιαίων οἱ Δασαρήτιοι εἰσὶ καὶ Ἀγριᾶνες καὶ ἄλλα ἄσχημα ἔθνη, ἃ ἐπόρθουν οἱ Σκορδίσκοι μέχρι ἡρήμωσαν τὴν χώραν καὶ θρυμῶν ἀβάτων ἐφ' ἡμέρας πλείους ἐποίησαν μεστήν. 5

6 Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς μεταξύ Ἰστρου καὶ τῶν ὀρῶν τῶν ἐφ' ἐκότερα τῆς Παιονίας ἢ Ποντικῆ παραλία, ἣ ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ Ἰστρου μέχρι τῆς περὶ τὸν Αἶμον ὀρεινῆς καὶ μέχρι τοῦ στόματος τοῦ κατὰ Βυζάντιον. καθάπερ [δὲ] τὴν Ἰλλυρικὴν παραλίαν ἐπιόν- 10 τες μέχρι τῶν Κεραυνίων ὀρῶν προὔβημεν ἔξω τῆς Ἰλλυρικῆς πιπτόντων ὀρεινῆς, ἐχόντων δέ τι οἰκεῖον πέρας, τὰ μεσόγαια δ' ἔθνη τούτοις ἀφωρίσμεθα, νομίζοντες σημειωδεστέρας ἔσεσθαι τὰς τοιαύτας περιγραφὰς καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ὕστερον, οὕτω κἀν- 15 ταῦθα ἢ παραλία, κἀν ὑπερπίπτῃ τὴν ὀρεινὴν γραμμὴν, ὅμως εἰς οἰκεῖόν τι πέρας τελευτήσῃ τὸ τοῦ Πόντου στόμα καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ἐφεξῆς. ἔστιν οὖν ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ Ἰστρου ἐν δεξιᾷ ἔχον- 20 τι τὴν συνεχῇ παραλίαν Ἰστρος πολίχνην ἐν πεντακοσίοις σταδίοις, Μιλησίῳ κτίσμα· εἶτα Τόμις, ἔτερον πολίχνην ἐν διακοσίοις πεντήκοντα σταδίοις· εἶτα πόλις Κάλλατις ἐν διακοσίοις ὀγδοήκοντα, Ἡρακλεω- 25 τῶν ἄποικος· εἰτ' Ἀπολλωνία ἐν χιλίοις τριακοσίοις σταδίοις, ἄποικος Μιλησίων, τὸ πλεόν τοῦ κτίσματος ἰδρυμένον ἔχουσα ἐν νησίῳ τινί, [ὅπου] ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος, ἐξ οὗ Μάρκος Λεύκολλος τὸν κολοσσὸν ἦρε καὶ ἀνέθηκεν ἐν τῷ Καπετωλίῳ τὸν τοῦ Ἀπόλλωνος, Καλάμιδος ἔργον. ἐν τῷ μεταξύ δὲ διαστήματι τῷ ἀπὸ Καλλάτιδος εἰς Ἀπολλωνίαν Βιζώνη τέ ἐστιν, 30 ἣς κατεπόθη πολὺ μέρος ὑπὸ σεισμῶν, καὶ Κρουνοὶ καὶ Ὀδησσὸς Μιλησίων ἄποικος, καὶ Ναύλοχος Με-

σημβριανῶν πολίχνιον· εἶτα τὸ Αἶμον ὄρος μέχρι τῆς
 δεῦρο θαλάττης διῆκον· εἶτα Μεσημβρία Μεγαρέων
 ἄποικος, πρότερον δὲ * Μενεβρία, οἶον* Μένα πόλις,
 τοῦ κτίσαντος* Μένα καλουμένου, τῆς δὲ πόλεως βρίας
 5 καλουμένης θρακιστί· ὥς καὶ ἡ τοῦ Σήλνους πόλις Ση-
 λυμβρία προσηγόρευται, ἥ τε Αἶνος Πολτυμβρία ποτὲ
 ὠνομάζετο· εἴτ' Ἀγχιάλη πολίχνιον Ἀπολλωνιατῶν καὶ
 αὐτῇ Ἀπολλωνία. ἐν δὲ ταύτῃ τῇ παραλίᾳ ἐστὶν ἡ
 Τίριξις ἄκρα, χωρίον ἐρυμνόν, ᾧ ποτε καὶ Λυσίμαχος
 10 ἐχρήσατο γαζοφυλακίῳ. πάλιν δ' ἀπὸ τῆς Ἀπολλωνίας
 ἐπὶ Κυανέας στάδιοί· εἰσι περὶ χιλίους καὶ πεντακοσίους,
 ἐν δὲ τῷ μεταξύ ἥ τε Θυνιάς τῶν Ἀπολλωνιατῶν χώρα,
 καὶ Φινόπολις καὶ Ἀνδριακή, συνάπτουσαι τῷ Σαλμυ-
 δησσῷ. ἐστὶ δ' οὗτος ἐρημος αἰγιαλὸς καὶ λιθώδης, ἀλί-
 15 μενος, ἀναπεπταμένος πολὺς πρὸς τοὺς βορέας, στα-
 δίων ὅσον ἑπτακοσίων μέχρι Κυανέων τὸ μῆκος, πρὸς
 ὃν οἱ ἐκπίπτοντες ὑπὸ τῶν Ἀστῶν διαρπάσσονται τῶν
 ὑπερκειμένων, Θρακίου ἔθνους. αἱ δὲ Κυάνεαι πρὸς
 τῷ στόματι τοῦ Πόντου εἰσὶ δύο νησίδια, τὸ μὲν τῇ
 20 Εὐρώπῃ προσεχὲς τὸ δὲ τῇ Ἀσίᾳ, πορθμῷ διειργόμενα
 ὅσον εἴκοσι σταδίων. τοσοῦτον δὲ διέχει καὶ τοῦ ἱεροῦ
 τοῦ Βυζαντίων καὶ τοῦ ἱεροῦ τοῦ Χαλκηδονίων, ὅπερ
 ἐστὶ τοῦ στόματος τοῦ Εὐξείνου τὸ στενώτατον· προῖ-
 ὄντι γὰρ δέκα σταδίους ἄκρα ἐστὶ πενταστάδιον ποι-
 25 οῦσα τὸν πορθμόν, εἶτα διίσταται ἐπὶ πλεόν καὶ ποιεῖν
 ἄρχεται τὴν Προποντίδα.

Ἀπὸ μὲν οὖν τῆς ἁκρας τῆς τὸ πενταστάδιον ποι- 2
 ούσης ἐπὶ τὸν ὑπὸ τῇ Συκῇ καλούμενον λιμένα στά-
 διοι πέντε καὶ τριάκοντα, ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ Κέρας τὸ C.320
 30 Βυζαντίων πέντε. ἐστὶ δὲ τὸ Κέρας προσεχὲς τῷ Βυ-

ξαντίων τείχει κόλπος ἀνέχων ὥς πρὸς δύοσιν ἐπὶ στα-
 δίους ἐξήκοντα, εἰκῶς ἐλάφου κέρατι· εἰς γὰρ πλεί-
 στους σχίζεται κόλπους ὥς ἂν κλάδους τινάς, εἰς οὓς
 ἐμπίπτουσα ἡ πηλαμὺς ἀλίσκεται ῥαδίως διὰ τε τὸ
 πλήθος αὐτῆς καὶ τὴν βίαν τοῦ συνελάνοντος ῥοῦ καὶ 5
 τὴν στενότητα τῶν κόλπων, ὥστε καὶ χερσὶν ἀλίσκε-
 σθαι. γεννᾶται μὲν οὖν τὸ ζῶον ἐν τοῖς ἔλεσι τῆς Μαι-
 ῳτίδος, ἰσχύσαν δὲ μικρὸν ἐκπίπτει διὰ τοῦ στόματος
 ἀγεληδὸν καὶ φέρεται παρὰ τὴν Ἀσιανὴν ἥονα μέχρι
 Τραπεζοῦντος καὶ Φαρνακείας· ἐνταῦθα δὲ πρῶτον 10
 συνίστασθαι συμβαίνει τὴν θήραν, οὐ πολλή δ' ἐστίν·
 οὐ γάρ πω τὸ προσῆκον ἔχει μέγεθος· εἰς δὲ Σινώπην
 προϊούσα ὥραιοτέρα πρὸς τε τὴν θήραν καὶ τὴν ταρι-
 χεῖαν ἐστίν· ἐπειδὴν δὲ ἤδη συνάψῃ ταῖς Κυανέαις καὶ
 παραλλάξῃ ταύτας, ἐκ τῆς Χαλκηδονιακῆς ἀκτῆς λευκή 15
 τις πέτρα προϊπτουσα φοβεῖ τὸ ζῶον ὥστ' εὐθὺς εἰς
 τὴν περαιάν τρέπεσθαι· παραλαβὼν δ' ὁ ἐνταῦθα
 ῥοῦς, ἅμα καὶ τῶν τόπων εὐφυνῶν ὄντων πρὸς τὸ τὸν
 ἐκεῖ ῥοῦν τῆς θαλάττης ἐπὶ τὸ Βυζάντιον καὶ τὸ πρὸς
 αὐτῷ Κέρας τετράφθαι, φυσικῶς συνελάννεται δεῦρο 20
 καὶ παρέχει τοῖς Βυζαντίοις καὶ τῷ δήμῳ τῶν Ῥωμαίων
 πρόσοδον ἀξιόλογον. Χαλκηδόνιοι δ' ἐπὶ τῆς περαιᾶς
 ἰδρυμένοι πλησίον οὐ μετέχουσι τῆς εὐπορίας ταύτης
 διὰ τὸ μὴ προσπελάζειν τοῖς λιμέσιν αὐτῶν τὴν πηλα-
 μύδα· ἡ δὲ καὶ τὸν Ἀπόλλω φασὶ τοῖς κτίσασιν τὸ Βυ- 25
 ζάντιον ὕστερον μετὰ τὴν ὑπὸ Μεγαρέων Χαλκηδόνος
 κτίσιν χρηστηριαζομένοις προστάξαι ποιήσασθαι τὴν
 ἰδρυσιν ἀπεναντίον τῶν τυφλῶν, τυφλοὺς καλέσαντα
 τοὺς Χαλκηδονίους, ὅτι πρότεροι πλεύσαντες τοὺς τό-

7. post ἀλίσκεσθαι: διὰ τὴν στενοχωρίαν.

καὶ ἀπὸ τῶν ὀνομάτων δὲ ἐνίων τὸ βάρβαρον ἐμφαίνεται, Κέρκωψ καὶ Κόδρος καὶ Ἄικλος καὶ Κόθος καὶ Δρύμας καὶ Κρίνακος οἱ δὲ Θωῤῥακες καὶ Ἰλλυριοὶ καὶ Ἑπειρωταὶ καὶ μέχρι νῦν ἐν πλευραῖς εἰσιν· ἔτι μέντοι μᾶλλον πρότερον ἢ νῦν, ὅπου γε καὶ τῆς ἐν τῷ⁵ παρόντι Ἑλλάδος ἀναντιλέκτως οὔσης τὴν πολλὴν οἱ βάρβαροι ἔχουσι, Μακεδονίαν μὲν Θωῤῥακες καὶ τινα μέρη τῆς Θετταλίας, Ἀκαρνανίας δὲ καὶ Αἰτωλίας [τὰ] ἄνω Θεσπρωτοὶ καὶ Κασσωπαῖοι καὶ Ἀμφίλοχοι καὶ Μολοττοὶ καὶ Ἀθαμᾶνες, Ἑπειρωτικὰ ἔθνη. 10

2 Περὶ μὲν οὖν Πελασγῶν εἴρηται, τοὺς δὲ Λέλεγας τινὲς μὲν τοὺς αὐτοὺς Καρσίην εἰκάζουσιν, οἱ δὲ συνοίκους μόνον καὶ συστρατιώτας· διόπερ ἐν τῇ Μιλησίᾳ Λελέγων κατοικίας λέγεσθαί τινας, πολλαχοῦ δὲ τῆς Καρίας τάφους Λελέγων καὶ ἐρύματα ἔρημα Λελέγεια 15 καλούμενα. ἢ τε Ἰωνία νῦν λεγομένη πᾶσα ὑπὸ Καρῶν ᾤκειτο καὶ Λελέγων· ἐκβαλόντες δὲ τούτους οἱ Ἴωνες αὐτοὶ τὴν χώραν κατέσχον, ἔτι δὲ πρότερον οἱ τὴν Τροίαν ἐλόντες ἐξήλασαν τοὺς Λέλεγας ἐκ τῶν περὶ τὴν Ἰδὴν τόπων τῶν κατὰ Πήδασον καὶ τὸν Σατνιό- 20 εντα ποταμόν. ὅτι μὲν οὖν βάρβαροι ἦσαν οὗτοι, καὶ αὐτὸ τὸ κοινωνῆσαι τοῖς Καρσί νομίζοιτ' ἂν σημείον· ὅτι δὲ πλάνητες καὶ μετ' ἐκείνων καὶ χωρὶς καὶ ἐκ παλαιοῦ, καὶ αἱ Ἀριστοτέλους πολιτεῖαι δηλοῦσιν. ἐν μὲν γὰρ τῇ Ἀκαρνανῶν φησὶ τὸ μὲν ἔχειν αὐτῆς Κουρήτας, 25 C.322 τὸ δὲ προσεσπέριον Λέλεγας, εἶτα Τηλεβόας· ἐν δὲ τῇ Αἰτωλῶν τοὺς νῦν Λοκροὺς Λέλεγας καλεῖ, κατασχεῖν δὲ καὶ τὴν Βοιωτίαν αὐτοὺς φησιν· ὁμοίως δὲ καὶ ἐν τῇ Ὀπουντίῳ καὶ Μεγαρέων· ἐν δὲ τῇ Λευκαδίων καὶ αὐτόχθονά τινα Λέλεγα ὀνομάζει, τούτου δὲ θυ- 30 γατριδοῦν Τηλεβόαν, τοῦ δὲ παῖδας δύο καὶ εἰκοσι Τηλεβόας, ὧν τινὰς οἰκῆσαι τὴν Λευκάδα. μάλιστα δ'

ἂν τις Ἡσιόδῳ πιστεύσειεν οὕτως περὶ αὐτῶν εἰπόντι
 „ἦτοι γὰρ Διοκρὸς Δελέγων ἠγήσατο λαῶν, τοὺς δ' αὖ
 „ποτε Κρονίδης, Ζεὺς ἄφθιτα μῆδεα εἰδώς, λεκτοὺς
 „ἐκ γαίης λάους πόρε Δευκαλίωνι.“ τῇ γὰρ ἐτυμολο-
 5 γία τὸ συλλέκτους γεγονέναι τινὰς ἐκ παλαιοῦ καὶ μι-
 γράδας αἰνίττεσθαι μοι δοκεῖ καὶ διὰ τοῦτο ἐκλελοιπέναι
 τὸ γένος· ἅπερ ἂν τις καὶ περὶ Κανκῶνων λέγοι, νῦν
 οὐδαμοῦ ὄντων πρότερον δ' ἐν πλείοσι τόποις κατο-
 κισμένων.

- 10 Πρότερον μὲν οὖν καίπερ μικρῶν καὶ πολλῶν καὶ 3
 ἀδόξων ὄντων τῶν ἐθνῶν, ὅμως διὰ τὴν εὐανδρίαν
 καὶ τὸ βασιλεύεσθαι κατὰ σφᾶς οὐ πάνυ ἦν χαλεπὸν
 διαλαβεῖν τοὺς ὄρους αὐτῶν, νυνὶ δ' ἐρήμου τῆς πλεί-
 στης χώρας γεγεννημένης καὶ τῶν κατοικιῶν καὶ μάλι-
 15 στα τῶν πόλεων ἠφανισμένων, οὐδ' εἰ δύναιτό τις
 ἀκριβοῦν ταῦτα, οὐδὲν ἂν ποιολῇ χρήσιμον διὰ τὴν
 ἀδοξίαν καὶ τὸν ἀφανισμόν αὐτῶν, ὃς ἐκ πολλοῦ χρό-
 νου λαβὼν τὴν ἀρχὴν οὐδὲ νῦν πω πέπαυται κατὰ
 πολλὰ μέρη διὰ τὰς ἀποστάσεις, ἀλλ' ἐνστρατοπεδεύ-
 20 ουσιν αὐτοῖς Ῥωμαῖοι τοῖς οἰκοῖς, κατασταθέντες ὑπ'
 αὐτῶν δυνάσται. τῶν γοῦν Ἑπειρωτῶν ἐβδομήκοντα
 πόλεις Πολύβιός φησιν ἀνατρεῖναι Παῦλον μετὰ τὴν
 Μακεδόνων καὶ Περσέως κατάλυσιν (Μολοττῶν δ'
 ὑπάρξει τὰς πλείστας), πέντε δὲ καὶ δέκα μυριάδας
 25 ἀνθρώπων ἐξανδραποδίσασθαι. ὅμως δ' οὖν ἐγχειρή-
 σομεν, ἐφ' ὅσον τῇ γραφῇ τε προσήκει καὶ ἡμῖν ἐφι-
 κτόν, ἐπελθεῖν τὰ καθ' ἕκαστα, ἀρξάμενοι ἀπὸ τῆς
 κατὰ τὸν Ἰόνιον κόλπον παραλλίας· αὕτη δ' ἐστὶν εἰς
 ἣν ὁ ἔκπλους ὁ ἐκ τοῦ Ἀδρίου τελευτᾷ.
- 30 Ταύτης δὴ τὰ πρῶτα μέρη τὰ περὶ Ἐπίδαμνον καὶ 4
 Ἀπολλωνίαν ἐστίν. ἐκ δὲ τῆς Ἀπολλωνίας εἰς Μακε-
 δονίαν ἢ Ἐργνατία ἐστὶν ὁδὸς πρὸς ἔω, βεβηματισμένη

κατὰ μίλιον καὶ κατεστηλωμένη μέχρι Κυψέλων καὶ
 Ἐβρου ποταμοῦ· μιλίων δ' ἐστὶ πεντακοσίων τριά-
 κοντα πέντε· λογιζομένῳ δέ, ὥς μὲν οἱ πολλοί, τὸ μί-
 λιον ὀκταστάδιον τετρακισχίλιοι ἂν εἴεν στάδιοι καὶ
 ἐπ' αὐτοῖς διακόσιοι ὀγδοήκοντα, ὥς δὲ Πολύβιος 5
 προστιθεὶς τῷ ὀκτασταδίῳ δίπλεθρον, ὃ ἐστὶ τρίτον
 σταδίου, προσθετέον ἄλλους σταδίους ἑκατὸν ἑβδομή-
 C.323κοντα ὀκτώ, τὸ τρίτον τοῦ τῶν μιλίων ἀριθμοῦ. συμ-
 βαίνει δ' ἀπὸ ἴσου διαστήματος συμπίπτειν εἰς τὴν αὐ-
 τὴν ὁδὸν τοὺς τ' ἐκ τῆς Ἀπολλωνίας ὁρμηθέντας καὶ 10
 τοὺς ἐξ Ἐπιδάμνου. ἡ μὲν οὖν πᾶσα Ἐγνατία καλεῖται,
 ἡ δὲ πρώτη ἐπὶ Κανθαρίας λέγεται ὄρους Ἰλλυρικοῦ,
 διὰ Αὐχνιδοῦ πόλεως καὶ Πυλῶνος τόπου ὀρίζοντος ἐν
 τῇ ὁδῷ τὴν τε Ἰλλυρίδα καὶ τὴν Μακεδονίαν· ἐκείθεν
 δ' ἐστὶ παρὰ Βαρνοῦντα διὰ Ἡρακλείας καὶ Αὐγκη- 15
 στῶν καὶ Ἐορδῶν εἰς Ἑδεσσαν καὶ Πέλλαν μέχρι Θεσ-
 σαλονικείας· μίλια δ' ἐστὶ, φησὶ Πολύβιος, ταῦτα δια-
 κόσια ἐξήκοντα ἐπτά. ταύτην δὲ τὴν ὁδὸν ἐκ τῶν περὶ
 τὴν Ἐπιδάμνον καὶ τὴν Ἀπολλωνίαν τόπων ἰοῦσιν ἐν
 δεξιᾷ μὲν ἐστὶ τὰ Ἡπειρωτικὰ ἔθνη κλυζόμενα τῷ Σι- 20
 κελικῷ πελάγει μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου, ἐν ἀρι-
 στερᾷ δὲ τὰ ὄρη τὰ τῶν Ἰλλυριῶν ἃ προδιήλθομεν, καὶ
 τὰ ἔθνη τὰ παροικοῦντα μέχρι Μακεδονίας καὶ Παιό-
 νων. εἴτ' ἀπὸ μὲν Ἀμβρακικοῦ κόλπου τὰ νεύοντα
 ἐφεξῆς πρὸς ἑω, τὰ ἀντιπαρήκοντα τῇ Πελοποννήσῳ, 25
 τῆς Ἑλλάδος ἐστίν· εἴτ' ἐκπίπτει [εἰς] τὸ Αἰγαῖον πέ-
 λαγος ἀπολιπόντα ἐν δεξιᾷ τὴν Πελοπόννησον ὅλην.
 ἀπὸ δὲ τῆς ἀρχῆς τῶν Μακεδονικῶν ὁρῶν καὶ τῶν
 Παιονικῶν μέχρι Στρυμόνος ποταμοῦ Μακεδόνες τε
 οἰκοῦσι καὶ Παίονες καὶ τινες τῶν ὀρεινῶν Θρακῶν· 30
 τὰ δὲ πέραν Στρυμόνος ἤδη μέχρι τοῦ Ποντικοῦ στό-
 ματος καὶ τοῦ Αἴμου πάντα Θρακῶν ἐστὶ πλὴν τῆς

παραλλίας· αὕτη δ' ὑφ' Ἑλλήνων οἰκεῖται, τῶν μὲν ἐπὶ
 τῇ Προποντίδι ἰδρυμένων, τῶν δὲ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ
 καὶ τῷ Μέλανι κόλπῳ, τῶν δ' ἐπὶ τῷ Αἰγαίῳ. τὸ δ'
 Αἰγαῖον πέλαγος δύο κλύζει πλευράς τῆς Ἑλλάδος, τὴν
 5 μὲν πρὸς ἕω βλέπουσαν, τείνουσαν δὲ ἀπὸ Σουνίου
 πρὸς τὴν ἄρκτον μέχρι τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ Θεσ-
 σαλονικείας Μακεδονικῆς πόλεως, ἣ νῦν μάλιστα τῶν
 ἄλλων εὐανδρεῖ, τὴν δὲ πρὸς νότον τὴν Μακεδονικὴν
 ἀπὸ Θεσσαλονικείας μέχρι Στρυμόνος· τινὲς δὲ καὶ τὴν
 10 ἀπὸ Στρυμόνος μέχρι Νέστου τῇ Μακεδονίᾳ προσέ-
 μουσιν, ἐπειδὴ Φίλιππος ἐσπούδασε διαφερόντως περὶ
 ταῦτα τὰ χωρία ὥστ' ἐξειδιώσασθαι, καὶ συνεστήσατο
 προσόδους μεγίστας ἐκ τῶν μετὰλλων καὶ τῆς ἄλλης
 εὐφυΐας τῶν τόπων. ἀπὸ δὲ Σουνίου μέχρι Πελοπον-
 15 νήσου τὸ Μυρτώον ἔστι καὶ Κρητικὸν πέλαγος καὶ Λι-
 βυκὸν σὺν τοῖς κόλποις μέχρι τοῦ Σικελικοῦ· τοῦτο δὲ
 καὶ τὸν Ἀμβρακικὸν καὶ Κορινθιακὸν καὶ Κρῖσαϊον
 ἐκπληροῖ κόλπον.

Τῶν μὲν οὖν Ἑπειρωτῶν ἔθνη φησὶν εἶναι Θεό- 5
 20 πομπος τετταρεσκαίδεκα, τούτων δ' ἐνδοξότατα Χάονες
 καὶ Μολοττοὶ διὰ τὸ ἄρξαι ποτὲ πάσης τῆς Ἑπειρώτι-
 δος πρότερον μὲν Χάονας, ὕστερον δὲ Μολοττούς, οἷ C.324
 καὶ διὰ τὴν συγγένειαν τῶν βασιλέων ἐπὶ πλεόν ἡύξη-
 θησαν (τῶν γὰρ Αἰακιδῶν ἦσαν), καὶ διὰ τὸ παρὰ τού-
 25 τοις εἶναι τὸ ἐν Δωδώνῃ μαντεῖον, παλαιὸν τε καὶ ὀνο-
 μαστὸν ὄν. Χάονες μὲν οὖν καὶ Θεσπρωτοὶ καὶ μετὰ
 τούτους ἐφεξῆς Κασσωπαῖοι (καὶ οὗτοι δ' εἰσὶ Θεσπρω-
 τοὶ) τὴν ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ὁρῶν μέχρι τοῦ Ἀμβρα-
 30 κικοῦ κόλπου παραλίαν νέμονται χώραν εὐδαίμονα
 τὸν Κορινθιακόν, ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὸ Αὐσόιον πέλα-

γος, ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἑπειρον, εἰς χίλιοι καὶ τρια-
 κόσιοι στάδιοι ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ
 Ἀμβρακικοῦ κόλπου. ἐν τούτῳ δ' ἐστὶ τῷ διαστήματι
 Πάνορμος τε λιμὴν μέγας ἐν μέσοις τοῖς Κεραυνίοις
 ὄρεσι, καὶ μετὰ ταῦτα Ὀρχησμος λιμὴν ἄλλος, καθ' ὃν 5
 τὰ δυσμικὰ ἄκρα τῆς Κορκυραίας ἀντίκειται, καὶ πάλιν
 ἄλλος Κασσιόπη, ἀφ' οὗ ἐπὶ Βρεντέσιον χίλιοι
 ἑπτακόσιοι στάδιοι· οἱ δ' ἴσοι καὶ ἐπὶ Τάραντα ἀπὸ
 ἄλλου ἀκρωτηρίου νοτιωτέρου τῆς Κασσιόπης ὃ κα-
 λουῖσι Φαλακρόν. μετὰ δὲ Ὀρχησμον Ποσειδίου καὶ 10
 Βουθρωτὸν ἐπὶ τῷ στόματι τοῦ Πηλώδους καλουμέ-
 νου λιμένος ἰδρυμένον ἐν τόπῳ χερρονησίζοντι, ἐποί-
 κους ἔχον Ῥωμαίους, καὶ τὰ Σύβοτα. εἰς δὲ νησιδὲς
 τὰ Σύβοτα τῆς μὲν Ἑπείρου μικρὸν ἀπέχουσιν, κατὰ
 δὲ τὸ ἑὸν ἄκρον τῆς Κορκυραίας τὴν Λευκίμμαν κεί- 15
 μεναι. καὶ ἄλλαι δ' ἐν τῷ παράπλῳ νησιδὲς εἰσὶν οὐκ
 ἄξιαι μνήμης. ἔπειτα ἄκρα Χειμέριον καὶ Γλυκὺς λι-
 μὴν, εἰς ὃν ἐμβάλλει ὁ Ἀχέρων ποταμός, ῥέων ἐκ τῆς
 Ἀχερουσίας λίμνης καὶ δεχόμενος πλείους ποταμοὺς
 ὥστε καὶ γλυκαίνειν τὸν κόλπον· ῥεῖ δὲ καὶ ὁ Θύαμις 20
 πλησίον. ὑπέρεκειται δὲ τούτου μὲν τοῦ κόλπου Κίχ-
 ρος, ἡ πρότερον Ἐφύρα, πόλις Θεσπρωτῶν· τοῦ δὲ
 κατὰ Βουθρωτὸν ἡ Φοινίκη. ἐγγὺς δὲ τῆς Κιχύρου
 πολίχνην Βουχέτιον Κασσωπαίων μικρὸν ὑπὲρ τῆς
 θαλάττης ὄν, καὶ Ἐλάτρια καὶ Πανδοσία καὶ Βατίαι ἐν 25
 μεσογαίᾳ, καθήκει δ' αὐτῶν ἡ χώρα μέχρι τοῦ κόλπου.
 μετὰ δὲ Γλυκὺν λιμένα ἐφεξῆς εἰσὶ δύο ἄλλοι λιμένες,
 ὁ μὲν ἐγγυτέρω καὶ ἐλάττων Κόμαρος ἰσθμὸν ποιῶν
 ἐξήκοντα σταδίων πρὸς τὸν Ἀμβρακικὸν κόλπον καὶ
 τὸ τοῦ Σεβαστοῦ Καίσαρος κτίσμα τὴν Νικόπολιν· ὁ 30
 δὲ ἀπωτέρω καὶ μείζων καὶ ἀμείνων πλησίον τοῦ στό-

ματος τοῦ κόλπου, διέχων τῆς Νικοπόλεως ὅσον δώ-
δεκα σταδίου.

Ἐφεξῆς δὲ τὸ στόμα τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου· τοῦ C.325
του δὲ τοῦ κόλπου τὸ μὲν στόμα μικρῷ τοῦ τετραστα- 6
5 δίου μεῖζον, ὃ δὲ κύκλος καὶ τριακοσίων σταδίων, εὐ-
λίμενος δὲ πᾶς. οἰκοῦσι δὲ τὰ μὲν ἐν δεξιᾷ εἰσπλέουσι
τῶν Ἑλλήνων Ἀκαρναῖνες· καὶ λερόν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλ-
λωνος ἐνταῦθά ἐστι πλησίον τοῦ στόματος, λόφος
τις ἐφ' ᾧ ὁ νεῶς, καὶ ὑπ' αὐτῷ πεδῖον ἄλλος ἔχον καὶ
10 νεώρια, ἐν οἷς ἀνέθηκε Καῖσαρ τὴν δεκαναῖαν ἀκρο-
θίνιον, ἀπὸ μονοκρότου μέχρι δεκῆρους· ὑπὸ πυρὸς
δ' ἠφανίσθαι καὶ οἱ νεῶσοικοι λέγονται καὶ τὰ πλοῖα·
ἐν ἀριστερᾷ δὲ ἡ Νικόπολις καὶ τῶν Ἡπειρωτῶν οἱ
Κασσωπαῖοι μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ κατὰ Ἀμβρακίαν·
15 ὑπέρεκειται δὲ αὕτη τοῦ μυχοῦ μικρόν, Γόργον τοῦ
Κυψέλου κτίσμα· παραρρεῖ δ' αὐτὴν ὁ Ἀρατθος πο-
ταμὸς ἀνάπλουν ἔχων ἐκ θαλάττης εἰς αὐτὴν ὀλίγων
σταδίων, ἀρχόμενος ἐκ Τύμφης ὄρους καὶ τῆς Παρω-
ραίας. ἡνὲνται μὲν οὖν καὶ πρότερον ἡ πόλις αὕτη δια-
20 φερόντως (τὴν γοῦν ἐπωνυμίαν ἐντεῦθεν ἔσχηκεν ὁ
κόλπος), μάλιστα δ' ἐκόσμησεν αὐτὴν Πύρρος βασι-
λεῖφ χρησάμενος τῷ τόπῳ· Μακεδόνες δ' ὕστερον καὶ
Ῥωμαῖοι καὶ ταύτην καὶ τὰς ἄλλας κατεπόνησαν τοῖς
συνεχέσι πολέμοις διὰ τὴν ἀπειθείαν, ὥστε τὸ τελευ-
25 ταῖον ὁ Σεβαστὸς ὁρῶν ἐκλελειμμένης τελέως τὰς πό-
λεις εἰς μίαν συνώκισε τὴν ὑπ' αὐτοῦ κληθεῖσαν Νι-
κόπολιν ἐν τῷ κόλπῳ τοῦτῳ, ἐκάλεσε δ' ἐπάνυμον τῆς
νίκης, ἐν ᾗ κατεναυμάχησεν Ἀντώνιον πρὸ τοῦ στό-
ματος τοῦ κόλπου καὶ τὴν Αἰγυπτίων βασίλισσαν
30 Κλεοπάτραν παροῦσαν ἐν τῷ ἁγῶνι καὶ αὐτὴν. ἡ μὲν
οὖν Νικόπολις εὐάνδρεῖ καὶ λαμβάνει καθ' ἡμέραν
ἐπίδοσιν, χάραν τε ἔχουσα πολλὴν καὶ τὸν ἐκ τῶν λα-

φύρων κόσμον, τό τε κατασκευασθὲν τέμενος ἐν τῷ προαστείῳ τὸ μὲν εἰς τὸν ἀγῶνα τὸν πεντετηρικὸν ἐν ἄλσει ἔχοντι γυμνάσιόν τε καὶ στάδιον, τὸ δ' ἐν τῷ ὑπερκειμένῳ τοῦ ἄλσεως ἱερῷ λόφῳ τοῦ Ἀπόλλωνος. ἀποδέδεικται δ' ὁ ἀγὼν Ὀλύμπιος, τὰ Ἄκτια, ἱερὸς τοῦ 5 Ἀκτίου Ἀπόλλωνος, τὴν δ' ἐπιμέλειαν ἔχουσιν αὐτοῦ Λακεδαιμόνιοι. αἱ δ' ἄλλαι κατοικίαι περιπόλιοι τῆς Νικοπόλεως εἰσιν. ἤγετο δὲ καὶ πρότερον τὰ Ἄκτια τῷ θεῷ, στεφανίτης ἀγών, ὑπὸ τῶν περιόικων· νυνὶ δ' ἐντιμότερον ἐποίησεν ὁ Καῖσαρ.

7 Μετὰ δὲ τὴν Ἀμβρακίαν τὸ Ἄργος ἐστὶ τὸ Ἀμφιλοχικόν, κτίσμα Ἀλκμαίωνος καὶ τῶν παίδων. Ἐφορος μὲν οὖν φησὶ τὸν Ἀλκμαίωνα μετὰ τὴν Ἐπιγόνων ἐπὶ τὰς Θήβας στρατεῖαν παρακληθέντα ὑπὸ Διομήδους συνελθεῖν εἰς Αἰτωλίαν αὐτῷ καὶ συγκατακτῆ- 15 σασθαι ταυτην τε καὶ τὴν Ἀκαρνανίαν· καλοῦντος δ' αὐτοὺς ἐπὶ τὸν Τρωικὸν πόλεμον Ἀγαμέμνωνος, τὸν 0.326 μὲν Διομήδῃ πορευθῆναι, τὸν δ' Ἀλκμαίωνα μείναντα ἐν τῇ Ἀκαρνανίᾳ τὸ Ἄργος κτίσαι, καλέσαι δ' Ἀμφιλοχικὸν ἐπώνυμον τοῦ ἀδελφοῦ, Ἰναχον δὲ τὸν διὰ τῆς 20 χώρας ρέοντα ποταμὸν εἰς τὸν κόλπον ἀπὸ τοῦ κατὰ τὴν Ἀργεῖαν προσαγορευῆσαι. Θουκυδίδης δὲ φησιν αὐτὸν Ἀμφίλοχον μετὰ τὴν ἐκ Τροίας ἐπάνοδον δυσαρεστοῦντα τοῖς ἐν Ἄργει παρελθεῖν εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν, διαδεξάμενον δὲ τὴν τᾶδελφοῦ δυναστείαν κτίσαι 25 τὴν πόλιν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ.

Ἡπειρώται δ' εἰσὶ καὶ Ἀμφίλοχοι καὶ οἱ ὑπερκείμενοι καὶ συνάπτοντες τοῖς Ἰλλυρικοῖς ὄρεσι, τραχεῖαν οἰκοῦντες χώραν, Μολοττοὶ τε καὶ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἰθικες καὶ Τυμφαῖοι καὶ Ὀρέσται Παρωραῖοι τε καὶ 30 Ἀτιντᾶνες, οἱ μὲν πλησιάζοντες τοῖς Μακεδόσι μᾶλλον οἱ δὲ τῷ Ἰονίῳ κόλπῳ. λέγεται δὲ τὴν Ὀρεστιάδα

κατασχεῖν ποτε Ὀρέστης φεύγων τὸν τῆς μητρὸς φό-
 νον καὶ καταλιπεῖν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ τὴν χώραν, κτί-
 σαι δὲ καὶ πόλιν, καλεῖσθαι δ' αὐτὴν Ἄργος Ὀρεστι-
 κόν. ἀναμέμικται δὲ τούτοις τὰ Ἰλλυρικά ἐθνη τὰ πρὸς
 5 τῷ νοτίῳ μέρει τῆς ὀρεινῆς καὶ τὰ ὑπὲρ τοῦ Ἰονίου
 κόλπου· τῆς γὰρ Ἐπιδάμνου καὶ τῆς Ἀπολλωνίας μέ-
 χρι τῶν Κεραυνίων ὑπεροικοῦσι Βυλλιόνες τε καὶ Ταυ-
 λάντιοι καὶ Παρθῖνοι καὶ Βρυῖοι· πλησίον δὲ πού καὶ
 τὰ ἀργυρεῖα τὰ ἐν Λαμαστίῳ, περὶ ἃ Ἀνέσται συνεστή-
 10 σαντο τὴν δυναστείαν καὶ Ἐρχέλειοι, οὓς καὶ Σεσαρη-
 θίους καλοῦσι· πρὸς δὲ τούτοις Ἀνγκῆσται τε καὶ ἡ
 Δευρίοπος καὶ ἡ τρίπολις Πελαγονία καὶ Ἑορδοὶ καὶ
 Ἑλίμεια καὶ Ἑράτυρα. ταῦτα δὲ πρότερον μὲν κατεδυ-
 ναστεύετο ἕκαστα, ὧν ἐν τοῖς Ἐρχελείοις οἱ Κάδμου
 15 καὶ Ἀρμονίας ἀπόγονοι ἦρχον, καὶ τὰ μυθευόμενα περὶ
 αὐτῶν ἐκεῖ δείκνυνται. οὗτοι μὲν οὖν οὐχ ὑπὸ ἰθαγε-
 νῶν ἦρχοντο· οἱ δὲ Ἀνγκῆσται ὑπ' Ἀρραβαῖω ἐγένοντο
 τοῦ Βακχιαδῶν γένους ὄντι· τούτου δ' ἦν θυγατριδῆ
 ἡ Φιλίππου μήτηρ τοῦ Ἀμύντου Εὐρυδίκη, Σίωρα δὲ
 20 θυγάτηρ· καὶ τῶν Ἡπειρωτῶν δὲ Μολοττοὶ ὑπὸ Πύρ-
 ρῳ τῷ Νεοπτολέμου τοῦ Ἀχιλλέως καὶ τοῖς ἀπογόνους
 αὐτοῦ Θετταλοῖς οὗσι γεγονότες· οἱ λοιποὶ δὲ ὑπὸ ἰθα-
 γενῶν ἦρχοντο· εἴτ' ἐπικρατούντων αἰεί τινων κατέ-
 στρεφεν ἅπαντα εἰς τὴν Μακεδόνων ἀρχήν, πλὴν ὀλί-
 25 γων τῶν ὑπὲρ τοῦ Ἰονίου κόλπου. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ
 Ἀνγκὸν καὶ Πελαγονίαν καὶ Ὀρεστιάδα καὶ Ἑλίμειαν
 τὴν ἄνω Μακεδονίαν ἐκάλουν, οἱ δ' ὕστερον καὶ ἔλευ-
 θέραν· ἔνιοι δὲ καὶ σύμπασαν τὴν μέχρι Κορκύρας
 Μακεδονίαν προσαγορεύουσιν, αἰτιολογοῦντες ἅμα C.327
 30 ὅτι καὶ κουρᾷ καὶ διαλέκτῳ καὶ χλαμῦδι καὶ ἄλλοις
 τοιούτοις χρῶνται παραπλησίως· ἔνιοι δὲ καὶ δίγλωτ-
 τοὶ εἰσι. καταλυθείσης δὲ τῆς Μακεδόνων ἀρχῆς ὑπὸ

Ῥωμαίους ἔπεσε. διὰ δὲ τούτων ἐστὶ τῶν ἐθνῶν ἡ Ἑρνατία ὁδὸς ἐξ Ἐπιδάμνου καὶ Ἀπολλωνίας· περὶ δὲ τὴν ἐπὶ Κανδακίας ὁδὸν αἶ τε λίμναι εἰσὶν αἱ περὶ Ἀνχνιδὸν ταριχείας ἰχθύων αὐτάρκεις ἔχουσαι, καὶ ποταμοὶ οἳ τε εἰς τὸν Ἰόνιον κόλπον ἐκπίπτοντες καὶ οἱ ἐπὶ τὰ νότια μέρη, ὅ τ' Ἰναχος καὶ ὁ Ἀρατθός καὶ ὁ Ἀχελῷος καὶ ὁ Εὐήνος ὁ Ἀνκόρμας πρότερον καλούμενος, ὁ μὲν εἰς τὸν κόλπον τὸν Ἀμβρακικὸν ἐμβάλλων ὁ δὲ εἰς τὸν Ἀχελῷον, αὐτὸς δὲ ὁ Ἀχελῷος εἰς τὴν θάλατταν καὶ ὁ Εὐήνος, ὁ μὲν τὴν Ἀκαρνανίαν διεξιὼν ὁ δὲ τὴν Αἰτωλίαν· ὁ δὲ Ἐρίγων πολλὰ δεξιόμενος ρεύματα ἐκ τῶν Ἰλλυρικῶν ὁρῶν καὶ Ἀνγκηστῶν καὶ Βρύγων καὶ Δευριόπων καὶ Πελαγόνων εἰς τὸν Ἀξιὸν ἐκδίδωσι.

- 9 Πρότερον μὲν οὖν καὶ πόλεις ἦσαν ἐν τοῖς ἔθνεσι τούτοις· τρίπολις γοῦν ἡ Πελαγονία ἐλέγετο, ἥς καὶ 15 Ἀξωρός ἦν, καὶ ἐπὶ τῷ Ἐρίγωνι πᾶσαι αἱ τῶν Δευριόπων πόλεις ὄκνητο, ὧν τὸ Βρυάνιον καὶ Ἀλαλκομεναὶ καὶ Στύβαρα· Κύδραι δὲ Βρύγων, Αἰγίνιον δὲ Τυμφαίων, ὁμορον Αἰθικίᾳ καὶ Τρίκκῃ· πλησίον δ' ἦδη τῆς τε Μακεδονίας καὶ τῆς Θετταλίας περὶ τὸ Ποῖον 20 ὄρος καὶ τὴν Πίνδον Αἰθικὲς τε καὶ τοῦ Πηνειοῦ πηγαί, ὧν ἀμφισβητοῦσι Τυμφαῖοί τε καὶ [οἱ] ὑπὸ τῇ Πίνδῳ Θετταλοί· καὶ πόλις Ὀξύνεια παρὰ τὸν Ἴωνα ποταμὸν ἀπέχουσα Ἀξώρου τῆς τριπολίτιδος σταδίους ἑκατὸν εἴκοσι· πλησίον δὲ καὶ Ἀλαλκομεναὶ καὶ Αἰγί- 25 νιον καὶ Εὐρώπος καὶ αἱ τοῦ Ἰωνος εἰς τὸν Πηνειὸν συμβολαί. τότε μὲν οὖν, ὥς εἶπον, καίπερ οὐσα τραχεῖα καὶ ὁρῶν πλήρης, Τομάρου καὶ Πολυάνου καὶ ἄλλων πλειόνων, ὅμως ἐνάνδρει ἢ τε Ἡπειρος πᾶσα καὶ ἡ Ἰλλυρίς· νῦν δὲ τὰ πολλὰ μὲν ἐρημία κατέχει, τὰ 30 δ' οἰκούμενα κωμηδὸν καὶ ἐν ἐρειπίοις λείπεται.

- 10 Ἐκκλέλοιπε δέ πως καὶ τὸ μαντεῖον τὸ ἐν Δωδώνῃ,

καθάπερ τὰλλα. ἔστι δ', ὥς φησιν Ἐφορος, Πελα-
 σγῶν ἴδρυμα· οἱ δὲ Πελασγοὶ τῶν περὶ τὴν Ἑλλάδα
 δυναστευσάντων ἀρχαιότατοι λέγονται· καὶ ὁ ποιη-
 τῆς φησιν οὕτω „Ζεῦ ἄνα Δωδωναῖε, Πελασγικέ,“
 5 ὁ δ' Ἡσίοδος „Δωδώνην φηγόν τε, Πελασγῶν ἔδρα-
 „νον ἦεν.“ περὶ μὲν οὖν τῶν Πελασγῶν ἐν τοῖς C.328
 Τυρρηνικοῖς εἴρηται, περὶ δὲ Δωδώνης τοὺς μὲν πε-
 ριοικοῦντας τὸ ἱερὸν διότι βάρβαροι διασαφεῖ καὶ ὁ
 Ὅμηρος ἐκ τῆς διαίτης, ἀνιπτόποδας χαμαιεύνας λέ-
 10 γων· πρότερον δὲ χρὴ λέγειν Ἑλλοὺς, ὥς Πίνδαρος, ἡ
 Σελλοὺς, ὥς ὑπονοοῦσι παρ' Ὀμήρῳ κεῖσθαι, ἡ γρα-
 φὴ ἀμφίβολος οὕσα οὐκ ἐᾷ διςχυρίζεσθαι. Φιλόχορος
 δὲ φησι καὶ τὸν περὶ Δωδώνην τόπον, ὥσπερ τὴν Εὐ-
 βόειαν, Ἑλλοπίαν κληθῆναι· καὶ γὰρ Ἡσίοδον οὕτω
 15 λέγειν „ἔστι τις Ἑλλοπίη, πολυλήιος ἡδ' ἐυλείμων·
 „ἐνθα δὲ Δωδώνη τις ἐπ' ἐσχατιῇ πεπόλισται.“ οἶον-
 ται δέ, φησὶν ὁ Ἀπολλοδώρος, ἀπὸ τῶν ἐλῶν τῶν περὶ
 τὸ ἱερὸν οὕτω καλεῖσθαι· τὸν μέντοι ποιητὴν [οὐχ]
 οὕτω λέγειν Ἑλλοὺς ἀλλὰ Σελλοὺς ὑπολαμβάνει τοὺς
 20 περὶ τὸ ἱερὸν, προσθεὶς ὅτι καὶ Σελλήεντα τινὰ
 ὀνομάζει ποταμόν. ὀνομάζει μὲν οὖν, ὅταν φῇ „τηλό-
 „θεν ἐξ Ἐφύρης ποταμοῦ ἄπο Σελλήεντος.“ [οὐ μὲν-
 τοι, ὁ Σκῆψιός φησι, τῆς] ἐν Θεσπρωτοῖς Ἐφύρας,
 ἀλλὰ τῆς ἐν τοῖς Ἠλείοις· ἐκεῖ γὰρ εἶναι τὸν Σελλήεντα,
 25 ἐν δὲ Θεσπρωτοῖς οὐδένα, οὐδ' ἐν Μολοττοῖς. τὰ δὲ
 μυθεύόμενα περὶ τῆς θρυλῆος καὶ τῶν πελειῶν καὶ εἴ
 τινα ἄλλα τοιαῦτα, καθάπερ καὶ [τὰ] περὶ Δελφῶν, τὰ
 μὲν ποιητικωτέρας ἐστὶ διατριβῆς τὰ δ' οἰκεία τῆς νῦν
 περιουδείας.

30 Ἡ Δωδώνη τοίνυν τὸ μὲν παλαιὸν ὑπὸ Θεσπρω- 11
 τοῖς ἦν καὶ τὸ ὄρος ὁ Τόμαρος ἡ Τμάρος (ἀμφοτέρως
 γὰρ λέγεται), ὑφ' ᾧ κεῖται τὸ ἱερὸν· καὶ οἱ τραγικοὶ

- δὲ καὶ Πίνδαρος Θεσπρωτίδα εἰρήκασι τὴν Δωδώνην· ὕστερον δὲ ὑπὸ Μολοττοῖς ἐγένετο. ἀπὸ δὲ τοῦ Τομάρου τοὺς ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένους ὑποφήτας τοῦ Διὸς, οὓς καὶ ἀνιπτόποδας χαμαιεύνας καλεῖ, τομύρους φασὶ λεχθῆναι· καὶ ἐν μὲν τῇ Ὀδυσσεΐᾳ οὕτω ὁ γράφουσί τινες ἃ φησιν Ἀμφίνομος, συμβουλευόν τοῖς μνηστῆρσι μὴ πρότερον ἐπιτίθεσθαι τῷ Τηλεμάχῳ πρὶν ἂν τὸν Δία ἔρωνται „εἰ μὲν κ' ἀλνῆσωσι „Διὸς μεγάλοιο τομοῦροι, αὐτὸς τε κτανέω, τοὺς τ' „ἄλλους πάντας ἀνώξω· εἰ δέ κ' ἀποτρεπέησι θεός, 10 „παύεσθαι ἄνωγα.“ βέλτιον γὰρ εἶναι τομύρους ἢ θέμιστας γράφειν· οὐδαμοῦ γοῦν τὰ μαντεῖα θέμιστας λέγεσθαι παρὰ τῷ ποιητῇ, ἀλλὰ τὰς βουλάς καὶ τὰ πολιτεύματα καὶ νομοθετήματα· τομύρους δ' εἰρῆσθαι C.329 ἐπιτετμημένως οἷον τομαροφύλακας. οἱ μὲν οὖν νεώ- 15 τεροι λέγουσιν τομύρους· [παρ'] Ὀμήρῳ δ' ἀπλούστερον δεῖ δέχεσθαι θέμιστας καταχρηστικῶς καὶ βουλάς, τὰ προστάγματα καὶ τὰ βουλήματα τὰ μαντικά, καθάπερ καὶ τὰ νόμιμα· τοιοῦτον γὰρ καὶ τό „ἐκ δρυὸς ὑψικόμοιο Διὸς βουλήν ἐπακοῦσαι.“ 20
- 12 Κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἄνδρες ἦσαν οἱ προφητεύοντες· καὶ τοῦτ' ἴσως καὶ ὁ ποιητὴς ἐμφαίνει· ὑποφήτας γὰρ καλεῖ, ἐν οἷς τάττοιτο καὶ οἱ προφηῆται· ὕστερον δ' ἀπεδείχθησαν τρεῖς γραῖαι, ἐπειδὴ καὶ σύνναος τῷ Διὶ προσαπεδείχθη καὶ ἡ Διώνη. Σουίδας μέντοι Θε- 25 ταλοῖς μυθώδεις λόγους προσχαριζόμενος ἐκείθεν τέ φησιν εἶναι τὸ ἱερὸν μετενηνεγμένον ἐκ τῆς περὶ Σκοτοῦσσαν Πελασγίας (ἔστι δ' ἡ Σκοτοῦσσα τῆς Πελασγιάδος Θετταλίας), συνακολουθησαί τε γυναικας τὰς πλείστας, ὧν ἀπογόνους εἶναι τὰς νῦν προφήτι- 30

15. post ἐπιτετμημένως: τμάρους

δας· ἀπὸ δὲ τούτου καὶ Πελασγικὸν Δία κεκληῖσθαι·
Κινέας δ' ἔτι μνηθωδέστερον.

— ΕΚ ΤΟΥ Ζ —

5 Κινέας δέ φησι πόλιν ἐν Θεσσαλίᾳ εἶναι καὶ φη- 1
γὸν καὶ τὸ τοῦ Διὸς μαντεῖον εἰς Ἡπειρον μετενεχθῆ-
ναι. Stephanus in Δωδώνη.

Ἦν δὲ πρότερον περὶ Σκοτοῦσσαν πόλιν τῆς Πε- 1^a
λασγιώτιδος τὸ χρηστήριον· ἐμπρησθέντος δ' ὑπό τι-
10 νων τοῦ δένδρου μετηνέχθη κατὰ χρησμὸν τοῦ Ἀπόλ-
λωνος ἐν Δωδώνη. ἐχρησμάδει δ' οὐ διὰ λόγων, ἀλλὰ
διὰ τινων συμβόλων, ὥσπερ τὸ ἐν Διβύῃ Ἀμμωνιακόν·
ἴσως δέ τινα πτῆσιν αἱ τρεῖς περιστρεφαὶ ἐπέτοντο ἐξαί-
ρετον, ἐξ ὧν αἱ λέρειαι παρατηρούμεναι προεθιέσπιζον.
15 φασὶ δὲ καὶ κατὰ τὴν τῶν Μολοττῶν καὶ Θεσπρωτῶν
γλῶτταν τὰς γραίας πελίας καλεῖσθαι καὶ τοὺς γέρον-
τας πελίους· καὶ ἴσως οὐκ ὄρουα ἦσαν αἱ θρυλούμεναι
πελειάδες, ἀλλὰ γυναικες γραῖαι τρεῖς περὶ τὸ λερὸν
σχολάζουσαι. Epit. (i. e. epitome edita).

20 Ὅτι κατὰ Θεσπρωτοὺς καὶ Μολοττοὺς τὰς γραίας 2
πελίας καὶ τοὺς γέροντας πελίους, καθάπερ καὶ παρὰ
Μακεδόσι· πελιγόνας γοῦν καλοῦσιν ἐκεῖνοι τοὺς ἐν
τιμαῖς, καθὰ παρὰ Λάκωσι καὶ Μασσαλιώταις τοὺς
γέροντας· ὅθεν καὶ τὰς ἐν τῇ Δωδωναίᾳ δρυὶ μεμν-
25 θεῦσθαι πελείας φασίν. E. (i. e. epitome Vaticana).

Ὅτι ἡ παροιμία „τὸ ἐν Δωδώνη χαλκίον“ ἐντεῦ- 3
θεν ὠνομάσθη· χαλκίον ἦν ἐν τῷ λερῷ ἔχον ὑπερκείμε-
νον ἀνδριάντα κρατοῦντα μάστιγα χαλκῆν, ἀνάθημα
Κορκυραίων· ἡ δὲ μάστιξ ἦν τριπλῇ ἀλυσιδωτῇ ἀπηρ-
30 τημένους ἔχουσα ἐξ αὐτῆς ἀστραγάλους, οἱ πλῆττοντες
τὸ χαλκίον συνεχῶς, ὅποτε αἰωροῖντο ὑπὸ τῶν ἀνέ-
μων, μακροὺς ἤχους ἀπειργάζοντο, ἕως ὃ μετρῶν τὸν

χρόνον ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τοῦ ἤχου μέχρι τέλους καὶ ἐπὶ τετρακόσια προέλθοι· ὅθεν καὶ ἡ παροιμία ἐλέχθη „ἢ Κερκυραίων μάστιξ.“ Epit.

- 4 Ἡ δὲ Παιονία τούτοις μὲν ἔστι πρὸς ἑω τοῖς ἔ-
θνεσι, πρὸς δύσιν δὲ τοῖς Θρακίοις ὄρεσι, πρὸς ἄρκτον 5
δ' ὑπέγκειται τοῖς Μακεδόσι, διὰ Γορτυνίου πόλεως
καὶ Στύβων ἔχουσα τὰς εἰσβολὰς ἐπὶ τὰ πρὸς
δι' ὧν ὁ Ἀξιὸς ῥέων δυσεῖσβολον ποιεῖ τὴν Μακεδο-
νίαν ἐκ τῆς Παιονίας, ὡς ὁ Πηνειὸς διὰ τῶν Τεμπῶν
φερόμενος ἀπὸ τῆς Ἑλλάδος αὐτὴν ἐρμυνοῦ· πρὸς νό- 10
τον δὲ τοῖς Αὐταριάταις καὶ Δαρδανίοις καὶ Ἀρδιαίοις
ὁμορεῖ· ἐκτέταται δὲ καὶ μέχρι Στρυμόνος ἢ Παιο-
νία. Ε.

- 5 Ὅτι ὁ Ἀλιάκμων εἰς τὸν Θερμαῖον κόλπον ῥεῖ. Ε.

- 6 Ἡ δ' Ὅρεσις πολλὴ καὶ ὄρος ἔχει μέγα μέχρι τοῦ 15
Κόρακος τῆς Αἰτωλίας καθῆκον καὶ τοῦ Παρνασσοῦ.
περιοικοῦσι δ' αὐτοὶ τε Ὀρέσται καὶ Τυμφαῖοι καὶ οἱ
ἐκτὸς Ἰσθμοῦ Ἕλληνες οἱ περὶ Παρνασσὸν καὶ τὴν
Οἶτην καὶ Πίνδον. ἐν μὲν δὴ κοινῷ ὀνόματι καλεῖται
Βοῖον τὸ ὄρος, κατὰ μέρη δὲ πολυώνυμόν ἐστιν. φασὶ 20
δ' ἀπὸ τῶν ὑψηλοτάτων σκοπιῶν ἀφορᾶσθαι τό τε
Αἰγαῖον πέλαγος καὶ τὸ Ἀμβρακικὸν καὶ τὸ Ἰόνιον,
πρὸς ὑπερβολὴν οἶμαι λέγοντες. καὶ τὸ Πτελεὸν ἱκα-
νῶς ἐστὶν ἐν ὕψει τὸ περικείμενον τῷ Ἀμβρακικῷ κόλ-
πῳ, τῇ μὲν ἐκτεινόμενον μέχρι τῆς Κερκυραίας τῇ δ' 25
ἐπὶ τὴν κατὰ Λευκάδα θάλασσαν. Ε.

- 7 Ὅτι ἐπὶ γέλῳτι ἐν παροιμίας μέρει * γελᾷται Κέρ-
κυρα ταπεινωθεῖσα τοῖς πολλοῖς πολέμοις. Ε.

- 8 Ὅτι ἡ Κόρκυρα τὸ παλαιὸν εὐτυχὴς ἦν καὶ δύ-
ναμιν ναυτικὴν πλείστην εἶχεν, ἀλλ' ὑπὸ πολέμων τι- 30
νῶν καὶ τυράννων ἐφθάρη· καὶ ὕστερον ὑπὸ Ῥωμαίων
ἐλευθερωθεῖσα οὐκ ἐπηνέσθη, ἀλλ' ἐπὶ λοιδορίᾳ παροι-

μίαν ἔλαβεν „ἐλευθέρα Κόρκυρα, χέξ' ὅπου θέλεις.“
Epit.

Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς Εὐρώπης ἢ τε Μακεδονία καὶ 9
τῆς Θράκης τὰ συνεχῇ ταύτῃ μέχρι Βυζαντίου καὶ ἡ
5 Ἑλλάς καὶ αἱ προσεχεῖς νῆσοι. ἔστι μὲν οὖν Ἑλλάς καὶ
ἡ Μακεδονία· νυνὶ μέντοι τῇ φύσει τῶν τόπων ἀκο-
λουθοῦντες καὶ τῷ σχήματι χωρὶς ἔγνωμεν αὐτὴν ἀπὸ
τῆς ἄλλης Ἑλλάδος τᾶξαι καὶ συνάψαι πρὸς τὴν ὁμο-
ρον αὐτῇ Θράκην μέχρι τοῦ στόματος τοῦ Εὐξείνου
10 καὶ τῆς Προποντίδος. εἶτα μετ' ὀλίγα μέμνηται Κυ-
ψέλων καὶ τοῦ Ἑβρου ποταμοῦ. καταγράφει δὲ καὶ τι
σχῆμα παραλληλόγραμμον, ἐν ᾧ ἡ σύμπασα Μακεδο-
νία ἐστίν. Ε.

Ὅτι ἡ Μακεδονία περιορίζεται ἐκ μὲν δυσμῶν τῇ 10
15 παραλίᾳ τοῦ Ἀδρίου, ἐξ ἀνατολῶν δὲ τῇ παραλλήλῳ
ταύτης μεσημβρινῇ γραμμῇ τῇ διὰ τῶν ἐκβολῶν Ἑβρου
ποταμοῦ καὶ Κυψέλων πόλεως, ἐκ βορρᾶ δὲ τῇ νοου-
μένη εὐθείᾳ γραμμῇ τῇ διὰ Βερτίσκου ὄρους καὶ Σκάρ-
δου καὶ Ὀρβήλου καὶ Ροδόπης καὶ Αἵμου· τὰ γὰρ ὄρη
20 ταῦτα ἀρχόμενα ἀπὸ τοῦ Ἀδρίου διήκει κατὰ εὐθείαν
γραμμὴν ἕως τοῦ Εὐξείνου, ποιοῦντα χερρόνησον με-
γάλην πρὸς νότον, τὴν τε Θράκην ὁμοῦ καὶ Μακεδο-
νίαν καὶ Ἡπειρον καὶ Ἀχαΐαν· ἐκ νότου δὲ τῇ Ἐγνατίᾳ
ὁδῷ ἀπὸ Δυρραχίου πόλεως πρὸς ἀνατολὰς ἰοῦσιν
25 ἕως Θεσσαλονικείας· καὶ ἔστι τὸ σχῆμα τοῦτο τῆς Μα-
κεδονίας παραλληλογράμμου ἔγγιστα. Epit.

Ὅτι Ἡμαθία ἐκαλεῖτο πρότερον ἢ νῦν Μακεδο- 11
νία. ἔλαβε δὲ τοῦνομα τοῦτο ἀπ' ἀρχαίου τινὸς τῶν
ἡγεμόνων Μακεδόνοιο. ἦν δὲ καὶ πόλις Ἡμαθία πρὸς
30 θαλάσσην. κατεῖχον δὲ τὴν χώραν ταύτην Ἡπειρωτῶν
τινες καὶ Ἰλλυριῶν, τὸ δὲ πλεῖστον Βοττιαῖοι καὶ Θρά-
κες· οἱ μὲν ἐκ Κρήτης, ὥς φασι, τὸ γένος ὄντες, ἡγε-

μόνα ἔχοντες Βότωνα, Θρακῶν δὲ Πίερεις μὲν ἐνέ-
 μουντο τὴν Πιερίαν καὶ τὰ περὶ τὸν Ὀλυμπον, Παίονες
 δὲ [τὰ] περὶ τὸν Ἀξιὸν ποταμὸν καὶ τὴν καλουμένην διὰ
 τοῦτο Ἀμφαξίτιν, Ἡδωνοὶ δὲ καὶ Βισάλται τὴν λοιπὴν
 μέχρι Στρυμόνος· ὧν οἱ μὲν αὐτὸ τοῦτο προσηγο- 5
 ρεῦοντο Βισάλται, Ἡδωνῶν δ' οἱ μὲν Μυγδόνες οἱ δὲ
 *Ἡδωνες οἱ δὲ Σίθωνες. τούτων δὲ πάντων οἱ Ἀργεά-
 δαι καλούμενοι κατέστησαν κύριοι καὶ Χαλκιδεῖς οἱ ἐν
 Εὐβοίᾳ. ἐπῆλθον δὲ καὶ Χαλκιδεῖς οἱ ἐν Εὐβοίᾳ ἐπὶ
 τὴν τῶν Σιθώνων καὶ συνώκισαν πόλεις ἐν αὐτῇ περὶ 10
 τριάκοντα, ἐξ ὧν ὕστερον ἐκβαλλόμενοι συνῆλθον εἰς
 μίαν οἱ πλείους αὐτῶν, εἰς τὴν Ὀλυνθον· ὠνομάζοντο
 δ' οἱ ἐπὶ Θράκης Χαλκιδεῖς. Ε.

- 11^a Τὸ δὲ ἐθνικὸν τοῦ Βόττεια διὰ τοῦ ι, ὡς Στρά-
 βων ἐν ζ. καλεῖται δὲ ἀπὸ Βόττωνος τοῦ Κρητός. Ely- 15
 mol. M. p. 206, 6.
- 12 Ὅτι Πηνειὸς μὲν ὀρίζει τὴν κάτω καὶ πρὸς θα-
 λάττη Μακεδονίαν ἀπὸ Θετταλίας καὶ Μαγνησίας,
 Ἀλιάκμων δὲ τὴν ἄνω, καὶ ἔτι τοὺς Ἡπειρώτας καὶ
 τοὺς Παίονας καὶ αὐτὸς καὶ ὁ Ἐρίγων καὶ ὁ Ἀξιὸς καὶ 20
 ἕτεροι. Ε.
- 13 Ὅτι ἐστὶ τῆς παραλίας τῆς Μακεδονικῆς ἀπὸ τοῦ
 μυχοῦ τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ Θεσσαλονικείας ἡ μὲν
 τεταμένη πρὸς νότον μέχρι Σουνίου, ἡ δὲ πρὸς ἑω μέχρι
 τῆς Θρακίας χερρονήσου, γωνίαν τινα ποιοῦσα κατὰ 25
 τὸν μυχόν. εἰς ἑκάτερον δὲ καθηκούσης τῆς Μακεδο-
 νίας, ἀπὸ τῆς προτέρας λεχθείσης ἀρκτέον. τὰ μὲν δὴ
 πρῶτα μέρη τὰ περὶ Σούνιον ὑπερκειμένην ἔχει τὴν
 Ἀττικὴν σὺν τῇ Μεγαρικῇ μέχρι τοῦ Κρισαίου κόλ-
 που· μετὰ δὲ ταύτην ἡ Βοιωτικὴ ἐστὶ παραλία ἡ πρὸς 30
 Εὐβοίαν· ὑπέρκειται δ' αὐτῆς ἡ λοιπὴ Βοιωτία ἐπὶ
 δύσιν παράλληλος τῇ Ἀττικῇ. λέγει δὲ καὶ τὴν Ἐγνα-

τίαν ὁδὸν τελευτᾶν εἰς Θεσσαλονίκειαν ἀπὸ τοῦ Ἰο-
νίου κόλπου. Ε.

Τῶν ταινιῶν, φησὶν, ἀφοριοῦμεν πρώτους τοὺς 14
περὶ Πηνειὸν οἰκοῦντας καὶ τὸν Ἀλιάκμονα πρὸς θα-
5 λάττη. ρεῖ δ' ὁ Πηνειὸς ἐκ τοῦ Πίνδου ὄρους διὰ μέ-
σης τῆς Θετταλίας πρὸς ἕω. διελθὼν δὲ τὰς τῶν Λα-
πιθῶν πόλεις καὶ Περραιβῶν τινὰς συνάπτει τοῖς Τέμ-
πεσι, παραλαβὼν πλείους ποταμούς, ὧν καὶ ὁ Εὐρώ-
πος, ὃν Τιταρήσιον εἶπεν ὁ ποιητής, τὰς πηγὰς ἔχοντα
10 ἀπὸ τοῦ Τιταρίου ὄρους συμφυοῦς τῷ Ὀλύμπῳ, ὃ κἀν-
τεῦθεν ἄρχεται διορίζειν τὴν Μακεδονίαν ἀπὸ τῆς
Θετταλίας. ἔστι γὰρ τὰ Τέμπη στενὸς αὐλῶν μεταξὺ
Ὀλύμπου καὶ Ὀσσης. φέρεται δ' ὁ Πηνειὸς ἀπὸ τῶν
στενῶν τούτων ἐπὶ σταδίους τετταράκοντα, ἐν ἀριστε-
15 ρᾷ μὲν ἔχων τὸν Ὀλυμπον, Μακεδονικὸν ὄρος μετεω-
ρότατον, [ἐν δὲ δεξιᾷ τὴν Ὀσσαν, ἐγγὺς] τῶν ἐκβολῶν
τοῦ ποταμοῦ. ἐπὶ μὲν δὴ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Πηνειοῦ ἐν
δεξιᾷ Γυρτῶν ἴδρυνται, Περραιβικὴ πόλις καὶ Μαγνη-
τις, ἐν ᾗ Πειρίθους τε καὶ Ἰξίων ἐβασίλευσαν· ἀπέχει
20 δ' ὅσον σταδίους ἑκατὸν τῆς Γυρτῶνος πόλις Κραν-
νών, καὶ φασιν, ὅταν εἴπῃ ὁ ποιητής „τῷ μὲν ἄρ' ἐκ
„Θρήκης“ καὶ ἐξῆς, Ἐφύρους μὲν λέγεσθαι τοὺς Κραν-
νωνίους, Φλεγύας δὲ τοὺς Γυρτωνίους· ἐπὶ δὲ θάτερα
ἢ Περία. Ε.

25 Ὅτι ὁ Πηνειὸς ποταμός, ῥέων διὰ τῶν Τεμπῶν, 15
καὶ ἀρχόμενος ἀπὸ τοῦ Πίνδου ὄρους, καὶ διὰ μέσης
Θεσσαλίας καὶ τῶν Λαπιθῶν καὶ Περραιβῶν, δεχό-
μενός τε τὸν Εὐρώπον ποταμόν, ὃν Ὅμηρος Τιταρή-
σιον ὠνόμασε, διορίζει Μακεδονίαν μὲν πρὸς βορ-
30 ρᾶν, Θεσσαλίαν δὲ πρὸς νότον. αἱ δὲ τοῦ Εὐρώπου
ποταμοῦ πηγὰς ἐκ τοῦ Τιταρίου ὄρους ἄρχονται, ὃ
ἔστι συνεχὲς τῷ Ὀλύμπῳ. καὶ ἔστιν ὁ μὲν Ὀλυμπος

τῆς Μακεδονίας, ἣ δὲ Ὅσσα τῆς Θεσσαλίας καὶ τὸ Πηλιοῖ Epit.

- 16 Ὅτι ὑπὸ ταῖς ὑπωρεΐαις τοῦ Ὀλύμπου παρὰ τὸν Πηνειὸν ποταμὸν Γυρτῶν ἔστι, πόλις Περραιβικὴ καὶ Μαγνητῆς, ἐν ᾗ Πειρίθους τε καὶ Ἰξίωv ἦρξαν. ἀπέχει 5 C.330δ' ἑκατὸν τῆς Γυρτῶνος πόλεως Κραννῶν, καὶ φασιν, ὅταν εἴπῃ ὁ ποιητὴς „τὼ μὲν ἄρ' ἐκ Θορήκης,“ Ἐφύρους μὲν λέγεσθαι τοὺς Κραννωσίους, Φλεγύας δὲ τοὺς Γυρτῶνιους. Epit.
- 16^a Ἀπέχει δὲ σταδίους ἑκατὸν Γυρτῶνος ἢ Κραννῶν 10 πόλις, ὧς φησι Στράβων. Stephanus in Κραννῶν.
- 16^b Ὁμόλιον πόλις Μακεδονίας καὶ Μαγνησίας. Στράβων ἐβδόμη. Stephanus v. Ὁμόλιον. cf. Strabo 9 p. 443.
- 17 Ὅτι τὸ Δῖον ἢ πόλις οὐκ ἐν τῷ αἰγιαλῷ τοῦ Θερμαίου κόλπου ἐστὶν ἐν ταῖς ὑπωρεΐαις τοῦ Ὀλύμπου, 15 ἀλλ' ὅσον ἐπτὰ ἀπέχει σταδίους· ἔχει δ' ἢ πόλις τὸ Δῖον κώμην πλησίον Πίμπλειαν, ἐνθα Ὀρφεὺς διέτριβεν. Epit.
- 18 Ὅτι ὑπὸ τῷ Ὀλύμπῳ πόλις Δῖον. ἔχει δὲ κώμην πλησίον Πίμπλειαν· ἐνταῦθα τὸν Ὀρφέα διατρεῖσθαι 20 φησι τὸν Κίκωνα, ἄνδρα γόητα, ἀπὸ μουσικῆς ἅμα καὶ μαντικῆς καὶ τῶν περὶ τὰς τελετὰς ὁργισμῶν ἀγυρτεῦοντα τὸ πρῶτον, εἴτ' ἤδη καὶ μειζόνων ἀξιοῦντα ἑαυτὸν καὶ ὄχλον καὶ δύνάμιν κατασκευαζόμενον· τοὺς μὲν οὖν ἐκουσίως ἀποδέχεσθαι, τινὰς δ' ὑπιδομένους 25 ἐπιβουλὴν καὶ βίαν ἐπισυστάοντας διαφθεῖραι αὐτόν. ἐνταῦθα πλησίον καὶ τὰ Λεῖβηθρα. E.
- 19 Ὅτι τὸ παλαιὸν οἱ μάντεις καὶ μουσικὴν εἰργάζοντο. Epit.
- 20 Μετὰ δὲ τὸ Δῖον αἱ τοῦ Ἀλιάκμονος ἐκβολαί· εἴτα 30 Πύδνα Μεθώνη Ἀλωρος καὶ ὁ Ἐρίγων ποταμὸς καὶ Λουδίας, ὁ μὲν ἐκ Τρικλάρων ῥέων δι' Ὀρεστῶν καὶ

τῆς Πελαγονίας ἐν ἀριστερᾷ ἀφίεις τὴν πόλιν καὶ συμβάλλων τῷ Ἀξιῷ· ὁ δὲ Λουδίας εἰς Πέλλαν ἀνάπλουν ἔχων σταδίων ἑκατὸν καὶ εἴκοσι. μέση δ' οὕσα ἡ Μεθώνη τῆς μὲν Πύδνης ὅσον τετταράκοντα σταδίων 5 ἀπέχει, τῆς Ἀλώρου δὲ ἑβδομήκοντα. ἔστι δ' ἡ Ἀλωρος τὸ μυχαίτατον τοῦ Θερμαίου κόλπου· *λέγεται δὲ Θεσσαλονίκη διὰ τὴν ἐπιφάνειαν. τὴν μὲν οὖν Ἀλωρον Βοτταϊκὴν νομίζουσι, τὴν δὲ Πύδναν Πιερικὴν. Πέλλα ἐστὶ μὲν τῆς κάτω Μακεδονίας ἣν Βοττιαῖοι 10 κατεῖχον· ἐνταῦθ' ἦν πάλαι τὸ τῆς Μακεδονίας χρηματιστήριον· ἠϋξήσε τὴν πόλιν ἐκ μικρᾷ Φίλιππος τραφεὶς ἐν αὐτῇ. ἔχει δ' ἄκραν ἐν λίμνῃ τῇ καλουμένῃ Λουδίᾳ· ἐκ ταύτης ὁ Λουδίας ἐκδίδωσι ποταμός, αὐτὴν δὲ πληροὶ τοῦ Ἀξιοῦ τι ἀπόσπασμα. ὁ δὲ Ἀξιὸς ἐκδί- 15 δωσι μεταξὺ Χαλάστρας καὶ Θέρμης· ἐπικεῖται δὲ τῷ ποταμῷ τούτῳ χωρίου ἐρυμνόν, ὃ νῦν μὲν καλεῖται Ἀβυδῶν, Ὅμηρος δ' Ἀμυδῶνα καλεῖ, καὶ φησι τοὺς Παίονας ἐντεῦθεν εἰς Τροίαν ἐπικούρους ἐλθεῖν „τη- „,λόθεν ἔξ Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὐρυρέοντος.“ κατε- 20 σκάφη δ' ὑπὸ τῶν Ἀργεαδῶν. Ε.

Ὅτι ὁ Ἀξιὸς θολερὸς ῥεῖ· ὁ δ' Ὅμηρος Ἀξιοῦ κάλ- 21 λιστον ὕδωρ φησίν, ἴσως διὰ τὴν πηγὴν τὴν καλουμένην Αἶαν, ἣ καθαρώτατον ἐκδιδοῦσα ὕδωρ εἰς τοῦτον ἐλέγχει φαύλην ὑπάρχουσαν τὴν νῦν φερομένην γρ- 25 φὴν παρὰ τῷ ποιητῇ. μετὰ δὲ Ἀξιὸν Ἐχέδωρος ἐν σταδίοις εἴκοσιν· εἶτα Θεσσαλονίκη Κασάνδρου κτίσμα ἐν ἄλλοις τετταράκοντα καὶ ἡ Ἐγνατία ὁδός. ἐπωνόμασε δὲ τὴν πόλιν ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ γυναικὸς Θεσσαλονίκης, Φιλίππου δὲ τοῦ Ἀμύντου θυγατρὸς, καθελὼν 30 τὰ ἐν τῇ Κρουσίδι πολίσματα καὶ τὰ ἐν τῷ Θερμαίῳ κόλπῳ περὶ ἔξ καὶ εἴκοσι καὶ συνοικίσας εἰς ἓν· ἡ δὲ μητρόπολις τῆς νῦν Μακεδονίας ἐστὶ. τῶν δὲ συνοι-

κισθαισῶν ἣν Ἀπολλωνία καὶ Χαλάστρα καὶ Θέρμα καὶ Γαρησκὸς καὶ Αἰνεια καὶ Κισσός, ὧν τὴν Κισσὸν ὑπονόησαιεν ἂν τις τῷ Κισσῷ προσήκειν, οὗ μέμνηται ὁ ποιητής „Κισσῆς τὸν γ' ἐθρεψε,“ τὸν Ἰφιδάμαντα λέγων. Ε.

5

22 Ὅτι μετὰ τὸ Αἶον πόλιν ὁ Ἀλιάκμων ποταμὸς ἔστιν, ἐκβάλλων εἰς τὸν Θερμαῖον κόλπον· καὶ τὸ ἀπὸ τούτου ἢ πρὸς βορρᾶν τοῦ κόλπου παραλία Πιερία καλεῖται ἕως τοῦ Ἀξιοῦ ποταμοῦ, ἐν ᾗ καὶ πόλις Πύδνα, ἢ νῦν Κίτρον καλεῖται· εἶτα Μεθώνη καὶ Ἀλωρος πό- 10 λεις· εἶτα Ἐρίγων καὶ Λουδίας ποταμοί· ἀπὸ δὲ Λουδίου εἰς Πέλλαν πόλιν ἀνάπλους στάδια ἑκατὸν εἴκοσιν. ἀπέχει δ' ἡ Μεθώνη τῆς μὲν Πύδνης στάδια τετταράκοντα, τῆς Ἀλώρου δὲ ἑβδομήκοντα στάδια. ἡ μὲν οὖν Πύδνα Πιερικὴ ἔστι πόλις, ἡ δὲ Ἀλωρος Βοτταϊκὴ. 15 ἐν μὲν οὖν τῷ πρὸ τῆς Πύδνης πεδίῳ Ῥωμαῖοι Περσέα καταπολεμήσαντες καθείλον τὴν τῶν Μακεδόνων βασιλείαν, ἐν δὲ τῷ πρὸ τῆς Μεθώνης πεδίῳ γενέσθαι συνέβη Φιλίππῳ τῷ Ἀμύντου τὴν ἐκκοπὴν τοῦ δεξιοῦ ὀφθαλμοῦ καταπελτικῶ βέλει κατὰ τὴν πολιορκίαν 20 τῆς πόλεως. Epil.

23 Ὅτι τὴν Πέλλαν οὖσαν μικρὰν πρότερον Φίλιππος εἰς μῆκος ἠϋξῆσε τραφεὶς ἐν αὐτῇ· ἔχει δὲ λίμνην πρὸ αὐτῆς, ἐξ ἧς ὁ Λουδίας ποταμὸς ῥεῖ· τὴν δὲ λίμνην πληροῖ τοῦ Ἀξιοῦ τι ποταμοῦ ἀπόσπασμα. εἶτα ὁ Ἀξιὸς 25 διαιρῶν τὴν τε Βοτταϊάν καὶ τὴν Ἀμφαξιτίν γῆν, καὶ παραλαβὼν τὸν Ἐρίγωνα ποταμὸν ἐξίησι μεταξὺ Χαλάστρας καὶ Θέρμης· ἐπικεῖται δὲ τῷ Ἀξιῷ ποταμῷ χωρίον, ὅπερ Ὅμηρος Ἀμυδῶνα καλεῖ, καὶ φησι τοὺς Παίονας ἐντεῦθεν εἰς Τροίαν ἐπικούρους ἐλθεῖν „τηλόθεν ἔξ 30 „Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὐρυρέοντος.“ ἀλλ' ἐπεὶ ὁ μὲν Ἀξιὸς θολερός ἐστι, κρήνη δὲ τις ἐξ Ἀμυδῶνος ἀνέ-

σχοῦσα καὶ ἐπιμιγνυμένη αὐτῷ κάλλιστον ὕδατος, διὰ τοῦτο τὸν ἐξῆς στίχον „Ἀξιοῦ, οὗ κάλλιστον ὕδωρ „ἐπικίδνυται Αἶαν“ μεταγράφουσιν οὕτως „Ἀξιοῦ, ᾧ „κάλλιστον ὕδωρ ἐπικίδνυται Αἴης.“ οὐ γὰρ τὸ τοῦ 5 Ἀξιοῦ ὕδωρ κάλλιστον τῇ πηγῇ ἐπικίδνυται, ἀλλὰ τὸ τῆς πηγῆς τῷ Ἀξιώ. Epit.

Ἐν δὲ τῷ „ἐπικίδνυται αἴη“ ἢ „αἶαν“ (διττῶς γὰρ 23 ἢ γραφῇ) αἶαν τινὲς οὐ τὴν γῆν ἐνόησαν, ἀλλὰ τινα πηγὴν, ὡς δῆλον ἐξ ὧν ὁ γεωγράφος φησί, λέγων ὅτι ἡ 10 παρ’ Ὀμήρῳ Ἀμυδῶν Ἀβυδῶν ὕστερον ἐκλήθη, κατεσκάφη δέ. πηγὴ δὲ πλησίον Ἀμυδῶνος Αἶα καλουμένη καθαρῶτατον ὕδωρ ἐκδιδούσα εἰς τὸν Ἀξίον, ὃς ἐκ πολλῶν πληροῦμενος ποταμῶν θολερὸς ῥέει. φάυλη οὖν, φησὶν, ἡ φερομένη γραφῇ Ἀξίου κάλλιστον ὕδωρ 15 ἐπικίδνυται αἴη, ὡς δηλαδὴ οὐ τοῦ Ἀξίου ἐπικιδνάντος τὸ ὕδωρ τῇ πηγῇ, ἀλλ’ ἀνάπαλιν· εἴτα ὑποδυσκόλως αἰτιώμενος ὁ γεωγράφος καὶ τὸ νοῆσαι τὴν αἶαν ἐπὶ τῆς γῆς ἔοικε παντελῶς ἐθέλειν ἐκβαλεῖν τοῦ Ὀμηρικοῦ ἔπους τὴν τοιαύτην λέξιν. Eustathius ad Il. β 850.

20 Ὅτι μετὰ τὸν Ἀξίον ποταμὸν ἡ Θεσσαλονίκη ἐστὶ 24 πόλις, ἢ πρότερον Θέρμη ἐκαλεῖτο· κτίσμα δ’ ἐστὶ Κασσάνδρου, ὃς ἐπὶ τῷ ὀνόματι τῆς ἑαυτοῦ γυναικός, παιδὸς δὲ Φιλίππου τοῦ Ἀμύντου, ὠνόμασε· μετῴκισε δὲ τὰ περίεξ πολίχνια εἰς αὐτήν, οἶον Χαλάστραν Αἰνείαν 25 Κισσὸν καὶ τινα καὶ ἄλλα. ἐκ δὲ τοῦ Κισσοῦ τούτου ὑπονοήσειεν ἂν τις γενέσθαι καὶ τὸν παρ’ Ὀμήρῳ Ἴφιδάμαντα, οὗ ὁ πάππος Κισσεὺς ἔθρεψεν αὐτὸν (φησὶν) ἐν Θρήκῃ, ἢ νῦν Μακεδονία καλεῖται. Epit.

Ὅτι αὐτοῦ πον καὶ τὸ Βέρμιον ὄρος, ὃ πρότερον 25 30 κατεῖχον Βρίγες Θρακῶν ἔθνος, ὧν τινες διαβάντες εἰς τὴν Ἀσίαν Φρύγες μετωνομάσθησαν· μετὰ δὲ Θεσσαλονικεῖάν ἐστι τὰ λοιπὰ τοῦ Θερμαίου κόλπου μέχρι

τοῦ Καναστραίου. τοῦτο δ' ἐστὶν ἄκρα χειρρονησίξου-
σα, ἀνταΐρουσα τῇ Μαγνήτιδι· ὄνομα δὲ τῇ χειρρονήσῳ
Παλλήνῃ· πενταστάδιον δ' ἔχει τὸν ἰσθμὸν διορωρυ-
μένον· κεῖται δ' ἐπ' αὐτῷ πόλις ἡ πρότερον μὲν Ποτί-
δαια, Κορινθίων κτίσμα, ὕστερον δὲ Κασάνδρεια ἀπὸ 5
τοῦ αὐτοῦ βασιλέως Κασάνδρου ἀναλαβόντος αὐτὴν
ἀνατετραμμένην· ὁ περίπλους ταύτης τῆς χειρρονήσου
πεντακοσίων καὶ ἑβδομήκοντα. ἔτι δὲ πρότερον τοὺς
Γίγαντας ἐνταῦθα γενέσθαι φασὶ καὶ τὴν χώραν ὀνο-
μάζεσθαι Φλέγραν οἱ μὲν μυθολογοῦντες οἱ δὲ πιθα- 10
νώτερον ἔθνος τι βάρβαρον καὶ ἀσεβὲς ἀποφαίνοντες
τὸ κατέχον τὸν τόπον, καταλυθὲν δ' ὑπὸ Ἡρακλέους,
ἡνίκα τὴν Τροίαν ἐλὼν ἀνέπλει εἰς τὴν οἰκίαν. κάν-
ταῦθα δὲ τῆς λύμης αἱ Τρωάδες αἰτιαὶ λέγονται, ἐμ-
πρήσασαι τὰς ναῦς, ἵνα μὴ ταῖς γυναιξὶ τῶν ἐλόντων 15
αὐτὰς δουλεύοιεν. Ε.

- 26 Ὅτι ἡ Βέρροια πόλις ἐν ταῖς ὑπωρείαις κεῖται τοῦ
Βερμίου ὄρους. Epit.
- 27 Ὅτι ἡ Παλλήνη χειρρόνησος, ἥς ἐν τῷ ἰσθμῷ κεῖ-
ται ἡ πρὶν μὲν Ποτίδαια νῦν δὲ Κασσάνδρεια, Φλέγρα 20
τὸ πρὶν ἐκαλεῖτο· ὥκουν δ' αὐτὴν οἱ μυθευόμενοι Γί-
γαντες, ἔθνος ἀσεβὲς καὶ ἄνομον, οὓς Ἡρακλῆς διέ-
φθειρεν· ἔχει δὲ πόλεις τέσσαρας, Ἀφυντιν Μένδην
Σκιώνην Σάνην. Epit.
- 28 Ὅτι διεῖχε Ποτιδαίας Ὀλυνθος ἑβδομήκοντα στα- 25
δίους. Ε.
- 29 Ὅτι τῆς Ὀλύνθου ἐπίνειόν ἐστι Μηκύπερνα ἐν τῷ
Τορωναίῳ κόλπῳ. Epit.
- 30 Ὅτι πλησίον Ὀλύνθου χωρίον ἐστὶ κοῖλον, καλού-
μενον Κανθαρώλεθρον ἐκ τοῦ συμβεβηκότος· τὸ γὰρ 30
ἔϋον ὁ κάνθαρος τῆς περιξ χώρας γινόμενος, ἡνίκα
ψαύσῃ τοῦ χωρίου ἐκείνου, διαφθείρεται. Epit.

- Μετὰ δὲ Κασάνδρειαν ἐφεξῆς ἡ λοιπὴ τοῦ Τορω- 31
νικοῦ κόλπου παραλία μέχρι Δέρρεως· ἄκρα δ' ἐστὶν
ἀνταίρουσα τῷ Καναστραίῳ καὶ ποιοῦσα τὸν κόλπον.
ἀπαντικρὺ δὲ τῆς Δέρρεως πρὸς ἑω τὰ ἄκρα τοῦ Ἄθω,
5 μεταξὺ δὲ ὁ Σιγγικὸς κόλπος ἀπὸ τῆς ἐν αὐτῷ πόλεως
ἀρχαίας κατεσκαμμένης Σίγγου τοῦνομα. μεθ' ἣν
Ἀκανθος ἐπὶ τῷ ἰσθμῷ τοῦ Ἄθω κειμένη πόλις, Ἀν-
δρίων κτίσμα, ἀφ' ἧς συχνοὶ καὶ τὸν κόλπον Ἀκάνθιον
καλοῦσι. Ε.
- 10 Ὅτι ἀντικρὺ Κανάστρου, ἄκρου τῆς Παλλήνης, 32
ἡ Δέρρις ἐστὶν ἄκρα πλησίον Κωφοῦ λιμένος, καὶ ὁ
Τορωναῖος κόλπος ὑπὸ τούτων ἀφορίζεται. καὶ πρὸς
ἀνατολὰς αὐτῆς κεῖται τὸ ἄκρον τοῦ Ἄθωνος, ὃ ἀφορί-
ζει τὸν Σιγγιτικὸν κόλπον, ὥς εἶναι ἐφεξῆς κόλπους τοῦ
15 Αἰγαίου πελάγους πρὸς βορρᾶν, ἀλλήλων ἀπέχοντας
οὕτως, Μαλιακὸν Παρασιτικὸν Θερμαῖον Τορωναῖον
Σιγγιτικὸν Στρυμονικόν. τὰ δὲ ἄκρα Ποσειδῖον μὲν τὸ
μεταξὺ Μαλιακοῦ καὶ Παρασιτικοῦ, τὸ δὲ ἐφεξῆς πρὸς
βορρᾶν Σηπιάς, εἶτα τὸ ἐν Παλλήνῃ Κανάστρον, εἶτα
20 Δέρρις, εἶτα Νυμφαῖον ἐν τῷ Ἄθωνι πρὸς τῷ Σιγγιτι-
κῷ, τὸ δὲ πρὸς τῷ Στρυμονικῷ Ἀκράθως ἄκρον, ὃν με-
ταξὺ ὁ Ἄθων, οὗ πρὸς ἀνατολὰς ἡ Αἴμνος· πρὸς δὲ βορ-
ρᾶν ἀφορίζει τὸν Στρυμονικὸν κόλπον ἡ Νεάπολις. Epit.
- Ἅτιν Ἀκανθος πόλις ἐν τῷ Σιγγιτικῷ κόλπῳ ἐστὶ 331
25 παράλιος πλησίον τῆς τοῦ Ξέρξου διώρυχος· ἔχει δ'
ὁ Ἄθων πέντε πόλεις, Αἶον Κλεωνὰς Θύσσον Ὀλόφνυ-
ξιν Ἀκροθώους· αὕτη δὲ πρὸς τῇ κορυφῇ τοῦ Ἄθω-
νος κεῖται. ἔστι δ' ὁ Ἄθων ὅρος μαστοειδὲς ὀξύτατον
ὑψηλότατον· οὗ οἱ τὴν κορυφὴν οἰκοῦντες ὀρῶσι τὸν
30 ἥλιον ἀνατέλλοντα πρὸ ὥρῶν τριῶν τῆς ἐν τῇ παραλίᾳ
ἀνατολῆς. καὶ ἔστιν ἀπὸ πόλεως τῆς Ἀκάνθου ὁ περι-
πλους τῆς χερσονήσου ἕως Σταγείρου, πόλεως τοῦ
5*.

Ἀριστοτέλους, στάδια τετρακόσια, ἐν ᾗ λιμὴν ὀνομα-
 Κάπρος καὶ νησίον ὁμώνυμον τῇ λιμένι· εἶτα αἱ τοῦ
 Στρυμόνος ἐκβολαί· εἶτα Φάγρης Γαληψὸς Ἀπολλω-
 νία, πᾶσαι πόλεις· εἶτα τὸ Νέστου στόμα τοῦ διορί-
 ζοντος Μακεδονίαν καὶ Θράκην, ὡς Φίλιππος καὶ Ἀλέ- 5
 ξανδρος ὁ τούτου παῖς διώριζον ἐν τοῖς κατ' αὐτοὺς
 χρόνοις. εἰσὶ δὲ περὶ τὸν Στρυμονικὸν κόλπον πόλεις
 καὶ ἑτεραι, οἷον Μύρκινος Ἀργίλος Δραβῆσκος Δάτον,
 ὅπερ καὶ ἀρίστην ἔχει χώραν καὶ εὐκαρπον καὶ ναυ-
 πήγια καὶ χρυσοῦ μέταλλα· ἀφ' οὗ καὶ παροιμία „Δά- 10
 „τον ἀγαθῶν,“ ὡς καὶ „ἀγαθῶν ἀγαθίδα.“ Epil.

34 Ὅτι πλεῖστα μέταλλά ἐστὶ χρυσοῦ ἐν ταῖς Κρηνί-
 σιν, ὅπου νῦν οἱ Φίλιπποι πόλεις ἱδρύνται, πλησίον τοῦ
 Παγγαίου ὄρους· καὶ αὐτὸ δὲ τὸ Παγγαῖον ὄρος χρυσεῖα
 καὶ ἀργυρεῖα ἔχει μέταλλα καὶ ἡ πέραν καὶ ἡ ἐντὸς τοῦ 15
 Στρυμόνος ποταμοῦ μέχρι Παιονίας· φασὶ δὲ καὶ τοὺς
 τὴν Παιονίαν γῆν ἀροῦντας εὐρίσκειν χρυσοῦ τινα
 μόρια. Epil.

35 Ἔστι δ' ὁ Ἄθως ὄρος ὑψηλὸν καὶ μαστοειδές, ὥστε
 τοὺς ἐν ταῖς κορυφαῖς ἤδη ἀνίσχοντος ἡλίου κάμνειν 20
 ἀροῦντας, ἡνίκα ἀλεκτοροφωνίας ἀρχὴ παρὰ τοῖς τῇν
 ἀκτὴν οἰκοῦσιν ἐστίν. ἐν δὲ τῇ ἀκτὴ ταύτῃ Θάμυρις ὁ
 Θραξ ἐβασίλευσε, τῶν αὐτῶν ἐπιτηδευμάτων γεγωνὸς
 ὢν καὶ Ὀρφεύς. ἐνταῦθα δὲ καὶ διώρυξ δεικνύται ἡ
 περὶ τὴν Ἀκανθον, καθ' ἣν Ξέρξης τὸν Ἄθω διορύξα 25
 λέγεται καὶ διαγαγεῖν ἐκ τοῦ Στρυμονικοῦ κόλπου διὰ
 τοῦ ἰσθμοῦ, δεξιόμενος τὴν θάλασσαν εἰς τὴν διώρυγα.
 Δημήτριος δ' ὁ Σκήψιος οὐκ οἶεται πλευσθῆναι τὴν
 διώρυγα ταύτην· μέχρι μὲν γὰρ δέκα σταδίων εὐγεων
 καὶ ὀρυκτὴν εἶναι, διορυγῆσθαι δ' ἐπὶ πλάτος πλεθρι- 30
 αῖον, εἰδ' ὑψηλὸν εἶναι πλαταμῶνα σταδιαῖον σχεδόν
 τι τὸ μῆκος, ὅσον οὐκ ἐνὸν ἐκλατομηθῆναι δι' ὅλου

- μέχρι θαλάσσης· εἰ δὲ καὶ μέχρι δεῦρο, οὗ γε καὶ κατὰ
 βυθοῦ ᾧστε πόρον γενέσθαι πλωτόν· ὅπου Ἀλέξαρχον
 τὸν Ἀντιπάτρου πόλιν ὑποδείμασθαι τὴν Οὐρανόπο-
 λιν τριάκοντα σταδίων τὸν κύκλον ἔχουσιν. ὥκησαν
 5 δὲ τὴν χειρόνησον ταύτην τῶν ἐκ Ἀήμνου Πελασγῶν
 τινες, εἰς πέντε διηρημένοι πολίσματα, Κλεωνὰς Ὀλό-
 φυξιν Ἀκροθαῶνους Δίον Θύσσον. μετὰ δὲ Ἄθω ὁ Στρυ-
 μονικὸς κόλπος μέχρι Νέστου τοῦ ποταμοῦ τοῦ ἀφορί-
 ζοντος τὴν κατὰ Φίλιππον καὶ Ἀλέξανδρον Μακεδο-
 10 νίαν· εἰς μέντοι τάκριβες ἄκρα τὶς ἐστὶν ἡ ποιοῦσα τὸν
 κόλπον πρὸς τὸν Ἄθω, πόλιν ἐσχηκυῖα τὴν Ἀπολλω-
 νίαν. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ πρώτη μετὰ τὸν Ἀκανθίων λι-
 μένα Στάγαιρα, ἔρημος, καὶ αὐτὴ τῶν Χαλκιδικῶν,
 Ἀριστοτέλους πατρίς, καὶ λιμὴν αὐτῆς Κάπρος καὶ
 15 νησίον ὁμώνυμον τούτῳ· εἰδ' ὁ Στρυμὼν καὶ ὁ ἀνά-
 πλους εἰς Ἀμφίπολιν εἴκοσι σταδίων· ἔστι δ' Ἀθη-
 ναίων κτίσμα ἐν τῷ τόπῳ ἰδρυμένον τούτῳ, ὃς καλεῖ-
 ται Ἐννέα ὁδοί· εἴτα Γαληψὸς καὶ Ἀπολλωνία, κατε-
 σκαμμέναι ὑπὸ Φιλίππου. Ε.
- 20 Ἀπὸ Πηνειοῦ φησὶν εἰς Πύδναν σταδίους * ἑκατὸν 36
 εἴκοσι. παρὰ δὲ τὴν παραλίαν τοῦ Στρυμόνος καὶ Λα-
 τηνῶν πόλιν Νεάπολιν καὶ αὐτὸ τὸ Δάτον, εὐκαρπα
 πεδία καὶ λίμνην καὶ ποταμούς καὶ ναυπήγια καὶ χρυ-
 σεῖα λυσιτελῇ ἔχον, ἅφ' οὗ καὶ παροιμιάζονται „Δάτον
 25 ἀγαθῶν“ ὥς καὶ „ἀγαθῶν ἀγαθίδας.“ ἔστι δ' ἡ χώρα
 ἡ πρὸς τὸ Στρυμόνος πέραν, ἡ μὲν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ καὶ
 τοῖς περὶ Δάτον τόποις Ὀδόμαντες καὶ Ἡδωνοὶ καὶ Βι-
 σάλται, οἳ τε αὐτόχθονες καὶ οἱ ἐκ Μακεδονίας δια-
 βάντες, ἐν οἷς Πῆσος ἐβασίλευσεν. ὑπὲρ δὲ τῆς Ἀμφι-
 30 πόλεως Βισάλται καὶ μέχρι πόλεως Ἡρακλείας, ἔχοντες
 αὐλῶνα εὐκαρπον, ὃν διαρρεῖ ὁ Στρυμὼν ὠρμημέ-
 νος ἐκ τῶν περὶ Ῥοδόπην Ἀγριάνων, οἷς παράκειται

τῆς Μακεδονίας ἡ Παρορβηλία, ἐν μεσογαίᾳ ἔχουσα κατὰ τὸν αὐλῶνα τὸν ἀπὸ Εἰδομένης Καλλιπόλιν Ὀρθόπολιν Φιλιππούπολιν Γαρησκόν. ἐν δὲ τοῖς Βισάλλταις ἀνὰ ποταμὸν ἰόντι τὸν Στρυμόνα καὶ ἡ Βέργη ἰδρυνται, κώμη ἀπέχουσα Ἀμφιπόλεως περὶ διακοσίους 5 σταδίους. ἐπὶ δὲ ἄρκτους ἰόντι ἀπὸ Ἡρακλείας καὶ τὰ στενὰ δι' ὧν ὁ Στρυμὼν φέρεται, δεξιὸν ἔχοντι τὸν ποταμὸν ἐκ μὲν τῶν εὐωνύμων ἐστὶν ἡ Παιονία καὶ τὰ περὶ τὸν Δόβηρον καὶ τὴν Ῥοδόπην καὶ τὸν Αἷμον ὄρος, ἐν δεξιᾷ δὲ τὰ περὶ τὸν Αἷμον. ἐντὸς δὲ τοῦ 10 Στρυμόνος πρὸς αὐτῷ μὲν τῷ ποταμῷ ἡ Σκοτοῦσσα ἐστὶ, πρὸς δὲ τῇ λίμνῃ τῇ Βόλβῃ Ἀρέθουσα. καὶ δὴ καὶ μάλιστα λέγονται Μυγδόνες οἱ περὶ τὴν λίμνην. οὐ μόνον δ' ὁ Ἀξιὸς ἐκ Παιόνων ἔχει τὴν ῥύσιν, ἀλλὰ καὶ ὁ Στρυμὼν· ἐξ Ἀγριάνων γὰρ διὰ Μαίδων καὶ Σιντῶν 15 εἰς τὰ μεταξὺ Βισαλλτῶν καὶ Ὀδομάντων ἐκπίπτει. Ε.

37 Ὅτι ὁ Στρυμὼν ποταμὸς ἄρχεται ἐκ τῶν περὶ τὴν Ῥοδόπην Ἀγριάνων. Epit.

38 Τοὺς δὲ Παίονας οἱ μὲν ἀποίκους Φρυγῶν οἱ δ' ἀρχηγέτας ἀποφαίνουσι, καὶ τὴν Παιονίαν μέχρι 20 Πελαγονίας καὶ Πιερίας ἐκτετάσθαι φασί· καλεῖσθαι δὲ πρότερον Ὀρεστίαν τὴν Πελαγονίαν, τὸν δὲ Ἀστεροπαῖον, ἓνα τῶν ἐκ Παιονίας στρατευσάντων ἐπ' Ἴλιον ἡγεμόνων, οὐκ ἀπεικότως υἱὸν λέγεσθαι Πηλεγόνοιο, καὶ αὐτοὺς τοὺς Παίονας καλεῖσθαι Πελαγόνους. Ε. 25

39 Ὅτι ὁ παρ' Ὀμήρῳ Ἀστεροπαῖος υἱὸς Πηλεγόνοιο ἐκ Παιονίας ὦν τῆς ἐν Μακεδονίᾳ ἱστορεῖται· διὸ καὶ Πηλεγόνοιο υἱός· οἱ γὰρ Παῖονες Πελαγόνους ἐκαλοῦντο. Epit.

40 Ἐπεὶ δὲ ὁ παιανισμὸς τῶν Θρακῶν τιτανισμὸς ὑπὸ 30 τῶν Ἑλλήνων λέγεται κατὰ μίμησιν τῆς ἐν παιᾷσι φωνῆς, καὶ οἱ Τιτᾶνες ἐκλήθησαν Πηλαγόνες. Ε.

Ὅτι καὶ πάλαι καὶ νῦν οἱ Μαῖονες φαίνονται πολ- 41
λὴν τῆς νῦν Μακεδονίας κατεσχηκότες, ὥς καὶ Πέριν-
θον πολιορκῆσαι, καὶ Κρηστωνίαν καὶ Μυγδονίδα πᾶ-
σαν καὶ τὴν Ἀγριάνων μέχρι Παργαίου ὑπ' αὐτοῖς γε-
5 νέσθαι. τῆς δ' ἐν τῷ Στρυμονικῷ κόλπῳ παραλίας τῆς
ἀπὸ Γαληψοῦ μέχρι Νέστου ὑπέρκεινται οἱ Φίλιπποι
καὶ τὰ περὶ Φιλίππους. οἱ δὲ Φίλιπποι Κρηνίδες ἐκα-
λοῦντο πρότερον, κατοικία μικρά· ἠϋξήθη δὲ μετὰ τὴν
περὶ Βροῦτον καὶ Κάσσιον ἦτταν. Ε.

10 Ὅτι οἱ νῦν Φίλιπποι πόλεις Κρηνίδες ἐκαλοῦντο 43
τὸ παλαιόν. Εἰρή.

Πρόκεινται δὲ τῆς παραλίας ταύτης δύο νῆσοι, 44
Ἀῆμος καὶ Θάσος. μετὰ δὲ τὸν εἰς Θάσον πορθμὸν
Ἀβδηρα καὶ τὰ περὶ Ἀβδήρου μυθεύμενα. ὥκησαν δ'
15 αὐτὴν Βίστονες Θρᾷκες, ὧν Διομήδης ἦρχεν· οὐ μέ-
νει δ' ὁ Νέστος ἐπὶ ταύτου ῥεῖθρου διὰ παντός, ἀλλὰ
κατακλύζει τὴν χώραν πολλάκις. εἴτα Δίκαια πόλεις ἐν
κόλπῳ κειμένη καὶ λιμὴν· ὑπέρκειται δὲ τούτων ἡ Βι-
στονὶς λίμνη κύκλον ἔχουσα ὅσον διακοσίων σταδίων.
20 φασὶ δὲ τοῦ πεδίου κοίλου παντάπασιν ὄντος καὶ τα-
πεινότερου τῆς θαλάττης ἱπποκρατούμενον τὸν Ἡρα-
κλέα, ἥνικα ἦλθεν ἐπὶ τὰς τοῦ Διομήδους ἵππους, διο-
ρύξαι τὴν ἡόνα καὶ τὴν θάλατταν ἐπαφέντα τῷ πεδίῳ
κρατῆσαι τῶν ἐναντίων. δείκνυται δὲ καὶ τὸ βασιλείον
25 Διομήδους ἀπὸ συμβεβηκότος καλούμενον Καρτερά
κώμη διὰ τὴν ἐρυμνότητα. μετὰ δὲ τὴν ἀνὰ μέσον λί-
μνην Ξάνθεια Μαρώνεια καὶ Ἰσμαρος, αἱ τῶν Κικό-
νων πόλεις· καλεῖται δὲ νῦν Ἰσμάρια πλησίον τῆς Μα-
ρωνείας· πλησίον δὲ καὶ ἡ Ἰσμαρὶς ἐξίησι λίμνη· κα-
30 λεῖται δὲ τὸ ῥεῖθρον ἡδύ γειον· αὐτοῦ δὲ καὶ αἱ
Θασίων λεγόμεναι κεφαλαί. Σαπαῖοι δ' εἰσὶν οἱ ὑπερ-
κείμενοι. Ε.

- 45 Ὅτι τὰ Τόπειρα ἔστι πρὸς Ἀβδήροις καὶ Μαρω-
νείᾳ. Ε.
- 46 Ὅτι Σιντοὶ ἔθνος Θρακικὸν κατάρχει τὴν Δῆμνον
νῆσον· ὅθεν Ὅμηρος Σίντιας αὐτοὺς καλεῖ λέγων
,,ἐνθα με Σιντίες ἄνδρες.“ Εἰτ. 5
- 47 Ὅτι μετὰ τὸν Νέστον ποταμὸν πρὸς ἀνατολὰς
Ἀβδηρὰ πόλις, ἐπώνυμος Ἀβδήρου, ὃν οἱ τοῦ Διομή-
δους ἵπποι ἔφαγον· εἶτα Δίκαια πόλις πλησίον, ἧς
ὑπέρκειται λίμνη μεγάλη ἡ Βιστονίς· εἶτα πόλις Μα-
ρώνεια. Εἰτ. 10
- 48 Ἔστι δ' ἡ Θράκη σύμπασα ἐκ δυεῖν καὶ εἴκοσιν
ἔθνων συνεστῶσα· δύναται δὲ στέλλειν καίπερ οὐσα
περισσῶς ἐκπεπονημένῃ μυρίους καὶ πεντακισχιλλούς
ἱππέας, πεζῶν δὲ καὶ εἴκοσι μυριάδας. μετὰ δὲ τὴν
Μαρωνείαν Ὀρθαγόρεια πόλις καὶ τὰ περὶ Σέρριον, 15
παράπλους τραχύς, καὶ τὸ τῶν Σαμοθράκων πολίχνιον
Τέμπυρα καὶ ἄλλο Χαράκωμα, οὗ πρόκειται ἡ Σαμο-
θράκη νῆσος, καὶ Ἴμβρος οὐ πολὺ ἄπωθεν ταύτης·
πλέον δ' ἢ διπλάσιον ἡ Θάσος. ἀπὸ δὲ Χαρακώματος
Δορίσκος, ὅπου ἐμέτρησε Ξέρξης τῆς στρατιᾶς τὸ πλῆ- 20
θος. εἶθ' Ἐβρος ἀνάπλουν ἔχων εἰς Κύψελα ἑκατὸν
εἴκοσι· τῆς Μακεδονίας φησὶ τοῦτο ὄριον, ἣν ἀφεί-
λοντο Περσέα Ῥωμαῖοι καὶ μετὰ ταῦτα τὸν Ψευδοφί-
λιππον. Παῦλος μὲν οὖν ὁ τὸν Περσέα ἐλὼν συνάψας
τῇ Μακεδονίᾳ καὶ τὰ Ἑπειρωτικὰ ἔθνη εἰς τέτταρα 25
μέρη διέταξε τὴν χώραν, καὶ τὸ μὲν προσένειμεν Ἀμ-
φιπόλει, τὸ δὲ Θεσσαλονικείᾳ, τὸ δὲ Πέλλῃ, τὸ δὲ Πε-
λαγόσι. παροικοῦσι δὲ τὸν Ἐβρον Κορπίλοι καὶ Βρέ-
ναι ἐπὶ ἀνωτέρω, εἰτ' ἔσχατοι Βέσσοι· μέγροι γὰρ δεῦρο
ὁ ἀνάπλους. ἅπαντα δὲ τὰ ἔθνη ληστρικὰ ταῦτα, μά- 30
λιστα δ' οἱ Βέσσοι, οὓς λέγει γειτονεῦειν Ὀδρύσαις καὶ
Σαπαίοις. Ἀστῶν δὲ βασίλειον ἦν Βιζύη. Ὀδρύσας δὲ

καλοῦσιν ἔνιοι πάντας τοὺς ἀπὸ Ἑβρου καὶ Κυψέλων
μέχρι Ὀδησοῦ τῆς παραλίας ὑπεροικοῦντας, ὧν ἔβα-
σλέυσεν Ἀμάδοκος καὶ Κερσοβλέπτης καὶ Βηρισάδης
καὶ Σεύδης καὶ Κότυς. Ε.

5 Ὅτι ὁ νῦν ποταμὸς Ῥιγινία ἐν Θράκῃ καλούμενος 49
Ἑρίγων ἦν καλούμενος. Epit.

Ὅτι τὴν Σαμοθράκην Ἰασίων καὶ Δάρδανος ἀδελ- 50
φοὶ ᾤκουν· κεραννωθέντος δὲ Ἰασίωνος διὰ τὴν εἰς
Δήμητρα ἀμαρτίαν, ὁ Δάρδανος ἀπάρας ἐκ Σαμοθρά-
10 κης, ἐλθὼν ᾤκησεν ἐν τῇ ὑπωρεῖα τῆς Ἰδης, τὴν πόλιν
Δαρδανίαν καλέσας, καὶ ἐδίδαξε τοὺς Τρῶας τὰ ἐν
Σαμοθράκῃ μυστήρια· ἐκαλεῖτο δὲ ἡ Σαμοθράκῃ Σά-
μος πρῶτον. Epit.

Ὅτι τοὺς ἐν τῇ Σαμοθράκῃ τιμωμένους θεοὺς εἰ- 51
15 ρήκασιν πολλοὶ τοὺς αὐτοὺς τοῖς Καβείροις, οὐδ' αὐ-
τοὺς ἔχοντες λέγειν τοὺς Καβείρους οὔτινες εἰσι, κα-
θάπερ τοὺς Κύρβαντας καὶ Κορύβαντας, ὥς δ' αὐτως
Κουρήτας καὶ Ἰδαίους Δακτύλους. Ε.

Πρὸς δὲ τῇ ἐκβολῇ τοῦ Ἑβρου διστόμου ὄντος πό- 52
20 λιν Αἶνος ἐν τῷ Μέλανι κόλπῳ κεῖται, κτίσμα Μιτυ-
ληναίων καὶ Κυμαίων, ἔτι δὲ πρότερον Ἀλωπεκοννη-
σίῳ· εἴτ' ἄκρα Σαρπηδῶν· εἴθ' ἡ Χερρόνησος ἡ Θρα-
κία καλουμένη, ποιοῦσα τὴν τε Προποντίδα καὶ τὸν
Μέλαναν κόλπον καὶ τὸν Ἑλλήσποντον· ἄκρα γὰρ ἐκ-
25 κεῖται πρὸς εὐρόνοτον, συνάπτουσα τὴν Εὐρώπην
πρὸς τὴν Ἀσίαν ἐπτασταδίῳ πορθμῷ τῷ κατὰ Ἄβυδον
καὶ Σηστόν, ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὴν Προποντίδα ἔχουσα,
ἐν δεξιᾷ δὲ τὸν Μέλαναν κόλπον καλούμενον οὕτως ἀπὸ
τοῦ Μέλανος ἐκδιδόντος εἰς αὐτόν, καθάπερ Ἡρόδο-
30 τος καὶ Εὐδόξος· εἰρηκε δέ, φησὶν, ὁ Ἡρόδοτος μὴ ἀν-
ταρκέσαι τὸ ρεῖθρον τῇ Ξέρξου στρατιᾷ τοῦτο· ἰσθμῷ
δὲ κλείεται τετταράκοντα σταδίων ἡ λεχθεῖσα ἄκρα.

ἐν μέσῳ μὲν οὖν τοῦ ἰσθμοῦ *Λυσιμάχεια* πόλις ἵδρυνται ἐπώνυμος τοῦ κτίσαντος βασιλέως· ἐκατέρωθεν δ' ἐπὶ μὲν τῷ *Μέλανι* κόλπῳ *Καρδία* κεῖται μεγίστη τῶν ἐν τῇ *Χερρονήσῳ* πόλεων, *Μιλησίων* καὶ *Κλαζομενίων* κτίσμα, ὕστερον δὲ καὶ Ἀθηναίων· ἐν δὲ τῇ *Προπον- 5* τίδι *Πακτύῃ*. μετὰ δὲ *Καρδίαν* *Δράβος* καὶ *Λίμναι*· εἴτ' Ἀλωπεκόννητος, εἰς ἣν τελευτᾷ μάλιστα ὁ *Μέλας* κόλπος· εἴτ' ἄκρα μεγάλη *Μαξουσία*· εἴτ' ἐν κόλπῳ Ἐλαιοῦς, ὅπου τὸ *Πρωτεσιλάειον*, καθ' ὃ τὸ *Σίγειον* ἀπὸ τετταράκοντα σταδίων ἐστίν, ἄκρα τῆς *Τρωάδος*· 10 καὶ σχεδὸν τοῦτ' ἐστὶ τὸ νοτιώτατον ἄκρον τῆς *Χερρονήσου*, σταδίους μικρῶ πλείους τῶν τετρακοσίων ἀπὸ *Καρδίας*· καὶ οἱ λοιποὶ δ' ἐπὶ θάτερον μέρος τοῦ ἰσθμοῦ μικρῶ τοῦ διαστήματος τούτου πλείους περι- πλέοντι. *Ε*.

15

53 Ὅτι ἡ ἐν *Θράκῃ* *Χερρόνησος* τρεῖς ποιεῖ θαλάσσας· *Προποντίδα* ἐκ βορρᾶ, Ἑλλησποντον ἐξ ἀνατολῶν καὶ τὸν *Μέλαν* κόλπον ἐκ νότου, ὅπου καὶ ὁ *Μέλας* ποταμὸς ἐκ βάλλει, ὁμώνυμος τῷ κόλπῳ. *Ε*rit.

54 Ὅτι ἐν τῷ ἰσθμῷ τῆς *Χερρονήσου* τρεῖς πόλεις 20 κεῖνται· πρὸς μὲν τῷ *Μέλανι* κόλπῳ *Καρδία*, πρὸς δὲ τῇ *Προποντίδι* *Πακτύῃ*, πρὸς δὲ τῇ μεσογαίᾳ *Λυσιμάχεια*· μῆκος τοῦ ἰσθμοῦ στάδια τετταράκοντα. *Ε*rit.

55 Ὅτι ἡ πόλις ὁ *Ἐλαιοῦς* ἀρσενικῶς λέγεται· τάχα 25 δὲ καὶ ὁ *Τραπεζοῦς*. *Ε*rit.

56 Ἔστι δ' ἐν τῷ περίπλῳ τούτῳ τῷ μετὰ Ἐλαιοῦντα ἡ εἰσβολὴ πρῶτον ἢ εἰς τὴν *Προποντίδα* διὰ τῶν στε- νῶν, ἣν φασιν ἀρχὴν εἶναι τοῦ Ἑλλησπόντου· ἐνταῦθα δ' ἐστὶ τὸ *Κυνὸς* σημεῖον ἄκρα, οἱ δ' Ἑκάβης φασί· καὶ γὰρ δείκνυνται κάψαντι τὴν ἄκραν τάφος αὐτῆς. 30 εἰτα *Μάδντος* καὶ *Σηστιᾶς* ἄκρα, καθ' ἣν τὸ *Ξέρξου* ξεῦγμα, καὶ μετὰ ταῦτα *Σηστός*. ἀπὸ δὲ Ἐλαιοῦντος

ἐπὶ τὸ ζευγμα ἑκατὸν ἑβδομήκοντα· μετὰ δὲ Σηστὸν
ἐπὶ Αἰγὸς ποταμοὺς διακόσιοι ὀγδοήκοντα, πολίχνην
κατεσκαμμένην, ὅπου φασὶ τὸν λίθον πεσεῖν κατὰ τὰ
Περσικά· εἶτα Καλλίπολις, ἀφ' ἧς εἰς Λάμψακον δι-
5 αρμα εἰς τὴν Ἀσίαν τετταράκοντα· εἶτα πολίχνην κα-
τεσκαμμένον Κριθωτή· εἶτα Πακτύη· εἶτα τὸ Μακρὸν
τεῖχος καὶ Λευκὴ ἀκτὴ καὶ τὸ Ἱερὸν ὄρος καὶ Πέρινθος,
Σαμίω κτίσμα· εἶτα Σηλυβρία. ὑπέρεκειται δ' αὐτῶν
Σίλτα, καὶ τὸ Ἱερὸν ὄρος τιμᾶται ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων
10 καὶ ἔστιν οἶον ἀκρόπολις τῆς χώρας. ἄσφαλτον δ' ἐξέλι-
σιν εἰς τὴν θάλασσαν, καθ' ὃν τόπον ἡ Προκόννησος
ἐγγυτάτω τῆς γῆς ἔστι ἀπὸ ἑκατὸν εἴκοσι σταδίων, τὸ
μέταλλον ἔχουσα τῆς λευκῆς μαρμάρου πολὺ τε καὶ
σπουδαῖον. μετὰ δὲ Σηλυβρίαν Ἀθύρας ἔστι ποταμὸς
15 καὶ Βαθυνίας· εἶτα Βυζάντιον καὶ τὰ ἐφεξῆς μέχρι
Κυανέων πετρῶν. Ε.

Ὅτι ἐκ Περίνθου εἰς Βυζάντιόν εἰσιν ἑξακόσιοι 57
τριακόντα· ἀπὸ δὲ Ἐβρου καὶ Κυψέλων εἰς Βυζάντιον
μέχρι Κυανέων τρισχίλιοι ἑκατόν, ὥς φησιν Ἀρτεμίδω-
20 ρος· τὸ δὲ σύμπαν μῆκος ἀπὸ Ἰονίου κόλπου τοῦ κατὰ
Ἀπολλωνίαν μέχρι Βυζαντίου ἑπτακισχίλιοι τριακόσιοι
εἴκοσι· προστίθῃσι δ' ὁ Πολύβιος καὶ ἄλλους ἑκατὸν
ὀγδοήκοντα, τὸ τρίτον τοῦ σταδίου προσλαμβάνων
ἐπὶ τοῖς ὀκτὼ τοῦ μιλίου σταδίοις. Δημήτριος δ' ὁ
25 Σκῆψιος ἐν τοῖς περὶ τοῦ Τρωικοῦ διακόσμου τὸ μὲν
ἐκ Περίνθου μέχρι Βυζαντίου φησὶν ἑξακοσίους σταδί-
ους, τὸ δ' ἴσον μέχρι Παρίου. τὴν δὲ Προποντίδα μήκει
μὲν χιλίων καὶ τετρακοσίων ἀποφαίνει σταδίων, εἰς
εὖρος δὲ πεντακοσίων. τοῦ δὲ Ἑλλησπόντου τὸ στενώ-
30 ιατον ἑπταστάδιόν φησι, μῆκος δὲ τετρακοσίων. Ε.

Ὅτι Ἑλλησπόντος οὐχ ὁμολογεῖται παρὰ πᾶσιν ὁ 58
αὐτός, ἀλλὰ δόξαι περὶ αὐτοῦ λέγονται πλείους. οἱ

- μὲν γὰρ ὅλην τὴν Προποντίδα καλοῦσιν Ἑλλήσποντον, οἱ δὲ μέρος τῆς Προποντίδος τὸ ἐντὸς Περίνθου· οἱ δὲ προσλαμβάνουσι καὶ τῆς ἑξὶ θαλάσσης τῆς πρὸς τὸ Αἰγαῖον πέλαγος καὶ τὸν Μέλανα κόλπον ἀνεωγμένης, καὶ οὗτοι ἄλλος ἄλλα ἀποτεμνόμενος· οἱ μὲν τὸ ἀπὸ Σιγεί- 5 ου ἐπὶ Λάμψακον καὶ Κύζικον ἢ Πάριον ἢ Πριάπον, ὁ δὲ προσλαμβάνων καὶ τὸ ἀπὸ Σιγρίου τῆς Ἀεσβίας. οὐκ ὀκνοῦσι δὲ τινες καὶ τὸ μέχρι τοῦ Μυρτώου πελάγους ἅπαν καλεῖν Ἑλλήσποντον, εἶπερ, ὥς φησιν ἐν τοῖς ὕμνοις Πίνδαρος, οἱ μεθ' Ἡρακλέους ἐκ Τροίας πλέον- 10 τες διὰ παρθένιον Ἑλλας πορθμόν, ἐπεὶ τῷ Μυρτῷ συνῆψαν, εἰς Κῶν ἐπαλινδρομήσαν ξεφύρου ἀντιπνεύσαντος. οὕτω δὲ καὶ τὸ Αἰγαῖον πέλαγος μέχρι τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ τῆς κατὰ Θετταλίαν καὶ Μακεδονίαν θαλάσσης ἅπαν ἀξιοῦσιν Ἑλλήσποντον προσαγορεύειν 15 δεῖν, μάρτυρα καὶ Ὅμηρον καλοῦντες. φησὶ γὰρ, ὄψαι, „ἦν ἐθέλησθα καὶ αἰ' κέν τοι τὰ μεμῆλη, ἦρι μάλ' Ἑλλήσποντον ἐπ' ἰχθυόεντα πλεούσας νῆας ἐμάς.“ ἐλέγχεται δὲ τὸ τοιοῦτον ἐκ τῶν ἐπῶν ἐκείνων „ἦρως Ἰμβρα- 20 σίδης, ὃς ἄρ' Αἰνόθεν εἰληλούθει.“ οὗτος δὲ τῶν Θρακῶν ἡγεῖτο „ὅσους Ἑλλήσποντος ἀγάρροος ἐντὸς ἑέρ- 25 γει.“ τοὺς γὰρ ἐφεξῆς τούτων ἐκτὸς ἂν καὶ τοῦ Ἑλλήσπόντου καθιδρυμένους ἀποφαίνοι. ἡ μὲν γὰρ Αἴνος κεῖται κατὰ τὴν πρότερον Ἀσυνθίδα νῦν δὲ Κορπιλικὴν λεγομένην, ἡ δὲ τῶν Κικόνων ἐφεξῆς πρὸς δύσιν. Ε. 25
- 58^a Τετραχωρεῖται, οἱ Βεσσοί, ὡς Στράβων ἐβδόμη. οὗτοι λέγονται καὶ Τετράκωμοι. Stephanus v. Τετραχωρεῖται.
- 58^b Λέγει γὰρ (Στράβων) αὐτὸν ἐν τῇ ἐβδόμῃ (τῶν γεωγραφουμένων) ἐγνωκέναι Ποσειδῶνιον τὸν ἀπὸ τῆς 30 στοᾶς φιλόσοφον . . . συγγενομένου Σκιπίωνι τῷ τὴν Καρχηδύνα ἐλόντι. Athenaeus 14 p. 657 f.

Ἐπεὶ δ' ἐπιόντες ἀπὸ τῶν ἐσπερίων τῆς Εὐρώπης
 μερῶν, ὅσα τῇ θαλάττῃ περιέχεται τῇ ἐντὸς καὶ τῇ ἐκτός,
 5 τὰ τε βάρβαρα ἔθνη περιωδεύσαμεν πάντα ἐν αὐτῇ μέ-
 χρι τοῦ Τανάιδος καὶ τῆς Ἑλλάδος οὐ πολὺ μέρος, ἀπο-
 δώσομεν νυνὶ τὰ λοιπὰ τῆς Ἑλλαδικῆς γεωγραφίας,
 ἅπερ Ὅμηρος μὲν πρῶτος, ἔπειτα καὶ ἄλλοι πλείους
 ἐπραγματεύσαντο, οἱ μὲν ἰδίᾳ λιμένας ἢ περιήλους ἢ
 10 περιόδους γῆς ἢ τι τοιοῦτον ἄλλο ἐπιγράψαντες, ἐν οἷς
 καὶ τὰ Ἑλλαδικὰ περιέχεται, οἱ δ' ἐν τῇ κοινῇ τῆς ἱστο-
 ρίας γραφῇ χωρὶς ἀποδείξαντες τὴν τῶν ἡπείρων το-
 πογραφίαν, καθάπερ Ἐφορὸς τε ἐποίησε καὶ Πολύβιος·
 ἄλλοι δ' εἰς τὸν φυσικὸν τόπον καὶ τὸν μαθηματικὸν
 15 προσέλαβόν τινα καὶ τῶν τοιούτων, καθάπερ Ποσει-
 δώνιος τε καὶ Ἰππαρχος. τὰ μὲν οὖν τῶν ἄλλων εὐδι-
 αίτητά ἐστι, τὰ δ' Ὀμήρου σκέψεως δεῖται κριτικῆς,
 ποιητικῶς τε λέγοντος καὶ οὐ τὰ νῦν ἀλλὰ τὰ ἀρχαῖα,
 ὧν ὁ χρόνος ἡμαύρωνε τὰ πολλὰ. ὥς δ' οὖν δυνατὸν
 20 ἐγχειρητέον ἀρξαμένοις ἀφ' ὧν περ ἀπελίπομεν· ἐτε-
 λεύτα δ' ἡμῖν ὁ λόγος ἀπὸ μὲν τῆς ἐσπέρας καὶ τῶν
 ἄρκτων εἰς τὰ Ἑπειρωτικὰ ἔθνη καὶ τὰ τῶν Ἰλλυριῶν,
 ἀπὸ δὲ τῆς ἑω εἰς τὰ τῶν Μακεδόνων μέχρι Βυζαντίου.
 μετὰ μὲν οὖν τοὺς Ἑπειρώτας καὶ τοὺς Ἰλλυριοὺς τῶν
 25 Ἑλλήνων Ἀκαρνανεὺς εἰσι καὶ Αἰτωλοὶ καὶ Λοκροὶ οἱ
 Ὀζόλαι· πρὸς δὲ τούτοις Φωκεῖς τε καὶ Βοιωτοί· τού-
 τοις δ' ἀντίπορθμός ἐστιν ἡ Πελοπόννησος, ἀπολαμ-
 βάνουσα μεταξὺ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον καὶ σχημα-
 τίζουσά τε τοῦτον καὶ σχηματιζομένη ὑπ' αὐτοῦ· μετὰ C.333

δὲ Μακεδονίαν Θετταλοὶ μέχρι Μαλιέων καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐκτὸς Ἰσθμοῦ καὶ αὐτῶν τῶν ἐντός.

- 2 * ἐπιδουο μὲν οὖν πολλὰ ἔθνη γεγένηται, τὰ δ' ἀνωτάτω τοσαῦτα ὅσας καὶ διαλέκτους παρειλήφαμεν τὰς Ἑλληνίδας· τούτων δ' αὐτῶν τεττάρων οὐσῶν τὴν 5 μὲν Ἰάδα τῇ παλαιᾷ Ἀτθίδι τὴν αὐτὴν φασί (καὶ γὰρ Ἴωνες ἐκαλοῦντο οἱ τότε Ἀττικοί, καὶ ἐκεῖθεν εἰσιν οἱ τὴν Ἀσίαν ἐποικήσαντες Ἴωνες καὶ χρησάμενοι τῇ νῦν λεγομένῃ γλώττῃ Ἰάδι), τὴν δὲ Δωρίδα τῇ Αἰολίδι· πάντες γὰρ οἱ ἐκτὸς Ἰσθμοῦ πλὴν Ἀθηναίων καὶ Με- 10 γάρων καὶ τῶν περὶ τὸν Παρνασσὸν Δωριέων καὶ νῦν ἔτι Αἰολεῖς καλοῦνται· καὶ τοὺς Δωριέας δὲ ὀλίγους ὄντας καὶ τραχυτάτην οἰκοῦντας χώραν εἰκός ἐστι τῷ ἀνεπιμίκτῳ παρατρέψαι τὴν γλῶτταν καὶ τὰ ἄλλα ἔθνη πρὸς τὸ μὴ ὁμογενές, ὁμογενεῖς πρότερον ὄντας. τοῦτο 15 δ' αὐτὸ καὶ τοῖς Ἀθηναίοις συνέβη, λεπτόγεῶν τε καὶ τραχεῖαν οἰκοῦντας χώραν ἀπορρήτους * μὲν εἶναι διὰ τοῦτο καὶ αὐτόχθονας νομισθῆναι φησὶν ὁ Θουκυδί- 20 δης, κατέχοντας τὴν αὐτὴν αἰεὶ, μηδενὸς ἐξελαύνοντος αὐτοὺς μηδ' ἐπιθυμοῦντος ἔχειν τὴν ἐκείνων· τοῦτο τοίνυν αὐτὸ καὶ τοῦ ἑτερογλώττου καὶ τοῦ ἑτεροεθοῦς αἴτιον, ὥς εἰκός, ὑπῆρξε καίπερ ὀλίγοις οὖσιν. οὕτω δὲ τοῦ Αἰολικοῦ πλήθους ἐπικρατοῦντος ἐν τοῖς ἐκτὸς Ἰσθμοῦ, καὶ οἱ ἐντὸς Αἰολεῖς πρότερον ἦσαν, εἴτ' ἐμί- 25 χθησαν, Ἰώνων μὲν ἐκ τῆς Ἀττικῆς τὸν Αἰγιάλῳ κα- 30 τασχόντων, τῶν δ' Ἡρακλειδῶν τοὺς Δωριέας καταγαγόντων, ὑφ' ὧν τὰ τε Μέγαρα ὠκίσθη καὶ πολλὰ τῶν ἐν τῇ Πελοποννήσῳ πόλεων. οἱ μὲν οὖν Ἴωνες ἐξέπεσον πάλιν ταχέως ὑπὸ Ἀχαιῶν, Αἰολικοῦ ἔθνους· ἐλείφθη δ' ἐν τῇ Πελοποννήσῳ τὰ δύο ἔθνη, τό τε Αἰ- 30 ολικὸν καὶ τὸ Δωρικόν. ὅσοι μὲν οὖν ἦττον τοῖς Δωριεῦσιν ἐπεπλέκοντο (καθάπερ συνέβη τοῖς τε Ἀρκάσι

καὶ τοῖς Ἑλαιοῖς, τοῖς μὲν ὀρεινοῖς τελέως οὖσι καὶ οὐκ
 ἐμπεπτωκόσιν εἰς τὸν κλῆρον, τοῖς δ' ἱεροῖς νομισθεῖσι
 τοῦ Ὀλυμπίου Διὸς καὶ καθ' αὐτοὺς εἰρήνην ἄγουσι
 πολὺν χρόνον, ἄλλως τε καὶ τοῦ Αἰολικοῦ γένους οὖσι
 5 καὶ δεδεγμένοις τὴν Ὀξύλῳ συγκατελθοῦσαν στρατιὰν
 περὶ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν ἀθροδον), οὗτοι αἰολιστὶ
 διελέχθησαν, οἱ δ' ἄλλοι μικτῇ τινι ἐκρήσαντο ἐξ ἀμ-
 φοῖν, οἱ μὲν μᾶλλον οἱ δ' ἦτον αἰολίζοντες· σχεδὸν
 δέ τι καὶ νῦν κατὰ πόλεις ἄλλοι ἄλλως διαλέγονται, δο-
 10 κοῦσι δὲ δωρίζειν ἅπαντες διὰ τὴν συμβᾶσαν ἐπικρά-
 τειαν. τοσαῦτα μὲν οὖν τὰ τῶν Ἑλλήνων ἔθνη καὶ οὗ—C.334
 τως, ὥς τύπῳ εἰπεῖν, ἀπωρισμένα. λέγωμεν δὴ διαλα-
 βόντες ὃν χρὴ τρόπον τῇ τάξει περὶ αὐτῶν.

Ἐφορος μὲν οὖν ἀρχὴν εἶναι τῆς Ἑλλάδος τὴν 3
 15 Ἀκαρνανίαν φησὶν ἀπὸ τῶν ἐσπερίων μερῶν· ταύτην
 γὰρ συνάπτειν πρώτην τοῖς Ἑπειρωτικοῖς ἔθνεσιν.
 ἀλλ' ὥσπερ οὗτος τῇ παραλίᾳ μέτρῳ χρώμενος ἐντεῦ-
 θεν ποιεῖται τὴν ἀρχήν, ἡγεμονικόν τι τὴν θάλατταν
 κρίνων πρὸς τὰς τοπογραφίας, ἐπεὶ ἄλλως γ' ἐνεχώρει
 20 κατὰ τὴν Μακεδόνων καὶ Θετταλῶν τὴν ἀρχὴν ἀπο-
 φαίνεσθαι τῆς Ἑλλάδος· οὕτω καὶ ἡμῖν προσήκει ἀκο-
 λουθοῦσι τῇ φύσει τῶν τόπων σύμβουλον ποιεῖσθαι
 τὴν θάλατταν. αὕτη δ' ἐκ τοῦ Σικελικοῦ πελάγους
 προσπесоῦσα τῇ μὲν ἀναχεῖται πρὸς τὸν Κορινθιακὸν
 25 κόλπον, τῇ δ' ἀποτελεῖ χειρρόνησον μεγάλην τὴν Πε-
 λοπόννησον, ἰσθμῷ στενῷ κλειομένην. ἔστι δὲ τὰ δύο
 μέγιστα συστήματα τῆς Ἑλλάδος τό τε ἐντὸς Ἰσθμοῦ
 καὶ τὸ ἐκτὸς μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ· ἔστι δὲ
 καὶ μεῖζον καὶ ἐπιφανέστερον τὸ ἐντὸς Ἰσθμοῦ· σχε-

28. post ἐκτὸς: πυλῶν post Πηνειοῦ: καὶ τοῦτο δ' ἔστι
 τὸ Θετταλικόν.

δὸν δέ τι καὶ ἀκρόπολὶς ἐστὶν ἡ Πελοπόννησος τῆς
 συμπάσης Ἑλλάδος χωρὶς γὰρ τῆς λαμπρότη-
 τος καὶ δυνάμεως τῶν ἐνοικησάντων ἐθνῶν αὐτὴ ἡ
 τῶν τόπων θέσις ὑπογράφει τὴν ἡγεμονίαν ταύτην,
 κόλποις τε καὶ ἄκραις πολλαῖς καὶ τοῖς σημειωδεσταί- 5
 τοις, χειρρονήσοις μεγάλαις, διαπεποικιλμένη, ὣν ἐκ
 διαδοχῆς ἑτέρα τὴν ἑτέραν ἔχει. ἔστι δὲ πρώτη μὲν τῶν
 χειρρονήσων ἡ Πελοπόννησος, ἰσθμῷ κλειομένη τεττα-
 ράκοντα σταδίων. δευτέρα δὲ ἡ καὶ ταύτην περιέχουσα,
 ἥς ἰσθμός ἐστιν ὁ ἐκ Παγῶν τῶν Μεγαρικῶν εἰς Νί- 10
 σαιαν, τὸ Μεγαρέων ἐπίνειον, ὑπερβολῇ σταδίων ἑκα-
 τὸν εἰκοσιν ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν. τρίτη δ' ἡ
 καὶ ταύτην περιέχουσα, ἥς ἰσθμὸς ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ
 Κρισαίου κόλπου μέχρι Θερμοπυλῶν· ἡ δ' ἐπινοου-
 μένη εὐθεῖα γραμμὴ ὅσον πεντακοσίων ὀκτὼ σταδίων 15
 τὴν μὲν Βοιωτίαν ἅπασαν ἐντὸς ἀπολαμβάνουσα, τὴν
 δὲ Φωκίδα τέμνουσα λοξὴν καὶ τοὺς Ἐπικνημιδίους.
 τετάρτη δὲ ἡ ἀπὸ τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου διὰ τῆς
 Οἰτης καὶ τῆς Τραχινίας εἰς τὸν Μαλιακὸν κόλπον κα-
 θήκοντα ἔχουσα τὸν ἰσθμὸν καὶ τὰς Θερμοπύλας, ὅσον 20
 ὀκτακοσίων ὄντα σταδίων· πλείονων δ' ἡ χιλίων ἄλλος
 ἐστὶν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ κόλπου τοῦ Ἀμβρακικοῦ διὰ Θετ-
 ταλῶν καὶ Μακεδόνων εἰς τὸν Θερμαῖον διήκων μυ-
 χόν. ὑπαγορεύει δὴ τινα τάξιν οὐ φάυλην ἡ τῶν χειρ-
 ρονήσων διαδοχὴ· δεῖ δ' ἀπὸ τῆς ἐλαχίστης ἄρξασθαι, 25
 ἐπιφανεστάτης δέ.

C.335

2

Ἔστι τοίνυν ἡ Πελοπόννησος ἑοικυῖα φύλλῳ πλα-
 τάνου τὸ σχῆμα, ἴση σχεδόν τι κατὰ μῆκος καὶ κατὰ
 πλάτος ὅσον χιλίων καὶ τετρακοσίων σταδίων, τὸ μὲν
 ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἑῶ, τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ἀπὸ τοῦ 30
 Χελωνάτα δι' Ὀλυμπίας καὶ τῆς Μεγαλοπολίτιδος ἐπὶ
 Ἰσθμόν· τὸ δ' ἀπὸ τοῦ νότου πρὸς τὴν ἄρκτον, ὅ ἐστι

τὸ ἀπὸ Μαλεῶν δι' Ἀρκαδίας εἰς Αἴγιον· ἡ δὲ περίμε-
τρος μὴ κατακολπίζοντι τετρακισχιλίων σταδίων, ὥς
Πολύβιος· Ἀρτεμίδωρος δὲ καὶ τετρακοσίους προστί-
θησι· κατακολπίζοντι δὲ πλείους τῶν ἑξακοσίων ἐπὶ
5 τοῖς πεντακισχιλίοις. ὁ δ' Ἰσθμὸς κατὰ τὸν διολκόν,
δι' οὗ τὰ πορθμεῖα ὑπερνεωλκοῦσιν ἀπὸ τῆς ἐτέρας
εἰς τὴν ἐτέραν θάλατταν, εἴρηται ὅτι τετταράκοντα
σταδίων ἐστίν.

Ἔχουσι δὲ τῆς χερρονήσου ταύτης τὸ μὲν ἐσπέριον 2
10 μέρος Ἡλεῖοι καὶ Μεσσηνιοὶ, κλυζόμενοι τῷ Σικελικῷ
πελάγει· προσλαμβάνουσι δὲ καὶ τῆς ἐκατέρωθεν πα-
ραλίας, ἡ μὲν Ἡλεία πρὸς ἄρκτον ἐπιστρέφουσα καὶ
τὴν ἀρχὴν τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου μέχρι ἄκρας Ἀρά-
ξου, καθ' ἣν ἀντίπορθμὸς ἐστὶν ἢ τε Ἀκαρνανία καὶ
15 αἱ προκείμεναι νῆσοι, Ζάκυνθος καὶ Κεφαλληνία καὶ
Ἰθάκη καὶ [αἱ] Ἐχινάδες, ὧν ἐστὶ καὶ τὸ Δουλίχιον· τῆς
δὲ Μεσσηνίας τὸ πλεον ἄνεργμνον πρὸς νότον καὶ τὸ
Αἰβυκὸν πέλαγος μέχρι τῶν καλουμένων Θυρίδων
πλησίον Ταινάρου. ἐξῆς δὲ μετὰ μὲν τὴν Ἡλείαν ἐστὶ
20 τὸ τῶν Ἀχαιῶν ἔθνος πρὸς ἄρκτους βλέπον καὶ τῷ Κο-
ρινθιακῷ κόλπῳ παρατεῖνον, τελευτᾷ δ' εἰς τὴν Σι-
κωνίαν· ἐντεῦθεν δὲ Σικυῶν καὶ Κόρινθος ἐκδέχε-
ται μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ· μετὰ δὲ τὴν Μεσσηνίαν ἡ Λα-
κωνικὴ καὶ ἡ Ἀργεῖα, μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ καὶ αὕτη. κόλ-
25 ποι δ' εἰσὶν ἐνταῦθα ὅ τε Μεσσηνιακὸς καὶ ὁ Λακωνι-
κὸς καὶ τρίτος ὁ Ἀργολικὸς, τέταρτος δ' ὁ Ἐρμιονικὸς
καὶ Σαρωνικὸς (οἱ δὲ Σαλαμινιακὸν καλοῦσιν), ὧν τοὺς
μὲν ἡ Αἰβυκὴ τοὺς δ' ἡ Κρητικὴ θάλαττα πληροὶ καὶ
τὸ Μυρτώον πέλαγος· τινὲς δὲ καὶ τὸν Σαρωνικὸν πό-
30 ρον [ἡ] πέλαγος ὀνομάζουσι. μέση δ' ἐστὶν ἡ Ἀρκαδία
πᾶσιν ἐπικειμένη καὶ γειτνιώσα τοῖς ἄλλοις ἔθνεσιν.

Ὁ δὲ Κορινθιακὸς κόλπος ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῶν 3
STRABO II. 6.

ἐκβολῶν τοῦ Εὐήνου (τινὲς δὲ φασιν τοῦ Ἀχελώου τοῦ ὀρίζοντος Ἀκαρνᾶνας καὶ τοὺς Αἰτωλοὺς) καὶ τοῦ Ἀρά-
 ξου. ἐνταῦθα γὰρ πρῶτον ἀξιόλογον συναγωγὴν λαμ-
 βάνουσι πρὸς ἀλλήλας αἱ ἐκατέρωθεν ἅκται· προτοῦ-
 σαι δὲ πλέον τελέως συμπίσπτουσι κατὰ τὸ Ῥίον καὶ 5
 τὸ Ἀντίρριον, ὅσον δὴ πέντε σταδίων ἀπολείπονσαι
 πορθμόν. ἔστι δὲ τὸ μὲν Ῥίον τῶν Ἀχαιῶν ἀλιτενῆς
 ἄκρα, θρεπανοειδῇ τινα ἐπιστροφῇ ἐς τὸ ἐντὸς ἔχου-
 C.336σα· καὶ δὴ καὶ καλεῖται Δρέπανον· κεῖται δὲ μεταξὺ
 Πατρῶν καὶ Αἰγίου Ποσειδῶνος ἱερὸν ἔχουσα· τὸ δ' 10
 Ἀντίρριον ἐν μεθορίοις τῆς Αἰτωλίας καὶ τῆς Λοκρίδος
 ἴδρυνται, καλοῦσι δὲ [καὶ] Μολύκριον Ῥίον. εἴτ' ἐντεῦ-
 θεν διίσταται πάλιν ἢ παραλίᾳ μετρίως ἐκατέρωθεν,
 προσελθοῦσα δ' ἐς τὸν Κρισαῖον κόλπον ἐνταῦθα τε-
 λευτᾷ, κλειομένη τοῖς προσεσπερίοις τῆς Βοιωτίας καὶ 15
 τῆς Μεγαρικῆς τερμόσιν. ἔχει δὲ τὴν περίμετρον ὁ
 Κορινθιακὸς κόλπος ἀπὸ μὲν τοῦ Εὐήνου μέχρι Ἀρά-
 ξου σταδίων δισχιλίων διακοσίων τριάκοντα· εἰ δ' ἀπὸ
 τοῦ Ἀχελώου, πλεονάζει ἂν ἑκατόν που σταδίοις. ἀπὸ
 μέντοι Ἀχελώου ἐπὶ τὸν Εὐήνον Ἀκαρνᾶνές εἰσιν, εἰθ' 20
 ἑξῆς ἐπὶ τὸ Ἀντίρριον Αἰτωλοί, τὸ δὲ λοιπὸν μέχρι
 Ἰσθμοῦ Φωκέων ἐστὶ καὶ Βοιωτῶν καὶ τῆς Μεγαρίδος,
 στάδιοι χίλιοι ἑκατόν εἴκοσι δυεῖν δέοντες· ἡ δὲ ἀπὸ
 τοῦ Ἀντιρρίου μέχρι Ἰσθμοῦ θάλαττα . . . Ἀλκωνοῖς
 καλεῖται, μέρος οὖσα τοῦ Κρισαίου κόλπου· ἀπὸ δὲ 25
 τοῦ Ἰσθμοῦ ἐπὶ τὸν Ἀράξον τριάκοντα ἐπὶ τοῖς [χι-
 λίοις]. ὥς μὲν δὴ τύπῳ εἶπεῖν τοιαύτη τις καὶ τοσαύτη
 ἢ τῆς Πελοποννήσου θέσις καὶ τῆς ἀντιπόρθμου γῆς
 μέχρι τοῦ μυχοῦ, τοιοῦτος δὲ καὶ ὁ μεταξὺ ἀμφοῖν κόλ-
 πος. εἴτα καθ' ἕκαστα ἐροῦμεν, τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς 30
 Ἠλείας ποιησάμενοι.

3 Νῦν μὲν δὴ πᾶσαν Ἠλείαν ὀνομάζουσι τὴν μεταξὺ

Ἀχαιῶν τε καὶ Μεσσηνίων παραλίαν, ἀνέχουσαν εἰς
 τὴν μεσόγαίαν τὴν πρὸς Ἀρκαδίᾳ τῇ κατὰ Φολόην
 καὶ Ἀἰῶνας καὶ Παρρασίους. τοῦτο δὲ τὸ παλαιὸν εἰς
 πλείους δυναστείας διήρθητο, εἴτ' εἰς δύο, τὴν τε τῶν
 5 Ἐπειῶν καὶ τὴν ὑπὸ Νέστορι τῷ Νηλέως· καθάπερ
 καὶ Ὀμηρος εἰρηκε, τὴν μὲν τῶν Ἐπειῶν ὀνομάζων
 Ἴλιν „ἥδ' ἐπ' ἑλιδάδιαν, ὅθι κρατέουσιν Ἐπειοί,“
 τὴν δ' ὑπὸ τῷ Νέστορι Πύλον, δι' ἧς τὸν Ἀλφειὸν ῥέειν
 φησιν, „Ἀλφειοῦ, ὅς τ' εὐρὺ ῥέει Πυλίων διὰ γαίης.“
 10 Πύλον μὲν οὖν καὶ πόλιν οἶδεν ὁ ποιητής „οἱ δὲ Πύ-
 „λον, Νηληϊὸς ἐνκτίμενον πτολίεθρον, ἴξου.“ οὐ διὰ
 τῆς πόλεως δὲ οὐδὲ παρ' αὐτὴν ῥεῖ ὁ Ἀλφειὸς, ἀλλὰ
 παρ' αὐτὴν μὲν ἕτερος, ὃν οἱ μὲν Παμισδὸν οἱ δὲ Ἀμα-
 θον καλοῦσιν, ἀφ' οὗ καὶ ὁ Πύλος Ἡμαθόεις εἰρῆσθαι
 15 οὗτος δοκεῖ, διὰ δὲ τῆς χώρας τῆς Πυλίας ὁ Ἀλφειός.

Ἴλις δὲ ἡ νῦν πόλις οὐπὼ ἐκτιστο καθ' Ὀμηρον, 2
 ἀλλ' ἡ χώρα κωμηδὸν ὠκεῖτο· ἐκαλεῖτο δὲ κοίλη Ἴλις
 ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος· τοιαύτη γὰρ ἦν ἡ πλείστη καὶ
 ἀρίστη· ὅψ' ἐδὲ ποτε συνῆλθον εἰς τὴν νῦν πόλιν Ἴλιν,
 20 μετὰ τὰ Περσικά, ἐκ πολλῶν δήμων. σχεδὸν δὲ καὶ
 τοὺς ἄλλους τόπους τοὺς κατὰ Πελοπόννησον πλὴν
 ὀλίγων, οὓς κατέλεξεν ὁ ποιητής, οὐ πόλεις ἀλλὰ χω- 0.337
 ρας νομίζειν [δεῖ], συστήματα δήμων ἔχουσιν ἐκάστην
 πλείω, ἐξ ὧν ὕστερον αἱ γνωριζόμεναι πόλεις συνωκί-
 25 σθησαν, οἷον τῆς Ἀρκαδίας Μαντίνεια μὲν ἐκ πέντε
 δήμων ὑπ' Ἀργείων συνωκίσθη, Τεγέα δ' ἐξ ἑννέα, ἐκ
 τοσοῦτων δὲ καὶ Ἡραία ὑπὸ Κλεομβρότου ἢ ὑπὸ
 Κλεωνύμου· ὥς δ' αὐτως Αἰγίου ἐξ ἑπτὰ ἢ ὀκτὼ δή-
 μων συνεπολίσθη, Πάτραι δὲ ἐξ ἑπτὰ, Δύμη δὲ ἐξ
 30 ὀκτώ· οὕτω δὲ καὶ ἡ Ἴλις ἐκ τῶν περιοικίδων συνε-
 πολίσθη· μία τούτων προσκτισ Ἀργιᾶδες. ῥεῖ
 δὲ διὰ τῆς πόλεως ὁ Πηνειὸς ποταμὸς παρὰ τὸ γυμνά-

σιον αὐτῆς· ἐπραξάν τε τοῦτο Ἡλεῖοι χρόνοις ὕστερον πολλοῖς τῆς εἰς αὐτοὺς μεταστάσεως τῶν χωρίων τῶν ὑπὸ τῷ Νέστορι.

- 3 Ἦν δὲ ταῦτα ἢ τε Πισᾶτις, ἥς ἡ Ὀλυμπία μέρος, καὶ ἡ Τριφυλία καὶ ἡ τῶν Καυκῶνων. Τριφύλιοι δ' 5 ἐκλήθησαν ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ἀπὸ τοῦ τρία φῦλα συνεληλυθέναι, τὸ τε τῶν ἀπ' ἀρχῆς Ἐπειῶν καὶ τὸ τῶν ἐποικησάντων ὕστερον Μινυῶν καὶ τὸ τῶν ὕστατα ἐπικρατησάντων Ἡλείων· οἱ δ' ἀντὶ τῶν Μινυῶν Ἀρκάδας φασίν, ἀμφισβητήσαντας τῆς χώρας πολλάκις, 10 ἀφ' οὗ καὶ Ἀρκαδικὸς Πύλος ἐκλήθη ὁ αὐτὸς καὶ Τριφυλιακός. Ὀμηρος δὲ ταύτην ἄπασαν τὴν χώραν μέχρι Μεσσήνης καλεῖ Πύλον ὁμωνύμως τῇ πόλει. ὅτι δὲ διώριστο ἡ κοίλη Ἥλις ἀπὸ τῶν ὑπὸ τῷ Νέστορι τόπων, ὁ τῶν νεῶν κατάλογος δηλοῖ τοῖς τῶν ἡγεμό- 15 νων καὶ τῶν κατοικιῶν ὀνόμασι. λέγω δὲ ταῦτα συμβάλλων τὰ τε νῦν καὶ τὰ ὑφ' Ὀμήρου λεγόμενα· ἀνάγκη γὰρ ἀντεξετάζεσθαι ταῦτα ἐκείνοις διὰ τὴν τοῦ ποιητοῦ δόξαν καὶ συντροφίαν πρὸς ἡμᾶς, τότε νομίζοντος ἐκάστου κατορθοῦσθαι τὴν παροῦσαν πρόθε- 20 σιν, ὅταν ἡ μὴδὲν ἀντιπῆκτον τοῖς οὕτω σφόδρα πιστευθεῖσι περὶ τῶν αὐτῶν λόγοις· δεῖ δὴ τὰ τε ὄντα λέγειν καὶ τὰ τοῦ ποιητοῦ παρατιθέντας ἐφ' ὅσον προσήκει προσσκοπεῖν.

- 4 Ἔστι δέ τις ἄκρα τῆς Ἠλείας πρόσβορος ἀπὸ ἐξή- 25 κοντα Δύμης Ἀχαϊκῆς πόλεως Ἀραξος. ταύτην μὲν οὖν ἀρχὴν τίθεμεν τῆς τῶν Ἡλείων παραλίας· μετὰ δὲ ταύτην ἐστὶν ἐπὶ τὴν ἐσπέραν προλοῦσι τὸ τῶν Ἡλείων ἐπίνειον ἡ Κυλλήνη, ἀνάβασιν ἔχουσα ἐπὶ τὴν νῦν πόλιν ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίων. μέμνηται δὲ τῆς Κυλ- 30 λήνης ταύτης καὶ Ὀμηρος λέγων Ὄτον Κυλλήνιον ἀρχὸν Ἐπειῶν. οὐ γὰρ ἀπὸ τοῦ Ἀρκαδικοῦ ὄρους ὄντα

- ἔμελλεν ἡγεμόνα τῶν Ἑπειῶν ἀποφῆναι· ἔστι δὲ κόμη
μετρία, τὸν Ἀσκληπιδὸν ἔχουσα τὸν Κολώτον, θανμα-
στὸν ἰδεῖν ξόανον ἐλεφάντινον. μετὰ δὲ Κυλλήνην
ἀκρωτήριόν ἐστιν ὁ Χελωνάτας, δυσμικώτατον τῆς Πε-
5 λοποννήσου σημεῖον. πρόκειται δ' αὐτοῦ νησίον καὶ C.338
βραχέα ἐν μεθορίοις τῆς τε κοίλης Ἥλιδος [καὶ τῆς]
Πισατῶν, ὅθεν εἰς Κεφαλληνίαν πλέοντι εἰσὶν οὐ
πλείους στάδιοι ὀγδοήκοντα. αὐτοῦ δέ που καὶ ὁ Ἐλί-
σων ἢ Ἑλίσσα ῥεῖ ποταμὸς ἐν τῇ λεχθείσῃ μεθορίᾳ.
- 10 Μεταξὺ δὲ τοῦ Χελωνάτα καὶ τῆς Κυλλήνης ὁ τε 5
Πηνειὸς ἐκδίδωσι ποταμὸς καὶ ὁ Σελλήεις ὑπὸ τοῦ ποιη-
τοῦ λεγόμενος, ῥέων ἐκ Φολόης· ἐφ' ᾧ Ἐφύρα πόλις,
ἐτέρα τῆς Θεσπρωτικῆς καὶ Θετταλικῆς καὶ τῆς Κορίν-
θου, τετάρτη τις ἐπὶ τῇ ὁδῷ κειμένη τῇ ἐπὶ Λασιῶνα,
15 ἥτοι ἡ αὐτὴ οὖσα τῇ Βοινῳά (τὴν γὰρ Οἰνόνην οὕτω
καλεῖν εἰώθασιν) ἢ πλησίον ἐκείνης, διέχουσα τῆς
Ἥλειων πόλεως σταδίους ἑκατὸν εἴκοσιν· ἐξ ἧς ἢ τε
Τληπολέμου τοῦ Ἡρακλέους δοκεῖ λέγεσθαι μῆτηρ
„τὴν ἄγερ“ ἐξ Ἐφύρης ποταμοῦ ἄπο Σελλήεντος“ (ἐκεῖ
20 γὰρ μάλλον αἱ τοῦ Ἡρακλέους στρατεῖαι, πρὸς ἐκεί-
ναις τε οὐδεις ποταμὸς Σελλήεις), καὶ ὁ τοῦ Μέγητος
[θώραξ] „τόν ποτε Φυλεὺς ἤγαγεν ἐξ Ἐφύρης ποτα-
„μοῦ ἄπο Σελλήεντος.“ ἐξ ἧς καὶ τὰ φάρμακα τὰ ἀν-
δροφόνα. εἰς Ἐφύραν γὰρ ἀφίχθαι [ἢ Ἀθηνᾶ] φησὶ τὸν
25 Ὀδυσσεά „φάρμακον ἀνδροφόνον διζήμενον, ὅφρα οἱ
„εἴη ἰοὺς χρίεσθαι“ καὶ τὸν Τηλέμαχον οἱ μνηστῆρες
„ἦε καὶ εἰς Ἐφύρην ἐθέλει πείραν ἄρουραν ἐλθεῖν,
„ὅφρ' ἐνθεν θυμοφθόρα φάρμακ' ἐνείκη.“ καὶ γὰρ τὴν
Ἀργεῖον θυγατέρα τοῦ τῶν Ἑπειῶν βασιλέως ὁ Νέστωρ
30 ἐν τῇ διηγῆσει τοῦ πρὸς αὐτοὺς πολέμου φαρμακίδα
εἰσάγει „πρῶτος ἐγὼν ἔλον ἄνδρα“ φήσας „Μούλιον
„αἰχμητήν, γαμβρὸς δ' ἦν Ἀργεῖο, πρεσβυτάτην δὲ

„θύγατρ' εἶχεν, ἥ τόσα φάρμακα ἤδη, ὅσα τρέφει εὐ-
 ρεῖα χθών.“ ἔστι δὲ καὶ περὶ Σικυνῶνα Σελλήεις πο-
 ταμὸς καὶ Ἐφύρα πλησίον κώμη, καὶ ἐν τῇ Ἀγραίᾳ τῆς
 Αἰτωλίας Ἐφύρα κώμη, οἱ δ' ἀπ' αὐτῆς Ἐφυροὶ καὶ
 ἄλλοι οἱ Περραιβῶν πρὸς Μακεδονίαν, οἱ Κραννώ- 5
 νιοι, καὶ οἱ Θεσπρωτικοὶ οἱ ἐκ Κιχύρου τῆς πρότερον
 Ἐφύρας.

- 6 Ἀπολλόδωρος δὲ διδάσκων ὃν τρόπον ὁ ποιητὴς
 εἰώθε διαστέλλεσθαι τὰς ὁμωνυμίας, οἷον ἐπὶ τοῦ Ὀρ-
 χομενοῦ τὸν μὲν Ἀρκαδικὸν πολύμηλον καλῶν τὸν δὲ 10
 Βοιωτιακὸν Μινύειον, καὶ Σάμον Ὀρηκίην συντιθεῖς
 C.339, μεσσηγὺς τε Σάμοιο καὶ Ἰμβρου, “ ἵνα χωρίσῃ ἀπὸ
 τῆς Ἰωνικῆς, οὕτω φησὶ καὶ τὴν Θεσπρωτικὴν Ἐφύ-
 ραν διαστέλλεσθαι τῷ τε „τηλόθεν“ καὶ τῷ „ποταμοῦ
 „ἄπο Σελλήεντος.“ ταῦτα δ' οὐχ ὁμολογεῖ τοῖς ὑπὸ τοῦ 15
 Σκηψίου Δημητρίου λεγομένοις, παρ' οὓς μεταφέρει τὰ
 πλεῖστα. ἐκεῖνος γὰρ οὗ φησιν εἶναι Σελλήεντα ἐν
 Θεσπρωτοῖς ποταμόν, ἀλλ' ἐν τῇ Ἠλείᾳ παρὰ τὴν ἐκεῖ
 Ἐφύραν, ὡς προείπομεν. τοῦτό τε οὖν εἰρηκε σκέψεως
 δεόμενον καὶ περὶ τῆς Οἰχαλίας ὅτι φησὶν οὐ μίᾳς οὐ- 20
 σης, μίαν εἶναι πόλιν Εὐρύτου Οἰχαλιῆος· δῆλον οὖν
 ὅτι τὴν Θετταλικὴν, ἐφ' ἧς φησιν „οἱ τ' ἔχον Οἰχαλίην,
 „πόλιν Εὐρύτου Οἰχαλιῆος.“ τίς οὖν ἔστιν ἐξ ἧς ὀρ-
 μηθέντα αἱ Μοῦσαι κατὰ Δώριον „ἀντόμεναι Θάμυ-
 ριν τὸν Ὀρήκα παῦσαν ἀοιδῆς;“ εἰ μὲν γὰρ ἡ Θεττα- 25
 λικὴ, οὐκ εὖ πάλιν ὁ Σκήψιος Ἀρκαδικὴν τινα λέγων,
 ἣν νῦν Ἀνδανίαν καλοῦσιν· εἰ δ' οὗτος εὖ, καὶ ἡ Ἀρ-
 καδικὴ πόλις Εὐρύτου εἰρηται, ὥστ' οὐ μία μόνον·
 ἐκεῖνος δὲ μίαν φησὶ.

25. post ἀοιδῆς: φησὶ γάρ „Οἰχαλίηθεν ἰόντα παρ' Εὐ-
 ρντιου Οἰχαλιῆος“

Μεταξὺ δὲ τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῆς Σελλήεντος ἐκ- 7
 βολῆς Πύλος ᾤκειτο κατὰ τὸ Σκόλλιον, οὐχ ἡ τοῦ
 Νέστορος πόλις, ἀλλ' ἑτέρα τις, ἥ πρὸς τὸν Ἀλφειὸν
 οὐδὲν ἔστι κοινῶνημα, οὐδὲ πρὸς τὸν Παμισόν, εἴτε
 5 Ἀμαθον χρὴ καλεῖν. βιάζονται δ' ἔνιοι μνηστευόμενοι
 τὴν Νέστορος δόξαν καὶ τὴν εὐγένειαν· τριῶν γὰρ Πύ-
 λων ἱστορουμένων ἐν Πελοποννήσῳ — καθότι καὶ τὸ
 ἔπος εἴρηται τουτί „ἔστι Πύλος πρὸ Πύλοιο· Πύλος γε
 μὲν ἔστι καὶ ἄλλος“ — τούτου τε καὶ τοῦ Λεπρεατικοῦ
 10 τοῦ ἐν τῇ Τριφυλίᾳ καὶ τῇ Πισάτιδι, τρίτου δὲ τοῦ
 Μεσσηνιακοῦ τοῦ κατὰ Κορυφάσιον, ἕκαστοι τὸν παρὰ
 σφισιν ἡμαθόεντα πειρῶνται δεικνύναι, καὶ τὴν τοῦ
 Νέστορος πατρίδα τοῦτον ἀποφαίνουσιν. οἱ μὲν οὖν
 πολλοὶ τῶν νεωτέρων καὶ συγγραφέων καὶ ποιητῶν
 15 Μεσσηνιὸν φασὶ τὸν Νέστορα, τῷ σωζομένῳ μέχρι εἰς
 αὐτοὺς προστιθέμενοι· οἱ δ' Ὀμηρικώτεροι τοῖς ἔπεσιν
 ἀκολουθοῦντες τοῦτον εἶναί φασὶ τὸν τοῦ Νέστορος
 Πύλον, οὗ τὴν χώραν διέξεισιν ὁ Ἀλφειὸς· διέξεισι δὲ
 τὴν Πισάτιν καὶ τὴν Τριφυλίαν. οἱ δ' οὖν ἐκ τῆς κοί-
 20 λης Ἥλιδος καὶ τοιαύτην φιλοτιμίαν προσετίθεσαν τῷ
 παρ' αὐτοῖς Πύλῳ, καὶ γνωρίσματα δεικνύντες Γέρη-C.340
 νον τόπον καὶ Γέροντα ποταμὸν καὶ ἄλλον Γεράνιον,
 εἰπ' ἀπὸ τούτων ἐπιθέτως Γεργήνιον εἰρησθαι πιστού-
 μενοι τὸν Νέστορα. τοῦτο δὲ ταῦτό καὶ οἱ Μεσσηνιοὶ
 25 πεποιήκασιν, καὶ πιθανώτεροί γε φαίνονται· μᾶλλον
 γὰρ γνώριμά φασιν εἶναι τὰ παρ' ἐκείνοις Γέρηνα,
 συνοικουμένην ποτὲ εὔ. τοιαῦτα μὲν τὰ περὶ τὴν κοί-
 λην Ἥλιν ὑπάρχοντα νυνί.

Ὁ δὲ ποιητὴς εἰς τέτταρα μέρη διελὼν τήνδε τὴν 8
 30 χώραν, τέτταρας δὲ καὶ τοὺς ἡγεμόνας εἰπών, οὐ σα-
 φῶς εἴρηκεν „οἱ δ' ἄρα Βουπράσιόν τε καὶ Ἥλιδα δῖαν
 „ἔναιον, ὅσσον ἔφ' Ὑρμίνη καὶ Μύρσινος ἐσχατόωσα

„πέτρῃ τ' Ὠλενίῃ καὶ Ἀλεῖσιον ἐντὸς ἑέργει, τῶν αὖ
 „τέσσαρες ἀρχοὶ ἔσαν, δέκα δ' ἀνδρὶ ἐκάστῳ νῆες
 „ἔποντο θοαί· πολέες δ' ἔμβαινον Ἐπειοί.“ τῷ μὲν
 γὰρ Ἐπειοὺς ἀμφοτέρους προσαγορεύειν τοὺς τε Βου-
 πρασιεῖς καὶ τοὺς Ἠλείους, Ἠλείους δὲ μηκέτι καλεῖν 5
 τοὺς Βουπρασιεῖς, οὐ τὴν Ἠλείαν δόξειεν ἂν εἰς τέτ-
 ταρα μέρη διαιρεῖν, ἀλλὰ τὴν τῶν Ἐπειῶν, ἣν εἰς δύο
 μέρη διεῖλε πρότερον· οὐδ' ἂν μέρος εἴη τῆς Ἠλιδος
 τὸ Βουπράσιον, ἀλλὰ τῶν Ἐπειῶν μᾶλλον. ὅτι γὰρ
 Ἐπειοὺς καλεῖ τοὺς Βουπρασίους, δῆλον „ὥς ὁπότε 10
 „κρείοντ' Ἀμαρυγκέα θάπτον Ἐπειοὶ Βουπρασίῳ.“
 πάλιν δὲ τῷ συγκαταριθμεῖσθαι Βουπράσιόν τε καὶ
 Ἠλίδα διὰν λέγοντα, εἰτ' εἰς τέτταρας διαιρεῖν μερίδας,
 ὥς ἂν κοινῷ δοκεῖ τῷ τε Βουπρασίῳ καὶ τῇ Ἠλιδι αὐ-
 τὰς ὑποτάττειν. ἣν δ', ὥς ἔοικε, κατοικία τῆς Ἠλείας 15
 τὸ Βουπράσιον ἀξιώλογος, ἣ νῦν οὐκέτ' ἐστίν· ἡ δὲ
 χώρα καλεῖται μόνον οὕτως ἢ ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τῆς ἐπὶ Λύ-
 μνῃ ἐξ Ἠλιδος τῆς νῦν πόλεως. ὑπολάβοι δ' ἂν τις καὶ
 ὑπεροχὴν τινα ἔχειν τότε τὸ Βουπράσιον παρὰ τὴν
 Ἠλιν, ὥσπερ καὶ οἱ Ἐπειοὶ παρὰ τοὺτους· ὕστερον δ' 20
 αὐτ' Ἐπειῶν Ἠλεῖοι ἐκλήθησαν. καὶ τὸ Βουπράσιον
 μὲν δὴ μέρος ἦν τῆς Ἠλιδος. ποιητικῶς δέ τινα σχήματι
 συγκαταλέγειν τὸ μέρος τῷ ὅλῳ φασὶ τὸν Ὅμηρον, ὥς
 τό „ἂν' Ἑλλάδα καὶ μέσον Ἄργος“ καὶ „ἂν' Ἑλλάδα
 τε Φθίῃν τε“ „Κουρητὲς τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοί“ „οἱ 25
 δ' ἐκ Δουλιχίου Ἐχινάων θ' ἰεράων.“ καὶ γὰρ τὸ Δου-
 λίχιον τῶν Ἐχινάδων. χρῶνται δὲ καὶ οἱ νεώτεροι·
 Ἰππῶναξ μὲν „Κυπρίων βέκος φαγοῦσι καὶ Ἀμαθου-
 „σίων πυρόν.“ Κύπριοι γὰρ καὶ οἱ Ἀμαθούσιοι· καὶ

11. post Βουπρασίῳ: τὸ δὲ Βουπράσιον εἶναι τινα χώραν
 τῆς Ἠλείας, κατοικίαν οὐκ ἔχουσαν ὁμώνυμον· νυνὶ φαίνεται
 τῆς Ἠλιδος ὃν μέρος καὶ τοῦτο.

Ἀλκμάν δέ „Κύπρον λιμερτὰν λιποῖσα καὶ Πάφον πε-
 „ριρρύταν“ καὶ Αἰσχύλος „Κύπρου Πάφου τ' ἔχουσα^{C.341}
 „πάντα κλήρον.“ εἰ δ' οὐκ εἴρηκεν Ἠλείους τοὺς Βου-
 πρασίους, οὐδ' ἄλλα πολλὰ τῶν ὄντων, φήσομεν· ἀλλὰ
 5 τοῦτ' οὐκ ἔστιν ἀπόδειξις τοῦ μὴ εἶναι, ἀλλὰ τοῦ μὴ
 εἴπεῖν μόνον.

Ἐκαταῖος δ' ὁ Μιλήσιος ἑτέρους λέγει τῶν Ἠλείων 9
 τοὺς Ἐπειούς· τῷ γοῦν Ἡρακλεῖ συστρατεῦσαι τοὺς
 Ἐπειούς ἐπὶ Ἀνγέαυ καὶ συνανελεῖν αὐτῷ τόν τε Ἀν-
 10 γέαυ καὶ τὴν Ἥλιον· φησὶ δὲ καὶ τὴν Δύμην Ἐπειίδα
 καὶ Ἀχαιίδα. πολλὰ μὲν οὖν καὶ μὴ ὄντα λέγουσιν οἱ
 ἀρχαῖοι συγγραφεῖς, συντεθραμμένοι τῷ ψεύδει διὰ
 τὰς μυθογραφίας· διὰ δὲ τοῦτο καὶ οὐχ ὁμολογοῦσι
 πρὸς ἀλλήλους περὶ τῶν αὐτῶν. οὐ μέντοι ἄπιστον
 15 οὐδ' εἴ ποτε διάφοροι τοῖς Ἠλείοις ὄντες οἱ Ἐπειοὶ καὶ
 ἑτεροεθνεῖς εἰς ταῦτό συνήρχοντο κατ' ἐπικράτειαν,
 καὶ κοινὴν ἔνεμον τὴν πολιτείαν· ἐπεκράτουν δὲ καὶ
 μέχοι Δύμης. ὁ μὲν γὰρ ποιητὴς οὐκ ὠνόμακε τὴν Δύ-
 μην, οὐκ ἀπεικὸς δ' ἐστὶ τότε μὲν αὐτὴν ὑπὸ τοῖς
 20 Ἐπειοῖς ὑπάρχειν, ὕστερον δὲ τοῖς Ἰωσιν, ἢ μὴδ' ἐκεί-
 νοις ἀλλὰ τοῖς τὴν ἐκείνων χώραν κατασχοῦσιν Ἀχαι-
 οῖς· τῶν δὲ τεττάρων μερίδων, ὧν ἐντός ἐστι καὶ τὸ
 Βουπράσιον, ἡ μὲν Ὀρμίνη καὶ ἡ Μύρσινος τῆς Ἠλείας
 ἐστίν, αἱ λοιπαὶ δὲ ἐπὶ τῶν ὄρων ἥδη τῆς Πισατίδος,
 25 ὥς οἴονται τινες.

Ὀρμίνη μὲν οὖν πολίχνιον ἦν, νῦν δ' οὐκ ἔστιν· 10
 ἀλλ' ἀκρωτήριον πλησίον Κυλλήνης ὄρειόν ἐστι, κα-
 λούμενον Ὀρμινά ἢ Ὀρμινά· Μύρσινος δὲ τὸ νῦν
 Μυρτουύντιον, ἐπὶ θάλατταν καθήκουσα κατὰ τὴν ἐκ
 30 Δύμης εἰς Ἥλιον ὁδὸν κατοικία, στάδια τῆς Ἠλείων πό-
 λεως διέχουσα ἑβδομήκοντα. πέτρην δ' Ὀρμινίην εἰκά-
 ζουσι τὴν νῦν Σκόλλιν· ἀνάγκη γὰρ εἰκότα λέγειν, καὶ

τῶν τόπων καὶ τῶν ὀνομάτων μεταβεβλημένων, ἐκεί-
 νου τε μὴ σφόδρα ἐπὶ πολλῶν σαφηνίζοντος· ἔστι δ'
 ὄρος πετρώδες κοινὸν Δυμαίων τε καὶ Τριταίων καὶ
 Ἑλίων, ἐχόμενον ἐτέρου τινὸς Ἀρκαδικοῦ ὄρους Λαμ-
 πείας, ὃ τῆς Ἑλιδος μὲν διέστηκεν ἐκ[ατὸν καὶ] τριά- 5
 κοντα σταδίους, Τριταίας δὲ ἑκατὸν, [καὶ Δύμης] τοὺς
 ἴσους, Ἀχαϊκῶν πόλεων. τὸ δ' Ἀλείσιον ἔστι τὸ νῦν
 Ἀλεσιαῖον, χώρα περὶ τὴν Ἀμφιδολίδα, ἐν ᾗ καὶ κατὰ
 μῆνα ἄγορὰν συνάγουσιν οἱ περίοικοι· κεῖται δὲ ἐπὶ
 τῆς ὀρεινῆς ὁδοῦ τῆς ἐξ Ἑλιδος εἰς Ὀλυμπίαν· πρότε- 10
 ρον δ' ἦν πόλις τῆς Πισάτιδος, ἄλλοτ' ἄλλως τῶν ὄρων
 ἐπαλλαττόντων διὰ τὰς τῶν ἡγεμόνων μεταβολάς· τὸ
 δ' Ἀλείσιον καὶ Ἀλειςίου κολώνην ὃ ποιητὴς καλεῖ
 C.342 ὅταν φῇ „μέσφ' ἐπὶ Βουπρασίου πολυπύρου βήσαμεν
 „ἵππους πέτρης τ' Ὀλενίης καὶ Ἀλειςίου ἐνθα κολώνη 15
 „κέκληται.“ ὑπερβατῶς γὰρ δεῖ δέξασθαι ἴσον τῷ „καὶ
 „ἐνθ' Ἀλειςίου κολώνη κέκληται.“ ἐνιοὶ δὲ καὶ ποτα-
 μὸν δεικνύουσιν Ἀλείσιον.

- 11 Λεγομένων δέ τινων ἐν τῇ Τριφυλίᾳ Καυκῶνων
 πρὸς τῇ Μεσσηνίᾳ, λεγομένης δὲ καὶ τῆς Δύμης Καν- 20
 κωνίδος ὑπὸ τινων, ὅντος δὲ καὶ ποταμοῦ ἐν τῇ Δυ-
 μαίᾳ μεταξὺ Δύμης καὶ Τριταίας ὃς καλεῖται Καύκων,
 ζητοῦσι περὶ τῶν Καυκῶνων μὴ διττοὶ λέγονται, οἱ
 μὲν περὶ τὴν Τριφυλίαν οἱ δὲ περὶ Δύμην καὶ Ἑλιν
 καὶ τὸν Καύκωνα· ἐμβάλλει δ' οὗτος εἰς ἕτερον, ὃς 25
 Τευθέας ἀρσενικῶς καλεῖται, ὁμώνυμος πολίχνη τινὶ
 τῶν εἰς τὴν Δύμην συνφοκισμένων, πλὴν ὅτι χωρὶς τοῦ
 σίγμα Τευθέα λέγεται θηλυκῶς αὕτη, ἐκτεινόντων τὴν
 ἐσχάτην συλλαβὴν, ὅπου τὸ τῆς * Νεμυδίας Ἀρτέμιδος
 λερόν. ὃ δὲ Τευθέας εἰς τὸν Ἀχελῶον ἐμβάλλει τὸν 30

κατὰ Λύμην δέοντα, ὁμώνυμον τῷ κατὰ Ἀκαρνανίαν, καλούμενον καὶ Πείρον. τοῦ δ' Ἑσιόδου εἰπόντος „ᾧ κε δ' Ὀλυνίην πέτρην ποταμοῖο παρ' ὄχθας εὐρείος „Πείροιο,“ μεταγράφουσί τινες Πάροιο οὐκ εὖ. οὔτε 5 γὰρ τὴν Λύμην ὀπόθεν Κανικωνίδα εἰρησθαι συμβέβηκε παραλιπεῖν ἄξιον, οὔτε τὸν ποταμὸν ὀπόθεν Κάνων εἴρηται, διὰ τὸ τοὺς Κάνωνας παρέχειν ζήτησιν, οἳ τινές ποτέ εἰσιν, ὅπου φησὶν ἡ Ἀθηνᾶ βαδίζειν κατὰ τὴν τοῦ χρέους κομιδὴν. εἰ γὰρ δὴ δεχοίμεθα τοὺς ἐν 10 τῇ Τριφυλίᾳ λέγεσθαι τοὺς περὶ Λέπρειον, οὐκ οἶδ' ὅπως πιθανὸς ἔσται ὁ λόγος· διὸ καὶ γράφουσί τινες „ἐνθα χρεῖός μοι ὀφείλεται“ Ἡλιδι δίῃ, οὐκ ὀλίγον.“ σαφεστέραν δ' ἔξει τὴν ἐπίσκεψιν τοῦτο, ἐπειδὴν τὴν ἑξῆς χώραν περιοδεύσωμεν τὴν τε Πισᾶτιν καὶ τὴν 15 Τριφυλίαν μέχρι τῆς τῶν Μεσσηνίων μεθορίας.

Μετὰ δὲ τὸν Χελωνάταν ὁ τῶν Πισατῶν ἔστιν 12 αἰγιαλὸς πολὺς, εἴτ' ἄκρα Φειά· ἣν δὲ καὶ πολίχνη „Φειᾶς παρ' τείχεσσι, Ἰαρδάνου ἄμφι ῥέεθρα.“ ἔστι γὰρ καὶ ποτάμιον πλησίον. ἐνιοι δ' ἀρχὴν τῆς Πισᾶ—C.343 20 τιδος τὴν Φειάν φασι· πρόκειται δὲ καὶ ταύτης νησίον καὶ λιμὴν, ἐνθεν εἰς Ὀλυμπίαν τὸ ἐγγυτάτω ἐκ θαλάττης εἰς στάδιοι ἑκατὸν εἴκοσιν. εἴτ' ἄλλη ἄκρα εὐθύς ἐπὶ πολὺ προὔχουσα ἐπὶ τὴν δύσιν, καθάπερ ὁ Χελωνάτας, ἀφ' ἧς πάλιν ἐπὶ τὴν Κεφαλληνίαν στάδιοι ἑκα— 25 τὸν εἴκοσιν. εἰθ' ὁ Ἀλφειὸς ἐκδίδωσι, διέχων τοῦ Χε—

4. post οὐκ εὖ: περὶ δὲ τῶν Κανικωνίων ζητοῦσι, φησὶν, ὅτι τῆς Ἀθηνᾶς τῆς τῷ Μέντορι. σεία
εἰκούσης πρὸς τὸν Νέστορα „αἰ. με-
οὐδ'
κετο δᾶμα, πέμψον σὺν δίφρῳ
δοκεῖ σημαίνεσθαι χώρα τις ἐν
εἶχον, ἕτεροι ὄντες τῶν ἐν τῇ
Τριφυλίᾳ, ἐπεκτείνοντες καὶ μέχρι τῆς Λυμαίας τυχόν.

λωνάτα σταδίους διακοσίους ὀγδοήκοντα, Ἀράξου δὲ πεντακοσίους τετταράκοντα πέντε. ῥεῖ δ' ἐκ τῶν αὐτῶν τόπων ἐξ ὧν καὶ ὁ Εὐρώτας· καλεῖται δὲ Ἀσέα, κώμη τῆς Μεγαλοπολίτιδος, πλησίον ἀλλήλων ἔχουσα δύο πηγάς, ἐξ ὧν ῥέουσιν οἱ λεχθέντες ποταμοί· δύν- 5 τες δ' ὑπὸ γῆς ἐπὶ συχνοὺς σταδίους ἀνατέλλουσι πάλιν, εἰδ' ὁ μὲν εἰς τὴν Λακωνικὴν ὁ δ' εἰς τὴν Πισάτιν κατὰγεται. ὁ μὲν οὖν Εὐρώτας κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς Βλεμινάτιδος ἀναδείξας τὸ ῥεῖθρον, παρ' αὐτὴν τὴν Σπάρτην ῥυεῖς καὶ διεξιὼν αὐλῶνά τινα μακρὸν κατὰ 10 τὸ Ἔλος, οὗ μέμνηται καὶ ὁ ποιητής, ἐκδίδωσι μεταξὺ Γυθείου τοῦ τῆς Σπάρτης ἐπινείου καὶ Ἀκραίων. ὁ δ' Ἀλφειὸς παραλαβὼν τὸν τε Λάδωνα καὶ τὸν Ἐρύμανθον καὶ ἄλλους ἀσημοτέρους διὰ τῆς Φρίξης καὶ τῆς Πισάτιδος καὶ Τριφυλίας ἐνεχθεὶς παρ' αὐτὴν τὴν 15 Ὀλυμπίαν ἐπὶ θάλατταν τὴν Σικελικὴν ἐκπίπτει μεταξὺ Φειᾶς τε καὶ Ἐπιταλίου. πρὸς δὲ τῇ ἐκβολῇ τὸ τῆς Ἀλφειωνίας Ἀρτέμιδος ἢ Ἀλφειούσης ἄλσος ἐστὶ (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως), ἀπέχον τῆς Ὀλυμπίας εἰς ὀγδοήκοντα σταδίους. ταύτῃ δὲ τῇ θεῷ καὶ ἐν Ὀλυμ- 20 πίᾳ κατ' ἔτος συντελεῖται πανήγυρις, καθάπερ καὶ τῇ Ἐλαφίᾳ καὶ τῇ Λαφνίᾳ. μεστὴ δ' ἐστὶν ἡ γῆ πᾶσα ἀρτεμισίων τε καὶ ἀφροδισίων καὶ νυμφαίων ἐν ἄλσεσιν ἀνθέων [πλέ]ως τὸ πολὺ διὰ τὴν εὐνδρίαν, συχνὰ δὲ καὶ ἑρμεῖα ἐν ταῖς ὁδοῖς, ποσεῖδια δ' ἐπὶ ταῖς ἀκταῖς. 25 ἐν δὲ τῷ τῆς Ἀλφειωνίας ἱερῷ γραφαὶ Κλεάνθους τε καὶ Ἀρήγοντος, ἀνδρῶν Κορινθίων, τοῦ μὲν Τροίας ἄλωσις καὶ Ἀθηνᾶς γοναί, τοῦ δ' Ἀρτεμις ἀναφερομένη ἐπὶ γρυπός, σφόδρα εὐδόκιμοι.

- 13 Εἶτα τὸ διεῖργον ὄρος τῆς Τριφυλίας τὴν Μακι- 30 στίαν ἀπὸ τῆς Πισάτιδος· εἰτ' ἄλλος ποταμὸς Χαλκίς καὶ κρήνη Κρουνοὶ καὶ κατοικία Χαλκίς, καὶ τὸ Σαμι-

κὸν μετὰ ταῦτα, ὅπου τὸ μάλιστα τιμώμενον τοῦ Σα-
μίου Ποσειδῶνος ἱερὸν· ἔστι δ' ἄλσος ἀγριελαιῶν
πλέων· ἐπεμελοῦντο δ' αὐτοῦ Μακίστιοι· οὗτοι δὲ καὶ
τὴν ἐκεχειρίαν ἐπήγγελλον, ἣν καλοῦσι Σάμιον· συν-
5 τελοῦσι δ' εἰς τὸ ἱερὸν πάντες Τριφύλιοι. καὶ τὸ τῆς
Σκιλλουντίας δὲ Ἀθηναῖς ἱερὸν τὸ περὶ Σκιλλοῦντα τῶν
ἐπιφανῶν ἐστίν, Ὀλυμπίας πλησίον κατὰ τὸν φελλῶνα.

Κατὰ ταῦτα δὲ πως τὰ ἱερὰ ὑπέρεκεται τῆς θα- 14
λάττης ἐν τριάκοντα ἢ μικρῷ πλείοσι σταδίοις ὁ Τρι-
10 φυλιακὸς Πύλος [ὁ] καὶ Λεπρεατικός, ὃν καλεῖ ὁ ποιη- C.344
τῆς ἡμαθόεντα καὶ παραδίδωσι τοῦ Νέστορος πατρίδα,
ὥς ἂν τις ἐκ τῶν ἐπῶν τεκμαίροιτο· εἴτε τοῦ παραρ-
ρέοντος ποταμοῦ πρὸς ἕρκτον Ἀμάθου καλουμένου
πρότερον, ὃς νῦν *Μάματος καὶ Ἀρκαδικὸς καλεῖται,
15 ὥστ' ἐντεῦθεν ἡμαθόεντα κεκληῆσθαι· εἴτε τούτου μὲν
Παμισοῦ καλουμένου ὁμωνύμως τοῖς ἐν τῇ Μεσσηνίᾳ
δυσί, τῆς δὲ πόλεως ἄδηλον ἐχούσης τὴν ἐτυμολογίαν
τοῦ ἐπιθέτου· καὶ γὰρ τὸ ἀμαθώδη τὸν ποταμὸν ἢ τὴν
χώραν εἶναι ψευδὸς φασι. πρὸς ἕω δ' ἐστὶν ὄρος τοῦ
20 Πύλου πλησίον ἐπώνυμον Μίνθης, ἣν μυθεύουσι
παλλακὴν τοῦ Ἄιδου γενομένην πατηθεῖσαν ὑπὸ τῆς
κόρης εἰς τὴν κηπαίαν μίνθην μεταβαλεῖν, ἣν τινας
ἡδύοσμον καλοῦσι. καὶ δὴ καὶ τέμενός ἐστιν Ἄιδου
πρὸς τῷ ὕρει τιμώμενον καὶ ὑπὸ Μακιστίων, καὶ Δή-
25 μητρος ἄλσος ὑπερκείμενον τοῦ Πυλιακοῦ πεδίου. τὸ
δὲ πεδίου ἐγγεῶν ἐστὶ τοῦτο, τῇ θαλάττῃ δὲ συνάψαν
παρατείνει παρ' ἅπαν τὸ μεταξὺ τοῦ τε Σαμικοῦ καὶ
ποταμοῦ Νέδας διάστημα. θινώδης δὲ καὶ στενός ἐστιν
ὁ τῆς θαλάττης αἰγιαλός, ὥστ' οὐκ ἂν ἀπογνοίῃ τις
30 ἐντεῦθεν ἡμαθόεντα ὠνομάσθαι τὸν Πύλον.

15 Πρὸς ἄρκτον δ' ὁμορα ἦν τῷ Πύλῳ δύο πολίδια Τριφυλιακὰ Ἵπανα καὶ Τυμπανέαι, ὧν τὸ μὲν εἰς Ἑλιν συνφοκίσθη τὸ δ' ἔμεινε. καὶ ποταμοὶ δὲ δύο ἐργὺς ῥέουσιν ὃ τε Δαλίῳν καὶ ὁ Ἀχέρων, ἐμβάλλοντες εἰς τὸν Ἀλφειόν. ὁ δὲ Ἀχέρων κατὰ τὴν πρὸς τὸν Αἰ- 5 δην οἰκειότητα ὠνόμασται· ἐκτετίμηται γὰρ δὴ σφόδρα τὰ τε τῆς Δήμητρος καὶ τῆς κόρης ἱερὰ ἐνταῦθα καὶ τὰ τοῦ Αἰδου, τάχα διὰ τὰς ὑπεναντιότητας, ὥς φησιν ὁ Σκήψιος Δημήτριος. καὶ γὰρ εὐκαρπὸς ἐστὶ καὶ ἐρυσίβην γεννᾷ καὶ θρύον ἢ Τριφυλία· διόπερ 10 ἀντὶ μεγάλης φορᾶς πυκνὰς ἀφορίας γίνεσθαι συμβαίνει κατὰ τοὺς τόπους.

16 Τοῦ δὲ Πύλου πρὸς νότον ἐστὶ τὸ Λεπρεῖον. ἦν δὲ καὶ αὕτη ἡ πόλις ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἐν τετταράκοντα σταδίοις· μεταξὺ δὲ τοῦ Λεπρείου καὶ τοῦ *Ἀννίου τὸ 15 ἱερὸν τοῦ Σαμίου Ποσειδῶνος ἔστιν, ἑκατὸν σταδίους ἑκατέρου διέχον. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ἱερὸν ἐν ᾧ καταληφθῆναί φησιν ὁ ποιητὴς ὑπὸ Τηλεμάχου τὴν θυσίαν συντελοῦντας τοὺς Πυλίους „οἱ δὲ Πύλον, Νηλῆος 20 „ἐνκτίμενον πτολίεθρον, ἱξον· τοὶ δ' ἐπὶ θινὶ θαλάσ- 25 „σης ἱερὰ ῥέξον, τὰύρους παμμέλανας, Ἐνοσίχθονι C.345 „κυανοχαίτη.“ πάρεστι μὲν γὰρ τῷ ποιητῇ καὶ πλάττειν τὰ μὴ ὄντα, ὅταν δ' ἢ δυνατόν, ἐφαρμόττειν τοῖς οὖσι τὰ ἔπη καὶ σώζειν τὴν διήγησιν. τὸ δ' ἀπέχεσθαι προσῆκε μᾶλλον. χώραν δ' εἶχον εὐδαίμονα οἱ Λε- 25 πρεῖται· τούτοις δ' ὁμοροὶ Κυπαρισσιεῖς. ἄμφω δὲ τὰ χωρία ταῦτα Καύκωνες κατεῖχον, καὶ τὸν Μάκιστον δέ, ὃν τινες Πλατανιστοῦντα καλοῦσιν. ὁμώνυμον τῇ χώρᾳ [δ'] ἐστὶ τὸ πόλισμα. φασὶ δ' ἐν τῇ Λεπρεάτιδι καὶ Καύκωνος εἶναι μνήμα, εἴτ' ἀρχηγέτου τινὸς εἴτ' 30 ἄλλως ὁμωνύμου τῷ ἔθνει.

17 Πλείους δ' εἰσὶ λόγοι περὶ τῶν Καυκῶνων· καὶ

γὰρ Ἀρκαδικὸν ἔθνος φασί, καθάπερ τὸ Πελασγικόν,
 καὶ πλανητικὸν ἄλλως, ὥσπερ ἐκεῖνο. Ἱστορεῖ γοῦν ὁ
 ποιητὴς καὶ τοῖς Τρωσὶν ἀφιγμένους συμμάχους, πό-
 θεν δ' οὐ λέγει· δοκοῦσι δ' ἐκ Παφλαγονίας· ἐκεῖ γὰρ
 5 ὀνομάζουσι Καυκωνιάτας τινὰς Μαριανδυνοῖς ὁμό-
 ρους, οἳ καὶ αὐτοὶ Παφλαγόνες εἰσὶ. μνησθησόμεθα
 δ' αὐτῶν ἐπὶ πλεόν, ὅταν εἰς ἐκεῖνον περιστῇ τὸν τό-
 πον ἢ γραφῇ. νυνὶ δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ Τριφυλίᾳ Καυ-
 κώνων ἔτι καὶ ταῦτα προσιστορητέον. οἳ μὲν γὰρ καὶ
 10 ὅλην τὴν νῦν Ἑλλείαν ἀπὸ τῆς Μεσσηνίας μέχρι Λύ-
 μης Καυκωνίαν λεχθῆναί φασιν· Ἀντίμαχος γοῦν καὶ
 Ἐπειὸς καὶ Καύκωνας ἅπαντας προσαγορεύει. τινὲς
 δὲ ὅλην μὲν μὴ κατασχεῖν αὐτούς, δίχα δὲ μεμερι-
 σμένους οἰκεῖν, τοὺς μὲν πρὸς τῇ Μεσσηνίᾳ κατὰ
 15 τὴν Τριφυλίαν τοὺς δὲ πρὸς τῇ Λύμῃ κατὰ τὴν Βου-
 πρασίδα καὶ τὴν κοίλῃν Ἑλίην· Ἀριστοτέλης δ' ἐνταῦ-
 θα μάλιστα οἶδεν ἰδρυμένους αὐτούς. καὶ δὴ τοῖς ὑφ'
 Ὀμήρου λεγομένοις ὁμολογεῖ μᾶλλον ἢ ὑστάτη ἀπόφα-
 σις, τό τε ζητούμενον πρότερον λαμβάνει λύσιν. ὁ μὲν
 20 γὰρ Νέστωρ ὑπόκειται τὸν Τριφυλιακὸν οἰκῶν Πύ-
 λον, τὰ τε πρὸς νότον καὶ τὰ ἐωθινά (ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ
 συγκυροῦντα πρὸς τὴν Μεσσηνίαν καὶ τὴν Λακωνι-
 κήν) ὑπ' ἐκείνῳ ἐστίν, ἔχουσι δ' οἱ Καύκωνες, ὥστε
 τοῖς ἀπὸ τοῦ Πύλου βαδίζουσιν εἰς Λακεδαίμονα ἀνάγ-
 25 κη διὰ Καυκώνων εἶναι τὴν ὁδόν. τὸ δὲ ἱερὸν τοῦ
 Σαμίου Ποσειδῶνος καὶ ὁ κατ' αὐτὸ ὄρμος, εἰς ὃν κα-
 τήχθη Τηλέμαχος, πρὸς δύσιν καὶ πρὸς ἄρκτον ἀπο-
 νεύει. εἰ μὲν τοίνυν οἱ Καύκωνες ἐνταῦθα μόνον οἰ-
 κοῦσιν, οὐ σῶζεται τῷ ποιητῇ ὁ λόγος. κелеύει γὰρ ἢ
 30 μὲν Ἀθηναῖα κατὰ τὸν Σωτάδην τῷ Νέστορι, τὸν μὲν Τη-
 λέμαχόν εἰς τὴν Λακεδαίμονα πέμψαι σὺν δίφρῳ τε
 καὶ νίει εἰς τὰ πρὸς ἕω μέρη· αὐτὴ δ' ἐπὶ ναῦν βαδιεῖ-

σθαι νυκτερεύουσα φησιν ἐπὶ τὴν δυσιν καὶ εἰς τοῦ-
πίσω, „ἀτὰρ ἡῶθεν μετὰ Καύκωνας μεγαθύμους“
πορεύσεσθαι ἐπὶ τὸ χρέος πάλιν εἰς τοῦμπροσθεν. τίς
C.346οῦν ὁ τρόπος; παρὴν γὰρ τῷ Νέστορι λέγειν ἄλλ' οἷ
γε Καύκωνες ὑπ' ἐμοί εἰσι καὶ πρὸ ὁδοῦ τοῖς εἰς Λακε- 5
δαίμονα βαδίζουσιν· ὥστε τί οὐ συνοδεύεις τοῖς περὶ
Τηλέμαχον, ἀλλ' ἀναχωρεῖς εἰς τοῦπίσω; ἅμα δ' οἷ-
κειον ἦν τῷ βαδίζοντι ἐπὶ χρέους κομιδὴν οὐκ ὀλίγον,
ὥς φησι, πρὸς ἀνθρώπους ὑπὸ τῷ Νέστορι ὄντας, αἷ-
τήσασθαί τινα παρ' αὐτοῦ βοήθειαν, εἴ τι ἀγνωμονοῖτο 10
(ὥσπερ εἶωθε) περὶ τὸ συμβόλαιον· οὐ γέγονε δὲ
τοῦτο. εἰ μὲν τοίνυν ἐνταῦθα μόνον οἰκοῖεν οἱ Καύ-
κωνες, ταῦτ' ἂν συμβαίνοι τὰ ἄτοπα· μεμερισμένων
δὲ τινῶν καὶ εἰς τοὺς πρὸς Δύμη τόπους τῆς Ἠλείας,
ἐκεῖσε ἂν εἴη λέγουσα τὴν ἔφοδον ἢ Ἀθηνᾶ, καὶ οὐκ 15
ἂν ἔτι οὔθ' ἢ εἰς τὴν ναῦν κατάβασις ἔχοι τι ἀπεμφαί-
νον οὔθ' ὁ τῆς συνοδίας ἀποσπασμός, εἰς τὰναντία
τῆς ὁδοῦ οὔσης. παραπλησίως δ' ἂν καὶ τὰ περὶ τοῦ
Πύλου διαπορούμενα τύχοι τῆς προσηκούσης διαίτης
ἐπελθοῦσι μικρὸν ἔτι τῆς χωρογραφίας μέχρι τοῦ Πύ- 20
λου τοῦ Μεσσηνιακοῦ.

18 Ἐλέγοντο δὲ Παρωρεᾶται τινὲς τῶν ἐν τῇ Τριφυ-
λίᾳ κατέχοντες ὄρη περὶ τὸ Λέπρειον καὶ τὸ Μάκιστον
καθήκοντα ἐπὶ θάλατταν πλησίον τοῦ Σαμιακοῦ πο-
σειδίου.

25

19 Ἐπὶ τούτοις ἐστὶν ἐν τῇ παραλίᾳ δύο ἄντρα, τὸ
μὲν νυμφῶν Ἀνιγριάδων τὸ δὲ ἐν ᾧ τὰ περὶ τὰς Ἀ-
τλαντίδας καὶ τὴν Δαρδάνου γένεσιν. ἐνταῦθα δὲ καὶ
τὰ ἄλση τό τε Ἰωναῖον καὶ τὸ Εὐρυκύδειον. τὸ μὲν
οὖν Σαμικὸν ἐστὶν ἔρυμα, πρότερον δὲ καὶ πόλις Σά- 30
μος προσαγορευομένη διὰ τὸ ὕψος ἰσως, ἐπειδὴ σά-
μους ἐκάλουν τὰ ὕψη· τάχα δὲ τῆς Ἀρῆνης ἀκρόπολις

ἦν τοῦτο, ἥς ἐν τῷ καταλόγῳ μέμνηται ὁ ποιητής „οὐ
 „δὲ Πύλον τ' ἐνέμοντο καὶ Ἀρήνην ἐρατεινήν.“ οὐ-
 δαμοῦ γὰρ σαφῶς εὐρίσκοντες ἐνταῦθα μάλιστα εἰκά-
 ζουσι τὴν Ἀρήνην, ὅπου καὶ ὁ παρακείμενος Ἀνιγρος
 5 ποταμός, καλούμενος πρότερον Μινύειος, δίδωσιν οὐ
 μικρὸν σημεῖον· λέγει γὰρ ὁ ποιητής „ἔστι δέ τις πο-
 „ταμὸς Μινυήιος εἰς ἄλλα βάλλων ἐγγύθεν Ἀρήνης.“
 πρὸς γὰρ δὴ τῷ ἄντρῳ τῶν Ἀνιγριάδων νυμφῶν ἐστι
 πηγὴ, ὑφ' ἥς ἔλειον καὶ τιφῶδες τὸ ὑποπίπτον γίνεται
 10 χωρίον· ὑποδέχεται δὲ τὸ πλείστον τοῦ ὕδατος ὁ Ἀνι-
 γρος βαθὺς καὶ ὕπιος ὣν ὥστε λιμνάζειν· θινώδης
 δ' ὦν ὁ τόπος ἐξ εἰκοσι σταδίων βαρεῖαν ὁσμὴν παρέ-
 χει καὶ τοὺς ἰχθῦς ἀβρώτους ποιεῖ. μυθεύουσι δ' οἱ
 μὲν ἀπὸ τοῦ τῶν τετρωμένων Κενταύρων τινὰς ἐν-
 15 ταῦθ' ἀπονύφασθαι τὸν ἐκ τῆς Ἰθρας λόν, οἱ δ' ἀπὸ
 τοῦ Μελάμποδα τοῖς ὕδασι τούτοις καθαρσίους χρήσα-
 σθαι πρὸς τὸν τῶν Προϊτίδων καθαρόν· ἀλφουὺς δὲ C.347
 καὶ λεύκας καὶ λειγῆνας ἰάται τὸ ἐντεῦθεν λουτρόν.
 φασὶ δὲ καὶ τὸν Ἀλφειὸν ἀπὸ τῆς τῶν ἀλφῶν θερα-
 20 πείας οὕτως ὠνομάσθαι. ἐπεὶ οὖν ἢ τε ὑπτιότης τοῦ
 Ἀνίγρου καὶ αἱ ἀνακοπαὶ τῆς θαλάττης μονὴν μᾶλλον
 ἢ ῥύσιν παρέχουσι τοῖς ὕδασι, * Μινυήιον φασιν εἰρη-
 σθαι πρότερον, παρατρέψαι δὲ τινὰς τοῦνομα καὶ ἀντ'
 αὐτοῦ ποιῆσαι Μινυήιον. ἔχει δ' ἡ ἐτυμότης καὶ ἄλλας
 25 ἀφορμάς, εἴτ' ἀπὸ τῶν μετὰ Χλωρίδος τῆς Νέστορος
 μητρὸς ἐλθόντων ἐξ Ὀρχομενοῦ τοῦ Μινυείου, [εἴτε]
 Μινυῶν, οἳ τῶν Ἀργοναυτῶν ἀπόγονοι ὄντες ἐκ Αἴ-
 μνου μὲν εἰς Λακεδαίμονα ἐξέπεσον ἐντεῦθεν δ' εἰς τὴν
 Τριφυλίαν, καὶ ᾤκησαν περὶ τὴν Ἀρήνην ἐν τῇ χώρᾳ
 30 τῇ νῦν Αἰπασίᾳ κελουμένη, οὐκ ἐχούση οὐκέτι τὰ τῶν
 Μινυῶν κτίσματα· ὧν τινὲς μετὰ Θῆρα τοῦ Αὐτεσίω-
 νος (ἦν δ' οὗτος Πολυνείκους ἀπόγονος) πλεύσαντες

εἰς τὴν μεταξὺ Κυρηναίας καὶ τῆς Κρήτης νῆσον, „Καλ-
 „λίστην τὸ πάροιθε, τὸ δ' ὕστερον οὖνομα Θήρην,“
 ὡς φησι Καλλίμαχος, ἔκτισαν τὴν μητρόπολιν τῆς Κυ-
 ρήνης Θήραν, ὁμώνυμον δ' ἀπέδειξαν τῇ πόλει καὶ τὴν
 νῆσον. 5

20 Μεταξὺ δὲ τοῦ Ἀνίγρου καὶ τοῦ ὄρους, ἐξ οὗ ῥεῖ,
 ὁ τοῦ Ἰαργάνου λειμῶν δείκνυται καὶ τάφος· καὶ Ἀχαι-
 αὶ εἰσὶ δὲ πέτραι ἀπότομοι τοῦ αὐτοῦ ὄρους, ὑπὲρ ὧν
 ἡ Σάμος, ὡς ἔφαμεν, γέγονε πόλις· οὐ πάνυ δὲ ὑπὸ
 τῶν τοὺς περίπλους γραψάντων ἡ Σάμος μνημονεύε- 10
 ται, τάχα μὲν γε διὰ τὸ πάλαι κατεσπᾶσθαι, τάχα δὲ καὶ
 διὰ τὴν θέρσιν. τὸ μὲν γὰρ ποσείδιον ἔστιν ἄλσος, ὡς
 εἰρηται, πρὸς τῇ θαλάττῃ· ὑπέρεκειται δ' αὐτοῦ λόφος
 ὑψηλὸς ἐπίπροσθεν ὧν τοῦ νῦν Σαμικοῦ ἐφ' οὗ ἦν
 ἡ Σάμος, ὥστ' ἐκ θαλάττης μὴ ὁρᾶσθαι. καὶ πεδίον δ' 15
 αὐτόθι καλεῖται Σαμικόν· ἐξ οὗ πλέον ἄν τις τεκμαί-
 ροιτο ὑπάρξαι ποτὲ πόλιν τὴν Σάμον. καὶ ἡ Ῥαδίνη
 δὲ ἦν Στησίχορος ποιῆσαι δοκεῖ (ἥς ἀρχή „ἄγε Μοῦ-
 „σα λίγει“, ἄρξον αἰοιδᾶς, Ἐρατώ, νόμους Σαμίων περὶ
 „παίδων ἐρατᾶ φθεγγομένα λύρα“) ἐντεῦθεν λέγει 20
 τοὺς παῖδας. ἐκδοθεῖσαν γὰρ τὴν Ῥαδίνην εἰς Κόριν-
 θον τυράννω φησὶν ἐκ τῆς Σάμου πλεῦσαι πνέοντος
 ξεφύρου, οὐ δῆπουθεν τῆς Ἰωνικῆς Σάμον· [τῷ] δ'
 αὐτῷ ἀνέμῳ καὶ ἀρχιθέωρον εἰς Δελφούς [τὸν ἀδ]ελ-
 φὸν αὐτῆς ἐλθεῖν καὶ τὸν ἀνεψιὸν ἐρῶντα αὐτῆς ἄρ- 25
 ματι εἰς Κόρινθον ἐξορμηῆσαι παρ' αὐτήν· ὃ τε τύραν-
 νος κτείνας ἀμφοτέρους ἄρματι ἀποπέμπει τὰ σώματα,
 μεταγνοὺς δ' ἀνακαλεῖ καὶ θάπτει.

C.348 21 Ἀπὸ δὲ τοῦ Πύλου τούτου καὶ τοῦ Λεπρείου τε-
 τρακοσίων που σταδίων ἐστὶ διάστημα ἐπὶ τὴν Μεσση- 30

νιακὴν Πύλον καὶ τὸ Κορυφάσιον ἐπὶ θαλάττῃ κείμενα
 φρούρια, καὶ τὴν παρακειμένην Σφαγίαν νῆσον, ἀπὸ
 δὲ Ἀλφειοῦ ἑπτακοσίων πεντήκοντα, ἀπὸ δὲ τοῦ Χε-
 λωνάτα χιλίων τριάκοντα. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τὸ τε τοῦ
 5 Μακιστίου Ἡρακλέους ἱερὸν ἐστὶ καὶ ὁ Ἀκίδων ποτα-
 μός. ρεῖ δὲ παρὰ τάφον Ἰαρδάνου καὶ Χάαν πόλιν ποτὲ
 ὑπάρξασαν πλησίον Λεπρείου, ὅπου καὶ τὸ πεδίον τὸ
 Αἰπάσιον. περὶ ταύτης δὲ τῆς Χάας γενέσθαι φασὶν
 ἔνιοι τὸν πόλεμον τοῖς Ἀρκάσι πρὸς τοὺς Πυλίου, ὃν
 10 ἔφρασεν Ὅμηρος, καὶ δεῖν οἴονται γράφειν „ἡβῶμ’
 „ὥς ὅτ’ ἐπ’ ὠκυρὸν Ἀκίδοντι μάχοντο ἀγρόμενοι Πύ-
 „λλιοί τε καὶ Ἀρκάδες Χάας παρ’ τελέεσσιν,“ οὐ Κελά-
 δοντι, οὐδὲ Φειᾶς· τῷ γὰρ τάφῳ τοῦ Ἰαρδάνου τοῦ-
 τον πλησιάζειν καὶ τοῖς Ἀρκάσι τὸν τόπον μᾶλλον ἢ
 15 ἐκεῖνον.

Κυπαρισσία τέ ἐστὶν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ τῇ Τριφυ- 22
 λιακῇ καὶ Πύργοι καὶ ὁ Ἀκίδων ποταμὸς καὶ Νέδα.
 νυνὶ μὲν οὖν τῇ Τριφυλίᾳ πρὸς τὴν Μεσσηνίαν ὄριόν
 ἐστὶ τὸ τῆς Νέδας ρεῦμα λάβρον ἐκ τοῦ Λυκαίου κα-
 20 τιὸν Ἀρκαδικοῦ ὄρους, ἐκ πηγῆς ἣν ἀναρρῆξαι τεκοῦ-
 σαν τὸν Δία μυθεύεται Ῥέαν νίπτρων χάριν. ρεῖ δὲ
 παρὰ Φιγαλίαν, καθ’ ὃ γειτνιάσι Πυργῖται Τριφυλίων
 ἔσχατοι Κυπαρισσιεῦσι πρώτοις Μεσσηνίων. τὸ δὲ πα-
 λαιὸν ἄλλως διώριστο, ὥς καὶ τινὰς τῶν πέραν τῆς
 25 Νέδας ὑπὸ τῷ Νέστορι εἶναι, τὸν τε Κυπαρισσῆντα
 καὶ ἄλλα τινὰ ἐπέκεινα, καθάπερ καὶ τὴν θάλατταν
 τὴν Πυλίαν ὁ ποιητὴς ἐπεκτείνει μέχρι τῶν ἑπτὰ πό-
 λεων ὧν ὑπέσχετο Ἀγαμέμνων τῷ Ἀχιλλεῖ „πᾶσαι δ’
 „ἔγγυς ἁλὸς νέσται Πύλου ἡμαθόεντος.“ τοῦτο γὰρ
 30 ἔσον τῷ „ἔγγυς ἁλὸς τῆς Πυλίας.“

Ἐφεξῆς δ’ οὖν τῷ Κυπαρισσῆντι ἐπὶ τὴν Μεσση- 23
 νιακὴν Πύλον παραπλέοντι [καὶ] τὸ Κορυφάσιον ἢ τε

Ἔρανα ἔστιν, ἣν τινες οὐκ εὖ Ἀρήνην νομίζουσιν κε-
κλήσθαι πρότερον ὁμωνύμως τῇ Πυλιακῇ, [καὶ ἡ ἄκρα]
Πλαταμώδης, ἀφ' ἧς ἐπὶ τὸ Κορυφάσιον καὶ τὴν νῦν
καλουμένην Πύλον ἑκατόν εἰσι στάδιοι. ἔστι δὲ καὶ
νησίον καὶ πολίχνιον ἐν αὐτῷ ὁμώνυμον Πρωτῇ. οὐκ 5
ἂν δ' ἐξητάξομεν ἴσως ἐπὶ τοσοῦτον τὰ παλαιά, ἀλλ'
ἥρκει λέγειν ὥς ἔχει νῦν ἕκαστα, εἰ μὴ τις ἦν ἐκ παλ-
δων ἡμῖν παραδεδομένη φήμη περὶ τούτων· ἄλλων δ'
ἄλλα εἰπόντων ἀνάγκη διαιτᾶν. πιστεύονται δ' ὥς
ἐπὶ τὸ πολὺ οἱ ἐνδοξότατοί τε καὶ πρεσβύτατοί καὶ κατ' 10
ἐμπειρίαν πρῶτοι· Ὀμήρου δ' εἰς ταῦτα ὑπερβεβλη-
C.349μένου πάντας, ἀνάγκη συνεπισκοπεῖν καὶ τὰ ὑπ' ἐκεί-
νου λεχθέντα καὶ συγκρούειν πρὸς τὰ νῦν, καθάπερ
καὶ μικρὸν ἔμπροσθεν ἔφαμεν.

- 24 Περὶ μὲν οὖν τῆς κοίλης Ἠλιδος καὶ τοῦ Βουπρά- 15
σίου τὰ λεχθέντα ὑφ' Ὀμήρου προεπέσκεπται ἡμῖν.
περὶ δὲ τῆς ὑπὸ τῷ Νέστορι οὕτω φησὶν „οἱ δὲ Πύλον
„τ' ἐνέμοντο καὶ Ἀρήνην ἐρατεινὴν καὶ Θρύον, Ἀλ-
„φειοῖο πόρον, καὶ εὐκτιτον Αἶπυ καὶ Κυπαρισσήεντα
„καὶ Ἀμφιγένηϊαν ἔναιον καὶ Πτελεὸν καὶ Ἔλος καὶ 20
„Δώριον, ἐνθα τε Μοῦσαι ἀντόμεναι Θάμυριν τὸν
„Θρήϊκα παῦσαν ἀοιδῆς, Οἰχαλίηθεν ἰόντα παρ' Εὐ-
„ρύτου Οἰχαλιῆος.“ Πύλος μὲν οὖν ἔστι περὶ ἧς ἡ ξή-
τησις· αὐτίκα δ' ἐπισκεψόμεθα περὶ αὐτῆς. περὶ δὲ
τῆς Ἀρήνης εἴρηται· ἣν δὲ λέγει νῦν Θρύον, ἐν ἄλλοις 25
καλεῖ Θρυόεσσαν „ἔστι δὲ τις Θρυόεσσα πόλις, αἰπεῖα
„κολώνη, τηλοῦ ἐπ' Ἀλφειῷ.“ Ἀλφειοῦ δὲ πόρον φη-
σὶν, ὅτι πεζῇ περατὸς εἶναι δοκεῖ κατὰ τοῦτον τὸν τό-
πον· καλεῖται δὲ νῦν Ἐπιτάλιον τῆς Μακιστίας χωρίον.
τὸ εὐκτιτον δ' Αἶπυ ἔνιοι μὲν ζητοῦσι πότερον ποτέ- 30
ρου ἐπίθετον, καὶ τίς ἡ πόλις, καὶ εἰ αἱ νῦν Μαργάλαι
τῆς Ἀμφιδολλίας· αὐταὶ μὲν οὖν οὐ φυσικὸν ἔρυμα,

ἕτερον δὲ δεικνύνται φυσικὸν ἐν τῇ Μακιστίᾳ. ὁ μὲν οὖν τοῦθ' ὑπονοῶν φράζεσθαι ὄνομά φησι τῆς πόλεως τὸ Αἶπυ ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος φυσικῶς, ὥς "Ἐλος καὶ Αἰγιαλὸν καὶ ἄλλα πλείω· ὁ δὲ τὴν Μαργά-
 5 λαν τοῦμπαλιν ἔσως. Θρύον δὲ καὶ Θρυόεσσαν τὸ Ἐπιτάλιόν φασιν, ὅτι πᾶσα μὲν αὕτη ἡ χώρα θρυώδης, μάλιστα δ' οἱ ποταμοί· ἐπὶ πλέον δὲ διαφαίνεται τοῦτο κατὰ τοὺς περατοὺς τοῦ ῥείθρου τόπους. τάχα δέ φασι Θρύον μὲν εἰρησθαι τὸν πόρον, εὐκτιτον δ' Αἶπυ τὸ
 10 Ἐπιτάλιον· ἔστι γὰρ ἐρυμνὸν φύσει· καὶ γὰρ ἐν ἄλλοις αἰπεῖαν κολώνην λέγει, ἔστι δέ τις Θρυόεσσα πό-
 „λις, αἰπεῖα κολώνη, τηλοῦ ἐπ' Ἀλφειῷ, πυμάτη Πύ-
 „λου ἡμαθόεντος.“

Ὁ δὲ Κυπαρισσήεις ἔστι μὲν περὶ τὴν πρότερον 25
 15 Μακιστίαν, ἥνικα καὶ πέραν τῆς Νέδας ἔτι ἦν Μακιστία, ἀλλ' οὐκ οἰκεῖται, ὥς οὐδὲ τὸ Μάκιστον· ἄλλη δ' ἐστὶν ἡ Μεσσηνιακὴ Κυπαρισσία, ὁμώνυμος μὲν οὗ, ὁμοίως δὲ νῦν ἀκείνῃ λέγεται Κυπαρισσία ἐνικῶς τε καὶ θηλυκῶς, ὁ δὲ ποταμὸς Κυπαρισσήεις. καὶ Ἀμ-
 20 φιγένεια δὲ τῆς Μακιστίας ἐστὶ περὶ τὸν Ὑψόεντα, ὅπου τὸ τῆς Ἀητοῦς ἱερὸν. τὸ δὲ Πτελεὸν κτίσμα μὲν γέγονε τῶν ἐκ Πτελεοῦ τοῦ Θετταλικοῦ ἐποικησάντων· λέγε-
 25 „ται γὰρ ἀκεῖ „Αγχιάλόν τ' Ἀντρώνα ἰδὲ Πτελεὸν λε- C.350
 „χεποῖν.“ ἔστι δὲ δρυμῶδες χωρίον ἀοίκητον, Πτελε-
 25 ἀσιον καλούμενον. Ἐλος δ' οἱ μὲν περὶ τὸν Ἀλφειὸν χώραν τινά φασιν, οἱ δὲ καὶ πόλιν, ὥς τὴν Λακωνικήν „Ἐλος τ' ἔφαλον πτολίεθρον.“ οἱ δὲ περὶ τὸ Ἀλώριον ἔλος, οὗ τὸ τῆς Ἐλείας Ἀρτέμιδος ἱερὸν τῆς ὑπὸ τοῖς Ἀρκάσιν· ἐκεῖνοι γὰρ ἔσχον τὴν ἱερωσύνην. Δώ-
 30 ριον δ' οἱ μὲν ὄρος, οἱ δὲ πεδῖον, [οἱ δὲ πολίδιον] φασίν· οὐδὲν δὲ νῦν δεικνύνται· ὅμως δ' ἐνιοὶ τὴν νῦν Ὀλουριν ἢ Ὀλουραν ἐν τῷ καλουμένῳ αὐλῶνι τῆς

Μεσσηνίας κειμένην Δώριον λέγουσιν. αὐτοῦ δέ που καὶ ἡ Οἰχαλία ἐστὶν ἡ τοῦ Εὐρύτου ἡ νῦν Ἀνδανία, πολίχνην Ἀρκαδικὸν ὁμώνυμον τῷ Θετταλικῷ καὶ τῷ Εὐβοικῷ· ὅθεν φησὶν ὁ ποιητὴς ἐς τὸ Δώριον ἀφικόμενον Θάμυριν τὸν Θραῖκα ὑπὸ Μουσῶν ἀφαιρεθῆναι 5 τὴν μουσικὴν.

- 26 Ἐκ δὲ τούτων δῆλον ὡς ἐφ' ἐκάτερα τοῦ Ἀλφειοῦ ἡ ὑπὸ Νέστορι χῶρα ἐστίν, ἣν πᾶσαν ὀνομάζει Πυλίων γῆν· οὐδαμοῦ δὲ ὁ Ἀλφειὸς οὔτε τῆς Μεσσηνίας ἐφάπτεται οὔτε τῆς κοίλης Ἡλίδος. ἐν ταύτῃ γὰρ τῇ χῶρᾳ 10 ἐστὶν ἡ πατρὶς τοῦ Νέστορος, ἣν φάμεν Τριφυλιακὸν Πύλον καὶ Ἀρκαδικὸν καὶ Λεπρεατικόν. καὶ γὰρ δὴ οἱ μὲν ἄλλοι Πύλοι ἐπὶ θαλάττῃ δείκνυνται, οὗτος δὲ πλείους ἢ τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ αὐτῆς, ὅπερ καὶ ἐκ τῶν ἐπῶν δῆλον. ἐπὶ τε γὰρ τοὺς Τηλεμάχου ἐταίρους 15 ἄγγελος πέμπεται πρὸς τὸ πλοῖον καλῶν ἐπὶ ξενίαν, ὅτε Τηλέμαχος κατὰ τὴν ἐκ Σπάρτης ἐπάνοδον τὸν Πεισίστρατον οὐκ ἔῃ πρὸς τὴν πόλιν ἐλαύνειν, ἀλλὰ παρατρέψαντα ἐπὶ [τὴν] ναῦν σπεύδειν, ὡς οὐ τὴν αὐτὴν οὔσαν ἐπὶ τὴν πόλιν καὶ τὸν ὄρμον. ὅτε ἀπόπλους 20 τοῦ Τηλεμάχου οὕτως ἂν οἰκείως λέγοιτο „βὰν δὲ παρὰ „Κροουνούς καὶ Χαλκίδα καλλιρέεθρον. δύετό τ' ἡέλιος, σκιοῶντό τε πᾶσαι ἀγνυαί· ἡ δὲ Φεὰς ἐπέβαλλεν, „ἀγαλλομένη Διὸς οὔρῳ, ἡδὲ παρ' Ἡλίδι διαν, ὅθι „κρατέουσιν Ἐπειοί.“ μέχρι μὲν δὴ δεῦρο πρὸς τὴν 25 ἄρκτον ὁ πλοῦς, ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ πρὸς ἕω μέρος ἐπιστρέφει. παρήσει δὲ τὸν εὐθύν πλοῦν ἡ ναῦς καὶ τὸν ἐξ ἀρχῆς καὶ τὸν εἰς Ἰθάκην διὰ τὸ τοὺς μνηστῆρας ἐκεῖ τὴν ἐνέδραν θέσθαι „ἐν πορθμῷ Ἰθάκης τε Σάμιοιό τε“ ἐνθεν δ' αὖ νήσοισιν ἐπιπροέηκε θοῇσι.“ 30 0.351 θοὰς δὲ εἶρκε τὰς ὀξείας· τῶν Ἐχινάδων δ' εἰσὶν αὖται, πλησιάζουσιν τῇ ἀρχῇ τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου

καὶ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Ἀχελώου. παραλλάξας δὲ τὴν Ἰθάκην, ὥστε κατὰ νότου γενέσθαι, κάμπτει πάλιν πρὸς τὸν οἰκείον δρόμον τὸν μεταξὺ τῆς Ἀκαρνανίας καὶ τῆς Ἰθάκης, καὶ κατὰ θάτερα μέρη τῆς νήσου ποιεῖται τὴν καταγωγὴν, οὐ κατὰ τὸν πορθμὸν τὸν Κεφαλληνιακόν, ὃν ἐφρούρουν οἱ μνηστῆρες.

Εἰ γοῦν τὸν Ἠλιακὸν Πύλον εἶναι τις τὸν Νέστο- 27
ρος ἐπινοήσειεν, οὐκ ἂν οἰκείως λέγοιτο ἡ ἐντεῦθεν ἀναχθεῖσα ναῦς παρὰ Κρουνοὺς ἐνεχθῆναι καὶ Χαλ-
10 κίδα μέχρι δύσεως, εἴτα Φεαῖς ἐπιβάλλειν νύκτωρ, καὶ τότε τὴν Ἠλείαν παραπλεῖν· οὔτοι γὰρ οἱ τόποι πρὸς νότον τῆς Ἠλείας εἰσὶ, πρῶται μὲν αἱ Φεαί, εἶθ' ἡ Χαλκίς, εἶθ' οἱ Κρουνοί, εἶθ' ὁ Πύλος ὁ Τριφυλιακὸς καὶ τὸ Σαμικόν. τῷ μὲν οὖν πρὸς νότον πλέοντι ἐκ τοῦ
15 Ἠλιακοῦ Πύλου οὗτος ἂν ὁ πλοῦς εἴη· τῷ δὲ πρὸς ἄρκτον, ὅπου ἐστὶν ἡ Ἰθάκη, ταῦτα μὲν πάντα ὀπίσω λείπεται, αὐτὴ δ' ἡ Ἠλεία παραπλευστέα ἦν, καὶ πρὸ δύσεώς γε· ὁ δὲ φησι μετὰ δύσιν. καὶ μὴν εἰ καὶ πάλιν ὑπόθοιτό τις τὸν Μεσσηνιακὸν Πύλον καὶ τὸ Κορυ-
20 φάσιον ἀρχὴν τοῦ παρὰ Νέστορος πλοῦ, πολὺ ἂν εἴη τὸ διάστημα καὶ πλέονος χρόνου. αὐτὸ γοῦν τὸ ἐπὶ τὸν Τριφυλιακὸν Πύλον καὶ τὸ Σαμιακὸν ποσείδιον τετρακοσίων ἐστὶ σταδίων· καὶ ὁ παράπλους [οὐ] παρὰ Κρουνοὺς καὶ Χαλκίδα καὶ Φεάν, ἀδόξων ποταμῶν
25 ὀνόματα μᾶλλον δὲ ὀχετῶν, ἀλλὰ παρὰ τὴν Νέδαν πρῶτον, εἴτ' Ἀκίδωνα, εἴτα τὸν Ἀλφειὸν καὶ τόπους τούτων τοὺς μεταξὺ· ὕστερον δ', εἰ ἄρα, κἀκείνων ἐχρῆν μνησθῆναι· καὶ γὰρ παρ' ἐκείνους ὑπῆρχεν ὁ πλοῦς.

30 Καὶ μὴν ἢ γε τοῦ Νέστορος διήγησις, ἣν διατίθε- 28
ται πρὸς Πάτροκλον περὶ τοῦ γενομένου τοῖς Πυλίοις πρὸς Ἠλείους πολέμου, συνηγορεῖ τοῖς ὑφ' ἡμῶν ἐπι-

χειρουμένοις, ἂν σκοπῇ τις τὰ ἔπη. φησὶ γὰρ ἐν αὐ-
 τοῖς, ὅτι πορθήσαντος Ἡρακλέους τὴν Πυλίαν ὥστε
 τὴν νεότητα ἐκλειφθῆναι πᾶσαν, δῶδεκα δὲ παίδων
 ὄντων τῷ Νηλεῖ, μόνον αὐτῷ περιγενέσθαι τὸν Νέ-
 στορα νέον τελέως· καταφρονήσαντες δ' οἱ Ἐπειοὶ τοῦ 5
 Νηλέως διὰ γῆρας καὶ ἐρημίαν ὑπερηφάνως καὶ ὑβρι-
 στικῶς ἐχρῶντο τοῖς Πυλίοις. ἀντὶ τούτων οὖν ὁ Νέ-
 στωρ συναγαγὼν τοὺς οἰκείους ὅσους οἶός τε ἦν ἐπελ-
 θεῖν φησιν ἐπὶ τὴν Ἥλειαν, καὶ περιελάσαι παμπόλλην
 λείαν „πεντήκοντα βοῶν ἀγέλας, τόσα πῶσα οἰῶν, 10
 „τόσσα συῶν συβόσια,“ τοσαῦτα δὲ καὶ αἰπόλια, „ἱπ-
 πους δὲ ξανθὰς ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα,“ ὑποπάλους
 C.352 τὰς πλείστας. „καὶ τὰ μὲν ἡλασάμεσθα Πύλον“ φησὶ
 „Νηληΐον εἴσω, ἐννύχιοι προτὶ ἄστν,“ ὥς μεθ' ἡμέραν
 μὲν τῆς λεηλασίας γενομένης καὶ τῆς τροπῆς τῶν ἐκ- 15
 βοηθησάντων, ὅτε κτανεῖν λέγει τὸν Ἴτυμονέα, νύ-
 κτωρ δὲ τῆς ἀφόδου γενομένης ὥστ' ἐννυχίους πρὸς
 τῷ ἄστει γενέσθαι· περὶ δὲ τὴν διανομὴν καὶ θυσίαν
 ὄντων οἱ Ἐπειοὶ τῇ τρίτῃ τῶν ἡμερῶν κατὰ πλη-
 θος ἀθροισθέντες πεξοί τε καὶ ἱππεῖς ἀντεπεξῆλθον 20
 καὶ τὸ Θρόον ἐπὶ τῷ Ἀλφειῷ κείμενον περιεστρατοπέ-
 δευσαν. αἰσθόμενοι δ' εὐθύς οἱ Πύλιοι βοηθεῖν ὄρ-
 μησαν· νυκτερεύσαντες δὲ περὶ τὸν Μινυήιον ποτα-
 μὸν ἐγγύθεν Ἀρρήνης, ἐντεῦθεν ἐνδιοὶ πρὸς τὸν Ἀλ-
 φειὸν ἀφικνοῦνται· τοῦτο δ' ἐστὶ κατὰ μεσημβρίαν· 25
 θύσαντες δὲ τοῖς θεοῖς καὶ νυκτερεύσαντες ἐπὶ τῷ πο-
 ταμῷ συμβάλλουσιν εἰς μάχην εὐθύς ἔωθεν· λαμπρᾶς
 δὲ τῆς τροπῆς γενομένης οὐκ ἐπαύσαντο διώκοντές
 τε καὶ κτείνοντες πρὶν Βουπρασίου ἐπέβησαν „πέτρης
 „τ' Ὠλενίης καὶ Ἀλεισίου ἐνθα κολώνη κέκληται, ὅθεν 30
 αὐτὶς ἀπέτραπε λαὸν Ἀθήνη.“ καὶ ὑποβάς „αὐτὰρ

„Αχαιοὶ ἄψ ἀπὸ Βουπρασίου Πύλονδ' ἔχον ὠκέας ἵπ-
πους.“

Ἐκ τούτων δὴ πῶς ἂν ἦ τὸν Ἡλιακὸν Πύλον ὑπο- 29
λάβοι τις ἢ τὸν Μεσσηνιακὸν λέγεσθαι; τὸν μὲν Ἡλια-
5 κόν, ὅτι τούτου πορθουμένου συνεπορθεῖτο καὶ ἡ τῶν
Ἐπειῶν ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους· αὕτη δ' ἐστὶν ἡ Ἠλεία.
πῶς οὖν ἤμελλον οἱ συμπεπορθημένοι καὶ ὁμόφυλοι
τοιαύτην ὑπερφηφανίαν καὶ ὕβριν κτήσασθαι κατὰ τῶν
συναδικηθέντων; πῶς δ' ἂν τὴν οἰκείαν κατέτρεχον
10 καὶ ἐλεηλάτουν; πῶς δ' ἂν ἅμα καὶ Αὐγέας ἦρχε τῶν
αὐτῶν καὶ Νηλεὺς ἐχθροὶ ὄντες ἀλλήλων; εἶπε τῷ
Νηλεῖ „χρεῖος μὲγ' ὀφείλειτ' ἐν Ἡλιδι δίη, τέσσαρες
„ἀθλοφόροι ἵπποι αὐτοῖσιν ὄχεςφιν, ἐλθόντες μετ'
„ἄεθλα· περὶ τρίποδος γὰρ ἔμελλον θεύσεσθαι· τοὺς
15 „δ' αὐτῷ ἀναξ ἀνδρῶν Αὐγείας ἀσχεθε, τὸν δ' ἐλατῆρ'
„ἀφίει.“ εἰ δ' ἐνταῦθα ᾧκει ὁ Νηλεὺς, ἐνταῦθα καὶ
ὁ Νέστωρ ἐπῆρχε. πῶς οὖν τῶν μὲν Ἠλείων καὶ Βου-
πρασίων „τέσσαρες ἄρχοι ἔσαν, δέκα δ' ἀνδρὶ ἐκάστω
„νῆες ἔποντο θοαί, πολέες δ' ἔμβαινον Ἐπειοί;“ εἰς
20 τέτταρα δὲ καὶ ἡ χώρα διήρητο, ὣν οὐδενὸς ἐπῆρχεν ὁ
Νέστωρ, „οἳ δὲ Πύλον τ' ἐνέμουτο καὶ Ἀργήνην ἐρα-
τεινήν“ καὶ τὰ ἐξῆς τὰ μέχρι Μεσσήνης; οἱ δὲ δὴ ἀν-
τεπεξιόντες Ἐπειοὶ τοῖς Πυλίοις πῶς ἐπὶ τὸν Ἀλφειὸν
ἐξορμῶσι καὶ τὸ Θούριον; πῶς δ' ἐκεῖ τῆς μάχης γενομέ-
25 νης τρεφθέντες ἐπὶ Βουπρασίου φεύγουσι; πάλιν δ', C.353
εἰ τὸν Μεσσηνιακὸν Πύλον ἐπόρθησεν ὁ Ἡρακλῆς,
πῶς οἱ τοσοῦτον ἀφεστῶτες ὕβριζον εἰς αὐτούς, καὶ ἐν
συμβολαίοις ἦσαν πολλοῖς, καὶ ταῦτ' ἀπεστέρουσαν χρεο-
κοποῦντες, ὥστε διὰ ταῦτα συμβῆναι τὸν πόλεμον;
30 πῶς δὲ ἐπὶ τὴν λεηλασίαν ἐξιὼν Νέστωρ τοσαύτην πε-
ριελάσας λείαν συῶν τε καὶ προβάτων, ὣν οὐδὲν ὠκυ-
πορεῖν οὐδὲ μακροπορεῖν δύναται, πλειόνων ἢ χιλίων

σταδίων ὁδὸν διήνυσεν εἰς τὴν πρὸς τῷ Κορυφασίῳ Πύλον, οἱ δὲ τρίτῳ ἡματι πάντες ἐπὶ τὴν Θρουέεσαν καὶ τὸν ποταμὸν τὸν Ἀλφειὸν ἤκουσι πολιορκήσουτες τὸ φρούριον; πῶς δὲ ταῦτα τὰ χωρία προσήκοντα ἦν τοῖς ἐν τῇ Μεσσηνίᾳ δυναστεύουσιν ἐχόντων Καυκῶ- 5 νων καὶ Τριφυλίων καὶ Πισατῶν; τὰ δὲ Γέρηνα ἢ τὴν Γερηνίαν (ἀμφοτέρως γὰρ λέγεται) τάχα μὲν ἐπίτηδες ὠνόμασάν τινες· δύναται δὲ καὶ κατὰ τύχην οὕτως ὠνομάσθαι τὸ χωρίον. τὸ δ' ὄλον, τῆς Μεσσηνίας ὑπὸ Μενελάῳ τεταγμένης, ὅφ' ὃ καὶ ἡ Λακωνικὴ ἐτέτακτο 10 (ὥς δῆλον ἔσται καὶ ἐκ τῶν ὕστερον), καὶ τοῦ μὲν Παμισοῦ ῥέοντος διὰ ταύτης καὶ τοῦ Νέδωνος, Ἀλφειοῦ δ' οὐδαμῶς „ὅς τ' εὐρὺ ῥέει Πυλίων διὰ γαίης,“ ἣς ἐπῆρχεν ὁ Νέστωρ, τίς ἂν γένοιτο πιθανὸς λόγος εἰς τὴν ἀλλοτριὰν ἀρχὴν ἐκβιβάζων τὸν ἄνδρα, ἀφαιρού- 15 μενος δὲ τὰς συγκαταλεγείσας αὐτῷ πόλεις * πάνθ' ὑπ' ἐκείνῳ ποιῶν;

- 30 Λοιπὸν δ' ἐστὶν εἰπεῖν περὶ τῆς Ὀλυμπίας καὶ τῆς εἰς τοὺς Ἡλείους ἀπάντων μεταπτώσεως. ἔστι δ' ἐν τῇ Πισατίδι τὸ ἱερὸν σταδίου τῆς Ἥλιδος ἐλάττους ἢ τρι- 20 ακοσίους διέχον· πρόκειται δ' ἄλλος ἀγριελαίων ἐν ᾧ τὸ στάδιον· παραρρεῖ δ' ὁ Ἀλφειὸς ἐκ τῆς Ἀρκαδίας ῥέων εἰς τὴν Τριφυλιακὴν θάλατταν μεταξὺ δύσεως καὶ μεσημβρίας. τὴν δ' ἐπιφάνειαν ἔσχεν ἕξ ἀρχῆς μὲν διὰ τὸ μαντεῖον τοῦ Ὀλυμπίου Διός· ἐκείνου δ' ἐκλει- 25 φθέντος οὐδὲν ἦττον συνέμεινεν ἡ δόξα τοῦ ἱεροῦ, καὶ τὴν αὔξησιν ὅσῃν ἴσμεν ἔλαβε διὰ τε τὴν πανήγυριν καὶ τὸν ἀγῶνα τὸν Ὀλυμπιακόν, στεφανίτην τε καὶ ἱερὸν νομισθέντα, μέγιστον τῶν πάντων. ἐκοσμήθη δ' ἐκ τοῦ πλήθους τῶν ἀναθημάτων, ἅπερ ἐκ πάσης 30 ἀνελίθετο τῆς Ἑλλάδος· ὧν ἦν καὶ ὁ χρυσοῦς σφυρήλατος Ζεὺς, ἀνάθημα Κυψέλου τοῦ Κορινθίων τυράν-

νου. μέγιστον δὲ τούτων ὑπῆρξε τὸ τοῦ Διὸς ξοάνου, ὃ ἐποίει Φειδίας Χαρμίδου Ἀθηναῖος ἐλεφάντινον, τη-
 λικοῦτον τὸ μέγεθος ὡς καίπερ μεγίστου ὄντος τοῦ
 νεῷ δοκεῖν ἀστοχῆσαι τῆς συμμετρίας τὸν τεχνίτην.
 5 καθήμενον ποιήσαντα, ἀπτόμενον δὲ σχεδόν τι τῇ κο-
 ρυφῇ τῆς ὀροφῆς ὥστ' ἔμφασιν ποιεῖν, ἐὰν ὀρθὸς γέ-
 νηται διαναστάς, ἀποστεγάσειν τὸν νεῶν. ἀνέγραψαν C.354
 δέ τινες τὰ μέτρα τοῦ ξοάνου, καὶ Καλλίμαχος ἐν λάμ-
 βῳ τινὶ ἐξεῖπε. πολλὰ δὲ συνέπραξε τῷ Φειδίᾳ Πάναι-
 10 νος ὁ ζωγράφος, ἀδελφιδουὺς αὖν αὐτοῦ καὶ συνεργολά-
 βος, πρὸς τὴν τοῦ ξοάνου διὰ τῶν χρωμάτων κόσμη-
 σιν καὶ μάλιστα τῆς ἐσθῆτος. δέκνυνται δὲ καὶ γρα-
 φαὶ πολλαὶ τε καὶ θαυμασταὶ περὶ τὸ ἱερὸν ἐκείνου
 ἔργα. ἀπομνημονεύουσι δὲ τοῦ Φειδίου, διότι πρὸς
 15 τὸν Πάναινον εἶπε πυνθανόμενον πρὸς τί παρὰδειγμα
 μέλλοι ποιῆσειν τὴν εἰκόνα τοῦ Διός, ὅτι πρὸς τὴν
 Ὀμήρου δι' ἐπῶν ἐκτεθεῖσαν τούτων „ἦ καὶ κυανέησιν
 „ἐπ' ὀφρύσι νεῦσε Κρονίων· ἀμβρόσια δ' ἄρα χαῖται
 „ἐπερρώσαντο ἄνακτος κρατὸς ἀπ' ἀθανάτοιο, μέγαν
 20 „δ' ἐλέλιξεν Ὀλυμπον.“ ἄξιοι δὲ μάλιστα τὴν αἰτίαν
 ἔχειν τῆς περὶ τὸ Ὀλυμπίασιν ἱερὸν μεγαλοπρεπείας
 τε καὶ τιμῆς Ἡεῖοι. κατὰ μὲν γὰρ τὰ Τρωικὰ καὶ ἔτι
 πρὸ τούτων οὐκ ἠνύχουν, ὑπὸ τε τῶν Πυλίων ταπει-
 νωθέντες καὶ ὑφ' Ἡρακλέους ὕστερον, ἥνίκα Ἀνγέας

20. post Ὀλυμπον: εἰρησθῆναι γὰρ μάλα δοκεῖ καλῶς ἔκ τε
 τῶν ἄλλων καὶ τῶν ὀφρύων, ὅτι προκαλεῖται τὴν διάνοιαν ὃ
 ποιητῆς ἀναξωγραφεῖν μέγαν τινὰ τύπον καὶ μεγάλην δύνα-
 μιν ἀξίαν τοῦ Διός, καθάπερ καὶ ἐπὶ τῆς Ἡρας, ἅμα φυ-
 λάττων τὸ ἐφ' ἐκατέρῳ πρέπον. ἔφη μὲν γὰρ „σεισατο δ' εἰνὶ
 „ἐπ' ἐκείνης συμβάν
 ἐπαντῆσαι ταῖς ὀφρύσι μό-
 νον νεύσαντος, συμπαθούσης δὲ τι καὶ τῆς κόμης· κομψῶς δ'
 εἴρηται καὶ τὸ ὃ τὰς τῶν θεῶν εἰκόνας ἢ μόνος ἰδὼν ἢ μόνος
 δειξάς.

ὁ βασιλεύων αὐτῶν κατελύθη. σημεῖον δέ· εἰς γὰρ τὴν Τροίαν ἐκεῖνοι μὲν τετταράκοντα ναῦς ἔστειλαν, Πύλιοι δὲ καὶ Νέστωρ ἐνενήκοντα. ὕστερον δὲ μετὰ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον συνέβη τάναντία. Αἰτωλοὶ γὰρ συγκατελθόντες τοῖς Ἡρακλείδαις μετὰ Ὀξύλου καὶ συνοικήσαντες Ἐπειοῖς κατὰ συγγένειαν παλαιὰν ἠϋξησαν τὴν κοίλην Ἥλιον καὶ τῆς τε Πισάτιδος ἀφείλοντο πολλήν, καὶ Ὀλυμπία ὑπ' ἐκείνοις ἐγένετο· καὶ δὴ καὶ ὁ ἀγὼν εὖρημά ἐστιν ἐκείνων ὁ Ὀλυμπιακός, καὶ τὰς Ὀλυμπιάδας τὰς πρώτας ἐκεῖνοι συνε- 10 τέλουν. ἑᾶσαι γὰρ δεῖ τὰ παλαιὰ καὶ περὶ τῆς κτίσεως C.355 τοῦ ἱεροῦ καὶ περὶ τῆς θέσεως τοῦ ἀγῶνος, τῶν μὲν ἓνα τῶν Ἰδαίων δακτύλων Ἡρακλέα λεγόντων ἀρχηγέτην τούτων, τῶν δὲ τὸν Ἀλκμήνης καὶ Διός, ὃν καὶ ἀγωνίσασθαι πρώτον καὶ νικῆσαι· τὰ γὰρ τοιαῦτα 15 πολλαχῶς λέγεται καὶ οὐ πάνυ πιστεύεται. ἐγγυτέρω δὲ πίστεως, ὅτι μέχρι τῆς ἑκτῆς καὶ εἰκοστῆς Ὀλυμπιάδος ἀπὸ τῆς πρώτης, ἐν ἣ Ῥόριος ἐνίκα στάδιον Ἡλεῖος, τὴν προστασίαν εἶχον τοῦ τε ἱεροῦ καὶ τοῦ ἀγῶνος Ἡλεῖοι. κατὰ δὲ τὰ Τρωικὰ ἢ οὐκ ἦν ἀγὼν 20 στεφανίτης ἢ οὐκ ἐνδοξος, οὐδ' οὗτος οὐτ' ἄλλος οὐδεὶς τῶν νῦν ἐνδόξων· οὐδὲ μέμνηται τούτων Ὀμηρος οὐδενός, ἀλλ' ἐτέρων τινῶν ἐπιταφίων. καίτοι δοκεῖ τισὶ τοῦ Ὀλυμπιακοῦ μεμνηθῆναι, ὅταν φῇ τὸν Αὐγέα ἀποστερεῖν τέσσαρας ἀθλοφόρους ἵππους, ἐλθόντας 25 μετ' ἅεθλα· φασὶ δὲ τοὺς Πισάτας μὴ μετασχεῖν τοῦ Τρωικοῦ πολέμου ἱεροὺς νομισθέντας τοῦ Διός. ἀλλ' οὐδ' ἢ Πισᾶτις ὑπὸ Αὐγέα τόθ' ὑπῆρχεν, ἐν ἣ ἐστι καὶ ἡ Ὀλυμπία, ἀλλ' ἢ Ἡλεία μόνον, οὐτ' ἐν Ἡλείᾳ συνετελέσθη ὁ Ὀλυμπιακὸς ἀγὼν οὐδ' ἅπαξ, ἀλλ' αἰεὶ 30 ἐν Ὀλυμπίᾳ. ὁ δὲ νῦν παρατεθεὶς ἐν Ἡλιδι φαίνεται γενόμενος, ἐν ἣ καὶ τὸ χρῆος ὠφείλετο „καὶ γὰρ τῷ χρῆος

„[μέγ’] ὀφείλετ’ ἐν Ἡλίδι δίη, τέσσαρες ἀθλοφόροι
ἵπποι.“ καὶ οὗτος μὲν οὐ στεφανίτης (περὶ τρίποδος
γὰρ ξμελλον θεύσεσθαι), ἐκείνος δέ. μετὰ [δὲ] τὴν
ἐκτὴν καὶ εἰκοστὴν Ὀλυμπιάδα οἱ Πισᾶται τὴν οἰκίαν
5 ἀπολαβόντες αὐτοὶ συνετέλουν, τὸν ἀγῶνα ὁρῶντες
εὐδοκιμοῦντα· χρόνοις δ’ ὕστερον μεταπεσοῦσης πάλ-
λιν τῆς Πισάτιδος εἰς τοὺς Ἡλείους μετέπεσεν εἰς αὐ-
τοὺς πάλιν καὶ ἡ ἀγωνοθεσία. συνέπραξαν δὲ καὶ οἱ
Λακεδαιμόνιοι μετὰ τὴν ἐσχάτην κατάλυσιν τῶν Μεσ-
10 σσηνίων συμμαχήσασιν αὐτοῖς τάναντία τῶν Νέστορος
ἀπογόνων καὶ τῶν Ἀρκάδων συμπολεμησάντων τοῖς
Μεσσηνίοις· καὶ ἐπὶ τοσοῦτόν γε συνέπραξαν ὥστε
τὴν χώραν ἅπασαν τὴν μέχρι Μεσσήνης Ἡλείαν ῥη-
θῆναι καὶ διαμεῖναι μέχρι νῦν, Πισατῶν δὲ καὶ Τρι-
15 φυλίων καὶ Κανκῶνων μηδ’ ὄνομα λειφθῆναι. καὶ
αὐτὸν δὲ τὸν Πύλον τὸν ἡμαθόεντα εἰς τὸ Λέπρειον
συνῳκισαν, χαριζόμενοι τοῖς Λεπρεάταις κρατήσασι
πολέμῳ, καὶ ἄλλας πολλὰς τῶν κατοικιῶν κατέσπασαν,
ὅσας γ’ ἑώρων αὐτοπραγεῖν ἐθελούσας, καὶ φόρους
20 ἐπράξαντο.

Διωνομάσθη δὲ ἡ Πισᾶτις τὸ μὲν πρῶτον διὰ 31
τοὺς ἡγεμόνας δυνηθέντας πλεῖστον, Οἰνόμαόν τε καὶ C.356
Πέλοπα τὸν ἐκείνον διαδεξάμενον καὶ τοὺς παῖδας αὐ-
τοῦ πολλοὺς γενομένους· καὶ ὁ Σαλμωνεύς δ’ ἐνταῦ-
25 θα βασιλεῦσαι λέγεται· εἰς γοῦν ὅκτῳ πόλεις μεριζο-
μένης τῆς Πισάτιδος, μία τούτων λέγεται καὶ ἡ Σαλ-
μώνη. διὰ ταῦτά τε δὴ καὶ [διὰ] τὸ ἱερὸν τὸ Ὀλυμπίᾳσι
διατεθρύληται σφόδρα ἡ χώρα. δεῖ δὲ τῶν παλαιῶν
ἱστοριῶν ἀκούειν οὕτως ὥς μὴ ὁμολογουμένων σφό-
30 δρα· οἱ γὰρ νεώτεροι πολλὰ καινίζουσιν, ὥστε καὶ τὰ-

ναντία λέγειν, οἷον τὸν μὲν *Αὐγέα*ν τῆς *Πισάτιδος* ἄρξαι τὸν δ' *Οἰνόμαον* καὶ τὸν *Σαλμωνέα* τῆς *Ἥλειας*. ἔνιοι δ' εἰς ταὐτὸ συνάγουσι τὰ ἔθνη. δεῖ δὲ τοῖς ὁμολογουμένοις ὥς ἐπὶ πολὺ ἀκολουθεῖν, ἐπεὶ οὐδὲ τοῦτομα τὴν *Πισάτιν* ἐτυμολογοῦσιν ὁμοίως· οἱ μὲν γὰρ ἀπὸ *Πίσσης* ὁμωνύμου τῇ κρήνῃ πόλεως, τὴν δὲ κρήνην *Πίσαν* εἰρησθαι, οἷον *πίστραν*, ὅπερ ἐστὶ ποτίστρα· τὴν δὲ πόλιν ἰδρυμένην ἐφ' ὕψους δεικνύουσι μεταξὺ δυεῖν ὄροϊν, *Ὀσσης* καὶ *Ὀλύμπου*, ὁμωνύμων τοῖς ἐν *Θετταλίᾳ*. τινὲς δὲ πόλιν μὲν οὐδεμίαν γερονέ-
ναι *Πίσαν* φασίν (εἶναι γὰρ ἂν μίαν τῶν ὀκτώ), κρήνην δὲ μόνην, ἣν νῦν καλεῖσθαι *Βῖσαν*, *Κικυσίου* πλησίον πόλεως μεγίστης τῶν ὀκτώ· *Στησίχορον* δὲ καλεῖν πόλιν τὴν χάραν *Πίσαν* λεγομένην, ὥς ὁ ποιητὴς τὴν *Ἀέσβον* *Μάκαρος* πόλιν. *Εὐριπίδης* δ' ἐν *Ἰωνί* „Εὐ-
βοί' Ἀθήναις ἐστὶ τις γείτων πόλις“ καὶ ἐν *Ῥαδ-
μάνθῳ* „οἱ γῆν ἔχουσ' *Εὐβοῖδα* πρόσχωρον πόλιν“ *Σοφοκλῆς* δ' ἐν *Μυσοῖς* „Ἀσία μὲν ἡ σύμπασα κλή-
ζεται, ξένε, πόλις δὲ *Μυσῶν* *Μυσία* προσήγορος.“
32 Ἡ δὲ *Σαλμώνη* πλησίον ἐστὶ τῆς ὁμωνύμου κρή-
νης ἐξ ἧς ῥεῖ ὁ *Ἐνιπεύς*. ἐμβάλλει δ' εἰς τὸν *Ἀλφειόν*.
τούτου δ' ἐρασθῆναι τὴν *Τυρώ* φασιν „ἡ ποταμοῦ
„ἡράσσαι“ *Ἐνιπῆος* θείοιο.“ ἐνταῦθα γὰρ βασιλεῦσαι
τὸν πατέρα αὐτῆς τὸν *Σαλμωνέα*, καθάπερ καὶ *Εὐρι-
πίδης* ἐν *Αἰόλῳ* φησί. ἐγγὺς δὲ τῆς *Σαλμώνης* *Ἡρά-*
κλεια, καὶ αὕτη μία τῶν ὀκτώ, διέχουσα περὶ τετταρά-
κοντα σταδίους τῆς *Ὀλυμπίας*, κειμένη δὲ παρὰ τὸν
Κυθήριον ποταμόν, οὗ τὸ τῶν *Ἰωνιάδων* νυμφῶν
ἱερὸν τῶν πεπιστευμένων *θεραπεύειν* νόσους τοῖς

21. post Ἀλφειόν· καλεῖται δὲ νῦν *Βαρνίχιος*. 25. post
φησί· τον δ' ἐν τῇ *Θετταλίᾳ*· ὅθεν φησὶν ὅτι ὁ *Ἐνιπεύς*
ὅθεν φησὶν ὅτι ὁ *Ἐνιπεύς* φέων δέχεται τὸν

ὑδασι. παρὰ δὲ τὴν Ὀλυμπίαν ἐστὶ καὶ ἡ Ἄρπινα, καὶ C.357
 αὕτη τῶν ὀκτώ, δι' ἧς ῥεῖ ποταμὸς Παρθενίας ὡς εἰς
 Ἡραίαν ἰόντων· αὐτοῦ δ' ἐστὶ καὶ τὸ Κικύσιον τῶν
 ὀκτὼ καὶ τὸ Δυσπόντιον κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν ἐξ Ἥλιδος
 5 εἰς Ὀλυμπίαν ἐν πεδίῳ κείμενον· ἐξελεῖφθη δέ, καὶ
 ἀπῆραν οἱ πλείους εἰς Ἐπίδαμνον καὶ Ἀπολλωνίαν· καὶ
 ἡ Φολόη δ' ὑπέρεκειται τῆς Ὀλυμπίας ἐγγυτάτω, ὅρος
 Ἀρκαδικόν, ὥστε τὰς ὑπωρείας τῆς Πισάτιδος εἶναι.
 καὶ πᾶσα δ' ἡ Πισᾶτις καὶ τῆς Τριφυλίας τὰ πλεῖστα
 10 ὁμορεῖ τῇ Ἀρκαδίᾳ· διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ἀρκαδικὰ εἶναι
 δοκεῖ τὰ πλεῖστα τῶν Πυλιακῶν ἐν καταλόγῳ φραζο-
 μένων χωρίων· οὐ μέντοι φασὶν οἱ ἔμπειροι· τὸν γὰρ
 Ἐρύμανθον εἶναι τὸν ὀρίζοντα τὴν Ἀρκαδίαν τῶν εἰς
 Ἀλφειὸν ἐμπιπτόντων ποταμῶν, ἔξω δ' ἐκείνου τὰ χω-
 15 ρία ἰδρῦσθαι ταῦτα.

Ἐφορος δέ φησιν Αἰτωλὸν ἐκπεσόντα ὑπὸ Σαλ- 33
 μωνέως τοῦ βασιλέως Ἐπειῶν τε καὶ Πισατῶν ἐκ τῆς
 Ἥλειας εἰς τὴν Αἰτωλίαν, ὀνομάσαι τε ἀφ' αὐτοῦ τὴν
 χώραν καὶ συνοικίσει τὰς αὐτόθι πόλεις· τούτου δ'
 20 ἀπόγονον ὑπάρξαντα Ὀξύλον φίλον τοῖς περὶ Τήμε-
 νον Ἡρακλείδαις ἡγήσασθαι τε τὴν ὁδὸν κατιοῦσιν εἰς
 τὴν Πελοπόννησον καὶ μερίσαι τὴν πολεμίαν αὐτοῖς
 χώραν καὶ τᾶλλα ὑποθέσθαι τὰ περὶ τὴν κατάκτησιν
 τῆς χώρας, ἀντὶ δὲ τούτων λαβεῖν χάριν τὴν εἰς τὴν
 25 Ἥλειαν ἀθοδον, προγονικὴν οὖσαν, κατελθεῖν δὲ
 ἀθροίσαντα στρατιὰν ἐκ τῆς Αἰτωλίας ἐπὶ τοὺς κατέ-
 χοντας Ἐπειοὺς τὴν Ἥλιν· ἀπαντησάντων δὲ τῶν
 Ἐπειῶν μεθ' ὀπλων, ἐπειδὴ ἀντίπαλοι ἦσαν αἱ δυνά-
 μεις, εἰς μονομαχίαν προελθεῖν κατὰ ἔθος τι παλαιὸν

3. post ἰόντων: ἡ δὲ Ἡραία ἐστὶ τῆς Ἀρκαδίας· ὑπέρεκει-
 ται δὲ τῆς Δυμαίας καὶ Βουπρασίου καὶ Ἥλιδος· ἅπερ ἐστὶ
 πρὸς ἄρκτον τῇ Πισάτιδι.

τῶν Ἑλλήνων Πυραΐχμην Αἰτωλὸν Δέγμενόν τ' Ἐπειόν,
 τὸν μὲν Δέγμενον μετὰ τόξου ψιλόν, ὥς περιεσόμενον
 ῥαδίως ὀπλίτου διὰ τῆς ἐκηβολίας, τὸν δὲ μετὰ σφεν-
 δόνης καὶ πήρας λίθων, ἐπειδὴ κατέμαθε τὸν δόλον·
 τυχεῖν δὲ νεωστὶ ὑπὸ τῶν Αἰτωλῶν εὗρημένον τὸ τῆς 5
 σφενδόνης εἶδος· μακροβολωτέρας δ' οὐσῆς τῆς σφεν-
 δόνης πεσεῖν τὸν Δέγμενον, καὶ κατασχεῖν τοὺς Αἰ-
 τωλοὺς τὴν γῆν ἐκβαλόντας τοὺς Ἐπειοὺς· παραλα-
 βεῖν δὲ καὶ τὴν ἐπιμέλειαν τοῦ ἱεροῦ τοῦ Ὀλυμπίασιν,
 ἣν εἶχον οἱ Ἀχαιοί· διὰ δὲ τὴν τοῦ Ὁξύλου φιλίαν πρὸς 10
 τοὺς Ἡρακλείδας συννομολογηθῆναι ῥαδίως ἐκ πάντων
 C.358 μεθ' ὅρκου τὴν Ἠλείαν ἱερὰν εἶναι τοῦ Διός, τὸν δ'
 ἐπιόντα ἐπὶ τὴν χώραν ταύτην μεθ' ὀπλων ἐναγῇ εἶναι,
 ὥς δ' αὐτως ἐναγῇ καὶ τὸν μὴ ἐπαμύνοντα εἰς δύνα-
 μιν· ἐκ δὲ τούτου καὶ τοὺς κτίσαντας τὴν Ἠλείων πό- 15
 λιν ὕστερον ἀτείχιστον εἶσαι, καὶ τοὺς δι' αὐτῆς τῆς
 χώρας ἰόντας στρατοπέδῳ τὰ ὅπλα παραδόντας ἀπο-
 λαμβάνειν μετὰ τὴν ἐκ τῶν ὄρων ἐκβασιν· Ἰφριτόν τε
 θεῖναι τὸν Ὀλυμπικὸν ἀγῶνα, ἱερῶν ὄντων τῶν Ἠλεί-
 ων. ἐκ δὴ τῶν τοιούτων αὐξήσιν λαβεῖν τοὺς ἀνθρώ- 20
 πους· τῶν γὰρ ἄλλων πολεμούντων ἀεὶ πρὸς ἀλλή-
 λους, μόνοις ὑπάρξαι πολλὴν εἰρήνην, οὐκ αὐτοῖς μό-
 νον ἀλλὰ καὶ τοῖς ξένοις, ὥστε καὶ εὐανδρῆσαι μά-
 λιστα πάντων παρὰ τοῦτο. Φεῖδωνα δὲ τὸν Ἀργεῖον,
 δέκατον μὲν ὄντα ἀπὸ Τημένου, δυνάμει δ' ὑπερβε- 25
 βλημένον τοὺς κατ' αὐτόν, ἀφ' ἧς τὴν τε λῆξιν ὅλην
 ἀνέλαβε τὴν Τημένου διεσπασμένην εἰς πλείω μέρη,
 καὶ μέτρα ἐξεῦρε τὰ Φειδῶνια καλούμενα καὶ σταθ-
 μούς καὶ νόμισμα κεχαραγμένον τό τε ἄλλο καὶ τὸ ἄρ-
 γυροῦν, πρὸς τούτοις ἐπιθέσθαι καὶ ταῖς ὑφ' Ἡρα- 30
 κλέους αἰρεθείσαις πόλεσι, καὶ τοὺς ἀγῶνας ἀξιοῦν
 τιθεῖναι αὐτόν, οὓς ἐκείνος ἔσθηκε· τούτων δὲ εἶναι καὶ

τὸν Ὀλυμπικόν· καὶ δὴ βιασάμενον ἐπελθόντα θείναι αὐτόν, οὔτε τῶν Ἑλλείων ἐχόντων ὄπλα ὥστε κωλύειν διὰ τὴν εἰρήνην τῶν τε ἄλλων κρατουμένων τῇ δυναστείᾳ· οὐ μὴν τοὺς γε Ἑλλείους ἀναγράφαι τὴν θέσιν 5 ταύτην, ἀλλὰ καὶ ὄπλα κτήσασθαι διὰ τοῦτο καὶ ἀρξάμενους ἐπικουρεῖν σφίσιν αὐτοῖς· συμπράττειν δὲ καὶ Λακεδαιμονίους, εἴτε φθονήσαντας τῇ διὰ τὴν εἰρήνην εὐτυχίᾳ εἴτε καὶ συνεργοὺς ἕξειν νομίσαντας πρὸς τὸ καταλῦσαι τὸν Φεῖδωνα, ἀφρηγμένον αὐτοὺς τὴν ἡγε- 10 μονίαν τῶν Πελοποννησίων, [ἣν ἐκεῖνοι προεκέκτηντο· καὶ δὴ καὶ σὺγκαταλῦσαι τὸν Φεῖδωνα· τοὺς δὲ σὺγκατασκευάσαι τοῖς Ἑλλείοις τὴν τε Πισᾶτιν καὶ τὴν Τριφυλίαν. ὁ δὲ παράπλους ἅπας ὁ τῆς νῦν Ἑλλείας μὴ κατακολπίζοντι χιλίων ὁμοῦ καὶ διακοσίων ἐστὶ 15 σταδίων. ταῦτα μὲν περὶ τῆς Ἑλλείας.

Ἡ δὲ Μεσσηνία συνεχῆς ἐστὶ τῇ Ἑλλείᾳ, περινεύ- 4
ουσα τὸ πλεόν ἐπὶ τὸν νότον καὶ τὸ Αἰβυκὸν πέλαγος. αὕτη δ' ἐπὶ μὲν τῶν Τρωικῶν ὑπὸ Μενελάῳ ἐτέτακτο, μέρος οὖσα τῆς Λακωνικῆς, ἐκαλεῖτο δ' ἡ χώρα Μεσ- 20 σσηνή· τὴν δὲ νῦν ὀνομαζομένην πόλιν Μεσσήνην, ἥς ἀκρόπολις ἡ Ἰθώμη ὑπῆρξεν, οὕτω συνέβαινεν ἐκτίσθαι· μετὰ δὲ τὴν Μενελάου τελευτήν, ἐξασθενησάν-C.359
των τῶν διαδεξαμένων τὴν Λακωνικὴν, οἱ Νηλεῖδαι τῆς Μεσσηνίας ἐπῆρχον. καὶ δὴ κατὰ τὴν τῶν Ἑρα- 25 κλειδῶν ἀάθοδον καὶ τὸν τότε γεννηθέντα μερισμὸν τῆς χώρας ἦν Μέλανθος βασιλεὺς τῶν Μεσσηνίων καθ' αὐτοὺς ταπτομένων, πρότερον δ' ὑπήκοοι ἦσαν τοῦ Μενελάου. σημεῖον δέ· ἐκ γὰρ τοῦ Μεσσηνιακοῦ κόλπου καὶ τοῦ συνεχοῦς Ἀσιναίου λεγομένου ἀπὸ τῆς 30 Μεσσηνιακῆς Ἀσίνης αἱ ἑπτὰ ἦσαν πόλεις, αἷς ὑπέσχετο δώσειν ὁ Ἀγαμέμνων τῷ Ἀχιλλεῖ „Καρδαμύλην Ἐνό-
,,πην τε καὶ Ἰρὴν ποιήεσσαν Φηράς τε ξαθίας ἡδ' Ἄν-

„θειαν βαθύλειμον καλήν τ' Αἴπειαν καὶ Πήδασον
 „ἀμπελόεσσας,“ οὐκ ἂν τάς γε μὴ προσηκούσας μήτ'
 αὐτῷ μήτε τῷ ἀδελφῷ ὑποσχόμενος. ἐκ δὲ τῶν Φηρῶν
 καὶ συστρατεύσαντας τῷ Μενελάῳ δημοὶ ὁ ποιητής,
 τὸν δὲ [Οἰτυλον] καὶ συγκαταλέγει τῷ Λακωνικῷ κα- 5
 ταλόγῳ, [ιδρυμένον] ἐν τῷ Μεσσηνιακῷ κόλπῳ. ἔστι
 δ' ἡ Μεσσήνη μετὰ Τριφυλίαν· κοινὴ δ' ἐστὶν ἀμφοῖν
 ἄκρα, μεθ' ἣν τὸ Κορυφάσιον· ὑπέρκειται δ' ὄρος ἐν
 ἑπτὰ σταδίοις τὸ Αἰγαλέον τούτου τε καὶ τῆς θαλάττης.

- 2 Ἡ μὲν οὖν παλαιὰ Πύλος ἡ Μεσσηνιακὴ ὑπὸ τῷ 10
 Αἰγαλέῳ πόλις ἦν, κατεσπασμένης δὲ ταύτης ἐπὶ τῷ
 Κορυφασίῳ τινὲς αὐτῶν ᾤκησαν· προσέκτισαν δ' αὐ-
 τήν Ἀθηναῖοι τὸ δεύτερον ἐπὶ Σικελίαν πλέοντες μετ'
 Εὐρυμέδοντος ἐπὶ Στρατοκλέους, ἐπιτείχισμα τοῖς Λα-
 κεδαιμονίοις. αὐτοῦ δ' ἐστὶ καὶ ἡ Κυπαρισσία ἡ Μεσ- 15
 σηνιακὴ καὶ ἡ καὶ ἡ προκειμένη πλησίον
 τοῦ Πύλου Σφαγία νῆσος, ἡ δ' αὐτὴ καὶ Σφακτηρία
 λεγομένη, περὶ ἣν ἀπέβαλον ξωγρία Λακεδαιμόνιοι
 τριακοσίους ἐξ ἑαυτῶν ἄνδρας ὑπ' Ἀθηναίων ἐκπο-
 λιορκηθέντας. κατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην τῶν Κυ- 20
 παρισσιέων πελάγαι πρόκεινται δύο νῆσοι προσαγο-
 ρεύομεναι Στροφάδες, τετρακοσίους ἀπέχουσαι μά-
 λιστα πῶς τῆς ἡπείρου σταδίου ἐν τῷ Λιβυκῷ καὶ με-
 σημβρινῷ πελάγει. φησὶ δὲ Θουκυδίδης ναύσταθμον
 ὑπάρχει τῶν Μεσσηνίων ταύτην τὴν Πύλον· διέχει 25
 δὲ Σπάρτης τετρακοσίους.

- 3 Ἐξῆς δ' ἐστὶ Μεθώνη· ταύτην δ' εἶναί φασι τὴν
 ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ Πήδασον προσαγορευομένην, μίαν
 τῶν ἑπτὰ ὧν ὑπέσχετο τῷ Ἀχιλλεῖ ὁ Ἀγαμέμνων· ἐν-
 ταῦθα Ἀγρίππας τὸν τῶν Μαυρουσίων βασιλέα τῆς 30

Ἀντωνίου στάσεως ὄντα Βόρον κατὰ τὸν πόλεμον τὸν Ἀκτιακὸν διέφθειρε, λαβὼν ἐξ ἐπίπλου τὸ χωρίον.

Τῇ δὲ Μεθώνῃ συνεχῆς ἐστὶν ὁ Ἀκρίτας, ἀρχὴ 4 τοῦ Μεσσηνιακοῦ κόλπου· καλοῦσι δ' αὐτὸν καὶ Ἀσιν-
5 ναῖον ἀπὸ Ἀσίνης, πολέχνης πρώτης ἐν τῷ κόλπῳ, ὁμωνύμου τῇ Ἑρμιονικῇ. αὕτη μὲν οὖν ἡ ἀρχὴ πρὸς C.360
δύσιν τοῦ κόλπου ἐστὶ, πρὸς ἑω δὲ αἱ καλούμεναι Θυ-
ρίδες, ὅμοροι τῇ νῦν Λακωνικῇ τῇ κατὰ Κιναίθιον καὶ
Ταίναρον. μεταξὺ δὲ ἀπὸ τῶν Θυρίδων ἀρξαμένοις
10 Οἰτυλὸς ἐστὶ· καλεῖται δ' ὑπὸ τινων Βοίτυλος· εἴτα
Λεῦκτρον τῶν ἐν τῇ Βοιωτίᾳ Λεύκτρων ἄποικος, εἴτ'
ἐπὶ πέτρας ἐρυμνῆς ἴδρυται Καρδαμύλη, εἴτα Φηραὶ
ὅμορος Θουρίᾳ καὶ Γερήνοις, ἀφ' οὗ τόπου Γερήνιον
τὸν Νέστορα κληθῆναι φασὶ διὰ τὸ ἐνταῦθα σωθῆναι
15 αὐτόν, ὡς προειρήκαμεν. δεικνυνται δ' ἐν τῇ Γερηνίᾳ
Τρικκαίου ἱερὸν Ἀσκληπιοῦ, ἀφίδρυμα τοῦ ἐν τῇ Θε-
ταλικῇ Τρίκκῃ. οἰκίσαι δὲ λέγεται Πέλοψ τό τε Λεῦ-
κτρον καὶ Χαράδραν καὶ Θαλάμας, τοὺς νῦν Βοιωτοὺς
καλουμένους, τὴν ἀδελφὴν Νιόβην ἐκδοὺς Ἀμφίονι
20 καὶ ἐκ τῆς Βοιωτίας ἀγαγόμενός τινας. παρὰ δὲ Φηρὰς
Νέδων ἐκβάλλει ρέων διὰ τῆς Λακωνικῆς, ἕτερος ὢν
τῆς Νέδας· ἔχει δ' ἱερὸν ἐπίσημον Ἀθηνᾶς Νεδουσίας.
*καὶ ἐν Ποιαέσση δ' ἐστὶν Ἀθηνᾶς Νεδουσίας ἱερὸν,
ἐπάννυμον τόπου τινὸς Νέδοντος, ἐξ οὗ φασιν οἰκίσαι
25 Τήλεκλον Ποιαέσσαν καὶ Ἐχειὰς καὶ Τράγιον.*

Τῶν δὲ προταθεισῶν ἐπὶ πόλεων τῷ Ἀχιλλεῖ 5
περὶ μὲν Καρδαμύλης καὶ Φηρῶν εἰρήκαμεν καὶ Πη-
δάσου. Ἐνόπην δὲ οἱ μὲν τὰ Πέλλανά φασιν, οἱ δὲ τό-
πον τινὰ περὶ Καρδαμύλην, οἱ δὲ τὴν Γερηνίαν· τὴν
30 δὲ Ἰρὴν κατὰ τὸ ὄρος δεικνύουσι τὸ κατὰ τὴν Μεγαλό-
πολιν τῆς Ἀρκαδίας ὡς ἐπὶ τὴν Ἀνδανίαν ἰόντων, ἣν
ἔφαμεν Οἰχαλίαν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ κεκληῆσθαι· οἱ δὲ

τὴν νῦν Μεσόλαν οὕτω καλεῖσθαι φασι καθήκουσαν εἰς τὸν μεταξὺ κόλπον τοῦ Ταῦρέτου καὶ τῆς Μεσσηνίας. ἢ δ' Αἴπεια νῦν Θουρία καλεῖται, ἣν ἔφαμεν ὁμορον Φαραῖς· ἰδρυται δ' ἐπὶ λόφον ὑψηλοῦ, ἀφ' οὗ καὶ τοῦνομα. ἀπὸ δὲ τῆς Θουρίας καὶ ὁ Θουριά- 5 τῆς κόλπος, ἐν ᾧ πόλισμα ἦν Πῖον τοῦνομα ἀπεναντίον Ταινάρου. Ἀνθεῖαν δὲ οἱ μὲν αὐτὴν τὴν Θουρίαν φασίν, Αἴπειαν δὲ τὴν Μεθώνην, οἱ δὲ τὴν μεταξὺ Ἀσίην τῶν Μεσσηνίων πόλεων οἰκειότατα βαθύλειμον λεχθεῖσαν, ἥς πρὸς θαλάττῃ πόλις Κορώνη· 10 καὶ ταύτην δέ τινες Πήδασον λεχθῆναί φασιν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ. „πᾶσαι δ' ἐγγὺς ἀλός,“ Καρδαμύλῃ μὲν ἐπ' C.316 αὐτῇ, Φαραὶ δ' ἀπὸ πέντε σταδίων, ὕφορμον ἔχουσα θερυνόν, αἱ δ' ἄλλαι ἀνωμάλοις κέχρηνται τοῖς ἀπὸ θαλάττης διαστήμασι. 15

6 Πλησίον δὲ τῆς Κορώνης κατὰ μέσον πῶς τὸν κόλπον ὁ Παμισδὸς ποταμὸς ἐκβάλλει, ταύτην μὲν ἐν δεξιᾷ ἔχων καὶ τὰς ἐξῆς· ὧν εἰσιν ἑσχαται πρὸς δύσιν Πύλος καὶ Κυπαρισσία, μέση δὲ τούτων Ἐρανα, ἣν οὐκ εὔ τινες Ἀρήνην . . . νενομίκασι πρότερον· Θουρίαν 20 δὲ καὶ Φαραῖς ἐν ἀ[ριστερᾷ]. μέγιστος δ' ἐστὶ ποταμῶν τῶν ἐντὸς Ἰσθμοῦ καίπερ οὐ πλείους ἢ ἑκατὸν σταδίους ἐκ τῶν πηγῶν ὅσαι δαφυλῆς τῷ ὕδατι διὰ τοῦ Μεσσηνιακοῦ πεδίου καὶ τῆς Μακαρίας καλουμένης· ἀφέστηκε τε τῆς νῦν Μεσσηνίων πόλεως ὁ ποταμὸς 25 σταδίους πεντήκοντα. ἔστι δὲ καὶ ἄλλος Παμισδὸς χαρδρῶδης μικρὸς περὶ Λεῦκτρον ῥέων τὸ Λακωνικόν, περὶ οὗ κρῖσιν ἔσχον Μεσσηνιοὶ πρὸς Λακεδαιμονίους ἐπὶ Φιλίππου· τὸν δὲ Παμισόν, ὃν Ἀμαθόν τινες ἀνόμασαν, προειρήκαμεν. 30

26. post σταδίους: διακοσίους καὶ 30. ante: προειρήκαμεν: ως

Ἐφορος δὲ τὸν Κρεσφόντην, ἐπειδὴ εἶλε Μεσσή- 7
νην, διελεῖν φησιν εἰς πέντε πόλεις αὐτήν, ὥστε Στε-
νύκλαρον μὲν ἐν τῷ μέσῳ τῆς χ[ώρας ταύτης] κειμένην
ἀποδαῖξαι βασιλείον αὐτῷ, [εἰς δὲ τὰς ἄλλας] βασιλέας
5 πέμψαι, Πύλον καὶ Ῥίον κ[αὶ Μεσόλαν καὶ] Ῥαμεῖτιν,
ποιήσαντα ἰσονόμους πάντας τοῖς Ἀωριεῦσι τοὺς Μεσ-
σηνίους· ἀγανακτούντων δὲ τῶν Ἀωριέων μεταγνόντα
μόνον τὸν Στενύκλαρον νομίσαι πόλιν, εἰς τοῦτον δὲ
καὶ τοὺς Ἀωριέας συναγαγεῖν πάντας.

- 10 Ἡ δὲ Μεσσηνίων πόλις ἔοικε Κορίνθῳ· ὑπέρκει- 8
ται γὰρ τῆς πόλεως ἑκατέρας ὄρος ὑψηλὸν καὶ ἀπότο-
μον τείχει κοινῷ περιειλημμένον ὥστ' ἀκροπόλει χρη-
σθαι, τὸ μὲν καλούμενον Ἰθώμη τὸ δὲ Ἀκροκόρινθος·
ὥστ' οἰκείως δοκεῖ Δημήτριος ὁ Φάριος πρὸς Φίλιπ-
15 πον εἰπεῖν τὸν Δημητρίου, παρακελευόμενος τούτων
ἔχεσθαι τῶν πόλεων ἀμφοῦν ἐπιθυμοῦντα τῆς Πελο-
ποννήσου· „τῶν κεράτων γὰρ κρατῶν“ ἔφη „καθέ-
„ξεις τὴν βοῦν.“ κέρατα μὲν λέγων τὴν Ἰθώμην καὶ
τὸν Ἀκροκόρινθον, βοῦν δὲ τὴν Πελοπόννησον. καὶ
20 δὴ διὰ τὴν εὐκαιρίαν ταύτην ἀμφήριστοι γεγόνασιν αἱ
πόλεις αὗται. Κόρινθον μὲν οὖν κατέσκαψαν [Ῥω-
μαῖοι] καὶ ἀνέστησαν πάλιν· Μεσσήνην δὲ ἀνείλον
μὲν Λακεδαιμόνιοι, πάλιν δ' ἀνέλαβον Θηβαῖοι καὶ
μετὰ ταῦτα Φίλιππος Ἀμύντου· αἱ δ' ἀκροπόλεις ἀοί-
25 κητοὶ διέμειναν.

Τὸ δ' ἐν Λίμναις τῆς Ἀρτέμιδος ἱερὸν, ἐφ' ᾧ ^{C.362} 9
Μεσσηνιοὶ περὶ τὰς παρθένους ὑβρίσαι δοκοῦσι τὰς
ἀφιγμένας ἐπὶ τὴν θυσίαν, ἐν μεθορίοις ἐστὶ τῆς τε
Λακωνικῆς καὶ τῆς Μεσσηνίας, ὅπου κοινὴν συνετέ-
30 λουν πανήγυριν καὶ θυσίαν ἀμφοτέροι· μετὰ δὲ τὴν
ὑβριν οὐ διδόντων δίκας τῶν Μεσσηνίων συστήναί
φρασι τὸν πόλεμον. ἀπὸ δὲ τῶν Λιμνῶν τούτων καὶ

τὸ ἐν τῇ Σπάρτῃ Λιμναῖον εἴρηται τῆς Ἀρτέμιδος
λερόν.

- 10 Πλεονάκεις δ' ἐπολέμησαν διὰ τὰς ἀποστάσεις τῶν
Μεσσηνίων. τὴν μὲν οὖν πρώτην κατάκτησιν αὐτῶν
φῃσι Τυρταῖος ἐν τοῖς ποιήμασι κατὰ τοὺς τῶν πατέ- 5
ρων πατέρας γενέσθαι· τὴν δὲ δευτέραν, καθ' ἣν ἐλό-
μενοι συμμαχούς Ἀργεῖους τε καὶ Ἀρκάδας καὶ Πισά-
τας ἀπέστησαν, Ἀρκάδων μὲν Ἀριστοκράτην τὸν Ὀρ-
χομενοῦ βασιλέα παρεχομένων στρατηγόν, Πισατῶν
δὲ Πανταλέοντα τὸν Ὀμφαλίωτος· ἥνικα φησὶν αὐτὸς 10
στρατηγῆσαι τὸν πόλεμον τοῖς Λακεδαιμονίοις [ἐλ-
θὼν ἐξ Ἐρινεοῦ]· καὶ γὰρ εἶναί φησιν ἐκεῖθεν ἐν
τῇ ἐλεγείᾳ ἣν ἐπιγράφουσιν Εὐνομίαν „αὐτὸς γὰρ
„Κρονίων, καλλιστεφάνου πόσις Ἥρης, Ζεὺς Ἥρα-
„κλείδαις τήνδε δέδωκε πόλιν· ὅλσιν ἄμα προλιπόν- 15
„τες Ἐρινεὸν ἠνεμόεντα, εὐρεῖαν Πέλοπος νῆσον ἀφι-
„κόμεθα.“ ὥστ' ἡ ταῦτα ἠκύρωται τὰ ἐλεγεία, ἡ Φι-
λοχόρῳ ἀπιστητέον τῷ φήσαντι Ἀθηναῖόν τε καὶ Ἀφι-
δναῖον, καὶ Καλλισθένει καὶ ἄλλοις πλείοσι τοῖς εἰποῦ-
σιν ἐξ Ἀθηναίων ἀφικέσθαι δεηθέντων Λακεδαιμονίων 20
κατὰ χρησμόν, ὃς ἐπέταττε παρ' Ἀθηναίων λαβεῖν ἡγε-
μόνα. ἐπὶ μὲν οὖν τοῦ Τυρταίου ὁ δεύτερος ὑπῆρξε
πόλεμος· τρίτον δὲ καὶ τέταρτον συστήναί φασιν, ἐν
ᾧ κατελύθησαν οἱ Μεσσήνιοι. ὁ δὲ πᾶς παράπλους
ὁ Μεσσηνιακὸς στάδιοι ὀκτακόσιοί που κατακολπί- 25
ζοντι.

- 11 Ἀλλὰ γὰρ εἰς πλείω λόγον τοῦ μετρίου πρόκει-
μεν ἀκολουθοῦντες τῷ πλήθει τῶν ἱστορουμένων περὶ χώ-
ρας ἐκλειμμένης τῆς πλείστης· ὅπου γε καὶ ἡ Λακω-
νικὴ λειπανδρεὶ κρινομένη πρὸς τὴν παλαιὰν εὐαν- 30
δρίαν. ἔξω γὰρ τῆς Σπάρτης αἱ λοιπαὶ πολίχναι τινές
εἰσι περὶ τριάκοντα τὸν ἀριθμόν· τὸ δὲ παλαιὸν ἐκα-

τόμπολιν φασιν αὐτὴν καλεῖσθαι, καὶ τὰ ἑκατόμβαια διὰ τοῦτο θύεσθαι παρ' αὐτοῖς κατ' ἔτος.

Ἔστι δ' οὖν μετὰ τὸν Μεσσηνιακὸν κόλπον ὁ Λα-
κωνικὸς μεταξὺ Ταινάρου καὶ Μαλεῶν, ἐκκλίνων μι-
5 κρὸν ἀπὸ μεσημβρίας πρὸς ἕω· διέχουσι δὲ σταδίους
ἑκατὸν τριάκοντα αἱ Θυρίδες τοῦ Ταινάρου ἐν τῷ Μεσ-
σηνιακῷ οὖσαι κόλπῳ, ῥοώδης κρημνός. τούτων δ' 363
ὑπέρεκειται τὸ Ταῦργετον· ἔστι δ' ὄρος μικρὸν ὑπὲρ τῆς
θαλάττης ὑψηλὸν τε καὶ ὄρθιον, συνάπτον κατὰ τὰ
10 προσάρκτια μέρη ταῖς Ἀρκαδικαῖς ὑπωρεῖαις, ὥστε
καταλείπεσθαι μεταξὺ αὐλῶνα, καθ' ὃν ἡ Μεσσηνία
συνεχῆς ἔστι τῇ Λακωνικῇ. ὑποπέπτωκε δὲ τῷ Ταῦ-
ργέτῳ ἡ Σπάρτη ἐν μεσογαίᾳ καὶ Ἀμύνκλαι, οὗ τὸ τοῦ
Ἀπόλλωνος ἱερόν, καὶ ἡ Φᾶρις. ἔστι μὲν οὖν ἐν κοιλο-
15 τέρῳ χωρίῳ τὸ τῆς πόλεως ἑδαφος καίπερ ἀπολαμβά-
νον ὄρη μεταξύ· ἀλλ' οὐδέν γε μέρος αὐτοῦ λιμνάζει,
τὸ δὲ παλαιὸν ἐλίμναζε τὸ προάστειον, καὶ ἐκάλουν
αὐτὸ Λίμνας· καὶ τὸ τοῦ Διονύσου ἱερόν ἐν Λίμναις
ἐφ' ὑγροῦ βεβηκὸς ἐτύγχανε, νῦν δ' ἐπὶ ξηροῦ τὴν
20 ἰδρυσιν ἔχει. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ τῆς παραλίας τὸ μὲν Ταί-
ναρον ἀκτὴ ἔστιν ἐκκειμένη τὸ ἱερόν ἔχουσα τοῦ Πο-
σειδῶνος ἐν ἄλσει ἰδρυμένον· πλησίον δ' ἔστιν ἄν-
τρον, δι' οὗ τὸν Κέρβερον ἀναχθῆναι μυθεύουσιν ὑφ'
Ἡρακλέους ἐξ ἄδου. ἐντεῦθεν δ' εἰς μὲν Φυκοῦντα
25 ἄκραν τῆς Κυρηναίας πρὸς νότον διάρμά ἐστι σταδίων
τρισχιλίων· εἰς δὲ Πάχυνον πρὸς δύσιν, τὸ τῆς Σικε-
λίας ἀκρωτήριον, τετρακισχιλίων ἑξακοσίων, τινὲς δὲ
τετρακισχιλίων φασίν· εἰς δὲ Μαλέας πρὸς ἕω ἑξακο-
σίων ἑβδομήκοντα κατακολπίζονται· εἰς δὲ Ὀνου γνά-
30 θον, ταπεινὴν χερρόνησον ἐνδοτέρῳ τῶν Μαλεῶν,
πεντακοσίων εἴκοσι (πρόκειται δὲ κατὰ τοῦτου Κύ-
θηρα ἐν τετταράκοντα σταδίοις, νῆσος εὐλίμενος, πό-

λιν ἔχουσα ὁμώνυμον, ἣν ἔσχευεν Εὐρυκλῆς ἐν μέρει κτήσεως ἰδίας ὁ καθ' ἡμᾶς τῶν Λακεδαιμονίων ἡγεμῶν· περίκειται δὲ νησίδια πλείω τὰ μὲν ἐγγὺς τὰ δὲ καὶ μικρὸν ἀπωτέρω)· εἰς δὲ Κώρυκον ἄκραν τῆς Κρήτης ἐγγυτάτω πλοῦς ἐστὶ σταδίων ἑπτακοσίων 5 πεντήκοντα.

- 2 Μετὰ δὲ Ταίναρον πλέοντι ἐπὶ τὴν Ὀνου γνάθον καὶ Μαλέας Ψαμαθοῦς ἐστὶ πόλις· εἰπ' Ἀσίνη καὶ Γύθειον τὸ τῆς Σπάρτης ἐπίνειον ἐν διακοσίοις καὶ τετταράκοντα σταδίοις ἰδρυμένον· ἔχει δ', ὥς φασι, τὸ 10 ναύσταθμον ὀρυκτόν· εἰθ' ὁ Εὐρώτας ἐκδίδωσι μεταξὺ Γυθείου καὶ Ἀκραίων. τέως μὲν οὖν ὁ πλοῦς ἐστὶ παρ' αἰγιαλὸν ὅσον διακοσίων καὶ τετταράκοντα σταδίων· εἰθ' ἑλῶδες ὑπέρεκκεται χωρίον καὶ κώμη Ἑλος· πρότερον δ' ἦν πόλις, καθάπερ καὶ Ὅμηρός φησιν „οἷ 15 „τ' ἄρ' Ἀμύκλας εἶχον Ἑλος τ' ἔφαλον πτολεθρον.“ κτίσμα δ' Ἑλλίου φασὶ τοῦ Περσέως. ἐστὶ δὲ καὶ πεδίον καλούμενον Λεύκη· εἶτα πόλις ἐπὶ χειρρονήσου ἰδρυμένη Κυπαρισσία λιμένα ἔχουσα· εἶτα ἡ Ὀνου γνά-
C.364θος λιμένα ἔχουσα· εἶτα Βοία πόλις, εἶτα Μαλέαι· στά- 20 διοι δ' εἰς αὐτάς ἀπὸ τῆς Ὀνου γνάθου πεντήκοντα καὶ ἑκατόν· ἐστὶ δὲ καὶ Ἀσωπὸς πόλις ἐν τῇ Λακωνικῇ.
- 3 Τῶν δ' ὑφ' Ὀμήρου καταλεγόμενων τὴν μὲν Μέσσην οὐδαμοῦ δείκνυσθαί φασι· Μεσσοῖαν δ' οὐ τῆς χώρας εἶναι μέρος [ἀλλὰ] τῆς Σπάρτης, καθάπερ καὶ 25 τὸ Λιμναῖον, κατὰ τὸν . . . κα. ἐνιοι δὲ κατὰ ἀποκοπὴν δέχονται τὴν Μεσσήνην· εἴρηται γὰρ ὅτι καὶ αὕτη μέρος ἦν τῆς Λακωνικῆς. παραδείγμασι δὲ χρῶνται τοῦ μὲν ποιητοῦ τῷ κρι καὶ δῶ καὶ μάψ, καὶ ἔτι „ἥρως „δ' Αὐτομέδων τε καὶ Ἀλκιμος,“ ἀντὶ τοῦ Ἀλκιμέ- 30 δων· Ἡσιόδου δέ, ὅτι τὸ βριθὺ καὶ βριαρὸν βρεῖ λέγει· Σοφοκλῆς δὲ καὶ Ἴων τὸ ῥάδιον ῥά· Ἐπίχαρμος δὲ τὸ

λίαν λι, Συρακῶ δὲ τὰς Συρακούσας· παρ' Ἐμπεδο-
κλεῖ δέ „μία γίνεται ἀμφοτέρων ὄψ“ ἡ ὄψις· καὶ παρ'
Ἀντιμάχῳ „Ἀήμητρος τοι Ἐλευσινίης ἱερῇ ὄψ.“ καὶ
τὸ ἄλφιτον ἄλφι· Εὐφορίων δὲ καὶ τὸν ἥλον λέγει ἡλ·
5 παρὰ Φιλήτῃ δέ „δμῳίδες εἰς ταλάρους λευκὸν ἄγου-
„σιν ἔρι“ [τὸ ἔριον]· „εἰς ἄνεμον δὲ τὰ πηδᾶ“ τὰ πη-
δάλια Ἀρατὸς φησι, Δωδὼ δὲ τὴν Δωδώνην Σιμυρίας.

Τῶν δ' ἄλλων τῶν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ κατωνομα-
σμένων τὰ μὲν ἀνῆρηται, τῶν δ' ἔκρη λείπεται, τὰ δὲ
10 μετωνόμασται, καθάπερ αἱ Ἀργεῖαι Αἰγαιαί· [αἱ] γὰρ
ἐν τῇ Δοκρίδι οὐδ' ὅλως περιέεισι. τὴν δὲ Λᾶν οἱ Διόσ-
κουροί ποτε ἐκ πολιορκίας ἐλεῖν ἱστοροῦνται, ἅφ' οὗ
δὴ Λαπέρσαι προσηγορεύθησαν.

Φησὶ δ' Ἐφορος τοὺς κατασχόντας τὴν Λακωνι- 4
15 κὴν Ἡρακλείδας Εὐρυσθένη τε καὶ Προκλῆ διελθὲν
εἰς ἕξ μέρη καὶ πολίσαι τὴν χώραν· μίαν μὲν οὖν τῶν
μερίδων, τὰς Ἀμύκλας, ἐξαίρετον δοῦναι τῷ προδόντι
αὐτοῖς τὴν Λακωνικὴν καὶ πείσαντι τὸν κατέχοντα αὐ-
τὴν ἀπελθεῖν ὑπόσπονδον μετὰ τῶν Ἀχαιῶν εἰς τὴν
20 Ἰωνίαν· τὴν δὲ Σπάρτην βασιλείον ἀποφῆναι σφίσιν
αὐτοῖς· εἰς δὲ τὰς ἄλλας πέμψαι βασιλέας, ἐπιτρέψαν-
τας δέχεσθαι συνοίκους τοὺς βουλομένους τῶν ξένων
διὰ τὴν λειπανδρίαν· χρῆσθαι δὲ Λαῖ μὲν να[υστάθμῳ]
διὰ τὸ εὐ]λίμενον, Αἴγυι δὲ πρὸς τοὺς πολέ[μους] ὀρμη-
25 τηρίῳ· καὶ] γὰρ ὁμορεῖν τοῖς κύκλῳ, Φάριδι δ[ὲ ἀρ-
χείῳ, πλειστήνῃ] ἀπὸ τῶν ἐντὸς ἀσφάλειαν ἐκρύσσει,
τ ὑπακούοντας δ' ἅπαντας τοὺς περιό-
κους Σπαρτιατῶν ὅμως ἰσονόμους εἶναι, μετέχονταςC.365
καὶ πολιτείας καὶ ἀρχείων· Ἄργιν δὲ τὸν Εὐρυσθένην

13. post προσηγορεύθησαν: καὶ Σοφοκλῆς λέγει πον „νῆ
„τῷ Λαπέρσῃ, νῆ τὸν Εὐρώτῃαν τρίτον, νῆ τοὺς ἐν Ἀργεὶ καὶ
„κατὰ Σπάρτην θεοῦς.“

ἀφελέσθαι τὴν ἰσοτιμίαν καὶ συντελεῖν προστάξει τῇ Σπάρτῃ. τοὺς μὲν οὖν ἄλλους ὑπακοῦσαι, τοὺς δ' Ἐλείους τοὺς ἔχοντας τὸ Ἔλος (καλεῖσθαι δὲ Εἰλωτας) ποιησαμένους ἀπόστασιν κατὰ κράτος ἀλῶναι πολέμῳ καὶ κριθῆναι δούλους ἐπὶ τακτοῖς τισιν, ὥστε τὸν 5 ἔχοντα μὴτ' ἐλευθεροῦν ἐξεῖναι μῆτε πωλεῖν ἔξω τῶν ὄρων τούτους· τοῦτον δὲ λεχθῆναι τὸν πρὸς τοὺς Εἰλωτας πόλεμον. σχεδὸν δέ τι καὶ τὴν εἰλωτείαν τὴν ὕστερον συμμείνασαν μέχρι τῆς Ῥωμαίων ἐπικρατείας οἱ περὶ Ἄγιν εἰσὶν οἱ καταδείξαντες· τρόπον γάρ τινα 10 δημοσίους δούλους εἶχον οἱ Λακεδαιμόνιοι τούτους, κατοικίας τινὰς αὐτοῖς ἀποδείξαντες καὶ λειτουργίας ἰδίας.

- 5 Περὶ δὲ τῆς Λακωνίων πολιτείας καὶ τῶν γενομένων παρ' αὐτοῖς μεταβολῶν τὰ μὲν πολλὰ παρείη τις 15 ἂν διὰ τὸ γνώριμον, τινῶν δ' ἄξιον ἔσως μνησθῆναι. Ἀχαιεὺς γὰρ τοὺς Φθιώτας φασὶ συγκρατελθόντας Πέλοπι εἰς τὴν Πελοπόννησον οἰκῆσαι τὴν Λακωνικὴν, τοσοῦτον δ' ἄρετῇ διενεργεῖν ὥστε τὴν Πελοπόννησον, ἐκ πολλῶν ἤδη χρόνων Ἄργος λεγομένην, τότε Ἀχαῖ- 20 κὸν Ἄργος λεχθῆναι, καὶ οὐ μόνον γε τὴν Πελοπόννησον ἀλλὰ καὶ ἰδίως τὴν Λακωνικὴν οὕτω προσαγορευθῆναι· τὸ γοῦν τοῦ ποιητοῦ „ποῦ Μενέλαος ἔην; „ἢ οὐκ Ἄργεος ἦεν Ἀχαιικοῦ;“ δέχονται τινες οὕτως „ἢ οὐκ ἦν ἐν τῇ Λακωνικῇ;“ κατὰ δὲ τὴν τῶν Ἡρα- 25 κλειδῶν ἀπόδοτον Φιλονόμου προδόντος τὴν χώραν τοῖς Δωριεῦσι μετανέστησαν ἐκ τῆς Λακωνικῆς εἰς τὴν τῶν Ἰώνων τὴν καλὴν Ἀχαιαν καλουμένην· ἐροῦμεν δὲ περὶ αὐτῶν ἐν τοῖς Ἀχαικοῖς. οἱ δὲ κατασχόντες τὴν Λακωνικὴν κατ' ἀρχὰς μὲν ἐσωφρόνουν, ἐπεὶ δ' 30

οὖν Λυκούργῳ τὴν πολιτείαν ἐπέτρεψαν, τοσοῦτον ὑπερεβάλλοντο τοὺς ἄλλους ὥστε μόνοι τῶν Ἑλλήνων καὶ γῆς καὶ θαλάττης ἐπῆρξαν, διετέλεσάν τε ἄρχοντες τῶν Ἑλλήνων ἕως ἀφείλοντο αὐτοὺς τὴν ἡγεμονίαν Θηβαῖοι 5 καὶ μετ' ἐκείνους εὐθὺς Μακεδόνες. οὐ μὴν τελέως γε οὐδὲ τούτοις εἴξαν, ἀλλὰ φυλάττοντες τὴν αὐτονομίαν ἔριν εἶχον περὶ πρωτείων αἰεὶ πρὸς τε τοὺς ἄλλους Ἑληνας καὶ πρὸς τοὺς τῶν Μακεδόνων βασιλέας· καταλυθέντων δὲ τούτων ὑπὸ Ῥωμαίων, μικρὰ μὲν τινα 10 προσέκρουσαν τοῖς πεμπομένοις ὑπὸ Ῥωμαίων στρατηγοῖς τυραννούμενοι τότε καὶ πολιτευόμενοι μοχθηρῶς· ἀναλαβόντες δὲ σφᾶς ἐτιμήθησαν διαφερόντως καὶ ἔμειναν ἐλεύθεροι, πλὴν τῶν φιλικῶν λειτουργιῶν ἄλλο συντελοῦντες οὐδέν. νεωστὶ δ' Εὐρυκλῆς αὐτοὺς C.366 15 ἐτάραξε δόξας ἀποχρήσασθαι τῇ Καίσαρος φιλίᾳ πέρα τοῦ μετρίου πρὸς τὴν ἐπιστασίαν αὐτῶν, ἐπαύσατο δ' ἡ ἀρχὴ ταχέως, ἐκείνου μὲν παραχωρήσαντος εἰς τὸ χρεῶν, τοῦ δ' υἱοῦ τὴν φιλίαν ἀπεστραμμένου τὴν τοιαύτην πᾶσαν· σὺνέβη δὲ καὶ τοὺς Ἐλευθερολάκω- 20 νας λαβεῖν τινα τάξιν πολιτείας, ἐπειδὴ Ῥωμαίοις προσέθεντο πρῶτοι οἱ περιόικοι τυραννουμένης τῆς Σπάρτης, οἳ τε ἄλλοι καὶ οἱ Εἰλωτες. Ἑλλάνικος μὲν οὖν Εὐρυσθένη καὶ Προκλέα φησὶ διατάξαι τὴν πολιτείαν, Ἐφορος δ' ἐπιτιμᾷ φήσας Λυκούργου μὲν αὐτὸν μηδα- 25 μοῦ μεμνησθαι, τὰ δ' ἐκείνου ἔργα τοῖς μὴ προσήκουσιν ἀνατιθέναι· μόνῳ γοῦν Λυκούργῳ ἱερὸν ἰδρῦσθαι καὶ θύεσθαι κατ' ἔτος, ἐκείνοις δὲ καίπερ οἰκισταῖς γενομένοις μηδὲ τοῦτο δεδόσθαι ὥστε τοὺς ἀπ' αὐτῶν τοὺς μὲν Εὐρυσθενίδας τοὺς δὲ Προκλείδας καλεῖ- 30 σθαι, ἀ[λλὰ τοὺς μὲν] Ἀγίδας ἀπὸ Ἀγιδος τοῦ Εὐρυσθένους τοὺς δ' [Εὐρυπωντίδας ἀ]πὸ Εὐρυπῶντος τοῦ Προκλέους· τοὺς μὲν [γὰρ δυναστεῦ]σαι δικαίως,

τοὺς δὲ δεξαμένους ἐπ[ήλυδας ἀνθρώ]πους, δι' ἐκεί-
νων δυναστεῦσαι· ὅθ[ε]ν οὐδ' ἀρχηγέτας νομισθῆναι
ὅπερ πᾶσιν ἀποδέδοτα[ι οἰκισταῖς. Παυ]σανίαν τε τῶν
Εὐρουπωντιδῶν ἐκπεσόν[τα τῆς] οἰκείας ἐν
τῇ φυγῇ συντάξαι λόγ[ον κατὰ τοῦ Λυκούρ]γου, νό- 5
μων ὄντος τῆς ἐκβαλούση[ς αὐτὸν αἰτίου, καὶ] τοὺς
χρησμοὺς λέγειν τοὺς δοθέντα[ς αὐτῷ περὶ τῶν] πλεί-
στων.

- 6 Περὶ δὲ τῆς φύσεως τῶν τόπων καὶ τούτων καὶ
τῶν Μεσσηνιακῶν ταῦτα μὲν ἀποδεκτέον λέγοντος 10
Εὐριπίδου· τὴν γὰρ Λακωνικὴν φησιν ἔχειν „πολὺν
„μὲν ἄροτον, ἐκπνεῖν δ' οὐ ῥάδιον· κοίλῃ γάρ, ὄρεσι
„περιδρομος, τραχεῖά τε δυσείσβολός τε πολεμίους,“
τὴν δὲ Μεσσηνιακὴν „καλλίκαρπον κατάρρυστον τε
„μυρίοισι νάμασι, καὶ βουσί καὶ ποιμναισιν εὐβοτῶ- 15
„τάτην οὗτ' ἐν πνοαῖσι χεῖματος δυσχείμερον, οὗτ' αὖ
„τεθρίπποις ἡλίου θερμὴν ἄγαν.“ καὶ ὑποβὰς τῶν
πάλων φησὶν ὅν οἱ Ἡρακλεῖδαι περὶ τῆς χώρας ἐποίη-
σαντο, τὸν μὲν πρότερον γενέσθαι „γαίης Λακαίνης
„κύριον, φαύλου χθονός·“ τὸν δὲ δευτέρου τῆς Μεσ- 20
σήνης „ἀρετὴν ἐχούσης μείζον' ἢ λόγῳ φράσαι.“ οἶαν
καὶ ὁ Τυρταῖος φράζει. τὴν δὲ Λακωνικὴν καὶ τὴν
Μεσσηνίαν ὀρίζει αὐτοῦ φήσαντος „Παμισὸν εἰς θά-
„λασσαν ἐξορμώμενον,“ οὐ συγχωρητέον, ὅς διὰ μέσης
ῥεῖ τῆς Μεσσηνίας, οὐδαμοῦ τῆς νῦν Λακωνικῆς ἀ- 25
πτόμενος. οὐκ εὖ δὲ οὐδ' ὅτι τῆς Μεσσηνίας ὁμοίως
ἐπιθαλαττιαίας οὔσης τῇ Λακωνικῇ φησὶν αὐτὴν πρό-
σω ναυτίλοισιν εἶναι. ἀλλ' οὐδὲ τὴν Ἥλιν εὖ διορίζει
„*πρόσω δὲ βάντι ποταμὸν Ἥλις ἢ Διὸς γείτων καλεῖ-
C.367,ται.“ εἴτε γὰρ τὴν νῦν Ἡλείαν βούλεται λέγειν, ἥτις 30
[όμο]ρεῖ τῇ Μεσσηνίᾳ, ταύτης οὐ προσάπτεται ὁ Πα-
μ[σός], ὥσπερ γε [οὐδὲ] τῆς Λακωνικῆς· εἴρηται γὰρ

ὅτι διὰ μέ[σης ῥ]εῖ τῆς Μεσσηνίας· εἶτε τὴν παλαιὰν
τὴν κοίλην [καλουμέν]ην, πολὺ μᾶλλον ἐκπίπτει τῆς
ἀληθείας· διαβάν[τι γὰρ τ]ὸν Παμισὸν ἔστι πολλή τῆς
Μεσσηνίας, εἰθ' ἡ τῶν ὧν ἅπασα καὶ *Μεσ-
5 σαίων, ἣν Τριφυλίαν ἐκάλουν, [εἰθ' ἡ Πι]σᾶτις καὶ ἡ
Ὀλυμπία, εἶτα μετὰ τριακοσί[ους σταδίους] ἡ Ἥλις.

Γραφόντων δὲ τῶν μὲν „Λακεδαιμόνα κητώεσ- 7
„σαν“ τῶν δὲ „καιετάεσσαν“, ζητοῦσι τὴν κητώεσσαν
τίνα δέχεσθαι χορή, εἶτε ἀπὸ τῶν κητῶν εἶτε μεγάλην,
10 ὅπερ δοκεῖ πιθανώτερον εἶναι· τὴν δὲ καιετάεσσαν οἱ
μὲν καλαμινθώδη δέχονται, οἱ δὲ ὅτι οἱ ἀπὸ τῶν σει-
σμῶν ῥωχμοὶ *καιετοὶ λέγονται· καὶ ὁ καιέτας τὸ δε-
σμωτήριον ἐντεῦθεν τὸ παρὰ Λακεδαιμονίοις, σπή-
λαιόν τι· ἐνιοὶ δὲ κώους μᾶλλον τὰ τοιαῦτα κοιλώματα
15 λέγεσθαι φασιν, ἃφ' οὗ καὶ τὸ „φηρσίλ ὀρεσκόφουσιν.“
εὐσειστός δ' ἡ Λακωνική· καὶ δὴ τοῦ Ταῦρέτου κορυ-
φάς τινες ἀπορραγῆναι τινὲς μνημονεύουσιν· εἰσὶ δὲ
λατομίαι λίθου πολυτελοῦς τοῦ μὲν Ταιναρίου ἐν Ται-
νάρῳ παλαιαί, νεωστὶ δὲ καὶ ἐν τῷ Ταῦρέτῳ μέταλλον
20 ἀνέφξάν τινες εὐμέγεθες, χορηγὸν ἔχοντες τὴν τῶν
Ῥωμαίων πολυτέλειαν.

Ὅτι δὲ Λακεδαίμων ὁμωνύμως λέγεται καὶ ἡ χώρα 8
καὶ ἡ πόλις, δηλοῖ καὶ Ὅμηρος· λέγω δὲ χώραν σὺν τῇ
Μεσσηνίᾳ· περὶ μ[ὲν δὴ τῶν] τόξων ὅταν λέγῃ „καλά,
25 „τὰ οἱ ξείνος Λακεδαίμονι δῶκε τυχήσας, Ἴφιτος Εὐ-
„ρυτίδης“, εἴτ' ἐπενέγκῃ „τὼ δ' ἐν Μεσσήνῃ ξυμβλή-
„την ἀλλήλουιν οἶκον ἐν Ὀρτιλόχοιο“, τὴν χώραν λέγει,
ἧς μέρος ἦν καὶ ἡ Μεσσηνία· οὐ διήνεγκεν οὐν αὐτῷ
καὶ οὕτως εἰπεῖν „ξείνος Λακεδαίμονι δῶκε τυχήσας“,
30 καὶ „τὼ δ' ἐν Μεσσήνῃ ξυμβλήτην.“ ὅτι γὰρ αἱ Φηραὶ

εἰσὶν ὁ τοῦ Ὀρτιλόχου οἶκος δῆλον, „ἐς Φηράς δ' ἵκον-
 „το Διοκλῆος ποτὶ δῶμα, υἱὸς Ὀρτιλόχοιο,“ ὃ τε Τη-
 λέμαχος καὶ ὁ Πεισίστρατος· αἱ δὲ Φηραὶ τῆς Μεσση-
 νίας εἰσὶν. ὅταν δ' ἐκ τῶν Φηρῶν ὁρμηθέντας τοὺς
 περὶ Τηλέμαχον πανημερίους φῆ σείειν ξυγόν, εἴτ' ὅ
 εἶπῃ „δύσετό τ' ἡέλιος, οἱ δ' ἴξον κοίλῃν Λακεδαίμονα
 „κητώεσσαν· πρὸς δ' ἄρα δώματ' ἔλων Μενελάου,“
 C.368 τὴν πόλιν δεῖ δέχεσθαι· εἰ δὲ μή, ἐκ Λακεδαίμονος εἰς
 Λακεδαίμονα φανεῖται λέγων τὴν ἄφιξιν· ἄλλως τε οὐ
 πιθανὸν μὴ ἐν Σπάρτῃ τὴν οἴκησιν εἶναι τοῦ Μενε- 10
 λάου, [οὐδὲ] μὴ οὔσης ἐκεῖ τὸν Τηλέμαχον λέγειν „εἴμι
 „γὰρ ἐς Σπάρτην τε καὶ εἰς Πύλον.“ δοκεῖ [δὲ συμ]πί-
 πτειν τούτῳ τὸ τοῖς τῆς χώρας ἐπιθέτοις αὐτοῖς εἰ
 μὴ νῆ Δία ποιητικῇ τις τοῦτο συγχωρήσει ἔξο[υσία.
 βέλ]τιον γὰρ τὴν Μεσσήνην μετὰ τῆς Λακωνικῆς καὶ 15
 Πύλου] τῆς ὑπὸ τῷ Νέστορι, μηδὲ δὴ καθ' αὐτὴν
 τάτ[τεσθαι ἐν τῷ] καταλόγῳ μηδὲ κοινωνοῦσαν τῆς
 στρα[τείας].

- 6** Μετὰ δὲ Μαλέας ὁ Ἀργολικὸς ἐκδέχεται κόλπος
 καὶ ὁ Ἐρμιονικὸς, ὁ μὲν μέχρι τοῦ Σκυλλαίου πλέοντι 20
 ὥς πρὸς ἑω βλέπων καὶ πρὸς τὰς Κυκλάδας, ὁ δὲ ἑω-
 θινώτερος τούτου μέχρι πρὸς Αἰγίναν καὶ τὴν Ἐπι-
 δαυρίαν. τὰ μὲν δὴ πρῶτα τοῦ Ἀργολικοῦ Λάκωνες
 ἔχουσι, τὰ δὲ λοιπὰ Ἀργεῖοι· ἐν οἷς ἐστὶ τῶν μὲν Λα-
 κῶνων τὸ Δῆλιον ἱερὸν Ἀπόλλωνος ὁμῶννυμον τῷ Βοι- 25
 ωτιακῷ, καὶ Μινῶα φρούριον ὁμῶννυμος καὶ αὕτη τῇ
 Μεγαρικῇ, καὶ ἡ λιμηρὰ Ἐπίδαυρος, ὥς Ἀρτεμίδωρος
 φησιν. Ἀπολλόδωρος δὲ Κυθήρων πλησίον ἱστορεῖ
 ταύτην, εὐλίμενον δὲ οὔσαν βραχέως καὶ ἐπιτετμημέ-
 νως λιμηρὰν εἰρησθαι ὥς ἂν λιμενηράν, μεταβεβλη- 30
 κέναι δὲ τοῦνομα. ἔστι δὲ τραχὺς ὁ παράπλους εὐθύς
 ἀπὸ Μαλεῶν ἀρξάμενος μέχρι πολλοῦ ὁ Λακωνικὸς,

ἔχει δ' ὅμως ὑφόρμους καὶ λιμένας. ἡ λοιπὴ δ' ἐστὶ παραλία εὐλίμενος, νησιδιά τε πολλὰ πρόκειται αὐτῆς οὐκ ἄξια μνήμης.

Τῶν δ' Ἀργείων αἵ τε Πρασιαὶ καὶ τὸ Τημένιον, ²
 5 ἐν ᾧ τέθραπται Τήμενος, καὶ ἔτι πρότερον τὸ χωρίον, δι' οὗ ρεῖ ποταμὸς ἡ Λέωνη καλουμένη ὁμώνυμος τῇ λίμνῃ, ἐν ᾗ μεμύθευται τὰ περὶ τὴν Ὑδραν. τὸ δὲ Τημένιον ἀπέχει τοῦ Ἀργους ἕξ καὶ εἴκοσι σταδίους ὑπὲρ τῆς θαλάττης, ἀπὸ δὲ τοῦ Ἀργους εἰς τὸ Ἡραῖον τετ-
 10 τάρακοντα, ἐνθεν δὲ εἰς Μυκῆνας δέκα. μετὰ δὲ τὸ Τημένιον ἡ Ναυπλία, τὸ τῶν Ἀργείων ναύσταθμον· τὸ δ' ἔντυμον ἀπὸ τοῦ ταῖς ναυσὶ προσπλεῖσθαι. ἀπὸ τούτου δὲ πεπλάσθαι φασὶ τὸν Ναύπλιον καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ παρὰ τοῖς νεωτέροις· οὐ γὰρ Ὅμηρον
 15 ἀμνημονῆσαι ἂν τούτων, τοῦ μὲν Παλαμήδους τοσαύτην σοφίαν καὶ σύνεσιν ἐπιδεδειγμένου, δολοφονηθέντος δὲ ἀδίκως, τοῦ δὲ Ναυπλίου τοσοῦτον ἀπεργασαμένου φθόρου ἀνθρώπων περὶ τὸν Καφηρέα. ἡ δὲ γενεαλογία πρὸς τῷ μυθῳδῳ καὶ τοῖς χρόνοις διημάρ-
 20 τηται· δεδοσθω γὰρ Ποσειδῶνος εἶναι, Ἀμνυμῶνης δὲ πῶς τὸν κατὰ τὰ Τρωικὰ ἔτι ζῶντα; ἐφεξῆς δὲ τῇ Ναυ- C.369
 πλίᾳ τὰ σπήλαια καὶ οἱ ἐν αὐτοῖς οἰκοδομητοὶ λαβύρινοι, Κυκλώπεια δ' ὀνομάζουσιν.

Εἴτ' ἄλλα χωρία καὶ ἐφεξῆς ὁ Ἑρμιονικὸς κόλπος· ³
 25 καὶ [γὰρ τοῦτον Ὀμ]ήρου τάξαντος ὑπὸ τῇ Ἀργείᾳ καὶ ἡμῖν οὐ [παροπτέος ἐνέ]φηνεν ὁ μερισμὸς τῆς περι-
 οδείας οὗτος. ἄρχεται δ' ἀπὸ *Ἀσίνης πολίχνης· εἴθ' Ἑρμιόνη καὶ Τροίξην· ἐν παράπλῳ δὲ πρόκειται καὶ
 30 Καλαυρία νῆσος, κύκλον ἔχουσα τριάκοντα σταδίων, πορθμῷ δὲ τετρασταδίῳ διεστῶσα τῆς ἡπείρου.

Εἴθ' ὁ Σαρωνικὸς κόλπος· οἱ δὲ πόντον λέγου· ⁴

σιν, οἱ δὲ πόρον, καθ' ὃ καὶ πέλαγος λέγεται Σαρωνικὸν πᾶς ὁ συνάπτων πόρος ἀπὸ τῆς Ἑρμιονικῆς καὶ τῆς περὶ τὸν Ἰσθμὸν θαλάττης τῷ τε Μυρτώφῳ πελάγει καὶ τῷ Κρητικῷ. τοῦ δὲ Σαρωνικοῦ Ἐπίδανρός τέ ἐστι καὶ ἡ προκειμένη νῆσος Αἴγινα· εἶτα Κεγχρεαὶ τὸ 5 τῶν Κορινθίων ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη ναύσταθμον· εἶτα λιμὴν Σχοινοῦς πλεύσαντι τετταράκοντα καὶ πέντε σταδίους· ἀπὸ δὲ Μαλεῶν τοὺς πάντας περὶ χιλίους καὶ ὀκτακοσίους. κατὰ δὲ τὸν Σχοινοῦντα ὁ δόολκος τὸ στενώτατον τοῦ Ἰσθμοῦ, περὶ ὃν τὸ τοῦ Ἰσθμίου 10 Ποσειδῶνος ἱερὸν· ἀλλὰ [ταῦ]τα μὲν ὑπερκείμεθ'· ἕξω γάρ ἐστι τῆς Ἀργείας. ἀναλαβόντες δ' ἐφοδεύσωμεν πάλιν τὰ κατὰ τὴν Ἀργεῖαν.

- 5 Καὶ πρῶτον ποσαχῶς λέγεται παρὰ τῷ ποιητῇ τὸ Ἄργος καὶ καθ' αὐτὸ καὶ μετὰ τοῦ ἐπιθέτου, Ἀχαι- 15 κὸν Ἄργος καλοῦντος ἢ Ἰάσον ἢ ἱππιον ἢ Πελασγικὸν ἢ ἱππόβοτον. καὶ γὰρ ἡ πόλις Ἄργος λέγεται „Ἄργος τε Σπάρτη τε.“ „οἱ δ' Ἄργος τ' εἶχον Τίρυνθ' αὖτε.“ καὶ ἡ Πελοπόννησος „ἡμετέρῃ ἐνὶ οἴκῳ „ἐν Ἀργεῖ.“ οὐ γὰρ ἡ πόλις γε ἦν οἶκος αὐτοῦ. καὶ ὅλη 20 ἡ Ἑλλάς· Ἀργεῖους γοῦν καλεῖ πάντας καθάπερ καὶ Δαναοὺς καὶ Ἀχαιοὺς. τὴν δ' οὖν ὁμωνυμίαν τοῖς ἐπιθέτοις διαστέλλεται, τὴν μὲν Θετταλίαν Πελασγικὸν Ἄργος καλῶν „νῦν αὖ τοὺς ὅσοι τὸ Πελασγικὸν „Ἄργος ἔναιον.“ τὴν δὲ Πελοπόννησον [Ἀχαιικὸν] „εἰ 25 „δέ κεν Ἄργος ἰκοίμεθ' Ἀχαιικόν“ „ἢ οὐκ Ἀργεος ἦεν „Ἀχαιικοῦ.“ σημαίνων ἐνταῦθα, ὅτι καὶ Ἀχαιοὶ ἰδίως ὠνομάζοντο οἱ Πελοποννήσιοι κατ' ἄλλην σημασίαν. Ἰάσον τε Ἄργος τὴν Πελοπόννησον λέγει „εἰ πάντες „γ' ἐσίδοιεν ἂν Ἰάσον Ἄργος Ἀχαιοί“ τὴν Πηνελό- 30

πην, ὅτι πλείους ἂν λάβοι μνηστῆρας· οὐ γὰρ τοὺς C.376
 ἐξ ὅλης τῆς Ἑλλάδος εἰκός, ἀλλὰ τοὺς ἐγγύς. ἱππόβο-
 τον δὲ καὶ ἵππιον κοινῶς εἴρηκε.

- Περὶ δὲ τῆς Ἑλλάδος καὶ Ἑλλήνων καὶ Πανελλή- 6
 5 νων ἀντιλέγεται. Θουκυδίδης μὲν γὰρ τὸν ποιητὴν
 μῆδαμοῦ βαρβάρους εἶπεῖν φησι διὰ τὸ μηδὲ Ἑλληνάς
 πω τὸ ἀντίπαλον εἰς ἓν ὄνομα ἀποκεκρίσθαι. καὶ Ἀπολ-
 λόδωρος δὲ μόνους τοὺς ἐν Θετταλίᾳ καλεῖσθαι φησιν
 Ἑλληνας „Μυρμιδόνες δὲ καλεῦντο καὶ Ἑλληνες.“
 10 Ἡσίοδον μέντοι καὶ Ἀρχίλοχον ἤδη εἰδέναι καὶ Ἑλλη-
 νας λεγομένους τοὺς σύμπαντας καὶ Πανέλληνας, τὸν
 μὲν περὶ τῶν Προϊτίδων λέγοντα ὡς Πανέλληνες ἐμνή-
 στευον αὐτάς, τὸν δὲ „ὡς Πανελλήνων ὀϊζὺς ἐς Θά-
 „σον συνέδραμεν.“ ἄλλοι δ' ἀντιτιθέασιν ὅτι καὶ βαρ-
 15 βάρους εἴρηκεν, εἰπὼν γε βαρβαροφώνους τοὺς Κᾶ-
 ρας, καὶ Ἑλληνας τοὺς πάντας „ἀνδρός, τοῦ κλέος
 „εὐρὺ καθ' Ἑλλάδα καὶ μέσον Ἄργος.“ καὶ πάλιν „εἰ
 „δ' ἐθέλης [τραφθῆναι] ἀν' Ἑλλάδα καὶ μέσον Ἄργος.“
 Ἡ μὲν οὖν πόλις ἡ τῶν Ἀργείων ἐν χωρίοις ἐπι- 7
 20 πέδοις ἵδρυνται τὸ πλεόν, ἄκραν δ' ἔχει τὴν καλουμένην
 Ἀάρισαν, λόφον εὐερκῇ μετρίως ἔχοντα ἱερὸν Διός·
 ρεῖ δ' αὐτῆς πλησίον ὁ Ἴναχος χαραδρώδης ποταμὸς
 τὰς πηγὰς ἔχων ἐκ Ἀυρκείου. περὶ δὲ τῶν μυθευομέ-
 νων πηγῶν εἴρηται διότι πλάσματα ποιητῶν ἐστί· πλά-
 25 σμα δὲ καὶ τὸ „Ἄργος ἄνυδρον ἐὼν Δαναοὶ θῆσαν Ἄρ-
 „γος ἔνυδρον,“ τῆς τε χώρας κοίλης οὕσης καὶ ποτα-
 μοῖς διαρροεμένης καὶ ἔλη καὶ λίμνας παρεχομένης,
 καὶ τῆς πόλεως εὐπορουμένης ὕδασι φρεάτων πολλῶν
 καὶ ἐπιπολαίων. αἰτιῶνται δὲ τῆς ἀπάτης τὸ „καὶ κεν
 30 „ἐλέγχιστος πολυδίψιον Ἄργος ἰκοίμην.“ τοῦτο δ' ἦτοι

23. post Ἀυρκείου: τοῦ κατὰ τὴν Κυνουρίαν ὄρους τῆς Ἀρ-
 καδίας.

ἀντὶ τοῦ πολυπόθητον κεῖται, ἢ χωρὶς τοῦ δ̄ πολυλίψιον-
 ὡς „πολύφθορόν τε δῶμα Πελοπιδῶν τόδε“ φησὶ Σο-
 φροκλῆς· τὸ γὰρ ἔψασθαι φθοράν τινα καὶ βλάβην ση-
 μαίνει „νῦν μὲν πειραῖται, τάχα δ' ἔψεται νῆας Ἀχαιῶν“
 ἄλλως τε οὐ τὴν πόλιν λέγει τὸ Ἄργος (οὐ γὰρ ἐκεῖσε δ̄
 ἐμελλεν ἀφίξεσθαι) ἀλλὰ τὴν Πελοπόννησον, οὐ δῆ-
 που καὶ ταύτην διψηρὰν οὔσαν. καὶ σὺν τῷ δ̄ δὲ ὑπερ-
 βατῶς δέχονται[τινες κατὰ] συναλοιφὴν μετὰ τοῦ συν-
 δέσμου τοῦ δέ, ἢ οὕτως „καὶ κεν ἐλέγχιστος πολὺν δ'
 „ἔψιον Ἄργος ἰκοίμην,“ πολυλίψιον Ἄργοςδε 10
 ἰκοίμην ἀντὶ τοῦ „εἰς Ἄργος.“

C. 371

8

Εἰς μὲν δὴ Ἰναχὸς ἐστὶν ὁ διαρρέων τὴν Ἀργεῖαν·
 ἄλλος δὲ ποταμὸς Ἑρασίνος ἐν τῇ Ἀργεῖᾳ ἐστίν· οὗτος
 δὲ τὰς ἀρχὰς ἐκ Στυμφάλου τῆς Ἀρκαδίας λαμβάνει
 καὶ τῆς ἐκεῖ λίμνης τῆς καλουμένης Στυμφαλίδος, ἐν 15
 ἣ τὰς ὄρνεις μυθολογοῦσι τὰς ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους το-
 ξεύμασι καὶ τυμπάνοις ἐξελαθείσας, [ἀς] καὶ αὐτὰς κα-
 λοῦσι Στυμφαλίδας· δύντα δ' ὑπὸ γῆς φασὶ τὸν ποτα-
 μὸν τοῦτον ἐκπίπτειν εἰς τὴν Ἀργεῖαν καὶ ποιεῖν ἐπίρ-
 ρυτον τὸ πεδίον· ῥεῖ δὲ καὶ ἄλλος ὁμώνυμος ἐκ τῆς 20
 Ἀρκαδίας εἰς τὸν κατὰ Βοῦραν αἰγιαλόν· ἄλλος δ' ἐστὶν
 ὁ Ἑρετρικός, καὶ ὁ ἐν τῇ Ἀττικῇ κατὰ Βραυρωνά. δει-
 κνυται δὲ καὶ Ἀμυμώνη τις κρήνη κατὰ Λέρνην. ἡ δὲ
 Λέρνη λίμνη τῆς Ἀργείας ἐστὶ καὶ τῆς Μυκηναίας, ἐν
 ἣ τὴν Ὕδραν ἱστοροῦσι· διὰ δὲ τοὺς γινομένους κα- 25
 θαρμούς ἐν αὐτῇ παροιμία τις ἐξέπεσε „Λέρνη κακῶν.“
 τὴν μὲν οὖν χώραν συγχωροῦσιν εὐνδρεῖν, αὐτὴν δὲ
 τὴν πόλιν ἐν ἀνύδρῳ χωρίῳ κεῖσθαι, φρεάτων δ' εὐ-
 πορεῖν (ἂ ταῖς Δαναΐσιν ἀνάπτουσιν, ὡς ἐκείνων ἐξευ-

3. post γὰρ: προϊάψαι καὶ ἰάψαι καὶ 4. post Ἀχαιῶν: κατὰ
 χρόα καλὸν ἰάψῃ. Ἄϊδι προϊάψεν. 20. post πεδίον: τὸν δ' Ἑρα-
 σῖνον καλοῦσι καὶ Ἀρσῖνον.

ρουσῶν, ἅφ' οὗ καὶ τὸ ἔπος * εἶπεῖν τοῦτο „Ἄργος ἄνδρον ἐὼν Δαναοὶ θέσαν Ἄργος ἐκυδρον“, τῶν δὲ φρεσίνων τέτταρα καὶ ἱερὰ ἀποδειχθῆναι καὶ τιμᾶσθαι διαφερόντως, ἐν εὐπορίᾳ ὑδάτων ἀπορίαν εἰσάγοντες.

- 5 Τὴν δὲ ἀκρόπολιν τῶν Ἀργείων οἰκίσαι λέγεται 9
 Δαναός, ὃς τοσοῦτον τοὺς πρὸ αὐτοῦ δυναστεύοντας ἐν τοῖς τόποις ὑπερβαλέσθαι δοκεῖ ὥστε κατ' Εὐριπίδην „Πελασγιάτας ὠνομασμένους τὸ πρὶν Δαναοὺς „καλεῖσθαι νόμον ἔθνη“ ἂν Ἑλλάδα.“ ἔστι δὲ καὶ τά-
 10 φος αὐτοῦ κατὰ μέσην τὴν τῶν Ἀργείων ἀγοράν· καλεῖται δὲ πλίνθος. οἶμαι δ' ὅτι καὶ Πελασγιάτας καὶ Δαναοὺς, ὥσπερ καὶ Ἀργεῖους, ἡ δόξα τῆς πόλεως ταύτης ἀπ' αὐτῆς καὶ τοὺς ἄλλους Ἕλληνας καλεῖσθαι παρεσκεύασεν· οὕτω δὲ καὶ Ἰασίδας καὶ Ἰασον Ἄργος.
 15 καὶ Ἀπίαν καὶ Ἀπιδόνας οἱ νεώτεροί φασιν· Ὅμηρος δ' Ἀπιδόνας μὲν οὐ λέγει, ἀπίαν δὲ τὴν πόρρω μᾶλλον. ὅτι δ' Ἄργος τὴν Πελοπόννησον λέγει, προσλαβεῖν ἔστι καὶ τάδε „Ἀργεῖη δ' Ἑλένη“ καὶ „ἔστι πόλις „Ἐφύρη μυκῶ Ἄργεος“ καὶ „μέσον Ἄργος“ καὶ „πολ-
 20 „λῆσιν νήσοισι καὶ Ἄργεϊ παντὶ ἀνάσσειν.“ ἄργοςC.372 δὲ καὶ τὸ πεδῖον λέγεται παρὰ τοῖς νεωτέροις, παρ' Ὀμήρῳ δ' οὐδ' ἅπαξ· μάλιστα δ' οἴονται Μακεδονικὸν καὶ Θετταλικὸν εἶναι.

Τῶν δ' ἀπογόνων τοῦ Δαναοῦ διαδεξαμένων τὴν 10
 25 ἐν Ἀργεὶ δυναστείαν, ἐπιμιχθέντων δὲ τούτοις τῶν Ἀμυθαιωνιδῶν ὠρμημένων ἐκ τῆς Πισάτιδος καὶ τῆς Τριφυλίας, οὐκ ἂν θαυμάσειέ τις εἰ συγγενεῖς ὄντες οὕτω διείλοντο τὴν χώραν εἰς δύο βασιλείας τὸ πρῶτον, ὥστε τὰς ἡγεμονεύουσας ἐν αὐταῖς δύο πόλεις
 30 ἀποδειχθῆναι πλησίον ἀλλήλων ἰδρυμένας ἐν ἐλάττωσιν ἢ πεντήκοντα σταδίοις, τό τε Ἄργος καὶ τὰς Μυκῆνας, καὶ τὸ Ἡραῖον εἶναι κοινὸν ἱερὸν τὸ πρὸς ταῖς

Μυκήναις ἀμφοῖν, ἐν ᾧ τὰ Πολυκλείτου ξόανα τῇ μὲν τέχνῃ κάλλιστα τῶν πάντων πολυτελεία δὲ καὶ μεγέθει τῶν Φειδίου λειπόμενα. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν τὸ Ἄργος ἐπεκράτει μᾶλλον, εἶθ' αἱ Μυκήναι μείζονα ἐπίδοσιν λαβοῦσαι διὰ τὴν τῶν Πελοπιδῶν εἰς αὐτὰς μεθίδρου- 5 σιν· περιστάντων γὰρ εἰς τοὺς Ἀτρώως παῖδας ἀπάντων, Ἀγαμέμνων ὢν πρεσβύτερος παραλαβὼν τὴν ἐξουσίαν ἅμα τύχῃ τε καὶ ἀρετῇ πρὸς τοῖς οὔσι πολλὴν προσεκτίσαστο τῆς χώρας, καὶ δὴ καὶ τὴν Ἀργολικὴν τῇ Μυκηναίᾳ προσέθηκε. Μενέλαος μὲν δὴ τὴν Λακω- 10 νικὴν ἔσχε, Μυκήνας δὲ καὶ τὰ μέχρι Κορίνθου καὶ Σικυῶνος καὶ τῆς Ἰώνων μὲν τότε καὶ Αἰγιάλεων καλουμένης Ἀχαιῶν δὲ ὕστερον Ἀγαμέμνων παρέλαβε. μετὰ δὲ τὰ Τρωικὰ τῆς Ἀγαμέμνονος ἀρχῆς καταλυθείσης ταπεινωθῆναι [συνέβη] Μυκήνας καὶ μάλιστα 15 μετὰ τὴν τῶν Ἡρακλείδων κάθοδον. κατασχόντες γὰρ οὗτοι τὴν Πελοπόννησον ἐξέβαλον τοὺς πρότερον κρατοῦντας ὥσθ' οἱ τὸ Ἄργος ἔχοντες εἶχον καὶ τὰς Μυκήνας συντελούσας εἰς ἓν· χρόνοις δ' ὕστερον κατεσκάφησαν ὑπ' Ἀργείων ὥστε νῦν μηδ' ἔχνος εὐρίσκει- 20 σθαι τῆς Μυκηναίων πόλεως. ὅπου δὲ Μυκήναι τοιαῦτα πεπόνθασιν, οὐ δεῖ θανμάζειν οὐδ' εἴ τινες τῶν ὑπὸ τῷ Ἄργει καταλεγομένων ἀφανεῖς νῦν εἰσιν. ὁ μὲν δὴ κατάλογος ἔχει οὕτως „οἱ δ' Ἄργος τ' εἶχον Τί- 25 „ρυνθὰ τε τειχιόεσσαν Ἑρμιόνην τ' Ἀσίνην τε, [βα- „θὺν] κατὰ κόλπον ἐχούσας, Τροίξην Ἡίονας τε καὶ „ἀμπελόεντ' Ἐπίδαυρον, οἳ τ' ἔχον Αἰγιναν Μάσητά „τε, κοῦροι Ἀχαιῶν.“ τούτων δὲ περὶ μὲν τοῦ Ἀργους εἴρηται, περὶ δὲ τῶν ἄλλων λεκτέον.

- 11 Τῇ μὲν οὖν Τίρυνθι ὀρμητηρίῳ χρήσασθαι δοκεῖ 30
 Προῖτος καὶ τειχίσαι διὰ Κυκλώπων, οὓς ἑπτὰ μὲν εἶ-
 ναι καλεῖσθαι δὲ γαστερόχειρας τρεφομένους ἐκ τῆς

- τέχνης, ἥκειν δὲ μεταπέμπτους ἐκ Λυκίας· καὶ ἴσως^{0.373}
 τὰ σπήλαια τὰ περὶ τὴν Ναυπλίαν καὶ τὰ ἐν αὐτοῖς
 ἔργα τούτων ἐπώνυμά ἐστιν. ἡ δὲ ἀκρόπολις Αἰκυμνα
 ἐπώνυμος Αἰκυμνίου, διέχει δὲ τῆς * Ναυπλίου περὶ
 5 δῶδεκα σταδίου· ἔρημος δ' ἐστὶ κάκεῖνη καὶ ἡ πλη-
 σίον Μιδέα, ἑτέρα οὖσα τῆς Βοιωτικῆς· ἐκεῖνη γὰρ
 ἐστὶ Μίδεια ὡς πρόνοια, αὕτη δὲ Μιδέα ὡς Τεγέα·
 ταύτη δ' ὁμορος Πρόσυμνα αὕτη ἱερὸν ἔχουσα
 "Ηρας· ἠρήμωσαν δὲ τὰς πλείστας οἱ Ἀργεῖοι ἀπειθού-
 10 σας. οἱ δ' οἰκήτορες οἱ μὲν ἐκ [τῆς] Τίρυνθος ἀπῆλθον
 εἰς Ἐπίδαυρον, οἱ δὲ ἐκ [τῆς] εἰς τοὺς Ἀλιεῖς κα-
 λουμένους, οἱ δ' ἐκ τῆς Ἀσίνης (ἐστὶ δ') αὕτη κόμη
 τῆς Ἀργείας πλησίον Ναυπλίας) ὑπὸ Λακεδαιμονίων
 15 εἰς τὴν Μεσσηνίαν μετῴκισθ[ησαν, ὅπου] καὶ ἡ ὁμώ-
 νυμος τῇ Ἀργολικῇ Ἀσίνῃ πολίχ[νη]. οἱ γὰρ Λακεδαι-
 μόνιοι, φησὶν ὁ Θεόπομπος, πολλὴν κατακτησάμενοι
 τῆς ἀλλοτρίας εἰς ταύτην κατῴκισον οὓς ἂν ὑποδέξαιν-
 το τῶν φυγόντων ἐπ' αὐτο[ύς· καὶ οἱ] ἐκ τῆς Ναυπλίας
 ἐκεῖσε ἀνεχώρησαν.
- 20 Ἐρμιόνη δ' ἐστὶ τῶν οὐκ ἀσήμεων πόλεων, ἥς τὴν 12
 παραλίαν ἔχουσιν Ἀλιεῖς λεγόμενοι θαλαττοῦργοί τι-
 νες ἄνδρες. παρ' Ἐρμιονεῦσι δὲ τεθρύληται τὴν εἰς
 "Αἶδου κατάβασιν σύντομον εἶναι· διόπερ οὐκ ἐντιδέ-
 ασιν ἐνταῦθα τοῖς νεκροῖς ναῦλον.
- 25 Ἀρυσόπων δ' οἰκητήριόν φασι * καὶ τὴν Ἀσίνην, 13
 εἴτ' ἐκ τῶν περὶ Σπερχειὸν τόπων ὄντας αὐτοὺς Ἀρύ-
 οπος τοῦ Ἀρκάδος κατοικίσαντος ἐνταῦθα, ὡς Ἀρι-
 στοτέλης φησὶν, εἰδ' Ἡρακλέους ἐκ τῆς περὶ τὸν Παρ-
 νασσὸν Δωρίδος ἐξελάσαντος αὐτούς. τὸ δὲ Σκύλ-
 30 λαιον τὸ ἐν Ἐρμιόνῃ ὠνομάσθαι φασὶν ἀπὸ Σκύλλης
 τῆς Νίσου θυγατρὸς, ἣν ἐξ ἔρωτος προδοῦσαν Μίνῳ
 τὴν Νίσαιαν καταποντωθῆναί φασιν ὑπ' αὐτοῦ, δεῦρο

δ' ἐκκυμανθεῖσαν ταφῆς τυχεῖν. Ἡιόνες δὲ κώμη τις ἦν, ἣν ἐρημώσαντες Μυκηναῖοι ναύσταθμον ἐποίησαν, ἀφαν[ισθεῖσα δ' ὕστερον] οὐδὲ ναύσταθμόν ἐστιν.

- 14 Τροίξην δὲ ἱερὰ ἐστὶ Ποσειδῶνος, ἀφ' οὗ καὶ Ποσειδωνία ποτὲ ἐλέγετο· ὑπέρεκειται δὲ τῆς θαλάττης εἰς 5 πεντεκαίδεκα σταδίους, οὐδ' αὖτῃ ἄσσημος πόλις. πρόκειται δὲ τοῦ λιμένος αὐτῆς Πάγωνος τοῦνομα Καλαυρία νησιδίον ὅσον τριάκοντα σταδίων ἔχον τὸν κύκλον· ἐνταῦθα ἦν ἄστυλον Ποσειδῶνος ἱερόν, καὶ φασὶ τὸν θεὸν τοῦτον ἀλλάξασθαι πρὸς μὲν Αἰτῶ τὴν Κα- 10
- 6374 λαυρίαν ἀντιδόντα Δῆλον, πρὸς Ἀπόλλωνα δὲ Ταίναρον ἀντιδόντα Πυθῶ. Ἐφορος δὲ καὶ τὸν χρησμὸν λέγει „ἴσόν τοι Δῆλόν τε Καλαυρείαν τε νέμεσθαι, Πυ- „θῶ τ' ἡγαθέην καὶ Ταίναρον ἡνεμόεντα.“ ἦν δὲ καὶ Ἀμφικτυονία τις περὶ τὸ ἱερόν τοῦτο ἐπὶ πόλεω ἀἰ 15 μετεῖχον τῆς θυσίας· ἦσαν δὲ Ἑρμιῶν Ἐπίδανρος Αἰγίνα Ἀθῆναι Πρασιεῖς Ναυπλιεῖς Ὀρχομενὸς ὁ Μινύειος· ὑπὲρ μὲν οὖν Ναυπλιέων Ἀργεῖοι συνετέλουν, ὑπὲρ Πρασιέων δὲ Λακεδαιμόνιοι. οὕτω δ' ἐπεκράτησεν ἡ τιμὴ τοῦ θεοῦ τούτου παρὰ τοῖς Ἑλλήσιν ὥστε 20 καὶ Μακεδόνες δυναστεύοντες ἤδη μέχρι δεῦρο ἐφύλαττόν πως τὴν ἄστυλιαν, καὶ τοὺς ἐκέτας ἀποσπᾶν ἡδοῦντο τοὺς εἰς Καλαυρίαν καταφυγόντας· ὅπου γε οὐδὲ Δημοσθένης ἐθάρρησεν Ἀρχίας βιάσασθαι στρατιώτας ἔχων, ᾧ προσετέτακτο ὑπὸ Ἀντιπάτρου ζῶντα 25 ἀγαγεῖν ἀκκείνον καὶ τῶν ἄλλων ῥητόρων ὃν αὖ εὖρη τῶν ἐν ταῖς αἰτίαις ὄντων ταῖς παραπλησίοις, ἀλλὰ πεῖθειν ἐπειράτο· οὐ μὲν ἐπεισέγε, ἀλλ' ἐφθῆ φαρμάκῳ παραλύσας ἑαυτὸν τοῦ ζῆν. Τροίξην δὲ καὶ Πιτθεὺς οἱ Πέλοπος ὀρμηθέντες ἐκ τῆς Πισάτιδος ὁ μὲν 30 τὴν πόλιν ὁμώνυμον ἑαυτοῦ κατέλιπεν, ὁ δὲ Πιτθεὺς ἐβασίλευσεν ἐκεῖνον διαδεξάμενος. Ἀνθης δ' ὁ προ-

κατέχων πλεύσας Ἀλικαρνασὸν ἔκτισεν· ἐροῦμεν δ' ἐν τοῖς Καρικοῖς οὐ καὶ τοῖς Τρωικοῖς.

Ἡ Ἐπίδauρος δ' ἐκαλεῖτο Ἐπίtauρος· φησὶ δὲ 15
Ἀριστοτέλης κατασχεῖν αὐτὴν Κᾶρας, ὥσπερ καὶ Ἐρ-
5 μίονα, τῶν δὲ Ἡρακλειδῶν κατελθόντων Ἴωνας αὐ-
τοῖς συνοικῆσαι τοὺς ἐκ τῆς Ἀττικῆς τετραπόλεως συν-
επομένους εἰς Ἄργος. καὶ αὕτη δ' οὐκ ἄσημος ἡ πόλις
καὶ μάλιστα διὰ τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ Ἀσκληπιοῦ θερα-
πεύειν νόσους παντοδαπὰς πεπιστευμένους, καὶ τὸ λε-
10 ρὸν πλήρες ἔχοντος ἀεὶ τῶν τε καμνόντων καὶ τῶν
ἀνακειμένων πινάκων, ἐν οἷς ἀναγεγραμμένοι τυγχά-
νουσιν αἱ θεραπεῖαι, καθάπερ ἐν Κῶ τε καὶ Τρίκκῃ.
κεῖται δ' ἡ πόλις ἐν μυχῶ τοῦ Σαρωνικοῦ κόλπου, τὸν
περίπλουν ἔχουσα σταδίων πεντεκαίδεκα, βλέπουσα
15 πρὸς ἀνατολὰς θερρινάς· περικλείεται δ' ὄρεσιν ὑψη-
λοῖς μέχρι πρὸς τὴν θάλατταν, ὥστ' ἐρυμνὴ κατεσκεύ-
ασται φυσικῶς πανταχόθεν. μεταξὺ δὲ Τροιζήνος καὶ
Ἐπιδauρου χωρίον ἦν ἐρυμνὸν Μέθανα καὶ χειρόνη-
σος ὁμώνυμος τούτῳ· παρὰ Θουκυδίδῃ δὲ ἐν τισιν
20 ἀντιγράφοις Μεθῶνῃ φέρεται ὁμωνύμως τῇ Μακεδο-
νικῇ, ἐν ἣ Φίλιππος ἐξεκόπη τὸν ὀφθαλμὸν πολιορ-
κῶν· διόπερ οἶσται τινὰς ἐξαπατηθέντας ὁ Σκῆψιος 0.375
Δημήτριος τὴν ἐν τῇ Τροιζηνίᾳ Μεθῶνῃν ὑπονοεῖν,
καθ' ἧς ἀράσασθαι λέγεται τοὺς ὑπ' Ἀγαμέμνονος
25 πεμφθέντας ναυτολόγους μηδέποτε παύσασθαι [τοῦ]
τειχοδομεῖν, οὐ τούτων ἀλλὰ τῶν Μακεδόνων ἀνα-
νευσάντων, ὥς φησι Θεόπομπος· τούτους δ' οὐκ εἰ-
κὸς ἐγγὺς ὄντας ἀπειθῆσαι.

Αἴγινα δ' ἔστι μὲν καὶ τόπος τις τῆς Ἐπιδauρίας, 16
30 ἔστι δὲ καὶ νῆσος πρὸ τῆς ἡπείρου ταύτης, ἣν ἐν τοῖς
ἀρχαίοις παρατεθεῖσιν ἔπεσι βούλεται φράζειν ὁ ποιη-
τής· διὸ καὶ γράφουσί τινες „νῆσόν τ' Αἴγινα“ ἀντὶ

τοῦ „οἷ τ' ἔχον Αἰγιναν,“ διαστελλόμενοι τὴν ὁμωνυ-
 μίαν. ὅτι μὲν οὖν τῶν σφόδρα γνωρίμων ἐστὶν ἡ νῆ-
 σος, τί δεῖ λέγειν; ἐντεῦθεν γὰρ Αἰακός τε λέγεται καὶ
 οἱ ἅπ' αὐτοῦ. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ καὶ θαλαττοκρατήσασά
 ποτε καὶ περὶ πρωτείων ἀμφισβητήσασα πρὸς Ἀθη- 5
 ναίους ἐν τῇ περὶ Σαλαμῖνα ναυμαχίᾳ κατὰ τὰ Περ-
 σικά. λέγεται δὲ σταδίων ἑκατὸν ὀγδοήκοντα ὁ κύκλος
 τῆς νήσου, πόλιν δ' ὁμώνυμον ἔχει τετραμμένην πρὸς
 λίβα· περιέχουσι δ' αὐτὴν ἡ τε Ἀττικὴ καὶ ἡ Μεγαρὶς
 καὶ τῆς Πελοποννήσου τὰ μέχρι Ἐπιδαύρου, σχεδόν τι 10
 ἑκατὸν σταδίους ἐκάστη διέχουσα· τὸ δὲ ἑωθινὸν μέ-
 ρος καὶ τὸ νότιον πελάγει κλύζεται τῷ τε Μυρτώῳ καὶ
 τῷ Κρητικῷ· νησίδια δὲ περὶκεῖται πολλὰ μὲν πρὸς
 τῇ ἡπείρῳ, Βέλβινα δὲ πρὸς τὸ πέλαγος ἀνατείνουσα.
 ἡ δὲ χώρα αὐτῆς κατὰ βάρθους μὲν γεώδης ἐστί, πε- 15
 τρώδης δ' ἐπιπολῆς καὶ μάλιστα ἡ πεδιάς· διόπερ ψιλὴ
 πᾶσά ἐστι, κριθοφόρος δὲ ἱκανῶς. Μυρμιδόνας δὲ
 κληθῆναι φασιν οὐχ ὥς ὁ μῦθος τοὺς Αἰγινήτας, ὅτι
 λοιμοῦ μεγάλου συμπεσόντος οἱ μύρμηκες ἄνθρωποι
 γένοιντο κατ' εὐχὴν Αἰακοῦ, ἀλλ' ὅτι μυρμήκων τρό- 20
 πον ὀρύττοντες τὴν γῆν ἐπιφέροισιν ἐπὶ τὰς πέτρας
 ὥστ' ἔχειν γεωργεῖν, ἐν δὲ τοῖς ὀρύγμασιν οἰκεῖν φει-
 δόμενοι πλύνθων. ὠνομάζετο δ' Οἰνώνη πάλαι. ἐπώ-
 κησαν δ' αὐτὴν Ἀργεῖοι καὶ Κρηῖτες καὶ Ἐπιδαῦριοι
 καὶ Δωριεῖς, ὕστερον δὲ κατεκληροῦχησαν τὴν νήσον 25
 Ἀθηναῖοι· ἀφελόμενοι δὲ Λακεδαιμόνιοι τοὺς Ἀθη-
 C.376 ναίους τὴν νήσον ἀπέδοσαν τοῖς ἀρχαίοις οἰκήτορ-
 σιν. ἀποίκους δ' ἔστειλαν Αἰγινῆται εἰς τε Κυθω-

23. Γ. πρὸς Ἐλε-
 θεράϊς,
 ἥς ἡ παροιμία „Οἰνώνη τὴν χαράδραν.“

νίαν τὴν ἐν Κρήτῃ καὶ εἰς Ὀμβρικοὺς. Ἐφορος δ' ἐν Αἰγίνῃ ἄργυρον πρῶτον κοπήναι φησιν ὑπὸ Φεῖδωνος· ἐμπορίου γὰρ γενέσθαι, διὰ τὴν λυπρότητα τῆς χώρας τῶν ἀνθρώπων θαλαττουργούντων ἐμπορικῶς, 5 ἀφ' οὗ τὸν ῥῶπον Αἰγινάϊαν ἐμπολὴν λέγεσθαι.

Ὁ δὲ ποιητὴς ἔνια μὲν χωρία λέγει συνεχῶς ὥσπερ 17 καὶ κεῖται „οἱ δ' Ἑρίην ἐνέμοντο καὶ Αὐλίδα“ „οἱ δ' „Ἄργος τ' εἶχον Τίρυνθά τε“ „Ἐρμιόνην τ' Ἀσίνην τε“ „Τροίξην Ἡίονας τε.“ ἄλλοτε δ' οὐχ ὥς ἐστι τῇ τάξει 10 „Σχοῖνόν τε Σκῶλόν τε“ „Θέσπειαν Γραϊάν τε.“ τὰ τ' ἐν ἡπείρῳ ταῖς νήσοις συμφράζει „οἱ δ' Ἰθάκην εἶχον, „καὶ Κροκύλει“ ἐνέμοντο.“ τὰ γὰρ Κροκύλεια ἐν τοῖς Ἀκαρνασίν. οὕτω δὲ καὶ νῦν τῇ Αἰγίνῃ τὸν Μάσητα συνῆψεν ὄντα τῆς Ἀργολικῆς ἡπείρου. Θυρέας δὲ Ὀμη- 15 ρος μὲν οὐκ ὠνόμασεν, οἱ δ' ἄλλοι θρυλοῦσι· περὶ ὧν Ἀργείοις καὶ Λακεδαιμονίοις συνέστη ἀγῶν τριακοσίοις πρὸς τριακοσίους· ἐνίκων δὲ Λακεδαιμόνιοι στρατηγοῦντος Ὀθρυάδα· εἶναι δέ φησι τὸ χωρίον τοῦτο Θουκυδίδης ἐν τῇ Κυνουρίᾳ κατὰ τὴν μεθορίαν τῆς 20 Ἀργείας καὶ τῆς Λακωνικῆς. εἰσὶ δὲ καὶ Τρῳαίαι τύπος γνώριμος τῆς Ἀργολικῆς καὶ Κεγχρεαί, αἱ κεῖνται ἐπὶ τῇ ὁδῷ τῇ ἐκ Τεγέας εἰς Ἄργος διὰ τοῦ Παρθενίου ὄρους. Ὀμηρος δ' αὐτὰς οὐκ οἶδεν.

Τῶν [δὴ] κατὰ Πελοπόννησον πόλεων ἐνδοξότα- 18 25 ται γεγόνασι καὶ μέχρι νῦν εἰσιν „Ἄργος τε Σπάρτη „τε,“ διὰ δὲ τὸ πολυθρόνητον ἥκιστα δεῖ μακρολογεῖν περὶ αὐτῶν· τὰ γὰρ ὑπὸ πάντων εἰρημμένα λέγειν δύ- ξομεν. τὸ παλαιὸν μὲν οὖν ἠὺδοκίμει τὸ Ἄργος μᾶλ-

23. post ὄρους: καὶ τοῦ Κροσώλου. ib. post οἶδεν: οὐδὲ τὸ Λύρκειον, οὐδ' Ὀρνεάς· κῶμαι δ' εἰσὶ τῆς Ἀργείας, ἡ μὲν ὁμώνυμος τῷ ὄρει τῷ [Λυρκεῖῳ], αἱ δὲ ταῖς Ὀρνεαῖς ταῖς μετὰ ξὺν Κορίνθου καὶ Σικυνῶνος ἰδρυμέναις.

λον, ὕστερον δὲ καὶ μέχρι παντὸς ὑπερεβάλοντο Λα-
κεδαιμόνιοι καὶ διετέλεσαν τὴν αὐτονομίαν φυλάττον-
τες, πλὴν εἴ τί που μικρὸν προσπταίειν αὐτοὺς συνέ-
βαιεν. Ἀργεῖοι δὲ Πύρρον μὲν οὐκ ἐδέξαντο (ἀλλὰ
καὶ πρὸ τοῦ τείχους ἔπεσε γραδίου τινός, ὥς ἔοικε, 5
κεραμίδα ἀφέντος ἄνωθεν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν) ὑπ' ἄλ-
C.377λοις δ' ἐγένοντο βασιλεῦσι, μετασχόντες δὲ τοῦ τῶν
Ἀχαιῶν συστήματος σὺν ἐκείνοις εἰς τὴν τῶν Ῥωμαίων
ἐξουσίαν ἦλθον, καὶ νῦν συνέστηκεν ἡ πόλις δευτε-
ρεύουσα τῇ τάξει μετὰ τὴν Σπάρτην. 10

19 Ἐξῆς δὲ λέγωμεν περὶ τῶν ὑπὸ Μυκῆναις καὶ τῷ
Ἀγαμέμνονι τεταγμένων τόπων ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν
νεῶν· ἔχει δ' οὕτω τὰ ἔπη „οἱ δὲ Μυκῆνας εἶχον, ἐν-
„κτίμενον ποτλεῖθρον, ἀφνειὸν τε Κόρινθον ἐνκτιμέ-
„νας τε Κλεωνάς, Ὀρυνείας τ' ἐνέμοντο Ἀραιθυρέην 15
„[τ' ἐρατεινὴν] καὶ Σικυῶν', ὅθ' [ἄρ'] Ἀδρηστος πρῶτ'
„ἐμβασίλευεν, οἱ δ' Ὑπερησίην τε καὶ αἰπεινὴν Γο-
„υόεσσαν Πελλήνην τ' εἶχον, ἡδ' Αἰγίον ἀμφενέ-
„μοντο, Αἰγιαλὸν τ' ἀνὰ πάντα καὶ ἄμφ' Ἑλίκην εὐ-
„ρεῖαν.“ αἱ μὲν οὖν Μυκῆναι νῦν οὐκέτ' εἰσὶν, ἔκτισε 20
δ' αὐτὰς Περσεύς, διεδέξατο δὲ Σθένελος, εἴτ' Εὐρυ-
σθεύς· οἱ δ' αὐτοὶ καὶ τοῦ Ἄργους ἦρξαν. Εὐρυσθεύς
μὲν οὖν στρατεύσας εἰς Μαραθῶνα ἐπὶ τοὺς Ἡρακλέ-
ους παῖδας καὶ Ἰόλαον βοηθησάντων Ἀθηναίων ἱστο-
ρεῖται πεσεῖν ἐν τῇ μάχῃ, καὶ τὸ μὲν ἄλλο σῶμα Γαρ- 25
ρηττοῖ ταφῆναι, τὴν δὲ κεφαλὴν χωρὶς ἐν Τρικορύνθῳ,
ἀποκόψαντος αὐτὴν Ἰολάου περὶ τὴν κρήνην τὴν Μα-
καρίαν ὑπὸ ἀμαξιτόν· καὶ ὁ τόπος καλεῖται Εὐρυσθέως
κεφαλὴ. αἱ δὲ Μυκῆναι μετέπεσον εἰς τοὺς Πελοπίδας
ὀρμηθέντας ἐκ τῆς Πισάτιδος, εἴτ' εἰς τοὺς Ἡρακλεί- 30
δας καὶ τὸ Ἄργος ἔχοντας. μετὰ δὲ τὴν ἐν Σαλαμῖνι
ναυμαχίαν Ἀργεῖοι μετὰ Κλεωναίων καὶ Τεγεατῶν

ἐπελθόντες ἄρδην τὰς Μυκῆνας ἀνεῖλον καὶ τὴν χώραν διενείμαντο. διὰ δὲ τὴν ἐγγύτητα τὰς δύο πόλεις ὥς μίαν οἱ τραγικοὶ συνωνύμως προσαγορεύουσιν, Εὐρύπιδης δὲ καὶ ἐν τῷ αὐτῷ δράματι τοτὲ μὲν Μυκῆνας 5 καλῶν τοτὲ δ' Ἄργος τὴν αὐτὴν πόλιν, καθάπερ ἐν Ἰφιγενεΐᾳ καὶ Ὀρέστη. Κλεωναὶ δ' εἰσὶ πόλισμα ἐπὶ τῇ ὁδῷ κείμενον τῇ ἕξ Ἀργους εἰς Κόρινθον ἐπὶ λόφου περιοικουμένου πανταχόθεν καὶ τετειχισμένου καλῶς, ὥστ' οἰκείως εἰρησθαί μοι δοκεῖ τὸ ἐνκτιμέναις Κλεω- 10 νάς. ἐνταῦθα δὲ καὶ ἡ Νεμέα μεταξὺ Κλεωνῶν καὶ Φλιοῦντος καὶ τὸ ἄλσος, ἐν ᾧ καὶ τὰ Νέμεα συντελεῖν ἔθος τοῖς Ἀργείοις, καὶ τὰ περὶ τὸν Νεμεαῖον λέοντα μυθεύόμενα, καὶ ἡ Βέμβινα κώμη· διέχουσι δ' αἱ Κλεωναὶ τοῦ μὲν Ἀργους σταδίους ἑκατὸν εἴκοσι, Κορίν- 15 θου δὲ ὀγδοήκοντα. καὶ ἡμεῖς ἀπὸ τοῦ Ἀκροκορίνθου κατωπτεύσαμεν τὸ κτίσμα.

Ὁ δὲ Κόρινθος ἀφνειὸς μὲν λέγεται διὰ τὸ ἐμπό-^{C.378}
ριον, ἐπὶ τῷ Ἰσθμῷ κείμενος καὶ δυεῖν λιμένων [ὧν] ²⁰
κύριος, ὧν ὁ μὲν τῆς Ἀσίας ὁ δὲ τῆς Ἰταλίας ἐγγύς
20 ἔστι καὶ ῥαδίας ποιεῖ τὰς ἑκατέρωθεν ἀμοιβὰς
τῶν φορτίων πρὸς ἀλλήλους τοῖς τοσοῦτον ἀφρεστῶσιν.
ἦν δ' ὥσπερ ὁ πορθμὸς οὐκ εὐπλοὺς ὁ κατὰ τὴν Σικελίαν τὸ παλαιόν, οὕτω καὶ τὰ πελάγη καὶ μάλιστα τὸ ὑπὲρ Μαλεῶν διὰ τὰς ἀντιπνοίας· ἀφ' οὗ καὶ παροι-
25 μιάζονται „Μαλέας δὲ κάμψας ἐπιλάθου τῶν οἰκαδε.“
ἀγαπητὸν οὖν ἑκατέροις ἦν τοῖς τε ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ ἐκ τῆς Ἀσίας ἐμπόροις, ἀφεῖσι τὸν περὶ Μαλέας πλοῦν, κατάργεσθαι τὸν φόρτον αὐτόθι· καὶ πεξῇ δὲ τῶν ἐκκο-
μιζομένων ἐκ τῆς Πελοποννήσου καὶ τῶν εἰσαγομένων
30 ἔπιπτε τὰ τέλη τοῖς τὰ κλειθρα ἔχουσι. διέμεινε δὲ

τοῦτο καὶ εἰς ὕστερον μέχρι παντός· τοῖς δ' ὕστερον καὶ πλείω προσεγίνετο πλεονεκτήματα· καὶ γὰρ ὁ Ἰσθμικὸς ἀγὼν ἐκεῖ συντελούμενος ὄχλους ἐπήγετο, καὶ οἱ Βακχιάδαι τυραννήσαντες, πλούσιοι καὶ πολλοὶ καὶ γένος λαμπροί, διακόσια ἔτη σχεδὸν τι κατέσχον⁵ τὴν ἀρχὴν καὶ τὸ ἐμπόριον ἀδεῶς ἐκαρπώσαντο· τούτους δὲ Κύψελος καταλύσας αὐτοὺς ἐτυράννησε, καὶ μέχρι τριγονίας ὁ οἶκος αὐτοῦ συνέμεινε· τοῦ δὲ περὶ τὸν οἶκον τοῦτον πλούτου μαρτύριον τὸ Ὀλυμπιάσιν ἀνάθημα Κυψέλου, σφυρήλατος χρυσοῦς ἀνδριάς¹⁰ εὐμεγέθης [Διός]. Δημάρατός τε, εἰς τῶν ἐν Κορίνθῳ δυναστευσάντων, φεύγων τὰς ἐκεῖ στάσεις τοσοῦτον ἠνέγκατο πλοῦτον οἰκοθεῖν εἰς τὴν Τυρρηνίαν ὥστε αὐτὸς μὲν ἤρξε τῆς δεξαμένης αὐτὸν πόλεως, ὁ δ' υἱὸς αὐτοῦ καὶ Ῥωμαίων κατέστη βασιλεύς. τό τε τῆς Ἀφρο-¹⁵δίτης ἱερὸν οὕτω πλούσιον ὑπῆρξεν ὥστε πλείους ἢ χιλίας ἱεροδούλους ἐκέκτητο ἐταίρας, ἃς ἀντιτίθουσιν τῇ θεῇ καὶ ἄνδρες καὶ γυναῖκες. καὶ διὰ ταύτας οὖν πολυωχλεῖτο ἡ πόλις καὶ ἐπλουτίζετο· οἱ γὰρ ναύκληροι ῥαδίως ἐξανηλίσκοντο, καὶ διὰ τοῦτο ἡ παροιμία φησὶν²⁰ „οὐ παντὸς ἀνδρὸς ἐς Κόρινθόν ἐσθ' ὁ πλοῦς.“ καὶ δὴ καὶ μνημονεύεται τις ἐταῖρα πρὸς τὴν ὀνειδίξουσιν, ὅτι οὐ φιλεργὸς εἴη οὐδ' ἐρίων ἄπτοίτο, εἰπεῖν „ἔγω μῦντοι ἢ τοιαύτη τρεῖς ἥδη καθείλον ἱστοὺς ἐν βραχεῖ χρόνῳ τούτῳ.“

25

21 Τὴν δὲ τοποθεσίαν τῆς πόλεως, ἐξ ὧν Ἱερώνυμος
C.379τε εἴρηκε καὶ Εὐδοξος καὶ ἄλλοι καὶ αὐτοὶ δὲ εἰδομεν
νεωστὶ ἀναληφθείσης ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων, τοιάνδε εἶ-
ναι συμβαίνει. ὄρος ὑψηλὸν ὅσον τριῶν ἡμισυ στα-
δίων ἔχον τὴν κάθετον, τὴν δ' ἀνάβασιν καὶ τριάκοντα³⁰
σταδίων, εἰς ὁξείαν τελευτᾷ κορυφὴν· καλεῖται δὲ
Ἀκροκόρινθος, οὗ τὸ μὲν πρὸς ἄρκτον μέρος ἐστὶ τὸ

- μάλιστα ὄρθιον, ὅφ' ᾧ καῖται ἡ πόλις ἐπὶ τραπεζώδους
 ἐπιπέδου χωρίου πρὸς αὐτῇ τῇ ῥίξῃ τοῦ Ἀκροκορίν-
 θου. αὐτῆς μὲν οὖν τῆς πόλεως ὁ κύκλος καὶ τετταρά-
 κοντα σταδίων ὑπῆρχεν· ἐτετείχιστο δ' ὅσον τῆς πό-
 5 λεως γυμνὸν ἦν τοῦ ὄρους· συμπεριείληπτο δὲ τῷ
 περιβόλῳ τούτῳ καὶ τὸ ὄρος αὐτὸ ὃ Ἀκροκόρινθος ἦ
 δυνατὸν ἦν τειχισμὸν δεξασθαι, καὶ ἡμῖν ἀναβαίνου-
 σιν ἦν δῆλα τὰ ἐρείπια τῆς σχοινίας· ὥσθ' ἡ πᾶσα πε-
 ρίμετρος ἐγένετο περὶ πέντε καὶ ὀγδοήκοντα σταδίων.
 10 ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων μερῶν ἦττον ὄρθιόν ἐστι τὸ ὄρος,
 ἀνατέταται μέντοι ἐνθ' ἐνδεῖς ἰκανῶς καὶ περιόπτόν ἐστιν.
 ἡ μὲν οὖν κορυφὴ ναῖδιον ἔχει Ἀφροδίτης, ὑπὸ δὲ τῇ
 κορυφῇ τὴν Πειρήνην εἶναι συμβαίνει κρήνην, ἐκρυ-
 σιν μὲν οὐκ ἔχουσιν μεστὴν δ' αἶε διαυγοῦς καὶ ποτί-
 15 μου ὕδατος. φασὶ δὲ καὶ ἐνθ' ἐνδεῖς καὶ ἐξ ἄλλων ὑπονό-
 μων τινῶν φλεβίων συνθλίβεσθαι τὴν πρὸς τῇ ῥίξῃ
 τοῦ ὄρους κρήνην ἐκρέουσιν εἰς τὴν πόλιν ὥσθ' ἰκα-
 νῶς ἀπ' αὐτῆς ὑδροεύεσθαι. ἔστι δὲ καὶ φρεάτων εὐ-
 πορία κατὰ τὴν πόλιν, λέγουσι δὲ καὶ κατὰ τὸν Ἀκρο-
 20 κόρινθον· οὐ μὲν ἡμεῖς γε εἶδομεν. τοῦ δ' οὖν Εὐρι-
 πίδου φήσαντος οὕτως „ἦκω περίκλυστον προλιποῦσ'
 „Ἀκροκόρινθον, ἱερὸν ὄχθον, πόλιν Ἀφροδίτας,“ τὸ
 περίκλυστον ἦτοι κατὰ βᾶθους δεκτέον, ἐπεὶ καὶ * φρέ-
 ατα καὶ ὑπόνομοι λιβάδες διήκουσι δι' αὐτοῦ, ἢ τὸ πα-
 25 λαιὸν ὑποληπτέον τὴν Πειρήνην ἐπιπολάξειν καὶ κα-
 τάρρυστον ποιεῖν τὸ ὄρος. ἐνταῦθα δὲ φασὶ πίνοντα
 τὸν Πήγασον ἀλῶναι ὑπὸ Βελλεροφόντου, πτηνὸν
 ἵππον ἐκ τοῦ τραχήλου τοῦ Μεδούσης ἀναπαλέντα
 κατὰ τὴν γοργοτομίαν· τὸν δ' αὐτόν φασὶ καὶ τὴν
 30 Ἴππου κρήνην ἀναβαλεῖν ἐν τῷ Ἐλικῶνι πλήξαντα
 τῷ ὄνυχι τὴν ὑποῦσαν πέτραν. ὑπὸ δὲ τῇ Πειρήνῃ τὸ
 Σισύφειόν ἐστιν, ἱεροῦ τινος ἢ βασιλείου λευκῶν λί-

θων πεποιημένου διασῶζον ἐρείπια οὐκ ὀλίγα. ἀπὸ δὲ τῆς κορυφῆς πρὸς ἄρκτον μὲν ἀφορᾶται ὅ τε Παρνασσὸς καὶ ὁ Ἑλικῶν, ὄρη ὑψηλὰ καὶ νιφόβολα, καὶ ὁ Κρισαῖος κόλπος ὑποπεπτωκὸς ἀμφοτέροις, περιεχόμενος ὑπὸ τῆς Φωκίδος καὶ τῆς Βοιωτίας καὶ τῆς Μεγαρίδος 5 καὶ τῆς ἀντιπόρῳ τῇ Φωκίδι Κορινθίας καὶ Σικυωνίας· πρὸς ἐσπέραν δὲ ὑπέρεκται δὲ τούτων

C.380 ἀπάντων τὰ καλούμενα Ὀνεα ὄρη διατείνοντα μέχρι Βοιωτίας καὶ Κιθαιρῶνος ἀπὸ τῶν Σκειρωνίδων πετρῶν, ἀπὸ τῆς παρὰ ταύτας ὁδοῦ πρὸς τὴν Ἀττικὴν. 10

22 Ἀρχὴ δὲ τῆς παραλίας ἐκατέρως τῆς μὲν τὸ Λέχαιον τῆς δὲ Κεγχρεαὶ κώμη καὶ λιμὴν ἀπέχων τῆς πόλεως ὅσον ἐβδομήκοντα σταδίους· τούτῳ μὲν οὖν χρωῶνται πρὸς τοὺς ἐκ τῆς Ἀσίας πρὸς δὲ τοὺς ἐκ τῆς Ἰταλίας τῷ Λεχαίῳ. τὸ δὲ Λέχαιον ὑποπέπτωκε τῇ πό- 15 λει κατοικίαν ἔχον οὐ πολλήν· σκέλη δὲ καθείλκυσται σταδίων περὶ δώδεκα ἐκατέρωθεν τῆς ὁδοῦ τῆς ἐπὶ τὸ Λέχαιον. ἐντεῦθεν δὲ παρεκτείνουσα ἡ ἡὼν μέχρι Παγῶν τῆς Μεγαρίδος κλύζεται μὲν ὑπὸ τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου, κοίλη δ' ἐστὶ καὶ ποιεῖ τὸν διόλκον 20 πρὸς τὴν ἐτέραν ἡὼνα τὴν κατὰ Σχοινοῦντα πλησίον ὄντα τῶν Κεγχρεῶν. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τοῦ Λεχαίου καὶ Παγῶν τὸ τῆς Ἀκραίας μαντεῖον Ἥρας ὑπῆρχε τὸ παλαιόν, καὶ αἱ Ὀλμιαὶ τὸ ποιοῦν ἀκρωτήριον τὸν κόλπον ἐν ᾧ ἦ τε Οἰνὸν καὶ Παγαί, τὸ μὲν τῶν Μεγαρέων 25 φρουρίον ἡ δὲ Οἰνὸν τῶν Κορινθίων. ἀπὸ [δὲ] τῶν Κεγχρεῶν ὁ Σχοινοῦς, καθ' ὃν τὸ στενὸν τοῦ διόλκου· ἐπειθ' ἡ Κρομμυωνία. πρόκειται δὲ τῆς ἡὼνος ταύτης ὅ τε Σαρωνικὸς κόλπος καὶ ὁ Ἐλευσινιακός, τρόπον τινα ὁ αὐτὸς ὧν, συνεχῆς τῷ Ἑρμιονικῷ. ἐπὶ 30 δὲ τῷ Ἰσθμῷ καὶ τὸ τοῦ Ἰσθμίου Ποσειδῶνος ἱερὸν ἄλσει πιτυώδει συνηρεφές, ὅπου τὸν ἀγῶνα τῶν Ἰσθμίων

Κορίνθιοι συνετέλουν. ἡ δὲ Κρομμυὼν ἔστι κώμη τῆς Κορινθίας, πρότερον δὲ τῆς Μεγαρίδος, ἐν ᾗ μυθεύουσι τὰ περὶ τὴν Κρομμυωνίαν ὕν, ἣν μητέρα τοῦ Καλυδωνίου κάπρου φασί· καὶ τῶν Θησεῶς ἀθλῶν ἓνα 5 τοῦτον παραδιδόασι τὴν τῆς ὕδς ταύτης ἐξαίρεσιν. καὶ ἡ Τενέα δ' ἔστι κώμη τῆς Κορινθίας, ἐν ᾗ τοῦ Τενεάτου Ἀπόλλωνος ἱερόν· λέγεται δὲ καὶ Ἀρχία τῷ στείλαντι τὴν εἰς Συρακούσας ἀποικίαν τοὺς πλείστους τῶν ἐποίκων ἐντεῦθεν συνεπακολουθήσαι, καὶ μετὰ 10 ταῦτα εὐθιγεῖν μάλιστα τῶν ἄλλων τὴν κατοικίαν ταύτην, τὰ δ' ὕστατα καὶ καθ' αὐτοὺς πολιτεύεσθαι, προσθέσθαι τε τοῖς Ῥωμαίοις ἀποστάντας Κορινθίῳν καὶ κατασκαφείσης τῆς πόλεως συμμεῖναι. φέρεται δὲ καὶ χρησμός ὁ δοθείς τινι τῶν ἐκ τῆς Ἀσίας ἐρωτῶντι 15 εἰ λῶον εἴη μετοικεῖν εἰς Κόρινθον, „εὐδαίμων ὁ Κόρινθος, ἐγὼ δ' εἴην Τενεάτης.“ ὅπερ κατ' ἀγνοίαν τινες παρατρέπουσιν „ἐγὼ δ' εἴην Τεγεάτης.“ λέγεται δ' ἐνταῦθα ἐκθρέψαι Πόλυβος τὸν Οἰδίπουν. δοκεῖ δὲ καὶ συγγενεῖά τις εἶναι Τενεδίοις πρὸς τοὺτους ἀπὸ 20 Τέννου τοῦ Κύκνου, καθάπερ εἰρηκεν Ἀριστοτέλης· καὶ ἡ τοῦ Ἀπόλλωνος δὲ τιμὴ παρ' ἀμφοτέροις ὁμοία οὕσα δίδωσιν οὐ μικρὰ σημεῖα.

Κορίνθιοι δ' ὑπὸ Φιλίππῳ ὄντες ἐκείνῳ τε συνε-
 φιλονείκησαν καὶ ἰδίᾳ πρὸς Ῥωμαίους ὑπεροπτικῶς
 25 εἶχον, ὥστε τινὲς καὶ τῶν πρέσβεων παριόντων τὴν οἰκίαν αὐτῶν ἐθάρρησαν καταντλήσαι βόρβορον. ἀντὶ τούτων μὲν οὖν καὶ ἄλλων ὧν ἐξήμαρτον ἔτισαν δίκας αὐτίκα· πεμφθείσης γὰρ ἀξιολόγου στρατιᾶς, αὐτὴ τε κατέσκαπτο ὑπὸ Λευκίου Μομμίου καὶ τᾶλλα μέχρι 30 Μακεδονίας ὑπὸ Ῥωμαίοις ἐγένετο, ἐν ἄλλοις ἄλλων πεμπομένων στρατηγῶν· τὴν δὲ χώραν ἔσχον Σικυῶνιοι τὴν πλείστην τῆς Κορινθίας. Πολύβιος δὲ τὰ συμ-

C.381
23

βάντα περὶ τὴν ἄλωσιν ἐν οἴκτου μέρει λέγων προστί-
 θησι καὶ τὴν στρατιωτικὴν ὀλιγωρίαν τὴν περὶ τὰ τῶν
 τεχνῶν ἔργα καὶ τὰ ἀναθήματα. φησὶ γὰρ ἰδεῖν παρῶν
 ἐξοριμμένους πίνακας ἐπ' ἐδάφους, πεττεύοντας δὲ
 τοὺς στρατιώτας ἐπὶ τούτων. ὀνομάζει δ' αὐτῶν Ἀρι- 5
 στείδου γραφὴν τοῦ Διονύσου, ἐφ' οὗ τινες εἰρήσθαι
 φασὶ τὸ „οὐδὲν πρὸς τὸν Διόνυσον,“ καὶ τὸν Ἡρακλέα
 τὸν καταπονούμενον τῷ τῆς Διανείρας χιτῶνι. τοῦ-
 τον μὲν οὖν οὐχ ἑωράκαμεν ἡμεῖς, τὸν δὲ Διόνυσον
 ἀνακείμενον ἐν τῷ Δημητρείῳ τῷ ἐν Ῥώμῃ κάλλιστον 10
 ἔργον ἑωρῶμεν· ἐμπρησθέντος δὲ τοῦ νεῶ συνηφανί-
 σθη καὶ ἡ γραφὴ νεωστί. σχεδὸν δέ τι καὶ τῶν ἄλλων
 ἀναθημάτων τῶν ἐν Ῥώμῃ τὰ πλεῖστα καὶ ἄριστα ἐν-
 τεῦθεν ἀφ᾽ ἔχθαι· τινὰ δὲ καὶ αἱ κύκλω τῆς Ῥώμης πό-
 λεις ἔσχον. μεγάλωρον γὰρ ὢν μᾶλλον ἢ φιλότεχνος 15
 ὁ Μόμμιος, ὥς φασὶ, μετεδίδου ῥαδίως τοῖς δεηθεῖσι.
 Λεύκολλος δὲ κατασκευάσας τὸ τῆς Εὐτυχίας ἱερὸν καὶ
 στοάν τινα χρῆσιν ἡτήσατο ὃν εἶχεν ἀνδριάντων ὁ
 Μόμμιος, ὥς κοσμήσων τὸ ἱερὸν μέχρι ἀναδείξεως, εἴτ'
 ἀποδώσων· οὐκ ἀπέδωκε δέ, ἀλλ' ἀνέθηκε κελεύσας 20
 αἰρεῖν εἰ βούλεται· πρῶως δ' ἤνεγκεν ἐκεῖνος οὐ φρον-
 τίσας οὐδέν, ὥστ' ἠὺδοκίμει τοῦ ἀναθέντος μᾶλλον.
 πολὺν δὲ χρόνον ἐρήμη μείνασα ἡ Κόρινθος ἀνελήφθη
 πάλιν ὑπὸ Καίσαρος τοῦ Θεοῦ διὰ τὴν εὐφυΐαν, ἐποί-
 κους πέμψαντος τοῦ ἀπελευθερικοῦ γένους πλείστους· 25
 οἱ τὰ ἐρείπια κινουῦντες καὶ τοὺς τάφους συνανασκά-
 πτοντες εὗρισκον ὀστρακίων * τορευμάτων πλήθη,
 πολλὰ δὲ καὶ χαλκῶματα· θαυμάζοντες δὲ τὴν κατα-
 σκευὴν οὐδένα τάφον ἀσκευώρητον εἶασαν, ὥστε εὐ-
 πορήσαντες τῶν τοιούτων καὶ διατιθέμενοι πολλοῦ 30
 C.382 νεκροκορινθίων ἐπλήρωσαν τὴν Ῥώμην· οὕτω γὰρ
 ἐκάλουν τὰ ἐκ τῶν τάφων ληφθέντα, καὶ μάλιστα τὰ

ὁστράκινα. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἐτιμήθη σφόδρα ὁμοίως τοῖς χαλκώμασι τοῖς κορινθιουργέσιν, εἴτ' ἐπαύσαντο τῆς σπουδῆς, ἐκλιπόντων τῶν ὁστράκων καὶ οὐδὲ κω-
τωρθωμένων τῶν πλείστων. ἡ μὲν δὴ πόλις ἡ τῶν
5 Κορινθίων μεγάλη τε καὶ πλουσία διὰ παντὸς ὑπῆρ-
ξεν, ἀνδρῶν τε ἡνυπόρησεν ἀγαθῶν εἰς τε τὰ πολιτικά
καὶ εἰς τὰς τέχνας τὰς δημιουργικὰς· μάλιστα γὰρ καὶ
ἐνταῦθα καὶ ἐν Σικυῶνι ἡνυξήθη γραφικὴ τε καὶ πλα-
στικὴ καὶ πᾶσα ἡ τοιαύτη δημιουργία. χώραν δ' ἔσχευ
10 οὐκ εὖ γεων σφόδρα, ἀλλὰ σκολιάν τε καὶ τραχεῖαν, ἀφ'
οὗ πάντες ὀφρύνοντα Κόρινθον εἰρήκασιν καὶ παροι-
μιάζονται „Κόρινθος ὀφρυνᾷ τε καὶ κοιλαίνεται.“

Ὁρνεαὶ δ' εἰσὶν ἐπώνυμοι τῷ παραρρέοντι ποτα- 24
μῷ, νῦν μὲν ἔρημοι πρότερον δ' οἰκούμεναι καλῶς,
15 ἱερὸν ἔχουσαι Πριάπου τιμώμενον, ἀφ' ὧν καὶ ὁ τὰ
Πριάπεια ποιήσας Εὐφορίων Ὁρνεάτην καλεῖ τὸν
θεόν· κεῖνται δ' ὑπὲρ τοῦ πεδίου τοῦ Σικυωνίων, τὴν
δὲ χώραν ἔσχον Ἀργεῖοι. Ἀραιθυρέα δ' ἐστὶν ἡ νῦν
Φλιασία καλουμένη, πόλιν δ' εἶχεν ὁμώνυμον τῇ χώρᾳ
20 πρὸς ὄρει Κηλώσση· οἱ δ' ὕστερον ἀναστάντες ἐκεῖ-
θεν πρὸ τριάκοντα σταδίων ἔκτισαν πόλιν, ἣν ἐκάλε-
σαν Φλιοῦντα· τῆς δὲ Κηλώσσης μέρος ὁ Καρνεάτης,
ὅθεν λαμβάνει τὴν ἀρχὴν Ἀσωπὸς ὁ παραρρέων τὴν
Σικυῶνα καὶ ποιῶν τὴν Ἀσωπίαν χώραν, μέρος οὗ-
25 σαν τῆς Σικυωνίας. ἔστι δ' Ἀσωπὸς καὶ ὁ παρὰ Θήβας
ῥέων καὶ Πλαταιὰς καὶ Τάναγραν, ἄλλος δ' ἐστὶν ἐν
Ἡρακλείᾳ τῇ Τραχινίᾳ παρὰ κώμην ῥέων ἣν Παρασω-
πίους ὀνομάζουσι, τέταρτος δ' ὁ ἐν Πάρῳ. κεῖται δ'
ὁ Φλιοῦς ἐν μέσῳ Σικυωνίας Ἀργείας Κλεωνῶν καὶ
30 Στυμφάλου κύκλῳ περιεχόμενος· τιμᾶται δ' ἐν Φλι-
οῦντι καὶ Σικυῶνι τὸ τῆς Δίης ἱερὸν· καλοῦσι δ' οὕτω
τὴν Ἥβην.

25 Τὴν δὲ Σικυῶνα πρότερον Μηκῶνην ἐκάλουν, ἔτι δὲ πρότερον Αἰγιαλεῖς· ἀνῴκισε δ' αὐτὴν ἀπὸ θαλάττης ὅσον εἴκοσι σταδίοις (οἱ δὲ δώδεκά φασιν) ἐπὶ λόφον ἐρυμνὸν Δημήτριος· τὸ δὲ παλαιὸν κτίσμα ἐπινειὸν ἐστὶν ἔχον λιμένα. ὀρίζει δὲ τὴν Σικυωνίαν καὶ 5 τὴν Κορινθίαν ποταμὸς Νεμέα· ἐτυραννήθη δὲ πλεῖστον χρόνον, ἀλλ' αἶε τοὺς τυράννους ἐπιεικεῖς ἄνδρας ἔσχεν, "Αρατον δ' ἐπιφανέστατον, ὃς καὶ τὴν πόλιν ἡλευθέρωσε, καὶ Ἀχαιῶν ἤρξε παρ' ἐκόντων λαβὼν τὴν ἐξουσίαν, καὶ τὸ σύστημα ἠΐξησε προσθεὶς αὐτῷ 10 C.383 τὴν τε πατρίδα καὶ τὰς ἄλλας πόλεις τὰς ἐγγύς. Ὑπερησίων δὲ καὶ τὰς ἐξῆς πόλεις αἷς ὁ ποιητὴς λέγει, καὶ τὸν Αἰγιάλωνα τῶν Ἀχαιῶν ἥδη συμβέβηκεν εἶναι μέχρι Δύμης καὶ τῶν ὄρων τῆς Ἡλείας.

7 Ταύτης δὲ τῆς χώρας τὸ μὲν παλαιὸν Ἴωνες ἐκρά- 15 τουν, ἐξ Ἀθηναίων τὸ γένος ὄντες, ἐκαλεῖτο δὲ τὸ μὲν παλαιὸν Αἰγιάλεια καὶ οἱ ἐνοικοῦντες Αἰγιαλεῖς, ὕστερον δ' ἀπ' ἐκείνων Ἴωνία, καθάπερ καὶ ἡ Ἀττική, ἀπὸ Ἴωνος τοῦ Ξούθου. φασὶ δὲ Δευκαλίωνος μὲν Ἑλληνα εἶναι, τοῦτον δὲ περὶ τὴν Φθίαν τῶν μεταξὺ Πηνειοῦ 20 καὶ Ἀσωποῦ δυναστεύοντα τῷ πρεσβυτάτῳ τῶν παίδων παραδοῦναι τὴν ἀρχήν, τοὺς δ' ἄλλους ἔξω διὰ πέμψαι ζητήσοντας ἰδρυσιν ἕκαστον αὐτῷ· ὦν Δῶρος μὲν τοὺς περὶ Παρνασσὸν Δωριέας συνοικίσας κατέλιπεν ἐπωνύμους αὐτοῦ, Ξοῦθος δὲ τὴν Ἐρεχθίδος θυ- 25 γατέρα γήμας ᾤκισε τὴν τετράπολιν τῆς Ἀττικῆς, Οἰνόην Μαραθῶνα Προβάλινθον καὶ Τρικόρυνθον. τῶν δὲ τούτου παίδων Ἀχαιοὺς μὲν φόνον ἀκούσιον πράξας ἐφυγεν εἰς Λακεδαιμόνα καὶ Ἀχαιοὺς τοὺς ἐκεῖ κληθῆναι παρεσκεύασεν, Ἴων δὲ τοὺς μετ' Εὐμόλπου νι- 30 κήσας Θοῤῃκας οὕτως ἠΐδοκίμησεν ὥστ' ἐπέτρεψαν αὐτῷ τὴν πολιτείαν Ἀθηναῖοι. ὁ δὲ πρῶτον μὲν εἰς

τέτταρας φυλάς διείλε τὸ πλῆθος, εἶτα εἰς τέτταρας
 βίους· τοὺς μὲν γὰρ γεωργοὺς ἀπέδειξε τοὺς δὲ δημι-
 ουργοὺς τοὺς δὲ ἱεροποιούς, τετάρτους δὲ τοὺς φύλα-
 κας· τοιαῦτα δὲ πλείω διατάξας τὴν χώραν ἐπώνυμον
 5 ἑαυτοῦ κατέλιπεν. οὕτω δὲ πολυανδρῆσαι τὴν χώραν
 τότε συνέπεσεν ὥστε καὶ ἀποικίαν τῶν Ἰώνων ἔστειλαν
 εἰς Πελοπόννησον Ἀθηναῖοι, καὶ τὴν χώραν ἣν κατέ-
 σχον ἐπώνυμον ἑαυτῶν ἐποίησαν Ἰωνίαν ἀντ' Αἰγιάλου
 κληθεῖσαν, οἳ τε ἄνδρες ἀντὶ Αἰγιάλεων Ἴωνες προσ-
 10 ηγορεύθησαν εἰς δώδεκα πόλεις μερισθέντες. μετὰ δὲ
 τὴν Ἡρακλειδῶν κάθοδον ὑπ' Ἀχαιῶν ἐξελαθέντες
 ἐπανῆλθον πάλιν εἰς Ἀθήνας· ἐκεῖθεν δὲ μετὰ τῶν
 Κοδριδῶν ἔστειλαν τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰς τὴν Ἀσί-
 15 αν· ἔκτισαν δὲ δώδεκα πόλεις ἐν τῇ παραλίᾳ τῆς Κα-
 ρίας καὶ τῆς Λυδίας, εἰς τοσαῦτα μέρη διελόντες σφᾶς
 ὅσα καὶ ἐν τῇ Πελοποννήσῳ κατεῖχον. οἳ δ' Ἀχαιοὶ
 Φθιώται μὲν ἦσαν τὸ γένος, ὥκησαν δ' ἐν Λακεδαι-
 μוני, τῶν δ' Ἡρακλειδῶν ἐπικρατησάντων ἀναλη-
 φθέντες ὑπὸ Τισαμενοῦ τοῦ Ὀρέστου παιδός, ὡς προ-
 20 ειρήκαμεν, τοῖς Ἰωσιν ἐπέθεντο, καὶ γενόμενοι κρεῖτ-
 τούς τοὺς μὲν ἐξέβαλον, αὐτοὶ δὲ κατέσχον τὴν γῆν,
 καὶ διεφύλαξαν τὸν αὐτὸν τῆς χώρας μερισμὸν ὅνπερ
 καὶ παρῆλθον. οὕτω δ' ἴσχυσαν ὥστε τὴν ἄλλην Πε-0.384
 λοπόννησον ἔχόντων τῶν Ἡρακλειδῶν ὧν ἀπέστη-
 25 σαν, ἀντειχον ὅμως πρὸς ἅπαντας Ἀχαιοὺς ὀνομάσαν-
 τες τὴν χώραν. ἀπὸ μὲν οὖν Τισαμενοῦ μέχρι Ὠγύγου
 βασιλευόμενοι διετέλουν· εἶτα δημοκρατηθέντες το-
 σοῦτον ἡῦδοκίμησαν περὶ τὰς πολιτείας ὥστε τοὺς Ἰτα-
 λιώτας μετὰ τὴν στάσιν τὴν πρὸς τοὺς Πυθαγορείους
 30 τὰ πλείστα τῶν νομίμων μετενέγκασθαι παρὰ τούτων
 συνέβη· μετὰ δὲ τὴν ἐν Λεύκτροις μάχην ἐπέτρεψαν
 Θηβαῖοι τούτοις τὴν δίαιταν περὶ τῶν ἀντιλεγομένων

ταῖς πόλεσι πρὸς ἀλλήλας· ὕστερον δ' ὑπὸ Μακεδόνων λυθείσης τῆς κοινωνίας ἀνέλαβον σφᾶς πάλιν κατὰ μικρόν· ἤρξαν δὲ Πύρρου στρατεύσαντος εἰς Ἰταλίαν τέτταρες συνιοῦσαι πόλεις, αἷν ἦσαν Πάτραι καὶ Δύμη· εἰτα προσελάμβανόν τινες τῶν δῶδεκα 5 πλὴν Ὀλλέου καὶ Ἑλίκης, τῆς μὲν οὐ συνελθούσης τῆς 2 δ' ἀφανισθείσης ὑπὸ κύματος. ἐξαρθὲν γὰρ ὑπὸ σεισμοῦ τὸ πέλαγος κατέκλυσε καὶ αὐτὴν καὶ τὸ λερὸν τοῦ Ἑλικωνίου Ποσειδῶνος, ὃν καὶ νῦν ἐτι τιμῶσιν Ἴωνες, καὶ θύουσιν ἐκεῖ τὰ Πανιώνια. μέμνηται δ', ὥς ὑπο- 10 νοοῦσί τινες, ταύτης τῆς θυσίας Ὅμηρος ὅταν φῇ „αὐτὰρ ὁ θυμὸν αἰσθε καὶ ἥρυγεν, ὥς ὅτε ταῦρος „ἥρυγεν ἐλκόμενος Ἑλικώνιον ἀμφὶ ἄνακτα.“ τεκμαίρονται τε νεώτερον εἶναι τῆς Ἴωνικῆς ἀποικίας τὸν ποιητὴν, μεμνημένον γε τῆς Πανιωνικῆς θυσίας ἣν ἐν 15 τῇ Πριηνέων χώρᾳ συντελοῦσιν Ἴωνες τῷ Ἑλικωνίῳ Ποσειδῶνι, ἐπεὶ καὶ αὐτοὶ οἱ Πριηνεῖς ἐξ Ἑλίκης εἶναι λέγονται· καὶ δὴ πρὸς τὴν θυσίαν ταύτην καθιστᾷσιν ἄνδρα νέον Πριηνέα τὸν τῶν λερῶν ἐπιμελησόμενον. τεκμηριοῦνται δ' ἐτι μᾶλλον τὸ προκείμενον ἐκ τῶν 20 περὶ τοῦ ταύρου πεφρασμένων· τότε γὰρ νομίζουσι καλλιερεῖν περὶ τὴν θυσίαν ταύτην Ἴωνες, ὅταν θυόμενος ὁ ταῦρος μυκήσῃται. οἱ δ' ἀντιλέγοντες μεταφέρουσιν εἰς τὴν Ἑλίκην τὰ λεχθέντα τεκμήρια περὶ τοῦ ταύρου καὶ τῆς θυσίας, ὥς ἐκεῖ νενομισμένων τού- 25 των καὶ τοῦ ποιητοῦ παραβάλλοντος τὰ ἐκεῖ συντελούμενα. κατεκλύσθη δ' ἡ Ἑλίκη δυσὶν ἔτεσι πρὸ τῶν Δευκτρικῶν. Ἐρατοσθένους δὲ καὶ αὐτὸς ἰδεῖν φησι τὸν τόπον, καὶ τοὺς πορθμέας λέγειν ὥς ἐν τῷ πόρῳ ὀρθὸς ἐστήκει Ποσειδῶν χάλκεος, ἔχων ἱππόκαμπον 30 ἐν τῇ χειρὶ κίνδυνον φέροντα τοῖς δικτυεῦσιν. Ἡρακλείδης δὲ φησι κατ' αὐτὸν γενέσθαι τὸ πάθος νύκτωρ,

δώδεκα σταδίους διεχούσης τῆς πόλεως ἀπὸ θαλάττης^{C.385}
καὶ τούτου τοῦ χωρίου παντὸς σὺν τῇ πόλει καλυφθέν-
τος, δισχιλίους δὲ παρὰ τῶν Ἀχαιῶν πεμφθέντας ἀνε-
λέσθαι μὲν τοὺς νεκροὺς μὴ δύνασθαι, τοῖς δ' ὁμόροις
5 νεῖμαι τὴν χώραν. συμβῆναι δὲ τὸ πάθος κατὰ μῆνιν
Ποσειδῶνος· τοὺς γὰρ ἐκ τῆς Ἑλίκης ἐκπεσόντας Ἴω-
νας αἰτεῖν πέμψαντας παρὰ τῶν Ἑλικέων μάλιστα μὲν
τὸ βρέτας τοῦ Ποσειδῶνος, εἰ δὲ μή, τοῦ γε ἱεροῦ τὴν
ἀφίδρυσιν· οὐ δόντων δὲ πέμψαι πρὸς τὸ κοινὸν τῶν
10 Ἀχαιῶν· τῶν δὲ ψηφισαμένων οὐδ' ὥς ὑπακοῦσαι·
τῷ δ' ἑξῆς χειμῶνι συμβῆναι τὸ πάθος, τοὺς δ' Ἀχαι-
οὺς ὕστερον δοῦναι τὴν ἀφίδρυσιν τοῖς Ἴωσιν. Ἡσιό-
δος δὲ καὶ ἄλλης Ἑλίκης μέμνηται Θετταλικῆς.

Εἰκοσι μὲν δὴ ἔτη διετέλεσαν γραμματέα κοινὸν ³
15 ἔχοντες καὶ στρατηγοὺς δύο κατ' ἐνιαυτὸν οἱ Ἀχαιοί,
καὶ κοινοβούλιον εἰς ἓνα τόπον συνήγετο αὐτοῖς (ἐκα-
λεῖτο δὲ Ἀμάριον) ἐν ᾧ τὰ κοινὰ ἐχρημάτιζον καὶ οὗτοι
καὶ Ἴωνες πρότερον· εἶτα ἔδοξεν ἓνα χειροτονεῖσθαι
στρατηγόν. Ἄρατος δὲ στρατηγῆσας ἀφείλετο Ἀντίγο-
20 νον τὸν Ἀκροκόρινθον, καὶ τὴν πόλιν τοῖς Ἀχαιοῖς
προσέθηκε καθάπερ καὶ τὴν πατρίδα· προσελάβετο δὲ
καὶ Μεγαρέας· καὶ τὰς παρ' ἐκάστοις τυραννίδας κα-
ταλύων Ἀχαιοὺς ἐποίει τοὺς ἐλευθερωθέντας
τὴν δὲ Πελοπόννησον ἡλευθέρωσε τῶν τυραννίδων,
25 ὥστε καὶ Ἄργος καὶ Ἐρμιῶν καὶ Φλιοῦς καὶ Μεγάλη
πόλις, ἡ μεγίστη τῶν ἐν Ἀρκαδίᾳ, προσετέθη τοῖς
Ἀχαιοῖς, ὅτε δὴ καὶ πλεῖστον ἠϋξήντο. ἦν δ' ὁ καιρὸς
ἡνίκα Ῥωμαῖοι Καρχηδονίους ἐκ τῆς Σικελίας ἐκβα-
λόντες ἐστράτευσαν ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν Πάδον Γαλάτας.
30 μέχρι δὲ τῆς Φιλοποίμενος στρατηγίας συμμεῖναντες
ἱκανῶς οἱ Ἀχαιοὶ διελύθησαν κατ' ὀλίγον, ἥδη Ῥω-
μαίων ἐχόντων τὴν Ἑλλάδα σύμπασαν καὶ οὐ τὸν αὐτὸν

τρόπον ἐκάστοις χρωμένων, ἀλλὰ τοὺς μὲν συνέχειν τοὺς δὲ καταλύειν βουλομένων

- 4 Ἡ δὲ τάξις τῶν τόπων, οὓς κατῴκουν εἰς δώδεκα μέρη διηρημένοι, τοιαύτη τίς ἐστι· μετὰ Σικυῶνα Πελλήνη κείται· εἴτα Αἰγείρα δευτέρα· τρίτη Αἰγαί, Πο- 5 σειδῶνος ἱερὸν ἔχουσα· τετάρτη Βοῦρα· μετ' αὐτὴν Ἑλλίκη, εἰς ἣν καταπεφύγεισαν Ἴωνες, μάχη κρατηθέντες ὑπ' Ἀχαιῶν, καὶ τὸ τελευταῖον ἐξέπεσον ἐνθύν-
C.386δε· μετὰ δὲ Ἑλλίκην Αἶγιον καὶ Ῥύπες καὶ Πατρεῖς καὶ Φαρεῖς· εἴτ' Ὡλενος, παρ' ὃν ποταμὸς μέγας * Μέλας· 10 εἴτα Δύμη καὶ Τριταιεῖς. οἱ μὲν οὖν Ἴωνες κωμηδὸν ὦκουν, οἱ δ' Ἀχαιοὶ πόλεις ἔκτισαν, ὧν εἰς τινὰς ὕστερον συνώκισαν καὶ ἐκ τῶν ἄλλων μερίδων ἐνίας, καθάπερ τὰς Αἰγὰς εἰς Αἰγείραν (Αἰγαῖοι δ' ἐλέγοντο οἱ ἐνοικοῦντες), Ὡλενον δὲ εἰς Δύμην. δείκνυται δ' ἔκκη 15 μεταξὺ Πατρῶν καὶ Δύμης τοῦ παλαιοῦ τῶν Ὡλενίων κτίσματος· αὐτοῦ δὲ καὶ τὸ τοῦ Ἀσκληπιοῦ ἱερὸν ἐπίσημον, [δ] Δύμης μὲν ἀπέχει τετταράκοντα σταδίου, Πατρῶν δὲ ὀγδοήκοντα. ὁμώνυμοι δ' εἰσὶ ταῖς μὲν Αἰγαῖς ταύταις αἱ ἐν Εὐβοίᾳ, τῷ δὲ Ὡλένῳ τὸ ἐν Αἰτῶ- 20 λίᾳ κτίσμα καὶ αὐτὸ ἔκκη σῶζον μόνον. ὁ δὲ ποιητὴς τοῦ μὲν ἐν Ἀχαΐᾳ Ὡλένου οὐ μέμνηται, ὥσπερ οὐδ' ἄλλων πλειόνων τῶν περὶ τὸν Αἰγιαλὸν οἰκούντων, ἀλλὰ κοινότερον λέγει „Αἰγιαλὸν τ' ἀνὰ πάντα καὶ „ἄμφ' Ἑλλίκην εὐρεῖαν.“ τοῦ δ' Αἰτωλικοῦ μέμνηται 25 ὅταν φῇ „οὐ Πλευρῶν' ἐνέμοντο καὶ Ὡλενον.“ τὰς δ' Αἰγὰς ἀμφοτέρως λέγει, τὴν μὲν Ἀχαϊκὴν „οἱ δέ τοι „εἰς Ἑλλίκην τε καὶ Αἰγὰς δῶρ' ἀνάγουσι.“ ὅταν δὲ φῇ

2. post βουλομένων: εἴτα λέγει αἰτίαν τοῦ ἐμπλατύνεσθαι τοῖς περὶ Ἀχαιῶν λόγοις τὸ ἐπὶ τοσοῦτον ἀύξηθέντας, ὥς καὶ Λακεδαιμονίους ὑπερβαλέσθαι, μὴ ἀξίως γνωρίζεσθαι.

„Αίγας, ἔνθα τέ οἱ κλυτὰ δῶματα βένθεσι λίμνης·
 „ἔνθ' ἱππους ἔστησε Ποσειδάων,“ βέλτιον δέχεσθαι τὰς
 ἐν Εὐβοίᾳ, ἀφ' ὧν εἰκὸς καὶ τὸ πέλαγος Αἰγαῖον λε-
 χθῆναι· ἐκεῖ δὲ καὶ τῷ Ποσειδῶνι ἡ πραγματεία πε-
 5 ποίηται ἡ περὶ τὸν Τρωικὸν πόλεμον. πρὸς δὲ ταῖς
 Ἀχαῖκαῖς Αἰγαῖς ὁ Κραῖθις ῥεῖ ποταμὸς ἐκ θυνεῖν ποτα-
 μῶν ἀνυόμενος, ἀπὸ τοῦ κίρνασθαι τὴν ὀνομασίαν
 ἔχων· ἀφ' οὗ καὶ ὁ ἐν Ἰταλίᾳ Κραῖθις.

Ἐκάστη δὲ τῶν δώδεκα μερίδων ἐκ δήμων συνει- 5
 10 στήκει ἐπτὰ καὶ ὀκτώ· τοσοῦτον εὐανδρεῖν τὴν χώραν
 συνέβαινε. ἔστι δ' ἡ Πελλήνη στάδια ἐξήκοντα τῆς
 θαλάττης ὑπερκείμενη, φρούριον ἐρυμνόν. ἔστι δὲ καὶ
 κόμη Πελλήνη, ὅθεν καὶ αἱ Πελληνικαὶ χλαῖναι, αἷς
 καὶ ἄθλα ἐτίθεσαν ἐν τοῖς ἀγῶσι· κεῖται δὲ μετὰ τὴν Αἰ-
 15 γίον καὶ Πελλήνης· τὰ δὲ Πέλλανα ἔτερα τούτων ἐστί,
 Λακωνικὸν χωρίον, ὡς πρὸς τὴν Μεγαλοπολῖτιν νεῦον.
 Αἰγείρα δὲ ἐπὶ βουνοῦ κεῖται. Βοῦρα δ' ὑπέρεκειται
 τῆς θαλάττης ἐν τετταράκοντά πωσ σταδίοις, ἣν ὑπὸ
 σεισμῷ καταποθῆναι συνέβη. ἀπὸ δὲ τῆς ἐνταῦθα
 20 κρήνης Συβάριδος τὸν κατὰ τὴν Ἰταλίαν ποταμὸν ὀνο-
 μασθῆναί φασιν. ἡ δ' Αἶγα (καὶ γὰρ οὕτω λέγουσι τὰς C.387
 Αἰγὰς) νῦν μὲν οὐκ οἰκεῖται, τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν Αἰ-
 γιεῖς. Αἶγιον δὲ ἱκανῶς οἰκεῖται· ἱστοροῦσι δ' ἐνταῦθα
 τὸν Δία ὑπ' αἰγὸς ἀνατραφῆναι, καθάπερ φησὶ καὶ
 25 Ἀρατος „αἰεὶ ἱερῇ, τὴν μὲν τε λόγος Διὶ μαζὸν ἐπι-
 „σχεῖν.“ ἐπιλέγει δὲ καὶ ὅτι „Ὠλενίην δέ μιν αἶγα Διὸς
 καλέουσ' ὑποφῆται“ δηλῶν τὸν τόπον διότι πλησίον
 Ὠλένης. αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ Κερύνεια ἐπὶ πέτρᾳ ὑψηλῆς
 ἰδρυμένη. Αἰγίεων δ' ἐστὶ καὶ ταῦτα καὶ Ἑλίκη καὶ τὸ
 30 τοῦ Διὸς ἄλλος τὸ Ἀμάριον, ὅπου συνήεσαν οἱ Ἀχαιοὶ
 βουλευσόμενοι περὶ τῶν κοινῶν. ῥεῖ δὲ διὰ τῆς Αἰ-
 γιέων ὁ Σελινοῦς ποταμός, ὁμώνυμος τῷ τε ἐν Ἐφέσῳ

παρὰ τὸ Ἀρτεμίδιον ῥέοντι, καὶ τῷ ἐν τῇ νῦν Ἠλείᾳ τῷ
 παραρρέοντι τὸ χωρίον ὃ φησιν ὠνήσασθαι τῇ Ἀρτέ-
 μιδι Ξενοφῶν κατὰ χρῆσμον· ἄλλος δὲ Σελινοῦς ὁ
 παρὰ τοῖς Ὑβλαίοις Μεγαρεῦσιν, οὓς ἀνέστησαν Καρ-
 χηδόνιοι. τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν Ἀχαϊκῶν εἴτε 5
 μερίδων Ῥύπες μὲν οὐκ οἰκοῦνται, τὴν δὲ χώραν Ῥυ-
 πίδα καλουμένην ἔσχον Αἰγίεις καὶ* Φαριεῖς· ἐκ δὲ τῶν
 Ῥυπῶν ἦν ὁ Μύσκελλος ὁ Κρότωνος οἰκιστής· τῆς δὲ
 Ῥυπίδος καὶ τὸ Λεῦκτρον ἦν, δῆμος τῶν Ῥυπῶν. μετὰ
 δὲ τούτους Πάτραι πόλις ἀξιόλογος· μεταξὺ δὲ τὸ Ῥίον 10
 ἀπέχον Πατρῶν στάδια τετταράκοντα. Ῥωμαῖοι δὲ νε-
 ωστὶ μετὰ τὴν Ἀκτιακὴν νίκην ἰδρυσαν αὐτόθι τῆς
 στρατιᾶς μέρος ἀξιόλογον, καὶ διαφερόντως εὐανδρεῖ
 νῦν ἀποικία Ῥωμαίων οὖσα· ἔχει δὲ ὕφορμον μέτριον.
 ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ἡ Δύμη, πόλις ἀλίμενος, πασῶν δυσμι- 15
 κωτάτη, ἀφ' οὗ καὶ τοῦνομα· πρότερον δ' ἐκαλεῖτο
 Στράτος· διαιρεῖ δ' αὐτὴν ἀπὸ τῆς Ἠλείας κατὰ Βου-
 πράσιον ὁ Λάρισος ποταμός, ῥέων ἐξ ὄρους· τοῦτο
 δ' οἱ μὲν Σκόλλιν καλοῦσιν, Ὅμηρος δὲ πέτρην Ὀλε-
 νίην. τοῦ δ' Ἀντιμάχου Καυκωνίδα τὴν Δύμην εἰπόν- 20
 τος, οἱ μὲν ἐδέξαντο ἀπὸ τῶν Καυκῶνων ἐπιθέτως εἰ-
 ρῆσθαι αὐτὸ μέχρι δεῦρο καθηκόντων, καθάπερ ἐπά-
 νω προείπομεν· οἱ δ' ἀπὸ Καύκωνος ποταμοῦ τινος,
 ὡς αἱ Θῆβαι Διοκαῖαι καὶ Ἀσωπίδες, Ἄργος δ' Ἰνά-
 χειον, Τροία δὲ Σιμουντίς. δέδεκται δ' οἰκήτορας καὶ 25
 ἡ Δύμη μικρὸν πρὸ ἡμῶν ἀνθρώπους μιγάδας, οὓς
 0.388 ἀπὸ τοῦ πειρατικοῦ πλήθους περιλιπεῖς ἔσχε Πομπή-
 ιος, καταλύσας τὰ ληστήρια καὶ ἰδρύσας τοὺς μὲν ἐν
 Σόλοις τοῖς Κιλικίοις τοὺς δ' ἄλλοθι καὶ δὴ καὶ ἐν-

7. post Φαριεῖς: καὶ Αἰαχύλος δὲ λέγει πον „Βουραν δ
 „λερὰν καὶ κεραννίας Ῥύπας.“ 10. post Ῥίον: καὶ τὸ Ἀντίρ-
 ριον

ταῦθα. ἡ δὲ Φάρα συνορεῖ μὲν τῇ Λυμαίᾳ. καλοῦνται δὲ οἱ μὲν ἐκ ταύτης τῆς Φάρας * Φαριεῖς, οἱ δ' ἐκ τῆς Μεσσηνιακῆς Φαραιᾶται· ἔστι δ' ἐν τῇ Φαραῖκῇ Δίρκῃ κρήνη ὁμώνυμος τῇ ἐν Θήβαις. ἡ δ' Ὁλενος ἔστι μὲν 5 ἔρημος, κεῖται δὲ μεταξὺ Πατρῶν καὶ Λύμης· ἔχουσι δὲ Λυμαῖοι τὴν χώραν. εἴτ' Ἀραξος, τὸ ἀκρωτήριον τῆς Ἠλείας, ἀπὸ Ἰσθμοῦ στάδιοι χίλιοι [τριᾶκοντα].

Ἀρκαδία δ' ἔστιν ἐν μέσῳ μὲν τῆς Πελοποννήσου, 8 πλείστην δὲ χώραν ὀρεινὴν ἀποτεμένεται. μέριστον δ' ὄρος ἐν αὐτῇ Κυλλήνῃ· τὴν γοῦν κάθεται οἱ μὲν εἰκοσι σταδίων φασὶν οἱ δ' ὅσον πεντεκαίδεκα. δοκεῖ δὲ παλαιότατα ἔθνη τῶν Ἑλλήνων εἶναι τὰ Ἀρκαδικά, Ἀζᾶνές τε καὶ Παρράσιοι καὶ ἄλλοι τοιοῦτοι. διὰ δὲ τὴν 15 τῆς χώρας παντελεῖ κάκωσιν οὐκ ἂν προσήκοι μακρολογεῖν περὶ αὐτῶν· αἱ τε γὰρ πόλεις ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων ἠφανίσθησαν ἐνδοξοὶ γενόμεναι πρότερον, τὴν τε χώραν οἱ γεωργήσαντες ἐκλελοίπασιν ἔξ ἐκείνων ἔτι τῶν χρόνων ἔξ ὧν εἰς τὴν προσαγορευθεῖσαν Μεγάλην πόλιν αἱ πλεῖσται συνωκίσθησαν. νυνὶ δὲ 20 καὶ αὐτὴ ἡ Μεγάλη πόλις τὸ τοῦ κωμικοῦ πέπονθε καὶ „ἐρημία μεγάλη ἔστιν ἡ Μεγάλη πόλις.“ βοσκήμασι δ' εἰσὶ νομαὶ θαψιλεῖς, καὶ μάλιστα ἵπποις καὶ ὄνοις τοῖς ἱπποβάτοις· ἔστι δὲ καὶ τὸ γένος τῶν ἵππων ἄριστον τὸ Ἀρκαδικόν, καθάπερ καὶ τὸ Ἀργολικόν καὶ τὸ Ἐπι- 25 δαύριον. καὶ ἡ τῶν Αἰτωλῶν δὲ καὶ Ἀκαρνανῶν ἐρημία πρὸς ἱπποτροφίαν εὐφυῆς γέγονεν οὐχ ἥττον τῆς Θετταλίας.

Μαντίνειαν μὲν οὖν ἐποίησεν ἐνδοξον Ἐπαμεινών- 2 δας, τῇ δευτέρᾳ νικήσας μάχῃ Λακεδαιμονίους ἐν ἧ καὶ 30 αὐτὸς ἐτελεύτα. καὶ αὕτη δὲ καὶ Ὀρχομενὸς καὶ Ἡραία καὶ Κλείτωρ καὶ Φενεὸς καὶ Στύμφαλος καὶ Μαίναλος καὶ Μεθύδιον καὶ Καφνεῖς καὶ Κύναιθα ἣ οὐκέτ' εἰσὶν

ἢ μόλις αὐτῶν ἴχνη φαίνεται καὶ σημεῖα. Τεγέα δ' ἔτι μετρίως συμμένει καὶ τὸ ἱερὸν τῆς Ἀλέας Ἀθηνᾶς· τιμᾶται δ' ἐπὶ μικρὸν καὶ τὸ τοῦ Ἀνκαίου Διὸς ἱερὸν κατὰ τὸ Ἀνκαῖον [μέγιστον] ὄρος. τῶν δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένων „Ρίπην τε Στρατίην τε καὶ ἡνεμόεσ- 5 „σαν Ἐνίσπην“ εὐρεῖν τε χαλεπὸν καὶ εὐροῦσιν οὐδὲν ὄφελος διὰ τὴν ἐρημίαν.

3 Ὅρη δ' ἐπιφανῇ πρὸς τῇ Κυλλήνῃ Φολόῃ τε καὶ
C.389 Ἀνκαῖον καὶ Μαίναλος καὶ τὸ Παρθένιον καλούμενον
καθῆκον ἐπὶ τὴν Ἀργεῖαν ἀπὸ τῆς Τεγεάτιδος. 10

4 Περὶ δὲ τοῦ Ἀλφειοῦ καὶ τοῦ Εὐρώτα τὸ συμβε-
βηκὸς παράδοξον εἴρηται καὶ τὸ περὶ Ἐρασῖνον τὸν ἐκ-
διδόντα ἐκ τῆς Στυμφαλίδος λίμνης εἰς τὴν Ἀργεῖαν
νυνί, πρότερον δ' οὐκ ἔχοντα ἔκρυσιν, τῶν βερέθρων,
ἀ καλοῦσιν οἱ Ἀρκάδες ξέρεθρα, τυφλῶν ὄντων καὶ μὴ 15
δεχομένων ἀπέρασιν ὥστε τὴν τῶν Στυμφαλίων πόλιν
νῦν μὲν καὶ πεντήκοντα διέχειν σταδίους ἀπὸ τῆς λί-
μνης, τότε δ' ἐπ' αὐτῆς κείσθαι. τὰναντία δ' ὁ Λάδων
ἔπαθε τοῦ ρεύματος ἐπισχεθέντος ποτὲ διὰ τὴν ἔμ-
φραξιν τῶν πηγῶν· συμπεσόντα γὰρ τὰ περὶ Φενεὸν 20
βέρεθρα ὑπὸ σεισμοῦ, δι' ὧν ἦν ἡ φορά, μονὴν ἐποί-
ησε τοῦ ρεύματος μέχρι τῶν κατὰ βάθους φλεβῶν τῆς
πηγῆς. καὶ οἱ μὲν οὕτω λέγουσιν· Ἐρατοσθένους δέ
φησι περὶ Φενεὸν μὲν τὸν Ἀνίαν καλούμενον ποταμὸν
λιμνάζειν τὰ πρὸ τῆς πόλεως, καταδύεσθαι δ' εἰς τινὰς 25
ἡθμοὺς οὓς καλεῖσθαι ξέρεθρα· τούτων δ' ἐμφρα-
χθέντων ἔσθ' ὅτε ὑπερχεῖσθαι τὸ ὕδωρ εἰς τὰ πεδία,
πάλιν δ' ἀναστομουμένων ἄθρου ἐκ τῶν πεδίων ἐκ-
πεσὸν εἰς τὸν Λάδωνα καὶ τὸν Ἀλφειὸν ἐμβάλλειν,
ὥστε καὶ τῆς Ὀλυμπίας κλυσθῆναι ποτε τὴν περὶ τὸ 30
ἱερὸν γῆν, τὴν δὲ λίμνην συσταλῆναι· τὸν Ἐρασῖνον
δὲ παρὰ Στυμφάλου ρέοντα ὑποδύντα ὑπὸ τὸ ὄρος ἐν

τῇ Ἀργείᾳ πάλιν ἀναφανῆναι· διὸ δὴ καὶ Ἰφικράτη
πολιορκοῦντα τὸν Στύμφαλον καὶ μηδὲν περαίνοντα
ἐπιχειρῆσαι τὴν κατάδυσιν ἀποφράξαι σπόγγους πο-
ρισάμενον πολλούς, παύσασθαι δὲ διοσημίας γενομέ-
5 νης. περὶ Φενεὸν δ' ἔστι καὶ τὸ καλούμενον Στυγὸς
ὔδωρ, λιβάδιον ὀλεθρίου ὕδατος νομιζόμενον ἱερόν.
τοσαῦτα καὶ περὶ Ἀρκαδίας εἰρήσθω.

Πολυβίου δ' εἰρηκότος τὸ ἀπὸ Μαλεῶν ἐπὶ τὰς 5
ἄρκτους μέχρι τοῦ Ἰστροῦ διάστημα περὶ μυρίους στα-
10 δίους, εὐθύνει τοῦτο ὁ Ἀρτεμίδωρος οὐκ ἀτόπως, ἐπὶ
μὲν Αἴγιον χιλίους καὶ [τετρακοσ]ίους εἶναι λέγων ἐκ
Μαλεῶν ὁδόν, ἐνθ' ἐνδε εἰς [Κίρραν πλοῦν] διακοσίων,
ἐνθ' ἐνδε διὰ Ἡρακλείας [εἰς Θυμακούς] πεντακοσίων
ὁδόν, εἶτα εἰς Λάρισαν [καὶ τὸν Πηνειόν] τριακοσίων
15 τετταράκοντα, εἶτα διὰ [τῶν Τεμπῶν ἐπὶ τὰς Πη]νειοῦ
ἐκβολὰς διακοσίων τετταράκον[τα, εἶτα εἰς τὴν Θεσσα]-
λονίκειαν ἑξακοσίων ἑξήκοντα, ἐντεῦ[θεν ἐπ' Ἰστρον
δι' Εἰδομ]ένης καὶ Στόβων καὶ Λαρδανίων τρισχί[λίους
καὶ διακοσί]ους. κατ' ἐκείνον δὴ συμβαίνει τὸ ἐκ [τοῦ
20 Ἰστροῦ ἐπὶ τὰς Μαλ]έας ἑξακισχιλίων πεντακοσίων.
αἷτιον δὲ τούτου τὸ μὴ τὴν σύντομον καταμετρεῖν,
ἀλλὰ τὴν τυχοῦσαν ἣν ἐπορεύθη τῶν στρατηγῶν τις.

Οὐκ ἄτοπον δ' ἴσως καὶ τοὺς οἰκιστὰς προσθεῖναι
τῶν τὴν Πελοπόννησον οἰκούντων, οὓς εἶπεν Ἐφορος,
25 τοὺς μετὰ τὴν Ἡρακλειδῶν ἀνάθοδον· Κορίνθου μὲν
Ἀλήτην, Σικυῶνος δὲ Φάλην, Ἀχαΐας δὲ Τισαμενόν,
Ἥλιδος δ' Ὀξύλον, Μεσσήνης δὲ Κρεσφόντην, Λακε-
δαίμονος δ' Εὐρυσθένη καὶ Προκλῆ, Ἀργούς δὲ Τή-
μενον κ[αὶ Κισσόν, τῶν δὲ] περὶ τὴν Ἀκτὴν Ἀγραῖον
30 καὶ Δημόφοντην.

C.390

1

Περιοδευκόσι δὲ τὴν Πελοπόννησον, ἣν πρώτην
 ἔφαμεν καὶ ἐλαχίστην τῶν συντιθεσῶν τὴν Ἑλλάδα
 χειρρονήσων, ἐφεξῆς ἂν εἴη τὰς συνεχεῖς ἐπελθεῖν. ἦν 5
 δὲ δευτέρα μὲν ἡ προστιθεῖσα τῇ Πελοποννήσῳ τὴν
 Μεγαρίδα, ὥστε τὸν Κρομμυῶνα Μεγαρέων εἶναι καὶ
 μὴ Κορινθίων· τρίτη δὲ ἡ πρὸς ταύτῃ προσλαμβά-
 νουσα τὴν Ἀττικὴν καὶ τὴν Βοιωτίαν καὶ τῆς Φωκίδος
 τι μέρος καὶ τῶν Ἐπικνημιδίων Λοκρῶν. περὶ τούτων 10
 οὖν [λεκτέον]. φησὶ δ' Εὐδόξος, εἰ τις νοήσειεν ἀπὸ
 τῶν Κεραυνίων ὁρῶν ἐπὶ Σούνιον τὸ τῆς Ἀττικῆς
 ἄκρον ἐπὶ τὰ πρὸς ἑω μέρη τεταμένην εὐθεῖαν, ἐν δε-
 ξιά μὲν ἀπολείψειν τὴν Πελοπόννησον ὅλην πρὸς νό-
 τον, ἐν ἀριστερᾷ δὲ καὶ πρὸς τὴν ἄρκτον τὴν ἀπὸ τῶν 15
 Κεραυνίων ὁρῶν συνεχεῇ παραλίαν μέχρι τοῦ Κρισαίου
 κόλπου καὶ τῆς Μεγαρίδος καὶ συμπάσης τῆς Ἀττικῆς·
 νομίζει δ' οὐδ' ἂν κ[οιλαίνεσθαι οὕτως] τὴν ἡύονα τὴν
 ἀπὸ Σουνίου μέχρι [τοῦ Ἰσθμοῦ ὥστε μεγάλην] ἔχειν
 ἐπιστροφὴν, εἰ μὴ προσῇ τῇ [ἡύονι ταύτῃ καὶ] τὰ συν- 20
 εχῇ τῷ Ἰσθμῷ χωρία τὰ [ποιοῦντα τὸν κόλπον τὸν]
 Ἑρμιονικὸν καὶ τὴν Ἀκτὴν· ὥς δ' αὐ[τῶς οὐδ' ἂν τὴν
 ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ἐπὶ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον
 ἔχειν τινὰ τοσαύτην ἐπιστρο]φὴν ὥστε κοιλαίνεσθαι
 κολποειδῶς καθ' αὐ[τήν, εἰ μὴ τὸ] Ῥίον καὶ τὸ Ἀν- 25
 τίρριον συναγόμενα εἰς στενὸν [ἐπολεῖ τὴν] ἔμφασιν
 ταύτην· ὁμοίως δὲ καὶ τὰ περι[έχοντα] τὸν μυχόν, εἰς
 ἃ καταλήγειν συμβαίνει τὴν [ταύτην] θάλατταν.

2

Οὕτω δ' εἰρηκότος Εὐδόξου, μαθηματικοῦ ἀν-
 C.391δρὸς καὶ σχημάτων ἐμπείρου καὶ κλιμάτων καὶ τοὺς 30
 τόπους τούτους εἰδότος, δεῖ νοεῖν τήνδε τὴν πλευρὰν
 τῆς Ἀττικῆς σὺν τῇ Μεγαρίδι τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι

Ἰσθμοῦ κοίλην μὲν ἄλλ' ἐπὶ μικρόν. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ κατὰ μέσσην πονεὶν τὴν λεχθεῖσαν γραμμὴν ὁ Πειραιεὺς τὸ τῶν Ἀθηναίων ἐπίνειον. διέχει γὰρ τοῦ μὲν Σχοινοῦντος τοῦ κατὰ τὸν Ἰσθμὸν περὶ τριακοσίους πεντή-
 5 κοντα σταδίους, τοῦ δὲ Σουνίου τριάκοντα καὶ τριακοσίους· [τόσ]ον πῶς ἐστὶ διάστημα καὶ τὸ ἐπὶ Πηγὰς ἀπὸ τοῦ Πει[ραιῶς], ὅσον περ καὶ ἐπὶ Σχοινοῦντα· δέκα δ' ὅμως στα[δίοις] πλεονάζειν φασί. κάμψαντι δὲ τὸ Σούνιον πρὸς ἄρκτον μὲν ὁ πλοῦς, ἐκκλίνων [δὲ]
 10 πρὸς δύσιν.

Ἀκτὴ δ' ἐστὶν [ἢ Ἀττικὴ] ἀμφιθάλαττος, στενὴ τὸ 3
 πρῶτον, εἴτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν πλατύνεται, μνηοειδὴ δ' οὐδὲν ἦτον ἐπιστροφὴν λαμβάνει πρὸς Ὠρωπὸν τῆς Βοιωτίας τὸ κυρτὸν ἔχουσαν πρὸς θαλάττῃ· τοῦτο
 15 δ' ἐστὶ τὸ δεύτερον πλευρὸν ἐξ ὧν τῆς Ἀττικῆς. τὸ δὲ λοιπὸν ἤδη τὸ προσάρκτιόν ἐστὶ πλευρὸν ἀπὸ τῆς Ὠρωπίας ἐπὶ δύσιν παρατείνον μέχρι τῆς Μεγαρίδος, ἢ Ἀττικὴ ὀρεινὴ, πολυώνυμός τις, διεύργουσα τὴν Βοιωτίαν ἀπὸ τῆς Ἀττικῆς ὥσθ', ὅπερ εἶπον ἐν τοῖς
 20 πρόσθεν, ἰσθμὸν γίνεσθαι τὴν Βοιωτίαν ἀμφιθάλαττον οὖσαν τῆς τρίτης χειρρονήσου τῆς λεχθείσης, ἀπολαμβάνοντα ἐντὸς τὰ πρὸς τῇ Πελοποννήσῳ τὴν τε Μεγαρίδα καὶ τὴν Ἀττικὴν. διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ἀκτὴν φασὶ λεχθῆναι τὸ παλαιὸν καὶ Ἀττικὴν τὴν νῦν Ἀττι-
 25 κὴν παρονομασθεῖσαν, ὅτι τοῖς ὄρεσιν ὑποπέπτωκε τὸ πλεῖστον μέρος αὐτῆς ἀλιτεὺς καὶ στενόν, μήκει δ' ἀξιολόγῳ κεκρημένον, προπεπτωκὸς μέχρι Σουνίου. ταύτας οὖν διέξιμεν ἀναλα[βόντες πάλιν ἀπὸ τῆς π]α-
 ραλίας ἀφ' ἧσπερ ἀπελίπομεν.

30 Μετὰ δὲ Κρομμυῶνα ὑπέρκεινται τῆς * Ἀττικῆς 4
 αἱ Σκειρωνίδες πέτραι ἀρόδον οὐκ ἀπολείπουσαι πρὸς θαλάττῃ· ὑπὲρ αὐτῶν δ' ἐστὶν ἡ ὁδὸς ἢ ἐπὶ Μεγάρων

καὶ τῆς Ἀττικῆς ἀπὸ τοῦ Ἰσθμοῦ· οὕτω δὲ σφόδρα πλησιάζει ταῖς πέτραις ἡ ὁδὸς ὥστε πολλαχοῦ καὶ πα-
 ράκρημνός ἐστι διὰ τὸ ὑπερκείμενον ὄρος δύσβατόν τε
 καὶ ὑψηλόν· ἐνταῦθα δὲ μυθεύεται τὰ περὶ τοῦ Σκει-
 ρωνος καὶ τοῦ Πιτυοκάμπτου τῶν ληξομένων τὴν λε- 5
 χθεῖσαν ὄρεινήν, οὓς καθεῖλε Θησεύς. ἀπὸ δὲ τῶν
 ἄκρων τούτων καταιγίζοντα σκαιὸν τὸν ἀργέστην σκει-
 ρωνα προσηγορεύουσιν Ἀθηναῖοι. μετὰ δὲ τὰς Σκει-
 ρωνίδας πέτρας ἄκρα πρόκειται Μινῶα ποιοῦσα τὸν
 ἐν τῇ Νισαίᾳ λιμένα. ἡ δὲ Νίσαια ἐπίνειόν ἐστιν τῶν 10
 Μεγάρων δεκαοκτὼ σταδίου τῆς πόλεως διέχον, σκέ-
 C.392 λειν ἐκατέρωθεν συναπτόμενον πρὸς αὐτήν· ἐκα-
 λεῖτο δὲ καὶ τοῦτο Μινῶα.

- 5 Τὸ παλαιὸν μὲν οὖν Ἴωνες εἶχον τὴν χώραν ταύ-
 την οἵπερ καὶ τὴν Ἀττικὴν, οὕτω τῶν Μεγάρων ἐκτι- 15
 σμένων· διόπερ οὐδ' ὁ ποιητὴς μέμνηται τῶν τόπων
 τούτων ἰδίως, ἀλλ' Ἀθηναίους καλῶν τοὺς ἐν τῇ Ἀτ-
 τικῇ πάντας συμπεριεῖληψε καὶ τούτους τῷ κοινῷ ὀνό-
 ματι Ἀθηναίους νομίζων, ὥς ὅταν φῇ ἐν τῷ καταλό-
 γῳ „οἱ δ' ἄρ' Ἀθήνας εἶχον, ἐκτιμέμενον πτολίεθρον“ 20
 δέχεσθαι δεῖ καὶ τοὺς νῦν Μεγαρέας, ὥς καὶ τούτους
 μετασχόντας τῆς στρατείας. σημεῖον δέ· ἡ γὰρ Ἀττικὴ
 τὸ παλαιὸν Ἰωνία καὶ Ἰὰς ἐκαλεῖτο, καὶ ὁ ποιητὴς ὅταν
 φῇ „ἐνθα δὲ Βοιωτοὶ καὶ Ἰάονες“ τοὺς Ἀθηναίους
 6 λέγει· ταύτης δ' ἦν μερὶς καὶ ἡ Μεγαρίς. καὶ δὴ καὶ 25
 τῶν ὀρίων ἀμφισβητοῦντες πολλάκις οἱ τε Πελοπον-
 νῆσιοι καὶ Ἴωνες, ἐν οἷς ἦν καὶ ἡ Κρομμυονία, συνέ-
 βησαν καὶ στήλην ἔστησαν ἐπὶ τοῦ συνομολογηθέντος
 τόπου περὶ αὐτὸν τὸν Ἰσθμόν, ἐπιγραφὴν ἔχουσιν
 ἐπὶ μὲν τοῦ πρὸς τὴν Πελοπόννησον μέρους „τάδ' ἐστὶ 30
 „Πελοπόννησος οὐκ Ἰωνία,“ ἐπὶ δὲ τοῦ πρὸς Μέγαρα
 „τάδ' οὐκ Πελοπόννησος ἀλλ' Ἰωνία.“ οἱ τε δὴ τὴν

Ἀτθίδα συγγράψαντες πολλὰ διαφωνοῦντες τοῦτό γε ὁμολογοῦσιν οἳ γε λόγου ἄξιοι, διότι τῶν Πανδιονιδῶν τετάρων ὄντων, Αἰγέως τε καὶ Λύκου καὶ Πάλλαντος καὶ τετάρτου Νίσου, καὶ τῆς Ἀττικῆς εἰς τέ-
 5 ταρα μέρη διαιρεθείσης, ὁ Νίσος τὴν Μεγαρίδα λά-
 χοι καὶ κτίσαι τὴν Νίσαιαν. Φιλόχορος μὲν οὖν ἀπὸ Ἰσθμοῦ μέχρι τοῦ Πυθίου διήκειν αὐτοῦ φησι τὴν ἀρ-
 χήν, "Ανδρῶν δὲ μέχρι Ἐλευσίνος καὶ τοῦ Θωριασίου
 πεδίου. τὴν δ' εἰς τέτταρα μέρη διανομὴν ἄλλων ἄλ-
 10 λως εἰρηκότων ἀρκεῖ ταῦτα παρὰ Σοφοκλέους λαβεῖν·
 φησὶ δ' ὁ Αἰγέως ὅτι ὁ πατὴρ ὥρισεν ἐμοὶ μὲν ἀ[πελ-
 θεῖ]ν εἰς ἀκτὰς τῆσδε γῆς πρὸς βεῖα νείμας· [εἰτ]α Λύ-
 κῳ „τὸν ἀντίπλευρον κῆπον Εὐβοίας νέμει, Νίσῳ δὲ
 „τὴν ὁμαυλον ἐξαιρεῖ χθόνα Σκείρωνος ἀκτῆς, τῆς δὲ
 15 „γῆς τὸ πρὸς νότον ὁ σκληρὸς οὗτος καὶ γίγαντας ἐκ-
 „τρέφων εἰληχε Πάλλας.“ ὅτι μὲν οὖν ἡ Μεγαρίς τῆς
 Ἀττικῆς μέρος ἦν, τούτοις χρῶνται τεκμηρίοις.

Μετὰ δὲ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν ἀνάδοδον καὶ τὸν 7
 τῆς χώρας μερισμὸν ὑπ' αὐτῶν καὶ τῶν συγκατελθόν-
 20 των αὐτοῖς Λωριέων ἐκπεσεῖν τῆς οἰκείας συνέβη πολ-
 λούς εἰς τὴν Ἀττικὴν, ὧν ἦν καὶ ὁ τῆς Μεσσήνης βασι-
 λεὺς Μέλανθος· οὗτος δὲ καὶ τῶν Ἀθηναίων ἐβασί-
 λευσεν ἐκόντων, νικήσας ἐκ μονομαχίας τὸν τῶν Βοι-
 ωτῶν βασιλέα Ξάνθον. εὐανδρούσης δὲ τῆς Ἀττικῆς
 25 διὰ τοὺς φυγάδας φοβηθέντες οἱ Ἡρακλεῖδαι, παρ-
 ξυνόντων αὐτοὺς μάλιστα τῶν ἐν Κορίνθῳ καὶ τῶν ἐν
 Μεσσήνῃ, τῶν μὲν διὰ τὴν γειννίασιν, τῶν δὲ ὅτι Κό-
 δρος τῆς Ἀττικῆς ἐβασίλευε τότε ὁ τοῦ Μελάνθου παῖς,
 ἐστράτευσαν ἐπὶ τὴν Ἀττικὴν· ἡττηθέντες δὲ μάχῃ τῆς
 30 μὲν ἄλλης ἐξέστησαν γῆς, τὴν Μεγαρικὴν δὲ κατέσχον
 καὶ τὴν τε πόλιν ἐκτίσαν τὰ Μέγαρα καὶ τοὺς ἀνθρώ-
 πους Λωριέας ἀντὶ Ἰώνων ἐποίησαν· ἡφάνισαν δὲ καὶ

τὴν στήλην τὴν ὀρίζουσιν τοὺς τε Ἰωνας καὶ τοὺς Πελοποννησίους.

8 Πολλαῖς δὲ κέχρηται μεταβολαῖς ἡ τῶν Μεγαρέων πόλις, συμμένει δ' ὅμως μέχρι νῦν. ἔσχε δέ ποτε καὶ φιλοσόφων διατριβὰς τῶν προσαγορευθέντων Μεγα- 5 ρικῶν, Εὐκλείδην διαδεξαμένον ἄνδρα Σωκρατικόν, Μεγαρέα τὸ γένος· καθάπερ καὶ Φαίδωνα μὲν τὸν Ἠλεῖον οἱ Ἠλείακοι διεδέξαντο, καὶ τοῦτον Σωκρατικόν, ὃν ἦν καὶ Πύρρων, Μενέδημον δὲ τὸν Ἐρετριέα οἱ Ἐρετρικοί. ἔστι δ' ἡ χώρα τῶν Μεγαρέων παράλυ- 10 προς καθάπερ καὶ ἡ Ἀττική, καὶ τὸ πλεον αὐτῆς ἐπέχει τὰ καλούμενα Ὀνεῖα ὄρη, ῥάχιδες τις μηχανομένη μὲν ἀπὸ τῶν Σκειρωνίδων πετρῶν ἐπὶ τὴν Βοιωτίαν καὶ τὸν Κιθαιρῶνα, διαίργουσα δὲ τὴν κατὰ Νίσαιαν θάλατταν ἀπὸ τῆς κατ[ὰ τὰς Παγὰς] Ἀλκωνοίδος προσ- 15 αγορευομένης.

9 Πρόκειται δ' ἀπὸ Νισαίας πλέοντι εἰς τὴν Ἀττικὴν πέντε νησία. εἴτα Σαλαμῖς ἑβδομήκοντά που σταδίων οὖσα τὸ μήκος, οἱ δ' ὀγδοήκοντά φασιν· ἔχει δ' ὁμώνυμον πόλιν τὴν μὲν ἀρχαίαν ἔρημον πρὸς Αἰγί- 20 ναν τετραμμένην καὶ πρὸς νότον (καθάπερ καὶ Αἰσχύλος εἴρηκεν, „Αἰγίνα δ' αὕτη πρὸς νότου κεῖται πνοάς“), τὴν δὲ νῦν ἐν κόλπῳ κειμένην ἐπὶ χερρονησοειδοῦς τόπου συνάπτουτος πρὸς τὴν Ἀττικὴν. ἐκαλεῖτο δ' ἐτέροις ὀνόμασι τὸ παλαιόν· καὶ γὰρ Σκιρὰς καὶ Κύ- 25 χρεῖα ἀπὸ τινων ἡρώων, ἀφ' οὗ μὲν Ἀθηναῖα τε λέγεται Σκιρὰς καὶ τόπος Σκίρα ἐν τῇ Ἀττικῇ καὶ ἐπὶ Σκίρῳ ἱεροποιία τις καὶ ὁ μὲν ὁ Σκιροφοριῶν, ἀφ' οὗ δὲ καὶ Κυχρεΐδης ὄφρις, ὃν φησὶν Ἡσίοδος τραφέντα ὑπὸ Κυ- 30 χρεῶς ἐξελαθῆναι ὑπὸ Εὐρυλόχου λυμαινόμενον τὴν νῆσον, ὑποδέξασθαι δὲ αὐτὸν τὴν Λήμητρα εἰς Ἐλευ- 0.394 σίνα καὶ γενέσθαι ταύτης ἀμφίπολον. ὠνομάσθη δὲ

καὶ Πιτυοῦσσα ἀπὸ τοῦ φυτοῦ· ἐπιφανῆς δὲ ἡ νῆσος
 ὑπῆρξε διὰ τε τοὺς Αἰακίδας ἐπάρξαντας αὐτῆς, καὶ
 μάλιστα δι' Αἶαντα τὸν Τελαμώνιον, καὶ διὰ τὸ περὶ
 τὴν νῆσον ταύτην καταναυμαχηθῆναι Πέρξην ὑπὸ τῶν
 5 Ἑλλήνων καὶ φυγεῖν εἰς τὴν οἰκείαν. συναπέλαυσαν δὲ
 καὶ Αἰγινῆται τῆς περὶ τὸν ἄγωνά τοῦτον δόξης, γεί-
 τονές τε ὄντες καὶ ναυτικὸν ἀξιόλογον παρασχόμενοι.
 Βῳκάρος δ' ἐστὶν ἐν Σαλαμῖνι ποταμός, ὁ νῦν Βωκα-
 λία καλούμενος.

- 10 Καὶ νῦν μὲν ἔχουσιν Ἀθηναῖοι τὴν νῆσον, τὸ δὲ 10
 παλαιὸν πρὸς Μεγαρέας ὑπῆρξεν αὐτοῖς ἔρις περὶ αὐ-
 τῆς· καὶ φασιν οἱ μὲν Πεισίστρατον οἱ δὲ Σόλωνα
 παρεγγράψαντα ἐν τῷ νεῶν καταλόγῳ μετὰ τὸ ἔπος
 τοῦτο „Αἶας δ' ἐκ Σαλαμῖνος ἄγεν δυοκαίδεκα νῆας“
 15 ἐξῆς τοῦτο „στῆσε δ' ἄγων, ἵν' Ἀθηναίων ἴσταντο φά-
 „λαγγες,“ μάρτυρι χρησασθαι τῷ ποιητῇ τοῦ τὴν νῆσον
 ἐξ ἀρχῆς Ἀθηναίων ὑπάρξει. οὐ παραδέχονται δὲ τοῦθ'
 οἱ κριτικοὶ διὰ τὸ πολλὰ τῶν ἐπῶν ἀντιμαρτυρεῖν αὐ-
 τοῖς. διὰ τί γὰρ ναυλοχῶν ἔσχατος φαίνεται ὁ Αἶας, οὐ
 20 μετ' Ἀθηναίων ἀλλὰ μετὰ τῶν ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ Θετ-
 ταλῶν; „ἐνθ' ἔσαν Αἶαντός τε νέες καὶ Πρωτεσιλάου“
 καὶ ἐν τῇ ἐπιπωλήσει ὁ Ἀγαμέμνων „εὗρ' υἱὸν Πετσεῶ
 „Μενεσθῆα πλη[ξιππον ἐστα]ότ', ἀμφὶ δ' Ἀθηναῖοι,
 „μήστωρες αὐτῆς. αὐτὰρ ὁ πλησίον ἐστήκει πολύμη-
 25 „τις Ὀδυσσεύς, παρ δὲ Κεφαλλήνων ἀμφὶ στίχες.“
 ἐπὶ δὲ τὸν Αἶαντα καὶ τοὺς Σαλαμινίους πάλιν „ῆλθε
 „δ' ἐπ' Αἰάντεσσι,“ καὶ παρ' αὐτοὺς „Ἰδομενεὺς δ'
 „ἐτέρωθεν,“ οὐ Μενεσθεύς. οἱ μὲν δὲ Ἀθηναῖοι τοι-
 30 αὐτὴν τινὰ σκήψασθαι μαρτυρίαν παρ' Ὀμήρου δο-
 „κοῦσιν, οἱ δὲ Μεγαρεῖς ἀντιπαρωδῆσαι οὕτως „Αἶας
 „δ' ἐκ Σαλαμῖνος ἄγεν νέας, ἐκ τε Πολίχνης, ἐκ τ'
 „Αἰγυρίουσσης Νισαίης τε Τριπόδων τε.“ ἅ ἐστι χωρία

Μεγαρικά, ὃν οἱ Τρίποδες Τριποδίσκιον λέγονται, καθ' ὃν νῦν ἀγορὰ τῶν Μεγάρων κεῖται.

- 11 Τινὲς δ' ἀπὸ τοῦ τὴν Ἱέρειαν τῆς Πολιάδος Ἀθη-
C.395 νᾶς χλωροῦ τυροῦ τοῦ μὲν ἐπιχωρίου μὴ ἄπτεσθαι, ξενικὸν δὲ μόνον προσφέρεισθαι, χρῆσθαι δὲ καὶ τῷ 5
Σαλαμινίῳ, ξένην φασὶ τῆς Ἀττικῆς τὴν Σαλαμῖνα οὐκ εὔ· καὶ γὰρ τὸν ἀπὸ τῶν ἄλλων νήσων τῶν ὁμολο-
γούμενως τῇ Ἀττικῇ προσχώρων προσφέρεται, ξενικὸν πάντα τὸν διαπόντιον νοησάντων τῶν ἀρξάντων τοῦ
ἔθνους τούτου. ἔοικε δὴ τὸ παλαιὸν ἢ νῦν Σαλαμῖς καθ' 10
αὐτὴν τάττεσθαι, τὰ δὲ Μέγαρα τῆς Ἀττικῆς ὑπάρξαι μέρος. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ τῇ κατὰ Σαλαμῖνα κεῖσθαι συμβαίνει τὰ ὄρια τῆς τε Μεγαρικῆς καὶ τῆς Ἀττικῆς, ὅρη δύο ἃ καλοῦσι Κέρατα.
- 12 Εἰτ' Ἐλευσίς πόλις, ἐν ἣ τὸ τῆς Ἀθήνης ἱερὸν 15
τῆς Ἐλευσινίας καὶ ὁ μυστικὸς σηκός, ὃν κατεσκεύα-
σεν Ἰκτῖνος ὄχλον θεάτρον δέξασθαι δυνάμενον, ὃς καὶ τὸν παρθενῶνα ἐποίησε τὸν ἐν ἀκροπόλει τῇ Ἀθη-
νᾷ, Περικλέους ἐπιστατοῦντος τῶν ἔργων· ἐν δὲ τοῖς
δήμοις καταριθμεῖται ἡ πόλις. 20
- 13 Εἶτα τὸ Θριάσιον πεδίον καὶ ὁμώνυμος αἰγιαλὸς
καὶ δῆμος· εἴθ' ἡ ἄκρα ἢ Ἀμφιάλη καὶ τὸ ὑπερκείμε-
νον λατόμιον καὶ ὁ εἰς Σαλαμῖνα πορθμὸς ὅσον δι-
στάδιος, ὃν διαχοῦν ἐπειράτο Ξέρξης, ἐφθῇ δὲ ἡ ναυ-
μαχία γενομένη καὶ φυγὴ τῶν Περσῶν. ἐνταῦθα δὲ 25
καὶ αἱ Φαρμακοῦσσαι, δύο νησίαι ὧν ἐν τῷ μέλζονι Κίρκης τάφος δεικνύται.
- 14 Ὅτι δὲ τῆς ἀκτῆς ταύτης ὄρος ἐστὶν ὃ καλεῖται
Κορυθαλλός, καὶ ὁ δῆμος οἱ Κορυθαλλεῖς· εἴθ' ὁ Φώ-
ρων λιμὴν καὶ ἡ Ψυττάλεια, νησίον ἔρημον πετρῶδες 30
ὃ τινες εἶπον λήμνην τοῦ Πειραιῶς· πλησίον δὲ καὶ ἡ
Ἀταλάντη ὁμώνυμος τῇ περὶ Εὐβοίαν καὶ Δοκρούς,

καὶ ἄλλο νησίον ὁμοιον τῇ Ψυτταλείᾳ καὶ τοῦτο· εἶθ' ὁ Πειραιεὺς καὶ αὐτὸς ἐν τοῖς δήμοις ταττόμενος καὶ ἡ Μουνυχία.

Λόφος δ' ἐστὶν ἡ Μουνυχία χειρρονησιάζων καὶ 15
 5 κοῖλος καὶ ὑπόνομος πολὺ μέρος φύσει τε καὶ ἐπίτηδες ὥστ' οἰκήσεις δέχεσθαι, στομίῳ δὲ μικρῷ τὴν εἴσοδον ἔχων. ὑποπίπτουσι δ' αὐτῷ λιμένες τρεῖς. τὸ μὲν οὖν παλαιὸν ἐτετείχιστο καὶ συνώκιστο ἡ Μουνυχία παραπλησίως ὥσπερ ἡ τῶν Ῥοδίων πόλις, προσειληφυσία τῷ
 10 περιβόλῳ τὸν τε Πειραιᾶ καὶ τοὺς λιμένας πλήρεις νεωρίων, ἐν οἷς καὶ ἡ ὀπλοθήκη Φίλωνος ἔργον· ἄξιόν τε ἦν ναύσταθμον ταῖς τετρακοσίαις ναυσίν, ἃν οὐκ ἐλάττους ἔστελλον Ἀθηναῖοι. τῷ δὲ τείχει τούτῳ συνῆ-
 15 ἦν μακρὰ τείχη τετταράκοντα σταδίων τὸ μῆκος, συνάπτοντα τὸ ἄστυ τῷ Πειραιεῖ. οἱ δὲ πολλοὶ πόλεμοι τὸ τεῖχος κατήρειψαν καὶ τὸ τῆς Μουνυχίας ἔρυμα, τὸν τε Πειραιᾶ συνέστειλαν εἰς ὀλίγην κατοικίαν τὴν περὶ 0.396
 20 τοὺς λιμένας καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Διὸς τοῦ σωτῆρος· τοῦ δὲ ἱεροῦ τὰ μὲν στοῦδια ἔχει πίνακας θαυμαστούς, ἔργα τῶν ἐπιφανῶν τεχνιτῶν, τὸ δ' ὑπαιθρον ἀνδριάντας. κατέσπασται δὲ καὶ τὰ μακρὰ τείχη, Λακεδαιμονίων μὲν καθελόντων πρότερον Ῥωμαίων δ' ὕστερον, ἡνίκα Σύλλας ἐκ πολιορκίας εἴλε καὶ τὸν Πειραιᾶ καὶ τὸ ἄστυ.
 25 Τὸ δ' ἄστυ αὐτὸ πέτρα ἐστὶν ἐν πεδίῳ περιοικου- 16
 μένη κύκλῳ· ἐπὶ δὲ τῇ πέτρᾳ τὸ τῆς Ἀθηνᾶς ἱερὸν ὃ τε ἀρχαῖος νεὼς ὁ τῆς Πολιάδος ἐν ᾧ ὁ ἄσβεστος λύ-
 χνος, καὶ ὁ παρθενῶν ὃν ἐποίησεν Ἰκτῖνος, ἐν ᾧ τὸ τοῦ Φειδίου ἔργον ἐλεφάντινον ἡ Ἀθηνᾶ. ἀλλὰ γὰρ
 30 εἰς πλῆθος ἐμπίπτων τῶν περὶ τῆς πόλεως ταύτης ὑμνουμένων τε καὶ διαβωμένων ὁκνῶ πλεονάζειν, μὴ συμβῇ τῆς προθέσεως ἐκπεσεῖν τὴν γραφήν. ἐπεισι

γὰρ ὃ φησιν Ἡγησίας „ὁρῶ τὴν ἀκρόπολιν καὶ τὸ πε-
 „ριττῆς τριαίνης ἐκείθι σημείον, ὁρῶ τὴν Ἐλευσίνα, καὶ
 „τῶν ἱερῶν γέγονα μύστης· ἐκεῖνο Λεωκόριον, τοῦτο
 „Θησεῖον· οὐ δύναμαι δηλαῶσαι καθ' ἕνα ἕκαστον· ἢ
 „γὰρ Ἀττικὴ θεῶν αὐτοῖς καταλαβόντων καὶ 5
 „τῶν προγόνων ἡρώων“ οὗτος μὲν οὖν ἐνὸς
 ἐμνήσθη τῶν ἐν ἀκροπόλει σημείων, Πολέμων δ' ὁ πε-
 ριγηγῆς τέτταρα βιβλία συνέγραψε περὶ τῶν ἀναθη-
 μάτων τῶν ἐν ἀκροπόλει· τὸ δ' ἀνάλογον συμβαίνει
 καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων τῆς πόλεως μερῶν καὶ τῆς χώρας· 10
 Ἐλευσίνα τε εἰπὼν ἕνα τῶν ἑκατὸν ἐβδομήκοντα δή-
 μων πρὸς δὲ καὶ τεττάρων, ὥς φασιν, οὐδένα τῶν
 ἄλλων ἀνόμακεν.

- 17 Ἐχουσι δὲ καὶ εἰ μὴ πάντες οἳ γε πολλοὶ μυθοποι-
 ῖας συχνὰς καὶ ἱστορίας· καθάπερ Ἀφιδνα μὲν τὴν τῆς 15
 Ἑλένης ἀρπαγὴν ὑπὸ Θησέως καὶ τὴν ὑπὸ τῶν Διοσ-
 κούρων ἐκπόρθησιν αὐτῆς καὶ ἀνακομιδὴν τῆς ἀδελ-
 φῆς, Μαραθῶν δὲ τὸν Περσικὸν ἀγῶνα, Ῥαμνοῦς δὲ
 τὸ τῆς Νεμέσεως ξόανον, ὃ τινες μὲν Διοδότου φασὶν
 ἔργον τινὲς δὲ Ἀγορακρίτου τοῦ Παρίου, καὶ μεγέθει 20
 καὶ κάλλει σφόδρα καταρθωμένον καὶ ἐνάμιλλον τοῖς
 Φειδίου ἔργοις. οὕτω δὲ καὶ Δεκέλεια μὲν τὸ ὀρμητή-
 ριον τῶν Πελοποννησίων κατὰ τὸν Δεκελεικὸν πόλε-
 μον, Φυλὴ δὲ ὅθεν ἐπήγαγε τὸν δῆμον Θρασύβουλος
 εἰς Πειραιᾶ ἀνέειθεν εἰς ἄστυ. οὕτω δὲ καὶ ἐπ' ἄλλων 25
 πλειόνων ἔστιν ἱστορεῖν πολλά· καὶ ἔτι τὸ Λεωκόριον
 καὶ τὸ Θη[σεῖον μύθο]ς ἔχει, καὶ τὸ Ἀύκειον καὶ τὸ
 Ὀλυμπικόν ὃ τὸ Ὀλύμπιον, ὅπερ ἡμιτελὲς
 κατέλιπε τελευτῶν ὁ ἀναθεὶς βασιλεύς· ὁμοίως δὲ καὶ ἡ
 Ἀκαδημία καὶ οἱ κῆποι τῶν φιλοσόφων καὶ τὸ Ὠιδεῖον 30
 καὶ ἡ ποικίλη στοὰ καὶ τὰ ἱερὰ τὰ ἐν τῇ πό[λει πλεῖστα]
 ἔχοντα τεχνιτῶν ἔργα.

Πολὺ δ' ἂν πλείων εἴη λόγος, εἰ τοὺς ἀρχηγέτας^{0.397}
 τοῦ κτίσματος ἐξετάξοι τις ἀρξάμενος ἀπὸ Κέκροπος.¹⁸
 οὐδὲ γὰρ ὁμοίως λέγουσιν ἅπαντες. τοῦτο δὲ καὶ ἀπὸ
 τῶν ὀνομάτων δῆλον· Ἀκτὴν μὲν γὰρ ἀπὸ Ἀκταίω-
 15 νος φασίν, Ἀτθίδα δὲ καὶ Ἀττικὴν ἀπὸ Ἀτθίδος τῆς
 Κραναοῦ, ἀφ' οὗ καὶ Κραναοὶ οἱ ἔνοικοι, Μοψόπιαν
 δὲ ἀπὸ Μοψόπου, Ἰωνίαν δὲ ἀπὸ Ἰωνος τοῦ Ξούθου,
 Ποσειδωνίαν δὲ καὶ Ἀθήνας ἀπὸ τῶν ἐπωνύμων θεῶν.
 εἴρηται δ' ὅτι κἀνταῦθα φαίνεται τὸ τῶν Πελασγῶν
 10 ἔθνος ἐπιδημῆσαν, καὶ διότι ὑπὸ τῶν Ἀττικῶν Πελασ-
 γοὶ προσηγορεύθησαν διὰ τὴν πλάνην.

Ὅσῳ δὲ πλεόν ἐστὶ τὸ φιλότιμον περὶ τὰ ἔνδοξα¹⁹
 καὶ πλείους οἱ λαλήσαντές τι περὶ αὐτῶν, τοσῶδε μεί-
 ζων ὁ ἔλεγχος, ἐὰν μὴ κρατῇ τις τῆς ἱστορίας· οἷον ἐν τῇ
 15 συναγωγῇ τῶν ποταμῶν ὁ Καλλίμαχος γελᾶν φησιν,
 εἰ τις θαρρεῖ γράφειν τὰς τῶν Ἀθηναίων παρθένους
 „ἀφύσσεσθαι καθαρὸν γάνος Ἡριδανοῖο,“ οὗ καὶ τὰ
 βοσκήματα ἀπόσχεται ἂν. εἰσὶ μὲν νῦν αἱ πηγαὶ κα-
 θαροῦ καὶ ποτίμου ὕδατος, ὥς φασιν, ἐκτὸς τῶν Διο-
 20 χάρους καλουμένων πυλῶν πλησίον τοῦ Λυκείου· πρό-
 τερον δὲ καὶ κρήνη κατεσκεύαστό τις πλησίον πολ-
 λοῦ καὶ καλοῦ ὕδατος· εἰ δὲ μὴ νῦν, τί ἂν εἴη θαν-
 μαστόν, εἰ πάλοι πολὺ καὶ καθαρὸν ἦν ὥστε καὶ πότι-
 μον εἶναι, μετέβαλε δὲ ὕστερον; ἐν μὲν οὖν τοῖς καθ'
 25 ἑκάστα τοσοῦτοις οὗσιν οὐκ ἐνδέχεται διατρίβειν, οὐ
 μὴν οὐδὲ σιγῇ παρελθεῖν ὥστε μηδ' ἐν κεφαλαίῳ μνη-
 σθῆναι τινων.

Τοσαῦτ' οὖν ἀπόχρη προσθεῖσιν ὅτι φησὶ Φι-²⁰
 λόχορος πορθομένης τῆς χώρας ἐκ θαλάττης μὲν ὑπὸ
 30 Καρῶν ἐκ γῆς δὲ ὑπὸ Βοιωτῶν, οὓς ἐκάλουν Ἄονας,
 Κέκροπα πρῶτον εἰς δώδεκα πόλεις συνοικίσαι τὸ πλη-
 θος, ὧν ὀνόματα Κεκροπία Τετράπολις Ἐπακρία Δε-

κέλεια Ἐλευσίς ᾿Αφιδνα (λέγουσι δὲ καὶ πληθυντικῶς
 ᾿Αφιδνας) Θόρικος Βραυρῶν Κύθηρος Σφηττὸς Κηφι-
 σιά πάλιν δ' ὕστερον εἰς μίαν πόλιν συναγα-
 γεῖν λέγεται τὴν νῦν τὰς δώδεκα Θησεύς. ἐβασιλεύ-
 οντο μὲν [οὖν οἱ ᾿Αθηναῖοι] πρότερον, εἴτ' εἰς δημοκρα- 5
 τίαν μετέστησαν· τυράννων δ' ἐπιθεμένων αὐτοῖς,
 Πεισιστράτου καὶ τῶν παίδων, ὕστερόν τε ὀλιγαρχίας
 γενομένης τῆς τε τῶν τετρακοσίων καὶ τῆς τῶν τριά-
 κοντα τυράννων, οὓς ἐπέστησαν Λακεδαιμόνιοι, τοῖς
 τοὺς μὲν διεκρούσαντο ῥαδίως, ἐφύλαξαν δὲ τὴν δη- 10
 0.398μοκρατίαν μέχρι τῆς Ῥωμαίων ἐπικρατείας. καὶ γὰρ εἴ-
 τι μικρὸν ὑπὸ τῶν Μακεδονικῶν βασιλέων παρελυπή-
 θησαν ὥσθ' ὑπακούειν αὐτῶν ἀναγκασθῆναι, τὸν γε
 ὁλοσχερῇ τύπον τῆς πολιτείας τὸν αὐτὸν διετήρουν.
 ἔνιοι δὲ φασὶ καὶ βέλτιστα τότε αὐτοὺς πολιτεύσασθαι 15
 δεκαετῇ χρόνον ὃν ἤρχε Μακεδόνων Κάσανδρος. οὗ-
 τος γὰρ ὁ ἀνὴρ πρὸς μὲν τὰ ἄλλα δοκεῖ τυραννικώτε-
 ρος γενέσθαι, πρὸς ᾿Αθηναίους δὲ εὐγνωμόνησε λα-
 βῶν ὑπήκοον τὴν πόλιν· ἐπέστησε γὰρ τῶν πολιτῶν
 Δημήτριον τὸν Φαληρέα τῶν Θεοφράστου τοῦ φιλο- 20
 σόφου γνωρίμων, ὃς οὐ μόνον οὐ κατέλυσε τὴν δημο-
 κρατίαν ἀλλὰ καὶ ἐπηνώρθωσε. δηλοῖ δὲ τὰ ὑπομνή-
 ματα ἃ συνέγραψε περὶ τῆς πολιτείας ταύτης ἐκεῖνος.
 ἀλλ' οὕτως ὁ φθόνος ἰσχυσε καὶ ἡ πρὸς ὀλίγους ἀπέ-
 χθεια ὥστε μετὰ τὴν Κάσανδρου τελευτὴν ἠναγκάσθη 25
 φυγεῖν εἰς Αἴγυπτον· τὰς δ' εἰκόνας αὐτοῦ πλείους ἢ
 τριακοσίας κατέσπασαν οἱ ἐπαναστάντες καὶ κατεχώ-
 νευσαν, ἔνιοι δὲ καὶ προστιθέασιν ὅτι καὶ εἰς Ἀμίδας.
 Ῥωμαῖοι δ' οὖν παραλαβόντες αὐτοὺς δημοκρατουμέ-
 νους ἐφύλαξαν τὴν αὐτονομίαν αὐτοῖς καὶ τὴν ἐλευ- 30
 θερίαν. ἐπιπεσὼν δ' ὁ Μιθριδατικὸς πόλεμος τυράν-
 νους αὐτοῖς κατέστησεν οὓς ὁ βασιλεὺς ἐβούλετο· τὸν

δ' ἰσχύσαντα μάλιστα τὸν Ἀριστίωνα καὶ ταύτην βιά-
σάμενον τὴν πόλιν ἐν πολιορκίας ἐλὼν Σύλλας ὁ τῶν
Ῥωμαίων ἡγεμὼν ἐκόλασε, τῇ δὲ πόλει συγγνώμην
ἔνειμε· καὶ μέχρι νῦν ἐν ἐλευθερίᾳ τέ ἐστι καὶ τιμῇ
5 παρὰ τοῖς Ῥωμαίοις.

Μετὰ δὲ τὸν Πειραιᾶ Φαληρεῖς δῆμος ἐν τῇ ἐφε- 21
ξῆς παραλίᾳ· εἶθ' Ἀλιμούσιοι Αἰξωνεῖς Ἀλαιεῖς οἱ Αἰ-
ξωνικοὶ Ἀναγυράσιοι· εἶτα Θοραιεῖς Λαμπρεῖς Αἰγι-
λίεῖς Ἀναφλύστιοι Ἀξηνιεῖς· οὗτοι μὲν οἱ μέχρι τῆς
10 ἄκρας τοῦ Σουνίου. μετὰ δὲ τῶν λεχθέντων δῆμων
μακρὰ ἄκρα, πρώτη μετὰ τοὺς Αἰξωνέας Ζωστήρ, εἶτ'
ἄλλη μετὰ Θοραιέας Ἀστυπάλαια· ὧν τῆς μὲν πρόκει-
ται νῆσος Φάβρα τῆς δ' Ἐλαιοῦσσα· καὶ κατὰ τοὺς Αἰ-
ξωνέας δ' ἔστιν Ὑδροῦσσα· περὶ δὲ Ἀνάφλυστόν ἐστι
15 καὶ τὸ Πανεῖον καὶ τὸ τῆς Κωλιάδος Ἀφροδίτης ἱερόν,
εἰς ὃν τόπον ἐκκυμανθῆναι τὰ τελευταῖα τὰ ἐκ τῆς περὶ
Σαλαμῖνα ναυμαχίας τῆς Περσικῆς ναυαγία φασι, περὶ
ὧν καὶ τὸν Ἀπόλλω προειπεῖν „Κωλιάδες δὲ γυναῖκες
„ἐρετμοῖσι φρούξουσι.“ πρόκειται δὲ καὶ τούτων τῶν
20 τόπων Βέλβινα νῆσος οὐ πολὺ ἄπωθεν καὶ ὁ Πατρό-
κλου χάραξ· ἐρημοὶ δ' αἱ πλείεσται τούτων.

Κάμψαντι δὲ τὴν κατὰ τὸ Σούνιον ἄκραν ἀξιόλο- 22
γος δῆμος Σούνιον, εἶτα Θόρικος, εἶτα Ποταμὸς δῆμος
οὕτω καλούμενος, ἐξ οὗ οἱ ἄνδρες Ποτάμιοι, εἶτα Πρα-0.399
25 σιὰ Στειριὰ Βραυρών, ὅπου τὸ τῆς Βραυρωνίας Ἀρ-
τέμιδος ἱερόν, [Ἀλαὶ Ἀραφῇ]νίδες, ὅπου τὸ τῆς Ταυ-
ροπόλου, Μυρρινοῦς Προβάλινθος Μαραθῶν, ὅπου
Μιλτιάδης τὰς μετὰ Λάτιος τοῦ Πέρσου δυνάμεις ἄρ-
δην διέφθειρεν οὐ περιμείνας ὑστερίζοντας Λακεδαι-
30 μονίους διὰ τὴν πανσέληνον· ἐνταῦθα μεμυθεύκασι
καὶ τὸν Μαραθῶνιον ταῦρον ὃν ἀνείλε Θησεύς. μετὰ
δὲ Μαραθῶνα Τρικόρυνθος, εἶτα Ῥαμνοῦς, [ὅπου] τὸ

τῆς Νεμέσεως ἱερόν, εἶτα Ψαφὶς ἡ τῶν Ὀρωπίων· ἐν-
 ταῦθα δέ που καὶ τὸ Ἀμφιαράειόν ἐστι τετιμημένον
 ποτὲ μαντεῖον, ὅπου φυγόντα τὸν Ἀμφιάρεω, ὥς φησι
 Σοφοκλῆς, „ἐδέξατο ῥαγεῖσα Θηβαία κόνις αὐτοῖσιν
 „ὅπλοις καὶ τετρωρίστω δόφρῳ.“ Ὀρωπὸς δ' ἐν ἀμφισ- 5
 βητησίμῳ γεγένηται πολλάκις· ἴδρυνται γὰρ ἐν μεθορίῳ
 τῆς τε Ἀττικῆς καὶ τῆς Βοιωτίας. πρόκειται δὲ τῆς παρα-
 λίας ταύτης πρὸ μὲν τοῦ Θορίκου καὶ τοῦ Σουνίου νῆ-
 σος Ἑλένη τραχεῖα καὶ ἔρημος, παραμῆκης ὅσον ἐξή- 10
 κοντα σταδίων τὸ μῆκος, ἥς φασὶ μεμνησθαι τὸν ποι-
 ητὴν ἐν οἷς Ἀλέξανδρος λέγει πρὸς τὴν Ἑλένην „οὐδ'
 „ὅτε σε πρῶτον Λακεδαίμονος ἐξ ἐρατεινῆς [ἐπλεον]
 „ἀρπάξας ἐν ποντοπόροισι νέεσσι, νήσῳ δ' ἐν Κρα-
 „νᾷ ἐμίγην φιλότῃ καὶ εὐνῇ.“ ταύτην γὰρ λέγει
 Κρανάην τὴν νῦν Ἑλένην ἀπὸ τοῦ ἐκεῖ γενέσθαι τὴν 15
 μῦθιν. μετὰ δὲ τὴν Ἑλένην ἡ Εὐβοία πρόκειται τῆς
 ἐξῆς παραλίας, ὁμοίως στενὴ καὶ μακρὰ καὶ κατὰ μῆ-
 κος τῇ ἡπείρῳ παραβεβλημένη καθάπερ ἡ Ἑλένη. ἔστι
 δ' ἀπὸ τοῦ Σουνίου πρὸς τὸ νότιον τῆς Εὐβοίας ἄκρον,
 ὃ καλοῦσι Λευκὴν ἀκτὴν, σταδίων τριακοσίων πλοῦς· 20
 ἀλλὰ περὶ Εὐβοίας με[ν] λέγομεν ὕστερον], τοὺς δ' ἐν
 τῇ μεσογαίᾳ δήμους τῆς Ἀττικῆς μακρὸν εἶπεῖν διὰ τὸ
 πλῆθος.

- 23 Τῶν δ' ὁρῶν τὰ μὲν ἐν ὀνόματι μάλιστα ἐστὶν ὅ τε
 Ὑμηττὸς καὶ Βριλησσὸς καὶ Λυκαβηττός, ἔτι δὲ Πάρ- 25
 νης καὶ Κορυδαλλός. μαρμάρου δ' ἐστὶ τῆς τε Ὑμητ-
 τίας καὶ τῆς Πεντελικῆς κάλλιστα μέταλλα πλησίον τῆς
 πόλεως· ὃ δ' Ὑμηττὸς καὶ μέλι ἄριστον ποιεῖ. τὰ δ'
 ἀργυρεῖα τὰ ἐν τῇ Ἀττικῇ κατ' ἀρχὰς μὲν ἦν ἀξιόλογα,
 νυνὶ δ' ἐκλείπει· καὶ δὴ καὶ οἱ ἐργαζόμενοι, τῆς με- 30
 ταλλείας ἀσθενῶς ὑπακουούσης, τὴν παλαιὰν ἐκβο-
 λάδα καὶ σκωρίαν ἀναχωνεύοντες εὗρισκον ἔτι ἐξ αὐτῆς

ἀποκαθαιρόμενον ἀργύριον, τῶν ἀρχαίων ἀπέριως καμινεύοντων. τοῦ δὲ μέλιτος ἀρίστου τῶν πάντων ὄντος τοῦ Ἀττικοῦ πολὺ βέλτιστόν φασι τὸ ἐν τοῖς ἀρ-0.400 γυρείοις, ὃ καὶ ἀκάπνιστον καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τρόπου τῆς σκευασίας.

Ποταμοὶ δ' εἰσὶν ὁ μὲν Κηφισὸς ἐκ Τρινεμέων 24 τὰς ἀρχὰς ἔχων ῥέων δὲ διὰ τοῦ πεδίου, ἐφ' οὗ καὶ ἡ γέφυρα καὶ οἱ γεφυρισμοί, διὰ δὲ τῶν σκελῶν τῶν ἀπὸ τοῦ ἄστεος εἰς τὸν Πειραιᾶ καθηκόντων ἐκδίδωσιν εἰς 10 τὸ Φαληρικόν, χειμαρρῶδης τὸ πλεόν, θέρους δὲ μειοῦται τελέως. ἔστι δὲ τοιοῦτος μᾶλλον ὁ Ἴλισσός, ἐκ θατέρου μέρους τοῦ ἄστεος ῥέων εἰς τὴν αὐτὴν παραλίαν ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς Ἀγρας καὶ τοῦ Λυκείου μερῶν καὶ τῆς πηγῆς ἣν ὕμνηκεν ἐν Φαίδρῳ Πλάτων. περὶ 15 μὲν τῆς Ἀττικῆς ταῦτα.

Ἐξῆς δ' ἐστὶν ἡ Βοιωτία, περὶ ἧς λέγονται καὶ περὶ 2 τῶν συνεχῶν ἔθνων ἀνάμνησιν ποιήσασθαι χρὴ τοῦ σαφοῦς χάριν ὧν εἴπομεν πρότερον. [ἐλέγομ]εν δὲ τὴν ἀπὸ Σουνίου παραλίαν μέχρι Θετταλο[νικείας] ἐπὶ 20 τὰς ἄρκτους τετάσθαι, μικρὸν ἐκκλίνουσιν [πρὸς δύσιν καὶ] ἔχουσιν τὴν θάλατταν πρὸς ἑω, τὰ δ' ὑπερ[κείμενα μέρ]η πρὸς δύσιν ὥς ἂν ταινίας τινὰς διὰ τῆς [πάσης χώρας] τεταμέναις παραλλήλους· ὧν πρώτη ἐστὶν [ἡ Ἀττικὴ σὺν τῇ] Μεγαρίδι ὥς ἂν ταινία τις, τὸ 25 μὲν ἑωθι[νὸν πλευρὸν ἔχου]σα τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι Ὠρωποῦ καὶίας, τὸ δ' ἐσπέριον τὸν τε Ἴσθμὸν καὶ τὴν [Ἀλκυονίδα θάλατταν τὴν κατὰ Παγὰς μέχρι τῶν [τόπων τῆς Βοιωτίας] τῶν περὶ Κρέουσαν· τὰ δὲ λοιπὰ [τὴν ἀπὸ Σουνίου] μέχρι Ἰσθμοῦ πα- 30 ραλίαν καὶ τὴν ὥς ἂνς ὀρεινὴν τὴν διείργουσιν ἀπὸ τῆς [Βοιωτίας τὴν Ἀ]ττικὴν. δευτέρα δ' ἐστὶν ἡ Βοιωτία ἀπὸ τῆς ἑω ἐπὶ δύσιν τεταμένη ταινία.

τις ἀπὸ τῆς κατ' Εὐβοίαν θαλάττης ἐπὶ θάλατταν τὴν κατὰ τὸν Κρῖσαιον κόλπον, ἰσομήκης πως τῇ Ἀττικῇ ἢ καὶ ἐλάττων κατὰ μῆκος· ἀρετῇ μέντοι τῆς χώρας πάμπλου διαφέρει.

- 2 Ἐφορος δὲ καὶ ταύτῃ κρείττω τὴν Βοιωτίαν ἀπο-
 φαίνει τῶν ὁμόρων ἔθνων καὶ ὅτι μόνῃ τριθάλαττος
 ἐστὶ καὶ λιμένων εὐπορεῖ πλειόνων, ἐπὶ μὲν τῷ Κρι-
 σαίῳ κόλπῳ καὶ τῷ Κορινθιακῷ τὰ ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ
 Σικελίας καὶ Λιβύης δεχομένη, ἐπὶ δὲ τῶν πρὸς Εὐβοίαν
 μερῶν ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Εὐρίπου σχιζομένης τῆς παρα- 10
 λίας τῇ μὲν ἐπὶ τὴν Αὐλίδαν καὶ τὴν Ταναγρικὴν τῇ δ'
 ἐπὶ τὸν Σαλαγανέα καὶ τὴν Ἀνθηδόνα, τῇ μὲν εἶναι συν-
 εχῇ τὴν κατ' Αἴγυπτον καὶ Κύπρον καὶ τὰς νήσους θά-
 λατταν τῇ δὲ τὴν κατὰ Μακεδόνας καὶ τὴν Προποντίδα
 καὶ τὸν Ἑλλήσποντον. προστίθῃσι δὲ ὅτι καὶ τὴν Εὐ- 15
 βοίαν τρόπον τινὰ μέρος αὐτῆς πεποίηκεν ὁ Εὐρίπος
 οὕτω στενὸς ὢν καὶ γεφύρα συνεξευγμένος πρὸς αὐ-
 C.401 τὴν διπλέθρῳ. τὴν μὲν οὖν χώραν ἐπαινεῖ διὰ ταῦτα,
 καὶ φησὶ πρὸς ἡγεμονίαν εὐφυῶς ἔχειν, ἀγωγῇ δὲ καὶ
 παιδείᾳ μὴ χρησαμένους * ἐπεὶ μηδὲ τοὺς αἰεὶ προῦστα- 20
 μένους αὐτῆς, εἰ καὶ [τί] ποτε κατώρθωσαν, ἐπὶ μικρὸν
 τὸν χρόνον συμμεῖναι, καθάπερ Ἐπαμεινώνδας ἔδειξε·
 τελευτήσαντος γὰρ ἐκείνου τὴν ἡγεμονίαν ἀποβαλεῖν
 εὐθὺς τοὺς Θηβαίους γευσασμένους αὐτῆς μόνον· αἰ-
 τιον δὲ εἶναι τὸ λόγων καὶ ὁμιλίας τῆς πρὸς ἀνθρώ- 25
 πους ὀλιγορῆσαι, μόνῃς δ' ἐπιμεληθῆναι τῆς κατὰ πό-
 λεμον ἀρετῆς. ἔδει δὲ προσθεῖναι διότι τοῦτο πρὸς
 Ἕλληνας μάλιστα χρήσιμόν ἐστιν, ἐπεὶ πρὸς γε τοὺς
 βαρβάρους βία λόγου κρείττων ἐστὶ. καὶ Ῥωμαῖοι δὲ
 τὸ παλαιὸν μὲν ἀγριωτέροις ἔθνεσι πολεμοῦντες οὐδὲν 30
 ἔδεοντο τῶν τοιούτων παιδευμάτων, ἀφ' οὗ δὲ ἤρ-
 ξαντο πρὸς ἡμερώτερα ἔθνη καὶ φύλα τὴν πρᾶγμα-

τείαν ἔχειν, ἐπέθεντο καὶ ταύτῃ τῇ ἀγωγῇ καὶ κατέστησαν πάντων κύριοι.

- Ἡ δ' οὖν Βοιωτία πρότερον μὲν ὑπὸ βαρβάρων 3
 ῥκεῖτο Ἀόνων καὶ Τεμνίκων ἐκ τοῦ Σουνίου πεπλα-
 5 νημένων καὶ Λελέγων καὶ Ῥάντων· εἶτα Φοίνικες
 ἔσχον οἱ μετὰ Κάδμου, ὃς τὴν τε Καδμείαν ἐτείχισε
 καὶ τὴν ἀρχὴν τοῖς ἐκγόνοις ἀπέλιπεν. ἐκεῖνοι δὲ τὰς
 Θήβας τῇ Καδμείᾳ προσέκτισαν, καὶ συνεφύλαξαν τὴν
 10 Ἀρχὴν ἡγούμενοι τῶν πλείστων Βοιωτῶν ἕως τῆς τῶν
 Ἐπιγόνων στρατείας. κατὰ δὲ τούτους ὀλίγον χρόνον
 ἐκλιπόντες τὰς Θήβας ἐπανῆλθον πάλιν· ὥς δ' αὐτως
 ὑπὸ Θρακῶν καὶ Πελασγῶν ἐκπεσόντες ἐν Θετταλίᾳ
 συνεστήσαντο τὴν ἀρχὴν μετὰ Ἀρναίων ἐπὶ πολὺν
 15 χρόνον, ὥστε καὶ Βοιωτοὺς κληθῆναι πάντας. εἴτ'
 ἀνέστρεψαν εἰς τὴν οἰκίαν, ἥδη τοῦ Αἰολικοῦ στόλου
 παρεσκευασμένου περὶ Ἀυλίδᾳ τῆς Βοιωτίας, ὃν ἔσταλ-
 λον εἰς τὴν Ἀσίαν οἱ Ὀρέστου παῖδες. προσθέντες δὲ
 τῇ Βοιωτίᾳ τὴν Ὀρχομενίαν (οὐ γὰρ ἦσαν κοινῇ πρό-
 20 τερον, οὐδ' Ὀμηρος μετὰ Βοιωτῶν αὐτοὺς κατέλεξεν
 ἄλλ' ἰδίᾳ, Μινύας προσαγορεύσας) μετ' ἐκείνων ἐξέ-
 βαλον τοὺς μὲν Πελασγοὺς εἰς Ἀθήνας, ἀφ' ὧν ἐκλή-
 θη μέρος τι τῆς πόλεως Πελασγικόν (ᾧκησαν δὲ ὑπὸ
 τῷ Ῥηητῷ), τοὺς δὲ Θρακὰς ἐπὶ τὸν Παρνασσόν.
 Ῥαντες δὲ τῆς Φωκίδος Ῥαν πόλιν ῥκισαν.
- 25 Φησὶ δ' Ἐφορος τοὺς μὲν Θρακὰς ποιησαμένους 4
 σπονδὰς πρὸς τοὺς Βοιωτοὺς ἐπιθέσθαι νύκτωρ στρα-
 τοπεδεύουσιν ὀλιγωρότερον ὥς εἰρήνης γεγυμνίας·
 διακρουσαμένων [δ'] αὐτοὺς αἰτιωμένων τε ἅμα ὅτι
 τὰς σπονδὰς παρέβαινον, μὴ παραβῆναι φάσκειν ἐκεί-
 30 νους· συνηθέσθαι γὰρ ἡμέρας, νύκτωρ δ' ἐπιθέσθαι. C.402
 ἀφ' οὗ δὴ καὶ τὴν παροιμίαν εἰρησθαι „Θρακία παρεύ-
 ρεσις.“ τοὺς δὲ Πελασγοὺς μένοντος ἔτι τοῦ πολέμου

χρηστηριασομένους ἀπελθεῖν, ἀπελθεῖν δὲ καὶ τοὺς Βοιωτοὺς· τὸν μὲν οὖν τοῖς Πελασγοῖς δοθέντα χρησμὸν ἔφη μὴ ἔχειν εἰπεῖν, τοῖς δὲ Βοιωτοῖς ἀνελεῖν τὴν προφητίαν ἀσεβήσαντας εὖ πράξειν· τοὺς δὲ θεωροὺς ὑπονόησαντας χαριζομένην τοῖς Πελασγοῖς τὴν προφητίαν ὅ κατὰ τὸ συγγενὲς (ἐπειδὴ καὶ τὸ ἱερὸν Πελασγικὸν ἐξ ἀρχῆς ὑπῆρξεν) οὕτως ἀνελεῖν, ἀρπάσαντας τὴν ἀνθρωπον εἰς πυρὰν ἐμβαλεῖν ἐνθυμηθέντας, εἴτε κακουργήσασαν εἴτε μὴ, πρὸς ἀμφοτέρω ὁρθῶς ἔχειν, εἰ μὲν παρεχρηστηρίασε, κολασθείσης αὐτῆς, εἰ δ' οὐδὲν ἐκα- 10 κούργησε, τὸ προσταχθὲν αὐτῶν πράξαντων. τοὺς δὲ περὶ τὸ ἱερὸν τὸ μὲν ἀκρίτους κτείνειν τοὺς πράξαντας, καὶ ταῦτ' ἐν ἱερῷ, μὴ δοκιμάσαι, καθιστάναι δ' εἰς κρίσιν, καλεῖν δ' ἐπὶ τὰς ἱερείας, ταύτας δὲ εἶναι τὰς προφήτιδας αἱ λοιπαὶ τριῶν οὐσῶν περιῆσαν· λε- 15 γόντων δ' ὥς οὐδαμοῦ νόμος εἴη δικάζειν γυναῖκας, προσελέσθαι καὶ ἄνδρας ἴσους ταῖς γυναιξὶ τὸν ἀριθμόν· τοὺς μὲν οὖν ἄνδρας ἀπογνῶναι, τὰς δὲ γυναῖκας καταγνῶναι, ἴσων δὲ τῶν ψήφων γενομένων τὰς ἀπολυούσας νικῆσαι· ἐκ δὲ τούτων Βοιωτοῖς μόνοις 20 ἄνδρας προθεσπίζειν ἐν Λωδώνῃ. τὰς μέντοι προφήτιδας ἐξηγουμένας τὸ μαντεῖον εἰπεῖν, ὅτι προστάττοι ὁ θεὸς τοῖς Βοιωτοῖς τοὺς παρ' αὐτοῖς τρίποδας * συλλέγοντας εἰς Λωδώνην πέμπειν κατ' ἔτος· καὶ δὴ καὶ ποιεῖν τοῦτο· ἀεὶ γάρ τινα τῶν ἀνακειμένων τριπόδων 25 νύκτωρ καθαιροῦντας καὶ κατακαλύπτουτας ἱματίοις ὥς ἂν λάθρα τριποδηφορεῖν εἰς Λωδώνην.

6 Μετὰ δὲ ταῦτα τὴν Αἰολικὴν ἀποικίαν συνέπραξαν τοῖς περὶ Πενθίλον, πλείστοις ἐξ ἑαυτῶν συμπεμπαντες, ὥστε καὶ Βοιωτικὴν προσαγορευθῆναι. ὥστε- 30

9. post κακουργήσασαν: περὶ τῶν γυναικῶν τῶν δικαστῶν

ρον δὲ χρόνοις πολλοῖς ὁ Περσικὸς πόλεμος περὶ Πλα-
 ταιᾶς γενόμενος διελυμήνατο τὴν χώραν. εἴτ' ἀνέλα-
 βον σφᾶς πάλιν ἐπὶ τοσοῦτον ὥστε καὶ τῆς τῶν Ἑλλή-
 νων ἀρχῆς ἀμφισβητῆσαι Θηβαίους δυσὶ μάχαις κρα-
 5 τήσαντας Λακεδαιμονίους. Ἐπαμεινώνδα δὲ πεσόντος
 ἐν τῇ μάχῃ ταύτης μὲν τῆς ἐλπίδος διεσφάλησαν, ὑπὲρ
 δὲ τῶν Ἑλλήνων ὁμῶς ἐπολέμησαν πρὸς Φωκέας τοὺς
 τὸ ἱερὸν συλήσαντας τὸ κοινόν. κακωθέντες δ' ὑπὸ τε C. 403
 τούτου τοῦ πολέμου καὶ τῶν Μακεδόνων ἐπιθεμένων
 10 τοῖς Ἑλλησιν, ὑπὸ τῶν αὐτῶν τούτων καὶ ἀπέβαλον
 τὴν πόλιν κατασκαφεῖσαν καὶ ἀνέλαβον ἀνακτισθεῖ-
 σαν. ἔξ ἐκείνου δ' ἤδη πράττοντες ἐνδεέστερον αἰεὶ
 μέχρι εἰς ἡμᾶς οὐδὲ κώμης ἀξιολόγου τύπον σώξουσι.
 καὶ [αἱ] ἄλλαι δὲ πόλεις ἀνὰ λόγον πλὴν Τανάγρας καὶ
 15 Θεσπιῶν· αὗται δ' ἱκανῶς συμμένουσιν πρὸς ἐκείνας
 κρινόμεναι.

Ἐξῆς δὲ τὴν περιήγησιν τῆς χώρας ποιητέον ἀρ- 6
 ξάμενους ἀπὸ τῆς πρὸς Εὐβοίαν παραλίᾳς τῆς συνε-
 χοῦς τῇ Ἀττικῇ. ἀρχὴ δ' ὁ Ὠρωπὸς καὶ ὁ ἱερὸς λιμὴν
 20 ὃν καλοῦσιν Δελφίνιον, καθ' ὃν ἡ παλαιὰ Ἐρέτρια ἐν
 τῇ Εὐβοίᾳ, διάπλουν ἔχουσα ἐξήκοντα σταδίῳ. μετὰ
 δὲ τὸ Δελφίνιον ὁ Ὠρωπὸς ἐν εἴκοσι σταδίοις· κατὰ δὲ
 τοῦτόν ἐστιν ἡ νῦν Ἐρέτρια, διάπλους δ' ἐπ' αὐτὴν
 στάδιοι τετταράκοντα.

25 Εἶτα Δήλιον τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος ἐκ Δήλου 7
 ἀφιδρυμένον, Ταναγραίων πολίχνιον Ἀνλίδος διέχον
 σταδίους τριάκοντα, ὅπου μάχῃ λειφθέντες Ἀθηναῖοι
 προτροπάδην ἔφυγον· ἐν δὲ τῇ φυγῇ πεσόντα ἄφ' ἵπ-
 30 πον Ἰενοφῶντα ἰδὼν κείμενον τὸν Γρύλλου Σωκρά-
 τος ὁ φιλόσοφος στρατεύων πεζὸς τοῦ ἵππου γεγονό-
 τος ἐκποδὼν ἀνέλαβε τοῖς ὤμοις αὐτόν, καὶ ἔσωσεν ἐπὶ
 πολλοὺς σταδίους ἕως ἐπαύσατο ἡ φυγὴ.

8 Ἔτα λιμὴν μέγας ὃν καλοῦσι Βαθὺν λιμένα· εἴθ' ἡ Ἀύλῃς πετρῶδες χωρίον καὶ κώμη Ταναγραίων· λιμὴν δ' ἐστὶ πεντήκοντα πλοίοις, ὥστ' εἰκὸς τὸν ναύσταθμον τῶν Ἑλλήνων ἐν τῷ μεγάλῳ ὑπάρξαι λιμένι. καὶ ὁ Εὐρύπος δ' ἐστὶ πλησίον ὁ Χαλκίδος, εἰς ὃν ἀπὸ 5 Σουνίου στάδιοι * ἐβδομήκοντα· ἔστι δ' ἐπ' αὐτῷ γέφυρα δίπλευρος, ὡς εἴρηκα· πύργος δ' ἐκατέρωθεν ἐφέστηκεν ὁ μὲν ἐκ τῆς Χαλκίδος ὁ δ' ἐκ τῆς Βοιωτίας διαφκοδόμεται δ' εἰς αὐτοὺς σῦριγξ. περὶ δὲ τῆς παλιρροίας τοῦ Εὐρίπου τοσοῦτον μόνον εἰπεῖν ἱκανόν, ὅτι 10 ἐπτάκις μεταβάλλειν φασὶ καθ' ἡμέραν ἐκάστην καὶ νύκτα· τὴν δ' αἰτίαν ἐν ἄλλοις σκεπτέον.

9 Πλησίον δ' ἐστὶν ἐφ' ὕψους κείμενον χωρίον Σαλγανεύς, ἐπάνωμον τοῦ ταφέντος ἐπ' αὐτῷ Σαλγανέως ἀνδρὸς Βοιωτίου, καθηγησαμένου τοῖς Πέρσαις εἰς- 15 πλέουσιν εἰς τὸν διάπλουν τοῦτον ἐκ τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου, ὃν φασιν ἀναιρεθῆναι πρὶν ἢ τῷ Εὐρίπῳ συνάπτειν ὑπὸ τοῦ ναυάρχου Μεγαβάτου νομισθέντα κακοῦργον, ὡς ἐξ ἀπάτης ἐμβαλόντα τὸν στόλον εἰς τυφλὸν τῆς θαλάττης στενωπὸν· αἰσθόμενον δὲ τὸν 20 βάρβαρον τὴν περὶ αὐτὸν ἀπάτην μεταγνώναί τε καὶ ταφῆς ἀξιῶσαι τὸν ἀναιτίως ἀποθανόντα.

C.404 10 Καὶ ἡ Γραῖα δ' ἐστὶ τόπος Ὠρωποῦ πλησίον καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀμφιαράου καὶ τὸ Ναρκίσσου τοῦ Ἐρετριέως μνημα ὃ καλεῖται Σιγηλοῦ, ἐπειδὴ σιγῶσι πα- 25 ριόντες· τινὲς δὲ τῇ Τανάγρα τὴν αὐτὴν φασιν· ἡ Ποιμανδρὶς δ' ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ Ταναγραικῇ· καλοῦνται δὲ καὶ Γεφυραῖοι οἱ Ταναγραῖοι. ἐκ Κνωπίας δὲ τῆς Θηβαϊκῆς μεθιδρύ[θη κατὰ χρησμόν] δεῦρο τὸ Ἀμφιαράειον.

30

11 Καὶ ὁ Μυκαλησσὸς δὲ κώμη τῆς Ταναγραϊκῆς·

κεῖται δὲ παρ' ὁδὸν [τὴν ἐκ] Θηβῶν εἰς Χαλκίδα· ὡς
 δ' αὐτως καὶ τὸ Ἄρμα, τῆς Ταναγραϊκῆς κόμης ἔρημος
 περὶ τὴν Μυκαλησσόν, ἀπὸ τοῦ Ἀμφιαράου ἄρματος
 λαβοῦσα τοῦνομα, ἑτέρα οὖσα τοῦ Ἄρματος τοῦ κατὰ
 5 τὴν Ἀττικὴν, ὅ ἐστι περὶ Φυλὴν, δῆμον τῆς Ἀττικῆς
 ὁμορον τῇ Τανάγρα. ἐντεῦθεν δὲ ἡ παροιμία τὴν ἀρ-
 χὴν ἔσχεν ἡ λέγουσα „ὁπόταν δι' Ἄρματος ἀστράψῃ,“
 ἀστραπὴν τινα σημειουμένων κατὰ χρησμὸν τῶν λε-
 γομένων Πυθαϊστῶν, βλεπόντων ὡς ἐπὶ τὸ Ἄρμα καὶ
 10 τότε πεμπόντων τὴν θυσίαν εἰς Δελφοὺς ὅταν ἀστρά-
 ψαντα ἰδῶσιν· ἐτήρουν δ' ἐπὶ τρεῖς μῆνας, καθ' ἕκα-
 στον μῆνα ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας καὶ νύκτας, ἀπὸ τῆς ἐσχά-
 ρας τοῦ ἀστραπαίου Διός· ἔστι δ' αὕτη ἐν τῷ τείχει
 μεταξὺ τοῦ Πυθίου καὶ τοῦ Ὀλυμπίου. περὶ δὲ τοῦ
 15 Ἄρματος τοῦ Βοιωτιακοῦ οἱ μὲν φασιν ἐκπεσόντος ἐκ
 τοῦ ἄρματος ἐν τῇ μάχῃ τοῦ Ἀμφιαράου κατὰ τὸν τό-
 πον, ὅπου νῦν ἐστὶ τὸ ἱερὸν αὐτοῦ, τὸ ἄρμα ἔρημον
 ἐνεχθῆναι ἐπὶ τὸν ὁμώνυμον τόπον· οἱ δὲ τοῦ Ἀδρά-
 στου συντριβῆναι τὸ ἄρμα φεύγοντός φασιν ἐνταῦθα,
 20 τὸν δὲ διὰ τοῦ Ἀρείονος σωθῆναι. Φιλόχορος δ' ὑπὸ
 τῶν κωμητῶν σωθῆναι φησιν αὐτόν, καὶ διὰ τοῦτο
 ἰσοπολιτείαν αὐτοῖς παρὰ τῶν Ἀργείων ὑπάρχει.
 Ἔστι δὲ τῷ ἐκ Θηβῶν εἰς * Ἄργος ἀνιόντι ἐν ἀρι- 12
 στερεῇ ἡ Τάναγρα κ..... ἐν δεξιᾷ κεῖται· καὶ
 25 ἡ Ἰρία δὲ τῆς Ταναγραϊκῆς νῦν ἐστὶ, πρότερον δὲ τῆς
 Θηβαϊδος· ὅπου ὁ Ἰριεὺς μεμύθειται καὶ ἡ τοῦ Ὁρί-
 ωνος γένεσις, ἣν φησι Πίνδαρος ἐν τοῖς διθυράμβοις·
 κεῖται δ' ἐγγὺς Αὐλίδος. ἐνιοὶ δὲ τὰς Ἰσιὰς Ἰρίην λέγε-
 σθαί φασι, τῆς Παρασωπίας οὖσαν ὑπὸ τῷ Κιθαιρῶνι
 30 πλησίον Ἐρυθρῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ, ἀποικον Ἰριέων,

1. post Χαλκίδα: καλοῦσι δὲ βοιωτικῶς Μυκαλητόν.

κτίσμα δὲ Νυκτέως τοῦ Ἀντιόπης πατρὸς. εἰσὶ δὲ καὶ ἐν τῇ Ἀργείᾳ Ὑσίαι κώ[μη], οἱ δ' ἐξ αὐτῆς Ὑσιᾶται λέγονται. τῶν δ' Ἑρυθρῶν τούτων ἄποικοι αἱ ἐν Ἰωνίᾳ Ἑρυθραί. καὶ ὁ Ἑλεὼν δ' ἐστὶ κώμη Ταναγρακὴ, ἀπὸ τῶν ἑλῶν ὠνομασμένη. 5

13 Μετὰ δὲ Σαλγανέα Ἀνθηδῶν πόλις λιμένα ἔχουσα, ἐσχάτη τῆς Βοιωτικῆς παραλίας τῆς πρὸς Εὐβοίᾳ, C.405καθ' ἅπερ καὶ ὁ ποιητὴς εἰρηκεν, „Ἀνθηδόνα τ' ἐσχατό- „ωσαν.“ εἰσὶ μέντοι ἔτι προΐόντι μικρὸν πολίχνη δύο τῶν Βοιωτῶν, Λάρυμνά τε, παρ' ἣν ὁ Κηφισὸς ἐκδί- 10 δωσι, καὶ ἔτι ἐπέκεινα Ἀλαί, ὁμώνυμοι τοῖς Ἀττικοῖς δήμοις. κατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην κεῖσθαι φασιν Αἰγὰς τὰς ἐν Εὐβοίᾳ, ἐν αἷς τὸ τοῦ Ποσειδῶνος ἱερὸν τοῦ Αἰγαίου· ἐμνήσθημεν δ' αὐτοῦ καὶ πρότερον. δι- 15 αρμα δ' ἐστὶν ἀπὸ μὲν τῆς Ἀνθηδόου εἰς Αἰγὰς ἑκα- τὸν εἴκοσι στάδιοι, ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων τόπων πολὺ ἐλάττους· κεῖται δ' ἐπὶ ὄρους ὑψηλοῦ τὸ ἱερὸν, ἣν δέ ποτε καὶ πόλις· ἐγγὺς δὲ τῶν [Αἰγῶν] καὶ αἱ Ὀρόβιαι. ἐν δὲ τῇ Ἀνθηδονίᾳ Μεσσάπιον ὄρος ἐστὶν ἀπὸ Μεσ- 20 σάπου, ὃς εἰς τὴν Ἰαφυρίαν ἐλθὼν Μεσσαπίαν τὴν χῶραν ἐκάλεσεν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ περὶ τὸν Γλαῦκον μυθεύεται τὸν Ἀνθηδόνιον, ὃν φασιν εἰς κῆτος μετα- βαλεῖν.

14 Πλησίον δ' ἐστὶν Ἀνθηδόου ἱεροπρεπὴς τόπος τῆς Βοιωτίας, Ἰχνη πόλεως ἔχων, ὁ καλούμενος Ἴσος 25 συστέλλονται τὴν πρώτην συλλαβήν. οἴονται δὲ τινες δεῖν γράφειν „Ἴσόν τε ξαθέην Ἀνθηδόνα τ' ἐσχατό- „σαν“ ἐκτείνοντες τὴν πρώτην συλλαβὴν ποιητικῶς διὰ τὸ μέτρον, ἀντὶ τοῦ „Νισάν τε ξαθέην.“ ἡ γὰρ Νῖσα οὐδαμοῦ φαίνεται τῆς Βοιωτίας, ὥς φησιν Ἀπολ- 30 λόδωρος ἐν τοῖς περὶ νεῶν. [ε]ῖλη, εἰ μὴ τὴν Νῖσαν οὕτως εἰρηκεν· ἦν γὰρ ὁ Μεγαρικῇ,

ἐκεῖθεν ἀπωρισμένη πρόσχωρος τοῦ Κιθα]ιρῶνος, ἐκλείπεται δὲ νῦν. τινὲς δὲ γράφουσι „Κρεῦσάν τε „ξαθέην,“ τὴν νῦν Κρέουσαν δεχόμενοι, τὸ τῶν Θεσπιέων ἐπίνειον ἐν τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ ἰδρυμένον· ἄλ-
 5 λοι δὲ „Φαράς τε ξαθέας.“ ἔστι δὲ τῆς τετρακωμίας τῆς περὶ Τάναγραν, Ἐλεῶνος Ἀρματος Μυκαλησσοῦ Φαρῶν. γράφουσι δὲ καὶ τοῦτο „Νῦσάν τε ξαθέην.“ κώμη δ' ἔστι τοῦ Ἐλικῶνος ἢ Νῦσα. ἡ μὲν οὖν παραλία τοιαύτη τις ἢ πρὸς Εὐβοίαν.

- 10 Τὰ δ' ἑξῆς ἐν τῇ μεσογαίᾳ πεδιά ἐστὶ κοῖλα πάν- 15
 τοθεν ἐκ τῶν ἄλλων μερῶν ὄρεσι περιεχόμενα, τοῖς Ἀττικοῖς μὲν πρὸς νότου, πρὸς ἄρκτου δὲ τοῖς Φωκι-
 κοῖς· ἀπὸ δὲ τῆς ἐσπέρας ὁ Κιθαιρῶν λοξὸς ἐμπίπτει
 μικρὸν ὑπὲρ τῆς Κρισαίας θαλάττης, ἔχων τὴν ἀρχὴν
 15 συνεχῇ τοῖς Μεγαρικοῖς καὶ τοῖς Ἀττικοῖς ὄρεσιν, εἰτ' ἐπιστρέφων εἰς τὰ πεδιά, πανύμενος δὲ περὶ τὴν Θη-C.406
 βαίαν.

Τῶν δὲ πεδίων τούτων τὰ μὲν λιμνάζει, ποταμῶν 16
 ἀναχεομένων εἰς αὐτά, τῶν δ' ἐμπιπτόντων, εἰτα ἐκρύ-
 20 σεις λαμβανόντων· τὰ δ' ἀνέψυκται καὶ γεωργεῖται παντοδαπῶς διὰ τὴν εὐκαρπίαν. ὑπάντρον δὲ καὶ ση-
 ραγγῶδους οὔσης κατὰ βάρους τῆς γῆς, σεισμοὶ γενό-
 μενοι πολλάκις ἐξαίσιον τοὺς μὲν ἐφραξαν τῶν πόρων
 τοὺς δὲ ἀνέωξαν, τοὺς μὲν μέχρι τῆς ἐπιφανείας τοὺς
 25 δὲ δι' ὑπονόμων· συμβαίνει δὴ καὶ τοῖς ὕδασι τοῖς μὲν
 δι' ὑπονόμων φέρεσθαι τῶν ρείθρων τοῖς δ' ἐπιπολῆς,
 τοῖς τε λιμναίοις καὶ τοῖς ποταμίοις. ἐγγωσθέντων δὲ
 κατὰ βάρους τῶν πόρων αὔξεσθαι τὰς λίμνας συμ-
 βαίνει μέχρι τῶν οἰκουμένων τόπων ὥστε καὶ πόλεις
 30 καταπίνεσθαι καὶ χώρας, ἀνοιχθέντων δὲ τῶν αὐτῶν
 ἢ ἄλλων ἀνακαλύπτεσθαι, καὶ τοὺς αὐτοὺς τόπους
 ποτὲ μὲν πλεῖσθαι ποτὲ δὲ πεξεύεσθαι, καὶ τὰς αὐ-

τὰς πόλεις ποτὲ μὲν ἐπὶ τῇ λίμνῃ ποτὲ δὲ ἄπωθεν κεῖσθαι.

- 17 Διττῶς δὲ τοῦτο γίνεται· καὶ γὰρ μενουσῶν ἀκιν-
νῆτων τῶν πόλεων, ὅταν ἡ αὕξησις τῶν ὑδάτων ἦττων
ἢ τῆς ὑπερχύσεως διὰ ὕψος τῶν οἰκήσεων ἢ διὰ ἀπό- 5
στασιν, καὶ διὰ ἀνοικισμόν, ὅταν τῷ πλησιασμῷ κιν-
δυνεύσαντες πολλάκις ἀπαλλαγὴν πορίσωνται τοῦ φό-
βου τὴν μετάληψιν τῶν χωρίων τῶν ἄπωθεν ἢ τῶν ἐν
ὑψει. παρακολουθεῖ δὲ τοῖς οὕτως ἀνοικισθεῖσι τὸ τὴν
αὐτὴν προσηγορίαν φυλάττουσιν, ἐτύμως πρότερον 10
λεγομένοις ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος τοπικῶς, νῦν μη-
[κέτι] λέγεσθαι ἐτύμως· Πλαταιὰς γὰρ ἀπὸ τῆς πλά-
της τῶν κωπῶν εἰρησθαι πιθανὸν καὶ Πλαταιέας τοὺς
ἀπὸ κωπηλασίας ζῶντας, ἀλλὰ νῦν ἄπωθεν τῆς λίμνης
οἰκοῦντες οὐκέτ' ἂν προσαγορεύοιντο ἐτύμως. Ἔλος 15
τε καὶ Ἐλεῶν καὶ Εἰλέσιον ἐκλήθη διὰ τὸ ἐπὶ τοῖς ἔλε-
σιν ἰδρῦσθαι· νῦν δὲ οὐχ ὁμοίως ἔχει ταῦτα, ἢ ἀνοικι-
σθέντων ἢ τῆς λίμνης ἐπιπολὺν ταπεινωθείσης διὰ τὰς
ὑστερον γενομένας ἐκρύσεις· καὶ γὰρ τοῦτο δυνατόν.

- 18 Ἀηλοὶ δὲ καὶ ὁ Κηφισσὸς τοῦτο μάλιστα τὴν Κω- 20
παῖδα λίμνην πληρῶν. αὐξομένης γὰρ αὐτῆς ὥστε κιν-
δυνεύειν καταποθῆναι τὰς Κώπας, [ἄς] ὅ τε ποιητῆς
ὀνομάζει, καὶ ἀπ' αὐτῶν ἡ λίμνη τὴν ἐπωνυμίαν εἰ-
ληφε, χάσμα γενηθὲν πρὸς τῇ λίμνῃ πλησίον τῶν Κω-
πῶν ἀνέωξεν ὑπὸ γῆς ῥεῖθρον ὅσον τριάκοντα σταδίων 25
καὶ ἐδέξατο τὸν ποταμόν, εἶτα ἐξέρρηξεν εἰς τὴν ἐπι-
φάνειαν κατὰ Λάρυμναν τῆς Λοκρίδος τὴν ἄνω· καὶ
γὰρ ἑτέρα ἐστίν, ἥς [ἐμνήσθη]μεν, [ἥ] Βοιωτιακῇ,
ἐπὶ τῇ θαλάττῃ, ἣ προσέθεσαν Ῥωμαῖοι τὴν ἄνω. κα-
C.407 λείται δ' ὁ τόπος Ἀγχόη· ἔστι δὲ καὶ λίμνη ὁμώνυμος· 30
ἐντεῦθεν δ' ἦδη ὁ Κηφισσὸς ἐκδίδωσιν ἐπὶ τὴν θά-
λατταν. τότε μὲν οὖν παυσαμένης τῆς πλημμυρίδος,

- παῦλα καὶ τοῦ κινδύνου τοῖς παροικοῦσιν ὑπῆρξε, πλὴν τῶν ἤδη καταποθεισῶν πόλεων. πάλιν δ' ἐρχομένων τῶν πόρων, ὁ μεταλλευτὴς Κράτης ἀνὴρ Χαλκιδεὺς ἀνακαθαίρειν τὰ ἐμφράγματα ἐπαύσατο στα-
 5 σιασάντων τῶν Βοιωτῶν, καίπερ, ὥς αὐτὸς ἐν τῇ πρὸς Ἀλέξανδρον ἐπιστολῇ φησιν, ἀνεψυγμένων ἤδη πολ-
 λῶν, ἐν οἷς οἱ μὲν τὸν Ὀρχομενὸν οἰκίσθαι τὸν ἄρ-
 χαῖον ὑπελάμβανον, οἱ δ' Ἐλευσίνα καὶ Ἀθήνας παρὰ
 τὸν Τρίτωνα ποταμόν· λέγεται [δ' οἰκίσαι] Κέκροπα,
 10 ἥνίκα τῆς Βοιωτίας ἐπῆρξε καλουμένης τότε Ὠγυγίας, ἀφανισθῆναι δὲ ταύτας ἐπικλυσθείσας ὕστερον. γενέ-
 σθαι δὲ φασιν καὶ κατὰ Ὀρχομενὸν χάσμα, καὶ δέξα-
 σθαι τὸν Μέλανα ποταμὸν τὸν ρέοντα διὰ τῆς Ἀλιαρ-
 τίας καὶ ποιοῦντα ἐνταῦθα τὸ ἔλος τὸ φύον τὸν αὐλη-
 15 τικὸν κάλαμον. ἀλλ' οὗτος ἠφάνισται τελέως, εἴτε τοῦ χάσματος διαχέοντος αὐτὸν εἰς ἀδήλους πόρους, εἴτε τῶν περὶ Ἀλιάρτον ἐλῶν καὶ λιμνῶν προαναλι-
 σκόντων αὐτόν, ἀφ' ὧν ποιήεντα καλεῖ τὸν [τόπον] ὁ ποιητὴς „καὶ ποιήενθ' Ἀλιάρτον“ λέγων.
- 20 Οὗτοι μὲν οὖν ἐκ τῶν Φωικῶν ὄρων οἱ ποταμοὶ 19
 καταφέρονται, ὧν ὁ Κηφισσοὺς ἐκ Αἰλαίας Φωικῆς
 πόλεως τὴν ἀρχὴν λαμβάνει, καθάπερ καὶ Ὀμηρὸς φη-
 σιν „οἳ τε Αἰλαίαν ἔχον πηγῆς ἐπὶ Κηφισσοῖο“ δι'
 Ἐλατείας δὲ ὄρεις μεγίστης τῶν ἐν Φωκεύσι πόλεων,
 25 καὶ διὰ Παραποταμίων καὶ Φανοτέων ὁμοίως Φωκι-
 κῶν πολισμάτων, εἰς Χαιρώνειαν τῆς Βοιωτίας πρό-
 εἰσιν, εἰτα διὰ τῆς Ὀρχομενίας καὶ τῆς Κορωνειακῆς
 εἰς τὴν Κωπαΐδα λίμνην ἐξίησι· καὶ ὁ Περγησσὸς δὲ
 καὶ ὁ Ὀλμειός, ἐκ τοῦ Ἑλικῶνος συμβάλλοντες ἀλλή-
 30 λοις, εἰς τὴν αὐτὴν ἐμπίπτουσι λίμνην τὴν Κωπαΐδα
 τοῦ Ἀλιάρτου πλη[σίον· καὶ ἄλλα] δὲ ρεύματα εἰς αὐ-
 τὴν ἐμβάλλει. ἔστι μὲν οὖν μεγάλη, τὴν περιμέτρον

ἔχουσα ὀγδοήκοντα καὶ τριακοσίων σταδίων, αἱ δὲ ἐκρύσεις οὐδαμοῦ φαίνονται πλὴν τοῦ δεχομένου τὸν Κηφιστὸν χάσματος καὶ τῶν ἐλῶν.

- 20 [Τῶν δὲ περι]κειμένων λιμνῶν ἐστὶν ἡ τε * Τρεφία καὶ ἡ Κ[ηφισίς, ἥς] μέμνηται καὶ Ὅμηρος „ὅς ῥ’ ἐν 5
 „ἐν Τλῇ ναίεσκε μέγα πλούτοιο μεμηλώς, λίμνη κε-
 „κλιμένος Κηφισίδι.“ οὐ γὰρ λίμνην τὴν Κωπαΐδα βούλεται λέγειν, ὡς οἴονται τινες, ἀλλὰ τὴν Ὑλικὴν προσαγορευομένην ἀπὸ τῆς πλησίον κώμης ἣν καλοῦ-
 σιν Ὑλας, οὐδὲ Ὑδην, ὡς ἔνιοι γράφουσιν „ὅς ῥ’ ἐν 10
 „Ὑδῇ ναίεσκεν.“ ἡ μὲν γὰρ ἐστὶν ἐν Αὐδία „Τμῶλῳ
 C.408 „ὑπὸ νιφόεντι, Ὑδῆς ἐν πίοιι δῆμῳ,“ ἡ δὲ Βοιωτικὴ ἐπιφέρει γοῦν τῷ „λίμνη κεκλιμένος Κηφισίδι“ τὸ
 „πὰρ δὲ οἱ ἄλλοι ναῖον Βοιωτοί.“ ἡ μὲν γὰρ ἐστὶ με-
 γάλη καὶ οὐκ ἐν τῇ Θηβαΐδι, ἡ δὲ μικρά, ἐκεῖθεν δι’ 15
 ὑπονόμων πληρουμένη, κειμένη μεταξὺ Θηβῶν καὶ Ἀνθηδόνας. Ὅμηρος δ’ ἐνικῶς ἐκφέρει τοτὲ μὲν ἐκτεί-
 νων τὴν πρώτην συλλαβὴν, ὡς ἐν τῷ καταλόγῳ „ἡδ’
 „Τλῆν καὶ Πετεῶνα,“ ποιητικῶς, τοτὲ δὲ συστέλλων
 „ὅς ῥ’ ἐν Τλῇ ναίεσκε“ „σκυτοτόμων ὅχ’ ἄριστος Τλῆ 20
 „ἐνὶ οἰκίᾳ ναίων.“ οὐδ’ ἐνταῦθα εὖ γραφόντων τι-
 νῶν Ὑδῇ ἐνι· οὐ γὰρ ὁ Αἴας ἐκ Αὐδίας τὸ σάκος μετε-
 πέμπετο.

- 21 [Αὗται δ’ αἱ] λίμναι τὴν τάξιν τῶν ἐφεξῆς τόπων [ν
 ὑπογράφουσιν ὥστε] λόγῳ περιληφθῆναι σαφῶς, ὅτι 25
 ὁ [ποιητῆς ἀτάκτως χρῆται] τοῖς ὀνόμασι τῶν τόπων
 τῶν τε ἀξ[ιολόγων καὶ τῶν μῆ· καὶ] χαλεπὸν ἐν το-
 σούτοις καὶ ἀσήμοις τοῖς πλείστοις καὶ ἐν μεσογαίᾳ μη-
 δαμοῦ τῇ τάξει διαπεσεῖν· ἡ παραλία δ’ ἔχει τι πλεο-
 νέκτημα πρὸς τοῦτο· καὶ γνωριμώτεροι οἱ τόποι, καὶ 30

9. post προσαγορευομένην: τῇ προσφθίᾳ ὡς λυρικὴν 10.
 post Ὑλας: ὡς λύρας καὶ θύρας 20. post ναίεσκε: Τύχιος

ἢ θάλαττα τό γε ἐξῆς ὑπαγορεύει βέλτιον· διόπερ καὶ
 ἡμεῖς ἐκεῖθεν πειρώμ[εθα περιοδεύειν]· ἐνταῦθα δ'
 ἐάσαντες τοῦτο τῷ π[οιητῇ ἀκολουθοῦντες ποιήσομεν
 τὴν] διαρίθμησιν, προστιθέντες ὅ τι ἂν χρήσιμον ἦ
 5 [πρὸς τὴν ὑπόθεσιν] ἡμῶν, ὑπ' ἐκείνου δὲ παραλειφθέν.
 ἄρχεται [δ' ἀπὸ τῆς Τρι]της καὶ τῆς Ἀυλίδος, περὶ ὧν
 εἰρήκαμεν.

Σχοῖνος δ' ἐστὶ χώρα τῆς Θηβαϊκῆς κατὰ τὴν ὁδὸν 22
 τὴν ἐπὶ Ἀνθηδόνο, διέχουσα τῶν Θηβῶν ὅσον πεντή-
 10 κοντα σταδίους· ῥεῖ δὲ καὶ ποταμὸς δι' αὐτῆς Σχοινοῦς.

Σκῶλος δ' ἐστὶ κώμη τῆς Παρασωπίας ὑπὸ τῷ 23
 Κιθαιρῶνι, δυσοίκετος τόπος καὶ τραχύς, ἀφ' οὗ καὶ
 ἡ παροιμία „εἰς Σκῶλον μὴτ' αὐτὸς ἔναι, μὴτ' ἄλλω
 ἔπεσθαι.“ καὶ τὸν Πενθέα δὲ ἐνθένδε καταγόμενον
 15 διασπασθῆναί φασιν. ἦν δὲ καὶ τῶν περὶ Ὀλυνθον
 πόλεων ὁμώνυμος αὐτῇ Σκῶλος. εἴρηται δ' ὅτι Πα-
 ρασώπιοι καὶ κώμη τις καλεῖται ἐν Ἡρακλείᾳ τῇ Τρα-
 χυνίᾳ, παρ' ἣν ῥεῖ Ἀσωπὸς ποταμὸς, καὶ ὅτι ἐν Σι-
 κυωνίᾳ ἄλλος ἐστὶν Ἀσωπὸς καὶ ἡ χώρα Ἀσωπία, δι'
 20 ἧς ῥεῖ.

Ὁ Ἐτεωνὸς δὲ Σκάρφῃ μετωνομάσθη, καὶ αὕτη 24
 δὲ τῆς Παρασωπίας. ὁ γὰρ Ἀσωπὸς καὶ ὁ Ἰσμηνὸς διὰ
 τοῦ πεδίου ῥέουσιν τοῦ πρὸ τῶν Θηβῶν· ἔστι δὲ καὶ ἡ
 Αἰρκὴ κρήνη καὶ Πότνιαι, ἐφ' ὧν μυθεύεται τὰ περὶ C.409
 25 τὸν Ποτνιέα Γλαῦκον τὸν διασπασθέντα ὑπὸ τῶν Ποτ-
 νιάδων ἔππων τῆς πόλεως πλησίον, καὶ ὁ Κιθαιρῶν δὲ
 οὐκ ἄπωθεν τῶν Θηβῶν τελευτᾷ· παρ' αὐτὸν δὲ ὁ
 Ἀσωπὸς ῥεῖ, τὴν ὑπάρειαν αὐτοῦ κλύζων καὶ ποιῶν
 τοὺς Παρασωπίους εἰς κατοικίας πλείους διηρημένους,
 30 ἅπαντας δ' ὑπὸ Θηβαίοις ὄντας (ἕτεροι δ' ἐν τῇ Πλα-

20. post ῥεῖ: εἰσὶ καὶ ἄλλοι ποταμοὶ ὁμώνυμοι τῷ ποταμῷ
 τούτῳ.

ταιέων φασί τόν τε Σκῶλον καὶ τὸν Ἑττειωνὸν καὶ τὰς Ἑρύθρας· καὶ γὰρ παρα[ρρεῖ] Πλαταιᾶς καὶ παρὰ Τάναγραν ἐκδίδωσιν). ἐν δὲ τῇ Θηβαίων εἰσὶ καὶ αἱ Θεράπναι καὶ ὁ Τευμησσός, ὃν ἐκόσμησεν Ἀντίμαχος διὰ πολλῶν ἐπῶν, τὰς μὴ προσούσας ἀρετὰς διαριθ- 5 μούμενος, „ἔστι τις ἡνεμόεις ὀλίγος λόφος.“ γινώριμα δὲ τὰ ἔπη.

- 25 Θεσπειαν δὲ λέγει τὰς νῦν Θεσπιάς, πολλῶν ὀνομάτων τῶν μὲν ἀμφοτέρως λεγομένων καὶ ἐνικῶς καὶ πληθυντικῶς, καθάπερ καὶ ἀρρενικῶς καὶ θηλυκῶς, 10 τῶν δ' ὑποτέρως. ἔστι δὲ πόλις πρὸς τῷ Ἐλικῶνι νοτιωτέρα αὐτοῦ, ἐπικειμένη δὲ τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ καὶ αὐτῇ καὶ ὁ Ἐλικῶν· ἐπίνειον δ' ἔχουσιν αἱ Θεσπιαὶ Κρέουσαν, ἣν καὶ Κρεουσίδα καλοῦσιν. ἐν δὲ τῇ Θεσπειῶν ἔστι καὶ ἡ Ἀσκηρὴ κατὰ τὸ πρὸς Ἐλικῶνα μέρος, 15 ἡ τοῦ Ἡσιόδου πατρίς· ἐν δεξιᾷ γὰρ ἔστι τοῦ Ἐλικῶνος, ἐφ' ὕψηλοῦ καὶ τραχέος τόπου κειμένη, ἀπέχουσα τῶν Θεσπιῶν ὅσον τετταράκοντα σταδίους, ἣν καὶ κεκωμώδηκεν αὐτὸς ἐ[πιλαβόμενος] τοῦ πατρός, ὅτι ἐκ Κύμης τῆς Αἰολίδος μ[ετέστη, θρασύ]τερον λέγων 20 „νάσσατο δ' ἄγχ' Ἐλικῶνος οἰζυρῇ [ἐνὶ κόμῃ], Ἀσκηρὴ χεῖμα κακῇ, θέρει ἀργαλέῃ, οὐδέ ποτ' [ἔσθλῃ].“ ὁ δὲ Ἐλικῶν συνεχῆς ἔστι τῇ Φωκίδι ἐκ τῶν πρὸς ἄρκτον αὐτοῦ μερῶν· μικρὰ δὲ καὶ ἐκ τῶν πρὸς ἐσπέραν κατὰ τὸν ὕστατον λιμένα τῆς Φωκίδος, ὃν καλοῦσιν ἀπὸ 25 τοῦ συμβεβηκότος μυχόν· ὑπέρεκειται γὰρ κατὰ τοῦτον μάλιστα τὸν λιμένα τοῦ Κρισαίου κόλπου καὶ ὁ Ἐλικῶν καὶ ἡ Ἀσκηρὴ καὶ ἔτι αἱ Θεσπιαὶ καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτῆς ἡ Κρέουσα. τοῦτο δὲ καὶ κοιλότατον νομίζεται το μέρος τοῦ Κρισαίου κόλπου καὶ ἀπλῶς τοῦ Κοριν- 30 θιακοῦ· στάδιοι δ' εἰσὶ τῆς [παραλίας] τῆς ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ λιμένος εἰς Κρέουσαν ἐνε[νῆκοιτα·] ἐντεῦ-

- θεν δὲ ἑκατὸν εἰκοσιν ἕως τῆς ἄκρας ἦν [Ὀλμιάς] κα-
 λοῦσιν· ἐν δὲ τῷ κοιλοτάτῳ τοῦ κόλπου τοῦ [Κρισαίου
 συμ]βέβηκε τὰς Πηγὰς κεῖσθαι καὶ τὴν Οἰνόην, πε[ρὶ
 ὧν εἰρήκαμεν. ὁ μὲν οὖν Ἑλικῶν οὐ πολὺ διεστηκώς
 5 τοῦ Παρνασσοῦ ἐνάμιλλός ἐστιν ἐκείνῳ κατὰ τε ὕψος
 καὶ περίμετρον· ἄμφω γὰρ χιονόβολα τὰ ὄρη καὶ πε- C. 410
 τρώδῃ, περιγράφεται δ' οὐ πολλῇ χώρῳ. ἐνταῦθα δ'
 ἐστὶ τό τε τῶν Μουσῶν ἱερὸν καὶ ἡ Ἴππου κρήνη καὶ
 τὸ τῶν Λειβηθριδῶν νυμφῶν ἄντρον· ἐξ οὗ τεκμαί-
 10 ροιτ' ἂν τις Θοῤῃκας εἶναι τοὺς τὸν Ἑλικῶνα ταῖς Μού-
 σαις καθιερώσαντας, οὐ καὶ τὴν Πιερίδα καὶ τὸ Λεῖβη-
 θρον καὶ τὴν Πίμπλειαν ταῖς αὐταῖς θεαῖς ἀνέδειξαν·
 ἐκαλοῦντο δὲ Πίερες· ἐκλιπόντων δ' ἐκείνων Μανε-
 δόνες νῦν ἔχουσι τὰ χωρία ταῦτα. εἴρηται δ' ὅτι τὴν
 15 Βοιωτίαν ταύτην ἐπώκησάν ποτε Θοῤῃκες βιασάμενοι
 τοὺς Βοιωτοὺς καὶ Πελασγοὶ καὶ ἄλλοι βάρβαροι. αἱ
 δὲ Θεσπιαὶ πρότερον μὲν ἐγνωρίζοντο διὰ τὸν Ἑρωτα
 τὸν Πραξιτέλους, ὃν ἐγλυψε μὲν ἐκεῖνος, ἀνέθηκε δὲ
 Γλυκέρα ἢ ἑταίρα Θεσπιδεύσιν ἐκεῖθεν οὔσα τὸ γένος,
 20 λαβοῦσα δῶρον παρὰ τοῦ τεχνίτου. πρότερον μὲν οὖν
 ὀφόμενοι τὸν Ἑρωτά τινες ἀνέβαινον ἐπὶ τὴν Θεσπειαν
 ἄλλως οὐκ οὔσαν ἄξιοθέατον, νυνὶ δὲ μόνῃ συνέστηκε
 τῶν Βοιωτικῶν πόλεων καὶ Τάναγρα· τῶν δ' ἄλλων
 ἐρείπια καὶ ὀνόματα λείπεται.
- 25 [Μετ]ὰ δὲ Θεσπιάς καταλέγει Γραῖαν καὶ Μυκα- 26
 [λησσόν, περ]ὶ ὧν εἰρήκαμεν· ὥς δ' αὐτως καὶ περὶ
 τῶν [ἄλλων „οἱ τ'] ἀμφ' Ἄρμ' ἐνέμοντο καὶ Εἰλέσιον
 „καὶ Ἑρύθρας, [οἱ τ' Ἑλεῶν] εἶχον ἡδ' Ἄλῃν καὶ Πε-
 „τεῶνα.“ Πετεῶν δὲ κώμη τῆς Θηβαΐδος ἐγγὺς τῆς
 30 ἐπ' Ἀνθηδόνα ὁδοῦ, ἡ δ' Ὠκαλή μέση Ἀλιάρτου καὶ
 Ἀλαλκομενίου ἑκατέρου τριάκοντα σταδίους ἀπέχου-
 σα· παραρρεῖ δ' αὐτὴν ποτάμιον ὁμώνυμον. Μεδεῶν

δ' ὁ μὲν Φωκικὸς ἐν τῷ Κρυσαίῳ κόλπῳ, διέχων Βοιω-
τίας σταδίους ἑκατὸν ἐξήκοντα, ὁ δὲ Βοιωτικὸς ἀπ'
ἐκείνου κέκληται, πλησίον δ' ἐστὶν Ὀρχηστοῦ ὑπὸ τῷ
Φοινικίῳ ὄρει, ἀφ' οὗ καὶ μετωνόμασται Φοινικίς· τῆς
δὲ Θηβαίας καὶ τοῦτο λέγεται, [ὑπ' ἐνί]ων δὲ τῆς Ἀλι- 5
αρτίας καὶ Μεδεῶν καὶ Ὠκαλέα.

27 Εἰτά φησι „Κώπας Εὐτρησίην τε πολυτρήρωνά τε
„Θίσβην.“ περὶ μὲν οὖν Κωπῶν εἴρηται· προσάρκτιος
δὲ ἐστὶν ἐπὶ τῇ Κωπαίδι λίμνῃ· αἱ δ' ἄλλαι κύκλῳ εἰ-
σὶν αἶδε, Ἀκραϊφαίαι Φοινικίς Ὀρχηστός Ἀλιάρτος Ὠκα- 10
λέα Ἀλαλκομεναὶ Τιλφούσιον Κορώνεια. καὶ τό γε
C.411 παλαιὸν οὐκ ἦν τῆς λίμνης κοινὸν ὄνομα, ἀλλὰ καθ'
ἐκάστην πρὸς αὐτῇ κατοικίαν ἐκείνης ἐπώνυμος ἐλέ-
γετο, Κωπαῖς μὲν τῶν Κωπῶν, Ἀλιαρτίς δὲ Ἀλιάρτου,
καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων, ὕστερον δ' ἡ πᾶσα Κωπαῖς 15
ἐλέχθη κατ' ἐπικράτειαν· κοιλότατον γὰρ τοῦτο τὸ χω-
ρίον. Πίνδαρος δὲ καὶ Κηφισσίδα καλεῖ ταύτην· πα-
ρατίθησι γοῦν τὴν Τιλφῶσσαν κρήνην ὑπὸ τῷ Τιλ-
φωσσίῳ ὄρει ῥέουσαν πλησίον Ἀλιάρτου καὶ Ἀλαλκο-
μενῶν, ἐφ' ἣ τὸ Τειρεσίου μνημα· αὐτοῦ δὲ καὶ τὸ 20
τοῦ Τιλ[φωσσίου Ἀπόλλω]νος ἱερόν.

28 Ὁ δὲ ποιητὴς ἐφεξῆς ταῖς Κώπαις Εὐτρησίην τί-
θησι κωμίον Θεσπιέων· ἐνταῦθά φησι Ζῆθον καὶ
Ἀμφίονα οἰκῆσαι πρὶν βασιλεῦσαι Θηβῶν. ἡ δὲ Θίσβη
Θίσβαι νῦν λέγονται, οἰκεῖται δὲ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θα- 25
λάττης ὁμορον Θεσπιεῦσι τὸ χωρίον καὶ τῇ Κορωνει-
ακῇ, ὑποπεπτωκὸς ἐκ τοῦ νοτίου μέρους τῷ Ἐλικῶνι
καὶ αὐτό· ἐπίνειον δ' ἔχει πετρῶδες περιστερῶν με-
στόν, ἐφ' οὗ φησιν ὁ ποιητὴς „πολυτρήρωνά τε Θί-
„σβην.“ πλοῦς δ' ἐστὶν ἐνθὲνδε εἰς Σικυῶνα σταδίων 30
ἑκατὸν ἐξήκοντα.

29 Ἐξῆς δὲ Κορώνειαν καταλέγει καὶ Ἀλιάρτον καὶ

Πλαταιὰς καὶ Γλίσσαντα. ἡ μὲν οὖν Κορώνεια ἐγγὺς τοῦ Ἑλικῶνός ἐστιν ἐφ' ὕψους ἰδρυμένη, κατελάβοντο δ' αὐτὴν ἐπανιόντες ἐκ τῆς Θετταλικῆς Ἀρνης οἱ Βοιωτοὶ μετὰ τὰ Τρωικά, ὅτε περ καὶ τὸν Ὀρχομενὸν ἔσχον· κρατήσαντες δὲ τῆς Κορωνείας ἐν τῷ πρὸ αὐτῆς πεδίῳ τὸ τῆς Ἰωνίας Ἀθηνᾶς ἱερὸν ἰδρύσαντο ὁμώνυμον τῷ Θετταλικῷ, καὶ τὸν παραρρέοντα ποταμὸν Κουάριον προσηγόρευσαν ὁμοφώνως τῷ ἐκεῖ. Ἀλκαῖος δὲ καλεῖ Κωράλιον λέγων „[ὦ'ν]ασσ' Ἀθανάα 10 „πολε[μῆδόκος], ἃ ποι Κορωνίας ἐπιλαῖω ναύω πάροι· „θεν ἀμφι[βαίνεις] Κωραλλίω ποταμῷ παρ' ὄχθαις.“ ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ Παμβοιωτία συνετέλουν· συγκαθίδρυσται δὲ τῇ Ἀθηνᾷ ὁ Ἄιδης κατὰ τινα, ὥς φασι, μυστικὴν αἰτίαν. οἱ μὲν οὖν ἐν τῇ Κορωνείᾳ Κορώνιοι 15 λέγονται, οἱ δ' ἐν τῇ Μεσσηνιακῇ Κορωναεῖς.

Ἀλῖαρτος δὲ νῦν οὐκέτι ἐστὶ κατασκαφεῖσα ἐν τῷ 30 πρὸς Περσέα πολέμῳ, τὴν χώραν δ' ἔχουσιν Ἀθηναῖοι δόντων Ῥωμαίων. ἔκειτο δὲ ἐν στενωῷ χωρίῳ μεταξὺ ὑπερκειμένου ὄρους καὶ τῆς Κωπαίδος λίμνης πλησίον τοῦ Περμησσοῦ καὶ τοῦ Ὀλμειοῦ καὶ τοῦ ἔλους τοῦ φύοντος τὸν αὐλητικὸν κάλαμον.

Πλαταιὰ δέ, ἃς ἐνικῶς εἶπεν ὁ ποιητής, ὑπὸ τῷ 31 Κιθαιρῶνι εἰσι μετὰ αὐτοῦ καὶ Θηβῶν κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν εἰς Ἀθήνας καὶ Μέγαρα ἐπὶ τῶν ὄρων τῶν C.412 25 τῆς Ἀττικῆς καὶ τῆς Βοιωτίας. [αἱ] γὰρ Ἐλευθεραὶ πλησίον, ἃς οἱ μὲν [τῆς Ἀττικῆς, οἱ δὲ] τῆς Βοιωτίας φασίν. εἴρηται δ' ὅτι παραρρεῖ τὰς Πλαταιὰς ὁ Ἀσωπός. ἐνταῦθα Μαρδόνιον καὶ τὰς τριάκοντα μυριάδας Περσῶν αἱ τῶν Ἑλλήνων δυνάμεις ἄρδην ἠφάνισαν· ἰδρύσαντό τε ἔλευθερίου Διὸς ἱερὸν καὶ ἀγῶνα γυμνικὸν 30 στεφανίτην ἀπέδειξαν, Ἐλευθέρια προσαγορεύσαντες· ταφή τε δείκνυται δημοσία τῶν τελευτησάντων ἐν τῇ

μάχη. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ Σικωνίᾳ δῆμος Πλαταιαί, ὃθεν περ ἦν Μνασάλκης ὁ ποιητής. Γλίσσαντα δὲ λέγει κατοικίαν ἐν τῷ Ὑπάτῳ ὄρει ὃ ἐστὶν ἐν τῇ Θηβαίῃ πλησίον Τευμησσοῦ καὶ τῆς Καδμείας, ᾧ ὑποπίπτει τὸ Ἀόνιον καλούμενον πεδῖον, ὃ διατείνει [εἰς 5 τὴν Καδμείαν] ἀπὸ τοῦ Ὑπάτου ὄρους.

- 32 Τὸ δ' οὕτω ρηθέν „οἱ δ' ὑπὸ Θήβας εἶχον“ οἱ μὲν δέχονται πολίδιδόν τι Ὑποθήβας καλούμενον, οἱ δὲ τὰς Ποτνίας· τὰς γὰρ Θήβας ἐκλελείφθαι διὰ τὴν τῶν Ἐπιγόνων στρατείαν καὶ μὴ μετασχεῖν τοῦ Τρωικοῦ 10 πολέμου· οἱ δὲ μετασχεῖν μὲν οἴκειν δὲ ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ τότε ἐν τοῖς ἐπιπέδοις χωρίοις μετὰ τὴν τῶν Ἐπιγόνων ἄφοδον, τὴν Καδμείαν ἀδυνατοῦντας ἀνακτίσαι· ἐπεὶ δὲ ἡ Καδμεία ἐκαλεῖτο Θῆβαι, ὑπὸ Θήβας εἶπεῖν ἀντὶ τοῦ ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ οἰκοῦντας τὸν ποιητὴν 15 τοὺς τότε Θηβαίους.

- 33 Ὅγχηστος δ' ἐστίν, ὅπου τὸ Ἀμφικτυονικὸν συνέγγετο ἐν τῇ Ἀλιαρτίᾳ πρὸς τῇ Κωπαῖδι λίμνῃ καὶ τῷ Τηνερικῷ πεδίῳ, ἐν ᾧ κείμενος ψιλός, ἔχων Ποσειδῶνος ἱερὸν καὶ αὐτὸ ψιλόν. οἱ δὲ ποιηταὶ κοσμοῦσιν, 20 ἄλσῃ καλοῦντες τὰ ἱερὰ πάντα κἀν ᾗ ψιλὰ τοιοῦτόν ἐστι καὶ τὸ τοῦ Πινδάρου περὶ τοῦ Ἀπόλλωνος λεγόμενον „[δι]νηθεῖς ἐπήει γὰρ τε καὶ θάλασσαν, καὶ σκοπιαῖσιν „[μεγάλαις] ὀρέων ὕπερ ἔστα, καὶ μυχοὺς * δεινάσατο „βαλλό[μενος] κρηπίδας ἄλσεων.“ οὐκ εὖ δ' ὁ Ἀλ- 25 καῖος, ὥσπερ τὸ τοῦ ποταμοῦ ὄνομα παρέτρψε τοῦ Κουαρίου, οὕτω καὶ τοῦ Ὅγχηστοῦ κατέψευσται πρὸς ταῖς ἐσχατιαῖς τοῦ Ἐλικῶνος αὐτὸν τιθεῖς· ὁ δ' ἐστὶν C.413 ἄπωθεν ἱκανῶς τούτου τοῦ ὄρους.

- 34 Τὸ δὲ Τηνερικὸν πεδῖον ἀπὸ Τηνέρου προσηγό- 30

2. post ποιητης: Μνασάλκης τὸ μνᾶμα τῷ Πλαταιάδᾳ.

4. post Καδμείας: γεῶλοφα καλεῖται δριῖα

ρευται μυθεύεται δ' Ἀπόλλωνος υἱὸς ἐκ Μελίας,
 προφήτης τοῦ μαντείου κατὰ τὸ Πτῶον ὄρος, ὃ φησιν
 εἶναι τρικόρυφον ὃ αὐτὸς ποιητῆς „καί ποτε τὸν τρι-
 „κάρανον Πτωίου κευθμῶνα κατέσχεθε.“ καὶ τὸν Τή-
 5 νερον καλεῖ „ναοπόλον μάντιν δαπέδοισιν ὁμοκλέα.“
 ὑπέρκειται δὲ τὸ Πτῶον τοῦ Τηνερικοῦ πεδίου καὶ τῆς
 Κωπαῖδος λίμνης πρὸς Ἀκραίφιον· Θηβαίων δ' ἦν τό-
 τε μαντεῖον καὶ τὸ ὄρος· τὸ δ' Ἀκραίφιον καὶ αὐτὸ
 κεῖται ἐν ὕψει. φασὶ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι Ἀρνην ὑπὸ
 10 τοῦ ποιητοῦ, ὁμώνυμον τῇ Θεταλικῇ.

Οἱ δὲ φασὶ καὶ τὴν Ἀρνην ὑπὸ τῆς λίμνης κατα- 35
 ποθῆναι καὶ τὴν Μίδειαν. Ζηνόδοτος δὲ γράφων „οἱ
 „δὲ πολυστάφυλον Ἀσκηρην ἔχον,“ οὐκ ἔοικεν ἐντυ-
 χόντι τοῖς ὑπὸ Ἡσιόδου περὶ τῆς πατρίδος λεχθεῖσι καὶ
 15 τοῖς ὑπ' Εὐδόξου πολὺ χείρω λέγοντος περὶ τῆς Ἀσκηρς.
 πῶς γὰρ ἂν τις πολυστάφυλον τὴν τοιαύτην ὑπὸ τοῦ
 ποιητοῦ λέγεσθαι πιστεύσειεν; οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ οἱ Τάρ-
 νην ἀντὶ τῆς Ἀρνης γράφοντες· οὐδὲ γὰρ μία δείκνυ-
 ται Τάρνη παρὰ τοῖς Βοιωτοῖς, ἐν δὲ Λυδοῖς ἐστίν, ἥς
 20 καὶ Ὅμηρος μέμνηται „Ἰδομενεὺς δ' ἄρα Φαίστον
 „ἐνήρατο Μήονος υἱὸν Βῶρον, ὃς ἐκ Τάρνης ἐριβώ-
 „λακος εἰληλούθει.“ λοιπαὶ δ' εἰσὶ πῶν μὲν περικειμέ-
 νων τῇ λίμνῃ αἷ τε Ἀλαλκομεναὶ καὶ τὸ Τιλφώσσιον,
 τῶν δ' ἄλλων Χαιρώνεια καὶ Λεβάδεια καὶ Λεῦκτρα,
 25 περὶ ὧν ἄξιον μνησθῆναι.

Ἀλαλκομενῶν τοίνυν μέμνηται ὁ ποιητῆς, ἀλλ' 36
 οὐκ ἐν καταλόγῳ „Ἡρη τ' Ἀργεῖη καὶ Ἀλαλκομενῆς
 Ἀθήνη.“ ἔχει δ' ἀρχαῖον ἱερὸν Ἀθηναῖς σφόδρα τιμώμε-
 νον, καὶ φασὶ γε τὴν θεὸν γεγενῆσθαι ἐνθάδε, καθά-
 30 περ καὶ τὴν Ἥραν ἐν Ἀργεῖ, καὶ διὰ τοῦτο τὸν ποιητὴν
 ὥς ἀπὸ πατρίδων τούτων ἀμφοτέρως οὕτως ὀνομάσαι.
 διὰ τοῦτο δ' ἴσως οὐδ' ἐν τῷ καταλόγῳ μέμνηται τῶν

ἐνταῦθα ἀνδρῶν, ἐπειδὴ ἱεροὶ ὄντες παρεῖντο τῆς στρατείας. καὶ γὰρ καὶ ἀπόρρητος αἶε διετέλεσεν ἡ πόλις, οὔτε μεγάλη οὔσα οὔτ' ἐν εὐερκαίῳ χωρίῳ κειμένη, ἀλλ' ἐν πεδίῳ· τὴν δὲ θεὸν σεβόμενοι πάντες ἀπείχοντο πάσης βίας, ὥστε καὶ Θηβαῖοι κατὰ τὴν τῶν 5 Ἐπιγόνων στρατείαν ἐκλιπόντες τὴν πόλιν ἐκεῖσε λέγονται καταφεύγειν καὶ εἰς τὸ ὑπερκείμενον ὄρος ἐρυμνὸν τὸ Τιλφῶσσιον, ὅφ' ὃ Τιλφῶσσα κρήνη καὶ τὸ τοῦ Τειρεσίου μνημα ἐκεῖ τελευτήσαντος κατὰ τὴν φυγὴν.

C.414

37

Χαιρώνεια δ' ἐστὶν Ὀρχομενοῦ πλησίον, ὅπου Φίλιππος ὁ Ἀμύντου μάχῃ μεγάλη νικήσας Ἀθηναίους τε καὶ Βοιωτοὺς καὶ Κορινθίους κατέστη τῆς Ἑλλάδος κύριος· δείκνυται δὲ κἀνταῦθα ταφὴ τῶν πεσόντων ἐν τῇ μάχῃ δημοσία· περὶ δὲ τοὺς τόπους τοὺς αὐτοὺς 15 καὶ Ῥωμαῖοι τὰς Μιθριδάτου δυνάμεις πολλῶν μυριάδων κατηγωνίσαντο, ὥστ' ὀλίγους ἐπὶ θάλατταν σωθέντας φυγεῖν ἐν ταῖς ναυσί, τοὺς δ' ἄλλους τοὺς μὲν ἀπολέσθαι τοὺς δὲ καὶ ἀλῶναι.

38

Λεβάρδεια δ' ἐστὶν, ὅπου Διὸς Τροφωνίου μαν- 20 τεῖον ἴδρουνται, χάσματος ὑπονόμου κατὰβασιν ἔχον, καταβαίνει δ' αὐτὸς ὁ χρηστηριαζόμενος· κεῖται δὲ μετὰ τὸ τοῦ Ἑλικῶνος καὶ τῆς Χαιρωνείας, Κορωνείας πλησίον.

39

Τὰ δὲ Λεῦκτρα ἐστὶν, ὅπου Λακεδαιμονίους μέ- 25 γάλη μάχῃ νικήσας Ἐπαμεινώνδας ἀρχὴν εὗρετο τῆς καταλύσεως αὐτῶν· οὐκέτι γὰρ ἐξ ἐκείνου τὴν τῶν Ἑλλήνων ἡγεμονίαν ἀναλαβεῖν ἰσχυσαν ἣν εἶχον πρότερον, καὶ μάλιστ' ἐπειδὴ καὶ τῇ δευτέρᾳ συμβολῇ τῇ περὶ Μαντίνειαν κακῶς ἔπραξαν. τὸ μέντοι μὴ ὅφ' 30 ἐτέροις εἶναι καίπερ οὕτως ἐπτακόσι συνέμεινε μέχρι τῆς Ῥωμαίων ἐπικρατείας· καὶ παρὰ τούτοις δὲ τιμώ-

μενοι διατελοῦσι διὰ τὴν τῆς πολιτείας ἀρετὴν. δεικνυται δὲ ὁ τόπος οὗτος κατὰ τὴν ἐκ Πλαταιῶν εἰς Θεσπιάς ὁδόν.

Ἐξῆς δ' ὁ ποιητὴς μέμνηται τοῦ τῶν Ὀρχομε- 40
5 νίων καταλόγου, χωρίζων αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ Βοιωτιακοῦ ἔθνους. καλεῖ δὲ Μινύειον τὸν Ὀρχομενὸν ἀπὸ ἔθνους τοῦ Μινυῶν· ἐντεῦθεν δὲ ἀποικῆσαι τινὰς τῶν Μινυῶν εἰς Ἴωλκόν φασιν, ὅθεν τοὺς Ἀργοναύτας Μινύας λεχθῆναι. φαίνεται δὲ τὸ παλαιὸν
10 καὶ πλουσία τις γεροντία πόλις καὶ δυναμένη μέγα· τοῦ μὲν οὖν πλούτου μάρτυς καὶ Ὅμηρος· διαριθμούμενος γὰρ τοὺς τόπους τοὺς πολυχρηματήσαντάς φησιν „οὐδ' ὅς' ἐς Ὀρχομενὸν ποτινίσσεται, „οὐδ' ὅσα Θήβας Αἴγυπτίας.“ τῆς δυνάμεως δέ, ὅτι
15 Θηβαῖοι δασμὸν ἐτέλουν τοῖς Ὀρχομενίοις καὶ Ἐργίνῳ τῷ τυραννοῦντι αὐτῶν, ὃν ὑφ' Ἡρακλέους καταλυθῆναι φασιν. Ἐτεοκλῆς δέ, τῶν βασιλευσάντων ἐν Ὀρχομενῷ τις, Χαρίτων ἱερὸν ἰδρυσάμενος πρῶτος ἀμφότερα ἐμφαίνει, καὶ πλοῦτον καὶ δύναμιν, ὅς
20 εἴτ' ἐν τῷ λαμβάνειν χάριτας εἴτ' ἐν τῷ διδόναι κατορθῶν εἴτε καὶ ἀμφότερα, τὰς θεὰς ἐτίμησε C. 415
ταύτας. λέγουσι δὲ τὸ χωρίον, ὅπερ ἡ λίμνη κατέ-

χει, τὴν ἀμοιρὴν χει. το γὰρ κενουμένον αἶμα καὶ πληρουμένον πρὸς τὴν χρεῖαν αἰεὶ πληρὴς ἐστίν, ὁ δὲ διδοὺς μὲν μὴ λαμβάνων δὲ οὐδ' ἂν ἐπὶ θάτερα κατορθοίη· παύσεται γὰρ διδοὺς ἐπὶ λείποντος τοῦ ταμείου, παύσονται δὲ καὶ οἱ διδόντες τῷ λαμβάνοντι μόνον, χαρίζομένῳ δὲ μηδέν, ὥστ' οὐδ' οὗτος ἑτέρως ἂν κατορθοίη. ὅμοια δὲ καὶ περὶ δυνάμεως λέγοιτ' ἂν. χωρὶς δὲ τοῦ κοινοῦ λόγου διότι „τὰ χρήματ' ἀνθρώποισι τιμιώτατα, δύναμιν τε πλείστην τῶν ἐν ἀνθρώποις ἔχει,“ καὶ ἐκ τῶν καθ'

χει νῦν ἡ Κωπαῖς, ἀνεψύχθαι πρότερον καὶ γεωργεῖσθαι παντοδαπῶς ὑπὸ τοῖς Ὀρχομενίοις ὃν πλησίον οἰκοῦσι· καὶ τοῦτ' οὖν τεκμήριον τοῦ πλούτου τιθέασι.

- 41 Τὴν δ' Ἀσπληθόνα χωρὶς τῆς πρώτης συλλαβῆς 5
ἐκάλουν τινές· εἴτ' Εὐδείελος μετωνομάσθη καὶ αὐτὴ
καὶ ἡ χώρα, τάχα τι ἰδίωμα προσφερομένη ἐκ τοῦ δει-
λινοῦ κλίματος οἰκεῖον τοῖς κατοικοῦσι, καὶ μάλιστα
τὸ εὐχέιμερον. διέχει δὲ τοῦ Ὀρχομενοῦ στάδια εἰκοσι·
μεταξὺ δ' ὁ Μέλας ποταμός. 10

- C. 416
42 Ὑπέρκειται δ' Ὀρχομενίας ὁ Πανοπεύς, Φωκικὴ 10
πόλις, καὶ Ὑάμπολις· τούτοις δ' ὁμορεῖ Ὀποῦς, ἡ τῶν
Λοκρῶν μητρόπολις τῶν Ἐπικνημιδίων. πρότερον μὲν
οὖν οἰκεῖσθαι τὸν Ὀρχομενόν φασιν ἐπὶ πεδίῳ, ἐπιπο-
λαζόντων δὲ τῶν ὑδάτων ἀνοικισθῆναι πρὸς τὸ Ἀκόν- 15
τιον ὄρος, παρατεῖνον ἐπὶ ἐξήκοντα σταδίους μέχρι
Παραποταμίων τῶν ἐν τῇ Φωκίδι. ἱστοροῦσι δὲ τοὺς
ἐν τῷ Πόντῳ καλουμένους Ἀχαιοὺς ἀποίκους Ὀρχομε-
νίων εἶναι τῶν μετὰ Ἰαλμένου πλανηθέντων ἐκεῖσε
μετὰ τὴν τῆς Τροίας ἄλωσιν. καὶ περὶ Κάρυστον δ' ἦν 20

ἕκαστα σκοπεῖν δεῖ, μάλιστα γὰρ τοὺς βασιλέας δύνασθαι φαι-
μεν· διόπερ καὶ δυνάστας προσαγορεύομεν. δύνανται δ' ἄγον-
τες ἐφ' ἃ βούλονται τὰ πλήθη διὰ πειθοῦς ἢ βίας. πείθουσι μὲν
οὖν δι' εὐεργεσίας μάλιστα· οὐ γὰρ ἡ γε διὰ τῶν λόγων ἐστὶ
βασιλική, ἀλλ' αὕτη μὲν δητορικὴ· βασιλικὴν δὲ πειθῶ λέγομεν,
ὅταν εὐεργεσίαις τρέψωσι καὶ ἀγώσωσι ἐφ' ἃ βούλονται· πείθουσι
μὲν δι' εὐεργεσιῶν, βιάζονται δὲ διὰ τῶν ὀπλων. ταῦτα δ'
ἄμφω χρημάτων ὀνία ἐστί· καὶ γὰρ στρατιὰν ἔχει πλείστην ὁ
[πλείστην] τρέφειν δυνάμενος, καὶ εὐεργετεῖν δύνάται πλείστον
ὁ πλείστα κεντημένος.

9. post εὐχέιμερον: ψυχρότατα μὲν γὰρ τὰ ἄκρα τῆς ἡμέ-
ρας ἐστί, τούτων δὲ τὸ δειλινὸν τοῦ ἑωθινοῦ ψυχρότερον· εἰς
ἐπίτασιν γὰρ ἄγει πλησιάζον τῇ νυκτί, τὸ δ' εἰς ἄνθεσιν ἀφιστά-
μενον τῆς νυκτός. ἴαμα δὲ τοῦ ψύχους ὁ ἥλιος· τὸ οὖν ἡλιαζό-
μενον πλείστον ἐν τῷ ψυχροτάτῳ καιρῷ εὐχέιμερώτατον.

τις Ὀρχομενός. εὖ γὰρ τὴν τοιαύτην ὕλην ὑποβεβλή-
 κασιν ἡμῖν οἱ τὰ περὶ τῶν νεῶν συγγράψαντες, οἷς
 ἀκολουθοῦμεν ὅταν οἰκεῖα λέγωσι πρὸς τὴν ἡμετέραν
 ὑπόθεσιν.

- 5 Μετὰ δὲ τὴν Βοιωτίαν καὶ τὸν Ὀρχομενὸν ἡ Φω- **3**
 κίς ἐστὶ πρὸς ἄρκτον παραβεβλημένη τῇ Βοιωτίᾳ πα-
 ραπλησίως ἀπὸ θαλάττης εἰς θάλατταν τό γε παλαιόν.
 ὁ γὰρ Δαρνοῦς ἦν τότε τῆς Φωκίδος, σχίζων ἐφ' ἐκά-
 τερα τὴν Λοκρίδα καὶ μέσος ταττόμενος τοῦ τε Ὀπου-
 10 λίου κόλπου καὶ τῆς τῶν Ἐπικνημιδίων παραλίας· νῦν
 δὲ Λοκρῶν ἐστὶν ἡ χώρα (τὸ δὲ πόλισμα κατέσκαπται),
 ὥστ' οὐδ' ἐκεῖ καθήκει οὐκέτι μέχρι τῆς πρὸς Εὐβοίᾳ
 θαλάττης ἡ Φωκίς, τῷ δὲ Κρισαίῳ κόλπῳ συνήπται.
 αὐτὴ γὰρ ἡ Κρῖσα τῆς Φωκίδος ἐστὶν ἐπ' αὐτῆς ἰδρυ-
 15 μένη τῆς θαλάττης καὶ Κίρρα καὶ Ἀντικύρα καὶ τὰ
 ὑπὲρ αὐτῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ συνεκτὴ καίμενα χωρία πρὸς
 τῷ Παρνασσῷ, Δελφοί τε καὶ Κίρφεις καὶ Δαυλὶς καὶ
 αὐτοὺς ὁ Παρνασσὸς τῆς τε Φωκίδος ὦν καὶ ἀφορίζων
 τὸ ἑσπερίον πλευρόν. ὃν τρόπον δ' ἡ Φωκίς τῇ Βοιω-
 20 τίᾳ παράκειται, τοῦτον καὶ ἡ Λοκρὶς τῇ Φωκίδι ἐκα-
 τέρα. διττὴ γάρ ἐστι διηρημένη ὑπὸ τοῦ Παρνασσοῦ
 δίχα, ἡ μὲν ἐκ τοῦ ἑσπερίου μέρους παρακειμένη τῷ
 Παρνασσῷ καὶ μέρος αὐτοῦ νεμομένη, καθήκουσα δ'
 ἐπὶ τὸν Κρισαῖον κόλπον, ἡ δ' ἐκ τοῦ πρὸς ἑω τελευ-
 25 τῶσα ἐπὶ τὴν πρὸς Εὐβοίᾳ θάλατταν. καλοῦνται δ' οἱ
 μὲν ἑσπεριοὶ Λοκροὶ καὶ Ὀξόλαι, ἔχουσιν τε ἐπὶ τῇ δη-
 μοσίᾳ σφραγίδι τὸν ἑσπερον ἀστέρα ἐγκεχαραγμένον·
 οἱ δ' ἕτεροὶ δίχα πως καὶ αὐτοὶ διηρημένοι, οἱ μὲν
 Ὀπούντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως, ὅμοροι Φωκεῦσι καὶ
 30 Βοιωτοῖς, οἱ δ' Ἐπικνημιδιοὶ ἀπὸ ὅρους Κνημιδος,
 προσεχεῖς Οἰταίοις τε καὶ Μαλιεῦσιν. ἐν μέσῳ δὲ ἀμ-
 φοῖν τῶν τε Ἑσπερίων καὶ τῶν ἐτέρων Παρνασσός,

παραμήκης εἰς τὸ προσάρκτιον μέρος ἐκτεινόμενος
 C 417 ἀπὸ τῶν περὶ Δελφούς τόπων μέχρι τῆς συμβολῆς τῶν
 τε Οἰταίων ὁρῶν καὶ τῶν Αἰτωλικῶν καὶ τῶν ἀνὰ μέ-
 σον Δωριέων. πάλιν γὰρ ὥσπερ ἡ Λο[κρὶς διττὴ οὗ]σα
 τοῖς Φωκεῦσι παραβέβληται, οὕτω [καὶ ἡ πᾶσα Οἰταία] 5
 μετὰ τῆς Αἰτωλίας καὶ τινων ἀνὰ μέσον τ[όπων τῆς
 Λω]ρικής τετραπόλεως τῇ Λοκρίδι ἐκατέρᾳ [καὶ Παρ-
 νασ]σῶ καὶ τοῖς Δωριεῦσιν. ὑπὲρ τούτων δ' ἤδη [οἱ
 Θετταλοὶ] καὶ τῶν Αἰτωλῶν οἱ προσάρκτιοι καὶ Ἀκαρ-
 ν[ᾶνες καὶ τινὰ] τῶν Ἑπειρωτικῶν ἔθνων καὶ τῶν 10
 Μακεδονικῶν· [δεῖ δέ,] ὅπερ ἔφαμεν καὶ πρότερον,
 παραλλήλους ὥσ[περ ταινίας] τινὰς τεταμένας ἀπὸ
 τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὰς ἀνατολάς] νοῆσαι τὰς λεχθεί-
 σας χώρας. ἱεροπρεπὴς δ' ἐστὶ πᾶς ὁ Παρνασσός,
 ἔχων ἄντρα τε καὶ ἄλλα χωρία τιμώμενά τε καὶ 15
 ἀγιστευόμενα· ὧν ἐστὶ γνωριμώτατόν τε καὶ κάλ-
 λιστον τὸ Κωρύκιον νυμφῶν ἄντρον ὁμώνυμον τῷ
 Κιλικίῳ. τῶν δὲ πλευρῶν τοῦ Παρνασσοῦ τὸ μὲν
 ἐσπέριον νέμονται Λοκροὶ τε οἱ Ὀζόλαι καὶ τινες τῶν
 Δωριέων καὶ Αἰτωλοὶ κατὰ τὸν Κόρακα προσαγορευ- 20
 ὄμενον Αἰτωλικὸν ὄρος, τὸ δὲ Φωκεῖς καὶ Δωριεῖς οἱ
 πλείους, ἔχοντες τὴν Τετράπολιν περικειμένην πως
 τῷ Παρνασσῷ, πλεονάζουσιν δὲ τοῖς πρὸς ἔω. αἱ μὲν
 οὖν κατὰ τὸ μῆκος πλευ[ραὶ τῶν] λεχθεισῶν χωρῶν τε
 καὶ ταινιῶν ἐκάστης παρ[άλληλοι] ἅπασαι εἰσιν, ἡ μὲν 25
 οὗσα προσάρκτιος ἡ [δὲ πρὸς νότον]. αἱ δὲ λοιπαὶ
 ἐσπέριοι ταῖς ἐώαις οὐκ εἰσὶ παρ[άλληλοι· οὐ]δὲ ἡ
 παραλία ἐκατέρᾳ, ἡ τε τοῦ Κρι[σαίου κόλπου μέ]χρι
 Ἀκτίου καὶ ἡ πρὸς Εὐβοίαν μέχρι τῆς [Θεσσαλονικείας]
 παρ[άλληλοι ἀλλήλαις εἰσίν, εἰς ἃς τελ[ευτᾶ ταῦτα τὰ] 30
 ἔθνη· ἀλλ' οὕτω δέχεσθαι δεῖ τὰ σχήματα [τούτων
 τῶν χω]ρίων ὥς ἂν ἐν τριγώνῳ παρὰ τὴν [βάσιν τε-

ταμένων] γραμμῶν πλειόνων· τὰ γὰρ ἀποληφ[θέντα
 σχήματα πα]ράλληλα μὲν ἀλλήλοις ἔσται, καὶ τὰς [κατα
 μῆκος ἐναν]τίον πλευρὰς ἔξει παραλλήλους, τ[ὰς δὲ
 κατὰ πλάτος οὐ]κέτι. ὁ μὲν οὖν ὁλοσχερῆς τύπος οὗτος
 5 τῆς λοιπῆς καὶ ἐφεξῆς περιουσίας, τὰ καθ' ἕκαστα δ'
 ἐξῆς λέγωμεν ἀπὸ τῆς Φωκίδος ἀρξάμενοι.

Ταύτης δ' ἐπιφανέσταται δύο πόλεις Δελφοὶ τε 2
 καὶ Ἐλάτεια· Δελφοὶ μὲν διὰ τὸ ἱερὸν τοῦ Πυθίου
 Ἀπόλλωνος καὶ τὸ μαντεῖον ἀρχαῖον ὄν, εἰ γε Ἀγαμέ-
 10 μων ἀπ' αὐτοῦ χρηστηριάσασθαι λέγεται ὑπὸ τοῦ
 ποιητοῦ· ὁ γὰρ κιθαρωδὸς ἄδων εἰσάγεται „νεῖκος
 „Ὀδυσσῆος καὶ Πηλεΐδew Ἀχιλλῆος, ὥς ποτε δηρί-
 „σαντο. — ἄναξ δ' ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων χαῖρε νόφ.“
 „ὥς γὰρ οἱ χρεῖων μυθήσατο Φοῖβος Ἀπόλλων Πυ-C.418
 15 „θοῦ.“ Δελφοὶ μὲν δὴ διὰ ταῦτα, Ἐλάτεια δὲ ὅτι πασῶν
 μερίσθητων ἐνταῦθα πόλεων καὶ ἐπικαιριωτάτη διὰ τὸ
 ἐπικεῖσθαι τοῖς στενοῖς καὶ τὸν ἔχοντα ταύτην ἔχειν τὰς
 εἰσβολὰς τὰς εἰς τὴν Φωκίδα καὶ τὴν Βοιωτίαν. ὄρη γὰρ
 ἔστιν Οἰταῖα πρῶτον, ἔπειτα τὰ τῶν Λοκρῶν καὶ τῶν
 20 Φωκέων, οὗ πανταχοῦ στρατοπέδοις βάσιμα τοῖς ἐκ
 Θετταλίας ἐμβάλλουσιν, ἀλλ' ἔχει παρόδους στενὰς
 μὲν ἀφωρισμένας δέ, ἃς αἱ παρακείμεναι πόλεις φρου-
 ροῦσιν· ἄλυσαν δ' ἐκείνων κρατεῖσθαι συμβαίνει
 καὶ τὰς παρόδους. ἐπεὶ δ' ἡ τοῦ ἱεροῦ ἐπιφάνεια τοῦ
 25 ἐν Δελφοῖς ἔχει πρεσβεῖον, καὶ ἅμα ἡ θέσις τῶν χω-
 ρίων ἀρχὴν ὑπαγορεύει φυσικὴν (ταῦτα γὰρ ἔστι τὰ
 ἐσπεριώτατα μέρη τῆς Φωκίδος), ἐντεῦθεν ἀρκτέον.

Εἰρηται δ' ὅτι καὶ ὁ Παρνασσὸς ἐπὶ τῶν ἐσπε- 3
 ρίων ὄρων ἵδρυται τῆς Φωκίδος. τούτου δὴ τὸ μὲν
 30 πρὸς δύσιν πλευρὸν οἱ Λοκροὶ κατέχουσιν οἱ Ὀξόλαι,
 τὸ δὲ νότιον οἱ Δελφοὶ, πετρῶδες χωρίον θεατροειδές,
 κατα κορυφὴν ἔχον τὸ μαντεῖον καὶ τὴν πόλιν, στα-

δαίων ἐκκαίδεκα κύκλον πληροῦσαν. ὑπέρκειται δ' αὐ-
 τῆς ἡ Λυκώρεια, ἐφ' οὗ τόπου πρότερον ἴδρυντο οἱ
 Δελφοὶ ὑπὲρ τοῦ ἱεροῦ· νῦν δ' ἐπ' αὐτῷ οἰκοῦσι περὶ
 τὴν κρήνην τὴν Κασταλίαν. πρόκειται δὲ τῆς πόλεως
 ἡ Κίρφεις ἐκ τοῦ νοτίου μέρους, ὅρος ἀπότομον, νάπην 5
 ἀπολιπὸν μεταξὺ, δι' ἧς Πλειστός διαρρεῖ ποταμός. ὑπο-
 πέπτωκε δὲ τῇ ὁ Κίρφει πόλις ἀρχαία Κίρρα, ἐπὶ τῇ θα-
 λάττῃ ἰδρυμένη, ἀφ' ἧς ἀνάβασις εἰς Δελφοὺς ὀρδοή-
 κοντά που σταδίων· ἴδρυται δ' ἀπαντικρὺ Σικυνῶνος.
 πρόκειται δὲ τῆς Κίρρας τὸ Κρισαῖον πεδῖον εὐδαίμων. 10
 πάλιν γὰρ ἐφεξῆς ἐστὶν ἄλλη πόλις Κριῖσα, ἀφ' ἧς ὁ
 κόλπος Κρισαῖος· εἶτα Ἀντικύρα, ὁμώνυμος τῇ κατὰ
 τὸν Μαλιακὸν κόλπον καὶ τὴν Οἰτην. καὶ δὴ φασιν
 ἐκεῖ τὸν ἐλλέβορον φύεσθαι τὸν ἀστεῖον, ἐνταῦθα δὲ
 σκευάζεσθαι βέλτιον, καὶ διὰ τοῦτο ἀποδημεῖν δεῦρο 15
 πολλοὺς καθάρσεως καὶ θεραπειᾶς χάριν· γίνεσθαι
 γὰρ τι σησαμοειδὲς φάρμακον ἐν τῇ Φωκιῇ, μεθ' οὗ
 σκευάζεσθαι τὸν Οἰταῖον ἐλλέβορον.

- 4 Αὕτη μὲν οὖν συμμένει, ἡ δὲ Κίρρα καὶ ἡ Κριῖσα
 κατεσπάσθησαν, ἡ μὲν ὕστερον ὑπ' Εὐ- 20
 ρυλόχου τοῦ Θετταλοῦ κατὰ τὸν Κρισαῖον πόλεμον·
 εὐτυχῆσαντες γὰρ οἱ Κρισαῖοι διὰ τὰ ἐκ τῆς Σικελίας
 καὶ τῆς Ἰταλίας τέλη, πικρῶς ἐτελώνουν τοὺς ἐπὶ τὸ
 C. 419 ἱερὸν ἀφικνουμένους καὶ παρὰ τὰ προστάγματα τῶν
 Ἀμφικτυόνων. τὰ δ' αὐτὰ καὶ τοῖς Ἀμφισσεῦσι συν- 25
 ἔβη. Λοκρῶν δ' εἰσὶν οὗτοι τῶν Ὀζολῶν. ἐπελθόντες
 γὰρ καὶ οὗτοι τὴν τε Κριῖσαν ἀνέλαβον, καὶ τὸ πεδῖον
 τὸ ὑπὸ τῶν Ἀμφικτυόνων ἀνιερωθὲν αὐτοῖς κατεγεώρ-
 γουν, καὶ χεῖρους ἦσαν περὶ τοὺς ξένους τῶν πάλαι
 Κρισαίων. καὶ τούτους οὖν ἐτιμωρήσαντο οἱ Ἀμφι- 30
 κτύονες, καὶ τῷ θεῷ τὴν χώραν ἀπέδοσαν. ὀλιγώρηται
 δ' ἱκανῶς καὶ τὸ ἱερόν, πρότερον δ' ὑπερβαλλόντως

[έτιμήθη]. δηλοῦσι δ' οἷ τε θησαυροὶ οὓς καὶ δῆμοι καὶ
 δυνάσται κατεσκεύασαν, εἰς οὓς καὶ χρήματα ἀνέτι-
 θεντο καθιερωμένα καὶ ἔργα τῶν ἀρίστων δημοιου-
 ρῶν, καὶ ὁ ἀγὼν ὁ Πυθικὸς καὶ τὸ πλῆθος τῶν ἱστο-
 5 ρουμένων χρησμῶν.

Φασὶ δ' εἶναι τὸ μαντεῖον ἄντρον κοῖλον κατὰ 5
 βάθους οὐ μάλα εὐρύστομον, ἀναφέρεσθαι δ' ἐξ
 αὐτοῦ πνεῦμα ἐνθουσιαστικόν, ὑπερκεῖσθαι δὲ τοῦ
 στομίλου τρίποδα ὑψηλόν, ἐφ' ὃν τὴν Πυθίαν ἀναβαί-
 10 νουσάν δεχομένην τὸ πνεῦμα ἀποθεσπίζειν ἑμμετρά τε
 καὶ ἔμμετρα· ἐντείνειν δὲ καὶ ταῦτα εἰς μέτρον ποιητάς
 τινας ὑπουργοῦντας τῷ ἱερῷ. πρώτην δὲ Φημονόην
 γενέσθαι φασὶ Πυθίαν, κεκληῖσθαι δὲ καὶ τὴν προφη-
 15 σθαι δὲ τὴν πρώτην συλλαβὴν, ὥς ἐπὶ τοῦ ἀθανάτου
 καὶ ἀκαμάτου καὶ διακόνου.

Ἡ μὲν οὖν ἐπὶ τὸ πλεῖον τιμὴ τῷ ἱερῷ τούτῳ διὰ 6
 τὸ χρηστήριον συνέβη δόξαντι ἀψευδεστάτῳ τῶν πάν-
 των ὑπάρξει, προσέλαβε δὲ τι καὶ ἡ θέσις τοῦ τόπου.
 20 τῆς γὰρ Ἑλλάδος ἐν μέσῳ πῶς ἐστὶ τῆς συμπασης, τῆς
 τε ἐντὸς Ἰσθμοῦ καὶ τῆς ἐκτός, ἐνομίσθη δὲ καὶ τῆς
 οἰκουμένης, καὶ ἐκάλεσαν τῆς γῆς ὀμφαλόν, προσπλά-
 σαντες καὶ μῦθον ὃν φησι Πίνδαρος, ὅτι συμπέσοιεν
 ἐνταῦθα οἱ ἄετοί οἱ ἀφεθέντες ὑπὸ τοῦ Διός, ὁ μὲν
 25 ἀπὸ τῆς δύσεως ὁ δ' ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς· οἱ δὲ κόρακας C. 420

16. post διακόνου: ἡ μὲν οὖν ἐπίνοια αὕτη τῆς τε τῶν πό-
 λεων κτίσεως καὶ τῆς τῶν κοινῶν ἱερῶν ἐκτιμήσεως. καὶ γὰρ κατὰ
 πόλεις συνήεσαν καὶ κατὰ ἔθνος, φυσικῶς κοινωνικοὶ ὄντες, καὶ
 ἅμα τῆς παρ' ἀλλήλων χρείας χάριν, καὶ εἰς τὰ ἱερὰ τὰ κοινὰ
 ἀπῆντων διὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας, ἐορτὰς καὶ πανηγύρεις συντε-
 λοῦντες. φιλικὸν γὰρ πᾶν τὸ τοιοῦτον, ἀπὸ τῶν ὁμοτραπέζων
 ἀρξάμενον καὶ ἐκ πλειόνων

φρασι. δείκνυται δὲ καὶ ὁμφαλὸς τις ἐν τῷ ναῷ τετα-
νωμένος καὶ ἐπ' αὐτῷ αἱ δύο εἰκόνες τοῦ μύθου.

- 7 Τοιαύτης δὲ τῆς εὐκαιρίας οὔσης τῆς περὶ τοὺς
Ἀελοφύλους, συνήεσαν τε ῥαδίως ἐκείσε, μάλιστα δ' οἱ
ἐγγύθεν, καὶ δὴ καὶ τὸ Ἀμφικτυονικὸν σύστημα ἐκ 5
τούτων συνετάχθη περὶ τετῶν κοινῶν βουλευσόμενον
καὶ τοῦ ἱεροῦ τὴν ἐπιμέλειαν ἔξον κοινοτέραν, ἅτε καὶ
χρημάτων ἀποκειμένων πολλῶν καὶ ἀναθημάτων φυ-
λακῆς καὶ ἀριστείας δεομένων μεγάλης. τὰ πάλοι μὲν
οὖν ἀγνοεῖται, Ἀκρίσιος δὲ τῶν μνημονευομένων 10
πρῶτος διατάξαι δοκεῖ τὰ περὶ τοὺς Ἀμφικτύοντας καὶ
πόλεις ἀφορίσαι τὰς μετεχούσας τοῦ συνεδρίου καὶ
ψῆφον ἐκάστη δοῦναι, τῇ μὲν καθ' αὐτὴν τῇ δὲ μεθ'
ἐτέρας ἢ μετὰ πλειόνων, ἀποδεῖξαι δὲ καὶ τὰς Ἀμφι-
κτυονικὰς δίκας ὅσαι πόλεσι πρὸς πόλεις εἰσὶν· ὅστε- 15
ρον δ' ἄλλαι πλείους διατάξεις γεγόνασιν, ἕως κατε-
λύθη καὶ τοῦτο τὸ σύνταγμα, καθάπερ τὸ τῶν Ἀχαιῶν.
αἱ μὲν οὖν πρῶται δυοκαίδεκα συνελθεῖν λέγονται
πόλεις· ἐκάστη δ' ἔπεμπε πυλαγόραν, δις κατ' ἔτος οὐ-
σης τῆς συνόδου ἑαρὸς τε καὶ μετοπώρου· ὕστερον δὲ 20
καὶ πλείους προσῆλθον πόλεις. τὴν δὲ σύνοδον Πυ-
λαίαν ἐκάλουν τὴν μὲν ἑαρινὴν τὴν δὲ μετοπωρινήν,
ἐπειδὴ ἐν Πύλαις συνήγοντο, ἃς καὶ Θερμοπύλας κα-
λοῦσιν· ἔθιον δὲ τῇ Δήμητρι οἱ πυλαγόροι. τὸ μὲν
οὖν ἐξ ἀρχῆς τοῖς ἐγγύς μετῆν * καὶ τούτων καὶ τοῦ 25
μαντείου, ὕστερον δὲ καὶ οἱ πόρρωθεν ἀφικνοῦντο
καὶ ἐχρῶντο τῷ μαντεῖϊ καὶ ἔπεμπον δῶρα καὶ θησαν-
ροὺς κατεσκεύαζον, καθάπερ Κροῖσος καὶ ὁ πατήρ
Ἀλυάττης καὶ Ἰταλιωτῶν τινες καὶ Σικελοί.

- 8 Ἐπίφθορος δ' ὢν ὁ πλοῦτος δυσφύλακτός ἐστι 30
καὶ ἱερὸς ἤ. νυνὶ γέ τοι πενέστατόν ἐστι τὸ ἐν Ἀελοφύ-
λοις ἱερὸν χρημάτων γε χάριν, τῶν δ' ἀναθημάτων τὰ μὲν

ῥηται τὰ δὲ πλείω μένει. πρότερον δὲ πολυχρήματον
 ἦν τὸ ἱερόν, καθάπερ Ὀμηρός τε εἴρηκεν „οὐδ' ὅσα
 „λάϊνος οὐδὸς ἀφήτορος ἐντὸς ἔεργει Φοῖβον Ἀπόλ-
 „λωνος Πυθοῖ ἐνὶ πετρῆσση,” καὶ οἱ θησαυροὶ δη-
 5 λοῦσι καὶ ἡ σύλησις ἡ γενηθεῖσα ὑπὸ τῶν Φωκίων, ἐξ
 ἧς ὁ Φωκικὸς καὶ ἱερὸς καλούμενος ἐξήφθη πόλεμος.
 αὕτη μὲν οὖν ἡ σύλησις γεγένηται κατὰ Φίλιππον τὸν
 Ἀμύντου· προτέραν δ' ἄλλην ὑπονοοῦσιν ἀρχαίαν, ἣ
 τὸν ὑφ' Ὀμήρου λεγόμενον πλοῦτον ἐξεφόρησεν· οὐδὲC.421
 10 γὰρ ἶχνος αὐτοῦ σωθῆναι πρὸς τοὺς ὕστερον χρόνους
 ἐν οἷς οἱ περὶ Ὀνόμαρχον καὶ Φάνλλον ἐσύλησαν τὸ
 ἱερόν, ἀλλὰ τὰ μὲν . . . ἀπενεχθέντα νεώτερα ἐκείνων
 εἶναι τῶν χρημάτων· ἀποκεῖσθαι γὰρ ἐν θησαυροῖς,
 ἀπὸ λαφύρων ἀνατεθέντα, ἐπιγραφὰς σώζοντα ἐν
 15 αἷς καὶ οἱ ἀναθέντες· „Γύγυ” γὰρ καὶ „Κροίσου” καὶ
 „Συβαριτῶν” καὶ „Σπινητῶν τῶν περὶ τὸν Ἀδρίαν,”
 καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων. οὗτ' . . . ἡκοι τὰ πα-
 λαῖα χρήματα ἀναμεμῖχθαι· [ὥς] καὶ ἄλλοι τόποι δια-
 σημαίνουσιν ὑπὸ τούτων σκευωρηθέντες τῶν ἀνδρῶν.
 20 ἔνιοι δὲ τὸν ἀφήτορα δεξάμενοι λέγεσθαι θησαυρόν,
 ἀφήτορος δ' οὐδὸν κατὰ γῆς θησαυρισμόν, ἐν τῷ ναῷ
 κατορωρύχθαι φασὶ τὸν πλοῦτον ἐκείνον, καὶ τοὺς περὶ
 τὸν Ὀνόμαρχον ἐπιχειρήσαντας ἀνασκάπτειν νύκτωρ
 σεισμῶν γενομένων μεγάλων ἔξω τοῦ ναοῦ φυγεῖν καὶ
 25 παύσασθαι τῆς ἀνασκαφῆς, ἐμβαλεῖν δὲ καὶ τοῖς ἄλ-
 λοις φόβον τῆς τοιαύτης ἐπιχειρήσεως.

Τῶν δὲ ναῶν τὸν μὲν πτέρινον εἰς τοὺς μύθους 9
 τακτέον, τὸν δὲ δεύτερον Τροφωνίου καὶ Ἀγαμήδους
 ἔργον φασί, τὸν δὲ νῦν Ἀμφικτύονες κατεσκεύασαν.
 30 δέκνυνται δ' ἐν τῷ τεμένει τάφος Νεοπτολέμου κατὰ
 χρησμόν γεγόμενος, Μαχαιρέως Δελφοῦ ἀνδρὸς ἀνε-
 λόντος αὐτόν, ὥς μὲν ὁ μῦθος, δίκας αἰτοῦντα τὸν

θεὸν τοῦ πατρῷου φόνον, ὥς δὲ τὸ εἰκός, ἐπιθέμενον
τῷ Ιερῷ. τοῦ δὲ Μαχαιρέως ἀπόγονον Βράγχον φασὶ
τὸν προστατήσαντα τοῦ ἐν Διδύμοις Ιεροῦ.

- 10 Ἀγῶν δὲ ὁ μὲν ἀρχαῖος ἐν Δελφοῖς κιθαρωδῶν
ἐγενήθη παιᾶνα ἀδόντων εἰς τὸν θεόν· ἔθηκαν δὲ 5
Δελφοί· μετὰ δὲ τὸν Κρισαῖον πόλεμον οἱ Ἀμφικτύ-
νες ἱππικὸν καὶ γυμνικὸν ἐπ' Εὐρυλόχου διέταξαν στε-
φανίτην καὶ Πύθια ἐκάλεσαν. προσέθεσαν δὲ τοῖς κι-
θαρωδοῖς αὐλητάς τε καὶ κιθαριστάς χωρὶς ᾠδῆς, ἀπο-
δώσοντάς τι μέλος ὃ καλεῖται νόμος Πυθικός. πέντε 10
δ' αὐτοῦ μέρη ἐστίν, ἄγκρουσις ἄμπειρα κατακελευ-
σμός Ιαμβοὶ καὶ δάκτυλοι σύριγγες. ἐμελοποίησε μὲν
οὗν Τιμοσθένης, ὁ ναύαρχος τοῦ δευτέρου Πτολεμαίου
ὁ καὶ τοὺς λιμένας συντάξας ἐν δέκα βίβλοις. βούλεται
δὲ τὸν ἀγῶνα τοῦ Ἀπόλλωνος τὸν πρὸς τὸν δράκοντα 15
διὰ τοῦ μέλους ὑμνεῖν, ἄγκρουσιν μὲν τὸ προοίμιον
δηλῶν, ἄμπειραν δὲ τὴν πρώτην κατάπειραν τοῦ ἀγῶ-
νος, κατακελευσμὸν δὲ αὐτὸν τὸν ἀγῶνα, Ιαμβον δὲ
καὶ δάκτυλον τὸν ἐπιπαιανισμὸν τὸν [γινόμενον] ἐπὶ
C.422 τῇ νίκη μετὰ τοιούτων ῥυθμῶν, ὧν ὁ μὲν ὕμνοις ἐστίν 20
οἰκέτος ὁ δ' Ιαμβος κακισμοῖς, σύριγγας δὲ τὴν ἔκλει-
ψιν τοῦ θηρίου, μιμουμένων ὥς ἂν καταστρέφοντος
ἑσχάτους τινὰς συριγμούς.

- 11 Ἐφορος δ', ὃ τὸ πλεῖστον προσχρώμεθα διὰ τὴν
περὶ ταῦτα ἐπιμέλειαν, καθάπερ καὶ Πολύβιος μαρτυ- 25
ρῶν τυγχάνει, ἀνὴρ ἀξιόλογος, δοκεῖ μοι τάναντία
ποιεῖν ἔσθ' ὅτε τῇ προαιρέσει καὶ ταῖς ἐξ ἀρχῆς ὑπο-
σχέσεσιν. ἐπιτιμήσας γοῦν τοῖς φιλομυθούσιν ἐν τῇ
τῆς ἱστορίας γραφῇ καὶ τὴν ἀλήθειαν ἐπαινέσας προσ-
τίθησι τῷ περὶ τοῦ μαντείου τούτου λόγῳ σεμνήν τινα 30
ὑπόσχεσιν, ὥς πανταχοῦ μὲν ἄριστον νομίζει τάληθές,

21. post κακισμοῖς: ὥς καὶ τὸ Ιαμβίζειν 23. ante ἑσχάτους: εἰς

- μάλιστα δὲ κατὰ τὴν ὑπόθεσιν ταύτην. ἄτοπον γὰρ εἰ
 περὶ μὲν τῶν ἄλλων τὸν τοιοῦτον αἰὲς τρόπον διώκο-
 μεν, φησί, περὶ δὲ τοῦ μαντιίου λέγοντες, ὃ πάντων
 ἐστὶν ἀψευδέστατον, τοῖς οὕτως ἀπίστοις καὶ ψευδέσι
 5 χρησόμεθα λόγοις. ταῦτα δ' εἰπὼν ἐπιφέρει παρα-
 χρῆμα, ὅτι ὑπολαμβάνουσι κατασκευάσαι τὸ μαντεῖον
 Ἀπόλλωνα μετὰ Θέμιδος ὠφελεῖν βουλούμενον τὸ γέ-
 νος ἡμῶν. εἴτα τὴν ὠφέλειαν εἰπὼν ὅτι εἰς ἡμερότητα
 προὔκαλεῖτο καὶ ἐσωφρόνιξε, τοῖς μὲν χρηστηριαῶν
 10 καὶ τὰ μὲν προστάττων τὰ δ' ἀπαγορεύων, τοὺς δ' οὐδ'
 ὅλως προσιέμενος, ταῦτα διοικεῖν νομίζουσι, φησὶν,
 αὐτόν, οἱ μὲν αὐτὸν τὸν θεὸν σωματοειδῆ γινόμενον,
 οἱ δ' ἀνθρώποις ἐννοίαν παραδιδόντα τῆς ἑαυτοῦ βου-
 λήσεως.
- 15 Ὑποβὰς δὲ περὶ τῶν Δελφῶν οἵτινές εἰσι διαλε- 12
 γόμενος φησὶ τὸ παλαιὸν Παρνασσίους τινὰς αὐτό-
 χθονας καλουμένους οἰκεῖν τὸν Παρνασσόν· καθ' ὃν
 χρόνον Ἀπόλλωνα τὴν γῆν ἐπιόντα ἡμεροῦν τοὺς ἀν-
 θρώπους ἀπὸ τε τῶν ἡμέρων καρπῶν καὶ τῶν βίων, ἐξ
- 20 Ἀθηναίων δ' ὀρμηθέντα ἐπὶ Δελφοὺς ταύτην ἰέναι τὴν
 ὁδόν, ἣ νῦν Ἀθηναῖοι τὴν Πυθιάδα πέμπουσιν· γενό-
 μενον δὲ κατὰ Πανοπέας Τιτυὸν καταλῦσαι ἔχοντα
 τὸν τόπον, βίαιον ἄνδρα καὶ παράνομον· τοὺς δὲ Παρ-
 νασσίους συμμύξαντας αὐτῷ καὶ ἄλλον μηνῦσαι χαλε-
- 25 πὸν ἄνδρα Πύθωνα τοῦνομα, ἐπικλεῦειν ἵε παιάν, ἀφ' οὗ τὸν
 παιανισμὸν οὕτως ἐξ ἔθους παραδοθῆναι τοῖς μέλ-
 λουσι συμπίπτειν εἰς παράταξιν· ἐμπρησθῆναι δὲ καὶ
 σκηνὴν τότε τοῦ Πύθωνος ὑπὸ τῶν Δελφῶν, καθά-
- 30 περ καὶ νῦν ἐτι * καὶ αἰὲς ὑπόμνημα ποιουμένους τῶν
 τότε γενομένων. τί δ' ἂν εἴη μυθωδέστερον ἢ Ἀπόλ-
 λων τοξεύων καὶ κολάων Τιτυοὺς καὶ Πύθωνας καὶ C. 423

ὁδεύων ἐξ Ἀθηνῶν εἰς Δελφοὺς καὶ γῆν παῖσαν ἐπιῶν;
εἰ δὲ ταῦτα μὴ ὑπελάμβανε μύθους εἶναι, τί ἐχρῆν τὴν
μυθευομένην Θέμιν γυναιῖκα καλεῖν, τὸν δὲ μυθευό-
μενον δράκοντα ἄνθρωπον; πλὴν εἰ συγγεῖν ἐβούλετο
τόν τε τῆς ἱστορίας καὶ τὸν τοῦ μύθου τύπον. παρα- 5
πλήσια τούτοις καὶ τὰ περὶ τῶν Αἰτωλῶν εἰρημένα.
φήσας γὰρ ἀπορρήτους αὐτοὺς ἐκ παντὸς τοῦ χρόνου
τοτὲ μὲν Αἰολέας φησὶν οἰκῆσαι τοὺς κατέχοντας βαρ-
βάρους ἐκβαλόντας, τοτὲ δ' Αἰτωλὸν μετὰ τῶν ἐξ Ἑλι-
δος Ἐπειῶν τῶν ἐχθρῶν· τούτους δ' ὑπ' 10
Ἀλκμέανος καὶ Διομήδους. ἀλλ' ἐπάνειμι ἐπὶ τοὺς
Φωκέας.

- 13 Ἐξῆς γὰρ ἐν τῇ παραλίᾳ μετὰ τὴν Ἀντικύραν πο-
λίχρινόν ἐστιν Ὀπισθομάραθος· εἴτ' ἄκρα Φαρύγιον
ἔχουσα ὕφορμον· εἴθ' ὁ λιμὴν ὕστατος ὁ προσαγορευ- 15
θεὶς μυχὸς ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ὑπὸ τῷ Ἑλικῶνι
καὶ τῇ Ἀσκληρὴ κείμενος. οὐδ' αἱ Ἀβαὶ δὲ τὸ μαντεῖον
ἄπωθεν τῶν τόπων τούτων ἐστίν, οὐδ' ἡ Ἀμβρυσος,
[οὐδ' ἡ Με]δεὼν ὁμώνυμος τῇ Βοιωτιακῇ. ἔτι δὲ μᾶλ-
λον ἐν τῇ μεσογαίᾳ μετὰ Δελφοὺς ὡς πρὸς τὴν ἔω 20
Δαυλὶς πολίχρινον, ὅπου Τηρεά τὸν Θρακὰ φασὶ δυ-
ναστεῦσαι· καὶ τὰ περὶ Φιλομήλαν καὶ Πρόκνην ἐκεῖ
μυθεύουσι. τοῦνομα δὲ τῷ τόπῳ γεγονέναι ἀπὸ τοῦ
δάσους· δαυλοὺς γὰρ καλοῦσι τὰ δάση. Ὀμηρος μὲν
οὖν Δαυλίδα εἶπεν, οἱ δ' ὕστερον Δαυλίαν. καὶ τὸ 25
„[οἱ] Κυπάρισσον ἔχον“ δέχονται διττῶς, οἱ μὲν ὁμο-
νύμως τῷ φυτῷ οἱ δὲ παρωνύμως κώμην ὑπὸ τῇ Ἀν-
κωρείᾳ.

- 14 Πανοπεὺς δ' ὁ νῦν Φανοτεύς, ὁμορος τοῖς περὶ
Λεβιάδειαν τόποις, ἡ τοῦ Ἐπειοῦ πατρὶς. καὶ τὰ περὶ 30

23. post μυθεύουσι: Θουκυδίδης δ' ἐν Μεγάροις φησί

τὸν Τιτυὸν δὲ ἐνταῦθα μυθεύουσιν. Ὅμηρος δὲ φησιν ὅτι οἱ Φαίηκες τὸν Ῥαδάμανθυν εἰς Εὐβοίαν „ἤγαγον, „ὀφόμενον Τιτυὸν γαιήϊον υἱόν.“ καὶ Ἐλάριόν τι σπήλαιον ἀπὸ τῆς Τιτυοῦ μητρὸς Ἐλάρας δεικνύται κατὰ τὴν νῆσον καὶ ἡρῶον τοῦ Τιτυοῦ καὶ τιμαίτινες. πλησίον δὲ Λεβαθείας καὶ ἡ Τραχίη, ὁμώνυμος τῇ Οἰταίᾳ, Φωκικῇ πολίχνη· οἱ δ' ἐνοικοῦντες Τραχίνιοι λέγονται.

Ἡ δ' Ἀνεμώρεια ὠνόμασται ἀπὸ τοῦ συμβαίνοντος πάθους· καταγίγχει γὰρ εἰς αὐτὴν ὁ καλούμενος 15 Κατοπτήριος χῶρος, κρημνὸς τις ἀπὸ τοῦ Παρνασσοῦ διήκων· ὅριον δ' ἦν ὁ τόπος οὗτος Δελφῶν τε καὶ Φωκῶν, ἡνίκα ἀπέστησαν τοὺς Δελφούς ἀπὸ τοῦ κοινοῦ συστήματος τῶν Φωκῶν Λακεδαιμόνιοι καὶ ἐπέτρεψαν καθ' αὐτοὺς πολιτεύεσθαι· τινὲς δὲ Ἀνεμώλειαν 20 καλοῦσιν. εἰδ' Ῥάμπολις (Ῥα μετὰ ταῦτα ἐκλήθη ὑπὸ τινων), εἰς ἣν ἐκ Βοιωτίας ἐκπεσεῖν ἔφραμεν τοὺς Ῥαντας· ἔστι δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ μάλιστα καὶ αὕτη, πλησίον τῶν Παραποταμίων, ἑτέρα οὖσα τῆς ἐν τῷ Παρνασσῷ Ῥαμπεῖ[ας], καὶ Ἐλάτεια ἡ μεγίστη πόλις 25 τῶν Φωκικῶν, ἣν Ὅμηρος μὲν οὐκ οἶδε (νεωτέρω γὰρ ἔστι τῆς ἡλικίας ἐκείνου), ἐπικαιρίως δ' ἰδρυταὶ πρὸς τὰς ἐκ τῆς Θετταλίας εἰσβολάς. δηλοὶ δὲ τὴν εὐφυῆς ταύτην καὶ Δημοσθένους, φράζων τὸν θόρυβον τὸν γενηθέντα Ἀθήνησιν αἰφνιδίως, ἐπειδὴ ἤκέτις ἀπαγ- 30 γέλλων ὥς τοὺς πρυτάνεις ὥς Ἐλάτεια κατεῖληπται.

Παραποτάμιοι δ' εἰσὶ κατοικία τις ἐπὶ τῷ Κηφισῷ 16 ἰδρυμένη πλησίον Φανοτεῦσι καὶ Χαιρωνεῦσι καὶ Ἐλατεῖα. φησὶ δὲ Θεόπομπος τὸν τόπον τοῦτον διέχειν τῆς μὲν Χαιρωνείας ὅσον τετταράκοντα σταδίους, διορίζειν δὲ τοὺς Ἀμβρυσέας καὶ Πανοπέας καὶ Δαυλιέας· 30 κεῖσθαι δ' ἐπὶ τῆς ἐμβολῆς τῆς ἐκ Βοιωτίας εἰς Φωκέας ἐν λόφῳ μετρίως ὑψηλῷ, μεταξὺ τοῦ τε Παρνασσοῦ

καὶ τοῦ [Ἀδυλίου ὄ]ρους πενταστάδιον σχεδόν τι ἀπο-
 λειπόντων ἀν[ὰ μέσον χω]ρίον, διαιρεῖν δὲ τὸν Κη-
 φισσὸν στενὴν ἐκατέρωθεν διδόντα πάροδον, τὰς μὲν
 ἀρχὰς ἐκ Αἰλαίας ἔχοντα Φωκικῆς πόλεως (καθάπερ
 καὶ Ὀμηρὸς φησιν „οἳ τε Αἰλαίαν ἔχον πηγῆς ἐπὶ Κη- 5
 „φισσοῖο“), εἰς δὲ τὴν Κωπαῖδα λίμνην ἐκδιδόντα· τὸ
 δὲ Ἀδύλιον παρατείνειν ἐφ' ἐξήκοντα σταδίους μέχρι
 τοῦ *Ὑφαντείου, ἐφ' ᾧ κεῖται ὁ Ὀρχομενός. καὶ Ἡσίο-
 δος δ' ἐπὶ πλεον περὶ τοῦ ποταμοῦ λέγει καὶ τῆς ῥύ-
 σεως, ὡς δι' ὅλης ῥέοι τῆς Φωκίδος σκολιῶς καὶ δρα- 10
 κοντοειδῶς „παρὲκ Πανοπῆα διὰ Γλήχωνά τ' ἐρυμνὴν
 „καὶ τε δι' Ὀρχομενοῦ εἰλιγμένος εἴσι δράκων ὥς.“
 τὰ δὲ στενὰ τὰ περὶ τοὺς Παραποταμίους ἢ τὴν Παρα-
 ποταμίαν (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως) περιμάχῃτα ὑπῆρ-
 ξεν ἐν τ[ῷ] Φωκικῷ πολέμῳ, μίαν ἐχόντων ταύτην ἐμ- 15
 βολὴν [εἰς τὴν Φωκίδα]· ἔστι δὲ Κηφισσὸς ὁ τε Φωκι-
 κὸς καὶ ὁ Ἀθήνησι καὶ ὁ ἐν Σαλαμῖνι, τέταρτος δὲ καὶ
 πέμπτος ὁ ἐν Σικυνῶνι καὶ ὁ ἐν Σκύρῳ, ἐν Ἀπολλωνίᾳ
 δὲ τῇ πρὸς Ἐπιδάμνῳ πηγῇ ἔστι κατὰ τὸ γυμνάσιον,
 ἣν καλοῦσι Κηφισσόν. 20

- 17 Δαφνοῦς δὲ νῦν μὲν κατέσκαπται· ἦν δέ ποτε
 τῆς Φωκίδος πόλις ἀπτομένη τῆς Εὐβοϊκῆς θαλάττης,
 διαιροῦσα τοὺς Ἐπικνημιδίους Λοκρούς, τοὺς μὲν ἐπὶ
 τὸ πρὸς Βοιω[τίαν] μέρος τοὺς δὲ πρὸς] Φωκίδα τὴν
 C.425 ἀπὸ θαλάττης κατήκ[οι]σαν τότε ἐπὶ θάλατταν]. τε- 25
 κμήριον δὲ τὸ ἐν αὐτῷ Σχεδιεῖον, ὃ φασιν εἶναι τάφον
 Σχεδίου. [εἴρη]ται δὲ ὁ Δαφνοῦς ἐφ' ἐκάτερα τὴν Λο-
 κίδα [σχίσαι, ὥστ]ε μηδαμοῦ ἄπτεσθαι ἀλλήλων τοὺς
 τ' Ἐπικνημι[δίους καὶ το]ὺς Ὀπουντίους· ὕστερον δὲ

18. post Σκύρῳ: ἔκτος δὲ ὁ ἐν Ἀργεὶ τὰς πηγὰς ἔχων ἐκ Λυρ-
 κείου

προσωρίσθη τοῖς [Ὀπουντίοις ὁ τό]πος. περὶ μὲν δὴ τῆς Φωκίδος ἀπόχρη.

Ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ἡ Λοκρίς, ὥστε περὶ ταύτης λε- 4
κτέον. διήρηται δὲ δίχα· τὸ μὲν γὰρ αὐτῆς ἐστὶν οἱ
5 πρὸς Εὐβοίαν Λοκροί, [οὓς ἐλέ]γομεν σχίζεσθαι ποτε
ἐφ' ἐκάτερα τοῦ Λαφνουῦντος· ἐπεκαλοῦντο δ' οἱ μὲν
Ὀπούντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως, οἱ δ' Ἐπικνημίδιοι
ἀπὸ ὕρους τινὸς Κνημίδος· τὸ δὲ λοιπὸν οἱ ἐσπέριοι
εἰσι Λοκροί, οἱ δ' αὐτοὶ καὶ Ὀξόλαι καλοῦνται. χωρί-
10 ξει δ' αὐτοὺς ἀπὸ τῶν Ὀπουντίων καὶ τῶν Ἐπικνημι-
δίων ὅ τε Παρνασσὸς μεταξὺ ἰδρυμένος καὶ ἡ τῶν Δω-
ριέων τετράπολις. ἀρκτέον δ' ἀπὸ τῶν Ὀπουντίων.

Ἐφεξῆς τοίνυν ταῖς Ἀλαῖς, εἰς αἷς κατέληγεν ἡ 2
Βοιωτικὴ παραλία ἡ πρὸς Εὐβοίᾳ, τὸν Ὀπούντιον
15 κόλπον κεῖσθαι συμβαίνει. ὁ δ' Ὀποῦς ἐστὶ μητροπό-
λις, καθάπερ καὶ τὸ ἐπίγραμμα δηλοῖ τὸ ἐπὶ τῇ πρώτῃ
τῶν πέντε στηλῶν τῶν περὶ Θερμοπύλας ἐπιγεγραμ-
μένον πρὸς τῷ πολυανδρίῳ „τούσδε ποθεῖ φθιμένους
„ὑπὲρ Ἑλλάδος ἀντία Μήδων, μητροπόλις Λοκρῶν εὐ-
20 „θυνόμων Ὀπόεις.“ ἀπέχει δὲ τῆς θαλάττης περὶ πεν-
τεκαίδεκα σταδίου, τοῦ δ' ἐπινείου καὶ ἐξήκοντα. Κῦ-
νος δ' ἐστὶ τὸ ἐπίνειον, ἄκρα τερματίζουσα τὸν Ὀπούν-
τιον κόλπον σταδίων ὄντα περὶ τετταράκοντα· μεταξὺ
δὲ Ὀποῦντος καὶ Κύνου πεδίον εὐδαιμον· κεῖται δὲ
25 κατὰ Αἰδηψὸν τῆς Εὐβοίας, ὅπου τὰ θερμὰ τὰ Ἡρα-
κλέους, πορθμῷ διεργόμενος σταδίων ἐξήκοντα καὶ
ἐκατόν. ἐν δὲ τῷ Κύνῳ Δευκαλίωνα φασιν οἰκῆσαι,
καὶ τῆς Πύρρας αὐτόθι δείκνυται σῆμα, τοῦ δὲ Δευ-
καλίωνος Ἀθήνησι. διέχει δὲ τῆς Κνημίδος ὁ Κῦνος
30 ὅσον πεντήκοντα σταδίου. καὶ ἡ Ἀταλάντη δὲ νῆσος
κατὰ Ὀποῦντα ἴδρυται, ὁμώνυμος τῇ πρὸ τῆς Ἀττι-
κῆς. λέγεσθαι δ' Ὀπουντίους τινὰς καὶ ἐν τῇ Ἠλείᾳ

φασίν, ὧν οὐκ ἄξιον μεμνησθαι, πλὴν ὅτι συγγένειαν αὐτῶν ἔξανανεοῦνται τοῖς Ὀπουντίοις ὑπάρχουσιν. ὅτι δ' ἐξ Ὀποῦντος ἦν ὁ Πάτροκλος λέγει Ὅμηρος, καὶ διότι φόνον ἀκούσιον πράξας ἐφυγεν εἰς Πηλέα, ὁ δὲ πατὴρ Μενότιος ἔμεινεν ἐν τῇ πατρίδι· ἐκείσε γὰρ 5 φησιν ὁ Ἀχιλλεὺς ὑποσχέσθαι τῷ Μενoitῳ κατάξειν τὸν Πάτροκλον ἐκ τῆς στρατείας ἐπανελθόντα. οὐ μὴν ἐβασίλευε γε ἐκεῖνος τῶν Ὀπουντίων, ἀλλ' Αἴας ὁ Λοκρός, πατρίδος ὦν, ὧς φασι, Ναυύκου. Αἰάνην δ' ὀνομάζουσι τὸν ἀναιρεθέντα ὑπὸ τοῦ Πατρόκλου, 10 ἅφ' οὗ καὶ τέμενος Αἰάνειον δεικνυται καὶ κρήνη τις Αἰανίς.

C.426
3 Ἐξῆς μετὰ τὸν Κῦνον Ἀλόπη ἐστὶ καὶ ὁ Λαφνοῦς, ὃν ἔφαμεν κατεσπᾶσθαι· λιμὴν δ' ἐστὶν αὐτόθι διέχων Κύνου περὶ ἐνενηκοντα σταδίους, Ἐλατείας δὲ πεξεύ- 15 οντι εἰς τὴν μεσόγαιαν ἑκατὸν εἰκοσιν. ἤδη δ' ἐστὶ ταῦτα τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου· μετὰ γὰρ τὸν Ὀπουντίον συνεχῆς ἐστὶν οὗτος.

4 Μετὰ δὲ Λαφνοῦντα Κυνημίδες χωρίον ἐρμυνὸν ὅσον σταδίους εἴκοσι πλεύσαντι· καθ' ὃ τὸ Κήναιον 20 ἐκ τῆς Εὐβοίας ἀντίκειται ἄκρα βλέπουσα πρὸς ἐσπέραν καὶ τὸν Μαλιέα κόλπον, πορθμῷ διειργομένη σχεδὸν εἰκοσασταδίῳ. ταῦτα δ' ἤδη τῶν Ἐπικνημιδίων ἐστὶ Λοκρῶν. ἐνταῦθα καὶ αἱ Λιχάδες καλούμεναι τρεῖς νῆσοι πρόκεινται ἀπὸ Λίχα τοῦνομα ἔχουσαι. 25 καὶ ἄλλαι δ' εἰσὶν ἐν τῷ λεχθέντι παράπλῳ, ἃς ἐκόντες παραλείπομεν. μετὰ δὲ εἴκοσι σταδίους ἀπὸ Κυνημίδων λιμὴν, ὑπὲρ οὗ κεῖται τὸ Θρόνιον ἐν σταδίοις τοῖς ἴσοις κατὰ τὴν μεσόγαιαν. εἰδ' ὁ Βοάγριος ποταμὸς ἐκδί- 30 δωσιν ὁ παραρρέων τὸ Θρόνιον, Μάνην δ' ἐπονομά- ζουσιν αὐτόν· ἐστὶ δὲ χεიმάρρους ὥστ' ἀβρόχοις ἐμβαίνειν τοῖς ποσίν, ἄλλοτε δὲ καὶ δίπλεθρον ἴσχειν

πλάτος. μετὰ δὲ ταῦτα Σκάρφεια σταδίοις ὑπερκει-
μένη τῆς θαλάττης δέκα, διέχουσα δὲ τοῦ Θρονίου τρι-
άκοντα, ἐλάττωσι δὲ μικρῷ ἔπειτα Νικάϊά ἐστι
καὶ αἱ Θερμοπύλαι.

- 5 Τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν μὲν ἄλλων οὐκ ἄξιον 5
μεμνησθαι· ὧν δ' Ὅμηρος μέμνηται Καλλίαρος μὲν
οὐκέτι οἰκεῖται, [εὐήροτον δὲ νῦν ἐς]τι πεδῖον· κα-
λοῦσι δ' οὕτως ἀπὸ τοῦ [συμβεβηκότος· καὶ Βῆσσα
δ'] οὐκ ἔστι, δρυμώδης τις τόπος· οὐδ' [αἱ Αὐγειαί,
10 τὴν δὲ χῶ]ραν ἔχουσι Σκαρφιεῖς· ταύτην μὲν οὖν τὴν
Βῆσσαν ἐν τοῖς δυσὶ γραπτέον σίγμα (ἀπὸ γὰρ
τοῦ δρυμώδους ὠνόμασται ὁμωνύμως, ὥσπερ καὶ
Νάπη ἐν τῷ Μηθύμνης πεδίῳ, ἣν Ἑλλάνικος ἀγνο-
ῶν Λάπην ὀνομάζει), τὸν δ' ἐν τῇ Ἀττικῇ δῆ-
15 μον, ἀφ' οὗ Βησαιεῖς οἱ δημόται λέγονται, ἐν τῷ ἐνὶ
σίγμα.

- Ἡ δὲ Τάρφῃ κεῖται ἐφ' ὕψους, διέχουσα [Θρονίου] 6
σταδίους εἴκοσι, χῶραν δ' εὐκαρπὸν τε καὶ εὐδενδρον
ἔχει· ἥδη γὰρ καὶ αὕτη ἀπὸ τοῦ δάσους ὠνόμασται. κα-
20 λεῖται δὲ νῦν Φαρύγαι· ἴδρυνται δ' αὐτόθι Ἡρας Φα-
ρυγαίας ἱερὸν ἀπὸ τῆς ἐν Φαρύγαις τῆς Ἀργείας· καὶ
δὴ καὶ ἄποικοί φασιν εἶναι Ἀργείων.

- Τῶν γε μὴν ἐσπερίων Λοκρῶν Ὅμηρος οὐ μέμνη- 7
ται, ἣ οὐ ῥητῶς γε, ἀλλὰ μόνον τῷ δοκεῖν ἀντιδια-
25 στέλλεσθαι τούτοις ἐκείνους περὶ ὧν εἰρήκαμεν, „Λο-
κρῶν, οἳ ναίουσι πέρην ἱερῆς Εὐβοίης,“ ὥς καὶ ἐτέ-
ρων ὄντων. ἀλλ' οὐδ' ὑπὸ τῶν ἄλλων τεθρόλῃνται
πολλῶν· πόλεις δ' ἔσχον Ἀμφισσάν τε καὶ Ναύπα-
κτον, ὧν ἡ Ναύπακτος συμμένει τοῦ Ἀντιρρίου πλη-
30 σίον, ὠνόμασται δ' ἀπὸ τῆς ναυπηγίας τῆς ἐκεῖ γενο-
μένης, εἴτε τῶν Ἡρακλειδῶν ἐκεῖ ναυπηγησαμένων C.427
τὸν στόλον, εἴθ' (ὥς φησιν Ἐφορος) Λοκρῶν ἔτι πρό-

τερον παρασκευασάντων· ἔστι δὲ νῦν Αἰτωλῶν Φιλίππου προσκρίναντος.

- 8 Αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ Χαλκίς, ἣς μέμνηται καὶ ὁ ποιητὴς ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ, ὑποκάτω Καλυδῶνος· αὐτοῦ δὲ καὶ ὁ Ταφιασσὸς λόφος, ἐν ᾧ τὸ τοῦ Νέσσου 5 μνήμα καὶ τῶν ἄλλων Κενταύρων, ὧν ἀπὸ τῆς σηπεδόνος φασὶ τὸ ὑπὸ τῇ ῥίζῃ τοῦ λόφου προχεόμενον δυσῶδες καὶ θρόμβους ἔχον ὕδωρ ῥεῖν· διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ὀξόλας καλεῖσθαι τὸ ἔθνος. καὶ ἡ Μολύκρεια δ' ἔστι κατὰ τὸ Ἀντίρριον, Αἰτωλικὸν πολίχνην. ἡ δ' Ἀμ- 10 φισσα ἐπὶ τοῖς ἄκροις ἰδρύται τοῦ Κρισαίου πεδίου, κατέσπασαν δ' αὐτὴν οἱ Ἀμφικτύονες, καθάπερ εἰρήκαμεν· [καὶ Οἰάνθει]α δὲ καὶ Εὐπάλιον Λοκρῶν εἰσίν. ὁ δὲ πᾶς παράπλους ὁ Λοκρικὸς μικρὸν ὑπερβάλλει τῶν διακοσίων σταδίων. 15

- 9 Ἀλόπην δὲ καὶ ἐνταῦθα καὶ ἐν τοῖς Ἐπικνημιδίοις ὀνομάζουσι καὶ ἐν τῇ Φθιώτιδι· οὗτοι μὲν οὖν ἄποικοι τῶν Ἐπικνημιδίων εἰσίν, οἱ δ' Ἐπιζεφύριοι τούτων.

- 10 Τοῖς δὲ Λοκροῖς τοῖς μὲν ἐσπερίοις συνεχεῖς εἰσιν Αἰτωλοί, τοῖς δ' Ἐπικνημιδίοις Αἰνιᾶνες συνεχεῖς οἱ 20 τὴν Οἰτὴν ἔχοντες, καὶ μέσοι Δωριεῖς. οὗτοι μὲν οὖν εἰσιν οἱ τὴν τετράπολιν οἰκήσαντες, ἦν φασὶν εἶναι μητρόπολιν τῶν ἀπάντων Δωριέων, πόλεις δ' ἔσχον Ἐρινεὸν Βοῖον Πίνδον Κυτίνιον· ὑπέρεκται δ' ἡ Πίνδος τοῦ Ἐρινεοῦ, παραρρεῖ δ' αὐτὴν ὁμώνυμος ποτα- 25 μὸς ἐμβάλλων εἰς τὸν Κηφιστὸν οὐ πολὺ τῆς Αἰλαίας ἄπωθεν· τινὲς δ' Ἀκύφαντα λέγουσι τὴν Πίνδον. τούτων ὁ βασιλεὺς Αἰγίμιος ἐκπεσὼν τῆς ἀρχῆς κατήχθη πάλιν, ὥς ἱστοροῦσιν, ὑφ' Ἡρακλέους· ἀπεμνημόνευσεν οὖν αὐτῷ τὴν χάριν τελευτήσαντι περὶ τὴν Οἰτὴν· 30 Ἄλλον γὰρ εἰσεποιήσατο τὸν πρεσβύτατον τῶν ἐκείνου παίδων, καὶ διεδέξατο ἐκεῖνος τὴν ἀρχὴν καὶ οἱ ἀπό-

γονοι. ἐντεῦθεν ὁρμηθεῖσι τοῖς Ἡρακλείδαις ὑπῆρξεν ἡ εἰς Πελοπόννησον κάθοδος.

Τέως μὲν οὖν ἦσαν ἐν ἀξιώματι αἱ πόλεις, καίπερ 11
οὔσαι μικραὶ καὶ λυπρόχωροι, ἔπειτ' ὀλιγωρήθησαν.
5 ἐν δὲ τῷ Φωκικῷ πολέμῳ καὶ τῇ Μακεδόνων ἐπικρα-
τεῖα καὶ Αἰτωλῶν καὶ Ἀθαμάνων θανυμαστὸν εἰ καὶ
ἴχνος αὐτῶν εἰς Ῥωμαίους ἦλθε. τὰ δ' αὐτὰ πεπόνθασι
καὶ Αἰνιᾶνες· καὶ γὰρ τούτους ἐξέφθειραν Αἰτωλοὶ τε
καὶ Ἀθαμᾶνες, Αἰτωλοὶ μὲν μετὰ Ἀκαρνάνων πολε-
10 μούντες καὶ μέγα δυνάμενοι, Ἀθαμᾶνες δ' ὕστατοι
τῶν Ἑπειρωτῶν εἰς ἀξίωμα προαχθέντες, ἤδη τῶν ἄλ-
λων ἀπειρηκότων, καὶ μετ' Ἀμυνάνδρου τοῦ βασι-
λέως δύνανται κατασκευασάμενοι. οὗτοι δὲ τὴν Οἴτην C.428
διακατεῖχον.

15 Τὸ δ' ὄρος διατείνει ἀπὸ Θερμοπυλῶν καὶ τῆς 12
ἀνατολῆς μέχρι πρὸς τὸν κόλπον τὸν Ἀμβρακικὸν καὶ
τὴν ἐσπέραν· τρόπον δέ τινα καὶ πρὸς ὀρθὰς τέμνει
τὴν ἀπὸ τοῦ Παρνασσοῦ μέχρι Πίνδου καὶ τῶν ὑπερ-
κειμένων βαρβάρων ὀρεινὴν τὸ ὄρος τοῦτο. τούτου δὲ
20 τὸ μὲν πρὸς Θερμοπύλας νενευκὸς μέρος Οἴτη καλεῖ-
ται σταδίων διακοσίων τὸ μῆκος, τραχὺ καὶ ὑψηλόν,
ὑψηλότετον δὲ κατὰ τὰς Θερμοπύλας· κορυφοῦται γὰρ
ἐνταῦθα καὶ τελευτᾷ πρὸς ὅξεις καὶ ἀποτόμους μέχρι
τῆς θαλάττης κρημνούς, ὀλίγην δ' ἀπολείπει πάροδον
25 τοῖς ἀπὸ τῆς παραλίας ἐμβάλλουσιν εἰς τοὺς Λοκροὺς
ἐκ τῆς Θετταλίας.

Τὴν μὲν οὖν πάροδον Πύλας καλοῦσι καὶ στενὰ 13
καὶ Θερμοπύλας· ἔστι γὰρ καὶ θερμὰ πλησίον ὕδατα
τιμώμενα ὥς Ἡρακλέους ἱερά· τὸ δ' ὑπερκείμενον
30 ὄρος Καλλίδρομον· τινὲς δὲ καὶ τὸ λοιπὸν τὸ δι' Αἰτω-
λίας καὶ τῆς Ἀκαρνανίας διῆκον μέχρι τοῦ Ἀμβρακι-
κοῦ κόλπου Καλλίδρομον προσαγορεύουσι. πρὸς δὲ

ταῖς Θερμοπύλαις ἐστὶ φρούρια ἐντὸς τῶν στενῶν, Νί-
καία μὲν ἐπὶ θάλατταν Δοκρῶν, Τειχιοῦς δὲ καὶ Ἡρά-
κλεια ὑπὲρ αὐτῆς, ἣ Τραχὶν καλουμένη πρότερον, Λα-
κεδαιμονίων κτίσμα· διέχει δὲ τῆς ἀρχαίας Τραχίνος
περὶ ἑξ σταδίων ἡ Ἡράκλεια· ἐξῆς δὲ ἡ Ῥοδουντία,⁵
χωρίον ἐρυμνόν.

14 Ποιεῖ δὲ δυσείσβολα τὰ χωρία ταῦτα ἢ τε τραχύ-
της καὶ τὸ πλῆθος τῶν ὑδάτων φάραγγας ποιούντων,
ἃς διέξεισι. πρὸς γὰρ τῷ Σπερχεῖ τῷ παραρρέοντι
τὴν Ἀντικύραν καὶ ὁ Δύρας ἐστίν, ὃν φασιν ἐπιχειρῇ- 10
σαι τὴν Ἡρακλέους σβέσαι πυράν· καὶ ἄλλος Μέλας
διέχων Τραχίνος εἰς πέντε σταδίους. πρὸς δὲ μεσημ-
βρίαν τῆς Τραχίνος φησὶν Ἡρόδοτος εἶναι βαθεῖαν
διασφάγα, δι' ἧς Ἀσωπός, ὁμώνυμος τοῖς εἰρημένοις
Ἀσωποῖς, εἰς τὴν θάλατταν ἐκπίπτει τὴν ἐκτὸς Πυλῶν, 15
παραλαβὼν καὶ τὸν Φοίνικα ἐκ τῆς μεσημβρίας συμ-
βάλλοντα αὐτῷ, ὁμώνυμον τῷ ἥρῳι, οὗ καὶ τάφος
πλησίον δείκνυται· στάδιοι δ' εἰσὶν ἐπὶ Θερμοπύλας
ἀπὸ τοῦ Ἀσωποῦ πεντεκαίδεκα.

15 Τότε μὲν οὖν ἦν ἐνδοξότατα τὰ χωρία ταῦτα, 20
ἦνίκα τῶν κλειθρῶν ἐκυρίευσεν τῶν περὶ τὰ στενά, καὶ
τοῖς ἔξω τῶν στενῶν πρὸς τοὺς ἐντὸς ἦσαν ἀγῶνες
πρωτείων· καθάπερ καὶ πέδας ἐκάλει Φίλιππος τῆς
Ἑλλάδος τὴν Χαλκίδα καὶ τὴν Κόρινθον, πρὸς τὰς ἐκ
τῆς Μακεδονίας ἀφορμὰς βλέπων· ἐπιδέσμους δ' οἱ 25
ὕστερον προσηγόρευον ταύτας τε καὶ ἔτι τὴν Δημη-
τριάδα· καὶ γὰρ αὕτη παρόδων ἦν κυρία τῶν περὶ τὰ
C.429 Τέμπη, τό τε Πήλιον ἔχουσα καὶ τὴν Ὀσσαν. ὕστερον
δὲ πάντων ὑπὸ μίαν ἐξουσίαν ὑπηγμένων, ἅπαντ' ἀτε-
λεύεται πᾶσι καὶ ἀνέρωγε. 30

16 Περὶ δὲ τὰ στενά ταῦτα οἱ περὶ Λεωνίδα μετὰ
ὀλίγων τῶν ὁμόρων τοῖς τόποις ἀντέσχον πρὸς τὰς το-

σαύτας τῶν Περσῶν δυνάμεις, μέχρι περιελθόντες δι' ἄτραπῶν τὰ ὄρη κατέκοψαν αὐτοὺς οἱ βάρβαροι. καὶ νῦν τὸ πολυάνδριον ἐκείνων ἐστὶ καὶ στήλαι καὶ ἡ θρυλουμένη ἐπιγραφὴ τῇ Λακεδαιμονίων στήλῃ οὕτως ἔχουσα „ὦ ξέν' ἀπάγγειλον Λακεδαιμονίοις ὅτι „τῇδε κείμεθα τοῖς κείνων πειθόμενοι νομίμοις.“

Ἔστι δὲ καὶ λιμὴν μέγας αὐτόθι καὶ Δήμητρος 16-
ρόν, ἐν ᾧ κατὰ πᾶσαν Πυλαίαν θυσίαν ἐτέλουν οἱ Ἀμφικτύονες. ἐκ δὲ τοῦ λιμένος εἰς Ἡράκλειαν τὴν 17
Τραχίνα πεζῇ στάδιοι τετταράκοντα, πλοῦς δ' ἐπὶ τὸ Κήναιον ἑβδομήκοντα. ἔξω δὲ Πυλῶν εὐθύς ὁ Σπερχειὸς ἐκδίδωσιν. ἐπὶ δὲ Πύλας ἀπὸ Εὐρίπου στάδιοι πεντακόσιοι τριάκοντα. καὶ ἡ μὲν Λοκρὶς τέλος ἔχει. τὰ δ' ἔξω Θετταλῶν ἐστὶ τὰ πρὸς ἔω καὶ τὸν Μαλιακὸν 15
κόλπον, τὰ δὲ πρὸς δύσιν Αἰτωλῶν καὶ Ἀκαρνανῶν. Ἀθαμᾶνες δὲ καὶ αὐτοὶ ἐκκληοίπασιν.

Μέγιστον δὲ καὶ παλαιότατον τῶν Θετταλῶν σύ- 18
στημα, ὧν τὰ μὲν Ὀμηρος εἴρηκε τὰ δ' ἄλλοι πλείους. Αἰτωλοὺς δ' Ὀμηρος μὲν αἰεὶ ἐνὶ ὀνόματι λέγει, πόλεις 20
οὐκ ἔθνη τάττων ὑπ' αὐτοῖς, πλὴν εἰ τοὺς Κουρήτας, οὓς ἐν μέρει τακτέον Αἰτωλικῶν. ἀπὸ Θετταλῶν δ' ἀρ-
κτέον, τὰ μὲν σφόδρα παλαιὰ καὶ μυθώδη καὶ οὐχ ὁμο-
λογούμενα τὰ πολλὰ ἔδωκτες, καθάπερ καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις ἐποιήσαμεν, τὰ δὲ φαινόμενα ἡμῖν καίρια λέ- 25
γοντες.

Ἔστι δ' αὐτῆς πρὸς θαλάττῃ μὲν ἡ ἀπὸ Θερμοπυ- 3
λῶν μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῶν ἄκρων τοῦ Πηλίου παραλία βλέπουσα πρὸς ἔω καὶ πρὸς τὰ ἄκρα τῆς Εὐβοίας τὰ βόρεια. ἔχουσι δὲ τὰ μὲν πρὸς Εὐ-
βοίᾳ καὶ Θερμοπύλαις Μαλιεῖς καὶ οἱ Φθιωταὶ Ἀχαιοί, 30
τὰ δὲ πρὸς τῇ Πηλῷ Μάγνητες. αὕτη μὲν οὖν ἡ πλευρὰ τῆς Θετταλίας ἐφ' ἣ λεγέσθω καὶ παραλία. ἐκατέρω-

θεν δ' ἀπὸ μὲν Πηλίου καὶ Πηνειοῦ πρὸς τὴν μεσό-
 γαιαν Μακεδόνες παράκεινται μέχρι Παιονίας καὶ τῶν
 Ἑπειρωτικῶν ἔθνων, ἀπὸ δὲ τῶν Θερμοπυλῶν τὰ πα-
 ράλληλα τοῖς Μακεδόσιν ὄρη τὰ Οἰταῖα καὶ Αἰτωλικά,
 τοῖς Δωριεῦσι καὶ τῷ Παρνασσῷ συνάπτοντα. καλεῖ- 5
 σθαι δὲ τὸ μὲν πρὸς τοῖς Μακεδόσι πλευρὸν ἄρκτικόν,
 τὸ δ' ἕτερον νότιον. λοιπὸν δ' ἐστὶ τὸ ἐσπέριον, ὃ πε-
 ρικλείουσιν Αἰτωλοὶ καὶ Ἀκαρνανες καὶ Ἀμφίλοχοι
 C.430 καὶ τῶν Ἑπειρωτῶν Ἀθαμᾶνες καὶ Μολοττοὶ καὶ ἡ
 τῶν Αἰθίων ποτὲ λεγομένη γῆ καὶ ἀπλῶς ἡ περὶ Πίν- 10
 δον πλὴν τοῦ Πηλίου καὶ τῆς Ὀσσης. ταῦτ' ἐξηρ-
 ται μὲν ἱκανῶς, οὐ μὴν γε πολλὴν περιλαμβάνει κύκλω
 χώραν, ἀλλ' εἰς τὰ πεδία τελευτᾷ.

2 Ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ μέσα τῆς Θετταλίας, εὐδαιμονε-
 στάτη χώρα πλὴν ὅση ποταμόκλυστός ἐστιν. ὁ γὰρ 15
 Πηνειὸς διὰ μέσης ῥέων καὶ πολλοὺς δεχόμενος ποτα-
 μὸς ὑπερχεῖται πολλάκις· τὸ δὲ παλαιὸν καὶ ἐλιμνά-
 ξετο, ὡς λόγος, τὸ πεδίον ἔκ τε τῶν ἄλλων μερῶν ὄρεσι
 περιειργόμενον καὶ τῆς παραλίας μετεωρότερα τῶν πε-
 δίων ἐχούσης τὰ χωρία. ὑπὸ δὲ σεισμῶν ῥήγματος γε- 20
 νομένου [κατὰ] τὰ νῦν καλούμενα Τέμπη καὶ τὴν Ὀσ-
 σαν ἀποσχίσαντος ἀπὸ τοῦ Ὀλύμπου, διεξέπεσε ταύτη
 πρὸς θάλατταν ὁ Πηνειὸς καὶ ἀνέψυξε τὴν χώραν ταύ-
 την. ὑπολείπεται δ' ὅμως ἡ τε Νεσσωνὶς λίμνη μεγάλη
 καὶ ἡ Βοιβηὶς ἐλάττων ἐκείνης καὶ πλησιεστέρα τῇ πα- 25
 ραλίᾳ.

3 Τοιαύτη δ' οὖσα εἰς τέτταρα μέρη διήρητο· ἐκα-
 λεῖτο δὲ τὸ μὲν Φθιωτὶς τὸ δὲ Ἑστιαῖωτις τὸ δὲ Θεττα-
 λιῶτις τὸ δὲ Πελασγιῶτις. ἔχει δ' ἡ μὲν Φθιωτὶς τὰ
 νότια τὰ παρὰ τὴν Οἶτην ἀπὸ τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου 30
 καὶ Πυλαῖκοῦ μέχρι τῆς Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου δια-
 τείνοντα, πλατυνόμενα δὲ μέχρι Φαρσάλου καὶ τῶν

πεδίων τῶν Θετταλικῶν· ἡ δ' Ἐστιαιώτις τὰ ἐσπέρια
καὶ τὰ μεταξὺ Πίνδου καὶ τῆς ἄνω Μακεδονίας· τὰ δὲ
λοιπὰ οἳ τε ὑπὸ τῇ Ἐστιαιώτιδι νεμόμενοι τὰ πεδία,
καλούμενοι δὲ Πελασγιῶται, συνάπτοντες ἤδη τοῖς
5 κάτω Μακεδόσι, καὶ οἱ ἐφεξῆς τὰ μέχρι Μαγνητικῆς
παραλίας ἐκπληροῦντες χωρία. πάνταυθ' ἐνδόξων
ὀνομάτων ἔσται ἀρίθμησης καὶ ἄλλως [καὶ] διὰ τὴν
Ὀμήρου ποιήσιν· τῶν δὲ πόλεων ὀλίγαι σώζουσι τὸ
πάτριον ἄξιωμα, μάλιστα δὲ Λάρισα.

- 10 Ὁ δὲ ποιητὴς εἰς δέκα μέρη καὶ δυναστείας διελὼν 4
τὴν σύμπασαν γῆν ἣν νῦν Θετταλίαν προσαγορεύομεν,
προσλαβὼν τινα καὶ τῆς Οἰταίας καὶ τῆς Λοκρικῆς, ὥς
δ' αὐτῶς καὶ τῆς ὑπὸ Μακεδόσιν νῦν τεταγμένης, ὑπο-
γράφει τι κοινὸν καὶ πάσῃ χώρᾳ συμβαῖνον, τὸ μετα-
15 βάλλεσθαι καὶ τὰ ὅλα καὶ τὰ καθ' ἕκαστα παρὰ τὰς
τῶν ἐπικρατούντων δυνάμεις.

Πρώτους δὴ καταλέγει τοὺς ὑπ' Ἀχιλλεῖ τοὺς τὸ 5
νότιον πλευρὸν κατέχοντας καὶ παρακειμένους τῇ τε
Οἰτῃ καὶ τοῖς Ἐπικνημιδίοις Λοκροῖς „ὅσσοι τὸ Πελασ-
20 „ρικὸν Ἄργος ἔναιον,“ „οἳ τ' Ἄλον οἳ τ' Ἀλόπην οἳ τε
„Τρηχῆν' ἐνέμοντο,“ „οἳ τ' εἶχον Φθίην ἡδ' Ἑλλάδα
„καλλιγύναικα,“ „Μυρμιδόνες δὲ καλεῦντο καὶ Ἑλλη-
„νες καὶ Ἀχαιοί.“ συζεύγνυσσι δὲ τούτοις καὶ τοὺς ὑπὸ C.431
τῷ Φοίνικι καὶ κοινὸν ἀμφοῖν ποιεῖ τὸν στόλον. ὁ μὲν
25 οὗν ποιητὴς οὐδαμοῦ μέμνηται Δολοπικῆς στρατιᾶς
κατὰ τοὺς περὶ Ἴλιον ἀγῶνας· οὐδὲ γὰρ αὐτῶν τὸν ἡγε-
μόνα Φοίνικα πεποίηκεν εἰς τοὺς κινδύνους ἐξιόντα,
καθάπερ τὸν Νέστορα· ἄλλοι δ' εἰρήκασι, καθάπερ
καὶ Πίνδαρος μνησθεὶς τοῦ Φοίνικος „ὅς Δολόπων
30 „ἄγαγε θρασὺν ὄμιλον σφενδονᾶσαι, ἵπποδάμων Δα-

„ναῶν βέλεσι πρόσφορον.“ τοῦτο δὴ καὶ παρὰ τῷ ποιητῇ κατὰ τὸ σιωπώμενον, ὥς εἰώθασι λέγειν οἱ γραμματικοί, συνυπακουστέον. γελοῖον γὰρ τὸ τὸν βασιλέα μετέχειν τῆς στρατείας, τοὺς δ' ὑπηκόους μὴ παρεῖναι [αὐτῷ]. οὐδὲ γὰρ συστρατεύειν ἂν τῷ Ἀχιλλεῖ δοξείεν, 5 ἀλλὰ μόνον ἐπιστάτης καὶ ρήτωρ ἔπρεσθαι, εἰ δ' ἄρα, σύμβουλος. τὰ δ' ἔπη βούλεται καὶ τοῦτο δηλοῦν· τοιοῦτον γὰρ τὸ „μῦθων τε ρητῆρ' ἔμεναι προηκτῆρά τε „ἔργων.“ ταῦτα λέγων.

- 6 Εἰρηται τό τε ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ [καὶ τῷ Φοί]νικι· 10 αὐτὰ δὲ λεχθέντα περὶ τῶν ὑπ' [Ἀχιλλεῖ] ἐν ἀντιλογίᾳ ἐστί. τό τε [γὰρ] Ἄργος τὸ Πελασγικὸν [οἱ μὲν] καὶ πόλιν δέχονται Θετταλικὴν περὶ Λάρισαν ἰδρυμένην ποτὲ νῦν δ' οὐκέτι οὕσαν· οἱ δ' οὐ πόλιν ἀλλὰ τὸ τῶν Θετταλῶν πεδλίον οὕτως ὀνομαστικῶς λεγόμενον, θεμένου 15 τοῦνομα Ἄβαντος ἐξ Ἄργους δεῦρ' ἀποικήσαντος. Φθίαν τε οἱ μὲν τὴν αὐτὴν εἶναι τῇ Ἑλλάδι καὶ Ἀχαΐᾳ, ταύτας δ' εἶναι διατεμνομένης τῆς συμπάσης Θετταλίας θάτερον μέρος τὸ νότιον· οἱ δὲ διαιροῦσιν. ἔοικε δ' ὁ ποιητὴς δύο ποιεῖν τὴν τε Φθίαν καὶ τὴν Ἑλλάδα 20 ὅταν οὕτως φῇ „οἱ τ' εἶχον Φθίην ἢ δ' Ἑλλάδα,“ ὥς δυεῖν οὕσων· καὶ ὅταν οὕτως „φευ[γόν] ἔπειτ' ἀπά- „νευθε δι' Ἑλλάδος εὐρυχόροιο, Φθίην δ' ἐξικόμην,“ καὶ ὅτι „πολλοὶ [Ἀχαιῖδες] εἰσὶν ἂν' Ἑλλάδα τε Φθίην „τε.“ ὁ μὲν οὖν ποιητὴς δύο ποιεῖ, πότερον δὲ πόλεις 25 ἢ χώρας οὐ δηλοῖ. οἱ δ' ὕστερον τὴν Ἑλλάδα οἱ μὲν εἰπόντες χώραν διατετάσθαι φασὶν [εἰς] τὰς Θήβας τὰς Φθιώτιδας ἀπὸ Παλαιφαρσάλου (ἐν δὲ τῇ χώρᾳ ταύτῃ καὶ τὸ Θετρίδειον ἔστι πλησίον τῶν Φαρσάλων ἀμφοῖν τῆς τε παλαιᾶς καὶ τῆς νέας, καὶ τοῦ Θετρίδειου τεκμαι- 30

4. post στρατείας: ναῖον δ' ἰσχατιὴν Φθίης Δολόπεσσειν ἀνάσσειν 6. post μόνον: ὀλίγων ἔστιν

ρόμενοι τῆς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεΐ μέρος εἶναι καὶ τήνδε τὴν
 χώραν), οἱ δ' εἰπόντες πόλιν Φαρσάλιοι μὲν δεικνύ-
 ουσιν ἀπὸ ἐξήκοντα σταδίων τῆς ἑαυτῶν πόλεως κατε-
 σκαμμένην πόλιν ἣν πεπιστεύκασιν εἶναι τὴν Ἑλλάδα. 432
 5 καὶ δύο κρήνας πλησίον Μεσσηίδα καὶ Ὑπέρειαν, Μελι-
 ταιεῖς δ' ἄπωθεν ἑαυτῶν ὅσον δέκα σταδίους οἰκεῖσθαι
 τὴν Ἑλλάδα πέραν τοῦ Ἑνιπέως, ἥνικα ἡ ἑαυτῶν πό-
 λιν Πύρρα ὠνομάζετο, ἐκ δὲ τῆς Ἑλλάδος ἐν ταπεινῷ
 χωρίῳ κειμένης εἰς τὴν ἑαυτῶν μετοικῆσαι τοὺς Ἑλλη-
 10 νας· μαρτύριον δ' εἶναι τὸν ἐν τῇ ἀγορᾷ τῇ σφετέρᾳ
 τάφον τοῦ Ἑλληνος τοῦ Δευκαλίωνος υἱοῦ καὶ Πύρ-
 ρας. ἱστορεῖται γὰρ ὁ Δευκαλίων τῆς Φθιωτίδος ἄρ-
 ξαι καὶ ἀπλῶς τῆς Θετταλίας· ὁ δ' Ἑνιπεὺς ἀπὸ τῆς
 Ὀθρυνος παρὰ Φάρσαλον ῥυεῖς εἰς τὸν Ἀπιδανὸν παρα-
 15 βάλλει, ὁ δ' εἰς τὸν Πηνειόν. περὶ μὲν Ἑλλήνων ταῦτα.
 Φθῖοι δὲ καλοῦνται οἱ τε ὑπ' Ἀχιλλεΐ καὶ ὑπὸ 7
 Πρωτεσιλάῳ καὶ Φιλοκτήτῃ· ὁ δὲ ποιητὴς τούτου μάρ-
 τυς. εἰπὼν γὰρ ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν ὑπ' Ἀχιλλεΐ „οἱ
 „τ' εἶχον Φθίην,“ ἐν τῇ ἐπὶ ναυσὶ μάχῃ τούτους μὲν
 20 ὑπομένοντας ἐν ταῖς ναυσὶ πεποίηκε μετὰ τοῦ Ἀχιλ-
 λέως καὶ καθ' ἡσυχίαν ὄντας, τοὺς δ' ὑπὸ Φιλοκτή-
 τη μαχομένους ἔχοντας Μέδων[τα ἡγεμόνα] καὶ τοὺς
 ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ, Ποδάρκους πε]ρὶ ὧν κοι-
 νῶς μὲν οὕτω φησὶν „ἐνθα δὲ Βοιωτοὶ καὶ Ἰάονες
 25 „ἐλκεχίτωνες, Λοκροὶ καὶ Φθῖοι καὶ φαιδιμόεντες
 „Ἐπειοί·“ ἰδίως δὲ „πρὸ Φθίων δὲ Μέδων τε μενε-
 „πτόλεμός τε Ποδάρκης. οἱ μὲν πρὸ Φθίων μεγαθύ-
 „μων θωρηχθέντες ναῦφιν ἀμυνόμενοι [μετὰ Βοιω]-
 „τῶν ἐμάχοντο.“ τάχα δὲ καὶ οἱ σὺν Εὐρυπύλῳ Φθῖοι
 30 ἐλέγοντο, ὅμοροι τούτοις ὄντες· νῦν μέντοι Μαγνη-
 σίας νομίζουσι τῆς τε ὑπ' Εὐρυπύλῳ τὰ περὶ Ὀρμένιον
 καὶ τὴν ὑπὸ Φιλοκτήτῃ πᾶσαν, τὴν δ' ὑπὸ [Πρωτε-

σιλάῳ] τῆς Φθίας ἀπὸ Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου μέχρι τῆς Μαγνητικῆς θαλάττης· μέχρι δὲ τῆς ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ πόλεως Ἀντρώωνος, ἣ νῦν πληθυντικῶς λέγεται, τὸ πλάτος ἀφορίζεται τῆς ὑπὸ Πηλεΐ καὶ Ἀχιλλεΐ γ[ῆς, ἀπὸ] τῆς Τραχινίας καὶ τῆς Οἰταίας ἀρξαμένοις· [τὸ] 5 δ' αὐτὸ σχεδόν τι μῆκός ἐστι τοῦ Μαλιακοῦ κ[όλπου].

- 8 **Περὶ Ἄλου** δὲ καὶ Ἀλόπης διαποροῦσι μὴ οὐ τούτους λέγει τοὺς τόπους οἱ νῦν ἐν τῷ Φθιωτικῷ τέλει φέρονται, ἀλλὰ τοὺς ἐν Λοκροῖς, μέχρι δεῦρο ἐπικρατοῦντος τοῦ Ἀχιλλέως, ὥσπερ καὶ μέχρι Τραχίνος 10 καὶ τῆς Οἰταίας. ἔστι γὰρ καὶ Ἄλος καὶ Ἀλιεὺς ἐν τῇ παραλίᾳ τῶν Λοκρῶν, καθάπερ καὶ Ἀλόπη. οἱ δὲ τὸν Ἀλιεῦντα ἀντὶ Ἀλόπης τιθέασιν καὶ γράφουσιν οὕτως „οἱ θ' Ἄλον οἱ θ' Ἀλιεῦνθ' οἱ τε Τρηχῖν' ἐνέ- C.433 „μοντο.“ ὁ δὲ Φθιωτικὸς Ἄλος ὑπὸ τῷ πέρατι κεῖται 15 τῆς Ὀθρυος ὄρους πρὸς ἄρκτον κειμένου τῇ Φθιώτιδι, ὁμόρου δὲ τῷ Τυφρηστῷ καὶ τοῖς Δόλοψιν, κἀνθενδε παρατείνοντος εἰς τὰ πλησίον τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου. ἀπέχει δὲ Ἰτάνου περὶ ἐξήκοντα σταδίους ὁ Ἄλος ἢ ἡ Ἄλος· λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως. ὥκισε δὲ ὁ Ἀθάμας τὴν 20 Ἄλον, ἀφανισθεῖσαν [δὲ] συνῶ[κισαν Φαρσάλιοι] χρονοῖς ὕστερον. ὑπέρκειται δὲ τοῦ Κροκίου πεδίου· ῥεῖ δὲ ποταμὸς Ἀμφρυσος πρὸς τῷ [τείχει]. ὑπὸ δὲ τῷ Κροκίῳ Θῆβαι εἰσὶν αἱ Φθιώτιδες, καὶ ἡ Ἄλος δὲ Φθιώτις καλεῖται καὶ Ἀχαϊκή, συνάπτουσα τοῖς Μαλιεῦσιν, 25 ὥσπερ καὶ οἱ τῆς Ὀθρυος πρόποδες. καθάπερ δὲ ἡ Φυλάκη ἢ ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ τῆς Φθιώτιδος ἐστὶ τῆς προσχώρου τοῖς Μαλιεῦσιν, οὕτω καὶ ἡ Ἄλος· διέχει δὲ Θηβῶν περὶ ἑκατὸν σταδίους, ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ Φαρσάλου καὶ Φθιωτῶν· Φίλιππος μέντοι Φαρσαλίοις 30 προσένειμεν ἀφελόμενος τῶν Φθιωτῶν. οὕτω δὲ συμβαίνει τοὺς ὄρους καὶ τὰς συντάξεις τῶν τε ἔθνων καὶ

τῶν τόπων ἀλλάττεσθαι αἰεί, καθάπερ εἶπομεν. οὕτω
καὶ Σοφοκλῆς τὴν Τραχίνα Φθιωτὶν εἶρηκεν, Ἀρτε-
μίδωρος δὲ τὴν Ἄλουν ἐν τῇ παραλίᾳ τίθησι, ἔξω μὲν
τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου κειμένην, Φθιωτὶν δέ. προῶν
5 γὰρ ἐνθένδε ὥς ἐπὶ τὸν Πηνεῖον μετὰ τὸν Ἀντρωῖνα
τίθησι Πτελεόν, εἴτα τὸν Ἄλουν ἀπὸ τοῦ Πτελεοῦ διέ-
χοντα ἑκατὸν καὶ δέκα σταδίους. περὶ δὲ τῆς Τραχίνος
εἴρηται ὅποια τις· καὶ ὁ ποιητὴς κατονομάζει.

Τοῦ δὲ Σπερχεῖοῦ μεμνημένος πολλάκις ὥς ἐπι- 9
10 χωρίου ποταμοῦ, τὰς πηγὰς ἔχοντος ἐκ Τυφρηστοῦ
Δρυοπικοῦ ὄρους, τοῦ καλουμένου πρ]ότερον,
ἐκδιδόντος δὲ πλησίον Θερμοπυλῶν μεταξὺ αὐτῶν
καὶ Λαμίας, δηλοῖ ὅτι καὶ τὰ ἐντὸς πυλῶν ὅσα τοῦ Μα-
λιακοῦ κόλπου καὶ τὰ ἐκτὸς ὑπ' ἐκείνῳ ἦν· ἀπέχει δὲ
15 Λαμίας ὁ Σπερχεῖος περὶ τριάκοντα σταδίους ὑπερκει-
μένης πεδλίου τινὸς καθήκοντος ἐπὶ τὸν Μαλιακὸν κόλ-
πον· ὅτι δ' ὁ Σπερχεῖος ἐπιχώριος, ἐκ τε τοῦ τρέφειν
ἐκείνῳ τὴν κόμην φάσκειν καὶ τοῦ τὸν Μενέσθιον,
ἓνα τῶν λοχαγῶν αὐτοῦ, Σπερχεῖοῦ λέγεσθαι παῖδα
20 καὶ τῆς ἀδελφῆς τῆς Ἀχιλλέως. Μυρμιδόνας δ' εἰκὸς
καλεῖσθαι πάντας τοὺς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ καὶ τῷ Πατρό-
κλῳ, οἳ συνηκολούθησαν ἐξ Αἰγίνης φεύγοντι τῷ Πη-
λεῖ. Ἀχαιοὶ δ' ἐκαλοῦντο οἱ Φθιωταὶ πάντες.

Διαριθμοῦνται δὲ τὰς ὑπὸ τῷ Φθιωτικῷ τέλει τῷ 10
25 ὑπ' Ἀχιλλεῖ κατοικίας [ἀπὸ] Μαλιέων ἀρξάμενοι πλεί-
ους μὲν, ἐν δ' αὐταῖς Θήβας τὰς Φθιώτιδας Ἐχίνον Λά-
μιαν, περὶ ἣν ὁ Λαμιακὸς συνέστη πόλεμος Μακεδόσι
καὶ Ἀντιπάτρῳ πρὸς Ἀθηναίους· ἐν ᾧ Λεωσθένης τε
ἔπεσε τῶν Ἀθηναίων στρατηγός, [καὶ Λεοννάτος] ὁ Ἀλε-
30 ξάνδρου τοῦ βασιλέως ἐταῖρος. [ἔτι δὲ Ναρθάκ]ιον Ἐρι-
νεὸν Κορώνειαν, ὁμώνυμον τῇ Βοιωτικῇ, Μελίταιαν
Θαυμακοὺς Πρόερναν Φάρσαλον Ἐρέτριαν, ὁμώνυμον

τῇ Εὐβοικῇ, Παραχελώϊτας καὶ τούτους ὁμωνύμους τοῖς Αἰτωλικοῖς· καὶ γὰρ ἐνταῦθά ἐστιν Ἀχελῷος ποταμὸς πλησίον Λαμίας, παρ' ὃν οἰκοῦσιν οἱ Παραχελώϊται. παρέτεινε δ' ἡ χάρα αὕτη πρὸς ἄρκτον μὲν τῇ τῶν Ἀσκληπ[ιαδῶν τῶν μάλιστα προσεσπερίων καὶ τῇ 5 Εὐρυπύλου καὶ [ἐτι τῇ] Πρωτεσιλάου, ταῖς πρὸς ἕω κεκλιμέναις, πρὸς νότον δὲ τῇ Οἰταίᾳ εἰς τετταρεσκαίδεκα δήμους διηρημένην, Ἡράκλειάν τε καὶ τὴν Δρυοπίδα, τετράπολιν γεγонуϊάν ποτε καθάπερ καὶ τὴν Δωρίδα, μητρόπολιν δὲ τῶν ἐν Πελοποννήσῳ Δρυό- 10 πων νομιζομένην. τῆς δ' Οἰταίας καὶ ὁ Ἀκύφας ἐστὶ καὶ Παρασσωπιάς καὶ Οἰνείαδαι καὶ Ἀντικύρα, ὁμώνυμος τῇ ἐν Δοκροῖς τοῖς ἐσπερίοις. λέγω δὲ τὰς διατάξεις ταύτας οὐκ αἰεὶ μεμενηκυίας τὰς αὐτάς, ἀλλὰ ποικίλως μεταβεβλημένας· αἱ δ' ἐπισημόταται μάλιστα ἄξιαι 15 μνήμης εἰσὶ.

- 11 Τοὺς δὲ Δόλοπας φράζει καὶ ὁ ποιητὴς Ἰκανῶς ὅτι ἐπὶ ταῖς ἐσχατιαῖς εἰσὶ τῆς Φθίας, καὶ ὅτι ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι ἦσαν τῷ Πηλεῖ οὗτοί τε καὶ οἱ Φθιωταί· ἔναιον γάρ, φησὶν, ἐσχατιὴν Φθίης Δολόπεσσιν ἀνάσ- 20 σων, δόντος τοῦ Πηλέως. γειτνιά δὲ τῇ Πίνδῳ καὶ τοῖς περὶ αὐτὴν χωρίοις Θετταλικοῖς οὖσι τοῖς πλείστοις. διὰ γὰρ τὴν ἐπιφάνειάν τε καὶ τὴν ἐπικράτειαν τῶν Θετταλῶν καὶ τῶν Μακεδόνων οἱ πλησιάζοντες αὐτοῖς μάλιστα τῶν Ἑπειρωτῶν, οἱ μὲν ἐκόντες οἱ δ' 25 ἄκουτες, μέρη καθίσταντο Θετταλῶν ἢ Μακεδόνων, καθάπερ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἰθίκες καὶ Τάλαρες Θετταλῶν, Ὀρέσται δὲ καὶ Πελαγόνες καὶ Ἐλιμιῶται Μακεδόνων.

- 12 Ἡ δὲ Πίνδος ὄρος ἐστὶ μέγα, πρὸς ἄρκτον μὲν τὴν 30

Μακεδόνων, πρὸς ἐσπέραν δὲ Περραιβοὺς μετανάστας
 ἀνθρώπους [ἔχον], πρὸς δὲ μεσημβρίαν Δόλοπας,
 [πρὸς ἕω δὲ . . . αὕτη δ' ἐστὶ τῆς Θετταλίας· ἐπ' αὐτῇ
 δὲ πῇ Πίνδῳ ὄκουν Τάλαρες Μολοττικὸν φῦλον, τῶν
 5 περὶ τὸν Τόμαρον ἀπόσπασμα, καὶ Αἰθίικες, [εἰς] οὓς
 ἐξελαθῆναι φησιν ὑπὸ Πειρίθου τοὺς Κενταύρους ὁ
 ποιητής· ἐκλελοιπέναι δὲ νῦν ἱστοροῦνται. τὴν δ'
 ἔκλειψιν διττῶς ἀκουστέον· ἡ γὰρ ἀφανισθέντων τῶν
 ἀνθρώπων καὶ τῆς χώρας τελέως ἡρημαμένης, ἡ τοῦ
 10 ὀνόματος τοῦ ἐθνικοῦ μηκέτι ὄντος, μηδὲ τοῦ συστή-
 ματος διαμένοντος τοιούτου. ὅταν οὖν ἄσημον τελέως C.435
 ἢ τὸ λειπόμενον νυνὶ σύστημα, οὐκ ἄξιον μνήμης τί-
 θεμεν οὔτ' αὐτὸ οὔτε τοῦνομα τὸ μεταληφθέν, ὅταν
 δ' ἔχη τοῦ μεμνησθαι δικαίαν πρόφασιν, λέγειν ἀναγ-
 15 καίον τὴν μεταβολήν.

Λοιπὸν δ' εἰπεῖν τῆς παραλίας τὴν τάξιν τῆς ὑπὸ 13
 τῷ Ἀχιλλεῖ ἀπὸ Θερμοπυλῶν ἀρξαμένους· τὴν γὰρ
 Δοκρικὴν καὶ [τὴν Οἰταία]ν εἰρήκαμεν. αἱ τοίνυν
 Θερμοπύλαι τοῦ μὲν Κηναίου διεστήκασιν ἑβδομη-
 20 κοντασταδίῳ πορθμῷ, παραπλέοντι δ' ἔξω Πυλῶν τοῦ
 Σπερχεῖο ὡς σταδίου* δέκα· ἐνθεν δ' εἰς Φάλαρα
 εἴκοσι· τῶν δὲ Φαλάρων ἀπὸ θαλάττης ὑπέρεκται
 πεντήκοντα σταδίου ἢ τῶν [Λαμιέων πόλι]ς. εἰθ'
 ἐξῆς παραπλεύσαντι σταδίοις ἑκατὸν ὁ Ἐχῆνος ὑπέρ-
 25 κείται. τῆς δ' ἐξῆς παραλίας ἐν μεσογαίᾳ ἐστὶν ἡ Κρε-
 μαστὴ Λάρισα εἴκοσι σταδίου αὐτῆς διέχουσα, ἡ δ'
 αὐτὴ καὶ Πελασγία λεγομένη Λάρισα. εἰτα Μνόνη-
 σος νησίον, εἰτ' Ἀντρῶν· ἣν δὲ αὕτη ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ.
 τοσαῦτα μὲν περὶ τῆς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ με[ρίδος].

30 Ἐπεὶ δ' ὁ ποιητής εἰς πολλὰ καὶ γνώριμα μέρη 14
 διε[λὼν δι]ὰ τὸ ὀνομάζειν τοὺς τε ἡγεμόνας καὶ τὰς ὑπ'
 αὐτοῖς [πόλεις] τὸν σύμπαντα τῆς Θετταλίας κύκλον

διέταξεν, [ἡμεῖς ἀκολ]ουθοῦντες τούτῳ πάλιν ὥσπερ
 ἐν τοῖς ἐπάνω [προ]σεκπληρώσομεν τὴν λοιπὴν περιο-
 δεῖαν τῆς χά[ρα]ς. καταλέγει τοίνυν ἐφεξῆς τοῖς ὑπ'
 Ἀχιλλεῖ τοὺς ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ· οὗτοι δ' εἰσὶν οἱ καὶ
 ἐφεξῆς ὄντες τῇ ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ παραλία μέχρι Ἀν- 5
 τρώωνος. ὀριζομένη τοίνυν [τῆς ἐφ]εξῆς ἐστὶν ἡ ὑπὸ τῷ
 Πρωτεσιλάῳ, ἔξω μὲν οὕσα τοῦ [Μαλιακ]οῦ κόλπου,
 ἔτι δ' ἐντὸς τῆς Φθιώτιδος, οὐ μὴν τῆς [ὑπὸ τῷ Ἀχιλ-
 λεῖ]. ἡ μὲν οὖν Φυλάκη ἐγγὺς Θηβῶν ἐστὶ τῶν Φθιω-
 τίδων, αἵπερ εἰσὶ καὶ αὐταὶ ὑπὸ τῷ Πρωτεσιλάῳ· καὶ 10
 Ἄλος δὲ καὶ Δάρισα ἡ Κρεμαστὴ καὶ τὸ Δημήτριον ὑπ'
 ἐκείνῳ, πᾶσαι πρὸς ἕω τῆς Ὀθρυος. τὸ δὲ Δημήτριον
 Δημήτρος εἶρηκε τέμενος καὶ ἐκάλεσε Πύρασον. ἦν δὲ
 πόλις εὐλίμενος ἡ Πύρασος ἐν δυσὶ σταδίοις, ἔχουσα
 Δημήτρος ἄλλος καὶ ἱερὸν ἄγιον, διέχουσα Θηβῶν 15
 σταδίους εἴκοσι· ὑπέρκεινται δὲ Πυράσου μὲν αἱ Θῆ-
 βαι. τῶν Θηβῶν δὲ ἐν τῇ μεσογαίᾳ τὸ Κρόκιον πεδῖον
 πρὸς τῷ καταλήγοντι τῆς Ὀθρυος, δι' οὗ ὁ Ἀμφρυσος
 ῥεῖ. τούτου δ' ὑπέρκειται ὁ Ἴωνος, ὅπου τὸ τῆς Ἰω-
 νίας ἱερὸν, ἀφ' οὗ καὶ τὸ ἐν τῇ Βοιωτίᾳ, καὶ ὁ Κουά- 20
 ριος ποταμός· εἴρηται δὲ [ἐφ' οὗ τούτου καὶ] τῆς Ἀρνης
 ἐν τοῖς Βοιωτικοῖς. ταῦτα δ' ἐστὶ τῆς Θετταλιώτι-
 δος μιᾶς τῶν τεττάρων μερίδων τῆς συμπάσης Θεττα-
 λίας, ἧς καὶ τὰ ὑπ' Εὐρυπύλῳ καὶ ὁ Φύλλ[ος], ὅπου
 Ἀπόλλωνος τοῦ Φυλλίου ἱερὸν, καὶ Ἰχναί, ὅπου ἡ Θέ- 25
 μιν Ἰχναία τιμᾶται. καὶ Κίερος δ' εἰς αὐτὴν συντελεῖ
 καὶ [τᾶλλα μέχρι] τῆς Ἀθαμανίας. κατὰ δὲ τὸν Ἀν-
 τρώνα ἔρμα ὕφαλον ἐν τῷ πρὸς Εὐβοίᾳ ἐστὶ πόρῳ κα-
 λούμενον ὄνος Ἀντρώωνος. εἴτα Πτελεὸν καὶ ὁ Ἄλος·
 εἴτα τὸ τῆς Δημήτρος ἱερὸν καὶ ὁ Πύρασος κατεσκαμ- 30
 μένος, ὑπὲρ αὐτὸν δὲ αἱ Θῆβαι· εἴτα ἄκρα Πύρρα καὶ

δύο νησία πλησίον, ὧν το μὲν Πύρρα τὸ δὲ Λευκαλίον καλεῖται· ἐνταῦθα δὲ καὶ ἡ Φθιωτὶς πῶς τελευτᾷ.

Ἐξῆς δὲ τοὺς ὑπὸ τῷ Εὐμήλῳ καταλέγει, τὴν συν-^{C.436}
 15 εχῇ παραλίαν, ἥπερ ἐστὶν ἡδὴ Μαγνησίας καὶ τῆς Πε-
 15 λασγιάτιδος γῆς. Φεραὶ μὲν οὖν εἰσι πέρας τῶν Πε-
 λασγικῶν πεδίων πρὸς τὴν Μαγνησίαν, ἃ παρατείνει
 μέχρι τοῦ Πηλίου σταδίους ἑκατὸν ἐξήκοντα. ἐπίνειον
 δὲ τῶν Φερῶν Παγασαὶ διέχον ἐνευήκοντα σταδίους
 αὐτῶν, Ἰωλκοῦ δὲ εἴκοσιν. ἡ δ' Ἰωλκὸς κατέσκαπται
 10 μὲν ἐκ παλαιοῦ, ἐντεῦθεν δ' ἔστειλε τὸν Ἰάσονα καὶ
 τὴν Ἀργὴν Πελλίαν· ἀπὸ δὲ τῆς ναυπηγίας τῆς Ἀργουῆς
 καὶ Παγασὰς λέγεσθαι μυθεύουσι τὸν τόπον, οἱ δὲ πι-
 θανώτερον ἡγοῦνται τοῦνομα τῷ τόπῳ τεθῆναι τοῦτο
 ἀπὸ τῶν πηγῶν αἱ πολλαὶ τε καὶ θαψιλεῖς ῥέουσιν· πλη-
 15 σίον δὲ καὶ Ἀφείται ὥς ἂν ἀφετήριόν τι τῶν Ἀργοναυ-
 τῶν. τῆς δὲ Δημητριάδος ἐπὶ σταδίους ὑπέρκειται
 τῆς θαλάττης Ἰωλκός. ἔκτισε δὲ Δημήτριος ὁ πολιορ-
 κητῆς ἐπώνυμον ἑαυτοῦ τὴν Δημητριάδα μεταξὺ Νη-
 λείας καὶ Παγασῶν ἐπὶ θαλάττῃ τὰς πλησίον πολίχνας
 20 εἰς αὐτὴν συνοικίσας, Νήλειάν τε καὶ Παγασὰς καὶ
 Ὀρμένιον, ἔτι δὲ Ριζοῦντα Σηπιάδα Ὀλιζῶνα Βοίβην
 Ἰωλκόν, αἱ δὲ νῦν εἰσι κῶμαι τῆς Δημητριάδος. καὶ
 δὴ καὶ ναύσταθμον ἦν τοῦτο καὶ βασιλείον μέχρι πολ-
 λοῦ τοῖς βασιλεῦσι τῶν Μακεδόνων, ἐπεκράτει δὲ καὶ
 25 τῶν Τεμπῶν καὶ τῶν ὀρῶν ἀμφοῖν, ὥσπερ εἴρηται,
 τοῦ τε Πηλίου καὶ τῆς Ὀσσης· νῦν δὲ συνέσταλται
 μὲν, τῶν δ' ἐν τῇ Μαγνησίᾳ πασῶν ὅμως διαφέρει. ἡ
 δὲ Βοιβῆς λίμνη πλησιάζει μὲν ταῖς Φεραῖς, συνάπτει
 δὲ καὶ τοῖς ἀπολήγουσι τοῦ Πηλίου πέρασιν καὶ τῆς Μα-
 30 γνησίας· Βοίβη δὲ χωρίον ἐπὶ τῇ λίμνῃ κείμενον. κα-
 θάπερ δὲ τὴν Ἰωλκὸν ἀΰξηθεῖσαν ἐπὶ πλέον κατέλυσαν
 αἱ στάσεις καὶ αἱ τυραννίδες, οὕτως καὶ τὰς Φεράς

συνέστειλαν ἐξαρθείσας ποτὲ καὶ συγκαταλυθείσας τοῖς τυράννοις. πλησίον δὲ τῆς Δημητριάδος ὁ Ἄναυρος ῥεῖ. καλεῖται δὲ καὶ συνεχρῆς αἰγιαλὸς Ἰωλκός· ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν * Πυλαϊκὴν πανηγύριν συνετέλουν. ὁ δ' Ἀρτεμίδωρος ἀπωτέρω τῆς Δημητριάδος τίθησι τὸν Παργασιτικὸν κόλπον εἰς τοὺς ὑπὸ Φιλοκτήτη τόπους· ἐν δὲ τῷ κόλῳ φησὶν εἶναι τὴν Κικύνηθον νῆσον καὶ πολίχνην ὁμώνυμον.

- 16 Ἐξῆς δ' αἱ ὑπὸ Φιλοκτήτη πόλεις καταλέγονται. ἡ μὲν οὖν Μηθώνη ἑτέρα ἐστὶ τῆς Θωρακίας Μεθώνης, 10 ἣν κατέσκαψε Φίλιππος· ἐμνήσθημεν δὲ καὶ πρότερον τῆς τῶν ὀνομάτων τούτων καὶ τῶν ἐν Πελοποννήσῳ τροπῆς· τὰλλα δὲ [δι]ηροῖσθαι, ἣ τε Θαυμακία καὶ [ὁ] Ὀλιζών καὶ ἡ Μελίβοια, [ἃ] τῆς ἐξῆς παραλίας ἐστίν. πρόκεινται δὲ τῶν Μαγνήτων νῆσοι συχναὶ μὲν, 15 αἱ δ' ἐν ὀνόματι Σκιάθος τε καὶ Πεπάρηθος καὶ Ἰκός Ἀλόνησος τε καὶ Σκυρος, ὁμωνύμους ἔχουσαι πόλεις. μάλιστα δ' ἐστὶν ἐν ὀνόματι Σκυρος διὰ τὴν Λυκομήδους πρὸς Ἀχιλλέα οἰκειότητα καὶ τὴν Νεοπτολέμου

C.437 τοῦ Ἀχιλλέως ἐνταῦθα γένεσιν τε καὶ ἐκτροφήν. ὅστε- 20 ρον δὲ Φίλιππος αὐξήσεις, ὁρῶν Ἀθηναίους ἐπικρατοῦντας τῆς θαλάττης καὶ τῶν νήσων ἄρχοντας καὶ τούτων καὶ τῶν ἄλλων, ἐποίησε τὰς πλησίον ἐαυτῷ μάλιστα ἐνδόξους. πολεμῶν γὰρ περὶ τῆς ἡγεμονίας ἐπεχείρει πρῶτοις ἀεὶ τοῖς ἐγγύθεν, καὶ καθάπερ αὐ- 25 τῆς τῆς Μαγνήτιδος τὰ πολλὰ μέρη Μακεδονίαν ἐποίησε καὶ τῆς Θωράκης καὶ τῆς ἄλλης τῆς κύκλω γῆς, οὕτω καὶ τὰς πρὸ τῆς Μαγνησίας νήσους ἀφηρεῖτο, καὶ τὰς ὑπ' οὐδενὸς γνωριζομένας πρότερον περιμαχήτους καὶ γνωρίμους ἐποίησε. τὴν δ' οὖν Σκυρον καὶ μάλιστα μὲν 30 αἱ ἀρχαιολογίαι συνιστῶσιν, ἀλλὰ καὶ τὰ τοιαῦτα θρυλεῖσθαι ποιεῖ, οἷον αἱ τῶν αἰγῶν ἀρεταὶ τῶν Σκυρίων,

καὶ τὰ μέταλλα τῆς ποικίλης λίθου τῆς Σκυρίας, καθάπερ τῆς Καρυστίας καὶ τῆς * Λευκαλλίας καὶ τῆς Συνναδικῆς * Ἰεραπολιτικῆς. μονολίθους γὰρ κίονας καὶ πλάκας μεγάλας ὁρᾷν ἔστιν ἐν τῇ Ρώμῃ τῆς ποικίλης λιθείας, ἀφ' ἧς ἡ πόλις κοσμεῖται δημοσίᾳ τε καὶ ἰδίᾳ, πεποιήκέ τε τὰ λευκόλιθα οὐ πολλοῦ ἄξια.

Ὁ δ' οὖν ποιητὴς μέχρι δεῦρο προελθὼν τῆς Μα- 17
γνητικῆς παραλίας ἐπάνεισιν ἐπὶ τὴν ἄνω Θεττάλιαν· καὶ γὰρ τὰ παρατείνοντα τῇ Φ[θιώτιδι], ἀρξάμενος
10 ἀπὸ τῆς Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου, [μέχρι τῆς] κάτω Θεττάλιᾳ διέξεισιν „οἱ δ' εἶχον Τρίκκην καὶ Ἰθώμην „κλωμακόεσσαν.“ ταῦτα τὰ χωρία ἔστι μὲν τῆς Ἰστιαιωτίδος, ἐκαλεῖτο δ', ὥς φασι, πρότερον Δωρίς· κατασχόντων δὲ τῶν Περγραιβῶν αὐτήν, οἱ καὶ τῆς Εὐβοίας
15 τὴν Ἰστιαιωτίν κατεστρέψαντο καὶ τοὺς ἀνθρώπους εἰς τὴν ἡπειρον ἀνέσπασαν, διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἐποικησάντων Ἰστιαίων τὴν χώραν ἀπ' ἐκείνων οὕτως ἐκάλεσαν. καλοῦσι δὲ καὶ [αὐτήν καὶ] τὴν Δολοπίαν τὴν ἄνω Θεττάλιαν, ἐπ' εὐθείας οὕσα[ν τῇ ἄνω] Μακεδο-
20 νίᾳ, καθάπερ καὶ τὴν κάτω τῇ κάτω. ἔστι δ' ἡ μὲν Τρίκκη, ὅπου τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀσκληπιοῦ τὸ ἀρχαιότατον καὶ ἐπιφανέστατον, ὅμορος τοῖς τε Δόλοψιν καὶ τοῖς περὶ τὴν Πίνδον τόποις. τὴν δ' Ἰθώμην ὁμωνύμως τῇ Μεσσηνιακῇ λεγομένην οὐ φασι δεῖν οὕτως ἐκφέρειν,
25 ἀλλὰ τὴν πρώτην συλλαβὴν ἀφαιρεῖν· οὕτω γὰρ καλεῖσθαι πρότερον, νῦν δὲ * Θαμαὶ μετωνομάσθαι, χωρίον ἐρυμνὸν καὶ τῷ ὄντι κλωμακόεν, ἰδρυμένον μεταξὺ τεττάρων φρουρίων ὥσπερ ἐν τετραπλεύρῳ κειμένων, Τρίκκης τε καὶ Μητροπόλεως καὶ Πελινναίου
30 καὶ Γόμφων. τῆς δὲ δὴ Μητροπολιτῶν ἔστι χώρας ἡ Ἰθώμη. ἡ δὲ Μητρόπολις πρότερον μὲν ἐκ τριῶν συνῳκιστο πολιχνίων ἀσήμεων, ὕστερον δὲ καὶ πλείους

προσελήφθησαν, ὧν ἦν καὶ ἡ Ἰθάμη. Καλλίμαχος μὲν C.438 οὖν φησιν ἐν τοῖς ἰάμβοις τὰς Ἀφροδίτας (ἡ θεὸς γὰρ οὐ μία) τὴν Καστινήτιν ὑπερβάλλεσθαι πάσας τῷ φρονεῖν, ὅτι μόνη παραδέχεται τὴν τῶν ὕδων θυσίαν. καὶ μὴν πολυίστωρ, εἴ τις ἄλλος, καὶ πάντα τὸν βίον, ὥς 5 αὐτὸς εἶρηκεν, ὃ ταῦτα * μυθεῖσθαι βουλούμενος. οἱ δ' ὕστερον ἤλεγξαν οὐ μίαν Ἀφροδίτην μόνον ἀλλὰ καὶ πλείους ἀποδεδεγμένας τὸ ἔθος τοῦτο, ὧν εἶναι καὶ τὴν ἐν τῇ Μητροπόλει· ταύτῃ δὲ μίαν τῶν συνοικισθεῖσων εἰς αὐτὴν πόλεων παραδοῦναι τὸ ἔθος Ὀνθύ- 10 ριον. ἔστι δὲ καὶ Φαρκαδῶν ἐν τῇ Ἰστιαιωτίδι, καὶ ῥεῖ δι' αὐτῶν ὁ Πηνειὸς καὶ ὁ Κουράλιος· ὧν ὁ Κουράλιος ῥυεῖς παρὰ τὸ τῆς Ἰωνίας Ἀθηνᾶς ἱερὸν εἰς τὸν Πηνειὸν ἐξήγησιν, αὐτὸς δ' ὁ Πηνειὸς ἄρχεται μὲν ἐκ Πίνδου, καθάπερ εἴρηται, ἐν ἀριστερᾷ δ' ἀφείλ Τρίκην 15 τε καὶ Πελοποννησίαν καὶ Φαρκαδόνα φέρεται παρὰ τε Ἄτρακα καὶ Ἀάρισαν, καὶ τοὺς ἐν τῇ Θετταλιωτίδι δεξιόμενος ποταμοὺς πρόεισι διὰ τῶν Τεμπῶν ἐπὶ τὰς ἐκβολάς. τὴν δ' Οἰχαλίαν πόλιν Εὐρύτου λεγομένην ἐν τε τοῖς τόποις τούτοις ἱστοροῦσι καὶ ἐν Εὐβοίᾳ καὶ 20 ἐν Ἀρκαδίᾳ, καὶ μετονομάζουσιν [ἄλλοι] ἄλλως, ὃ καὶ ἐν τοῖς Πελοποννησιακοῖς εἴρηται. περὶ δὲ τούτων ζητοῦσι καὶ μάλιστα τίς ἦν ἡ ὑπὸ Ἡρακλέους ἀλοῦσα, καὶ περὶ τίνος συνέγραψεν ὁ ποιήσας τὴν Οἰχαλίας ἄλωσιν. ταῦτα μὲν δὴ τὰ χωρία τοῖς Ἀσκληπιάδαις ὑπέ- 25 ταξεν.

- 18 Ἐξῆς δὲ λέγει τὴν ὑπ' Εὐρυπύλῳ, οἱ δ' ἔχον Ὀρμέ-
 ,,νιον οἷ τε κρήνην Ὑπέρειαν, οἱ τ' ἔχον Ἀστέριον Τιτά-
 ,,νοιό τε λευκὰ κάρηνα.“ τὸ μὲν οὖν Ὀρμένιον νῦν Ὀρ-
 μίνιον καλεῖται, ἔστι δ' ὑπὸ τῷ Πηλῷ κόμῃ κατὰ τὸν 30
 Παγασιτικὸν κόλπον τῶν συνωκισμένων εἰς τὴν Δημη-
 τριάδα πόλεων, ὥς εἴρηται. ἀνάγκη δὲ καὶ τὴν Βοιβηίδα

λίμνην εἶναι πλησίον, ἐπειδὴ καὶ ἡ Βοίβη τῶν περι-
 κίδων ἦν τῆς Δημητριάδος καὶ αὐτὸ τὸ Ὀρμένιον. τὸ
 μὲν οὖν Ὀρμένιον ἀπέχει τῆς Δημητριάδος πεξῆ στα-
 δίους ἑπτὰ καὶ εἰκοσιν, ὁ δὲ τῆς Ἰωλκοῦ τόπος ἐν ὁδῷ
 5 κείμενος τῆς μὲν Δημητριάδος ἑπτὰ σταδίου διέστηκε,
 τοῦ δ' Ὀρμενίου τοὺς λοιποὺς σταδίους εἰκοσι. φησὶ
 δ' ὁ Σκήψιος ἐκ τοῦ Ὀρμενίου τὸν Φοίνικα εἶναι, καὶ
 φεύγειν αὐτὸν ἐνθ' ἐνδε παρὰ τοῦ „πατρὸς Ἀμύντορος
 „Ὀρμενίδαο“ εἰς τὴν Φθίαν „ἐς Πηλῆαν ἄνακτα.“ ἐκτί-
 10 σθαι γὰρ ὑπὸ Ὀρμένου τὸ χωρίον τοῦτο τοῦ * Κερφίου
 τοῦ Αἰόλου· παῖδας δὲ τοῦ Ὀρμένου γενέσθαι τὸν τε
 Ἀμύντορα καὶ Εὐαίμονα, ὧν τοῦ μὲν εἶναι Φοίνικα τοῦ C.439
 δ' Εὐρύπυλον· φυλαχθῆναι δὲ τῷ Εὐρυπύλῳ τὴν δια-
 δοχὴν κοινὴν, ἅτε ἂν ἀπελθόντος τοῦ Φοίνικος ἐκ τῆς
 15 οἰκείας· καὶ δὴ καὶ γράφει οὕτως „οἶον ὅτε πρῶτον λί-
 „πον Ὀρμένιον πολύμηλον,“ ἀντὶ τοῦ „λίπον Ἑλλάδα
 „καλλιγύναικα.“ Κράτης δὲ Φωκέα ποιεῖ τὸν Φοίνικα,
 τεκμαιρόμενος ἐκ τοῦ κράνους τοῦ Μέγητος ᾧ ἐχρή-
 σατο ὁ Ὀδυσσεὺς κατὰ τὴν νυκτεγεργσίαν, περὶ οὗ φη-
 20 σιν ὁ ποιητὴς ὅτι „ἐξ Ἑλεῶνος Ἀμύντορος Ὀρμενίδαο
 „ἐξέλετ' Αὐτόλυκος, πνικινὸν δόμον ἀντιτορήσας.“ τὸν
 τε γὰρ Ἑλεῶνα ἐν τῷ Παρνασσῷ πόλιν εἶναι, τὸν
 τε Ὀρμενίδην Ἀμύντορα οὐκ ἄλλον τινὰ λέγεσθαι ἢ
 τὸν τοῦ Φοίνικος πατέρα, καὶ τὸν Αὐτόλυκον οἰκοῦντα
 25 ἐν τῷ Παρνασσῷ τοιχωρυχεῖν τὰ τῶν γειτόνων, ὅπερ
 κοινόν ἐστι τοιχωρύχου παντός, οὐ τὰ τῶν πόρρωθεν.
 ὁ δὲ Σκήψιος φησὶ μήτε Ἑλεῶνα μηδένα τόπον τοῦ
 Παρνασσοῦ δείκνυσθαι, ἀλλὰ Νεῶνα, καὶ ταύτην οἰ-
 κισθεῖσαν μετὰ τὰ Τρωικά, μῆτ' ἐκ γειτόνων τὰς τοι-
 30 χωρυχίας γίνεσθαι μόνον. καὶ ἄλλα δ' ἐστὶν ἃ λέγοι-
 τις ἂν, ἀλλ' οὖν ὁκνῶ διατρίβειν ἐπὶ πλεόν. ἄλλοι δὲ
 γράφουσιν ἐξ Ἑλεῶνος· Ταναγρικὴ δέ ἐστιν αὕτη· καὶ

μαλλον ἐλέγχοι ἀτόπως ἂν λεγόμενον τό „φεῦγον ἔπειτ’
 „ἀπάνευθε δι’ Ἑλλάδος, Φθίην δ’ ἐξικόμην.“ ἡ δ’
 Ὑπέραια κρήνη ἐν μέσῃ ἐστὶ τῇ Φεραίων πόλει Εὐμήλου
 οὔσῃ· ἀτοπον τοίνυν [δοῦναι Εὐρυπύ]λῳ. Τίτανος
 δ’ ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος ὠνομάσθη· λευκόγεων γάρ 5
 ἐστὶ τὸ χωρίον Ἀρνης πλησίον καὶ [τῶν Ἀφε]τῶν· καὶ
 τὸ Ἀστέριον δ’ οὐκ ἄπωθεν τούτων ἐστί.

- 19 Συνεχεῖς δὲ τῇ μερίδι ταύτῃ λέγονται οἱ ὑπὸ τῷ
 Πολυποίτῃ „οἱ δ’ Ἀργισσαν ἔχον καὶ Γυρτώνην ἐνέ-
 „μοντο, Ὀρθὴν Ἠλώνην τε πόλιν τ’ Ὀλοοῦσσόνα λευ- 10
 „κὴν.“ ταύτην τὴν χώραν πρότερον μὲν ὄκουν Περ-
 ραιβοί, τὸ πρὸς θαλάττῃ μέρος νεμόμενοι καὶ τῷ Πη-
 νειῷ μέχρι τῆς ἐκβολῆς αὐτοῦ καὶ Γυρτῶνος πόλεως
 Περραιβίδος. εἴτα ταπεινώσαντες ἐκείνους Λαπίθαι
 κατέσχον αὐτοὶ τὰ χωρία, Ἰξίω καὶ ὁ υἱὸς Πειρίθους, 15
 ὃς καὶ τὸ Πήλιον κατεκτήσατο βιασάμενος τοὺς κατα-
 σχόντας Κενταύρους, ἄγριόν τι φῦλον. τούτους μὲν
 οὖν „ἐκ Πηλίου ᾧσε καὶ Αἰθίκεσσι πέλασσε,“ τοῖς δὲ
 C.440 Λαπίθαις τὰ πεδία παρέδωκε· τινὰ δ’ αὐτῶν καὶ οἱ
 Περραιβοὶ κατεῖχον, τὰ πρὸς τῷ Ὀλύμπῳ· ἐστὶ δ’ ὅπου 20
 καὶ ὅλοι ἀναμῖξ τοῖς Λαπίθαις ὄκουν. ἡ μὲν οὖν Ἀρ-
 γισσα, ἡ νῦν Ἀργουρα, ἐπὶ τῷ Πηνειῷ κεῖται· ὑπέρκει-
 ται δ’ αὐτῆς Ἀτραξ ἐν τετταράκοντα σταδίοις, τῷ πο-
 ταμῷ πλησιάζουσα καὶ αὕτῃ· τὴν δ’ ἀνὰ μέσον ποτα-
 μίαν εἶχον Περραιβοί. Ὀρθὴν δὲ τινὲς τὴν ἀκρόπολιν 25
 τῶν Φαλανναίων εἰρήκασιν· ἡ δὲ Φάλαννα Περραι-
 βικὴ πόλις πρὸς τῷ Πηνειῷ πλησίον τῶν Τεμπῶν. οἱ
 μὲν οὖν Περραιβοὶ καταδυναστευθέντες ὑπὸ τῶν Λα-
 πιθῶν εἰς τὴν ὀρεινὴν ἀπανέστησαν οἱ πλείους τὴν
 περὶ Πίνδον καὶ Ἀθαμᾶνας καὶ Δόλοπας, τὴν δὲ χώραν 30

14. post ἐκείνους: εἰς τὴν ἐν τῇ μεσογαίᾳ ποταμίαν

- καὶ τοὺς ὑπολειφθέντας τῶν Περραιβῶν κατέσχον Λα-
 ρισαῖοι, πλησίον μὲν οἰκοῦντες τοῦ Πηνειοῦ, γειτνιῶν-
 τες δ' ἐκείνοις, νεμόμενοι δὲ τὰ εὐδαιμονέστατα μέρη
 τῶν πεδίων, πλὴν εἴ τι σφόδρα κοῖλον πρὸς τῇ λίμνῃ
 5 τῇ Νεσσωνίδι, εἰς ἣν ὑπερκλύζων ὁ ποταμὸς ἀφηρεῖτό
 τι τῆς ἀροσίμου τοὺς Λαρισαίους· ἀλλ' ὕστερον παρα-
 χώμασιν ἐπηνώρθωσαν Λαρισαῖοι. οὗτοι δ' οὖν κα-
 τεῖχον τέως τὴν Περραιβίαν καὶ φόρους ἐπράττοντο,
 ἕως Φίλιππος κατέστη κύριος τῶν τόπων. Λάρισα δ'
 10 ἐστὶ καὶ ἐν τῇ Ὀσση χωρίον· καὶ ἡ Κρεμαστή, ὑπό τι-
 νων δὲ Πελασγία λεγομένη· καὶ ἐν τῇ Κρήτῃ πόλις ἡ
 νῦν εἰς Ἱεράπυτταν συνοικισθεῖσα, ἀφ' ἧς καὶ τὸ ὑπο-
 κείμενον πεδῖον νῦν Λαρίσιον καλεῖται· καὶ ἐν Πελο-
 ποννήσῳ ἢ τε τῶν Ἀργείων ἄκρα καὶ ὁ τὴν Ἥλειαν ἀπὸ
 15 Δύμης διορίζων Λάρισος ποταμός. Θεόπομπος δὲ καὶ
 πόλιν λέγει ἐν τῇ αὐτῇ μεθορίᾳ κειμένην Λάρισαν· καὶ
 ἐν τῇ Ἀσίᾳ ἢ τε Φρικωνὺς ἢ περὶ τὴν Κύμην καὶ ἡ κατὰ
 Ἀμαξιτὸν τῆς Τρωάδος· καὶ ἡ Ἐφεσία Λάρισά ἐστι καὶ
 ἐν Συρίᾳ· τῆς δὲ Μιτυλήνης ἀπὸ πεντήκοντα σταδίων
 20 εἰς Λαρισαῖαι πέτραι κατὰ τὴν ἐπὶ Μηθύμνης ὁδόν·
 καὶ ἐν τῇ Ἀττικῇ δ' ἐστὶ Λάρισα· καὶ τῶν Τράλλεων
 διέχουσα κώμη τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς πόλεως
 ἐπὶ Καῦστρου πεδῖον διὰ τῆς Μεσσηνίδος ἰόντων κατὰ
 τὸ τῆς Ἰσοδρόμης Μητρὸς ἱερὸν, ὁμοίαν τὴν θέσιν καὶ
 25 τὴν ἀρετὴν ἔχουσα τῇ Κρεμαστῇ Λαρίσῃ· καὶ γὰρ εὐ-
 υδρὸς καὶ ἀμπελόφυτος· ἴσως δὲ καὶ ὁ Λαρίσιος Ζεὺς
 ἐκεῖθεν ἐπωνόμασται· καὶ ἐν τοῖς ἀριστεροῖς δὲ τοῦ
 Πόντου κώμη τις καλεῖται Λάρισα μετὰ ξὺν Ναυλόχου
 καὶ Ὀδησσοῦ] πλησίον τῶν ἄκρων τοῦ Αἴμου.
- 30 Καὶ Ὀλοσσῶν δὲ λευκὴν προσαγορευθεῖσα ἀπὸ
 τοῦ λευκάργιλος εἶναι, καὶ Ἡλώνῃ Περραιβικὰ πόλεις,
 καὶ Γόννος. ἡ δ' Ἡλώνῃ μετέβαλε τοῦνομα Λειμώνῃ

μετονομασθεῖσα· κατέσκαπται δὲ νῦν· ἄμφω δ' ὑπὸ
C.441 τῷ Ὀλύμπῳ κεύνται οὐ πολὺ ἄπωθεν τοῦ Εὐρώπου
ποταμοῦ, ὃν ὁ ποιητὴς Τιταρήσιον καλεῖ.

- 20 *Λέγει δὲ καὶ περὶ τούτου καὶ περὶ τῶν Περραιβῶν
ἐν τοῖς ἐξῆς ὁ ποιητὴς ὅταν φῇ „Γουνεὺς δ' ἐκ Κύφου 5
„ἦγε δὺω καὶ εἰκοσι νῆας. τῷ δ' Ἐνιῆνες ἔποντο με-
„νεπτόλεμοί τε Περαιβοί, οἳ περὶ Δωδώνην δυσχείμε-
„ρον οἰκί' ἔθεντο, [οἷ τ'] ἄμφ' ἱμερτὸν Τιταρήσιον
„ἔργ' ἐνέμοντο.“ λέγει μὲν οὖν τούτους τοὺς τόπους
τῶν Περραιβῶν, ἀπὸ μέρους τῆς Ἑστιάϊδος ἐπειλη- 10
φότας· ἦσαν δὲ καὶ ὑπὸ τῷ Πολυποίτῃ ἐκ μέρους Περ-
ραιβικαί, τοῖς μέντοι Λαπίθαις προσέειμε διὰ τὸ ἀνα-
μιῆ οἰκεῖν καὶ τὰ μὲν πεδία κατέχειν τοὺς Λαπίθας καὶ
τὸ ἐνταῦθα Περραιβικὸν ὑπὸ τούτοις τετάχθαι ὥς ἐπὶ
πλέον, τὰ δ' ὀρεινότερα χωρία πρὸς τῷ Ὀλύμπῳ καὶ 15
τοῖς Τέμπεσι τοὺς Περραιβοὺς, καθάπερ τὸν Κύφον
καὶ τὴν Δωδώνην καὶ τὰ περὶ τὸν Τιταρήσιον, ὃς ἐξ
ὄρους Τιταρίου συμφυοῦς τῷ Ὀλύμπῳ ῥέων εἰς τὰ
πλησίον τῶν Τεμπῶν χωρία τῆς Περραιβίας αὐτοῦ που
τὰς συμβολὰς ποιεῖται πρὸς τὸν Πηνειόν. τὸ μὲν οὖν 20
τοῦ Πηνειοῦ καθαρὸν ἔστιν ὕδωρ, τὸ δὲ τοῦ Τιταρη-
σίου λιπαρὸν ἐκ τινος ὕλης ὥστ' οὐ συμμίσγεται „ἀλλὰ
„τέ μιν καθύπερθεν ἐπιτρέχει ἡύτ' ἔλαιον.“ διὰ δὲ τὸ
ἀναμιῆ οἰκεῖν Σιμωνίδης Περραιβοὺς καὶ Λαπίθας κα-
λεῖ τοὺς Πελασγίωτας ἅπαντας, τοὺς τὰ ἐῷα κατέχον- 25
τας τὰ περὶ Γυρτώνα καὶ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Πηνειοῦ καὶ
Οἶσαν καὶ Πήλιον καὶ τὰ περὶ Δημητριάδα καὶ τὰ ἐν
τῷ πεδίῳ, Ἀάρισαν Κραννώνα Σκοτοῦσσαν Μόψιον
Ἀτρακα, καὶ τὰ περὶ τὴν Νεσσωνίδα λίμνην καὶ [τὴν]
Βοιβηίδα· ὧν ὁ ποιητὴς ὀλίγων μέμνηται διὰ τὸ μὴ οἶ- 30
κισθῆναι πῶ τᾶλλα ἢ φεύλως οἰκισθῆναι διὰ τοὺς κα-
τακλυσμοὺς ἄλλοτ' ἄλλους γινομένους· ἐπεὶ οὐδὲ τῆς*

Νεσσωνίδος μέμνηται λίμνης, ἀλλὰ τῆς Βοιβηίδος μόνον πολὺ ἐλάττονος οὔσης, ταύτης δὲ μόνης μενούσης, ἐκείνης δὲ ὡς εἰκὸς τοτὲ μὲν πληρουμένης ἀτάκτως, τοτὲ δ' ἐκλειπομένης. τῆς δὲ Σκοτούσσης ἐμνή-
 5 σθημεν καὶ ἐν τοῖς περὶ Δωδώνης λόγοις καὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν Θετταλίᾳ, διότι περὶ τοῦτον ὑπῆρξε τὸν τόπον. ἔστι δ' ἐν τῇ Σκοτούσσει χωρίον τι Κυνὸς κερφαλαὶ καλούμενον, περὶ ὃ Ῥωμαῖοι μετ' Αἰτωλῶν καὶ Τίτος Κοῖντιος ἐνίκων μάχῃ μεγάλη Φίλιππον τὸν Δη-
 10 μητρίου, Μακεδόνων βασιλέα.

Πέπονθε δέ τι τοιοῦτο καὶ ἡ Μαγνητὶς· κατη- 21
 ριθμημένων γὰρ ἤδη πολλῶν αὐτῆς τόπων οὐδένας τούτων ὠνόμακε Μάγνητας Ὀμηρος, ἀλλ' ἐκείνους 0.442
 μόνους οὓς τυφλῶς καὶ οὐ γνωρίμως διασαφεῖ „οἱ περὶ
 15 „Πηνειὸν καὶ Πήλιον εἰνοσίφυλλον ναίεσκον.“ ἀλλὰ μὴν περὶ τὸν Πηνειὸν καὶ τὸ Πήλιον οἰκοῦσι καὶ οἱ τὴν Γυρτῶνα ἔχοντες, οὓς ἤδη κατέλεξε, καὶ τὸ Ὀρμένιον καὶ ἄλλοι πλείους, καὶ ἔτι ἀπατέρω τοῦ Πηλίου ὅμως Μάγνητες ἦσαν ἀρξάμενοι ἀπὸ τῶν ὑπ' Εὐμήλω,
 20 κατὰ γε τοὺς ὕστερον ἀνθρώπους. εἰκόασιν οὖν διὰ τὰς συνεχεῖς μεταστάσεις καὶ ἐξαλλάξεις τῶν πολιτειῶν καὶ ἐπιμῖξεις συγχεῖν καὶ τὰ ὀνόματα καὶ τὰ ἔθνη, ὥστε τοῖς νῦν ἔσθ' ὅτε ἀπορίαν παρέχειν, καθάπερ τοῦτο τὸ πρῶτον μὲν ἐπὶ Κραννώνος καὶ τῆς Γυρτῶνος γεγέ-
 25 νηται. τοὺς μὲν γὰρ Γυρτωνίους Φλεγύας πρότερον ἐκάλουν ἀπὸ Φλεγύου τοῦ Ἰξίονος ἀδελφοῦ, τοὺς δὲ Κραννωνίους Ἐφύρους, ὥστε διαπορεῖν, ὅταν φῇ ὁ ποιητὴς „τῶ μὲν ἄρ' ἐκ Θρήκης Ἐφύρους μετὰ θω-
 „ρήσσουντο ἡὲ μετὰ Φλεγύας μεγαλήτορας,“ τίνας ποτὲ
 30 βούλεται λέγειν· ἔπειτα τοῦτο καὶ ἐπὶ τῶν Πεορραιβῶν 22 καὶ τῶν Αἰνιάνων συνέβη· Ὀμηρος μὲν γὰρ συνέξευ-
 ξεν αὐτοὺς ὡς πλησίον ἀλλήλων οἰκοῦντας· καὶ δὴ

καὶ λέγεται ὑπὸ τῶν ὕστερον ἐπὶ χρόνον συχνὸν ἢ οἰκησας τῶν Αἰνιάνων ἐν τῷ Δωτίῳ γενέσθαι πεδίῳ, τοῦτο δ' ἐστὶ πλησίον τῆς ἄρτι λεχθείσης Περραιβίας καὶ τῆς Ὀσσης καὶ ἔτι τῆς Βοιβηίδος λίμνης, ἐν μέσῃ μὲν πως τῇ Θετταλίᾳ λόφοις δὲ ἰδίῳις περικλειόμενον, 5 περὶ οὗ Ἡσίδοτος οὕτως εἰρηκεν „ἢ οἷη Διδύμους λε- „ροὺς ναίουσα κολωνοὺς Δωτίῳ ἐν πεδίῳ, πολυβό- „τρονος ἄντ' Ἀμύροιο, νύφατο Βοιβιάδος λίμνης πόδα „παρθένος ἄδμης.“ οἱ μὲν οὖν Αἰνιᾶνες οἱ πλείους εἰς τὴν Οἰτην ἐξηλάθησαν ὑπὸ τῶν Λαπιθῶν, κἀνταῦθα 10 δὲ ἐδυνάστευσαν ἀφελόμενοι τῶν τε Δωριέων τινὰ μέρη καὶ τῶν Μαλιέων μέχρι Ἡρακλείας καὶ Ἐχίνου, τινὲς δ' αὐτῶν ἔμειναν περὶ Κύφον, Περραιβικὸν ὄρος ὁμώνυμον κατοικίαν ἔχον. οἱ δὲ Περραιβοὶ τινὲς μὲν συσταλέντες περὶ τὰ ἐσπέρια τοῦ Ὀλύμπου μέρη κατέ- 15 μενον αὐτόθι πρόσχωροι ὄντες Μακεδόσι, τὸ δὲ πολὺ μέρος εἰς τὰ περὶ τὴν Ἀθαμανίαν ὄρη καὶ τὴν Πίνδον ἐξέπεσε· νυνὶ δὲ μικρὸν ἢ οὐδὲν αὐτῶν ἔχνος σώζεται. τοὺς δ' οὖν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεχθέντας Μάγνητας ὑστάτους ἐν τῷ Θετταλικῷ καταλόγῳ νομιστέον τοὺς 20 6.443 ἐντὸς τῶν Τεμπῶν ἀπὸ τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῆς Ὀσσης ἕως Πηλίου, Μακεδόνων τοῖς Περιώταις ὁμόρους τοῖς ἔχουσι τὴν τοῦ Πηνειοῦ περαίαν μέχρι τῆς θαλάττης. τὸ μὲν οὖν Ὀμόλιον ἢ τὴν Ὀμόλην (λέγεται γὰρ ἀμφο- 25 τέρως) ἀποδοτέον αὐτοῖς· εἰρηται δ' ἐν τοῖς Μακεδο- νικοῖς ὅτι ἐστὶ πρὸς τῇ Ὀσση κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς τοῦ Πηνειοῦ διὰ τῶν Τεμπῶν διεκβολῆς. εἰ δὲ καὶ μέχρι τῆς παραλίας προἰτέον τῆς ἐγγυτάτῳ τοῦ Ὀμολίου, λό- 30 γον ἔχει ὥστε [καὶ] τὸν Ῥίξοῦντα προσνέμειν καὶ Ἐρυμνὰς ἐν τῇ ὑπὸ Φιλοκτήτῃ παραλίᾳ κειμένας καὶ τῇ ὑπὸ Εὐμήλῳ. τοῦτο μὲν οὖν ἐν ἀσαφεὶ κείσθω. καὶ ἡ τάξις δὲ τῶν ἐφεξῆς τόπων μέχρι Πηνειοῦ οὐ διαφα-

νῶς λέγεται, ἀδόξων δ' ὄντων τῶν τόπων οὐδ' ἡμῖν
 περὶ πολλοῦ θετέον. ἡ μέντοι Σηπιάς ἀκτὴ καὶ τετραγώ-
 δηται μετὰ ταῦτα καὶ ἐξύμνηται διὰ τον ἐνταῦθα ἀφα-
 νισμόν τοῦ Περσικοῦ στόλου· ἔστι δ' αὕτη μὲν ἀκτὴ
 5 πετρώδης, μεταξὺ δ' αὐτῆς καὶ Κασθαναΐας κώμης
 ὑπὸ τῷ Πηλίου κειμένης αἰγιαλός ἐστιν, ἐν ᾧ ὁ Ξέρξου
 στόλος ναυλοχῶν ἀπηλιώτου πολλοῦ πνεύσαντος ὁ
 μὲν εὐθύς αὐτοῦ πρὸς τὸ ξηρὸν ἐξώκειλε καὶ διελύθη
 παραχρῆμα, ὁ δ' εἰς Ἴπνους τόπον τραχὺν τῶν περὶ τὸ
 10 Πήλιον παρενεχθεὶς ὁ δ' εἰς Μελίβοιαν ὁ δ' εἰς τὴν
 Κασθαναΐαν διεφθάρη. τραχὺς δ' ἐστὶν ὁ παράπλους
 πᾶς ὁ τοῦ Πηλίου ὅσον σταδίων ὀγδοήκοντα· τοσοῦ-
 τος δ' ἐστὶ καὶ τοιοῦτος καὶ ὁ τῆς Ὀσσης. μεταξὺ δὲ
 κόλπος σταδίων πλείονων ἢ διακοσίων, ἐν ᾧ ἡ Μελί-
 15 βοια. ὁ δὲ πᾶς ἀπὸ Ἀημητριάδος ἐγκολπίζοντι ἐπὶ τὸν
 Πηνειὸν μεῖζων τῶν χιλίων, [ἀπὸ δὲ Σπε]ρχεῖοι καὶ
 ἄλλων ὀκτακοσίων, ἀπὸ δὲ Εὐρύππου διςχιλίων τριακο-
 σίων πεντήκοντα. Ἰερώνυμος δὲ τῆς πεδιάδος Θεττα-
 λίας καὶ Μαγνήτιδος τὸν κύκλον τριςχιλίων ἀποφαί-
 20 νεται σταδίων, ᾧ κῆσθαι δ' ὑπὸ Πελασγῶν, ἐξελαθῆ-
 ναι δὲ τούτους εἰς τὴν Ἰταλίαν ὑπὸ Λαπιθῶν· εἶναι δὲ
 τὸ νῦν καλούμενον Πελασγικὸν πεδίον, ἐν [ᾧ] Ἀρίσθα
 καὶ Γυρτώνη καὶ Φερὰ καὶ Μόψιον καὶ Βοιβῆς καὶ
 Ὀσσα καὶ Ὀμόλη καὶ Πήλιον καὶ Μαγνητῆς· Μόψιον
 25 δ' ὠνόμασται οὐκ ἀπὸ Μόψου τοῦ Μαντοῦς τῆς Τει-
 ρεσίου, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ Λαπίθου τοῦ συμπλεύσαντος
 τοῖς Ἀργοναύταις· ἄλλος δ' ἐστὶ Μόψοπος, ἀφ' οὗ ἡ
 Ἀττικὴ Μοψοπία.

Τὰ καθ' ἑκάστα μὲν ταῦτα περὶ Θετταλίας, καθ' 23
 30 ὅλου δ' ὅτι Πυρραία πρότερον ἐκαλεῖτο ἀπὸ Πύρρας
 τῆς Δευκαλίωνος γυναικός, Αἰμονία δὲ ἀπὸ Αἰμονος,
 Θετταλία δὲ ἀπὸ Θετταλοῦ τοῦ Αἰμονος. ἔνιοι δὲ διε-

λόντες δίχα τὴν μὲν πρὸς νότον λαχεῖν φασι Λευκα-
λίῳ καὶ καλέσαι Πανδώραν ἀπὸ τῆς μητρός, τὴν δ'
C.444 ἑτέραν Αἴμονι, ἀφ' οὗ Αἴμονιαν λεχθῆναι· μετωνο-
μάσθαι δὲ τὴν μὲν Ἑλλάδα ἀπὸ Ἑλληνος τοῦ Λευκα-
λίῳ, τὴν δὲ Θετταλίαν ἀπὸ τοῦ υἱοῦ Αἴμονος· τινὲς 5
δὲ ἀπὸ Ἐφύρας τῆς Θεσπρωτίδος ἀπογόνους Ἀντίφου
καὶ Φειδίππου, τῶν Θετταλοῦ τοῦ Ἡρακλέους, ἐπελθόν-
τας ἀπὸ Θετταλοῦ τοῦ ἑαυτῶν προγόνου τὴν χώραν
ὀνομάσαι. εἶρ[ηται] δὲ καὶ Νεσσωνὶς ὀνομασθῆναι ποτε
ἀπὸ Νέσσωνος τοῦ Θετταλοῦ, καθάπερ καὶ ἡ λίμνη. 10

— I —

1 Ἐπεὶ δὲ ἡ Εὐβοία παρὰ πᾶσαν τὴν παραλίαν ταύ-
την παραβέβληται τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι Θετταλίας,
πλὴν τῶν ἄκρων ἐκατέρωθεν, οἰκεῖον ἂν εἴη συνάψαι 15
τοῖς εἰρημένοις τὰ περὶ τὴν νῆσον, εἰθ' οὕτω μεταβῆ-
ναι πρὸς τε τὰ Αἰτωλικά καὶ τὰ Ἀκαρνανικά, ἅπερ
λοιπὰ ἐστὶ τῶν τῆς Εὐρώπης μερῶν.

2 Παραμήκης μὲν τοίνυν ἐστὶν ἡ νῆσος ἐπὶ χιλίους
σχεδὸν τι καὶ διακοσίους σταδίους ἀπὸ Κηναίου πρὸς 20
Γεραιστόν, τὸ δὲ πλάτος ἀνώμαλος, κατὰ δὲ τὸ πλεόν
ὅσον πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν σταδίων. τὸ μὲν οὖν Κή-
ναιον ἐστὶ κατὰ Θερμοπύλας καὶ τὰ ἔξω Θερμοπυλῶν
ἐπ' ὀλίγον, Γεραιστός δὲ καὶ Πεταλία πρὸς Σουνίῳ.
γίνεται οὖν ἀντίπορθμος τῇ τε Ἀττικῇ καὶ Βοιωτίᾳ καὶ 25
Λοκρίδι καὶ τοῖς Μαλιεῦσι. διὰ δὲ τὴν στενότητα καὶ
τὸ λεχθῆν μῆκος ὑπὸ τῶν παλαιῶν Μάκρις ὀνομάσθη.
C.445 συνάπτει δὲ τῇ ἡπίερω κατὰ Χαλκίδα μάλιστα, κυρτὴ
προπίπτουσα πρὸς τοὺς κατὰ τὴν Αὐλίδαν τόπους τῆς
Βοιωτίας καὶ ποιούσα τὸν Εὐρίπον, περὶ οὗ διὰ πλει- 30
όνων εἰρήκαμεν, σχεδὸν δέ τι καὶ περὶ τῶν ἀντιπόρθ-
μων ἀλλήλοις τόπων κατὰ τε τὴν ἡπίερον καὶ κατὰ

τὴν νῆσον ἔφ' ἐκάτερα τοῦ Εὐρύπου, τὰ τε ἐντὸς καὶ τὰ ἐκτός. εἰ δέ τι ἐλλέλειπται, νῦν προσδιασαφήσομεν. καὶ πρῶτον, ὅτι τῆς Εὐβοίας τὰ Κοῖλα λέγουσι τὰ μεταξὺ Αὐλίδος καὶ τῶν περὶ Γεραιστὸν τόπων· κολ-
 5 ποῦται γὰρ ἡ παραλία, πλησιάζουσα δὲ τῇ Χαλκίδι κυρτοῦται πάλιν πρὸς τὴν ἡπειρον.

Οὐ μόνον δὲ Μάκρις ἐκλήθη ἡ νῆσος, ἀλλὰ καὶ 3
 Ἀβαντίς. Εὐβοίαν γοῦν εἰπὼν ὁ ποιητὴς τοὺς ἀπ' αὐ-
 τῆς Εὐβοίας οὐδέποτε εἴρηκεν, ἀλλ' Ἀβαντας αἰεὶ „οἱ δ'
 10 „Εὐβοίαν ἔχον μένεα πνεύοντες Ἀβαντες.“ „τῷ δ' ἄμ'
 „Ἀβαντες ἔποντο.“ φησὶ δ' Ἀριστοτέλης ἐξ Ἀβας τῆς
 Φωκιῆς Θοῤῃας ὁρμηθέντας ἐποικῆσαι τὴν νῆσον καὶ
 ἐπονομάσαι Ἀβαντας τοὺς ἔχοντας αὐτήν· οἱ δ' ἀπὸ
 ἡρώος φασι, καθάπερ καὶ Εὐβοίαν ἀπὸ ἡρωίνης. τάχα
 15 δ' ὥσπερ βοὸς αὐλὴ λέγεται τι ἄντρον ἐν τῇ πρὸς [τὸν]
 Αἰγαῖον τετραμμένη παραλία, ὅπου τὴν Ἰώ φασι τεκεῖν
 Ἐπαφον, καὶ ἡ νῆσος ἀπὸ τῆς αὐτῆς αἰτίας ἔσχε τοῦτο
 τοῦνομα. καὶ Ὀχῆ δὲ ἐκαλεῖτο ἡ νῆσος, καὶ ἔστιν ὁμώ-
 νυμον αὐτῇ τὸ μέγιστον τῶν ἐνταῦθα ὄρων. καὶ Ἐλ-
 20 λοπία δ' ὠνομάσθη ἀπὸ Ἑλλοπος τοῦ Ἰωνος· οἱ δὲ Ἀλ-
 κλον καὶ Κόθου ἀδελφόν φασιν, ὃς καὶ τὴν Ἑλλοπίαν
 κτίσαι λεγεται, χωρίον ἐν τῇ Ὠρεῖα καλουμένη τῆς
 Ἰστιαιώτιδος πρὸς τῷ Τελεθρίῳ ὄρει, καὶ τὴν Ἰστίαίαν
 προσκτῆσασθαι καὶ τὴν πεδιάδα καὶ Κήρινθον καὶ Αἰ-
 25 δηψὸν καὶ Ὀροβίας, ἐν ᾧ μαντεῖον ἦν ἀψευδέστατον·
 ἦν δὲ μαντεῖον τοῦ Σελινουντίου Ἀπόλλωνος· μετῴ-
 κησαν δ' εἰς τὴν Ἰστίαίαν οἱ Ἑλλοπιεῖς, καὶ ἠΐξησαν
 τὴν πόλιν Φιλιστίδου τοῦ τυράννου βιασαμένου μετα-
 τὰ Λευκτρικά. Δημοσθένης δ' ὑπὸ Φιλίππου κατα-
 30 σταθῆναι τύραννόν φησι καὶ τῶν Ὠρειτῶν τὸν Φιλι-

στίδην· οὕτω γὰρ ὠνομασθησαν ὕστερον οἱ Ἰστιαί-
 εῖς, καὶ ἡ πόλις ἀντὶ Ἰστιαίας Ὠρεός· ἐνιοὶ δ' ὑπ' Ἀθη-
 ναίων ἀποικισθῆναί φασι τὴν Ἰστιαίαν ἀπὸ τοῦ δήμου
 τοῦ Ἰστιαίων, ὡς καὶ ἀπὸ τοῦ Ἐρετριέων τὴν Ἐρέ-
 τριαν. Θεόπομπος δὲ φησι Περικλέους χειρουμένου 5
 Εὐβοίαν τοὺς Ἰστιαεῖς καθ' ὁμολογίας εἰς Μακεδονίαν
 μεταστῆναι, δισχιλλίους δ' ἐξ Ἀθηναίων ἐλθόντας τὸν
 Ὠρεὸν οἰκῆσαι, δῆμον ὄντα πρότερον τῶν Ἰστιαίων.

4 κεῖται δ' ὑπὸ τῷ Τελεθρίῳ ὄρει ἐν τῷ Δρυμῷ κα-
 C.446λουμένῳ παρὰ τὸν Κάλλαντα ποταμὸν ἐπὶ πέτρας 10
 ὑψηλῆς, ὥστε τάχα καὶ διὰ τὸ τοὺς Ἑλλοπιεῖς ὄρειους
 εἶναι τοὺς προοικήσαντας ἐτέθη τοῦνομα τοῦτο τῇ πό-
 λει· δοκεῖ δὲ καὶ ὁ Ὠρίων ἐνταῦθα τραφεῖς οὕτως ὀνο-
 μασθῆναι· ἐνιοὶ δὲ τοὺς Ὠρεῖτας πόλιν ἔχοντας ἰδίαν
 φασὶ πολεμουμένους ὑπὸ τῶν Ἑλλοπιέων μεταβῆναι 15
 καὶ συνοικῆσαι τοῖς Ἰστιαιεῦσι, μίαν δὲ γεννηθεῖσαν πό-
 λιν ἀμφοτέροις χρήσασθαι τοῖς ὀνόμασι, καθάπερ Λα-
 κεδαίμων τε καὶ Σπάρτη ἢ αὐτή. εἴρηται δ' ὅτι καὶ ἐν
 Θετταλίᾳ Ἰστιαιωτὶς ἀπὸ τῶν ἀνασπασθέντων ἐνθενδε
 ὑπὸ Περραιβῶν ὠνόμασται. 20

5 Ἐπεὶ δ' ἡ Ἑλλοπία τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς Ἰστιαίας
 καὶ τοῦ Ὠρεοῦ προσηγάγετο ἡμᾶς ποιήσασθαι, τὰ συν-
 εῖναι λέγωμεν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δ' ἐν τῷ Ὠρεῷ
 τούτῳ τό τε Κήναιον πλησίον καὶ ἐπ' αὐτῷ τὸ Δίον καὶ
 Ἀθῆναι αἱ Διάδες, κτίσμα Ἀθηναίων, ὑπερκείμενον 25
 τοῦ ἐπὶ Κύνον πορθμοῦ· ἐκ δὲ τοῦ Δίου Κάναι τῆς
 Αἰολίδος ἀπρωκίσθησαν· ταῦτά τε δὴ τὰ χωρία περὶ
 τὴν Ἰστιαίαν ἐστὶ καὶ ἔτι Κήρινθος πολίδιον ἐπὶ τῇ θα-
 λάττῃ· ἐγγὺς δὲ Βούδορος ποταμὸς ὁμώνυμος τῷ κατὰ
 τὴν Σαλαμῖνα ὄρει τῷ πρὸς τῇ Ἀττικῇ. 30

6 Κάρυστος δὲ ἐστὶν ὑπὸ τῷ ὄρει τῇ Ὀχῇ· πλησίον
 δὲ τὰ Στύρα καὶ τὸ Μαρμάριον, ἐν ᾧ τὸ λατόμιον τῶν

Καρυστίων κίωνων, ἱερὸν ἔχον Ἀπόλλωνος Μαρμαρί-
 νου, ὃθεν διάπλους εἰς Ἀλὰς τὰς Ἀραφηνίδας. ἐν δὲ τῇ
 Καρύστῳ καὶ ἡ λίθος φύεται ἡ ξαινομένη καὶ ὑφαινο-
 μένη, ὥστε τὰ ὕψη χειρόμακτρα γίνεσθαι, ὀρυπθέντα
 5 δ' εἰς φλόγα βάλλεσθαι καὶ ἀποκαθαίρεσθαι τῇ πλύσει
 τῶν λίνων παραπλησίως· ᾠκίσθαι δὲ τὰ χωρία ταῦτά
 φασιν ὑπὸ τῶν ἐκ τετραπόλεως τῆς περὶ Μαραθῶνα καὶ
 Στειριέων· κατεστράφη δὲ τὰ Στύρα ἐν τῷ Λαμιακῷ
 πολέμῳ ὑπὸ Φαίδρον τοῦ Ἀθηναίων στρατηγοῦ· τὴν
 10 δὲ χώραν ἔχουσιν Ἑρετριεῖς. Κάρυστος δὲ ἐστὶ καὶ ἐν
 τῇ Λακωνικῇ τόπος τῆς ἄλγος πρὸς Ἀρκαδίαν, ἀφ'
 οὗ Καρύστιον οἶνον Ἀλκμὰν εἴρηκε.

Γεραιστὸς δ' ἐν μὲν τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν οὐκ 7
 εἴρηται, μέμνηται δ' ὁ ποιητὴς ὅμως αὐτοῦ „ἐς δὲ Γε-
 , 15 ραιστὸν ἐννύχιοι κατάγοντο,“ καὶ δημοὶ διότι τοῖς
 διαίρουσιν ἐκ τῆς Ἀσίας εἰς τὴν Ἀττικὴν ἐπικαιρίως
 κεῖται τῷ Σουνίῳ πλησιάζον τὸ χωρίον· ἔχει δ' ἱερὸν
 Ποσειδῶνος ἐπισημότατον τῶν ταύτῃ καὶ κατοικίαν
 ἀξιόλογον.

20 Μετὰ δὲ τὸν Γεραιστὸν Ἑρέτρια πόλις μεγίστη τῆς 8
 Εὐβοίας μετὰ Χαλκίδα, ἔπειθ' ἡ Χαλκὶς μητρόπολις
 τῆς νήσου τρόπον τινα, ἐπ' αὐτῷ τῷ Εὐρίπῳ ἰδρυ-
 μένη· ἀμφοτέραι δὲ πρὸ τῶν Τρωικῶν ὑπ' Ἀθηναίων C. 447
 ἐκτίσθαι λέγονται, καὶ μετὰ τὰ Τρωικά Ἄϊκλος καὶ Κό-
 25 θος ἔξ Ἀθηναίων ὀρμηθέντες ὁ μὲν τὴν Ἑρέτριαν ᾠκισε
 Κόθος δὲ τὴν Χαλκίδα· καὶ τῶν Αἰολέων δὲ τινες ἀπὸ
 τῆς Πενθίλου στρατιᾶς κατέμειναν ἐν τῇ νήσῳ, τὸ δὲ
 παλαιὸν καὶ Ἄραβες οἱ Κάδμῳ συνδιαβάντες. αἱ δ'
 οὖν πόλεις αὗται διαφερόντως ἀνέστηναι καὶ ἀποι-
 30 κίας ἔστειλαν ἀξιολόγους εἰς Μακεδονίαν· Ἑρέτρια
 μὲν γὰρ συνᾠκισε τὰς περὶ Παλλήνην καὶ τὸν Ἄθω
 πόλεις, ἡ δὲ Χαλκὶς τὰς ὑπὸ Ὀλύνθῳ, ἃς Φίλιππος

διελυμήνατο. καὶ τῆς Ἰταλίας δὲ καὶ Σικελίας πολλὰ χωρία Χαλκιδέων ἐστίν· ἐστάλησαν δὲ αἱ ἀποικίαι αὐταί, καθάπερ εἴρηκεν Ἀριστοτέλης, ἥνικα ἡ τῶν Ἰπποβοτῶν καλουμένη ἐπεκράτει πολιτεία· προσέστησαν γὰρ αὐτῆς ἀπὸ τιμημάτων ἄνδρες ἀριστοκρατικῶς ἄρχοντες. κατὰ δὲ τὴν Ἀλεξάνδρου διάβασιν καὶ τὸν περὶ βόλου τῆς πόλεως ἡὔξησαν, ἐντὸς τείχους λαβόντες τὸν τε Κάνηθον καὶ τὸν Εὐριπον, ἐπιστήσαντες τῇ γεφύρᾳ πύργους καὶ πύλας καὶ τεῖχος.

- 9 Ὑπέρκειται δὲ τῆς τῶν Χαλκιδέων πόλεως τὸ Λή- 10
λαντον καλούμενον πεδίον. ἐν δὲ τούτῳ θερμοῦν τε ὑδάτων εἰσὶν ἐκβολαὶ πρὸς θεραπείαν νόσων εὐφυνεῖς, οἷς ἐχρήσατο καὶ Σύλλας Κορνήλιος ὁ τῶν Ῥωμαίων ἡγεμὼν· καὶ μέταλλον δ' ὑπῆρχε θαυμαστὸν χαλκοῦ καὶ σιδήρου κοινόν, ὅπερ οὐχ ἱστοροῦσιν ἄλλαχοῦ 15
συμβαῖνον· νυνὶ μέντοι ἀμφοτέρω ἐκλέλοιπεν, [ὥσπερ καὶ Ἀθήνησι τὰργυρεῖα.] ἔστι δὲ καὶ ἅπασα μὲν ἡ Εὐβοία εὖσειστος, μάλιστα δ' ἡ περὶ τὸν πορθμόν, καὶ δεχομένη πνευμάτων ὑποφοράς, καθάπερ καὶ ἡ Βοιωτία καὶ ἄλλοι τόποι, περὶ ὧν ἐμνήσθημεν διὰ πλειόνων 20
πρότερον. ὑπὸ τοιοῦδε πάθους καὶ ἡ ὁμώνυμος τῇ νήσῳ πόλις καταποθῆναι λέγεται, ἣς μέμνηται καὶ Αἰσχύλος ἐν τῷ Ποντίῳ Γλαύκῳ „Εὐβοῖδα καμπτὴν ἀμφὶ „Κηναίου Διὸς ἀκτὴν, κατ' αὐτὸν τύμβον ἀθλίου „Αἶχα.“ Χαλκὶς δ' ὁμωνύμως λέγεται καὶ ἐν Αἰτωλίᾳ 25
„Χαλκίδα τ' ἀργίαλον, Καλυδῶνά τε πετρήεσσαν,“ καὶ ἐν τῇ νῦν Ἠλείᾳ „βὰν δὲ παρὰ Κρουνοῦς καὶ Χαλκίδα πετρήεσσαν“ οἱ περὶ Τηλέμαχον ἀπιόντες παρὰ Νέστορος εἰς τὴν οἰκίαν.

- 10 Ἐρετρίαν δ' οἱ μὲν ἀπὸ Μακίστου τῆς Τριφυλίας 30
ἀποικισθῆναί φασιν ὑπ' Ἐρετριέως, οἱ δ' ἀπὸ τῆς Ἀθήνησιν Ἐρετρίας, ἣ νῦν ἐστὶν ἀγορά· ἔστι δὲ καὶ

- περὶ Φάρσαλον Ἐρέτρια, ἰερὰ τοῦ Ἀπόλλωνος. Ἀδμή-
του δ' ἰδρυμα λέγεται τὸ ἱερόν, παρ' ᾧ θητεῦσαι λέ-
γουσι τὸν θεὸν * αὐτόν. Μελαυνίης δ' ἐκαλεῖτο πρότε-
ρον ἢ Ἐρέτρια καὶ Ἀρότρια· ταύτης δ' ἐστὶ κώμη ἢ 0.448
- 5 Ἀμάρυνθος ἀφ' ἑπτὰ σταδίων τοῦ τείχους. τὴν μὲν
οὖν ἀρχαίαν πόλιν κατέσκαψαν Πέρσαι, σαγηνεύσαν-
τες, ὥς φησιν Ἡρόδοτος, τοὺς ἀνθρώπους τῷ πλήθει,
περιχυθέντων τῶν βαρβάρων τῷ τείχει· καὶ δεικνύου-
σιν ἔτι τοὺς θεμελίους, καλοῦσι δὲ παλαιὰν Ἐρέ-
10 τριαν, ἢ δὲ νῦν ἐπέκτισται. τὴν δὲ δύναμιν τὴν Ἐρε-
τρίων ἦν ἔσχον ποτὲ μαρτυρεῖ ἡ στήλη, ἣν ἀνέθε-
σάν ποτε ἐν τῷ ἱερῷ τῆς Ἀμαρυνθίας Ἀρτέμιδος· γέ-
γραπται δ' ἐν αὐτῇ τρισχιλίοις μὲν ὀπλίταις ἑξακο-
σίοις δ' ἱππεῦσιν ἐξήκοντα δ' ὄρμασι ποιεῖν τὴν πομ-
15 πὴν· ἐπὶ ἤρχον δὲ καὶ Ἀνδρίων καὶ Τηνίων καὶ Κείων
καὶ ἄλλων νήσων. ἐποίκους δ' ἔσχον ἀπ' Ἡλίδος, ἀφ'
οὗ καὶ τῷ γράμματι τῷ ῥῶ πολλῷ χρησόμενοι οὐκ ἐπὶ
τέλει μόνον τῶν δημάτων ἀλλὰ καὶ ἐν μέσῳ κεκωμώ-
δηνται. ἐν δὲ τῇ Ἐρετρικῇ πόλιν ἦν Τάμυναι πλησίον
20 τοῦ πορθμοῦ. ἔστι δὲ καὶ Οἰχαλία κώμη τῆς Ἐρετρι-
κῆς, λείψανον τῆς ἀναιρεθείσης πόλεως ὑπὸ Ἡρα-
κλέους, ὁμώνυμος τῇ Τραχινίᾳ καὶ τῇ περὶ Τρίκκην
καὶ τῇ Ἀρκαδικῇ, ἣν Ἀνδανίαν οἱ ὕστερον ἐκάλεσαν,
καὶ τῇ ἐν Αἰτωλίᾳ περὶ τοὺς Εὐρυτάνας.
- 25 Νυλὴ μὲν οὖν ὁμολογουμένως ἢ Χαλκὶς φέρεται 11
τὰ πρωτεῖα καὶ μητροπόλις αὕτη λέγεται τῶν Εὐβοέων,
δευτερεύει δ' ἢ Ἐρέτρια. ἀλλὰ καὶ πρότερον αὐταὶ
μέγα εἶχον ἀξίωμα καὶ πρὸς πόλεμον καὶ πρὸς εἰρήνην,
ὥστε καὶ φιλοσόφοις ἀνδράσι παρασχεῖν διαγωγὴν
30 ἢ δεῖαν καὶ ἀθόρυβον. μαρτυρεῖ δ' ἢ τε τῶν Ἐρε-
τρικῶν φιλοσόφων σχολὴ τῶν περὶ Μενέδημον ἐν τῇ
Ἐρετρίᾳ γενομένη, καὶ ἔτι πρότερον ἢ Ἀριστοτέλους

ἐν τῇ Χαλκίδι διατριβή, ὅς γε κάκει κατέλυσε τὸν βίον.

- 12 Τὸ μὲν οὖν πλεον ὁμολόγουν ἀλλήλαις αἱ πόλεις αὗται, περὶ δὲ Ἀηλάντου διενεχθεῖσαι οὐδ' οὕτω τελέως ἐπαύσαντο ὥστ' ἐν τῷ πολέμῳ κατὰ αὐ- 5
θάδειαν δρᾶν ἔκαστα, ἀλλὰ συνέθεντο ἐφ' οἷς συστή-
σονται τὸν ἀγῶνα. δηλοῖ δὲ καὶ τοῦτο ἐν τῷ Ἀμαρυν-
θίῳ στήλῃ τις φράζουσα μὴ χρῆσθαι τηλεβόλοις.
- 13 Οἱ δ' Εὐβοεῖς ἀγαθοὶ πρὸς μάχην ὑπῆρξαν τὴν σταδίαν, ἣ καὶ συστάδην λέγεται καὶ ἐκ χειρός. δόρασι 10
δ' ἐχρῶντο τοῖς ὀρεκτοῖς, ὥς φησιν ὁ ποιητής „αἰχμη-
C.449, ταὶ μεμαῶτες ὀρεκτῇσι μελίησι θῶρηκας ῥήσσειν.“
ἀλλοίων Ἰσως ὄντων τῶν παλτῶν, οἷαν εἰκὸς εἶναι τὴν Πηλιάδα μελίην ἣν, ὥς φησιν ὁ ποιητής „οἶος ἐπί-
„στατο πῆλαι Ἀχιλλεύς“ καὶ ὁ εἰπὼν „δουρὶ δ' ἄκον- 15
„τίξω, ὅσον οὐκ ἄλλος τις οἶστῳ,“ τῷ παλτῷ λέγει δό-
ρατι. καὶ οἱ μονομαχοῦντες τοῖς παλτοῖς χρώμενοι δό-
ρασιν εἰσάγονται πρότερον, εἴτα ἐπὶ τὰ ξίφη βαδίζον-
τες· ἀρχέμαχοι δ' εἰσὶν οὐχ οἱ ξίφει χρώμενοι μόνον,
ἀλλὰ καὶ δόρατι ἐκ χειρός, ὥς φησιν „οὔτησε ξυστῷ 20
„χαλκήρεϊ, λῦσε δὲ γυῖα.“ τοὺς μὲν οὖν Εὐβοέας τούτῳ
τῷ τρόπῳ χρωμένους εἰσάγει, περὶ δὲ Λοκρῶν τὰναντία
λέγει ὥς „οὗ σφιν σταδίας ὑσμίνης ἔργα μέμηλεν,
„ἀλλ' ἄρα τόξοισι καὶ ἐυστροφῶ οἷος ἁώτῳ Ἴλιον εἰς
„ἄμ' ἔποντο.“ περιφέρεται δὲ καὶ χρησμός ἐκδοθεὶς 25

R. παρὰ πηλικίαν· καὶ γὰρ δὴ καὶ τῶν πολεμικῶν ἐθνῶν καὶ
ἔστιν οὗτ' ἣν ἔθος· ἀλλ' οἱ μὲν τη-
λεβολοὶς χρωνται, καθάπερ οἱ τοξοὶ καὶ οἱ σφενδονῆται καὶ
οἱ ἀκοντισταί, οἱ δ' ἄλλοι ἄρα οὐκ ἐκ χειρός, ἀλλ' ἐκ τῷ
ὀρεκτῷ χρώμενοι· δὲ ἄλλοι δ' ἐκ χειρός ἢ δ' ὥς παλτοῖς, καθάπερ καὶ ὁ κοντὸς ἀμφοτέρως τὰς
χρεῖας ἀποδίδωσι· καὶ γὰρ συστ' ἔδην καὶ κοντοβολούν-
των· ὅπερ καὶ ἡ σάρισσα δύναται καὶ ὁ ὑσσός.

Αἰγιεῦσιν „ἵππον Θεσσαλικόν, Λακεδαιμονίαν δὲ γυναικα, ἄνδρας θ' οἱ πίνουσιν ὕδωρ ἱερῆς Ἀρεθούσης,“ τοὺς Χαλκιδέας λέγων ὡς ἀρίστους· ἐκεῖ γὰρ ἡ Ἀρεθούσα.

- 5 Εἰσὶ δὲ νῦν Εὐβοῖται ποταμοὶ Κηρεὺς καὶ Νηλεύς, 14 ὧν ἅφ' οὗ μὲν πίνοντα τὰ πρόβατα λευκὰ γίνεται, ἅφ' οὗ δὲ μέλανα· καὶ περὶ τὸν Κραῖθιν δὲ εἴρεται τοιοῦτόν τι συμβαῖνον.

- Τῶν δ' ἐκ Τροίας ἐπανιόντων Εὐβοέων τινὲς εἰς 15 10 Ἰλλυριοὺς ἐκπεσόντες, ἀποβαίνοντες οἴκαδε διὰ τῆς Μακεδονίας περὶ Ἑδεσσαν ἔμειναν συμπολεμήσαντες τοῖς ὑποδεξαμένοις, καὶ ἔκτισαν πόλιν Εὐβοίαν· ἣν δὲ καὶ ἐν Σικελίᾳ Εὐβοία Χαλκιδέων τῶν ἐκεῖ κτίσμα, ἣν Γέλων ἐξανέστησε, καὶ ἐγένετο φρούριον Συρακου- 15 σίων· καὶ ἐν Κερκύρα δὲ καὶ ἐν Αἴμυνφ τόπος ἦν Εὐβοία καὶ ἐν τῇ Ἀργεῖᾳ λόφος τις.

- Ἐπεὶ δὲ τοῖς Θετταλοῖς καὶ Οἰταίοις πρὸς ἑσπέραν 16 Αἰτωλοὶ καὶ Ἀκαρναῖες εἰσι καὶ Ἀθαμᾶνες, εἰ χρηὴ καὶ τούτους Ἑλλήνας εἰπεῖν, λοιπὸν ἐξηγήσασθαι περὶ τού- 20 των, ἵν' ἔχωμεν τὴν περίοδον ἅπασαν τὴν τῆς Ἑλλάδος· προσθεῖναι δὲ καὶ τὰς νήσους τὰς προσχώρους μάλιστα τῇ Ἑλλάδι καὶ οἰκουμένας ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ὅσας μὴ περιωδεύκαμεν.

- Αἰτωλοὶ μὲν τοίνυν καὶ Ἀκαρναῖες ὁμοροῦσιν 2 25 ἀλλήλοις, μέσον ἔχοντες τὸν Ἀχελῶον ποταμὸν ρέοντα ἀπὸ τῶν ἄρκτων καὶ τῆς Πίνδου πρὸς νότον διὰ τε Ἀργαίων Αἰτωλικοῦ ἔθνους καὶ Ἀμφιλόχων, Ἀκαρ- 30 νᾶνες μὲν τὸ πρὸς ἑσπέραν μέρος ἔχοντες τοῦ ποταμοῦ μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου τοῦ κατὰ Ἀμφιλόχους καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος, Αἰτωλοὶ δὲ τὸ πρὸς ἑω μέχρι τῶν Ὀζολῶν Λοκρῶν καὶ τοῦ Παρνασσοῦ καὶ τῶν Οἰταίων. ὑπέρκεινται δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ

καὶ τοῖς προσβορείοις μέρεσι τῶν μὲν Ἀκαρνανῶν Ἀμφίλοχοι, τούτων δὲ Δόλοπες καὶ ἡ Πίνδος, τῶν δ' Αἰτωλῶν Περραιβοί τε καὶ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἰνιάνων τι μέρος τῶν τὴν Οἰτην ἐχόντων· τὸ δὲ νότιον πλευρόν, τό τε Ἀκαρνανικὸν ὁμοίως καὶ τὸ Αἰτωλικόν, κλύξε- 5
ται τῇ ποιούσῃ θαλάττῃ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον, εἰς ὃν καὶ ὁ Ἀχελῷος ποταμὸς ἐξέλθῃ, ὁρίζων τὴν τῶν Αἰτωλῶν παραλίαν καὶ τὴν Ἀκαρνανικὴν· ἐκαλεῖτο δὲ Θόας ὁ Ἀχελῷος πρότερον. ἔστι δὲ καὶ ὁ παρὰ Δύμην ὁμώνυμος τούτῳ, καθάπερ εἴρηται, καὶ ὁ περὶ Λάμειαν. 10
εἴρηται δὲ καὶ ὅτι ἀρχὴν τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου τὸ στόμα τοῦδε τοῦ ποταμοῦ φασι.

- 2 Πόλεις δ' εἰσὶν ἐν μὲν τοῖς Ἀκαρνανῶσιν Ἀνακτόριον τε ἐπὶ χερσονήσου ἰδρυμένον Ἀκτίου πλησίον, ἐμ-
πόριον τῆς νῦν ἐκτισμένης ἐφ' ἡμῶν Νικοπόλεως, καὶ 15
Στράτος, ἀνάπλουν ἔχουσα τῷ Ἀχελῷῳ πλειόνων ἢ διακοσίαν σταδίων, καὶ Οἰνειαῖδαι, καὶ αὐτὴ ἐπὶ τῷ πο-
ταμῷ, ἡ μὲν παλαιὰ οὐ κατοικουμένη, ἴσον ἀπέχουσα τῆς τε θαλάττης καὶ τοῦ Στράτου, ἡ δὲ νῦν ὅσον ἐβδο-
μήκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς ἐκβολῆς διέχουσα· καὶ ἄλ- 20
λαι δ' εἰσὶ, Πάλαιρός τε καὶ Ἀλυζία καὶ Λευκάς καὶ Ἄρ-
γος τὸ Ἀμφιλοχικὸν καὶ Ἀμβρακία, ὧν αἱ πλεῖσται πε-
ριοικίδες γεγόνασιν ἢ καὶ πάσαι τῆς Νικοπόλεως· κεῖ-
ται δ' ὁ Στράτος κατὰ μέσσην τὴν ἐξ Ἀλυζίας ὁδὸν εἰς
Ἀνακτόριον. 25

- 3 Αἰτωλῶν δ' εἰσὶ Καλυδῶν τε καὶ Πλευρών, νῦν
μὲν τεταπεινωμένοι, τὸ δὲ παλαιὸν πρόσχημα τῆς
Ἑλλάδος ἦν ταῦτα τὰ κτίσματα. καὶ δὴ καὶ διηρησθαι
συνέβαινε δίχα τὴν Αἰτωλίαν, καὶ τὴν μὲν ἀρχαίαν λέ-
γεσθαι τὴν δ' ἐπίκτητον· ἀρχαίαν μὲν τὴν ἀπὸ τοῦ 30
Ἀχελῷου μέχρι Καλυδῶνος παραλίαν ἐπὶ πολὺ καὶ τῆς
μεσογαίας ἀνήκουσαν εὐκάρπου τε καὶ πεδιάδος, ἣ

ἔστι καὶ Στράτος καὶ τὸ Τριχώνιον ἀρίστην ἔχον γῆν·
ἐπίκτητον δὲ τὴν τοῖς Λοκροῖς συνάπτουσιν ὥς ἐπὶ
Ναύπακτόν τε καὶ Εὐπάλιον, τραχυτέραν τε οὖσαν
καὶ λυπροτέραν, μέχρι τῆς Οἰταίας καὶ τῆς Ἀθαμάνων
5 καὶ τῶν ἐφεξῆς ἐπὶ τὴν ἄρκτον ἤδη περισταμένων
ὄρων τε καὶ ἔθνων.

Ἔχει δὲ καὶ ἡ Αἰτωλία ὄρος μέγιστον μὲν τὸν Κό- 4
ρακα, συνάπτοντα τῇ Οἰτῇ, τῶν δ' ἄλλων ἐν μέσῳ
μὲν μᾶλλον τὸν Ἀράκυνθον, περὶ ὃν τὴν νεωτέραν C.451
10 Πλευρῶνα συνώκισαν ἀφέντες τὴν παλαιὰν ἐγγὺς κει-
μένην Καλυδῶνος οἱ οἰκήτορες, εὐκαρπον οὖσαν καὶ
πεδιάδα, πορθοῦντος τὴν χώραν Δημητρίου τοῦ ἐπι-
κληθέντος Αἰτωλικοῦ· ὑπὲρ δὲ τῆς Μολυκρείας Τα-
φιασσὸν καὶ Χαλκίδα, ὄρη ἱκανῶς ὑψηλά, ἐφ' οἷς πο-
15 λίχνια Ἰδρυτο Μακυνία τε καὶ Χαλκίς, ὁμώνυμος τῷ
ὄρει, ἣν καὶ Ἵποχαλκίδα καλοῦσι· Κούριον δὲ πλη-
σίον τῆς παλαιᾶς Πλευρῶνος, ἀφ' οὗ τοὺς Πλευρω-
νίους Κουρητὰς ὀνομασθῆναί τινες ὑπέλαβον.

Ὁ δ' Εὐήνος ποταμὸς ἄρχεται μὲν ἐκ Βωμιέων 5
20 τῶν ἐν Ὀφιεῦσιν Αἰτωλικῷ ἔθνει (καθάπερ καὶ οἱ Εὐ-
ρυτᾶνες καὶ Ἀργαῖοι καὶ Κουρητὲς καὶ ἄλλοι), δεῖ δ'
οὐ διὰ τῆς Κουρητικῆς κατ' ἀρχάς, ἥτις ἐστὶν ἡ αὐτὴ
τῇ Πλευρωνίᾳ, ἀλλὰ διὰ τῆς προσεφῶς μᾶλλον παρὰ
τὴν Χαλκίδα καὶ Καλυδῶνα· εἰτ' ἀνακάμψας ἐπὶ τὰ
25 τῆς Πλευρῶνος πεδία τῆς παλαιᾶς καὶ παραλλάξας εἰς
δύσιν ἐπιστρέφει πρὸς τὰς ἐκβολὰς καὶ τὴν μεσημ-
βρίαν· ἐκαλεῖτο δὲ Λυκόρμας πρότερον· καὶ ὁ Νέσσος
ἐνταῦθα λέγεται πορθμεὺς ἀποδεδειγμένος ὑφ' Ἡρα-
κλέους ἀποθανεῖν, ἐπειδὴ πορθμεύων τὴν Διάνειραν
30 ἐπεχειρεῖ βιάσασθαι.

Καὶ Ὡλενον δὲ καὶ Πυλὴννῃν ὀνομάζει πόλεις ὁ 6
ποιητὴς Αἰτωλικάς, αὖν τὴν μὲν Ὡλενον ὁμωνύμως τῇ

Ἀχαϊκῇ λεγομένην Αἰολεῖς κατέσκαψαν, πλησίον οὖσαν τῆς νεωτέρας Πλευρώδος, τῆς δὲ χώρας ἡμφισβήτουν Ἀκαρνᾶνες· τὴν δὲ Πυλὴν νην μετενέγκαντες εἰς τοὺς ἀνώτερον τόπους ἥλλαξαν αὐτῆς καὶ τοῦνομα Πρόσχιον καλέσαντες. Ἑλλάνικος δ' οὐδὲ τὴν περὶ 5 ταύτας ἱστορίαν οἶδεν, ἀλλ' ὥς ἔτι καὶ αὐτῶν οὐσῶν ἐν τῇ ἀρχαίᾳ καταστάσει μέμνηται, τὰς δ' ὕστερον καὶ τῆς τῶν Ἡρακλειδῶν καθόδου κτισθείσας Μακυνίαν καὶ Μολύκρειαν ἐν ταῖς ἀρχαίαις καταλέγει, πλείστην εὐχέρειαν ἐπιδεικνύμενος ἐν πάσῃ σχεδὸν τι τῇ γραφῇ. 10

7 Καθόλου μὲν οὖν ταῦτα περὶ τῆς χώρας ἐστὶ τῆς τῶν Ἀκαρνάνων καὶ τῶν Αἰτωλῶν, περὶ δὲ τῆς παραλίας καὶ τῶν προκειμένων νήσων ἔτι καὶ ταῦτα προσληπτέον· ἀπὸ γὰρ τοῦ στόματος ἀρξαμένοις τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου πρῶτόν ἐστιν Ἀκαρνάνων χωρίον τὸ 15 Ἄκτιον. ὁμωνύμως δὲ λέγεται τό τε ἱερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος καὶ ἡ ἄκρα ἣ ποιοῦσα τὸ στόμα τοῦ κόλπου, ἔχουσα καὶ λιμένα ἐκτός. τοῦ δ' ἱεροῦ τετταράκοντα μὲν σταδίους ἀπέχει τὸ Ἀνακτόριον ἐν τῷ κόλπῳ ἰδρυμένον, διακοσίους δὲ καὶ τετταράκοντα ἡ Λευκάς. 20

8 Αὕτη δ' ἦν τὸ παλαιὸν μὲν χειρρόνησος τῆς Ἀκαρνάνων γῆς, καλεῖ δ' ὁ ποιητὴς αὐτὴν ἄκτὴν ἡπίροιο, τὴν περὶ αὐτὴν τῆς Ἰθάκης καὶ τῆς Κεφαλληνίας ἡπειρον 0.452 καλῶν· αὕτη δ' ἐστὶν ἡ Ἀκαρνανία· ὥστε, ὅταν φῇ ἄκτὴν ἡπίροιο, τῆς Ἀκαρνανίας ἄκτὴν δέχεσθαι δεῖ. 25 τῆς δὲ Λευκάδος ἢ τε Νήριτος, ἣν φησιν ἐλεῖν ὁ Δαέριτης „ἣ μὲν Νήριτον εἶλον ἐνκτίμενον πτολίεθρον, „ἄκτὴν ἡπίροιο, Κεφαλλήνεςσιν ἀνάσσωσαν,“ καὶ ἄς ἐν καταλόγῳ φησί „καὶ Κροκύλει' ἐνέμοντο καὶ Αἰγίλιπα „τροχηῖαν.“ Κορίνθιοι δὲ πεμφθέντες ὑπὸ Κυψέλου 30 καὶ Γόργου αὐτὴν τε κατέσχον τὴν ἄκτὴν καὶ μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου προῆλθον, καὶ ἡ τε Ἀμβρακία

συνωκίσθη καὶ Ἀνακτόριον, καὶ τῆς χειρρονήσου διο-
 ρύξαντες τὸν ἰσθμὸν ἐποίησαν νῆσον τὴν Λευκάδα,
 καὶ μετενέγκαντες τὴν Νήριτον ἐπὶ τὸν τόπον, ὃς ἦν
 ποτὲ μὲν ἰσθμὸς νῦν δὲ πορθμὸς γεφύρα ξευκτός, με-
 5 τωνόμασαν Λευκάδα, ἐπώνυμον δοκῶ μοι τοῦ Λευ-
 κάτα· πέτρα γάρ ἐστι λευκὴ τὴν χρόαν, προκειμένη
 τῆς Λευκάδος εἰς τὸ πέλαγος καὶ τὴν Κεφαλληνίαν, ὥς
 ἐντεῦθεν τοῦνομα λαβεῖν.

Ἔχει δὲ τὸ τοῦ Λευκάτα Ἀπόλλωνος ἱερὸν καὶ τὸ 9
 10 ἄλμα τὸ τοὺς ἔρωτας παύειν πεπιστευμένον· „οὗ δὴ λέ-
 „γεται πρώτη Σαπφώ“ ὥς φησιν ὁ Μένανδρος „τὸν
 „ὑπέροκτον θηρῶσα Φάων“ οἰστρῶντι πόθῳ ῥῆσαι
 „πέτρας ἀπὸ τηλεφανοῦς ἄλμα κατ' εὐχὴν σὴν, δέ-
 „σποτ' ἀναξ.“ ὁ μὲν οὖν Μένανδρος πρώτην ἀλέσθαι
 15 λέγει τὴν Σαπφώ, οἱ δ' ἔτι ἀρχαιολογικώτεροι Κέφα-
 λὸν φασιν ἐρασθέντα Πτερέλα τὸν Δηιονέως. ἦν δὲ
 καὶ πάτριον τοῖς Λευκαδίοις κατ' ἐνιαυτὸν ἐν τῇ θυσίᾳ
 τοῦ Ἀπόλλωνος ἀπὸ τῆς σκοπῆς ῥιπτεῖσθαί τινα τῶν
 ἐν αἰτίαις ὄντων ἀποτροπῆς χάριν, ἐξαπτομένων ἐξ
 20 αὐτοῦ παντοδαπῶν πτερῶν καὶ ὀρνέων ἀνακουφίζειν
 δυναμένων τῇ πτήσει τὸ ἄλμα, ὑποδέχεσθαι δὲ κάτω
 μικραῖς ἀλιάσι κύκλῳ περιεστώτας πολλοὺς καὶ περι-
 σῶζειν εἰς δύναμιν τῶν ὄρων ἕξω τὸν ἀναληφθέντα.

Ὁ δὲ τὴν Ἀλκμαιονίδα γράψας, Ἰκαρίου τοῦ Πη-
 25 νελόπης πατρὸς υἱεῖς γενέσθαι δύο, Ἀλυξέα καὶ Λευ-
 κάδιον, δυναστεῦσαι δ' ἐν τῇ Ἀκαρνανίᾳ τούτους μετὰ
 τοῦ πατρὸς· τούτων οὖν ἐπωνύμους τὰς πόλεις Ἐφο-
 ρος λέγεσθαι δοκεῖ.

Κεφαλλῆνας δὲ νῦν μὲν τοὺς ἐκ τῆς νήσου τῆς 10
 30 Κεφαλληνίας λέγουσιν, Ὅμηρος δὲ πάντας τοὺς ὑπὸ
 τῷ Ὀδυσσεῖ, ὧν εἰσι καὶ οἱ Ἀκαρνανεῖς· εἰπὼν γάρ
 „αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς ἦγε Κεφαλλῆνας, οἳ δ' Ἰθάκην εἶχον

„καὶ Νήριτον εἰνοσίφυλλον“ (τὸ ἐν ταύτῃ ὄρος ἐπιφα-
 C.453 νές, ὥς καὶ „οἱ δ' ἐκ Δουλιχίου Ἐχινάων θ' ἱερῶν“
 καὶ αὐτοῦ τοῦ Δουλιχίου τῶν Ἐχινάδων ὄντος· καὶ
 „οἱ δ' ἄρα Βουπράσιόν τε καὶ Ἥλιδα“ καὶ τοῦ Βου-
 πρασίου ἐν Ἥλιδι ὄντος· [καί] „οἱ δ' Εὐβοίαν ἔχον καὶ 5
 „Χαλκίδα τ' Εἰρέτριάν τε“ καὶ τούτων ἐν Εὐβοίᾳ οὖ-
 σων· καὶ „Τρωῆς καὶ Αὐκιοὶ καὶ Δάρδανοι“ ὥς καὶ
 ἐκείνων Τρώων ὄντων)· πλὴν μετὰ γε Νήριτον φησί
 „καὶ Κροκύλει' ἐνέμοντο καὶ Αἰγίλιπα τρηχεῖαν, οἳ τε
 „Ζάκυνθον ἔχον ἡδ' οἱ Σάμον ἀμφενέμοντο, οἳ τ' 10
 „ἡπειρον ἔχον ἡδ' ἀντιπέραι' ἐνέμοντο.“ ἡπειρον μὲν
 οὖν τὰ ἀντιπέρα τῶν νήσων βούλεται λέγειν, ἅμα τῇ
 Λευκάδι καὶ τὴν ἄλλην Ἀκαρνανίαν συμπεριλαβεῖν
 βουλόμενος, περὶ ἧς καὶ οὕτω λέγει „δῶδεκ' ἐν ἡπείρῳ
 ἀγέλαι, τόσα πῶεα μῆλων,“ τάχα τῆς Ἠπειρώτιδος τὸ 15
 παλαιὸν μέχρι δεῦρο διατεινούσης καὶ ὀνόματι κοινῇ
 ἡπείρου λεγομένης· Σάμον δὲ τὴν νῦν Κεφαλληνίαν,
 ὥς καὶ ὅταν φῇ „ἐν πορθμῷ Ἰθάκης τε Σάμοιό τε παι-
 „παλοέσσης.“ τῷ γὰρ ἐπιθέτω τὴν ὁμωνυμίαν διέ-
 σταλται, ὥς οὐκ ἐπὶ τῆς πόλεως ἀλλ' ἐπὶ τῆς νήσου τι- 20
 θεῖς τοῦνομα. τετραπόλεως γὰρ οὔσης τῆς νήσου μία
 τῶν τεττάρων ἐστὶν ἡ καὶ Σάμος καὶ Σάμη καλουμένη
 καθ' ἐκάτερον τοῦνομα, ὁμωνυμοῦσα τῇ νήσῳ. ὅταν
 δ' εἴπῃ „ὅσσοι γὰρ νήσοισιν ἐπικρατέουσιν ἄριστοι
 „Δουλιχίῳ τε Σάμῃ τε καὶ ὑλήεντι Ζακύνθῳ,“ τῶν 25
 νήσων ἀριθμὸν ποιῶν δηλὸς ἐστὶ καὶ Σάμην καλῶν
 τὴν νήσον, ἣν πρότερον Σάμον ἐκάλεσεν. Ἀπολλόδω-
 ρος δὲ τότε μὲν τῷ ἐπιθέτω λέγων διεστάλθαι τὴν ἀμ-
 φιβολίαν εἰπόντα „Σάμοιό τε παιπαλοέσσης,“ ὥς τὴν
 νήσον λέγοντα, τότε δὲ γράφεσθαι δεῖν „Δουλιχίῳ τε 30
 „Σάμῳ τε“ ἀλλὰ μὴ „Σάμῃ τε“ δηλὸς ἐστὶ τὴν μὲν
 πόλιν Σάμην καὶ Σάμον συνωνύμως ὑπολαμβάνων

ἐκφέρεσθαι, τὴν δὲ νῆσον Σάμου μόνον· ὅτι γὰρ Σάμη λέγεται ἢ πόλιν δῆλον εἶναι ἐκ τε τοῦ διαριθμούμενον τοὺς ἐξ ἐκάστης πόλεως μνηστῆρας φάναι „ἐκ δὲ Σάμης πύσυρές τε καὶ εἰκοσι φῶτες ἕασι,“ καὶ ἐκ τοῦ 5 περὶ τῆς Κτιμένης λόγου „τὴν μὲν ἐπειτα Σάμηνδ’ „ἔδοσαν.“ ἔχει δὲ ταῦτα λόγον. οὐ γὰρ εὐκρινῶς ἀπο-C.454 δίδωσιν ὁ ποιητὴς οὔτε περὶ τῆς Κεφαλληνίας οὔτε περὶ τῆς Ἰθάκης καὶ τῶν ἄλλων πλησίον τόπων, ὥστε καὶ οἱ ἐξηγούμενοι διαφέρονται καὶ οἱ ἱστοροῦντες.

- 10 *Αὐτίκα γὰρ ἐπὶ τῆς Ἰθάκης ὅταν φῇ „οἱ δ’ Ἰθά-*
κην εἶχον καὶ Νήριτον εἰνοσίφυλλον,“ ὅτι μὲν τὸ
Νήριτον ὄρος λέγει τῷ ἐπιθέτῳ δημοῖ. ἐν ἄλλοις δὲ
καὶ δημοῖς ὄρος „ναιετάω δ’ Ἰθάκην εὐδείελον· ἐν δ’
„ὄρος αὐτῇ, Νήριτον εἰνοσίφυλλον ἀριπρεπές.“ Ἰθά-
15 *κην δ’* εἶτε τὴν πόλιν εἶτε τὴν νῆσον λέγει, οὐ δῆλον
ἐν τούτῳ γε τῷ ἔπει „οἱ δ’ Ἰθάκην εἶχον καὶ Νήριτον.“
κυρίως μὲν γὰρ ἀκούων τις τὴν πόλιν δέξαιτ’ ἄν, ὥς
καὶ Ἀθήνας καὶ Λυκαβηττὸν εἰ τις λέγοι, καὶ Ῥόδον
καὶ Ἀτάβυριν, καὶ ἔτι Λακεδαιμόνα καὶ Ταῦγετον·
20 *ποιητικῶς δὲ τοῦναντίον. ἐν μέντοι τῷ „ναιετάω δ’*
„Ἰθάκην εὐδείελον· ἐν δ’ ὄρος αὐτῇ Νήριτον“ [δη-
λον]· ἐν γὰρ τῇ νήσῳ οὐκ ἐν τῇ πόλει τὸ ὄρος. ὅταν
δὲ οὕτω φῇ „ἡμεῖς ἐξ Ἰθάκης ὑπὸ Νηίου εἰλήλουθ-
μεν,“ ἄδηλον, εἶτε τὸ αὐτὸ τῷ Νηρίῳ λέγει τὸ Νή-
25 *ιον εἶτε ἕτερον ἢ ὄρος ἢ χωρίον.*

Καὶ τοῦτο δὲ δοκεῖ ὑπερναντιότητά τινα δηλοῦν. 12
 „αὐτὴ δὲ χθαμαλὴ πανυπερτάτη εἶναι ἄλλῃ κεῖται.“ χθα-
 μαλὴ μὲν γὰρ ἢ ταπεινὴ καὶ χαμηλὴ, πανυπερτάτη δὲ

25. post χωρίον : ὁ μέντοι ἀντὶ Νηρίτου γράφων Νήρικον, ἢ ἀνάπαλιν, παραπαλεῖ τελείως· τὸ μὲν γὰρ εἰνοσίφυλλον καλεῖ ὁ ποιητὴς, τὸ δ’ ἐνκείμενον ποτλίεθρον, καὶ τὸ μὲν ἐν Ἰθάκῃ, τὸ δ’ ἀκτὴν ἡπέροιο.

ἡ ὑψηλή, οἷαν διὰ πλειόνων σημαίνει, Κραναήν κα-
 λῶν· καὶ τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ τοῦ λιμένος, ,τροχηεῖαν ἀταρ-
 ,,πὸν χωρὸν ἄν' ὑλήεντα“ καὶ ,οὐ γάρ τις νήσω ἐν-
 ,,δεῖλος, οὐδ' εὐλείμων, αἷθ' ἄλλ' κεκλίεται· Ἰθάκη
 ,,δέ τε καὶ περὶ πασέων.“ ἔχει μὲν οὖν ἀπεμφάσεις τοι- 5
 αὐτάς ἢ φράσεις, ἐξηγοῦνται δὲ οὐ κακῶς· οὔτε γὰρ
 χθαμαλήν δέχονται ταπεινὴν ἐνταῦθα, ἀλλὰ πρόσχω-
 ρον τῇ ἡπείρῳ ἐγγυτάτῳ οὖσαν αὐτῆς· οὔτε πανυπερ-
 τάτην ὑψηλοτάτην ἀλλὰ πανυπερτάτην πρὸς ζόφον,
 οἷον ὑπὲρ πάσας ἐσχάτην τετραμμένην πρὸς ἄρκτον· 10
 τοῦτο γὰρ βούλεται λέγειν τὸ πρὸς ζόφον, τὸ δ' ἐναν-
 0.455τίον πρὸς νότον, ,αἶ δέ τ' ἄνευθε πρὸς ἡῶ τ' ἡέλιόν τε.“
 τὸ γὰρ ἄνευθε πόρρω καὶ χωρὶς ἔστιν, ὥς τῶν μὲν ἄλ-
 λων πρὸς νότον κεκλιμένων καὶ ἀπωτέρω τῆς ἡπείρου,
 τῆς δ' Ἰθάκης ἐγγύθεν καὶ πρὸς ἄρκτον. ὅτι δ' οὕτω 15
 λέγει τὸ νότιον μέρος καὶ ἐν τοῖσδε φανερόν, ,εἴτ' ἐπὶ
 ,,δεξι' ἴωσι, πρὸς ἡῶ τ' ἡέλιόν τε, εἴτ' ἐπ' ἀριστερὰ τοίγε,
 ,,ποτὶ ζόφον ἡερόεντα“ καὶ ἔτι μᾶλλον ἐν τοῖσδε ,ῶ φί-
 ,,λοι, οὐ γὰρ τ' ἴδμεν, ὅπη ζόφος, οὐδ' ὅπη ἡώς, οὐδ' ὅπη
 ,,ἡέλιος φασείμβροτος εἶσ' ὑπὸ γαῖαν, οὐδ' ὅπη ἀννεῖ- 20
 ,,ται.“ ἔστι μὲν γὰρ δέξασθαι τὰ τέτταρα κλίματα τὴν
 ἡῶ δεχομένους τὸ νότιον μέρος, ἔχει τέτινα τοῦτ' ἔμ-
 φασιν· ἀλλὰ βέλτιον τὸ κατὰ τὴν πάροδον τοῦ ἡλίου
 νοεῖν ἀντιτιθέμενον τῷ ἀρκτικῷ μέρει· ἐξάλλαξιν γὰρ
 τινα τῶν οὐρανίων πολλὴν βούλεται σημαίνειν ὁ λό- 25
 γος, οὐχὶ ψιλὴν ἐπίκρουψιν τῶν κλιμάτων. δεῖ γὰρ κατὰ
 πάντα συννεφεῖν καιρόν, ἅν θ' ἡμέρας ἅν τε νύκτωρ
 συμβῇ, παρακολουθεῖν· τὰ δ' οὐράνια ἐξαλλάττει ἐπὶ
 πλεόν τῳ πρὸς μεσημβρίαν μᾶλλον ἢ ἥττον παραχω-
 ρεῖν ἡμᾶς ἢ εἰς τοῦναντίον. τοῦτο δὲ οὐ δύσεως καὶ 30
 ἀνατολῆς ἐγκαλύψεις ποιεῖ (καὶ γὰρ αἰθρίας οὔσης
 συμβαίνει), ἀλλὰ μεσημβρίας καὶ ἄρκτου. μάλιστα

γὰρ ἀρκτικός ἐστὶν ὁ πόλος· τούτου δὲ κινουμένου, καὶ ποτὲ μὲν κατὰ κορυφὴν ἡμῶν γινομένου ποτὲ δὲ ὑπὸ γῆς ὄντος, καὶ οἱ ἀρκτικοὶ συμεταβάλλουσι, ποτὲ δὲ συνεκλείπουσι κατὰ τὰς τοιαύτας παραχωρήσεις, 5 ὥστε οὐκ ἂν εἰδείης ὅπου ἐστὶ τὸ ἀρκτικὸν κλίμα, οὐδ' εἰ ἀρχὴν ἐστίν· εἰ δὲ τοῦτο, οὐδὲ τούναντίον ἂν γνούς.

Κύκλος δὲ τῆς Ἰθάκης ἐστὶν ὡς ὀγδοήκοντα σταδίων. περὶ μὲν Ἰθάκης ταῦτα.

Τὴν δὲ Κεφαλληνίαν τετράπολιν οὔσαν οὕτ' αὖ- 13
10 τὴν εἶρηκε τῷ νῦν ὀνόματι οὔτε τῶν πόλεων οὐδεμίαν, πλὴν μιᾶς εἴτε Σάμης εἴτε Σάμου, ἣ νῦν μὲν οὐκέτ' ἐστίν, ἔχνη δ' αὐτῆς δείκνυται κατὰ μέσον τὸν πρὸς Ἰθάκῃ πορθμόν· οἱ δ' ἀπ' αὐτῆς Σαμαῖοι καλοῦνται· αἱ δ' ἄλλαι καὶ νῦν εἶσιν ἔτι μικραὶ πόλεις τινές, [Πα- 15 λείς] Πρωῖνησος καὶ Κράνιοι. ἐφ' ἡμῶν δὲ καὶ ἄλλην προσέκτισε Γάιος Ἀντώνιος, ὁ θεῖος Μάρκου Ἀντωνίου, ἡνίκα φυγὰς γενόμενος μετὰ τὴν ὑπατείαν, ἣν συνῆρξε Κικέρωνι τῷ ῥήτορι, ἐν τῇ Κεφαλληνίᾳ διέτριψε καὶ τὴν ὅλην νῆσον ὑπήκοον ἔσχευ ὡς ἰδίον 20 κτῆμα· οὐκ ἔφθη μέντοι συνοικίσας, ἀλλὰ καθόδου τυχῶν πρὸς ἄλλοις μείξουσιν ὧν κατέλυσε τὸν βίον.

Οὐκ ᾔκνησαν δέ τινες τὴν Κεφαλληνίαν τὴν αὖ- 14
τὴν τῷ Δουλιχίῳ φάναι, οἱ δὲ τῇ Τάφῳ, καὶ Ταφίους C.456
τοὺς Κεφαλληνίους, τοὺς δ' αὐτοὺς καὶ Τηλεβόας, καὶ 25 τὸν Ἀμφιπρύωνα δεῦρο στρατεῦσαι μετὰ Κεφάλου τοῦ Ἀχιονέως ἐξ Ἀθηναίων φυγάδος παραληφθέντος, κατασχόντα δὲ τὴν νῆσον παραδοῦναι τῷ Κεφάλῳ, καὶ ταύτην μὲν ἐπάνυμον ἐκείνου γενέσθαι τὰς δὲ πόλεις τῶν παιδῶν αὐτοῦ. ταῦτα δ' οὐχ ὁμηρικά· οἱ μὲν 30 γὰρ Κεφαλλῆνες ὑπὸ Ὀδυσσεὶ καὶ Λαέρτῃ, ἣ δὲ Τάφος ὑπὸ τῷ Μέντῃ „Μέντης Ἀγχιάλοιο δαΐφρονος εὐχομαι „εἶναι υἱός, ἀτὰρ Ταφίοισι φιληρέτμοισιν ἀνάσσω.“

καλεῖται δὲ νῦν Ταφριάς ἢ Τάφος. οὐδ' Ἑλλάνικος ὁμη-
 ρικὸς Δουλίχιον τὴν Κεφαλληνίαν λέγων. τὸ μὲν γὰρ
 ὑπὸ Μέργητι εἰρηται καὶ αἱ λοιπαὶ Ἐχινάδες, οἳ τε ἐνοι-
 κοῦντες Ἐπειοὶ ἐξ Ἥλιδος ἀφιγμένοι· διόπερ καὶ τὸν
 Ὄτον τὸν Κυλλήνιον „Φυλείδω ἔταρον μεγαθύμων 5
 „ἀρχὸν Ἐπειῶν“ καλεῖ. „αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς ἦγε Κεφαλ-
 „λήνας μεγαθύμους.“ οὐτ' οὖν Δουλίχιον ἢ Κεφαλ-
 ληνία καθ' Ὅμηρον οὔτε τῆς Κεφαλληνίας τὸ Δουλί-
 χιον, ὥς Ἀνδρῶν φησί· τὸ μὲν γὰρ Ἐπειοὶ κατεῖχον,
 τὴν δὲ Κεφαλληνίαν ὅλην Κεφαλλῆνες ὑπὸ Ὀδυσσεῖ, 10
 οἳ δ' ὑπὸ Μέργητι. οὐδὲ Παλεῖς Δουλίχιον ὑφ' Ὀμήρου
 λέγονται, ὥς γράφει Φερεκύδης. μάλιστα δ' ἐναντι-
 οὔται Ὀμήρῳ ὁ τὴν Κεφαλληνίαν τὴν αὐτὴν τῷ Δου-
 λιχίῳ λέγων, εἶπερ τῶν μνηστήρων „ἐκ μὲν Δουλιχίῳ
 „δύω καὶ πεντήκοντα“ ἦσαν, ἐκ δὲ Σάμης „πίσυρές τε 15
 „καὶ εἰκοσιν.“ οὐ γὰρ τοῦτ' ἂν εἴη λέγων, ἐξ ὅλης μὲν
 τόσους ἐκ δὲ μιᾶς τῶν τεττάρων παρὰ δύο τοὺς ἡμί-
 σεις. εἰ δ' ἄρα τοῦτο δώσει τις, ἐρησόμεθα τίς ἂν εἴη ἢ
 Σάμη, ὅταν οὕτω φῇ „Δουλίχιόν τε Σάμην τ' ἦδ'
 „ὕληντα Ζάκυνθον.“

20

- 15 Κεῖται δ' ἡ Κεφαλληνία κατὰ Ἀκαρνανίαν, διέ-
 χουσα τοῦ Λευκάτα περὶ πεντήκοντα (οἳ δὲ τετταρά-
 κοντά φασι) σταδίου, τοῦ δὲ Χελωνάτα περὶ ὀγδοή-
 κοντα. αὐτὴ δ' ἐστὶν ὥς τριακοσίων τὴν περίμετρον,
 μακρὰ δ' ἀνήκουσα πρὸς εὖρον, ὀρεινὴ· μέγιστον δ' 25
 ὄρος ἐν αὐτῇ ἐν ᾧ τὸ Διὸς Αἰνησίλου ἱερόν· καθ' ὃ δὲ
 στενωπάτη ἐστὶν ἡ νῆσος, ταπεινὸν ἰσθμὸν ποιεῖ ὥσθ'
 ὑπερκλύζεσθαι πολλάκις ἐκ θαλάττης εἰς θάλατταν·
 πλησίον δ' εἰσὶ τῶν στενωῶν ἐν κόλπῳ Κράνιοι τε καὶ
 Παλεῖς.

30

Μεταξὺ δὲ τῆς Ἰθάκης καὶ τῆς Κεφαλληνίας ἡ 16
 Ἀστερία νησίον (Ἀστερίς δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγεται)
 ἦν ὁ μὲν Σκηΐσιος μὴ μένειν τοιαύτην οἶαν φησὶν ὁ
 ποιητῆς „λιμένες δ' ἐνὶ ναύλοχοι αὐτῇ ἀμφίδυμοι.“ ὁ
 5 δὲ Ἀπολλόδωρος μένειν καὶ νῦν, καὶ πολίχνην λέγει C. 457
 ἐν αὐτῇ Ἀλαλκομενᾶς τὸ ἐπ' αὐτῷ τῷ ἰσθμῷ κείμενον.

Καλεῖ δ' ὁ ποιητῆς Σάμον καὶ τὴν Θρακίαν, ἣν 17
 νῦν Σαμοθράκην καλοῦμεν. τὴν δ' Ἰωνικὴν οἶδε μὲν,
 ὥς εἰκός· καὶ γὰρ τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰδέναι φαί-
 10 νεται· οὐκ [ἀν] ἀντιδιέστειλε δὲ τὴν ὁμωνυμίαν, περὶ
 τῆς Σαμοθράκης λέγων, τοτὲ μὲν τῷ ἐπιθέτῳ „ὑψοῦ
 „ἐπ' ἀκροτάτης κορυφῆς Σάμου ὑληέσσης, Θρηκίης“
 τοτὲ δὲ τῇ συζυγίᾳ τῶν πλησίον νήσων „ἐς Σάμον ἔς
 „τ' Ἴμβρον καὶ Αἴμνον ἀμιχθαλόεσσαν“ καὶ πάλιν
 15 „μεσσηγύς τε Σάμοιο καὶ Ἴμβρου παιπαλοέσσης.“ ἥδει
 μὲν οὖν, οὐκ ὠνόμακε δ' αὐτήν· οὐδ' ἐκαλεῖτο τῷ
 αὐτῷ ὀνόματι πρότερον, ἀλλὰ Μελάμφυλλος, εἴτ' Ἀν-
 θεμῖς, εἶτα Παρθενία ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Παρθε-
 νίου, ὃς Ἴμβρασος μετωνομάσθη. ἐπεὶ οὖν κατὰ τὰ
 20 Τρωικὰ Σάμος μὲν καὶ ἡ Κεφαλληνία ἐκαλεῖτο καὶ ἡ
 Σαμοθράκη (οὐ γὰρ ἂν Ἑκάβη εἰσήγετο λέγουσα ὅτι
 τοὺς παῖδας αὐτῆς „πέρασχ' ὅν κε λάβοι ἐς Σάμον ἔς
 „τ' Ἴμβρον“), Ἰωνικὴ δ' οὐκ ἀπώκιστό πω, δῆλον ὅτι
 ἀπὸ τῶν προτέρων τινὸς τὴν ὁμωνυμίαν ἔσχευ· ἐξ ὧν
 25 κἀκεῖνο δῆλον, ὅτι παρὰ τὴν ἀρχαίαν ἱστορίαν ὃ λέ-
 γουσιν οἱ φήσαντες, μετὰ τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν καὶ
 τὴν Τεμβρίωνος παρουσίαν ἀποίκους ἐλθεῖν ἐκ Σάμου
 καὶ ὀνομάσαι Σάμον τὴν Σαμοθράκην, ὥς οἱ Σάμοιο
 τοῦτ' ἐπλάσαντο δόξης χάριν. πιθανώτεροι δ' εἰσὶν
 30 [οἱ] ἀπὸ τοῦ Σάμου καλεῖσθαι τὰ ὕψη φήσαντες εὐρη-
 σθαι τοῦτο τοῦνομα τὴν νῆσον· ἐντεῦθεν γὰρ „ἐφαί-
 „νετο πᾶσα μὲν Ἰδη, φαίνεται δὲ Πριάμοιο πόλις καὶ

„νῆες Ἀχαιῶν.“ τινὲς δὲ Σάμον καλεῖσθαι φασιν ἀπὸ Σαῖων, τῶν οἰκούντων Θρακῶν πρότερον, οἳ καὶ τὴν ἡπειρον ἔσχον τὴν προσεχῆ, εἴτε οἱ αὐτοὶ τοῖς Σαπαίοις ὄντες ἢ τοῖς Σιντοῖς, οὓς Σίντιας καλεῖ ὁ ποιητής, εἰθ' ἕτεροι. μέμνηται δὲ τῶν Σαῖων Ἀρχίλοχος „ἀσπί-
 5 „δα μὲν Σαῖων τίς ἀνείλετο, τὴν παρὰ θάμνω ἔντος „ἀμώμητον κάλλιπον οὐκ ἐθέλων.“

18 Δοιπὴ δ' ἐστὶ τῶν ὑπὸ τῷ Ὀδυσσεὶ τεταγμένων νήσων ἢ Ζάκυνθος, μικρῷ πρὸς ἐσπέραν μᾶλλον τῆς
 458 Κεφαλληνίας κεκλιμένη τῆς Πελοποννήσου, συνά- 10
 πτουςα δ' αὐτῇ πλέον. ἔστι δ' ὁ κύκλος τῆς Ζακύνθου σταδίων ἑκατὸν ἐξήκοντα· διέχει δὲ καὶ τῆς Κεφαλλη-
 νίας ὅσον ἐξήκοντα σταδίους, ὑλώδης μὲν εὐκαρπος δέ· καὶ ἡ πόλις ἀξιόλογος, ὁμώνυμος. ἐντεῦθεν εἰς
 Ἑσπερίδας τῆς Αἰβύης στάδιοι τρισχίλιοι ἑξακόσιοι. 15

19 Καὶ ταύτης δὲ καὶ τῆς Κεφαλληνίας πρὸς ἑω τὰς Ἐχινάδας ἰδρῦσθαι νήσους συμβέβηκεν, ὧν τό τε Δου-
 λίχιόν ἐστι (καλοῦσι δὲ νῦν Δολίχαν) καὶ αἱ Ὀξεῖαι κα-
 λούμεναι, ἃς Θοᾶς ὁ ποιητής εἶπε· καὶ ἡ μὲν Δολίχα
 κεῖται κατὰ Οἰνιάδας καὶ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἀχελώου, 20
 διέχουσα Ἀράξου τῆς τῶν Ἠλείων ἄκρας ἑκατόν, αἱ
 λοιπαὶ δ' Ἐχινάδες (πλείους δ' εἰσί, πᾶσαι λυπραὶ καὶ
 τραχεῖαι) πρὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Ἀχελώου, πεντεκαίδεκα
 σταδίους ἀφρεστῶσα ἢ ἀπωτάτω, ἢ δ' ἐγγυτάτω πέντε,
 πελαγίζουσαι πρότερον, ἀλλ' ἢ χοῦς τὰς μὲν ἐξηπεῖ- 25
 ρωκεν αὐτῶν ἡδη, τὰς δὲ μέλλει πολλὴ καταφερομένη·
 ἥπερ καὶ τὴν Παραχελωΐτιν καλουμένην χώραν, ἣν
 ὁ ποταμὸς ἐπικλύζει, περιμάχητον ἐποίει τὸ παλαιὸν
 τοὺς ὄρους συγγέουσα αἰετὸς τοὺς ἀποδεικνυμένους τοῖς
 Ἀκαρναῶσι καὶ τοῖς Αἰτωλοῖς· ἐκρίνοντο γὰρ τοῖς ὅπλοις 30

10. ante τῆς· καὶ 21. ante αἱ· καὶ 23. ante πρὸ· καὶ

οὐκ ἔχοντες διαιτητάς, ἐνίκων δ' οἱ πλέον δυνάμενοι·
 ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ μῦθος ἐπλάσθη τις, ὥς Ἡρακλέους
 καταπολεμήσαντος τὸν Ἀχελῶον καὶ ἐνεγκαμένου τῆς
 νίκης ἄθλον τὸν Δηιανείρας γάμον τῆς Οἰνέως θυ-
 5 γατρός, ἣν πεποίηκε Σοφοκλῆς τοιαῦτα λέγουσαν
 „μνηστὴρ γὰρ ἦν μοι ποταμός, Ἀχελῶον λέγω, ὃς μ'
 „ἐν τρισὶν μορφαῖσιν ἐξήτει πατρός, φοιτῶν ἐναργῆς
 „ταῦρος, ἄλλοτ' αἰόλος δράκων ἐλκτός, ἄλλοτ' ἀν-
 δρεῖω κύτει βούπρωρος.“ προστιθέασι δ' ἐνιοι καὶ
 10 τὸ τῆς Ἀμαλθείας τοῦτ' εἶναι λέγοντες κέρας, ὃ ἀπέ-
 κλασεν ὁ Ἡρακλῆς τοῦ Ἀχελῶου καὶ ἔδωκεν Οἰνεῖ τῶν
 γάμων ἔδνον· οἱ δ' εἰκάζοντες ἐξ αὐτῶν τάληθες ταύ-
 ρω μὲν εἰκότα λέγεσθαι τὸν Ἀχελῶόν φασι, καθάπερ
 καὶ τοὺς ἄλλους ποταμούς, ἀπὸ τε τῶν ἡχων καὶ τῶν
 15 κατὰ τὰ ρεῖθρα καμπῶν, ἃς καλοῦσι κέρατα, δράκοντι
 δὲ διὰ τὸ μῆκος καὶ τὴν σκολιότητα, βούπρωρον δὲ διὰ
 τὴν αὐτὴν αἰτίαν δι' ἣν καὶ ταυρωπόν· τὸν Ἡρακλέα
 δὲ καὶ ἄλλως εὐεργετικὸν ὄντα καὶ τῷ Οἰνεῖ κηδεύ-
 σοντα παραχῶμασί τε καὶ διοχετείαις βιάσασθαι τὸν
 20 ποταμὸν πλημελῶς ῥέοντα καὶ πολλὴν τῆς Παραχε-C.459
 λωίτιδος ἀναψύξαι χαριζόμενον τῷ Οἰνεῖ· καὶ τοῦτ'
 εἶναι τὸ τῆς Ἀμαλθείας κέρας. τῶν μὲν οὖν Ἐχινάδων
 καὶ τῶν Ὀξειῶν κατὰ τὰ Τρωικὰ Μέρητα ἄρχειν φησὶν
 Ὅμηρος „ὃν τίκτε Διὶ φίλος ἱππότη Φυλεὺς, ὃς ποτε
 25 „Δουλίχιόνδ' ἀπενάσσαστο, πατρὶ χολωθεῖς.“ πατὴρ δ'
 ἦν Αὐγέας ὁ τῆς Ἠλείας καὶ τῶν Ἐπειῶν ἄρχων· ὥστ'
 Ἐπειοὶ τὰς νήσους ταύτας εἶχον οἱ συνεξάραντες εἰς τὸ
 Δουλίχιον τῷ Φυλεῖ.

Αἱ δὲ τῶν Ταφίων νῆσοι, πρότερον δὲ Τηλεβοῶν, 20
 30 ὧν ἦν καὶ ἡ Τάφος νῦν δὲ Ταφιάς καλουμένη, χωρὶς
 ἦσαν τούτων οὐ τοῖς διαστήμασιν (ἐγγὺς γὰρ κεῖνται)
 ἀλλὰ ὑφ' ἐτέροις ἡγεμόσι ταττόμεναι, Ταφίοις καὶ

Τηλεβόαις· πρότερον μὲν οὖν Ἀμφιτρύων ἐπιστρα-
τεύσας αὐτοῖς μετὰ Κεφάλου τοῦ Διονέως ἐξ Ἀθη-
νῶν φυγάδος, ἐκείνῳ τὴν ἀρχὴν παρέδωκεν αὐτῶν·
ὁ δὲ ποιητὴς ὑπὸ Μέντῃ τετάχθαι φησὶ ληστὰς καλῶν
αὐτούς, καθάπερ καὶ τοὺς Τηλεβόας ἅπαντάς φασι. 5
τὰ μὲν περὶ τὰς νήσους τὰς πρὸ τῆς Ἀκαρνανίας ταῦτα.

- 21 Μεταξὺ δὲ Λευκάδος καὶ τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου
λιμνοθάλαττά ἐστι Μυρτούντιον λεγομένη. ἀπὸ δὲ
Λευκάδος ἐξῆς Πάλαιρος καὶ Ἀλυζία τῆς Ἀκαρνανίας
εἰσὶ πόλεις, ὧν ἡ Ἀλυζία πεντεκαίδεκα ἀπὸ θαλάττης 10
διέχει σταδίους, καθ' ἣν ἐστι λιμὴν Ἡρακλέους ἱερὸς
καὶ τέμενος, ἐξ οὗ τοὺς Ἡρακλέους ἄθλους, ἔργα Ἀν-
σίππου, μετήνεγκεν εἰς Ῥώμην τῶν ἡγεμόνων τις,
παρὰ τόπον κειμένους διὰ τὴν ἐρημίαν. εἶτα ἄκρα Κρι-
θώτῃ καὶ [αἰ] Ἐχινάδες καὶ πόλις Ἀστακός, ὁμώνυμος 15
τῇ περὶ Νικομήδειαν καὶ τὸν Ἀστακηνὸν κόλπον (καὶ
ἡ Κριθώτῃ δ' ὁμώνυμος πολίχνη τῶν ἐν τῇ Θρακίᾳ
Χερρονήσῳ)· πάντα δ' εὐλίμενα τὰ μεταξὺ· εἶτ' Οἶ-
νιαδαὶ καὶ ὁ Ἀχελῷος· εἶτα λίμνη τῶν Οἰνιαδῶν Με-
λίτῃ καλουμένη, μῆκος μὲν ἔχουσα τριάκοντα σταδίων 20
πλάτος δὲ εἴκοσι, καὶ ἄλλη Κυνία διπλασία ταύτης
καὶ μῆκος καὶ πλάτος, τρίτῃ δ' Οὐρία πολλῷ τούτων
μικροτέρα· ἡ μὲν οὖν Κυνία καὶ ἐκδίδωσιν εἰς τὴν θά-
λατταν, αἱ λοιπαὶ δ' ὑπέρκεινται ὅσον ἡμιστάδιον·
εἰθ' ὁ Εὐῆνος, εἰς ὃν ἀπὸ τοῦ Ἀκτίου στάδιοι ἑξακό- 25
σιοι ἑβδομήκοντα· μετὰ δὲ τὸν Εὐῆνον τὸ ὄρος ἡ Χαλ-
κίς, ἣν Χαλκίαν εἶρηκεν Ἀρτεμίδωρος· εἰθ' ἡ Πλευρών,
εἰθ' ἡ Ἀλίκυρνα κόμη, ἥς ὑπέρκειται Καλυδὼν ἐν τῇ
μεσογαίᾳ σταδίοις τριάκοντα· περὶ δὲ τὴν Καλυδωνά
ἐστι τὸ τοῦ Λαφρίου Ἀπόλλωνος ἱερὸν· εἰθ' ὁ Ταφιασ- 30

σὸς τὸ ὄρος, εἶτα Μακυνία πόλις, εἶτα Μολύκρεια καὶ C.460
 πλησίον τὸ Ἀντίρριον τὸ τῆς Αἰτωλίας ὄριον καὶ τῆς
 Λοκρίδος, εἰς δ' ἀπὸ τοῦ Εὐήνου στάδιοι περὶ ἑκατὸν εἰ-
 κοσιν. Ἀρτεμίδωρος μὲν [οὐχ] οὕτω περὶ τῆς εἴτε Χαλ-
 5 κίδος εἴτε Χαλκίας τοῦ ὄρους, μεταξὺ τοῦ Ἀχελώου καὶ
 τῆς Πλευρώνος ἰδρύων αὐτήν, Ἀπολλόδωρος δέ, ὡς
 πρότερον εἶπον, ὑπὲρ τῆς Μολυκρείας καὶ τὴν Χαλ-
 κίδα καὶ τὸν Ταφιασσόν· καὶ τὴν δὲ Καλυδῶνα με-
 ταξὺ ἰδρυῖσθαι φησι τῆς τε Πλευρώνος καὶ τῆς Χαλκί-
 10 δος· εἰ μὴ ἄρα ἕτερον θρ' ἔον τὸ πρὸς Πλευρῶνι ὄρος
 Χαλκίαν καλούμενον, ἕτερον δὲ τὴν Χαλκίδα τὴν πρὸς
 Μολυκρείᾳ. ἔστι δέ τις καὶ πρὸς τῇ Καλυδῶνι λί-
 μνη μεγάλη καὶ εὖοφος, ἣν ἔχουσιν οἱ ἐν Πάτραις Ῥω-
 μαῖοι.

15 Τῆς δὲ μεσογαίας κατὰ μὲν τὴν Ἀκαρνανίαν Ἐρυ- 22
 σιχαίους τινάς φησιν Ἀπολλόδωρος λέγεσθαι, ὧν Ἀλ-
 κμᾶν μέμνηται „οὐδ' Ἐρυσιχαῖος, οὐδὲ ποιμήν, ἀλλὰ
 „Σαρδίων ἀπ' ἀκρᾶν.“ κατὰ δὲ τὴν Αἰτωλίαν ἦν Ὠλε-
 νος, ἥς ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ μέμνηται Ὀμηρος,
 20 ἔχνη δ' αὐτῆς λείπεται μόνον ἐγγὺς τῆς Πλευρώνος
 ὑπὸ τῷ Ἀρακύνθῳ· ἦν δὲ καὶ Ἀνσιμάχεια πλησίον,
 ἠφανισμένη καὶ αὐτή, κειμένη πρὸς τῇ λίμνῃ τῇ νῦν
 μὲν Ἀνσιμαχείᾳ πρότερον δ' Ἰθρᾶ, μεταξὺ Πλευρῶ-
 νος καὶ Ἀρσινόης πόλεως, ἣ κώμη μὲν ἦν πρότερον κα-
 25 λουμένη Κωνώπα, κτίσμα δ' ὑπῆρξεν Ἀρσινόης τῆς
 Πτολεμαίου τοῦ δευτέρου γυναικὸς ἅμα καὶ ἀδελφῆς,
 εὐφυῶς ἐπικειμένη πῶς τῇ τοῦ Ἀχελώου διαβάσει·
 παραπλήσιον δέ τι καὶ ἡ Πυλὴνῃ τῷ Ὠλένῳ πέπονθεν.
 ὅταν δὲ φῇ τὴν Καλυδῶνα αἰπειάν τε καὶ πετρήεσσαν,
 30 ἀπὸ τῆς χώρας δεκτέον· εἴρηται γὰρ ὅτι τὴν χώραν

δίχα διελόντες τὴν μὲν ὄρεινὴν καὶ ἐπίκρητον τῇ Καλυδῶνι προσένειμαν, τὴν πεδιάδα δὲ τῇ Πλευρῶνι.

23 Νυνὶ μὲν οὖν ἐκπεπόνηται καὶ ἀπηγόρευκεν ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων ἢ τ' Ἀκαρνανία καὶ Αἰτωλοί, καθάπερ καὶ πολλὰ τῶν ἄλλων ἐθνῶν· πλεῖστον μὲν- 5 τοι χρόνον συνέμειναν Αἰτωλοὶ μετὰ τῶν Ἀκαρνανῶν πρὸς τε τοὺς Μακεδόνας καὶ τοὺς ἄλλους Ἕλληνας, ὅστατα δὲ καὶ πρὸς Ῥωμαίους περὶ τῆς αὐτονομίας ἀγωνιζόμενοι. ἐπεὶ δὲ καὶ Ὅμηρος αὐτῶν ἐπὶ πολὺ μέμνηται καὶ οἱ ἄλλοι ποιηταὶ τε καὶ συγγραφεῖς, τὰ μὲν 10 εὐσήμεως τε καὶ ὁμολογουμένως, τὰ δ' ἤττον γνωρίμως (καθάπερ τοῦτο καὶ ἐν τοῖς ἤδη λεχθεῖσι περὶ αὐτῶν ἀποδεδείκται), προσληπτέον καὶ τῶν παλαιοτέρων τινὰ τῶν ἀρχῆς ἐχόντων τάξιν ἢ διαπορουμένων.

Σ.461
24 Εὐθύς ἐπὶ τῆς Ἀκαρνανίας ὅτι μὲν αὐτὴν ὁ Λαέρ- 15 της καὶ οἱ Κεφαλλῆνες κατεκτήσαντο εἰρηται ἡμῖν, τίνων δὲ κατεχόντων πρότερον πολλοὶ μὲν εἰρήκασιν· οὐχ ὁμολογούμενα δὲ εἰπόντων ἐπιφανῇ δέ, ἀπολείπε- ται τις λόγος ἡμῖν διαιτητικὸς περὶ αὐτῶν. φασὶ γὰρ τοὺς Ταφίους τε καὶ Τηλεβόας λεγομένους οἰκεῖν τὴν 20 Ἀκαρνανίαν πρότερον, καὶ τὸν ἡγεμόνα αὐτῶν Κέφαλον τὸν κατασταθέντα ὑπὸ Ἀμφιτρύωνος κύριον τῶν περὶ τὴν Τάφον νήσων κυριεῦσαι καὶ ταύτης τῆς χώ- ρας· ἐντεῦθεν δὲ καὶ τὸ ἀπὸ τοῦ Λευκάτα νομιζόμε- νον ἄλμα τούτῳ πρώτῳ προσμυθεύουσιν, ὥς προεί- 25 ρηται. ὁ δὲ ποιητὴς ὅτι μὲν ἤρχον οἱ Τάφιοι τῶν Ἀκαρνανῶν πρὶν ἢ τοὺς Κεφαλλῆνας καὶ τὸν Λαέρτην ἐπελθεῖν οὐ λέγει, διότι δ' ἦσαν φίλοι τοῖς Ἰθακησί- οῖς λέγει, ὥστ' ἢ οὐδ' ὅλως ἐπῆρξαν τῶν τόπων κατ' αὐτόν, ἢ ἐκόντες παρεχώρησαν ἢ καὶ σύνοικοι ἐγέ- 30 νοντο. φαίνονται δὲ καὶ ἐκ Λακεδαιμονός τινες ἐποι- κῆσαι τὴν Ἀκαρνανίαν, οἱ μετ' Ἰκαρίου τοῦ Πηνελό-

πης πατρός· καὶ γὰρ τοῦτον καὶ τοὺς ἀδελφούς αὐτῆς
 ζῶντας παραδίδωσιν ὁ ποιητὴς κατὰ τὴν Ὀδύσσειαν
 „οἱ πατὴρ μὲν ἐς οἶκον ἀπερρίγασι νέεσθαι Ἰκαρίου,
 „ὥς κ' αὐτὸς ἐδυνάσαιο θυγάτρα.“ καὶ περὶ τῶν
 5 ἀδελφῶν „ἤδη γὰρ ῥα πατήρ τε κασίγνητοί τε κέλου-
 „ται Εὐρυμάχῳ γήμασθαι.“ οὔτε γὰρ ἐν Λακεδαιμόνι
 πιθανὸν αὐτοὺς οἰκεῖν (οὐ γὰρ ἂν ὁ Τηλέμαχος παρὰ
 Μενελάῳ κατήγετο ἀφιγμένος ἐκεῖσε), οὔτ' ἄλλην οἰ-
 κησιν παρειλήφμεν αὐτῶν. φασὶ δὲ Τυνδάρεων καὶ
 10 τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ τὸν Ἰκάριον ἐκπεσόντας ὑπὸ Ἰπ-
 ποκόωντος τῆς οἰκείας ἐλθεῖν παρὰ Θέστιον τὸν τῶν
 Πλευρωνίων ἄρχοντα, καὶ συγκατακτῆσασθαι τὴν πέ-
 ραν τοῦ Ἀχελώου πολλὴν ἐπὶ μέρει· τὸν μὲν οὖν Τυν-
 δάρεων ἐπανελθεῖν οἰκαδε γήμαντα Λήδαν τὴν τοῦ
 15 Θεστίου θυγατέρα, τὸν δ' Ἰκάριον ὑπομεῖναι τῆς Ἀκαρ-
 νανίας ἔχοντα μέρος, καὶ τεκνοποιήσασθαι τὴν τε Πη-
 νελόπην ἐκ Πολυκάστης τῆς Λυγαίου θυγατρὸς καὶ
 τοὺς ἀδελφούς αὐτῆς. ἡμεῖς μὲν οὖν ἀπεδείξαμεν ἐν
 τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν καὶ τοὺς Ἀκαρνανας καταριθ-
 20 μουμένους καὶ μετασχόντας τῆς ἐπὶ Ἴλιον στρατείας,
 ἐν οἷς κατωνομάζοντο οἳ τε τὴν ἀκτὴν οἰκοῦντες καὶ
 ἔτι „οἳ τ' ἤπειρον ἔχον ἢ δ' ἀντιπέραί ἐνέμοντο.“ οὔτε
 δ' ἡ ἤπειρος Ἀκαρνανία ὠνομάζετό πω οὐδ' ἡ ἀκτὴ
 Λευκάς.

25 Ἐφορος δ' οὗ φησι συστρατεῦσαι· Ἀλκμέωνα γὰρ ^{C.462}
 τὸν Ἀμφιάρεω στρατεύσαντα μετὰ Διομήδους καὶ τῶν ²⁵
 ἄλλων Ἐπιγόνων καὶ κατορθώσαντα τὸν πρὸς Θηβαί-
 ουσ πόλεμον συνελθεῖν Διομήδει καὶ τιμωρήσασθαι
 μετ' αὐτοῦ τοὺς Οἰνέως ἐχθρούς, παραδόντα δ' ἐκεί-
 30 νοις τὴν Αἰτωλίαν αὐτὸν εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν παρελ-
 θεῖν καὶ ταύτην καταστρέφασθαι. Ἀγαμέμνονα δ' ἐν
 τούτῳ τοῖς Ἀργείοις ἐπιθέμενον κρατῆσαι ῥαδίως, τῶν

πλείστων τοῖς περὶ Διομήδῃ συνακολουθησάντων. μικρὸν δ' ὕστερον ἐπιπεσούσης τῆς ἐπ' Ἴλιον ἐξόδου, δει-
 σαντα μὴ ἀπόντος αὐτοῦ κατὰ τὴν στρατείαν ἐπανελ-
 θόντες οἴκαδε οἱ περὶ τὸν Διομήδῃ (καὶ γὰρ ἀκούεσθαι
 μεγάλην περὶ αὐτὸν συνεστραμμένην δύναμιν) κατὰ- 5
 σχοιεν τὴν μάλιστα προσήκουσαν αὐτοῖς ἀρχήν (τὸν
 μὲν γὰρ Ἀδράστου τὸν δὲ τοῦ πατρὸς εἶναι κληρονό-
 μον), ταῦτα δὴ διανοηθέντα καλεῖν αὐτοὺς ἐπὶ τε τὴν
 τοῦ Ἀργου ἀπόληψιν καὶ τὴν κοινωνίαν τοῦ πολέμου·
 τὸν μὲν οὖν Διομήδῃ πεισθέντα μετασχεῖν τῆς στρα- 10
 τείας, τὸν δὲ Ἀλκμέωνα ἀγανακτοῦντα μὴ φροντίσαι·
 διὰ δὲ τοῦτο μηδὲ κοινωνῆσαι τῆς στρατείας μόνους
 τοὺς Ἀκαρναῖνας τοῖς Ἕλλησι· τούτοις δ', ὥς εἰκός,
 τοῖς λόγοις ἐπακολουθήσαντες οἱ Ἀκαρναῖνες σοφί-
 σασθαι λέγονται Ῥωμαίους καὶ τὴν αὐτονομίαν παρ' 15
 αὐτῶν ἐξανύσασθαι, λέγοντες ὥς οὐ μετὰσχοιεν μό-
 νοι τῆς ἐπὶ τοὺς προγόνους τοὺς ἐκείνων στρατείας·
 οὔτε γὰρ ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ φράζονται οὔτε
 ἰδίᾳ· οὐδὲ γὰρ ὅλως τοῦνομα τοῦτ' ἐμφέροιο ἐν τοῖς
 ἔπεσιν.

20

26 Ὁ μὲν οὖν Ἐφορος πρὸ τῶν Τρωικῶν ἤδη τὴν
 Ἀκαρνανίαν ὑπὸ τῷ Ἀλκμέωνι ποιήσας, τό τε Ἀργος τὸ
 Ἀμφιλοχικὸν ἐκείνου κτίσμα ἀποφαίνει, καὶ τὴν Ἀκαρ-
 νανίαν ὠνομάσθαι φησὶν ἀπὸ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ Ἀκαρ-
 νᾶνος, Ἀμφιλόχους δὲ ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ Ἀμφιλόχου· 25
 ὥστε ἐκπίπτει εἰς τὰ παρὰ τὴν ὁμηρικὴν ἱστορίαν λεγό-
 μενα. Θουκυδίδης δὲ καὶ ἄλλοι τὸν Ἀμφίλοχον ἀπὸ τῆς
 στρατείας τῆς Τρωικῆς ἐπανιόντα, οὐκ ἀρεσκόμενον
 τοῖς ἐν Ἀργεῖ, ταύτην οἰκῆσαι φασὶ τὴν χώραν, οἱ μὲν
 κατὰ διαδοχὴν ἦκοντα τῆς τοῦ ἀδελφοῦ δυναστείας, οἱ 30
 δ' ἄλλως. καὶ ἰδίᾳ μὲν περὶ Ἀκαρνανῶν ταῦτα λέγοιτ'
 ἄν, κοινῇ δ' ὅσα καὶ τοῖς Αἰτωλικοῖς ἐπιπλέκεται νῦν

ἐροῦμεν, τὰ Αἰτωλικά λέγοντες ἐφεξῆς ὅσα προσλαβεῖν τοῖς εἰρημένοις ἔγνωμεν.

Τοὺς δὲ Κουρήτας τῶν μὲν Ἀκαρναῶσι τῶν δ' Αἰ- 3
τωλοῖς προσνεμόντων, καὶ τῶν μὲν ἐκ Κρήτης τῶν δ'
5 ἐξ Εὐβοίας τὸ γένος εἶναι φασκόντων, ἐπειδὴ καὶ Ὀμη-
ρος αὐτῶν μέμνηται, τὰ παρ' ἐκείνου πρῶτον ἐπισκε- C.463
πτέον. οἴονται δ' αὐτὸν λέγειν Αἰτωλοὺς μᾶλλον ἢ
Ἀκαρναῶνας, εἶπερ οἱ Πορθαονίδαι ἦσαν „Ἀργίος ἡδὲ
„Μέλας, τρίτατος δ' ἦν ἱππότης Οἰνεύς· ὥκεον δ' ἐν
10 „Πλευρῶνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι.“ αὐταὶ δ' εἰδὼν
Αἰτωλικά πόλεις ἀμφοτέραι καὶ φέρονται ἐν τῷ Αἰτω-
λικῷ καταλόγῳ ὥστε, ἐπεὶ τὴν Πλευρῶνα οἰκοῦντες
φαίνονται καὶ κατ' αὐτὸν οἱ Κουρήτες, Αἰτωλοὶ ἂν
εἶεν. οἱ δ' ἀντιλέγοντες τῷ τρόπῳ τῆς φράσεως παρά-
15 γονται ὅταν φῇ „Κουρήτές τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοὶ
„μενεχάρμαι ἀμφὶ πόλιν Καλυδῶνα.“ οὐδὲ γὰρ ἂν
κυρίως εἶπεν οὕτως „ἐμάχοντο Βοιωτοὶ καὶ Θηβαῖοι
πρὸς ἀλλήλους“ οὐδ' „Ἀργεῖοι καὶ Πελοποννήσιοι.“
ἐδείχθη δ' ἐν τοῖς ἐμπροσθεν ὅτι ἐστὶ καὶ ὁμηρικὸν τὸ
20 ἔθος τοῦτο τῆς φράσεως καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων ποιητῶν
τετριμμένον· τοῦτο μὲν οὖν εὐαπολόγητον. ἐκεῖνοι δὲ
λεγέτωσαν πῶς ἂν μὴ ὁμοεθνεῖς ὄντας μὴδ' Αἰτωλοὺς
τοὺς Πλευρωνίους ἐν τοῖς Αἰτωλοῖς κατέλεγεν.

Ἐφορος δὲ τοὺς Αἰτωλοὺς εἰπὼν ἔθνος εἶναι μη- 2
25 δεπώποτε γεγεννημένον ὑφ' ἑτέροις, ἀλλὰ πάντα τὸν
μνημονευόμενον χρόνον μεμενηκὸς ἀπόρθητον διὰ τε
τὰς δυσχωρίας τῶν τόπων καὶ διὰ τὴν περὶ τὸν πόλε-
μον ἄσκησιν, ἐξ ἀρχῆς μὲν φησὶν ἅπασαν τὴν χώραν
Κουρήτας κατασχεῖν, ἀφικομένου δ' ἐξ Ἡλιδος Αἰτω-
30 λοῦ τοῦ Ἐνδυμίωνος καὶ τοῖς πολέμοις κρατοῦντος αὐ-
τῶν, τοὺς μὲν Κουρήτας εἰς τὴν νῦν καλουμένην Ἀκαρ-
ναίαν ὑποχωρῆσαι, τοὺς δ' Αἰτωλοὺς συγκατελθόν-

τας Ἐπειοὺς τὰς ἀρχαιοτάτας κτίσαι τῶν ἐν Αἰτωλίᾳ πόλεων, δεκάτῃ δ' ὕστερον γενεᾷ τὴν Ἥλιν ὑπὸ Ὄξυλου τοῦ Αἴμονος συνοικισθῆναι περαιωθέντος ἐκ τῆς Αἰτωλίας. παρατίθησι δὲ τούτων μαρτύρια τὰ ἐπιγράμματα, τὸ μὲν ἐν Θέρμοις τῆς Αἰτωλίας, ὅπου τὰς 5 ἀρχαιρεσίας ποιεῖσθαι πάτριον αὐτοῖς ἐστίν, ἐγκεχαραγμένον τῇ βάσει τῆς Αἰτωλοῦ εἰκόνης „χώρης οἰκιστήρα, παρ' Ἀλφειοῦ ποτε δύναις θρεφθέντα, σταδίων γείτον' Ὀλυμπιάδος, Ἐνδυμίωνος παῖδ' Αἰτωλὸν τόνδ' ἀνέσθηκαν Αἰτωλοί, σφετέρας μνημ' ἄρε- 10 „τῆς ἐσορᾶν.“ τὸ δ' ἐν τῇ ἀγορᾷ τῶν Ἥλείων ἐπὶ τῷ Ὄξυλου ἀνδριάντι „Αἰτωλὸς ποτε τόνδε λιπῶν αὐτόχθονα δῆμον κτήσατο Κουρῆτιν γῆν δορὶ πολλὰ κα- C.464 „μών· τῆς δ' αὐτῆς γενεᾶς δεκατόσπορος Αἴμονος υἱὸς „Ὄξυλος ἀρχαίην ἔκτισε τήνδε πόλιν.“ 15

3 Τὴν μὲν οὖν συγγένειαν τὴν πρὸς ἀλλήλους τῶν τε Ἥλείων καὶ τῶν Αἰτωλῶν ὀρθῶς ἐπισημαίνεται διὰ τῶν ἐπιγραμμάτων, ἐξομολογουμένων ἀμφοῖν οὐ τὴν συγγένειαν μόνον ἀλλὰ καὶ τὸ ἀρχηγέτας ἀλλήλων εἶναι· δι' οὗ καλῶς ἐξελέγχει ψευδομένους τοὺς φάσκον- 20 τας τῶν μὲν Αἰτωλῶν ἀποίκους εἶναι τοὺς Ἥλείους, μὴ μέντοι τῶν Ἥλείων τοὺς Αἰτωλοὺς. τὴν δ' ἀνομολογίαν τῆς γραφῆς καὶ τῆς ἀποφάσεως φαίνεται τὴν αὐτὴν ἐπιδεδειγμένους ἀνταῦθα ἦν περ ἐπὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν Δελφοῖς παρεστήσαμεν. εἰπὼν γὰρ ἀπόρ- 25 θητον ἐκ τοῦ μνημονευομένου χρόνου παντὸς τὴν Αἰτωλίαν, εἰπὼν δὲ καὶ ἐξ ἀρχῆς τὴν χώραν ταύτην τοὺς Κουρῆτας κατασχεῖν ὥφειλε μὲν τοῖς εἰρημένοις ἀκόλουθον τοῦτο [ἐπι]φέρειν, ὅτι οἱ Κουρῆτες διέμειναν ἕως εἰς αὐτὸν κατέχοντες τὴν Αἰτωλίαν γῆν· οὕτω γὰρ 30

ἔμελλεν ἀπόρθητός τε καὶ οὐδέποτε ὑπ' ἄλλοις γε-
 νυῖα ὀρθῶς λεχθήσεσθαι· ὁ δ' ἐκλαθόμενος τῆς ὑπο-
 σχέσεως οὐ τοῦτ' ἐπιφέρει ἀλλὰ τὸνναντίον, ὡς ἀφι-
 κομένου ἐξ Ἡλιδος Αἰτωλοῦ καὶ τοῖς πολέμοις κρα-
 6 τούντος αὐτῶν οἱ Κουρήτες ἀπῆλθον εἰς τὴν Ἀκαρνα-
 νίαν· τί οὖν ἄλλο πορθήσεως ἰδιον ἢ τῷ πολέμῳ
 κρατηθῆναι καὶ τὴν χώραν ἐκλιπεῖν; τοῦτο δὲ καὶ τὸ
 ἐπίγραμμα μυρτυρεῖ τὸ παρὰ τοῖς Ἡλείοις· ὁ γὰρ „Αἰ-
 τωλός“ φησί „κτῆσατο Κουρήτιν γῆν δορὶ πολλὰ κα-
 10 „μῶν.“

Ἴσως δὴ τις ἂν φαίη λέγειν αὐτὸν ἀπόρθητον τὴν 4
 Αἰτωλίαν ἀφ' οὗ τοῦνομα τοῦτ' ἔσχε μετὰ τὴν Αἰτω-
 λοῦ παρουσίαν· ἀλλ' ἀφήρηται καὶ [τούτου] τοῦ νοή-
 ματος τὸν λόγον, φήσας ἐν τοῖς ἐφεξῆς τὸ μὲν πλεῖστον
 15 τοῦ λαοῦ τοῦ διαμένοντος ἐν τοῖς Αἰτωλοῖς τοῦτο εἶ-
 ναι τὸ τῶν Ἐπειῶν, συμμιχθέντων δ' αὐτοῖς ὕστερον
 Αἰολέων τῶν ἅμα Βοιωτοῖς ἐκ Θετταλίας ἀναστάντων
 κοινῇ μετὰ τούτων τὴν χώραν κατασχεῖν. ἄρ' οὖν ἔστι
 [πιστὸν] χωρὶς πολέμου τὴν ἀλλοτρίαν ἐπελθόντας
 20 συγκαταναεῖμασθαι τοῖς ἔχουσι μηδὲν δεομένοις κοινω-
 νίας τοιαύτης; ἢ τοῦτο μὲν οὐ πιστόν, τὸ δὲ κρατου-
 μένοις τοῖς ὅπλοις ἐπ' ἴσοις συμβῆναι πιστόν; τί οὖν
 ἄλλο πόρθησις ἢ τὸ κρατεῖσθαι τοῖς ὅπλοις; καὶ Ἀπολ-
 λόδωρος δ' εἰρηκεν ἐκ τῆς Βοιωτίας ἐπελθόντας Ἰαν-
 25 τας ἱστορεῖσθαι καὶ ἐποίκους τοῖς Αἰτωλοῖς γενομέ-
 νους· ὁ δ' ὥσπερ καταρθωκῶς ἐπιλέγει διότι ταῦτα
 καὶ τὰ τοιαῦτα διακριβοῦν εἰώθαμεν, ὅταν ἢ τι τῶν
 πραγμάτων ἢ παντελῶς ἀπορούμενον ἢ ψευδῇ δό-
 ξαν ἔχον.

30 Τοιοῦτος δ' ὢν Ἐφορος ἐτέρων ὅμως κρείττων ^{C.465}₅

ἐστί· καὶ αὐτὸς ὁ ἐσπουδασμένως οὕτως ἐπαινέσας αὐ-
 τὸν Πολύβιος καὶ φήσας περὶ τῶν Ἑλληνικῶν καλῶς
 μὲν Εὐδοξον, κάλλιστα δ' Ἐφορον ἐξηγεῖσθαι περὶ
 κτίσεων συγγενειῶν μεταναστάσεων ἀρχηγετῶν „ἡμεῖς
 „δὲ“ φησί „τὰ νῦν ὄντα δηλώσομεν καὶ περὶ θέσεως 5
 „τόπων καὶ διαστημάτων· τοῦτο γάρ ἐστιν οἰκειότα-
 „τον χωρογραφία.“ ἀλλὰ μὴν σύ γε, ὦ Πολύβιε, ὁ τὰς
 λαοδογματικὰς ἀποφάσεις περὶ τῶν διαστημάτων εἰς-
 ἄγων οὐκ ἐν τοῖς ἔξω τῆς Ἑλλάδος μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐν
 τοῖς Ἑλληνικοῖς, * καὶ διδοῖς εὐθύνας τὰς μὲν Ποσει- 10
 δωνίῳ τὰς δ' Ἀρτεμιδώρῳ τὰς δ' ἄλλοις πλείοσι. καὶ
 ἡμῖν οὖν συγγνώμην . . . καὶ οὐ δυσχεραίνειν δεῖ παρὰ
 τῶν τοιούτων μεταφέρουσι τὴν πολλὴν ἱστορίαν ἐάν
 τι πταίωμεν, ἀλλ' ἀγαπᾶν ἐάν τὰ πλείω τῶν εἰρημέ-
 νων ἑτέροις ἄμεινον λέγωμεν ἢ τὰ παραλειφθέντα κατ' 15
 ἄγνοιαν προστιθῶμεν.

- 6 Περὶ δὲ Κουρήτων ἔτι καὶ τοιαῦτα λέγεται, τὰ μὲν
 ἐγγυτέρω ὄντα τῆς περὶ Αἰτωλῶν καὶ Ἀκαρνάνων
 ἱστορίας τὰ δ' ἀπωτέρω· ἐγγυτέρω μὲν τὰ τοιαῦτα
 οἷα προεῖρηται, ὅτι τὴν χώραν ἣ νῦν Αἰτωλία καλεῖται 20
 Κουρήτες ᾤκουν, ἐλθόντες δ' οἱ Αἰτωλοὶ μετὰ Αἰτω-
 λοῦ τούτους ἐξέβαλον εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν· καὶ ἔτι τὰ
 τοιαῦτα, ὅτι τὴν Πλευρωνίαν ὑπὸ Κουρήτων οἰκουμέ-
 νην καὶ Κουρήτιν προσαγορευομένην Αἰολεῖς ἐπελ-
 θόντες ἀφείλοντο, τοὺς δὲ κατέχοντας ἐξέβαλον. Ἀρ- 25
 χέμαχος δ' ὁ Εὐβοεύς φησι τοὺς Κουρήτας ἐν Χαλκίδι
 συνοικῆσαι, συνεχῶς δὲ περὶ τοῦ Αἰγλήντου πεδίου
 πολεμοῦντας, ἐπειδὴ οἱ πολέμιοι τῆς κόμης ἐδράτ-
 τουτο τῆς ἔμπροσθεν καὶ κατέσπων αὐτούς, ὅπισθεν
 κομῶντας γενέσθαι, τὰ δ' ἔμπροσθεν κείρεσθαι· διὸ 30
 καὶ Κουρήτας ἀπὸ τῆς κουρᾶς κληθῆναι· μετοικῆσαι
 δ' εἰς τὴν Αἰτωλίαν, καὶ κατασχόντας τὰ περὶ Πλευ-

ρῶνα χωρία τοὺς πέραν οἰκοῦντας τοῦ Ἀχελώου διὰ τὸ
 ἀκούρους φυλάττειν τὰς κεφαλὰς Ἀκαρνᾶνας καλέσαι·
 ἐνιοι δ' ἀπὸ ἥρωος τοῦνομα σχεῖν ἐκάτερον τὸ φύλον·
 οἱ δ' ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ Κουρίου τοὺς Κουρήτας ὀνο-
 5 μασθῆναι τοῦ ὑπερκειμένου τῆς Πλευρωῶνος, εἶναι τε
 φύλον τι Αἰτωλικὸν τοῦτο, ὡς Ὀφιεῖς καὶ Ἀγραίους
 καὶ Εὐρυτᾶνας καὶ ἄλλα πλείω. ὡς δ' εἴρηται, τῆς Αἰ-
 τωλίας δίχᾳ διηρημένης τὰ μὲν περὶ Καλυδῶνα τὸν
 Οἰνέα ἔχειν φασί, τῆς δὲ Πλευρωνίας μέρος μὲν τι καὶ
 10 τοὺς Πορθαονίδας ἔχειν τοὺς περὶ τὸν Ἄγριον, εἶπερ
 „ᾧκεον ἐν Πλευρωῶνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι.“ ἐπι-^{C.466}
 κρατεῖν μέντοι Θέστιον τῆς Πλευρωνίας, τὸν πενθε-
 ρὸν τοῦ Οἰνέως Ἀλθαίας δὲ πατέρα, ἡγούμενον τῶν
 Κουρήτων· πολέμου δ' ἐμπεσόντος τοῖς Θεστιάδαις
 15 πρὸς Οἰνέα καὶ Μελέαγρον, ὡς μὲν ὁ ποιητής, „ἀμφι
 σὺς κεφαλῇ καὶ δέσματι“ κατὰ τὴν περὶ τοῦ κάπρου
 μυθολογίαν, ὡς δὲ τὸ εἰκὸς περὶ μέρος τῆς χώρας,
 οὕτω δὴ λέγεται „Κουρήτες τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοὶ
 „μενεχάρμαι.“ ταῦτα μὲν τὰ ἐγγυτέρω.

20 Τὰ δ' ἀπωτέρω τῆς ὑποθέσεως ταύτης, ἄλλως δὲ 7
 διὰ τὴν ὁμωνυμίαν εἰς ταὐτὸν ὑπὸ τῶν ἱστορικῶν ἀγό-
 μενα, ἅπερ Κουρητικὰ μὲν καὶ περὶ Κουρήτων λέγε-
 ται, ὁμοίως ὥσπερ καὶ τὰ περὶ τῶν τὴν Αἰτωλίαν καὶ
 τὴν Ἀκαρνανίαν οἰκησάντων, ἐκείνων μὲν διαφέρει,
 25 ἔοικε δὲ μᾶλλον τῷ περὶ Σατύρων καὶ Σειληνῶν καὶ
 Βακχῶν καὶ Τιτύρων λόγῳ· τοιοῦτους γάρ τινες δαί-
 μονας ἢ προπόλους θεῶν τοὺς Κουρητάς φασιν οἱ πα-
 ραδόντες τὰ Κρητικὰ καὶ τὰ Φρυγία, ἱερουργίαις τιδὲν
 ἐμπεπλεγμένα ταῖς μὲν μυστικαῖς ταῖς δ' ἄλλαις περὶ
 30 τε τὴν τοῦ Διὸς παιδοτροφίαν τὴν ἐν Κρήτῃ καὶ τοὺς
 τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ὀργιασμοὺς ἐν τῇ Φρυγίᾳ καὶ
 τοῖς περὶ τὴν Ἰδην τὴν Τρωικὴν τόποις. τοσαύτη δ'

ἐστὶν ἐν τοῖς λόγοις τούτοις ποικιλία, τῶν μὲν τοὺς αὐ-
 τοὺς τοῖς Κουρήσι τοὺς Κορύβαντας καὶ Καβαίρους
 καὶ Ἰδαίους δακτύλους καὶ Τελχίνας ἀποφαινόντων,
 τῶν δὲ συγγενεῖς ἀλλήλων καὶ μικράς τινὰς αὐτῶν
 πρὸς ἀλλήλους διαφορὰς διαστελλομένων, ὥς δὲ τύπῳ 5
 εἰπεῖν καὶ κατὰ τὸ πλεόν; ἅπαντας ἐνθουσιαστικούς
 τινὰς καὶ βακχικούς καὶ ἐνοπλίῳ κινήσει μετὰ θο-
 ρύβου καὶ ψόφου καὶ κυμβάλων καὶ τυμπάνων καὶ
 ὄπλων, ἔτι δ' αὐλοῦ καὶ βοῆς ἐκπλήττοντας κατὰ τὰς
 ἱερουργίας ἐν σχήματι διακόνων, [ᾧς]τε καὶ τὰ ἱερὰ 10
 τρόπον τινὰ κοινοποιεῖσθαι ταῦτά τε καὶ τῶν Σαμο-
 θράκων καὶ τὰ ἐν Ἀθήνῃ καὶ ἄλλα πλείω διὰ τὸ τοὺς
 προπόλους λέγεσθαι τοὺς αὐτούς. ἔστι μὲν οὖν θεο-
 λογικὸς πᾶς ὁ τοιοῦτος τρόπος τῆς ἐπισκέψεως καὶ οὐκ
 ἀλλότριος τῆς τοῦ φιλοσόφου θεωρίας.

15

8 Ἐπεὶ δὲ δι' ὁμωνυμίαν τῶν Κουρήτων καὶ οἱ ἱστο-
 ρικοὶ συνήγαγον εἰς ἓν τὰ ἀνόμοια, οὐδ' ἂν αὐτοὺς
 ὀκνήσαιμ' ἂν εἰπεῖν περὶ αὐτῶν ἐπὶ πλεόν ἐν παραβά-
 σει, προσθεὶς τὸν οἰκεῖον τῇ ἱστορίᾳ φυσικὸν λόγον.
 καίτοι τινὲς καὶ συνοικειοῦν βούλονται ταῦτ' ἐκαίνοις, 20
 καὶ τυχὸν ἴσως ἔχονται τινος πιθανοῦ· θηλυστολοῦν-
 τας γὰρ ὥς αἱ κόραι τοῦνομα σχεῖν τοῦτο τοὺς περὶ
 τὴν Αἰτωλίαν φασίν· εἶναι γὰρ καὶ τινὰ τοιοῦτον ξη-
 λον ἐν τοῖς Ἑλλήσι, καὶ Ἰάονας ἐλκεχίτωνας εἰρῆσθαι
 C.467[καὶ κρώβυλον καὶ τέττιγα ἐμπλέκεσθαι], καὶ τοὺς περὶ 25
 Λεωνίδα κτενιζομένους, ὅτ' ἐξήεσαν εἰς τὴν μάχην,
 καταφρουνηθῆναι λέγουσιν ὑπὸ τῶν Περσῶν, ἐν δὲ τῇ
 μάχῃ θανυμασθῆναι. ἀπλῶς δ' ἡ περὶ τὰς κόμας φιλο-
 τεχνία συνέστηκε περὶ τε θρέψιν καὶ κουράν τριχός,
 ἄμφω δὲ κόραις καὶ κόροις ἐστὶν οἰκεία, ᾧστε πλεονα- 30
 χῶς τὸ ἐτυμολογεῖν τοὺς Κουρήτας ἐν εὐπόρῳ κεῖται.
 εἰκὸς δὲ καὶ τὴν ἐνόπλιον ὄρχησιν ὑπὸ τῶν ἡσκημένων

10 περὶ μὲν οὖν τῆς τῶν Κορυήτων ἐτυμολογίας ταῦτα.

10. post ταῦτα· ἡ δὲ ἐνόπλι- : ὁ Πύρριχος,
 πυρρίχη δηλοῖ καὶ ὁ Πύρριχος,
 αὐτῆς ἀσκήσεως τῶν νέων καὶ τὰ στρατιωτικά.

δὲ τὸ χαίρειν καὶ τὸ ἐορτάζειν καὶ τὸ φιλοσοφεῖν καὶ μουσικῆς ἄπτεσθαι· μὴ γὰρ εἴ τις ἔκπτωσις πρὸς τὸ χεῖρον [γε]γένηται, τῶν μουσικῶν εἰς ἡδυπαθείας τρε-
C.468 πόντων τὰς τέχνας ἐν τοῖς συμποσίοις καὶ θυμέλαις καὶ σκηναῖς καὶ ἄλλοις τοιούτοις, διαβαλλέσθω τὸ πρᾶγμα, 5 ἄλλ' ἢ φύσις ἢ τῶν παιδευμάτων ἐξεταζέσθω τὴν ἀρχὴν ἐνθένδε ἔχουσα.

10 Καὶ διὰ τοῦτο μουσικὴν ἐκάλεσε Πλάτων καὶ ἔτι πρότερον οἱ Πυθαγόρειοι τὴν φιλοσοφίαν, καὶ καθ' ἁρμονίαν τὸν κόσμον συνεστάναι φασί, πᾶν τὸ μουσι- 10 κὸν εἶδος θεῶν ἔργον ὑπολαμβάνοντες. οὕτω δὲ καὶ αἱ Μοῦσαι θεαὶ καὶ Ἀπόλλων μουσηγέτης καὶ ἡ ποιητικὴ πᾶσα ὑμνητικὴ. ὡσαύτως δὲ καὶ τὴν τῶν ἡθῶν κατασκευὴν τῇ μουσικῇ προσνέμουσιν, ὥς πᾶν τὸ ἐπανορθωτικὸν τοῦ νοῦ τοῖς θεοῖς ἐγγὺς ὂν. οἱ μὲν οὖν 15 Ἕλληνες οἱ πλεῖστοι τῷ Διονύσῳ προσέθεσαν καὶ τῷ Ἀπόλλωνι καὶ τῇ Ἑκάτῃ καὶ ταῖς Μούσαις καὶ Δήμητρι, νῆ Δία, τὸ ὀργιαστικὸν πᾶν καὶ τὸ βακχικὸν καὶ τὸ χορικὸν καὶ τὸ περὶ τὰς τελετὰς μυστικόν, Ἰακχὸν τε καὶ τὸν Διόνυσον καλοῦσι καὶ τὸν ἀρχηγέτην τῶν 20 μυστηρίων, τῆς Δήμητρος δαίμονα· δενδροφορίαι τε καὶ χορεῖαι καὶ τελεταὶ κοιναὶ τῶν θεῶν εἰσι τούτων· αἱ δὲ Μοῦσαι καὶ ὁ Ἀπόλλων αἱ μὲν τῶν χορῶν προε-
σταῖσιν ὁ δὲ καὶ τούτων καὶ τῶν κατὰ μαντικὴν· πρό-
πολοι δὲ τῶν Μουσῶν οἱ πεπαιδευμένοι πάντες, καὶ 25 ἰδίως οἱ μουσικοί, τοῦ δ' Ἀπόλλωνος οὗτοί τε καὶ οἱ περὶ μαντικὴν, Δήμητρος δὲ οἳ τε μύσται καὶ δαδούχοι καὶ ἱεροφάνται, Διονύσου δὲ Σειληνοί τε καὶ Σάτυροι καὶ Τίτυροι καὶ Βάκχαι, Αἰῆναι τε καὶ Θυαῖαι καὶ Μι-
μαλλόνες καὶ Ναῖδες καὶ Νύμφαι προσαγορευόμεναι. 30

11 Ἐν δὲ τῇ Κρήτῃ καὶ ταῦτα καὶ τὰ τοῦ Διὸς ἱερὰ ἰδίως ἐπετελεῖτο μετ' ὀργιασμοῦ καὶ τοιούτων προπό-

λων οἱοι περὶ τὸν Διόνυσόν εἰσιν οἱ Σάτυροι· τούτους
 δ' ὠνόμαζον Κουρῆτας, νέους τινας ἐνόπλιον κίνησιν
 μετ' ὀρχήσεως ἀποδιδόντας, προστησάμενοι μῦθον
 τὸν περὶ τῆς τοῦ Διὸς γενέσεως, ἐν ᾧ τὸν μὲν Κρόνον
 5 εἰσάγουσιν εἰθισμένον καταπίνειν τὰ τέκνα ἀπὸ τῆς
 γενέσεως εὐθύς, τὴν δὲ Ῥέαν πειρωμένην ἐπικρύπτε-
 σθαι τὰς ὠδῖνας καὶ τὸ γεννηθὲν βρέφος ἐκποδὼν ποι-
 εῖν καὶ περισώζειν εἰς δύναμιν, πρὸς δὲ τοῦτο συνερ-
 γοὺς λαβεῖν τοὺς Κουρῆτας, οἱ μετὰ τυμπάνων καὶ
 10 τοιούτων ἄλλων ψόφων καὶ ἐνοπλίου χορείας καὶ θο-
 ρύβου περιέποντες τὴν θεὸν ἐκπλήξειν ἔμελλον τὸν
 Κρόνον καὶ λήσειν ὑποσπάσαντες αὐτοῦ τὸν παῖδα, τῇ
 δ' αὐτῇ ἐπιμελείᾳ καὶ τρεφόμενον ὑπ' αὐτῶν παραδί-
 δοσθαι· ὥσθ' οἱ Κουρῆτες ἦτοι διὰ τὸ νέοι καὶ κόροι
 15 ὄντες ὑπουργεῖν ἢ διὰ τὸ κουροτροφεῖν τὸν Δία (λέγε-
 ται γὰρ ἀμφοτέρως) ταύτης ἡξιώθησαν τῆς προσηγο-
 ρίας, οἷονεὶ Σάτυροί τινες ὄντες περὶ τὸν Δία. οἱ μὲν C.469
 οὖν Ἕλληνες τοιοῦτοι περὶ τοὺς ὀργιασμούς.

Οἱ δὲ Βερέκυντες Φρυγῶν τι φῦλον καὶ ἀπλῶς οἱ 12
 20 Φρύγες καὶ τῶν Τρώων οἱ περὶ τὴν Ἰδην κατοικοῦντες
 Ῥέαν μὲν καὶ αὐτοὶ τιμῶσι καὶ ὀργιάζουσι ταύτῃ, μη-
 τέρα καλοῦντες θεῶν καὶ Ἄγδιστιν καὶ Φρυγίαν θεὸν
 μεγάλην, ἀπὸ δὲ τῶν τόπων Ἰδαίαν καὶ Δινδυμήνην
 καὶ Σιπυληνὴν καὶ Πεσσινουντίδα καὶ Κυβέλην [καὶ
 25 Κυβήβην]. οἱ δ' Ἕλληνες τοὺς προπόλους αὐτῆς ὁμο-
 νύμως Κουρῆτας λέγουσιν, οὐ μὲν γε ἀπὸ τῆς αὐτῆς
 μυθοποιίας, ἀλλ' ἑτέρους ὡς ἂν ὑπουργοὺς τινας, τοῖς
 Σατύροις ἀνὰ λόγον· τοὺς δ' αὐτοὺς καὶ Κορύβαντας
 καλοῦσι.

30 Μάρτυρες δ' οἱ ποιηταὶ τῶν τοιούτων ὑπονοειῶν· 13
 ὅ τε γὰρ Πίνδαρος ἐν τῷ διθυράμβῳ οὗ ἡ ἀρχή „πρὶν
 „μὲν εἶρπε σχοινοτένεια τ' ἀοιδὰ διθυράμβων,“ μνη-

σθεις τῶν περὶ τὸν Διόνυσον ὕμνων τῶν τε παλαιῶν
καὶ τῶν ὕστερον, μεταβὰς ἀπὸ τούτων φησί „σοὶ μὲν
„κατάρχειν, μᾶτερ μεγάλα, πᾶρα ῥόμβοι κυμβάλων,
„ἐν δὲ κεχλάδειν κρόταλ', αἰθομένα τε δᾶς ὑπὸ ξαν-
„θαῖσι πεύκαις,“ τὴν κοινωνίαν τῶν περὶ τὸν Διόνυ- 5
σον ἀποδειχθέντων νομίμων παρὰ τοῖς Ἑλλησι καὶ τῶν
παρὰ τοῖς Φρυγῇ περὶ τὴν μητέρα τῶν θεῶν συνοι-
κειῶν ἀλλήλοις. Εὐριπίδης τε ἐν ταῖς Βάκχαις τὰ πα-
ραπλήσια ποιεῖ, τοῖς Φρυγίοις ἅμα καὶ τὰ Λύδια συμ-
φέρων διὰ τὸ ὅμορον „ἀλλ' ὦ λιποῦσαι Τρωῶλον, ἔρυμα 10
„Λυδίας, θίασος ἐμὸς γυναιῖκες, [ἄς ἐκ βαρβάρων ἐκό-
„μισα παρέδρους καὶ ξυνεμπόρους ἐμοί, αἶρεσθε τὰ-
„πιχώρι' ἐν πόλει Φρυγῶν τύμπανα, ῥέας τε μητρὸς
„ἐμά θ' εὐρήματα.“] καὶ πάλιν „ὦ μάκαρ, ὅστις εὐδαί-
„μων [τελετὰς θεῶν εἰδώς], βιοτὰν ἀγιστεύει. τὰ τε 15
„ματρὸς μεγάλας ὄργια Κυβέλας θεμιστεύων ἀνὰ θύρ-
„σον τε τινάσσων, κισσῷ [τε] στεφανωθεὶς [Διόνυ-
„σον] θεραπύει. ἴτε Βάκχαι, [ἴτε Βάκχαι,] βρόμιον
„παῖδα θεὸν θεοῦ Διόνυσον κατάγονσαι Φρυγίων ἐξ
„ὀρέων Ἑλλάδος εἰς εὐρυχόρους ἀγνιάς.“ πάλιν δ' 20
ἐν τοῖς ἐξῆς καὶ τὰ Κρητικὰ συμπλέκει τούτοις „ὦ θα-
„λάμευμα Κουρήτων, ξάθεοί τε Κρήτας διογενέτορες
„ἐναυλοὶ, ἐνθα τρικύρουθες ἄντροις βυρσότονον κύ-
C.470 „κλωμα τόδε μοι Κορύβαντες εὐρον. ἀνὰ δὲ βακχεῖα
„συντόνῳ κέρασαν ἀδυβόα Φρυγίων ἀνλῶν πνεύματι, 25
„ματρός τε ῥέας εἰς χεῖρα θῆκαν κτύπον εὐάσμασι
„Βακχᾶν, παρὰ δὲ μαινόμενοι Σάτυροι ματέρος ἐξα-
„νύσαντο ῥέας. εἰς δὲ χορεύματα προσήψαν τριετη-
„ρίδων, αἷς χαίρει Διόνυσος.“ καὶ ἐν Παλαμήδει φη-
σὶν ὁ χορὸς „οὐ σὺν Διονύσῳ * κωμᾶν, ὅς ἄν' Ἰδαν 30
„τέρπεται σὺν ματρὶ φίλα τυμπάνων ἰάκχοις.“

14 Καὶ Σειληνὸν καὶ Μαρσύαν καὶ Ὀλυμπον συνά-

γοντες εἰς ἓν καὶ εὐρετὰς αὐλῶν ἱστοροῦντες πάλιν
καὶ οὕτως τὰ Διονυσιακὰ καὶ Φρυγία εἰς ἓν συμφέ-
ρουσι, τὴν τε Ἰδην καὶ τὸν Ὀλυμπον συγκεχυμένως
πολλάκις ὥς τὸ αὐτὸ ὄρος κτυποῦσιν. εἰσὶ μὲν οὖν λό-
5 φοι τέτταρες Ὀλυμποὶ καλούμενοι τῆς Ἰδῆς κατὰ τὴν
Ἀντανδρίαν, ἔστι δὲ καὶ ὁ Μυσὸς Ὀλυμπος, ὁμορος
μὲν οὐχ ὁ αὐτὸς δὲ τῇ Ἰδῇ. ὁ δ' οὖν Σοφοκλῆς ποιή-
σας τὸν Μενέλαον ἐκ τῆς Τροίας ἀπαίρειν σπεύδοντα
ἐν τῇ Πολυξένῃ, τὸν δ' Ἀγαμέμνονα μικρὸν ὑπολει-
10 πθῆναι βουλόμενον τοῦ ἐξιλάσασθαι τὴν Ἀθηναῖν χά-
ριν, εἰσάγει λέγοντα τὸν Μενέλαον „σὺ δ' αὖθι μί-
„μνων που κατ' Ἰθαίαν χθόνα ποίμνας Ὀλύμπου συν-
„αγαγὼν θνηπόλει.“

Τῷ δ' αὐλῷ καὶ κτύπῳ κροτάλων τε καὶ κυμβά- 15
λων καὶ τυμπάνων καὶ ταῖς ἐπιβοήσεσι καὶ εὐασμοῖς
καὶ ποδοκρουστίαις οἵκεῖα ἐξέυροντο καὶ τινα τῶν
ὀνομάτων, ἃ τοὺς προπόλους καὶ χορευτὰς καὶ θερα-
πευτὰς τῶν ἱερῶν ἐκάλουν, Καβείρους καὶ Κορύβαν-
τας καὶ Πᾶνας καὶ Σατύρους καὶ Τιτύρους καὶ τὸν
20 θεὸν Βάκχον καὶ τὴν Πέαν Κυβέλην καὶ Κυβήβην καὶ
Δινδυμήνην κατὰ τοὺς τόπους αὐτούς. καὶ ὁ Σαβά-
ξιος δὲ τῶν Φρυγιακῶν ἔστι καὶ τρόπον τινὰ τῆς μη-
τρὸς τὸ παιδίον παραδοὺς τὰ τοῦ Διονύσου καὶ αὐτός.

Τούτοις δ' ἔοικε καὶ τὰ παρὰ τοῖς Θραξὶ τὰ τε Κο- 16
25 τύττια καὶ τὰ Βενδίθεια, παρ' οἷς καὶ τὰ Ὀρφικά τὴν
καταρχὴν ἔσχε. τῆς μὲν οὖν Κότυς τῆς ἐν τοῖς Ἥδω-
νοῖς Αἰσχύλος μέμνηται καὶ τῶν περὶ αὐτὴν ὀργάνων.
εἰπὼν γάρ „σεμνὰ Κότυς“ ἐν τοῖς Ἥδωνοῖς „ὄρεια δ'
„ὄργαν' ἔχοντες,“ τοὺς περὶ τὸν Διόνυσον εὐθέως
30 ἐπιφέρει „ὁ μὲν ἐν χειρσὶν βόμβυκας ἔχων, τόρνου
„κάματον, δακτυλόδικτον πλμπλησι μέλος, μανίας
„ἐπαγωγὸν ὁμοκλάν· ὁ δὲ χαλκοδέτοις κοτύλαις ὀτο-

- C.471, βε. “καὶ πάλιν „ψαλμὸς δ’ ἀλαλάζει· ταυρόφθογγοι
 „δ’ ὑπομυκῶνται ποθὲν ἐξ ἀφανοῦς φοβεροὶ μῆμοι,
 „τυπάνου δ’ εἰκὼν ὥσθ’ ὑπογαίου βροντῆς φέρεται
 „βαρυταρβής.“ ταῦτα γὰρ ἔοικε τοῖς Φρυγίοις· καὶ
 οὐκ ἀπεικός γε, ὥσπερ αὐτοὶ οἱ Φρύγες Θρακῶν ἄποι- 5
 κοὶ εἰσιν, οὕτω καὶ τὰ λερὰ ἐκείθεν μετενηνέχθαι. καὶ
 τὸν Διόνυσον δὲ καὶ τὸν Ἡδωνὸν Λυκοῦργον συνά-
 γοντες εἰς ἓν τὴν ὁμοιοτροπίαν τῶν λερῶν αἰνίττονται.
- 17 Ἀπὸ δὲ τοῦ μέλους καὶ τοῦ ῥυθμοῦ καὶ τῶν ὀρ-
 γάνων καὶ ἡ μουσικὴ πᾶσα Θρακία καὶ Ἀσιᾶτις νερό- 10
 μισται. δῆλον δ’ ἐκ τε τῶν τόπων ἐν οἷς αἱ Μοῦσαι
 τετίμηνται· Πιερία γὰρ καὶ Ὀλυμπος καὶ Πίμπλα καὶ
 Λεῖβηθρον τὸ παλαιὸν ἦν Θράκεια χωρία καὶ ὄρη, νῦν
 δὲ ἔχουσι Μακεδόνες· τὸν τε Ἐλικῶνα καθιέρωσαν
 ταῖς Μούσαις Θραῖκες οἱ τὴν Βοιωτίαν ἐποικήσαντες, 15
 οἵπερ καὶ τὸ τῶν Λεῖβηθριάδων νυμφῶν ἄντρον κα-
 θιέρωσαν. οἳ τ’ ἐπιμεληθέντες τῆς ἀρχαίας μουσικῆς
 Θραῖκες λέγονται, Ὀρφεὺς τε καὶ Μουσαῖος καὶ Θάμυ-
 ρις, καὶ τῷ Εὐμόλπῳ δὲ τοῦνομα ἐνθένδε, καὶ οἱ τῷ
 Διονύσῳ τὴν Ἀσίαν ὅλην καθιερῶσαντες μέχρι τῆς 20
 Ἰνδικῆς ἐκείθεν καὶ τὴν πολλὴν μουσικὴν μεταφέρου-
 σι· καὶ ὁ μὲν τίς φησὶν „κιδάραν Ἀσιᾶτιν ῥάσσων,“ ὁ
 δὲ τοὺς ἀγλούς Βερεκυντίους καλεῖ καὶ Φρυγίους· καὶ
 τῶν ὀργάνων ἓνια βαρβάρως ὠνόμασται νάβλας καὶ
 σαμβύκη καὶ βάρβιτος καὶ μαγάδις καὶ ἄλλα πλείω. 25
- 18 Ἀθηναῖοι δ’ ὥσπερ περὶ τὰ ἄλλα φιλοξενοῦντες
 διατελοῦσιν, οὕτω καὶ περὶ τοὺς θεοὺς. πολλὰ γὰρ
 τῶν ξενικῶν λερῶν παρεδέξαντο ὥστε καὶ ἐκωμωδή-
 θησαν· καὶ δὴ καὶ τὰ Θράκεια καὶ τὰ Φρύγια. τῶν μὲν
 γὰρ Βενδιδείων Πλάτων μέμνηται, τῶν δὲ Φρυγίων 30
 Δημοσθένους διαβάλλων τὴν Αἰσχίνου μητέρα καὶ αὐ-
 τὸν ὡς τελούση τῇ μητρὶ συνόντα καὶ συνδιασεύοντα

καὶ ἐπιφθεγγόμενον „εὐοῖ σαβοῦ“ πολλάκις καὶ „ῥης
 „ἄττης [ἄττης] ῥης.“ ταῦτα γὰρ ἐστὶ σαβάζια καὶ
 μητροῶα.

Ἔτι δ' ἂν τις καὶ ταῦτα [εὐροι] περὶ τῶν δαιμόνων 19
 5 τούτων καὶ τῆς τῶν ὀνομάτων ποικιλίας, καὶ ὅτι οὐ
 πρόπολοι θεῶν μόνον ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ θεοὶ προσηγο-
 ρεύθησαν. Ἡσίοδος μὲν γὰρ *Ἐκ τέρω καὶ τῆς Φο-
 ρωνέως θυγατρὸς πέντε γενέσθαι θυγατέρας φησὶν
 „ἐξ ὧν οὔρειαι Νύμφαι θεαὶ [ἐξ]εγένοντο, καὶ γένος
 10 „οὔτιδανῶν Σατύρων καὶ ἀμμηανοεργῶν, Κουρῆτές
 „τε θεοὶ φιλοπαίγμονες ὀρχηστήρες.“ ὁ δὲ τὴν Φο-
 ρωνίδα γράψας αὐλητὰς καὶ Φρύγας τοὺς ΚουρῆταςC.472
 λέγει, ἄλλοι δὲ γηγενεῖς καὶ χαλκιάσπιδας· οἱ δ' οὐ
 τοὺς Κουρῆτας, ἀλλὰ τοὺς Κορύβαντας Φρύγας, ἐκεί-
 15 νους δὲ Κρητάς, περιθέσθαι δ' ὅπλα χαλκᾶ· πρώτους
 ἐν Εὐβοίᾳ· διὸ καὶ Χαλκιδέας αὐτοὺς κληθῆναι· οἱ
 δ' ὑπὸ Τιτάνων Ῥέα δοθῆναι προπόλους ἐνόπλους
 τοὺς Κορύβαντας ἐκ τῆς Βακτριανῆς ἀφιγμένους, οἱ
 δ' ἐκ Κόλχων φασὶν. ἐν δὲ τοῖς Κρητικοῖς λόγοις οἱ
 20 Κουρῆτες Διὸς τροφεῖς λέγονται καὶ φύλακες, εἰς
 Κρήτην ἐκ Φρυγίας μεταπεμφθέντες ὑπὸ τῆς Ῥέας· οἱ
 δὲ Τελχίνων ἐν Ῥόδῳ ἐννέα ὄντων τοὺς Ῥέα συνακο-
 λουθήσαντας εἰς Κρήτην καὶ τὸν Δία κουροτροφήσαν-
 τας Κουρῆτας ὀνομασθῆναι· Κύρβαντα δὲ τούτων
 25 ἑταῖρον Ἱεραπύττης ὄντα κτίστην παρὰ τοῖς Ῥοδίοις
 παρασχεῖν πρόφασιν τοῖς Πρασίοις ὥστε λέγειν, ὡς
 εἶεν Κορύβαντες δαίμονές τινες Ἀθηνᾶς καὶ Ἥλιου
 παῖδες. ἔτι δὲ Κρόνου τινές, ἄλλοι δὲ Διὸς καὶ Καλ-
 λιόπης φασὶ τοὺς Κορύβαντας τοὺς αὐτοὺς τοῖς Κα-
 30 βείοις ὄντας, ἀπελθεῖν δὲ τούτους εἰς Σαμοθράκην

28. post τινές : τοὺς Κορύβαντας

καλουμένην πρότερον Μελίτην, τὰς δὲ πράξεις αὐτῶν μυστικὰς εἶναι.

- 20 Ταῦτα δ' οὐκ ἀπόδεξάμενος ὁ Σκήψιος ὁ τοὺς μύθους συναγαγὼν τούτους, ὥς μηδενὸς ἐν Σαμοθράκῃ μυστικοῦ λόγον περὶ Καβείρων λεγομένου, παρατίθη- 5 σιν ὁμοίως καὶ Στησιμβρότου τοῦ Θασίου δόξαν, ὥς τὰ ἐν Σάμοθράκῃ ἱερὰ τοῖς Καβείροις ἐπιτελοῖτο· καλεῖσθαι δὲ φησιν αὐτοὺς ἐκεῖνος ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ ἐν τῇ Βερεκυντία Καβείρου. οἱ δ' Ἐκάτης προπόλους νομίζουσι τοὺς Κουρήτας τοὺς αὐτοὺς τοῖς Κορύβα- 10 σιν ὄντας. φησὶ δὲ πάλιν ὁ Σκήψιος ἐν τῇ Κρήτῃ τὰς τῆς Πέας τιμὰς μὴ νομίζεσθαι μηδὲ ἐπιχωριάξειν, ὑπεναντιούμενος τῷ τοῦ Εὐριπίδου λόγῳ, ἀλλ' ἐν τῇ Φρυγίᾳ μόνον καὶ τῇ Τρωάδι, τοὺς δὲ λέγοντας μυθολογεῖν μᾶλλον ἢ ἱστορεῖν, πρὸς τοῦτο δὲ καὶ τὴν 15 τῶν τόπων ὁμωνυμίαν συμπρᾶξαι τυχὸν ἴσως αὐτοῖς· Ἰδὴ γὰρ τὸ ὄρος τό τε Τρωικὸν καὶ τὸ Κρητικόν, καὶ Δίκτη τόπος ἐν τῇ Σκηψίᾳ καὶ ὄρος ἐν Κρήτῃ· τῆς δὲ Ἰδης λόφος Πύτνα... ἀφ' οὗ Ἱεράπυτνα ἢ πόλις, Ἱποκόρωνά τε τῆς Ἀδραμυττηνῆς καὶ Ἱποκορώνιον ἐν 20 Κρήτῃ, Σαμώνιον τε τὸ ἑωθινὸν ἀκρωτήριον τῆς νήσου καὶ πεδῖον ἐν τῇ Νεανδρίδι καὶ τῇ Ἀλεξανδρέων.

- 21 Ἀκουσίλαος δ' ὁ Ἀργεῖος ἐκ Καβειροῦς καὶ Ἡφαίστου Κάμιλλον λέγει, τοῦ δὲ τρεῖς Καβείρους, * οἷς νύμφας Καβειρίδας· Φερεκύδης δ' ἐξ Ἀπόλλωνος καὶ 25 Ῥητίας Κύρβαντας ἐννέα, οἰκῆσαι δ' αὐτοὺς ἐν Σαμοθράκῃ· ἐκ δὲ Καβειροῦς τῆς Πρωτέως καὶ Ἡφαίστου Καβείρους τρεῖς καὶ νύμφας τρεῖς Καβειρίδας, C.473 ἐκατέροις δ' ἱερὰ γίνεσθαι. μάλιστα μὲν οὖν ἐν Ἰμβρῳ καὶ Ἀήμνῳ τοὺς Καβείρους τιμᾶσθαι συμβέβη- 30 κεν, ἀλλὰ καὶ ἐν Τροίᾳ κατὰ πόλεις· τὰ δ' ὀνόματα αὐτῶν ἐστὶ μυστικά. Ἡρόδοτος δὲ καὶ ἐν Μέμφει λέ-

γει τῶν Καβείρων ἱερὰ καθάπερ καὶ τοῦ Ἡφαίστου,
 διαφθεῖραι δ' αὐτὰ Καμβύσην. ἔστι δ' αἰοίκητα τὰ
 χωρία τῆς τῶν δαιμόνων τούτων τιμῆς, τότε Κορυ-
 βαντεῖον τὸ ἐν τῇ Ἀμαξιτίᾳ τῆς νῦν Ἀλεξανδρέων χώ-
 5 ρας ἐγγὺς τοῦ Σμινθίου, καὶ ἡ Κορύβισσα ἐν τῇ Σκη-
 ψίᾳ περὶ ποταμὸν Εὐρῆεντα καὶ κώμην ὁμώνυμον καὶ
 ἔτι χεῖμαρρον Αἰθαλόεντα. πιθανὸν δέ φησιν ὁ Σκῆ-
 ψιος, Κουρῆτας μὲν καὶ Κορύβαντας εἶναι τοὺς αὐ-
 τοὺς, οἱ περὶ τὰς τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ἀριστείας πρὸς
 10 ἐνόπλιον ὀρχησιν ἦθεοι καὶ κόροι τυγχάνουσι παρει-
 λημμένοι. καὶ Κορύβαντες δὲ ἀπὸ τοῦ κορύπτοντας
 βαλνύνει ὀρχηστικῶς, οὗς καὶ βητάρμονας λέγει ὁ ποιη-
 τῆς „δεῦτ' ἄγε Φαιήκων βητάρμονες, ὅσσοι ἄριστοι.“
 τῶν δὲ Κορυβάντων ὀρχηστικῶν καὶ ἐνθουσιαστικῶν
 15 ὄντων καὶ τοὺς μανικῶς κινουμένους κορυβαντιᾶν
 φραμεν.

Δακτύλους δ' Ἰθαίους φασί τινες κεκλήσθαι τοὺς 22
 πρῶτους οἰκήτορας τῆς κατὰ τὴν Ἰδην ὑπωρείας· πό-
 δας μὲν γὰρ λέγεσθαι τὰς ὑπωρείας, κορυφὰς δὲ τὰ
 20 ἄκρα τῶν ὄρων· αἱ οὖν κατὰ μέρος ἐσχατιαὶ καὶ πᾶ-
 σαι τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ἱερὰ περὶ τὴν Ἰδην.....
 Σοφοκλῆς δὲ οἶεται πέντε τοὺς πρῶτους ἄρσενας γε-
 νέσθαι, οἱ σίδηρόν τε ἐξεῦρον καὶ εἰργάσαντο πρῶτοι
 * καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν πρὸς τὸν βίον χρησίμων, πέντε
 25 δὲ καὶ ἀδελφὰς τούτων, ἀπὸ δὲ τοῦ ἀριθμοῦ δακτύ-
 λους κληθῆναι. ἄλλοι δ' ἄλλως μυθεύουσιν ἀπόροις
 ἄπορα συνάπτοντες, διαφόροις δὲ καὶ τοῖς ὀνόμασι
 καὶ τοῖς ἀριθμοῖς χρῶνται, ὧν Κέλμιν ὀνομάζουσι
 τινὰ καὶ Δαμναμενέα καὶ Ἡρακλέα καὶ Ἀκμονα· καὶ
 30 οἱ μὲν ἐπιχωρίους τῆς Ἰδης οἱ δὲ ἐποίκους, πάντες δὲ
 σίδηρον εἰργάσθαι ὑπὸ τούτων ἐν Ἰδῇ πρῶτόν φασι,
 πάντες δὲ καὶ γόητας ὑπειλήφασιν καὶ περὶ τὴν μητέρα

τῶν θεῶν καὶ ἐν Φρυγίᾳ ᾠκηκότας περὶ τὴν Ἰδην, Φρυγίαν τὴν Τρωάδα καλοῦντες διὰ τὸ τοὺς Φρύγας ἐπικρατῆσαι πλησιοχώρους ὄντας τῆς Τροίας ἐκπεπορημένης. ὑπονοοῦσι δὲ τῶν Ἰδαίων δακτύλων ἐκρό-
 νους εἶναι τοὺς τε Κουρήτας καὶ τοὺς Κορύβαντας· 5
 τοὺς γοῦν πρώτους γεννηθέντας ἐν Κρήτῃ ἑκατὸν ἄν-
 δρας Ἰδαίους δακτύλους κληθῆναι, τούτων δ' ἀπο-
 γόνους φασὶ Κουρήτας ἐννέα γενέσθαι, τούτων δ'
 ἕκαστον δέκα παῖδας τεκνωῶσαι τοὺς Ἰδαίους καλουμέ-
 νους δακτύλους.

10

C.474
23

Προήχθημεν δὲ διὰ πλειόνων εἰπεῖν περὶ τούτων
 καίπερ ἥκιστα φιλομυθοῦντες, ὅτι τοῦ θεολογικοῦ
 γένους ἐφάπτεται τὰ πράγματα ταῦτα. πᾶς δὲ ὁ περὶ
 τῶν θεῶν λόγος ἀρχαίας ἐξετάζει δόξας καὶ μύθους,
 αἰνιττομένων τῶν παλαιῶν ἃς εἶχον ἐννοίας φυσικὰς 15
 περὶ τῶν πραγμάτων καὶ προστιθέντων ἅει τοῖς λό-
 γοις τὸν μῦθον. ἅπαντα μὲν οὖν τὰ αἰνύματα λύειν
 ἐπ' ἀκριβὲς οὐ ῥάδιον, τοῦ δὲ πλήθους τῶν μυθευο-
 μένων ἐκτεθέντος εἰς τὸ μέσον, τῶν μὲν ὁμολογούν-
 των ἀλλήλοις τῶν δ' ἐναντιουμένων, εὐπορώτερον 20
 ἂν τις δύναιτο εἰκάξειν ἐξ αὐτῶν τάληθές· οἷον τὰς
 ὀρειβασίας τῶν περὶ τὸ θεῖον σπουδαζόντων καὶ αὐ-
 τῶν τῶν θεῶν καὶ τοὺς ἐνθουσιασμοὺς εἰκότως μυ-
 θεύουσι κατὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν καθ' ἣν καὶ οὐρανίους·
 νομίζουσι τοὺς θεοὺς καὶ προνοητικοὺς τῶν τε ἄλλων 25
 καὶ τῶν προσημασιῶν· τῇ μὲν οὖν ὀρειβασίᾳ τὸ με-
 ταλλευτικὸν καὶ τὸ θηρευτικὸν [καὶ] ζητητικὸν τῶν
 πρὸς τὸν βίον χρησίμων ἐφάνη συγγενές, τῶν δ' ἐν-
 θουσιασμῶν καὶ θρησκείας καὶ μαντικῆς τὸ ἀγυρτικὸν
 καὶ γοητεία ἐγγύς. τοιοῦτον δὲ καὶ τὸ φιλότεχνον μά- 30
 λιστα τὸ περὶ τὰς Διονυσιακὰς τέχνας καὶ τὰς Ὀρφι-
 κάς. ἀλλ' ἀπόρη περὶ αὐτῶν.

Ἐπεὶ δὲ πρῶτον περὶ τῶν τῆς Πελοποννήσου νή- 4
σων τῶν τε ἄλλων διηλθον καὶ τῶν ἐν τῷ Κορινθιακῷ
κόλπῳ καὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ, περὶ τῆς Κρήτης ἐφεξῆς
ῥητέον (καὶ γὰρ αὕτη τῆς Πελοποννήσου ἐστὶ) καὶ εἴ
5 τις περὶ τὴν Κρήτην· ἐν δὲ ταύταις αἱ τε Κυκλάδες
εἰσὶ καὶ αἱ Σποράδες, αἱ μὲν ἄξιαι μνήμης αἱ δ' ἀση-
μότεραι.

Νυνὶ δὲ περὶ τῆς Κρήτης πρῶτον λέγωμεν. Εὖ- 2
δοξος μὲν οὖν ἐν τῷ Αἰγαίῳ φησὶν αὐτὴν ἰδρῦσθαι·
10 δεῖ δὲ μὴ οὕτως, ἀλλὰ κείσθαι μὲν μεταξὺ τῆς Κυρη-
ναίας καὶ τῆς Ἑλλάδος τῆς ἀπὸ Σουνίου μέχρι τῆς Λα-
κωνικῆς, ἐπὶ μῆκος ταύταις ταῖς χώραις παράλληλον
ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἑω· κλύζεσθαι δὲ ἀπὸ μὲν
τῶν ἄρκτων τῷ Αἰγαίῳ πελάγει καὶ τῷ Κρητικῷ, ἀπὸ
15 δὲ τοῦ νότου τῷ Λιβυκῷ τῷ συνάπτουντι πρὸς τὸ Αἰ-
γύπτιον πέλαγος. τῶν δὲ ἄκρων τὸ μὲν ἐσπερίον ἐστὶ
τὸ περὶ Φαλάσαρνα, πλάτος ἔχον διακοσίων πον στα-
δίων καὶ εἰς δύο ἀκρωτήρια μεριζόμενον (ὧν τὸ μὲν
νότιον καλεῖται Κριοῦ μέτωπον τὸ δ' ἀρκτικὸν Κίμα-
20 ρος), τὸ δ' ἑῷον τὸ Σαμώνιον ἐστὶν ὑπερπῖπτον τοῦ
Σουνίου οὐ πολὺ πρὸς ἑω.

Μέγεθος δὲ Σωσικράτης μὲν, ὅν φησιν ἀκριβοῦν 3
Ἀπολλόδωρος τὰ περὶ τὴν νῆσον, ἀφορίζεται μήκει
μὲν πλειόνων ἢ δισχιλίων σταδίων καὶ τριακοσίων, C.475
25 πλάτει δὲ * ὑπὸ τὸ μέγεθος, ὥσθ' ὁ κύκλος κατὰ τοῦ-
τον γίνοιτ' ἂν πλέον ἢ πεντακισχίλιοι στάδιοι· Ἀρτε-
μίδωρος δὲ τετρακισχιλίους καὶ ἑκατὸν φησιν. Ἰερῶ-
νυμος δὲ μῆκος δισχιλίων φήσας τὸ δὲ πλάτος ἀνώμα-
λον, πλειόνων ἂν εἴη λέγων τὸν κύκλον ἢ ὅσων Ἀρ-
30 τεμίδωρος. κατὰ δὲ τὸ τρίτον μέρος τοῦ μήκους. . .

τὸ δὲ ἐνθεν ἰσθμὸς ἐστὶν ὥς ἑκατὸν σταδίων ἔχων κα-

τοικιαν πρὸς μὲν τῇ βορείῳ θαλάττῃ Ἀμφίμαλλαν, πρὸς δὲ τῇ νοτίῳ Φοίνικα τὸν Λαμπέων· πλατυτάτῃ δὲ κατὰ τὸ μέσον ἐστὶ, πάλιν δ' ἐντεῦθεν εἰς στενω-
 τερον τοῦ προτέρου συμπίπτουσιν ἰσθμὸν αἱ ῥόες περὶ ἐξήκοντα σταδίων, τὸν ἀπὸ Μινώας τῆς Ἀνττίων 5
 εἰς Ἰεράπυτναν καὶ τὸ Αἰβυκὸν πέλαγος· ἐν κόλπῳ δ' ἐστὶν ἡ πόλις. εἴτα πρόεισιν εἰς ὃξὺ ἀκρωτήριον τὸ Σα-
 μώνιον ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον νεῦον καὶ τὰς Ῥοδίῳ νήσους.

4 "Ἔστι δ' ὀρεινὴ καὶ δασεῖα ἡ νῆσος, ἔχει δ' αὐλῶ-
 νας εὐκάρπους. τῶν δ' ὀρῶν τὰ μὲν πρὸς δύσιν κα- 10
 λεῖται Λευκά, οὐ λειπόμενα τοῦ Ταῦγέτου κατὰ τὸ
 ὕψος, ἐπὶ τὸ μῆκος δ' ἐκτεταμένα ὅσον τριακοσίων
 σταδίων καὶ ποιοῦντα ῥάχιν τελευτῶσάν πως ἐπὶ τὰ
 στενά. ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ κατὰ τὸ εὐρυχωρότατον τῆς
 νήσου τὸ Ἰδαῖον ὄρος ὑψηλότατον τῶν ἐκεῖ, περιφε- 15
 ρὲς δ' ἐν κύκλῳ σταδίων ἑξακοσίων· περιοικεῖται δ'
 ὑπὸ τῶν ἀρίστων πόλεων. ἄλλα δ' ἐστὶ πάρισα τοῖς
 Λευκοῖς, τὰ μὲν ἐπὶ νότον τὰ δ' ἐπὶ τὴν ἑω λήγοντα.

5 "Ἔστι δ' ἀπὸ τῆς Κυρηνάας ἐπὶ τὸ Κριοῦ μέτω-
 πον δυεῖν ἡμερῶν καὶ νυκτῶν πλοῦς, ἀπὸ δὲ Κιμάρου 20
 [ἐπὶ Ταίναρον] εἰςὶ στάδιοι ἑπτακόσιοι (μεταξὺ δὲ Κύ-
 θηρα), ἀπὸ δὲ τοῦ Σαμωνίου πρὸς Αἴγυπτον τεττά-
 ρων ἡμερῶν καὶ νυκτῶν πλοῦς, οἱ δὲ τριῶν φασι·
 σταδίων δ' εἶναι τοῦτόν τινες πεντακισχλίων εἰρήκα-
 σιν, οἱ δὲ ἔτι ἐλάττωνων. Ἐρατοσθένης δ' ἀπὸ μὲν 25
 τῆς Κυρηνάας μέχρι Κριοῦ μετώπου δισχιλίους φη-
 σὶν, ἐνθεν δ' εἰς Πελοπόννησον ἐλάττους. . . .

6 „Ἄλλη δ' ἄλλων γλῶσσα μεμιγμένη“ φησὶν ὁ
 ποιητής „ἐν μὲν Ἀχαιοί, ἐν δ' Ἑτεόκρητες μεγαλήτο-
 „ρες, ἐν δὲ Κύδωνες, Δωριεὲς τε τριχάικες διόι τε 30
 „Πελαγοί.“ τούτων φησὶ Στάφυλος τὸ μὲν πρὸς ἑω
 Δωριεὲς κατέχειν, τὸ δὲ δυσμικὸν Κύδωνας, τὸ [δὲ]

νότιον Ἐτεόκρητας, ὧν εἶναι πολίχμιον Πραῶσον, ὅπου
 τὸ τοῦ Δικταίου Διὸς ἱερόν· τοὺς δ' ἄλλους ἰσχύον-
 τας πλέον οἰκῆσαι τὰ πεδία. τοὺς μὲν οὖν Ἐτεόκρητας
 καὶ τοὺς Κύδωνας αὐτόχθονας ὑπάρξει εἰκός, τοὺς δὲ
 5 λοιποὺς ἐπήλυδας, οὓς ἐκ Θετταλίας φησὶν ἔλθειν Ἀν-
 δρων τῆς Δωριίδος μὲν πρότερον νῦν δὲ Ἑστιαιωτίδος
 λεγομένης· ἐξ ἧς ὠρμήθησαν, ὥς φησιν, οἱ περὶ τὸν
 Παρνασσὸν οἰκῆσαντες Δωριεῖς καὶ ἔκτισαν τὴν τε 0.476
 Ἐρινεὸν καὶ Βοιὸν καὶ Κυτίνιον, ἀφ' οὗ καὶ τριχάικες
 10 ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγονται. οὐ πάνυ δὲ τὸν τοῦ Ἀν-
 δρωνος λόγον ἀποδέχονται, τὴν μὲν τετράπολιν Δω-
 ρίδα τρίπολιν ἀποφαίνοντος, τὴν δὲ μητρόπολιν τῶν
 Δωριέων ἄποικον Θετταλῶν· τριχάικας δὲ δέχονται
 ἦτοι ἀπὸ τῆς τριλοφίας ἢ ἀπὸ τοῦ τριχίνους εἶναι τοὺς
 15 λόφους.

Πόλεις δ' εἶδεν ἐν τῇ Κρήτῃ πλείους μὲν, μέγι- 7
 σται δὲ καὶ ἐπιφανέσταται τρεῖς, Κνωσσὸς Γόρτυνα
 Κυδωνία. διαφερόντως δὲ τὴν Κνωσσὸν καὶ Ὅμηρος
 ὑμνεῖ μεγάλην καλῶν καὶ βασίλειον τοῦ Μίνω καὶ οἱ
 20 ὕστερον. καὶ δὴ καὶ διετέλεσε μέχρι πολλοῦ φερομένη
 τὰ πρῶτα, εἶτα ἐταπεινώθη καὶ πολλὰ τῶν νομίμων
 ἀφηρέθη, μετέστη δὲ τὸ ἀξίωμα εἰς τε Γόρτυναν καὶ
 Ἀύττον, ὕστερον δ' ἀνέλαβε πάλιν τὸ παλαιὸν σχῆμα
 τὸ τῆς μητροπόλεως. κεῖται δ' ἐν πεδίῳ κύκλον ἔχουσα
 25 ἡ Κνωσσὸς τὸν ἀρχαῖον τριάκοντα σταδίων, μεταξὺ
 τῆς Λυκτίας καὶ τῆς Γορτυνίας, [διέχουσα τῆς μὲν Γορ-
 τύνης] σταδίους διακοσίους, τῆς δὲ Ἀύττου, ἣν ὁ ποιη-
 τῆς Ἀύκτον ὠνόμασεν, ἑκατὸν εἴκοσι· τῆς δὲ θαλάτ-
 τος Κνωσσὸς μὲν τῆς βορείου πέντε καὶ εἴκοσι, Γόρ-
 30 τυνα δὲ τῆς Λιβυκῆς ἐνενηκοντα, Ἀύττος δὲ καὶ αὐτὴ

15. post λόφους: εὐαμισολόφος.
 STRABO II.

τῆς Λιβυκῆς ὀγδοήκοντα. ἔχει δ' ἐπίνειον τὸ Ἡρακλειον ἢ Κνωσσός.

8 Μίνω δέ φασιν ἐπινείῳ χρήσασθαι τῷ Ἀμνισῷ, ὅπου τὸ τῆς Εἰλειθυίας ἱερὸν. ἐκαλεῖτο δ' ἡ Κνωσσὸς Καίρατος πρότερον ὁμώνυμος τῷ παραρρέοντι ποταμῷ. Ἰστοῖται δ' ὁ Μίνως νομοθέτης γενέσθαι σπουδαῖος θαλαττοκρατῆσαι τε πρῶτος, τριχῇ δὲ διελὼν τὴν νῆσον ἐν ἐκάστῳ τῷ μέρει κτίσαι πόλιν, τὴν μὲν Κνωσσὸν ἐν τῷ

10

καταντικρὺ τῆς Πελοποννήσου καὶ αὐτὴ δ' ἐστὶ προσβόρειος. ὥς δ' εἴρηκεν Ἐφορος, ζηλωτῆς ὁ Μίνως ἀρχαίου τινὸς Ῥαδαμάνθυος δικαιοτάτου ἀνδρὸς ὁμωνύμου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὃς πρῶτος τὴν νῆσον ἐξημερῶσαι δοκεῖ νομίμοις καὶ συνοικισμοῖς πόλεων καὶ πολιτείαις, σκηψάμενος παρὰ Διὸς φέρειν ἕκαστα τῶν τιθεμένων δογμάτων εἰς μέσον. τοῦτον δὲ μιμούμενος καὶ ὁ Μίνως δι' ἐννέα ἐτῶν, ὥς ἔοικεν, ἀναβαίνων ἐπὶ τὸ τοῦ Διὸς ἄντρον καὶ διατρύβων ἐνθάδε, ἀπῆει συντεταγμένα ἔχων παραγγέλματά τινα, ἃ ἔφασκεν εἶναι προστάγματα τοῦ Διός· ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ τὸν ποιητὴν οὕτως εἰρηκέναι, ἐνθάδε Μίνως ἐννέωρος βασίλευε Διὸς μεγάλου ὁριστῆς. τοιαῦτα δ' εἰπόντος οἱ ἀρχαῖοι περὶ αὐτοῦ πάλιν ἄλλους εἰρήκασιν λόγους ὑπεναντίους τούτοις, ὥς τυραννικός τε γέ-

Ο.477 νοιτο καὶ βίαιος καὶ δασμολόγος, τραγῶδοντες τὰ περὶ τὸν Μινώταυρον καὶ τὸν λαβύρινθον καὶ τὰ Θησεῖ συμβάντα καὶ Δαιδάλῳ.

9 Ταῦτα μὲν οὖν ὁποτέρως ἔχει χαλεπὸν εἰπεῖν· ἔστι δὲ καὶ ἄλλος λόγος οὐχ ὁμολογούμενος, τῶν μὲν ξένων τῆς νήσου τὸν Μίνω λεγόντων τῶν δ' ἐπιχώριον.

ὁ μέντοι ποιητὴς τῇ δευτέρᾳ δοκεῖ μᾶλλον συνηγορεῖν ἀποφάσει, ὅταν φῇ ὅτι [Ζεὺς] „πρῶτον Μίνωα τέκε „Κρήτη ἐπίουρον.“ ὑπὲρ τῆς Κρήτης ὁμολογεῖται διότι κατὰ τοὺς παλαιοὺς χρόνους ἐτύγγανεν εὐνομου-
 5 μένη καὶ ξηλωτὰς ἑαυτῆς τοὺς ἀρίστους τῶν Ἑλλήνων ἀπέφηνεν, ἐν δὲ τοῖς πρώτοις Λακεδαιμονίους, καθάπερ Πλάτων τε ἐν τοῖς νόμοις δηλοῖ καὶ Ἔφορος ἐν τῇ Εὐρώπῃ ἀναγέγραφεν· ὕστερον δὲ πρὸς τὸ χεῖρον μετέβαλεν ἐπὶ πλείστον. μετὰ γὰρ τοὺς Τυρρηνοὺς, οἱ
 10 μάλιστα ἐδήλωσαν τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν, οὗτοί εἰσιν οἱ διαδεξάμενοι τὰ ληστήρια· τούτους δ' ἐπόρθησαν ὕστερον οἱ Κίλικες· κατέλυσαν δὲ πάντας Ῥωμαῖοι τὴν τε Κρήτην ἐκπολεμήσαντες καὶ τὰ πειρατικὰ τῶν Κιλικῶν φρούρια. νῦν δὲ Κνωσσὸς καὶ Ῥωμαίων
 15 ἀποικίαν ἔχει.

Περὶ μὲν οὖν Κνωσσοῦ ταῦτα, πόλεως οὐκ ἄλλο- 10
 τρίας ἡμῖν, διὰ δὲ τάνθρωπίνα καὶ τὰς ἐν αὐτοῖς μεταβολὰς καὶ συντυχίας ἐκλειμμένων τῶν συμβολαίων τῶν ὑπαρξάντων ἡμῖν πρὸς τὴν πόλιν. Δορυ-
 20 λας γὰρ ἦν ἀνὴρ τακτικός, τῶν Μιθριδάτου τοῦ Εὐεργέτου φίλων· οὗτος διὰ τὴν ἐν τοῖς πολεμικοῖς ἐμπειρίαν ξενολογεῖν ἀποδειχθεὶς πολὺς ἦν ἐν τε τῇ Ἑλλάδι καὶ τῇ Θράκῃ, πολὺς δὲ καὶ τοῖς παρὰ τῆς Κρήτης ἰοῦσιν, οὗπω τὴν νῆσον ἐχόντων Ῥωμαίων,
 25 συχνοῦ δὲ ὄντος ἐν αὐτῇ τοῦ μισθοφορικοῦ καὶ στρατιωτικοῦ πλήθους, ἐξ οὗ καὶ τὰ ληστήρια πληροῦσθαι συνέβαινεν. ἐπιδημοῦντος δὲ τοῦ Δορυλάου κατὰ τύχην ἐνέστη πολεμος τοῖς Κνωσσίοις πρὸς τοὺς Γορτυνίους· αἰρεθεὶς δὲ στρατηγὸς καὶ κατορθώσας διὰ τα-
 30 χέων ἤρατο τιμὰς τὰς μεγίστας, καὶ ἐπειδὴ μικρὸν

- ὑστερον ἐξ ἐπιβουλῆς δολοφονηθέντα ἔγνω τὸν Εὐεργέτην ὑπὸ τῶν φίλων ἐν Σινώπῃ, τὴν διαδοχὴν δὲ εἰς γυναικα καὶ παιδιά ἤκουσαν, ἀπογνοὺς τῶν ἐκεῖ κατέμεινεν [ἐν] τῇ Κνωσσῷ· τεκνοποιεῖται δ' ἐκ Μακετιδος γυναικὸς Στερόπης τοῦνομα δύο μὲν υἱεῖς Λαγέ- 5 ταν καὶ Στρατάρχαν, ὧν τὸν Στρατάρχαν ἐσχατόγηρων καὶ ἡμεῖς ἤδη εἶδομεν, θυγατέρα δὲ μίαν. θυεῖν δὲ ὄντων υἱῶν τοῦ Εὐεργέτου διεδέξατο τὴν βασιλείαν Μιθριδάτης ὁ προσαγορευθεὶς Εὐπάτωρ ἑνδεκα ἔτη γεγονώς· τούτῳ σύντροφος ὑπῆρξεν ὁ τοῦ Φιλεταί- 10 C.478ρου Δορύλαος· ἦν δ' ὁ Φιλέταιρος ἀδελφὸς τοῦ τακτικοῦ Δορυλάου. ἀνδρωθεὶς δ' ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τοσοῦτο ἤρητο τῇ συντροφίᾳ τῇ πρὸς τὸν Δορύλαον ὥστ' οὐκ ἐκείνου μόνου εἰς τιμὰς ἤγε τὰς μεγίστας, ἀλλὰ καὶ τῶν συγγενῶν ἐπεμελεῖτο καὶ τοὺς ἐν Κνωσσῷ μετε- 15 πέμπετο· ἦσαν δ' οἱ περὶ Λαγέταν, τοῦ μὲν πατρὸς ἤδη τετελευτηκότος, αὐτοὶ δ' ἠνδρωμένοι, καὶ ἤκον ἀφέντες τὰ ἐν Κνωσσῷ· τοῦ δὲ Λαγέτα θυγάτηρ ἦν ἡ μήτηρ τῆς ἐμῆς μητρός. εὐτυχοῦντος μὲν δὴ ἐκείνου συνευτυχεῖν καὶ τούτοις συνέβαινε, καταλυθέντος δὲ 20 (ἐφωράθη γὰρ ἀφιστὰς τοῖς Ῥωμαίοις τὴν βασιλείαν ἐφ' ᾧ αὐτὸς εἰς τὴν ἀρχὴν καταστήσεται) συγκατελύθη καὶ τὰ τούτων καὶ ἐταπεινώθησαν· ὀλιγορήθη δὲ καὶ τὰ πρὸς τοὺς Κνωσσίους συμβόλαια καὶ αὐτοὺς μυρίας μεταβολὰς δεξαμένους. 25
- 11 Ἀλλὰ γὰρ ὁ μὲν περὶ τῆς Κνωσσοῦ λόγος τοιοῦτος. μετὰ δὲ ταύτην δευτερεῦσαι δοκεῖ κατὰ τὴν δύναμιν ἢ τῶν Γορτυνίων πόλεις. συμπράττουσαί τε γὰρ ἀλλήλαις ἅπαντας ὑπηκόους εἶχον αὗται τοὺς ἄλλους, στασιάσασαί τε διέστησαν τὰ κατὰ τὴν νῆσον· προσ- 30 θήκη δ' ἦν ἡ Κυδωνία μεγίστη ὁποτέροις προσγένουτο. καίται δ' ἐν πεδίῳ καὶ ἡ τῶν Γορτυνίων πόλις,

τὸ παλαιὸν μὲν ἴσως τετειχισμένη (καθάπερ καὶ Ὀμη-
 ρος εἶρηκε „Γόρτυνά τε τειχήεσαν“), ὕστερον δ' ἀπο-
 βαλοῦσα τὸ τεῖχος ἐκ θεμελίων καὶ πάντα τὸν χρόνον
 μείνασα ἀτείχιστος· καὶ γὰρ ὁ Φιλοπάτωρ Πτολε-
 5 μαῖος ἀρξάμενος τειχίζειν ὅσον ἐπὶ ὀγδοήκοντα στα-
 δίους παρῆλθε μόνον· ἀξιόλογον δ' οὖν ἐξεπλήρου
 ποτὲ κύκλον ἢ οἰκησις ὅσον πεντήκοντα σταδίων· διέ-
 χει δὲ τῆς Λιβυκῆς θαλάττης κατὰ Λεβῆνα τὸ ἐμπόριον
 αὐτῆς ἐνευήκοντα· ἔχει δέ τι καὶ ἄλλο ἐπίνειον τὸ Μά-
 10 ταλον, διέχει δ' αὐτῆς ἑκατὸν τριάκοντα. διαρρεῖ δ'
 αὐτὴν ὅλην ὁ Αἰθαῖος ποταμός.

Ἐκ δὲ Λεβήνος ἦν Λευκοκόμας τε καὶ ὁ ἐραστῆς 12
 αὐτοῦ Εὐξύνθετος, οὓς ἱστορεῖ Θεόφραστος ἐν τῷ
 περὶ ἔρωτος λόγῳ, ἄθλων αὖν ὁ Λευκοκόμας τῷ Εὐ-
 15 ξυνθέτῳ προσέταξεν ἕνα φήσας εἶναι τοῦτον, τὸν ἐν
 Πράσῳ κύνα ἀναγαγεῖν αὐτῷ· ὅμοροι δ' εἰσὶν αὐτοῖς
 οἱ Πράσιοι, τῆς μὲν θαλάττης ἐβδομήκοντα Γόρτυνος
 δὲ διέχοντες ἑκατὸν καὶ ὀγδοήκοντα. εἴρηται δὲ ὅτι
 τῶν Ἐτεοκρήτων ὑπῆρχεν ἡ Πραῖσος καὶ διότι ἐνταῦθα
 20 τὸ τοῦ Δικταίου Διὸς ἱερόν· καὶ γὰρ ἡ Δίκτη πλη-
 σίον, οὐχ ὥς Ἀρατος „ὄρεος σχεδὸν Ἰθαίοιο.“ καὶ γὰρ
 χιλίους ἡ Δίκτη τῆς Ἰδῆς ἀπέχει, πρὸς ἀνίσχοντα
 ἥλιον ἀπ' αὐτῆς κειμένη, τοῦ δὲ Σαμωνίου ἑκατόν.
 μεταξὺ δὲ τοῦ Σαμωνίου καὶ τῆς Χερρονήσου ἡ Πραῖ-
 25 σος ἰδρυτο ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἐξήκοντα σταδίοις· κα-
 τέσκαψαν δ' Ἰεραπύτνιοι. οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ τὸν Καλλί-
 μαχον λέγειν φασίν, ὥς ἡ Βριτόμαρτις φεύγουσα τὴν
 Μίνω βίαν ἀπὸ τῆς Δίκτης ἄλοιτο εἰς ἀλίων δίκτυα,
 καὶ διὰ τοῦτο αὐτὴ μὲν Δίκτυννα ὑπὸ τῶν Κυδωνια-
 30 τῶν προσαγορευθεῖη, Δίκτη δὲ τὸ ὄρος· οὐδὲ γὰρ
 ὅλως ἐκ γειτόνων ἐστὶ τοῖς τόποις τούτοις ἡ Κυδωνία,
 πρὸς δὲ τοῖς ἐσπερίοις κεῖται τῆς νήσου πέρασι. τῆς

μέντοι Κυδωνίας ὄρος ἐστὶ Τίτυρος, ἐν ᾧ ἱερόν ἐστιν οὐ Δικταῖον ἀλλὰ Δικτύνναιον.

- 13 Κυδωνία δ' ἐπὶ θαλάττῃ μὲν ἴδρυται βλέπουσα πρὸς τὴν Λακωνικὴν, διέχει δ' ἑκατέρας τὸ ἴσον τῆς τε Κνωσσοῦ καὶ τῆς Γόρτυνος οἶον ὀκτακοσίους στα- 5 δίους, Ἀπτέρας δὲ ὀγδοήκοντα, τῆς ταύτῃ δὲ θαλάττης τετταράκοντα. Ἀπτέρας δ' ἐπίνειόν ἐστι Κίσαμος· πρὸς ἐσπέραν δ' ὁμοροιοῖς Κυδωνιάταις Πολυρρήνιοι, παρ' οἷς ἐστι τὸ τῆς Δικτύννης ἱερόν· ἀπέχουσι δὲ τῆς θαλάττης ὥς τριάκοντα σταδίου, Φαλασάρνης δὲ 10 ἐξήκοντα. κωμηδὸν δ' ὄκουν πρότερον· εἴτ' Ἀχαιοὶ καὶ Λάκωνες συνώκησαν τειχίσαντες ἐρυμνὸν χωρίον βλέπον πρὸς μεσημβρίαν.

- 14 Τῶν δ' ὑπὸ Μίνω συνφορισμένων τριῶν τὴν λοιπὴν (Φαιστός δ' ἦν αὕτη) κατέσκαψαν Γορτύνιοι, τῆς 15 μὲν Γόρτυνος διέχουσιν ἐξήκοντα, τῆς δὲ θαλάττης εἰκοσι, τοῦ δὲ Ματάλου τοῦ ἐπινείου τετταράκοντα· τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν οἱ κατασκάψαντες. Γορτυνίων δ' ἐστὶ καὶ τὸ Ῥύτιον σὺν τῇ Φαιστῷ „Φαιστόν τε Ῥυτιόν τε.“ ἐκ δὲ τῆς Φαιστοῦ τὸν τοὺς καθαρμοὺς ποιή- 20 σαντα διὰ τῶν ἐπῶν Ἐπιμενίδην φασὶν εἶναι. καὶ ὁ Λισσὴν δὲ τῆς Φαιστίας. Αὐττοῦ δέ, ἧς ἐμνήσθημεν καὶ πρότερον, ἐπίνειόν ἐστιν ἡ λεγομένη Χερρόνησος, ἐν ἣ τὸ τῆς Βριτομάρτεως ἱερόν· αἱ δὲ συγκαταλεχθεῖσαι πόλεις οὐκέτ' εἰσὶ Μίλητός τε καὶ Λύκαστος, τὴν 25 δὲ χώραν τὴν μὲν ἐνεύμαντο Αὐττιοὶ τὴν δὲ Κνώσσιοι κατασκάψαντες τὴν πόλιν.

- 15 Τοῦ δὲ ποιητοῦ τὸ μὲν ἐκατόμπολιν λέγοντος τὴν Κρήτην τὸ δὲ ἐνενηκοντάπολιν, Ἐφορος μὲν ὕστερον ἐπικτισθῆναι τὰς δέκα φησὶ μετὰ τὰ Τρωικὰ ὑπὸ τῶν 30

Ἀλθαίμενει τῷ Ἀργεῖῳ συνακολουθησάντων Δωριέων· τὸν μὲν οὖν Ὀδυσσεύς λέγει ἐνενηκοντάπολιν ὀνομάσαι· οὗτος μὲν οὖν πιθανὸς ἐστὶν ὁ λόγος. ἄλλοι δ' ὑπὸ τῶν Ἰδομενέως ἐχθρῶν κατασκαφῆναί φασι τὰς 5 δέκα· ἀλλ' οὔτε κατὰ τὰ Τρωικά φησιν ὁ ποιητὴς ἐκατοντάπολιν ὑπάρχει τὴν Κρήτην, ἀλλὰ μᾶλλον κατ' αὐτόν (ἐκ γὰρ τοῦ ἰδίου προσώπου λέγει· εἰ δ' ἐκ τῶν τότε ὄντων τινὸς ἦν ὁ λόγος, καθάπερ ἐν τῇ Ὀδυσσειᾷ, C. 480 ἡνίκα ἐνενηκοντάπολιν φράζει, καλῶς εἶχεν [ἂν] οὕτω 10 δέχεσθαι), οὔτ' εἰ συγχωρήσαιμεν τοῦτό γε, ὁ ἐξῆς λόγος σώζειτ' ἂν. οὔτε γὰρ κατὰ τὴν στρατείαν οὔτε μετὰ τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν τοῦ Ἰδομενέως εἰκὸς ἐστὶν ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ τὰς πόλεις ἠφανίσθαι ταύτας· ὁ γὰρ ποιητὴς φήσας „πάντας δ' Ἰδομενεὺς 15 „Κρήτην εἰσήγαγ' ἐταίρους, οἳ φύγον ἐκ πολέμου, „πόντος δέ οἱ οὔτιν' ἀπηύρα,“ καὶ τούτου τοῦ πάθους ἐμέμνητ' ἂν· οὐ γὰρ δήπου Ὀδυσσεὺς μὲν ἔγνω τὸν ἀφανισμόν τῶν πόλεων ὁ μὴδενὶ συμμῖξας τῶν Ἑλλήνων μήτε κατὰ τὴν πλάνην μήθ' ὕστερον, ὁ δὲ καὶ συ- 20 στρατεύσας τῷ Ἰδομενεὶ καὶ συνανασωθεὶς οὐκ ἔγνω τὰ συμβάντα οἱκοὶ αὐτῷ. ἀλλὰ μὴν οὐδὲ μετὰ τὴν ἐπάνοδον· εἰ γὰρ μετὰ πάντων ἐσώθη τῶν ἐταίρων, ἰσχυρὸς ἐπανῆλθεν, ὥστ' οὐκ ἔμελλον ἰσχύσειν οἱ ἐχθροὶ τοσοῦτον ὅσον δέκα ἀφαιρεῖσθαι πόλεις αὐτόν.

25 Τῆς μὲν οὖν χώρας τῶν Κρητῶν τοιαύτη τις ἡ πε- 16 ριοδεία. τῆς δὲ πολιτείας ἥς Ἐφορος ἀνέγραψε τὰ κυριώτατα ἐπιδραμεῖν ἀποχρώντως ἂν ἔχοι. δοκεῖ δὲ, φησὶν, ὁ νομοθέτης μέγιστον ὑποθέσθαι ταῖς πόλεσιν ἀγαθὸν τὴν ἐλευθερίαν· μόνην γὰρ ταύτην ἴδια ποιεῖν 30 τῶν κτησαμένων τὰ ἀγαθὰ, τὰ δ' ἐν δουλείᾳ τῶν ἀρ-

12. ante εἰκός· ὡς 21. post αὐτῷ· κατὰ τὴν στρατείαν οὔτε τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν.

χόντων ἀλλ' οὐχὶ τῶν ἀρχομένων εἶναι· τοῖς δ' ἔχουσι
ταύτην φυλακῆς δεῖν· τὴν μὲν οὖν ὁμόνοιαν διχοστα-
σίας αἰρομένης ἀπαντᾶν, ἣ γίνεται διὰ πλεονεξίαν καὶ
τρυφὴν· σωφρόνως γὰρ καὶ λιτῶς ζῶσιν ἅπανσιν οὔτε
φθόνον οὔθ' ὕβριν οὔτε μῖσος ἀπαντᾶν πρὸς τοὺς 5
ὁμοίους· διόπερ τοὺς μὲν παῖδας εἰς τὰς ὀνομαζομέ-
νας ἀγέλας κελεῦσαι φοιτᾶν, τοὺς δὲ τελείους ἐν τοῖς
συσσιτίοις ἃ καλοῦσιν ἀνδρεῖα συσσιτεῖν, ὅπως τῶν
ἴσων μετὰσχοιεν τοῖς εὐπόροις οἱ πενέστεροι δημοσίᾳ
τρεφόμενοι· πρὸς δὲ τὸ μὴ δειλίαν ἀλλ' ἀνδρείαν κρα- 10
τεῖν ἐκ παιδῶν ὅπλοις καὶ πόνοις συντρέφειν, ὥστε
καταφρονεῖν καύματος καὶ ψύχους καὶ τραχείας ὁδοῦ
καὶ ἀνάντους καὶ πληγῶν τῶν ἐν γυμνασίοις καὶ μά-
χαις ταῖς κατὰ σύνταγμα· ἀσκεῖν δὲ καὶ τοξικῇ καὶ ἐνο-
πλίῳ ὀρχήσει, ἣν καταδείξει Κουρῆτα πρῶτον, ὥστε- 15
ρον δὲ καὶ συντάξαντα τὴν κληθεῖσαν ἀπ' αὐτοῦ πυρ-
ρίχην, ὥστε μὴδὲ τὴν παιδιὰν ἄμοιρον εἶναι τῶν πρὸς
πόλεμον χρησίμων· ὥς δ' αὐτῶς καὶ τοῖς ῥυθμοῖς Κρη-
τικοῖς χρῆσθαι κατὰ τὰς ῥῥὰς συντονωτάτοις οὖσιν
C.481 οὓς Θάλητα ἀνευρεῖν, ᾧ καὶ τοὺς παιᾶνας καὶ τὰς ἄλ- 20
λας τὰς ἐπιχωρίους ῥῥὰς ἀνατιθέασι καὶ πολλὰ τῶν
νομίμων· καὶ ἐσθῆτι δὲ καὶ ὑποδέσει πολεμικῇ χρῆ-
σθαι, καὶ τῶν δώρων τιμιώτατα αὐτοῖς εἶναι τὰ ὅπλα.

17 Λέγεσθαι δ' ὑπὸ τινων ὡς Λακωνικὰ εἶη τὰ πολλὰ
τῶν νομιζομένων Κρητικῶν, τὸ δ' ἀληθὲς εὐρῆσθαι 25
μὲν ὑπ' ἐκείνων, ἡκριβωκέναι δὲ τοὺς Σπαρτιάτας,
τοὺς δὲ Κρητάς ὀλιγωρῆσαι, κακωθεισῶν τῶν πόλεων
καὶ μάλιστα τῆς Κνωσσίων, τῶν πολεμικῶν· μεῖναι δέ
τινα τῶν νομίμων παρὰ Ἀντιίοις καὶ Γορτυνίοις καὶ
ἄλλοις τισὶ πολυχύοις μᾶλλον ἢ παρ' ἐκείνοις· καὶ δὴ 30
καὶ τὰ Ἀντιίων νόμιμα ποιεῖσθαι μαρτύρια τοὺς τὰ
Λακωνικὰ πρεσβύτερα ἀποφαίνοντας· ἀποίκους γὰρ

ὄντας φυλάττειν τὰ τῆς μητροπόλεως ἔθνη, ἐπεὶ ἄλλως
 γε εὐήθεις εἶναι τὸ τοὺς βέλτιον συνεστώτας καὶ πολι-
 τευομένους τῶν χειρόνων ζηλωτὰς ἀποφαίνειν· οὐκ
 εὖ δὲ ταῦτα λέγεσθαι· οὔτε γὰρ ἐκ τῶν νῦν καθεστη-
 5 κόντων τὰ παλαιὰ τεκμηριοῦσθαι δεῖν, εἰς τὰναντία
 ἑκατέρων μεταπεπτωκότων· καὶ γὰρ ναυκρατεῖν πρό-
 τερον τοὺς Κρηῖτας, ὥστε καὶ παροιμιάζεσθαι πρὸς
 τοὺς προσποιουμένους μὴ εἰδέναι ἃ ἴσασιν „ὁ Κρῆς
 „ἄγνωστὴν θάλατταν,“ νῦν δ' ἀποβεβληκέναι τὸ
 10 ναυτικόν· [οὔτε] ὅτι ἄποικοί τινες τῶν πόλεων γεγό-
 νασι τῶν ἐν Κρήτῃ Σπαρτιατῶν, ἐν τοῖς ἐκείνων νο-
 μίμοις διαμένειν ἐπηναγκάσθαι· πολλὰς γοῦν τῶν
 ἀποικίδων μὴ φυλάττειν τὰ πάτρια, πολλὰς δὲ καὶ
 τῶν μὴ ἀποικίδων ἐν Κρήτῃ τὰ αὐτὰ ἔχειν τοῖς ἀποί-
 15 κοῖς ἔθνη.

Τῶν τε Σπαρτιατῶν τὸν νομοθέτην Λυκοῦργον 18
 πέντε γενεαῖς νεώτερον Ἀθηναίμενους εἶναι τοῦ στεί-
 λαντος τὴν εἰς Κρήτην ἀποικίαν· τὸν μὲν γὰρ ἱστορεῖ-
 σθαι Κίσσου παῖδα τοῦ τὸ Ἄργος κτίσαντος περὶ τὸν
 20 αὐτὸν χρόνον ἡνίκα Προκλῆς τὴν Σπάρτην συνώκισε,
 Λυκοῦργον δ' ὁμολογεῖσθαι παρὰ πάντων ἕκτον ἀπὸ
 Προκλέους γεγονέναι· τὰ δὲ μιμήματα μὴ εἶναι πρό-
 τερα τῶν παραδειγμάτων μηδὲ τὰ νεώτερα τῶν πρε-
 σβυτέρων· τὴν τε ὄρχησιν τὴν παρὰ τοῖς Λακεδαιμο-
 25 νίοις ἐπιχωριάζουσιν καὶ τοὺς ὀρθμοὺς καὶ παιᾶνας
 τοὺς κατὰ νόμον ἄδομένους καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν νομί-
 μων Κρητικὰ καλεῖσθαι παρ' αὐτοῖς ὡς ἂν ἐκεῖθεν ὁρ-
 μώμενα· τῶν δ' ἀρχαίων τὰ μὲν καὶ τὰς διοικήσεις
 ἔχειν τὰς αὐτὰς καὶ τὰς ἐπωνυμίας, ὥσπερ καὶ τὴν τῶν
 30 γερόντων ἀρχὴν καὶ τὴν τῶν ἱππέων (πλὴν ὅτι τοὺς
 ἐν Κρήτῃ ἱππέας καὶ ἵππους κεκτῆσθαι συμβέβηκεν· C.482
 ἐξ οὗ τεκμαίρονται πρεσβυτέραν εἶναι τῶν ἐν Κρήτῃ

ἰππέων τὴν ἀρχήν· σῶζειν γὰρ τὴν ἐτυμότητα τῆς προσηγορίας· τοὺς δὲ μὴ ἱπποτροφεῖν), τοὺς ἐφόρους δὲ τὰ αὐτὰ τοῖς ἐν Κρήτῃ κόσμοις διοικούντας ἑτέρως ὠνομάσθαι· τὰ δὲ συσσίτια ἀνδρεῖα παρὰ μὲν τοῖς Κρησὶν καὶ νῦν ἔτι καλεῖσθαι, παρὰ δὲ τοῖς Σπαρτιά- 5 ταις μὴ διαμεῖναι καλούμενα ὁμοίως πρότερον· παρ' Ἀλκμᾶνι γοῦν οὕτω κεῖσθαι „φοῖναις δὲ καὶ ἐν θιά- „σοισιν ἀνδρεῖων παρὰ δαιτυμόνεσσι πρέπει παιᾶνα „κατάρχειν.“

- 19 *Λέγεσθαι δ' ὑπὸ τῶν Κρητῶν ὡς καὶ παρ' αὐτοὺς 10 ἀφίκοιτο Λυκοῦργος κατὰ τοιαύτην αἰτίαν· ἀδελφὸς ἦν πρεσβύτερος τοῦ Λυκούργου Πολυδέκτης· οὗτος τελευτῶν ἔγκυον κατέλιπε τὴν γυναῖκα· τέως μὲν οὖν ἐβασίλευεν ὁ Λυκοῦργος ἀντὶ τοῦ ἀδελφοῦ, γενομένου δὲ παιδὸς ἐπετρόπευεν ἐκεῖνον, εἰς ὃν ἡ ἀρχὴ καθή- 15 κουςα ἐτύγγανε· λοιδορούμενος δὴ τις αὐτῷ σαφῶς εἶπεν εἰδέναι διότι βασιλεύσοι· λαβὼν δ' ὑπόνοιαν ἐκεῖνος ὡς ἐκ τοῦ λόγου τούτου διαβάλλοιτο ἐπιβουλή ἐξ αὐτοῦ τοῦ παιδός, δείσας μὴ ἐκ τύχης ἀποθανόν- 20 τος αἰτίαν αὐτὸς ἔχοι παρὰ τῶν ἐχθρῶν, ἀπῆρεν εἰς Κρήτην. ταύτην μὲν δὴ λέγεσθαι τῆς ἀποδημίας αἰ- 25 τίαν· ἐλθόντα δὲ πλησιάσαι Θάλητι μελοποιῷ ἀνδρὶ καὶ νομοθετικῷ, ἱστορήσαντα δὲ παρ' αὐτοῦ τὸν τρόπον ὃν Ῥαδάμανθός τε πρότερον καὶ ὕστερον Μί- 30 νως, ὡς παρὰ τοῦ Αἰῶς, τοὺς νόμους ἐκφέρει εἰς ἀν- 35 θρώπους, γενόμενον δὲ καὶ ἐν Αἰγύπτῳ καὶ κατα- μαθόντα καὶ τὰ ἐκεῖ νόμιμα, ἐντυχόντα δ', ὥς φασί τινες, καὶ Ὀμήρῳ διατρίβοντι ἐν Χίῳ, κατὰραι πάλιν εἰς τὴν οἰκίαν, καταλαβεῖν δὲ τὸν τοῦ ἀδελφοῦ υἱὸν τὸν Πολυδέκτου Χαρίλαον βασιλεύοντα· εἶθ' ὁρμῆσαι 30 διαθεῖναι τοὺς νόμους φοιτῶντα ὡς τὸν θεὸν τὸν ἐν Δελφοῖς, κακείθεν κομίζοντα τὰ προστάγματα, καθά-*

περ οἱ περὶ Μίνω ἐκ τοῦ ἄντρου τοῦ Διὸς παραπλήσια
ἐκείνοις τὰ πλείω.

Τῶν Κρητικῶν τὰ κυριώτατα τῶν καθ' ἕκαστα 20
τοιαῦτα εἶρηκε. γαμεῖν μὲν ἅμα πάντες ἀναγκάζονται
5 παρ' αὐτοῖς οἱ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἐκ τῆς τῶν παί-
δων ἀγέλης ἐκκριθέντες, οὐκ εὐθὺς δ' ἄγονται παρ'
ἑαυτοὺς τὰς γαμηθείσας παῖδας, ἀλλ' ἐπὶ ἡδὴ διοι-
κεῖν ἱκαναὶ ὧσι τὰ περὶ τοὺς οἴκους· φερνὴ δ' ἐστίν,
ἂν ἀδελφοὶ ὧσι, τὸ ἥμισυ τῆς τοῦ ἀδελφοῦ μερίδος·
10 παῖδας δὲ γράμματά τε μαυθάνειν καὶ τὰς ἐκ τῶν νό-
μων ῥῶδὰς καὶ τινα εἶδη τῆς μουσικῆς. τοὺς μὲν οὖν ἐτι 483
νεωτέρους εἰς τὰ συσσίτια ἄγουσι τὰ ἀνδρεῖα· χαμαὶ
δὲ καθήμενοι διαιτῶνται μετ' ἀλλήλων ἐν φαύλοις
τριβωνίοις καὶ χειμῶνος καὶ θέρους τὰ αὐτά, διακο-
15 νοῦσί τε καὶ ἑαυτοῖς καὶ τοῖς ἀνδράσι· συμβάλλουσι
δ' εἰς μάχην καὶ οἱ ἐκ τοῦ αὐτοῦ συσσιτίου πρὸς ἀλλή-
λους, καὶ πρὸς ἕτερα συσσίτια· καθ' ἕκαστον δὲ ἀν-
δρεῖον ἐφέστηκε παιδονόμος· οἱ δὲ μείζους· εἰς τὰς ἀγέ-
λας ἄγονται· τὰς δ' ἀγέλας συνάγουσιν οἱ ἐπιφανέ-
20 στατοι τῶν παίδων καὶ δυνατώτατοι ἕκαστος ὅσους
πλείστους οἷός τε ἐστὶν ἀθροίζων· ἐκάστης δὲ τῆς ἀγέ-
λης ἄρχων ἐστὶν ὥς τὸ πολὺ ὁ πατὴρ τοῦ συναγαγόν-
τος, κύριος ὢν ἐξάγειν ἐπὶ θήραν καὶ δρόμους, τὸν δ'
ἀπειθοῦντα κολάζειν· τρέφονται δὲ δημοσίᾳ· τακταῖς
25 δέ τισιν ἡμέραις ἀγέλη πρὸς ἀγέλην συμβάλλει μετὰ
αὐλοῦ καὶ λύρας εἰς μάχην ἐν ῥυθμῷ, ὥσπερ καὶ ἐν
τοῖς πολεμικοῖς εἰώθασιν, ἐκφέρουσι δὲ καὶ τὰς πλη-
γὰς τὰς μὲν διὰ χειρὸς τὰς δὲ καὶ δι' ὅπλων σιδηρῶν.

Ἴδιον δ' αὐτοῖς τὸ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμον· οὐ 21
30 γὰρ πειθοὶ κατεργάζονται τοὺς ἐρωμένους ἀλλ' ἄρ-
παγῇ· προλέγει τοῖς φίλοις πρὸ τριῶν ἢ πλειόνων ἡμε-
ρῶν ὁ ἐραστὴς ὅτι μέλλει τὴν ἀρπαγὴν ποιῆσθαι· τοῖς

δ' ἀποκρύπτειν μὲν τὸν παῖδα ἢ μὴ εἶν πορεύεσθαι
 τὴν τεταγμένην ὁδὸν τῶν αἰσχύστων ἐστίν, ὥς ἐξομο-
 λογουμένοις ὅτι ἀνάξιος ὁ παῖς εἴη τοιούτου ἐραστοῦ
 τυγχάνειν· συνιόντες δ', ἂν μὲν τῶν ἴσων ἢ τῶν ὑπερ-
 εχόντων τις ἢ τοῦ παιδὸς τιμῇ καὶ τοῖς ἄλλοις ὁ ἀρπά- 5
 ζων, ἐπιδιώκοντες ἀνθήψαντο μόνον μετρίως τὸ νό-
 μιμον ἐκπληροῦντες, τᾶλλα δ' ἐπιτρέπουσιν ἄγειν χαί-
 ροντες· ἂν δ' ἀνάξιος, ἀφαιροῦνται· πέρας δὲ τῆς
 ἐπιδιώξεώς ἐστιν ἕως ἂν ἄχθῃ ὁ παῖς εἰς τὸ τοῦ ἀρπά-
 σαντος ἀνδρείον. ἐράσμιον δὲ νομίζουσιν οὐ τὸν κάλ- 10
 λει διαφέροντα, ἀλλὰ τὸν ἀνδρεῖα καὶ κοσμιότητι
 καὶ δωρησάμενος ἀπάγει τὸν παῖδα τῆς χώρας εἰς ὃν
 βούλεται τόπον· ἐπακολουθοῦσι δὲ τῇ ἀρπαγῇ οἱ πα-
 ραγενόμενοι, ἐστιαθέντες δὲ καὶ συνθηρεύσαντες δι-
 μνηνον (οὐ γὰρ ἔξεστι πλείω χρόνον κατέχειν τὸν παῖδα) 15
 εἰς τὴν πόλιν καταβαίνουσιν. ἀφίεται δ' ὁ παῖς δῶρα
 λαβὼν στολὴν πολεμικὴν καὶ βοῦν καὶ ποτήριον. ταῦτα
 μὲν τὰ κατὰ τὸν νόμον δῶρα καὶ ἄλλα πλείω
 καὶ πολυτελῆ, ὥστε συνερανίζειν τοὺς φίλους διὰ τὸ
 πληῆθος τῶν ἀναλωμάτων. τὸν μὲν οὖν βοῦν θύει τῷ 20
 Διὶ καὶ ἐστιᾷ τοὺς συγκαταβαίνοντας, εἴτ' ἀποφαίνε-
 ται περὶ τῆς πρὸς τὸν ἐραστὴν ὁμιλίας εἴτ' ἀσμενίζων
 C.484 τετύχηκεν εἴτε μὴ, τοῦ νόμου τοῦτ' ἐπιτρέψαντος, ἵν'
 εἴ τις αὐτῷ βία προσενήνεκται κατὰ τὴν ἀρπαγὴν, ἐν-
 ταῦθα παρῇ τιμωρεῖν ἑαυτῷ καὶ ἀπαλλάττεσθαι. τοῖς 25
 δὲ καλοῖς τὴν ιδέαν καὶ προρόνων ἐπιφανῶν [αἰσχρὸν]
 ἐραστῶν μὴ τυχεῖν, ὥς διὰ τὸν τρόπον τοῦτο παθοῦ-
 σιν. ἔχουσι δὲ τιμὰς οἱ παρασταθέντες (οὕτω γὰρ κα-
 λοῦσι τοὺς ἀρπαγέοντας)· ἐν τε γὰρ τοῖς χοροῖς καὶ τοῖς
 δρόμοις ἔχουσι τὰς ἐντιμοτάτας χώρας, τῇ τε στολῇ 30
 κοσμεῖσθαι διαφερόντως τῶν ἄλλων ἐφίεται τῇ δο-
 θείσῃ παρὰ τῶν ἐραστῶν, καὶ οὐ τότε μόνον ἀλλὰ καὶ

τέλειοι γενόμενοι διάσημον ἐσθῆτα φέρουσιν, ἀφ' ἧς
 γνωσθήσεται ἕκαστος κλεινὸς γενόμενος· τὸν μὲν γὰρ
 ἐρώμενον καλοῦσι κλεινὸν τὸν δ' ἐραστὴν φιλήτορα.
 ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμα. ἄρχοντας δὲ 22
 5 δέκα αἰροῦνται· περὶ δὲ τῶν μεγίστων συμβούλοις
 χρῶνται τοῖς γέρονσι καλουμένοις· καθίστανται δ' εἰς
 τοῦτο τὸ συνέδριον οἱ τῆς τῶν κόσμων ἀρχῆς ἡξιωμέ-
 νοι καὶ τᾶλλα δόκιμοι κρινόμενοι. ἄξιαν δ' ἀναγρα-
 φῆς τὴν τῶν Κρητῶν πολιτείαν ὑπέλαβον διὰ τε τὴν
 10 ιδιότητα καὶ τὴν δόξαν· οὐ πολλὰ δὲ διαμένει τούτων
 τῶν νομίμων, ἀλλὰ τοῖς Ῥωμαίων διατάγμασι τὰ πλεῖ-
 στα διοικεῖται, καθάπερ καὶ ἐν ταῖς ἄλλαις ἐπαρχίαις
 συμβαίνει.

Περὶ δὲ τὴν Κρήτην εἰσὶ νῆσοι, Θήρα μὲν ἡ τῶν 3
 15 Κυρηναίων μητρόπολις, ἄποικος Λακεδαιμονίων, καὶ
 πλησίον ταύτης Ἀνάφη, ἐν ἣ τὸ τοῦ Αἰγλήτου Ἀπόλ-
 λωνος ἱερόν. λέγει δὲ καὶ Καλλίμαχος τοτὲ μὲν οὕτως
 „Αἰγλήτην Ἀνάφην τε Λακωνίδι γείτονα Θήρη“, τοτὲ
 δὲ τῆς Θήρας μνησθεὶς „μήτηρ εὐίππου πατρίδος ἡμε-
 20 „τέρης.“ ἔστι δὲ μακρὰ ἡ Θήρα, διακοσίων οὔσα τὴν
 περίμετρον σταδίων, κειμένη δὲ κατὰ Δίαν νῆσον τὴν
 πρὸς Ἡρακλείῳ τῷ Κνωσσίῳ, διέχει δὲ τῆς Κρήτης εἰς
 ἑπτακοσίους· πλησίον δ' αὐτῆς ἡ τε Ἀνάφη καὶ Θηρα-
 σία. ταύτης δ' εἰς ἑκατὸν ἀπέχει νησίδιον Ἴος, ἐν ᾧ
 25 κεκηδεῦσθαί τινές φασι τὸν ποιητὴν Ὀμηρον· ἀπὸ δὲ
 τῆς Ἴου πρὸς ἐσπέραν ἰόντι Σίκινος καὶ Λάγουσα καὶ
 Φολέγανδρος, ἣν Ἄρατος σιδηρεῖην ὀνομάζει διὰ τὴν
 τραχύτητα· ἐγγὺς δὲ τούτων Κίμωλος, ὅθεν ἡ γῆ ἡ
 Κιμωλία· ἔνθεν ἡ Σίφνος ἐν ὅψει ἐστίν, ἐφ' ἣ λέγουσι
 30 Σίφνιον ἀστράγαλον διὰ τὴν εὐτέλειαν. ἔτι δ' ἐγγυ-
 τέρω καὶ τῆς Κιμώλου καὶ τῆς Κρήτης ἡ Μήλος ἄξιο-
 λογωτέρα τούτων, διέχουσα τοῦ Ἑρμιονικοῦ ἀκρωτη-

ρίου τοῦ Σκυλλαίου σταδίους ἑπτακοσίους· τοσούτους δὲ σχεδόν τι καὶ τοῦ Δικτυνναίου· Ἀθηναῖοι δὲ ποτε πέμψαντες στρατεῖαν ἠβηδὸν κατέσφαξαν τοὺς πλείους. αὐταὶ μὲν οὖν ἐν τῷ Κρητικῷ πελάγει, ἐν δὲ τῷ Αἰγαίῳ μᾶλλον αὐτῇ τε ἢ Δῆλος καὶ αἱ περὶ αὐτὴν Κυ- 5 κλάδες καὶ αἱ ταύταις προσκείμεναι Σποράδες, ὧν εἰσι καὶ αἱ λεχθεῖσαι περὶ τὴν Κρήτην.

- 2 Ἡ μὲν οὖν Δῆλος ἐν πεδίῳ κειμένην ἔχει τὴν πόλιν καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τὸ Αἰτῶν· ὑπέρεκται δὲ τῆς πόλεως ὄρος ψιλὸν ὃ Κύνθος καὶ τραχύ, 10 ποταμὸς δὲ διαρρεῖ τὴν νῆσον Ἴνωπὸς οὐ μέγας· καὶ γὰρ ἡ νῆσος μικρά· τετίμηται δὲ ἐκ παλαιοῦ διὰ τοὺς θεοὺς ἀπὸ τῶν ἡρωικῶν χρόνων ἀρξαμένη· μυθεύεται γὰρ ἐνταῦθα ἡ Αἰτὰ τὰς ὠδῖνας ἀποθέσθαι τοῦ τε Ἀπόλλωνος καὶ τῆς Ἀρτέμιδος. „ἦν γὰρ τοπάροιθε 15 „φορητά“ φησὶν ὁ Πίνδαρος „κυμάτεσσιν παντοδα- „πῶν τ’ ἀνέμων ῥιπαῖσιν· ἀλλ’ ἅ Κοιογενῆς ὁπότ’ „ὠδίνεσσι θύοισ’ ἀγκιτόκοις ἐπέβα νιν, δὴ τότε τέσ- „σαρες ὀρθαὶ πρέμνων ἀπώρουσαν χθονίων, ἂν δ’ „ἐπικράνοις σχέθον πέτραν ἄδαμαντοπέδιλοι κίονες· 20 „ἐνθα τεκοῖς’ εὐδαίμον’ ἐπόψατο γένναν.“ ἐνδοξον δ’ ἐποίησαν αὐτὴν αἱ περιοικίδες νῆσοι, καλούμεναι Κυκλάδες, κατὰ τιμὴν πέμπουσai δημοσίᾳ θεωρούς τε καὶ θυσίας καὶ χοροὺς παρθένων πανηγύρεις τε ἐν αὐτῇ συνάγουσαι μεγάλας.

25

- 3 Κατ’ ἀρχὰς μὲν οὖν δώδεκα λέγονται· προσεγέ- νοντο δὲ καὶ πλείους. Ἀρτεμίδωρος γοῦν [πεντεκαίδε- 30 κα] διαριθμεῖται, περὶ τῆς Ἑλένης εἰπὼν ὅτι ἀπὸ Θορίκου μέχρι Σουνίου παράκειται μακρὰ σταδίων ὅσον ἐξή- χοντα τὸ μῆκος, ἀπὸ ταύτης γὰρ, φησὶν, αἱ καλούμεναι 30 Κυκλάδες εἰσὶν· ὀνομάζει δὲ Κέω τὴν ἐγγυτάτω τῇ Ἑλένῃ, καὶ μετὰ ταύτην Κύθνον καὶ Σέριφον καὶ Μῆ-

λον καὶ Σίφνον καὶ Κίμωλον καὶ Πρεπέσινθον καὶ
 Ὠλίαρον, καὶ πρὸς ταύταις Πάρον Νάξον Σύρον Μύ-
 κονον Τήνον Ἄνδρον Γύαρον. τὰς μὲν οὖν ἄλλας τῶν
 δώδεκα νομίζω, τὴν δὲ Πρεπέσινθον καὶ Ὠλίαρον καὶ
 5 Γύαρον ἦττον· ὧν τῇ Γυάρῳ προσορμισθεὶς ἔγνων
 κωμίον ὑπὸ ἀλιέων συνοικούμενον· ἀπαίροντες δ' ἔδε-
 ξάμεθα πρεσβευτὴν ἐνθένδε ὡς Καίσαρα προκεχειρι-
 σμένον τῶν ἀλιέων τινά (ἦν δ' ἐν Κορίνθῳ Καῖσαρ
 βαδίζων ἐπὶ τὸν θρίαμβον τὸν Ἀκτιακόν)· συμπλέων
 10 δὴ ἔλεγε πρὸς τοὺς πνυθομένους ὅτι πρεσβεύοι περὶ
 κουφισμοῦ τοῦ φόρου· τελοῖεν γὰρ δραχμὰς ἑκατὸν
 πεντήκοντα καὶ τὰς ἑκατὸν χαλεπῶς ἂν τελοῦντες. δη-
 486 λοῖ δὲ τὰς ἀπορίας αὐτῶν καὶ Ἄρατος ἐν τοῖς κατὰ λε-
 πτόν „ὦ Ἀητοῖ, σὺ μὲν ἢ με σιδηρεῖν Φολεγάνδρῳ
 15 „δειλὴν ἢ Γυάρῳ παρελεύσεαι αὐτίχ' ὁμοίην.“

Τὴν μὲν οὖν Ἀῆλον ἐνδοξον γενομένην οὕτως ἐτι 4
 μᾶλλον ἠϋΐησε κατασκαφείσα ὑπὸ Ῥωμαίων Κόριν-
 θος· ἐκεῖσε γὰρ μετεχώρησαν οἱ ἔμποροι, καὶ τῆς ἀτε-
 λείας τοῦ ἱεροῦ προκαλουμένης αὐτοὺς καὶ τῆς εὐκαι-
 20 ρίας τοῦ λιμένος· ἐν καλῷ γὰρ κεῖται τοῖς ἐκ τῆς Ἰτα-
 λίας καὶ τῆς Ἑλλάδος εἰς τὴν Ἀσίαν πλέουσιν· ἢ τε πα-
 νήγυρις ἐμπορικόν τι πρᾶγμα ἐστὶ, καὶ συνήθεις ἦσαν
 αὐτῇ καὶ Ῥωμαῖοι τῶν ἄλλων μάλιστα, καὶ ὅτε συνειστή-
 κει ἡ Κόρινθος· Ἀθηναῖοί τε λαβόντες τὴν νῆσον καὶ
 25 τῶν ἱερῶν ἅμα καὶ τῶν ἐμπορῶν ἐπεμελοῦντο ἱκανῶς·
 ἐπελθόντες δ' οἱ τοῦ Μιθριδάτου στρατηγοὶ καὶ ὁ ἀπο-
 στήσας τύραννος αὐτὴν διελυμῆναντο πάντα, καὶ πα-
 ρέλαβον ἐρήμην οἱ Ῥωμαῖοι πάλιν τὴν νῆσον, ἀναχω-
 ρήσαντος εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ βασιλέως, καὶ διετέλεσε
 30 μέχρι νῦν ἐνδεῶς πράττουσα. ἔχουσι δ' αὐτὴν Ἀθη-
 ναῖοι. Ῥήναια δ' ἔρημον νησιδίον ἐστὶν ἐν τέτταρσι 5
 τῆς Δήλου σταδίοις, ὅπου τὰ μνήματα τοῖς Ἀηλίοις

ἐστίν. οὐ γὰρ ἔξεστιν ἐν αὐτῇ τῇ Δήλῳ θάπτειν οὐδὲ καίειν νεκρόν. οὐκ ἔξεστι δὲ οὐδὲ κύναι ἐν Δήλῳ τρέφειν. ὠνομάζετο δὲ καὶ Ὀρτυγία πρότερον.

6 Κέως δὲ τετράπολις μὲν ὑπῆρξε, λείπονται δὲ δύο, ἣ τε Ἴουλις καὶ ἡ Καρθαία, εἰς αἷς συνεπολιόσθησαν αἱ 5
λοιπαί, ἡ μὲν Ποιήεσσα εἰς τὴν Καρθαίαν ἡ δὲ Κορη-
σία εἰς τὴν Ἰουλίδαν. ἐκ δὲ τῆς Ἰουλίδος ὅ τε Σιμωνίδης
ἦν ὁ μελοποιὸς καὶ Βακχυλίδης ἀδελφιδοῦς ἐκείνου,
καὶ μετὰ ταῦτα Ἐρασίστρατος ὁ ἰατρὸς καὶ τῶν ἐκ τοῦ
περιπάτου φιλοσόφων Ἀρίστων ὁ τοῦ Βορουθενίτου 10
Βίωνος ζηλωτής. παρὰ τούτοις δὲ δοκεῖ τεθῆναι ποτε
νόμος, οὗ μέμνηται καὶ Μένανδρος „καλὸν τὸ Κείων
„νόμιμόν ἐστι, Φανία· ὁ μὴ δυνάμενος ξῆν καλῶς οὐ
„ξῆ κακῶς.“ προσέταττε γάρ, ὥς ἔοικεν, ὁ νόμος τοὺς
ὑπὲρ ἐξήκοντα ἔτη γεγονότας κωνειάζεσθαι καὶ τοῦ 15
διαρκεῖν τοῖς ἄλλοις τὴν τροφήν· καὶ πολιορκουμέ-
νους δὲ ποτε ὑπ' Ἀθηναίων ψηφίσασθαι φασὶ τοὺς
πρεσβυτάτους ἐξ αὐτῶν ἀποθανεῖν, ὀρισθέντος πλή-
θους ἐτῶν, τοὺς δὲ παύσασθαι πολιορκοῦντας. κεῖται
δ' ἐν ὄρει τῆς θαλάττης διέχουσα ἡ πόλις ὅσον πέντε 20
καὶ εἴκοσι σταδίους, ἐπίνειον δ' ἐστὶν αὐτῆς τὸ χωρίον
ἐν ᾧ ἱδρυτο ἡ Κορησία κατοικίαν οὐδὲ κώμης ἔχουσα.

C.487 ἐστὶ δὲ καὶ πρὸς τῇ Κορησίᾳ Σμινθαίου Ἀπόλλωνος
ιερόν καὶ πρὸς Ποιήεσση, μετὰ δὲ τοῦ ἱεροῦ καὶ τῶν
τῆς Ποιήεσσης ἐρειπίων τὸ τῆς Νεδουσίας Ἀθηναῖς 25
ιερόν, ἱδρυσαμένου Νέστορος κατὰ τὴν ἐκ Τροίας
ἐπάνοδον. ἔστι δὲ καὶ Ἑλιξος ποταμὸς περὶ τὴν Κο-
ρησίαν.

7 Μετὰ δὲ ταύτην Νάξος καὶ Ἄνδρος ἀξιόλογοι καὶ
Πάρος· ἐντεῦθεν ἦν Ἀρχίλοχος ὁ ποιητής. ὑπὸ δὲ Πα- 30
ρίων ἐκτίσθη Θάσος καὶ Πάριον ἐν τῇ Προποντίδι πό-
λις. ἐν ταύτῃ μὲν οὖν ὁ βωμὸς λέγεται θείας ἄξιος, στα-

διαίτας ἔχων τὰς πλευράς· ἐν δὲ τῇ Πάρῳ ἢ Παρία λίθος λεγομένη ἀρίστη πρὸς τὴν μαρμαρογλυφίαν.

Σῦρος δ' ἐστὶ μηχανοῦσι τὴν πρώτην συλλαβὴν, 8
ἐξ ἧς Φερεκύδης ὁ Βάβυος ἦν· νεώτερος δ' ἐστὶν ὁ
5 Ἀθηναῖος ἐκείνου. ταύτης δοκεῖ μνημονεύειν ὁ ποιη-
τὴς Συρίην καλῶν „νησὸς τις Συρίη κικλήσκεται Ὀρ-
„τυγίης καθύπερθε.“

Μύκονος δ' ἐστὶν ὕφ' ἣ μνητεύουσι κεῖσθαι τῶν 9
γιγάντων τοὺς ὑστάτους ὕφ' Ἡρακλέους καταλυθέν-
10 τας, ἀφ' ὧν ἡ παροιμία „πάνθ' ὑπὸ μίαν Μύκονον“
ἐπὶ τῶν ὑπὸ μίαν ἐπιγραφὴν ἀγόντων καὶ τὰ διηρ-
τημένα τῇ φύσει. καὶ τοὺς φαλακροὺς δέ τινες Μυκο-
νόους καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τὸ πάθος τοῦτο ἐπιχωριάζειν
τῇ νήσῳ.

15 Σέριφος δ' ἐστὶν ἐν ἣ τὰ περὶ τὸν Δίκτυν μεμύ- 10
θευται τὸν ἀνελκύσαντα τὴν λάρνακα τοῖς δικτύοις
τὴν περιέχουσαν τὸν Περσέα καὶ τὴν μητέρα Δανάην,
καταπεποντωμένους ὑπ' Ἀκρισίου τοῦ πατρὸς τῆς Δα-
νάης· τραφῆναι τε γὰρ ἐνταῦθα τὸν Περσέα φασί, καὶ
20 κομίσαντα τὴν τῆς Γοργόνης κεφαλὴν, δεῖξαντα τοῖς
Σεριφίοις ἀπολιθῶσαι πάντας· τοῦτο δὲ πρᾶξαι τιμω-
ροῦντα τῇ μητρί, ὅτι αὐτὴν Πολυδέκτης ὁ βασιλεὺς
ἄκουσαν ἄγεσθαι προείλετο πρὸς γάμον συμπραττόν-
των ἐκείνων. οὕτω δ' ἐστὶ πετρώδης ἡ νῆσος ὥστε ὑπὸ
25 τῆς Γοργόνης τοῦτο παθεῖν αὐτὴν φασιν οἱ κωμω-
δοῦντες.

Τήνος δὲ πόλιν μὲν οὐ μεγάλην ἔχει, τὸ δ' ἱερὸν 11
τοῦ Ποσειδῶνος μέγα ἐν ἄλλει τῆς πόλεως ἔξω θείας
ἄξιον, ἐν ᾧ καὶ ἐστιατόρια πεποιήται μεγάλα, σημεῖον
30 τοῦ συνέρχεσθαι πλῆθος ἱκανὸν τῶν συνθιγόντων αὐ-
τοῖς ἀστυγειτόνων τὰ Ποσειδῶνια.

Ἔστι δὲ καὶ Ἀμοργὸς τῶν Σποράδων, ὅθεν ἦν 12
STRABO II. 19.

Σιμωνίδης ὁ τῶν ἰάμβων ποιητής, καὶ Λέβινθος καὶ Λέρος „καὶ τόδε Φωκυλίδου· Λέριοι κακοί, οὐχ „ὁ μὲν ὃς δ' οὐ, πάντες, πλὴν Προκλέους, καὶ Προ-
C.488, κλέης Λέριος.“ διεβέβληντο γὰρ ὥς κακοήθεις οἱ ἐν-
θένδε ἄνθρωποι.

13 Πλησίον δ' ἐστὶ καὶ ἡ Πάτμος καὶ Κορασσίαι πρὸς
δύσιν κείμεναι τῇ Ἰκαρίᾳ, αὕτη δὲ Σάμῳ. ἡ μὲν οὖν
Ἰκαρία ἐρημός ἐστι, νομάς δ' ἔχει καὶ χρῶνται αὐταῖς
Σάμιοι· τοιαύτη δ' οὐσα ἐνδοξος ὅμως ἐστὶ, καὶ ἀπ'
αὐτῆς Ἰκαρίον καλεῖται τὸ προκείμενον πέλαγος, ἐν ᾧ 10
καὶ αὕτη καὶ Σάμος καὶ Κῶς ἐστὶ καὶ αἱ ἄρτι λεχθεῖσαι
Κορασσίαι καὶ Πάτμος καὶ Λέρος. συνάπτει δὲ τῷ Ἰκα-
ρίῳ τὸ Καρπάδιον πέλαγος πρὸς νότον, τούτῳ δὲ τὸ
Αἰγύπτιον, πρὸς δὲ δύσιν τὸ τε Κρητικὸν καὶ τὸ Λι-
βυκόν.

14 Καὶ ἐν τῷ Καρπαθίῳ δ' εἰσὶν πολλαὶ τῶν Σποράδων
μεταξὺ τῆς Κῶς μάλιστα καὶ Ῥόδου καὶ Κρήτης· ὧν εἰσιν
Ἀστυπάλαιά τε καὶ Τήλος καὶ Χαλκία καὶ ἄς Ὀμηρος
ὀνομάζει ἐν τῷ καταλόγῳ „οἱ δ' ἄρα Νίσυρόν τ' εἶχον
„Κράπαθόν τε Κάσον τε καὶ Κῶν, Εὐρυπύλοιο πό- 20
„λιν, νήσους τε Καλύδνας.“ ἔξω γὰρ τῆς Κῶς καὶ τῆς
Ῥόδου, περὶ ὧν ἐροῦμεν ὕστερον, τὰς τε ἄλλας ἐν ταῖς
Σποράσι τίθεμεν καὶ δὴ καὶ ἐνταῦθα μεμνήμεθα αὐ-
τῶν, καίπερ τῆς Ἀσίας οὐ τῆς Εὐρώπης ἐγγὺς οὖσων,
ἐπειδὴ τῇ Κρήτῃ καὶ ταῖς Κυκλάσι καὶ τὰς Σποράδας 25
συμπεριλαβεῖν ἡπείγετό πως ὁ λόγος· ἐν δὲ τῇ τῆς
Ἀσίας περιοδείᾳ τὰς προσεχεῖς αὐτῇ τῶν ἀξιολόγων
νήσων προσπεριοδεύσομεν, Κύπρον καὶ Ῥόδον καὶ
Κῶν καὶ τὰς ἐν τῇ ἐφεξῆς παραλίᾳ κειμένας, Σάμον

12. post Λέρος: ἐνδοξον δὲ καὶ τὸ ἐν αὐτῇ ὄρος ὁ Κερκε-
τεύς, μᾶλλον τῆς Ἀμπέλου· αὕτη δ' ὑπέρεκται τῆς Σαμίων
πόλεως.

Χίον Λέσβον Τένεδον· νῦν δὲ τὰς Σποράδας ὧν ἄξιον
μνησθῆναι λοιπὸν ἐπιμεν.

Ἡ μὲν οὖν Ἀστυπάλαια ἱκανῶς ἐστὶ πελαγία, πό- 15
λιν ἔχουσα. ἡ δὲ Τήλος ἐκτίεται παρὰ τὴν Κνιδίαν
5 μακρὰ ὑψηλὴ στενὴ, τὴν περίμετρον ὅσον ἑκατὸν καὶ
τετταράκοντα σταδίων, ἔχουσα ὕψορμον. ἡ δὲ Χαλκία
τῆς Τήλου διέχει σταδίους ὀγδοήκοντα, Καρπάθου δὲ
τετρακοσίους, Ἀστυπαλαίας δὲ περὶ διπλασίους· ἔχει
δὲ καὶ κατοικίαν ὁμώνυμον καὶ ἱερὸν Ἀπόλλωνος καὶ
10 λιμένα.

Νίσυρος δὲ πρὸς ἄρκτον μὲν ἐστὶ Τήλου διέχουσα 16
αὐτῆς ὅσον ἐξήκοντα σταδίους ὅσους καὶ Κῶ διέχει,
στρογγύλη δὲ καὶ ὑψηλὴ καὶ πετρῶδης τοῦ μυλίου λή-
θου· τοῖς γοῦν ἀστυγείτοσιν ἐκεῖθεν ἐστὶν ἡ τῶν μύλων
15 εὐπορία. ἔχει δὲ καὶ πόλιν ὁμώνυμον καὶ λιμένα καὶ
θερμὰ καὶ Ποσειδῶνος ἱερὸν· περίμετρον δὲ αὐτῆς
ὀγδοήκοντα στάδιοι. ἔστι δὲ καὶ νησία πρὸς αὐτῇ Νισυ- C.489
ρίων λεγόμενα. φασὶ δὲ τὴν Νίσυρον ἀπόθραυσμα εἶ-
ναι τῆς Κῶ, προσθίνετες καὶ μῦθον, ὅτι Ποσειδῶν διώ-
20 κων ἕνα τῶν γιγάντων Πολυβώτην ἀποθραύσας τῇ τρι-
αίνῃ τρύφος τῆς Κῶ ἐπ' αὐτὸν βάλοι, καὶ γένοιτο νῆσος
τὸ βληθὲν ἡ Νίσυρος ὑποκείμενον ἔχουσα ἐν αὐτῇ τὸν
γίγαντα· τινὲς δὲ αὐτὸν ὑποκείσθαι τῇ Κῶ φασιν.

Ἡ δὲ Κάρπαθος, ἣν Κράπαθον εἶπεν ὁ ποιητής, 17
25 ὑψηλὴ ἐστὶ, κύκλον ἔχουσα σταδίων διακοσίων. τε-
τράπολις δ' ὑπῆρξε καὶ ὄνομα εἶχεν ἀξιόλογον, ἀφ'
οὗ καὶ τῷ πελάγει τοῦνομα ἐγένετο. μία δὲ τῶν πό-
λεων ἐκαλεῖτο Νίσυρος ὁμώνυμος τῇ τῶν Νισυρίων
νήσῳ. κεῖται δὲ τῆς Λιβύης κατὰ Λευκὴν ἀκτὴν, ἡ τῆς
30 μὲν Ἀλεξανδρείας περὶ χιλίους διέχει σταδίους, τῆς δὲ
Καρπάθου περὶ τετρακισχιλίους.

Κάσος δὲ ταύτης μὲν ἀπὸ ἑβδομήκοντά ἐστι στα- 18

δίῳ, τοῦ δὲ Σαμωνίου τοῦ ἄκρου τῆς Κρήτης δια-
κοσίῳ πεντήκοντα· κύκλον δὲ ἔχει σταδίων ὀγδοή-
κοντα. ἔστι δ' ἐν αὐτῇ καὶ πόλις ὁμώνυμος, καὶ Κα-
σίῳ νῆσοι καλούμεναι πλείους περὶ αὐτήν.

- 19 Νήσους δὲ Καλύδνας τὰς Σποράδας λέγειν φασὶ 5
τὸν ποιητήν, ὧν μίαν εἶναι Κάλυμναν· εἰκὸς δ' ὥς ἐκ
τῶν Νισυρίων λέγονται καὶ Κασίων αἱ ἐγγυὲς καὶ ὑπή-
κοοι, οὕτως καὶ τὰς τῇ Καλύμνῃ περικειμένας ἴσως
τότε λεγομένην Καλύδνην· τινὲς δὲ δύο εἶναι Καλύδνας
φασὶ Λέρον καὶ Κάλυμναν, ὥσπερ καὶ λέγειν τὸν ποι- 10
ητήν. ὁ δὲ Σκήψιος πληθυντικῶς ὠνομάσθαι τὴν νῆ-
σον Καλύμνας φησὶν, ὥς Ἀθήνας καὶ Θήβας, δεῖν δὲ
ὑπερβατῶς δεῖξασθαι τὸ τοῦ ποιητοῦ· οὐ γὰρ νήσους
Καλύδνας λέγειν, ἀλλ' „οἱ δ' ἄρα νήσους Νίσυρόν τ'
„εἶχον Κράπαθόν τε Κάσον τε καὶ Κῶν, Εὐρυπύλοιο 15
„πόλιν, Καλύδνας τε.“ ἅπαν μὲν οὖν τὸ νησιωτικὸν
μέλι ὥς ἐπὶ τὸ πολὺν ἀστεῖον ἔστι καὶ ἐνάμιλλον τῷ Ἀτ-
τικῷ, τὸ δ' ἐν ταῖς ταῖς νήσοις διαφερόντως, μάλι-
στα δὲ τὸ Καλύμνιον.

- 1 Τῇ δ' Εὐρώπῃ συνεχῆς ἔστιν ἡ Ἀσία κατὰ τὸν
Τάναϊν συνάπτουσα αὐτῇ· περὶ ταύτης οὖν ἐφεξῆς
ῥητέον διελόντας φυσικοῖς τισιν ὅροις τοῦ σαφοῦς χά-
ριν. ὅπερ οὖν Ἐρατοσθένους ἐφ' ὅλης τῆς οἰκουμένης 25
ἐποίησε, τοῦθ' ἡμῖν ἐπὶ τῆς Ἀσίας ποιητέον.
- 2 Ὁ γὰρ Ταῦρος μέσην πῶς διεξῶκε ταύτην τὴν
ἥπειρον ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἑω τεταμένος, τὸ μὲν
αὐτῆς ἀπολείπων πρὸς βορρᾶν τὸ δὲ μεσημβρινόν. κα-
λοῦσι δὲ αὐτῶν οἱ Ἕλληνες τὸ μὲν ἐντὸς τοῦ Ταύρου 30
τὸ δὲ ἐκτός. εἰρηται δὲ ταῦθ' ἡμῖν καὶ πρότερον, ἀλλ'
εἰρήσθω καὶ νῦν ὑπομνήσεως χάριν.

Πλάτος μὲν οὖν ἔχει τὸ ὄρος πολλαχοῦ καὶ τρισχι- 3
λίων σταδίων, μῆκος δ' ὅσον καὶ τὸ τῆς Ἀσίας, τετ-
τάρων πού μυριάδων καὶ πεντακισχιλίων, ἀπὸ τῆς
Ῥοδίων περαίας ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς καὶ Σκυθίας
5 πρὸς τὰς ἀνατολάς.

Λήγεται δ' εἰς μέρη πολλὰ καὶ ὀνόματα περιγρα- 4
φαῖς καὶ μείζοσι καὶ ἐλάττοσιν ἀφωρισμένα. ἐπεὶ δ' ἐν
τῷ τοσοῦτῳ πλάτει τοῦ ὄρους ἀπολαμβάνεται τινα
ἔθνη, τὰ μὲν ἀσημότερα τὰ δὲ καὶ παντελῶς γινώριμα C.491
10 (καθάπερ ἡ Παρθυαία καὶ Μηδία καὶ Ἀρμενία καὶ
Καππαδοκῶν τινες καὶ Κίλικες καὶ Πισίδαι), τὰ μὲν
* πλεονάζοντα τοῖς προσβόροις μέρεσιν ἐνταῦθα τα-
κτέον, τὰ δ' ἐν τοῖς νοτίοις εἰς τὰ νότια, καὶ τὰ ἐν
μέσῳ δὲ τῶν ὀρῶν κείμενα διὰ τὰς τῶν ἀέρων ὁμοιό-
15 τητας πρὸς βορρᾶν πως θετέον· ψυχροὶ γὰρ εἰσιν, οἱ
δὲ νότιοι θερμοί. καὶ τῶν ποταμῶν δὲ αἱ ῥύσεις ἐν-
θένδε λοῦσαι πᾶσαι σχεδόν τι εἰς τὰναντία αἱ μὲν εἰς τὰ
βόρεια αἱ δ' εἰς τὰ νότια μέρη (τά γε πρῶτα, καὶ ὅστε-
ρόν τινες ἐπιστρέφωσι πρὸς ἀνατολὰς ἢ δύσεις), ἔχουσι
20 τι εὐφυνὲς πρὸς τὸ τοῖς ὄρεσιν ὀρίοις χρῆσθαι κατὰ τὴν
εἰς δύο μέρη διαίρεσιν τῆς Ἀσίας· καθάπερ καὶ ἡ θά-
λαττα ἢ ἐντὸς στηλῶν, ἐπ' εὐθείας πως οὕσα ἢ πλεί-
στη τοῖς ὄρεσι τούτοις, ἐπιτηδεῖα γεγέννηται πρὸς τὸ
δύο ποιεῖν ἡπείρους, τὴν τε Εὐρώπην καὶ τὴν Αι-
25 βύην, ὅριον ἀμφοῖν οὕσα ἀξιόλογον.

Τοῖς δὲ μεταβαίνουσιν ἀπὸ τῆς Εὐρώπης ἐπὶ τὴν 5
Ἀσίαν ἐν τῇ γεωγραφίᾳ τὰ πρὸς βορρᾶν ἐστὶ πρῶτα
τῆς εἰς δύο διαιρέσεως, ὥστε ἀπὸ τούτων ἀρκτέον.
αὐτῶν δὲ τούτων πρῶτά ἐστὶ τὰ περὶ τὸν Τάναϊν, ὅν-
30 περ τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀσίας ὅριον ὑπεθέμεθα.
ἐστὶ δὲ ταῦτα τρόπον τινὰ χερρονησιζόντα· περιέχεται
γὰρ ἐκ μὲν τῆς ἐσπέρας τῷ ποταμῷ τῷ Ταναΐδι καὶ τῇ

Μαιώτιδι μέχρι τοῦ Βοσπόρου καὶ τῆς τοῦ Εὐξείνου
 παραλίας τῆς τελευτώσης εἰς τὴν Κολχίδα· ἐκ δὲ τῶν
 ἄρκτων τῷ Ὠκεανῷ μέχρι τοῦ στόματος τῆς Κασπίας
 θαλάττης· ἔωθεν δὲ αὐτῇ ταύτῃ τῇ θαλάττῃ μέχρι
 τῶν μεθορίων τῆς τε Ἀλβανίας καὶ τῆς Ἀρμενίας, καθ' 5
 ἃ ὁ Κῦρος καὶ ὁ Ἀράξης ἐκδιδούσι ποταμοί, ῥέοντες ὁ
 μὲν διὰ τῆς Ἀρμενίας Κῦρος δὲ διὰ τῆς Ἰβηρίας καὶ
 τῆς Ἀλβανίας· ἐκ νότου δὲ τῇ ἀπὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ
 Κύρου μέχρι τῆς Κολχίδος, ὅσον τρισχιλίων οὔσῃ στα-
 δίων ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν, δι' Ἀλβανῶν καὶ 10
 Ἰβήρων, ὥστε ἰσθμοῦ λόγον ἔχειν. οἱ δ' ἐπὶ τοσοῦ-
 τον συναγαγόντες τὸν ἰσθμόν ἐφ' ὅσον Κλείταρχος,
 ἐπικλυστον φήσας ἐξ ἑκατέρου τοῦ πελάγους, οὐδ' ἂν
 λόγου ἀξιοῖντο. Ποσειδώνιος δὲ χιλίων καὶ πεντακο-
 σίων εἴρηκε τὸν ἰσθμόν, ὅσον καὶ τὸν ἀπὸ Πηλουσίου 15
 ἰσθμόν εἰς τὴν Ἐρυθρὰν. „δοκῶ δέ“ φησί „μὴ πολὺ δια-
 φέρειν μὴδὲ τὸν ἀπὸ τῆς Μαιώτιδος εἰς τὸν Ὠκεανόν.“

6 Οὐκ οἶδα δὲ πῶς ἂν τις περὶ τῶν ἀδήλων αὐτῷ
 πιστεύσειε μὴδὲν εἰκὸς ἔχοντι εἰπεῖν περὶ αὐτῶν,
 ὅταν περὶ τῶν φανερῶν οὕτω παραλόγως λέγῃ, καὶ 20
 ταῦτα φίλος Πομπηίῳ γεγονώς τῷ στρατεύσαντι ἐπὶ
 C.492 τοὺς Ἰβήρας καὶ τοὺς Ἀλβανοὺς μέχρι τῆς ἐφ' ἑκάτε-
 ρα θαλάττης τῆς τε Κασπίας καὶ τῆς Κολχικῆς. φασὶ
 γοῦν ἐν Ῥόδῳ γενόμενον τὸν Πομπήιον, ἡνίκα ἐπὶ
 τὸν ληστρικὸν πόλεμον ἐξῆλθεν (εὐθύς δ' ἔμελλε καὶ 25
 ἐπὶ Μιθριδάτην ὀρμήσειν καὶ τὰ μέχρι τῆς Κασπίας
 ἔσθῃ), παρατυχεῖν διαλεγομένῳ τῷ Ποσειδωνίῳ, ἀπι-
 όντα δ' ἐρέσθαι εἴ τι προστάττει, τὸν δ' εἰπεῖν „αἶεν
 ἀριστεύειν καὶ ὑπείροχον ἔμμεναι ἄλλων.“ προστίθει
 δὲ τούτοις ὅτι καὶ τὴν ἱστορίαν συνέγραψε τὴν περὶ 30
 αὐτόν. διὰ δὲ ταῦτα ἐχρῆν φροντίσαι τὰ ληθούσ
 πλέον τι.

Δεύτερον δ' ἂν εἴη μέρος τὸ ὑπὲρ τῆς Ἰνδικῆς 7
 θαλάττης, ἣν [καὶ] Κασπίαν καλοῦμεν, μέχρι τῶν κατ'
 Ἰνδοὺς Σκυθῶν. τρίτον δὲ μέρος τὸ συνεχὲς τῷ λε-
 χθέντι ἰσθμῷ καὶ τὰ ἐξῆς τούτῳ καὶ ταῖς Κασπίαις πύ-
 5 λαις, τῶν ἐντὸς τοῦ Ταύρου καὶ τῆς Εὐρώπης ἐγγυ-
 τάτω· ταῦτα δ' ἐστὶ Μηδία καὶ Ἀρμενία καὶ Καππα-
 δοκία καὶ τὰ μεταξὺ. τέταρτον δ' ἡ ἐντὸς Ἀλφειοῦ γῆ
 καὶ τὰ ἐν αὐτῷ τῷ Ταύρῳ καὶ ἐκτὸς ὅσα εἰς τὴν χειρρό-
 νησον ἐμπίπτει, ἣν ποιεῖ ὁ διείργων ἰσθμὸς τὴν τε
 10 Ποντικὴν καὶ τὴν Κιλικίαν θάλατταν. τῶν δὲ ἄλλων
 τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου τὴν τε Ἰνδικὴν τίθεμεν καὶ τὴν
 Ἀριανὴν μέχρι τῶν ἐθνῶν τῶν καθηκόντων πρὸς τε
 τὴν κατὰ Πέρσας θάλατταν καὶ τὸν Ἀράβιον κόλπον
 καὶ τὸν Νεῖλον καὶ πρὸς τὸ Αἰγύπτιον πέλαγος καὶ τὸ
 15 Ἰσσικόν.

Οὕτω δὲ διακειμένων τὸ πρῶτον μέρος οἰκοῦσιν 2
 ἐκ μὲν τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν καὶ τὸν Ὠκεανὸν Σκυ-
 θῶν τινὲς νομάδες καὶ ἀμάξιοι, ἐνδοτέρω δὲ τούτων
 Σαρμάται, καὶ οὗτοι Σκύθαι, Ἀορσοὶ καὶ Σιρακοὶ
 20 μέχρι τῶν Καυκασίων ὄρεων ἐπὶ μεσημβρίαν τείνου-
 ντες, οἱ μὲν νομάδες οἱ δὲ καὶ σκηνίζονται καὶ γεωργοί,
 περὶ δὲ τὴν λίμνην Μαιῶται· πρὸς δὲ τῇ θαλάττῃ τοῦ
 Βοσπόρου τὰ κατὰ τὴν Ἀσίαν ἐστὶ καὶ ἡ Σινδική·
 μετὰ δὲ ταύτην Ἀχαιοὶ καὶ Ζυγοὶ καὶ Ἠνίοχοι Κερκέται
 25 τε καὶ Μακροπάρωνες. ὑπέρεκειται δὲ τούτων καὶ
 τὰ τῶν Φθειροφάγων στενά· μετὰ δὲ τοὺς Ἠνιόχους
 ἡ Κολχὴς ὑπὸ τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι κειμένη καὶ τοῖς
 Μοσχοῖς. ἐπεὶ δ' ὄριον ὑπόκειται τῆς Εὐρώπης καὶ
 τῆς Ἀσίας ὁ Τάναϊς ποταμός, ἐντεῦθεν ἀρξάμενοι τὰ
 30 καθ' ἕκαστα ὑπογράφομεν.

2 Φέρεται μὲν οὖν ἀπὸ τῶν ἀρκτικῶν μερῶν, οὗ
 μὴν ὥς ἂν κατὰ διάμετρον ἀντίρροους τῷ Νείλῳ, κα-
 θάπερ νομίζουσιν οἱ πολλοί, ἀλλὰ ἐωθινώτερος ἐκεί-
 .493νου, παραπλησίως ἐκείνῳ τὰς ἀρχὰς ἀδήλους ἔχων.
 ἀλλὰ τοῦ μὲν πολὺ τὸ φανερόν χώραν διεξιόντος πᾶ- 5
 σαν εὐεπίμικτον καὶ μακροὺς ἀνάπλους ἔχοντος, τοῦ
 δὲ Ταναΐδος τὰς μὲν ἐκβολὰς ἴσμεν (δύο δ' εἰσὶν εἰς
 τὰ ἀρκτικώτατα μέρη τῆς Μαιώτιδος ἐξήκοντα σταδίους
 ἀλλήλων διέχουσαι), τοῦ δ' ὑπὲρ τῶν ἐκβολῶν ὀλίγον
 τὸ γινώρισμόν ἐστι διὰ τὰ ψύχην καὶ τὰς ἀπορίας τῆς χώ- 10
 ρας, ἃς οἱ μὲν αὐτόχθονες δύνανται φέρειν σαρκί καὶ
 γάλακτι τρεφόμενοι νομαδικῶς, οἱ δ' ἄλλοεθνεῖς οὐχ
 ὑπομένουσιν. ἄλλως τε οἱ νομάδες δυσεπίμικτοι τοῖς
 ἄλλοις ὄντες καὶ πλήθει καὶ βίᾳ διαφέροντες ἀποκε-
 * κλείκασιν εἰ καὶ τι πορεύσιμον τῆς χώρας ἐστὶν ἢ εἰ 15
 τινὰς τετύχηκεν ἀνάπλους ἔχων ὁ ποταμός. ἀπὸ δὲ
 τῆς αἰτίας ταύτης οἱ μὲν ὑπέλαβον τὰς πηγὰς ἔχειν αὐ-
 τὸν ἐν τοῖς Κανκασίοις ὄρεσι, πολὺν δ' ἐνεχθέντα ἐπὶ
 τὰς ἄρκτους εἶτ' ἀναστρέψαντα ἐκβάλλειν εἰς τὴν
 Μαιώτιν (τούτοις δὲ ὁμοδοξεῖ καὶ Θεοφάνης ὁ Μιτυ- 20
 ληναιος), οἱ δ' ἀπὸ τῶν ἄνω μερῶν τοῦ Ἰστροῦ φέ-
 ρεσθαι· σημεῖον δὲ φέρουσιν οὐδὲν τῆς πόρρωθεν
 οὕτω ῥύσεως καὶ ἀπ' ἄλλων κλιμάτων, ὥσπερ οὐ θυ-
 νατὸν ὃν καὶ ἐγγύθεν καὶ ἀπὸ τῶν ἄρκτων.

3 Ἐπὶ δὲ τῷ ποταμῷ καὶ τῇ λίμνῃ πόλις ὁμώνυμος 25
 οἰκεῖται Τάναϊς, κτίσμα τῶν τὸν Βόσπορον ἐχόντων
 Ἑλλήνων. νεωστὶ μὲν οὖν ἐξεπόρθησεν αὐτὴν Πολέ-
 μων ὁ βασιλεὺς ἀπειθοῦσαν, ἣν δ' ἐμπόριον κοινὸν
 τῶν τε Ἀσιανῶν καὶ τῶν Εὐρωπαϊῶν νομάδων καὶ
 τῶν ἐκ τοῦ Βοσπόρου τὴν λίμνην πλεόντων, τῶν μὲν 30
 ἀνδράποδα ἀγόντων καὶ δέρματα καὶ εἰ τι ἄλλο τῶν
 νομαδικῶν, τῶν δ' ἐσθῆτα καὶ οἶνον καὶ τᾶλλα ὅσα

τῆς ἡμέρου διαίτης οἰκεῖα ἀντιφορτιζομένων. πρόκει-
ται δ' ἐν ἑκατὸν σταδίοις τοῦ ἐμπορίου νῆσος Ἀλωπε-
κία, κατοικία μιγάδων ἀνθρώπων· ἔστι δὲ καὶ ἄλλα
νησίδια πλησίον ἐν τῇ λίμνῃ. διέχει δὲ τοῦ στόματος
5 τῆς Μαιώτιδος εὐθυπλοοῦσιν ἐπὶ τὰ βόρεια δισχιλίους
καὶ διακοσίους σταδίους ὁ Τάναϊς, οὐ πολὺ δὲ πλείους
εἰς παραλεγομένῳ τὴν γῆν.

Ἐν δὲ τῷ παράπλῳ τῷ παρὰ γῆν πρῶτον μὲν 4
ἔστιν ἀπὸ τοῦ Ταναΐδος προϋσιν ἐν ὀκτακοσίοις στα-
10 δίοις ὁ μέγας καλούμενος Ῥομβίτης, ἐν ᾧ τὰ πλείστα
ἄλιεύματα τῶν εἰς ταριχείας ἰχθύων· ἔπειτα ἐν ἄλλοις
ὀκτακοσίοις ὁ ἐλάττων Ῥομβίτης [καὶ] ἄκρα ἔχουσα καὶ
αὐτὴ ἄλιείας ἐλάττους· ἔχουσι δὲ οἱ μὲν πρό-
τερον νησία ὀρμητήρια, οἱ δ' ἐν τῷ μικρῷ Ῥομβίτῃ
15 αὐτοὶ εἰσιν οἱ Μαιῶται ἐργαζόμενοι· οἰκοῦσι γὰρ ἐν
τῷ παράπλῳ τούτῳ παντὶ οἱ Μαιῶται, γεωργοὶ μὲν C.494
οὐχ ἦττον δὲ τῶν νομάδων πολεμισταί. διήρηνται δὲ
εἰς ἔθνη πλείω τὰ μὲν πλησίον τοῦ Ταναΐδος ἀγριώ-
τερα, τὰ δὲ συνάπτοντα τῷ Βοσπόρῳ χειροῇθη μᾶλλον.
20 ἀπὸ δὲ τοῦ μικροῦ Ῥομβίτου στάδιοι εἰσιν ἑξακόσιοι
ἐπὶ Τυράμβην καὶ τὸν Ἀντικείμενον ποταμόν· εἰδ' ἑκα-
τὸν καὶ εἰκοσιν ἐπὶ τὴν κώμην τὴν Κιμμερικὴν, ἣτις
ἔστιν ἀφετήριον τοῖς τὴν λίμνην πλέουσιν· ἐν δὲ τῷ
παράπλῳ τούτῳ καὶ σκοπαὶ τινες λέγονται Κλαζο-
25 μενίων.

Τὸ δὲ Κιμμερικὸν πόλις ἦν πρότερον ἐπὶ χειρο- 5
νῆσου ἰδρυμένη, τὸν ἰσθμὸν τάφρῳ καὶ χώματι κλείου-
σα· ἐκέκτηντο δ' οἱ Κιμμέριοι μεγάλην ποτὴ ἐν τῷ
Βοσπόρῳ δύναμιν, διόπερ καὶ Κιμμερικὸς Βόσπορος
30 ὠνομάσθη. οὗτοι δ' εἰσὶν οἱ τοὺς τὴν μεσόγειαν οἰ-
κοῦντας ἐν τοῖς δεξιοῖς μέρεσι τοῦ Πόντου μέχρι Ἰω-
νίας ἐπιδραυόντες. τούτους μὲν οὖν ἐξήλασαν ἐκ τῶν

τόπων Σκύθαι, τοὺς δὲ Σκύθας Ἕλληνες οἱ Παντι-
κάπαιον καὶ τὰς ἄλλας οἰκίσαντες πόλεις τὰς ἐν Βοσ-
πόρῳ.

- 6 Εἰτ' ἐπὶ τὴν Ἀχίλλειον κώμην εἰκοσιν, ἐν ᾗ τὸ
Ἀχιλλέως Ιερὸν· ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ στενωπὸς πορθ- 5
μὸς τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος ὅσον εἴκοσι στα-
δίων ἢ πλειόνων, ἔχων ἐν τῇ περαιοῖα κώμην τὸ Μυρ-
μήκιον (πλησίον δ' ἐστὶ τοῦ Ἡρακλείου) καὶ τὸ Παρ-
θένιον.
- 7 Ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ Σατύρου μνημα ἐνενήκοντα 10
σταδίοι· τοῦτο δ' ἐστὶν ἐπ' ἄκρας τινὸς χωστὸν ἀν-
δρὸς τῶν ἐπιφανῶς δυναστευσάντων τοῦ Βοσπόρου.
- 8 Πλησίον δὲ κώμῃ Πατραεύς, ἀφ' ἧς ἐπὶ κώμην
Κοροκονδάμην ἑκατὸν τριάκοντα· αὕτη δ' ἐστὶ τοῦ
Κιμμερικοῦ καλουμένου Βοσπόρου πέρας. καλεῖται 15
δὲ οὕτως ὁ στενωπὸς ἐπὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος
ἀπὸ τῶν κατὰ τὸ Ἀχίλλειον καὶ τὸ Μυρμήκιον στε-
νωπὸν διατείνων μέχρι πρὸς τὴν Κοροκονδάμην καὶ τὸ
ἀντικείμενον αὐτῇ κωμίον τῆς Παντικαπαίων γῆς
ὄνομα Ἀκραν ἑβδομήκοντα σταδίων διειργόμενον 20
πορθμῷ· μέχρι γὰρ δεῦρο καὶ ὁ κρύσταλλος διατείνει,
πηττομένης τῆς Μαιώτιδος κατὰ τοὺς κρυμοὺς ὥστε
πεξεύεσθαι. ἅπας δ' ἐστὶν εὐλίμενος ὁ στενωπὸς
οὗτος.
- 9 Ὑπέρκειται δὲ τῆς Κοροκονδάμης εὐμεγέθης λί- 25
μνη, ἣν καλοῦσιν ἀπ' αὐτῆς Κοροκονδαμίτιν· ἐκδί-
δωσι δ' ἀπὸ δέκα σταδίων τῆς κώμης εἰς τὴν θάλατ-
ταν· ἐμβάλλει δὲ εἰς τὴν λίμνην ἀπορροῶς τις τοῦ Ἀν-
τικείου ποταμοῦ, καὶ ποιεῖ νῆσον περίκλυστον τινα
ταύτη τε τῇ λίμνῃ καὶ τῇ Μαιώτιδι καὶ τῷ ποταμῷ. 30
τινὲς δὲ καὶ τοῦτον τὸν ποταμὸν Ὑπανιν προσαγορεύ-
ουσι, καθάπερ καὶ τὸν πρὸς τῷ Βορυσθένει.

Εἰσπλεύσαντι δ' εἰς τὴν Κοροκονδαμίτιν ἢ τε Φα- 10
 ναγόρειά ἐστι πόλις ἀξιόλογος καὶ Κῆποι καὶ Ἑρμῶ-C.495
 νασσα καὶ τὸ Ἀπάτουρον τὸ τῆς Ἀφροδίτης ἱερὸν· ὧν
 ἡ Φαναγόρεια καὶ οἱ Κῆποι κατὰ τὴν λεχθεῖσαν νῆσον
 5 ἵδρυνται εἰσπλέοντι ἐν ἀριστερᾷ, αἱ δὲ λοιπαὶ πόλεις
 ἐν δεξιᾷ πέραν Ὑπάνιος ἐν τῇ Σινδικῇ. ἔστι δὲ καὶ
 Γοργιπία ἐν τῇ Σινδικῇ, τὸ βασιλείον τῶν Σινδῶν
 πλησίον θαλάττης, καὶ Ἀβοράκη. τοῖς δὲ τοῦ Βοσπό-
 ρου δυνάσταις ὑπήκοοι ὄντες ἅπαντες Βοσπορανοὶ
 10 καλοῦνται· καὶ ἔστι τῶν μὲν Εὐρωπαϊῶν Βοσπορα-
 νῶν μητρόπολις τὸ Παντικάπαιον, τῶν δ' Ἀσιανῶν
 τὸ Φαναγόρειον (καλεῖται γὰρ καὶ οὕτως ἡ πόλις), καὶ
 δοκεῖ τῶν μὲν ἐκ τῆς Μαιώτιδος καὶ τῆς ὑπερκειμένης
 βαρβάρου κατακομιζομένων ἐμπόριον εἶναι τὰ Φανα-
 15 γόρεια, τῶν δ' ἐκ τῆς θαλάττης ἀναφερομένων ἐκεῖσε
 τὸ Παντικάπαιον. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ Φαναγορείᾳ τῆς
 Ἀφροδίτης ἱερὸν ἐπίσημον τῆς Ἀπατούρου· ἐτυμολο-
 γοῦσι δὲ τὸ ἐπίθετον τῆς θεοῦ μῦθόν τινα προστη-
 σάμενοι, ὥς ἐπιθεμένων ἐνταῦθα τῇ θεῷ τῶν γιγάν-
 20 των ἐπικαλεσαμένη τὸν Ἡρακλέα κρύψειεν ἐν κευθ-
 μῶνί τινι, εἶτα τῶν γιγάντων ἕκαστον δεχομένη καθ'
 ἓνα τῷ Ἡρακλεῖ παραδιδοίη δολοφονεῖν ἐξ ἀπάτης.

Τῶν Μαιωτῶν δ' εἰσὶν αὐτοί τε οἱ Σινδοὶ καὶ 11
 Δανδάριοι καὶ Τορέται καὶ Ἄγροι καὶ Ἀρρηχοί, ἔτι δὲ
 25 Τάρπητες Ὀβιδιακηνοὶ Σιττακηνοὶ Δόσκοι, ἄλλοι
 πλείους· τούτων δ' εἰσὶ καὶ οἱ Ἀσπουργιανοὶ μεταξὺ
 Φαναγορείας οἰκοῦντες καὶ Γοργιπίας ἐν πεντακοσίοις
 σταδίοις, οἷς ἐπιθέμενος Πολέμων ὁ βασιλεὺς ἐπὶ προσ-
 ποιήσει φιλίας οὐ λαθὼν ἀντεστρατηγήθη καὶ ζωγρία
 30 ληφθεὶς ἀπέθανε. τῶν τε συμπάντων Μαιωτῶν τῶν
 Ἀσιανῶν οἱ μὲν ὑπήκουον τῶν τὸ ἐμπόριον ἐχόντων
 τὸ ἐν τῷ Τανάιδι οἱ δὲ τῶν Βοσπορανῶν· τοτὲ δ' ἀφί-

σταντο ἄλλοτ' ἄλλοι. πολλάκις δ' οἱ τῶν Βοσπορανῶν ἡγεμόνες καὶ τὰ μέχρι τοῦ Τανάιδος κατεῖχον καὶ μά-
 λιστα οἱ ὕστατοι, Φαρνάκης καὶ Ἀσανδρος καὶ Πολέ-
 μων. Φαρνάκης δέ ποτε καὶ τὸν Ὑπανιν τοῖς Λανδα-
 ρίοις ἐπαγαγεῖν λέγεται διὰ τινος παλαιᾶς διώρυγος 5
 ἀνακαθάραι αὐτὴν [καὶ] κατακλύσαι τὴν χώραν.

- 12 Μετὰ δὲ τὴν Σινδικὴν καὶ τὴν Γοργιπίαν ἐπὶ τῇ
 θαλάττῃ ἢ τῶν Ἀχαιῶν καὶ Ζυγῶν καὶ Ἠνιόχων πα-
 ραλία τὸ πλεόν ἀλίμενος καὶ ὀρεινὴ, τοῦ Κανκάσου
 μέρος οὖσα. ζῶσι δὲ ἀπὸ τῶν κατὰ θάλατταν λησστη- 10
 ρίων, ἀκάτια ἔχοντες λεπτὰ στενὰ καὶ κοῦφα, ὅσον
 ἀνθρώπους πέντε καὶ εἴκοσι δεχόμενα, σπάνιον δὲ
 τριάκοντα δέξασθαι τοὺς πάντας δυνάμενα· καλοῦσι
 δ' αὐτὰ οἱ Ἕλληνες καμάρας. φασὶ δ' ἀπὸ τῆς Ἰάσο-
 νος στρατιᾶς τοὺς μὲν Φθιώτας Ἀχαιοὺς τὴν ἐνθάδε 15
 C.496 Ἀχαΐαν οἰκίσαι, Λάκωνας δὲ τὴν Ἠνιοχίαν, ὧν ἤρ-
 χον Κρέκας καὶ Ἀμφίστρατος οἱ τῶν Διοσκούρων
 ἡνίοχοι, καὶ τοὺς Ἠνιόχους ἀπὸ τούτων εἰκὸς ὠνο-
 μάσθαι. τῶν δ' οὖν καμαρῶν στόλους κατασκευαζό-
 μενοι καὶ ἐπιπλέοντες τοτὲ μὲν ταῖς ὀλκάσι τοτὲ δὲ 20
 χώρα τινὲς ἢ καὶ πόλει θαλαττοκρατοῦσι. προσλαμβά-
 νουσι δ' ἔσθ' ὅτε καὶ οἱ τὸν Βόσπορον ἔχοντες ὑφόρ-
 μους χορηγοῦντες καὶ ἀγορὰν καὶ διάθесιν τῶν ἀρπα-
 ζομένων· ἐπανιόντες δὲ εἰς τὰ οἰκεῖα χωρία, ναυλο-
 χεῖν οὐκ ἔχοντες, ἀναθέμενοι τοῖς ὅμοις τὰς καμάρας 25
 ἀναφέρουσιν ἐπὶ τοὺς θρυμνοὺς ἐν οἷσπερ καὶ οἰκοῦσι,
 λυπρὰν ἀροῦντες γῆν· καταφέρουσι δὲ πάλιν ὅταν ἢ
 καιρὸς τοῦ πλεῖν. τὸ δ' αὐτὸ ποιοῦσι καὶ ἐν τῇ ἄλλο-
 τρία γνώριμα ἔχοντες ὑλώδη χωρία, ἐν οἷς ἀποκρύ-
 ψαντες τὰς καμάρας αὐτοὶ πλανῶνται πεζῇ νύκτωρ 30
 καὶ μεθ' ἡμέραν ἀνδραποδισμοῦ χάριν. ἃ δ' ἂν λά-
 βωσιν ἐπὶ λυτρά ποιοῦσι ῥαδίως μετὰ τοὺς ἀνάπλους

μηνύοντες τοῖς ἀπολέσασιν. ἐν μὲν οὖν τοῖς δυνα-
στευομένοις τόποις ἐστὶ τις βοήθεια ἐκ τῶν ἡγεμόνων
τοῖς ἀδίκουμένοις· ἀντεπιτίθενται γὰρ πολλάκις καὶ
κατάγουσιν αὐτάνδρους τὰς καμάρας· ἡ δ' ὑπὸ Ῥω-
5 μαίοις ἀβοηθητοτέρα ἐστὶ διὰ τὴν ὀλιγορίαν τῶν πεμ-
πομένων.

Τοιοῦτος μὲν ὁ τούτων βίος· δυναστεύονται δὲ 13
καὶ οὗτοι ὑπὸ τῶν καλουμένων Σκηπτούχων· καὶ
αὐτοὶ δὲ οὗτοι ὑπὸ τυράννοις ἢ βασιλεῦσιν εἰσιν. οἱ
10 γοῦν Ἡνίοχοι τέτταρας εἶχον βασιλέας, ἡνίκα Μιθρι-
δάτης ὁ Εὐπάτωρ φεύγων ἐκ τῆς προγονικῆς εἰς Βόσ-
πορον διῆει τὴν χώραν αὐτῶν· καὶ αὕτη μὲν ἦν πο-
ρεύσιμος αὐτῷ, τῆς δὲ τῶν Ζυγῶν ἀπογνοῦς διὰ τε
δυσχερείας καὶ ἀργιότητος τῇ παραλίᾳ χαλεπῶς ἦει, τὰ
15 πολλὰ ἐμβαίνων ἐπὶ τὴν θάλατταν, ἕως ἐπὶ τὴν τῶν
'Αχαιῶν ἦκε· καὶ προσλαβόντων τούτων ἐξετέλεσε
τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ Φάσιδος οὐ πολὺ τῶν τετρακισχιλίων
λείπουσιν σταδίων.

Εὐθὺς δ' οὖν ἀπὸ τῆς Κοροκουνδάμης πρὸς ἔω 14
20 μὲν ὁ πλοῦς ἐστίν. ἐν δὲ σταδίοις ἑκατὸν ὀγδοήκοντα
ὁ Σινδικός ἐστι λιμὴν καὶ πόλις, εἴτα ἐν τετρακοσίοις
τὰ καλούμενα Βατὰ κώμη καὶ λιμὴν, καθ' ὃ μάλιστα
ἀντικεῖσθαι δοκεῖ πρὸς νότον ἢ Σινῶπη ταύτῃ τῇ πα-
ραλίᾳ, καθάπερ ἡ Κάραμβις εἴρηται τοῦ Κροῦ με-
25 τώπῳ· ἀπὸ δὲ τῶν Βατῶν ὁ μὲν Ἀρτεμίδωρος τὴν
Κερκετῶν λέγει παραλίαν ὑφόρμους ἔχουσιν καὶ κώ-
μας ὅσον ἐπὶ σταδίους ὀκτακοσίους καὶ πεντήκοντα,
εἴτα τὴν τῶν Ἀχαιῶν σταδίων πεντακοσίων, εἴτα τὴν
τῶν Ἡνιόχων χιλίων, εἴτα τὸν Πιτυοῦντα τὸν μέγαν
30 τριακοσίων ἐξήκοντα μέχρι Διοσκουριάδος· οἱ δὲ τὰ C.497
Μιθριδατικά συγγράψαντες, οἷς μᾶλλον προσεκτέον,
'Αχαιοὺς λέγουσι πρῶτους, εἴτα Ζυγούς, εἴτα Ἡνιό-

χοις, εἴτα Κερκέτας καὶ Μόσχους καὶ Κόλχους καὶ τοὺς ὑπὲρ τούτων Φθειροφάγους καὶ Σοάνας καὶ ἄλλα μικρὰ ἔθνη τὰ περὶ τὸν Καύκασον. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἡ παραλία, καθάπερ εἶπον, ἐπὶ τὴν ἑω τείνει καὶ βλέπει πρὸς νότον, ἀπὸ δὲ τῶν Βατῶν ἐπιστροφὴν 5 λαμβάνει κατὰ μικρόν, εἴτ' ἀντιπρὸςωπος γίνεται τῇ δύσει καὶ τελευτᾷ πρὸς τὸν Πιτυοῦντα καὶ τὴν Διοσκουριάδα· ταῦτα γὰρ τὰ χωρία τῆς Κολχίδος συνάπτει τῇ λεχθεῖσῃ παραλίᾳ. μετὰ δὲ τὴν Διοσκουριάδα ἡ λοιπὴ τῆς Κολχίδος ἐστὶ παραλία καὶ ἡ συνεχὴς Τρα- 10 πεξοῦς καμπὴν ἀξιόλογον ποιήσασα, εἴτα εἰς εὐθείαν ταθεῖσά πως πλευρὰν τὴν τὰ δεξιὰ τοῦ Πόντου ποιοῦσαν τὰ βλέποντα πρὸς ἄρκτον. ἅπασα δ' ἡ τῶν Ἀχαιῶν καὶ τῶν ἄλλων παραλία μέχρι Διοσκουριάδος καὶ τῶν ἐπ' εὐθείας πρὸς νότον ἐν τῇ μεσογαίᾳ τόπων 15 ὑποπέπτωκε τῷ Κανκάσῳ.

- 15 "Ἔστι δ' ὄρος τοῦτο ὑπερκείμενον τοῦ πελάγους ἑκατέρου τοῦ τε Ποντικοῦ καὶ τοῦ Κασπίου, διατείχίζον τὸν ἰσθμὸν τὸν διείργοντα αὐτά. ἀφορίζει δὲ πρὸς νότον μὲν τὴν τε Ἀλβανίαν καὶ τὴν Ἰβηρίαν, πρὸς 20 ἄρκτον δὲ τὰ τῶν Σαρματῶν πεδία· εὐδενδρον δ' ἐστὶν ὕλη παντοδαπὴ τῇ τε ἄλλῃ καὶ τῇ ναυπηγησίμῳ. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης ὑπὸ τῶν ἐπιχωρίων καλεῖσθαι Κάσπιον τὸν Καύκασον, ἴσως ἀπὸ τῶν Κασπίων παρονομασθέντα. ἀγκῶνες δὲ τινες αὐτοῦ προπίπτου- 25 σιν ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν, οἱ τὴν τε Ἰβηρίαν περιλαμβάνουσι μέσῃ καὶ τοῖς Ἀρμενίων ὄρεσι συνάπτουσι καὶ τοῖς Μοσχικοῖς καλουμένοις, ἔτι δὲ τῷ Σκυδίᾳ καὶ τῷ Παρυάδρῳ· ταῦτα δ' ἐστὶ μέρη τοῦ Ταύρου πάντα τοῦ ποιοῦντος τὸ νότιον τῆς Ἀρμενίας πλευ- 30 ρόν, ἀπερρωγότα πως ἐκείθεν πρὸς ἄρκτον καὶ προσπίπτοντα μέχρι τοῦ Κανκάσου καὶ τῆς τοῦ Εὐξείνου

παραλλίας τῆς ἐπὶ Θεμισκυραν διατεινούσης ἀπὸ τῆς Κολχίδος.

Ἡ δ' οὖν Διοσκουριάς ἐν κόλῳ τοιούτῳ κειμένη 16
καὶ τὸ ἑωθινώτατον σημεῖον ἐπέχουσα τοῦ σύμπαντος
5 πελάγους, μυχὸς τε τοῦ Εὐξείνου λέγεται καὶ ἔσχατος
πλοῦς· τό τε παροιμιακῶς λεχθὲν οὕτω δεῖ δέξασθαι
„εἰς Φᾶσιν ἔνθα ναυσὶν ἔσχατος δρόμος,“ οὐχ ὥς τὸν
ποταμὸν λέγοντος τοῦ ποιήσαντος τὸ λαμβεῖν, οὐδὲ
δὴ ὥς τὴν ὁμώνυμον αὐτῷ πόλιν κειμένην ἐπὶ τῷ πο-
10 ταμῷ, ἀλλ' ὥς τὴν Κολχίδα ἀπὸ μέρους, ἐπεὶ ἀπὸ γε
τοῦ ποταμοῦ καὶ τῆς πόλεως οὐκ ἐλάττων ἑξακοσίων
σταδίων λείπεται πλοῦς ἐπ' εὐθείας εἰς τὸν μυχόν. ἡ
δ' αὐτὴ Διοσκουριάς ἐστὶ καὶ ἀρχὴ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ 0.498
μεταξὺ τῆς Κασπίας καὶ τοῦ Πόντου καὶ ἐμπόριον τῶν
15 ὑπερκειμένων καὶ σύνεργος ἔθνων κοινόν· συνέρ-
χεσθαι γοῦν εἰς αὐτὴν ἑβδομήκοντα, οἱ δὲ καὶ τρια-
κόσια ἔθνη φασίν, οἷς οὐδὲν τῶν ὄντων μέλει, πάντα
δὲ ἑτερόγλωττα διὰ τὸ σποράδην καὶ ἀμίκτως οἰκεῖν
ὑπὸ αὐθαδείας καὶ ἀγριότητος· Σαρμάται δ' εἰσὶν οἱ
20 πλείους, πάντες δὲ Κανκάσιοι. ταῦτα μὲν δὴ τὰ περὶ
τὴν Διοσκουριάδα.

Καὶ ἡ λοιπὴ δὲ Κολχὶς ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἡ πλείων 17
ἐστὶ· διαρρεῖ δ' αὐτὴν ὁ Φᾶσις, μέγας ποταμὸς ἐξ Ἀρ-
μενίας τὰς ἀρχὰς ἔχων, δεχόμενος τὸν τε Γλαῦκον καὶ
25 τὸν Ἴππον ἐκ τῶν πλησίον ὄρων ἐκπίπτοντας· ἀνα-
πλεῖται δὲ μέχρι Σαραπανῶν ἐρύματος δυναμένου δέ-
ξασθαι καὶ πόλεως συνοικισμόν, ὅθεν πεξεύουσιν ἐπὶ
τὸν Κῦρον ἡμέραις τέτταρσι δι' ἀμαξιτοῦ. ἐπικείται
δὲ τῷ Φάσιδι ὁμώνυμος πόλις, ἐμπόριον τῶν Κόλχων,
30 τῇ μὲν προβεβλημένη τὸν ποταμὸν τῇ δὲ λίμνην τῇ δὲ
τὴν θάλατταν. ἐντεῦθεν δὲ πλοῦς ἐπ' Ἀμισοῦ καὶ
Σινώπης * τριῶν ἡμερῶν ἢ δύο διὰ τὸ τοὺς αἰγιαλοὺς

μαλακούς εἶναι καὶ τὰς τῶν ποταμῶν ἐκβολάς. ἀγαθὴ δ' ἐστὶν ἡ χώρα καὶ καρποῖς πλήν τοῦ μέλιτος (πικρίζει γὰρ τὸ πλέον) καὶ τοῖς πρὸς ναυπηγίαν πᾶσιν· ὕλην τε γὰρ καὶ φύει καὶ ποταμοῖς κατακομίζει, λίνον τε ποιεῖ πολὺ καὶ κάνναβιν καὶ κηρὸν καὶ πίτταν. ἡ δὲ λινουρ- 5 γία καὶ τεθρύληται· καὶ γὰρ εἰς τοὺς ἔξω τόπους ἔξε- κόμιζον, καί τινες βουλόμενοι συγγένειάν τινα τοῖς Κόλ- χοις πρὸς τοὺς Αἰγυπτίους ἐμφανίζειν ἀπὸ τούτων πι- στοῦνται. ὑπέρεκται δὲ τῶν λεχθέντων ποταμῶν ἐν τῇ Μοσχικῇ τὸ τῆς Λευκοθέας ἱερὸν Φοῖβου Ἰδρυμα, 10 καὶ μαντεῖον ἐκείνου, ὅπου κριὸς οὐ θύεται, πλούσιόν ποτε ὑπάρξαν, συληθὲν δὲ ὑπὸ Φαρνάκου καθ' ἡμᾶς καὶ μικρὸν ὕστερον ὑπὸ Μιθριδάτου τοῦ Περγαμηνοῦ. κακῶθεις γὰρ χώρας „νοσεῖ τὰ τῶν θεῶν οὐδὲ τι- „μᾶσθαι θέλει,“ φησὶν Εὐριπίδης.

15

18 Τὸ μὲν γὰρ παλαιὸν ὅσῃ ἐπιφάνειαν ἔσχεν ἡ χώ- ρα αὕτη δηλοῦσιν οἱ μῦθοι, τὴν Ἰάσονος στρατείαν αἰ- νιττόμενοι προσελθόντος μέχρι καὶ Μηδίας, ἔτι δὲ πρό- τερον τὴν Φοῖβου. μετὰ δὲ ταῦτα διαδεξάμενοι βασι- λεῖς εἰς σκηπτουχίας διηρημένην ἔχοντες τὴν χώραν 20 μέσως ἔπραττον· αὐξηθέντος δὲ ἐπὶ πολὺ Μιθριδάτου τοῦ Εὐπάτορος, εἰς ἐκεῖνον ἡ χώρα περιέστη· ἐπέμ- C.499πετο δ' αἰεὶ τις τῶν φίλων ὑπαρχος καὶ διοικητὴς τῆς χώρας. τούτων δὲ ἦν καὶ Μοαφέρνης, ὁ τῆς μητρὸς ἡμῶν θεὸς πρὸς πατρός· ἦν δ' ἐνθεν ἡ πλείστη τῶ 25 βασιλεῖ πρὸς τὰς ναυτικὰς δυνάμεις ὑπουργία. κατα- λυθέντος δὲ Μιθριδάτου συγκατελύθη καὶ ἡ ὑπ' αὐ- τῷ πᾶσα καὶ διενεμήθη πολλοῖς· ὕστατα δὲ Πολέμων ἔσχε τὴν Κολχίδα, ἀκκείνου τελευτήσαντος ἡ γυνὴ Πυ- θοδώρις κρατεῖ, βασιλεύουσα καὶ Κόλχων καὶ Τραπε- 30 ζοῦντος καὶ Φαρνακίας καὶ τῶν ὑπερκειμένων βαρβά- ρων, περὶ ὧν ἐροῦμεν ἐν τοῖς ὕστερον. ἡ δ' οὖν Μο-

σχική, ἐν ᾗ τὸ ἱερόν, τριμερὴς ἐστὶ· τὸ μὲν γὰρ ἔχουσιν αὐτῆς Κόλχοι τὸ δὲ Ἰβηρες τὸ δὲ Ἀρμένιοι. ἐστὶ δὲ καὶ πολίχνιον ἐν τῇ Ἰβηρίᾳ Φοίξου πόλις ἣ νῦν Ἰδή-
εσσα, εὐεργετὴς χωρίον ἐν μεθορίοις τῆς Κολχίδος.

- 5 Τῶν δὲ συνερχομένων ἔθνων εἰς τὴν Διοσκουρι- 19
άδα καὶ οἱ Φθειροφάγοι εἰσὶν, ἀπὸ τοῦ ἀνῆμοῦ καὶ τοῦ
πίνου λαβόντες τοῦνομα. πλησίον δὲ καὶ οἱ Σοάνες,
οὐδὲν βελτίους τούτων τῷ πίνῳ δυνάμει δὲ βελτίους,
σχεδὸν δέ τι καὶ κράτιστοι κατὰ ἀλκὴν καὶ δύναμιν·
10 δυναστεύουσι γοῦν τῶν κύκλῳ τὰ ἄκρα τοῦ Κανκάσου
κατέχοντες τὰ ὑπὲρ τῆς Διοσκουριάδος· βασιλέα δ'
ἔχουσι καὶ συνέδριον ἀνδρῶν τριακοσίων, συνάγουσι
δ' ὥς φασι στρατιὰν καὶ εἴκοσι μυριάδων· ἅπαν γὰρ
ἐστὶ τὸ πλῆθος μάχιμον, οὐ συντεταγμένον [δὲ]. παρὰ
15 τούτοις δὲ λέγεται καὶ χρυσὸν καταφέρειν τοὺς χει-
μάρρους, ὑποδέχεσθαι δ' αὐτὸν τοὺς βαρβάρους φάτ-
ναις κατατετρημέναις καὶ μαλλωταῖς δοραῖς· ἂφ' οὗ
δὴ μεμυθεῦσθαι καὶ τὸ χρυσόμαλλον δέρος· * εἰ μὴ
καὶ Ἰβηρας ὁμωνύμως τοῖς ἑσπερίοις καλοῦσιν ἀπὸ
20 τῶν ἐκατέρωθι χρυσείων. χρῶνται δ' οἱ Σοάνες φαρ-
μάκοις πρὸς τὰς ἀκίδας * θαυμαστῶς καὶ τοὺς ἀφαρ-
μάκτοις τετρωμένους βέλεσι λυπεῖ κατὰ τὴν ὁσμήν. τὰ
μὲν οὖν ἄλλα ἔθνη τὰ πλησίον τὰ περὶ τὸν Κανκάσον
λυπρὰ καὶ μικρόχωρα, τὸ δὲ τῶν Ἀλβανῶν ἔθνος καὶ
25 τὸ τῶν Ἰβήρων, ἃ δὴ πληροῦ μάλιστα τὸν λεχθέντα
ἰσθμόν, Κανκάσια [μὲν] καὶ αὐτὰ λέγοιτ' ἄν, εὐδαί-
μονα δὲ χώραν ἔχει καὶ σφόδρα καλῶς οἰκεῖσθαι δυ-
ναμένην.

Καὶ δὴ κ' ἡ γε Ἰβηρία κατοικεῖται καλῶς τὸ πλέον 3
30 πόλεσί τε καὶ ἐποικίοις, ὥστε καὶ κεραμωτὰς εἶναι στέ-

4. post Κολχίδος: περὶ τὴν Διοσκουριάδα ἔειδ' ὁ Χάρης πο-
ταμός.

γας καὶ ἀρχιτεκτονικὴν τὴν τῶν οἰκήσεων κατασκευὴν καὶ ἀγορὰς καὶ τᾶλλα κοινά.

2 Τῆς δὲ χώρας τὰ μὲν κύκλῳ τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι C.500 περιέχεται· προπεπτώκασι γάρ, ὥς εἶπον, ἀγκῶνες ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν εὐκαρποι, περιλαμβάνοντες τὴν σύμ- 5 πασαν Ἰβηρίαν καὶ συνάπτοντες πρὸς τε τὴν Ἀρμενίαν καὶ τὴν Κολχίδα· ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ πεδλίον ποταμοῖς διάρρυτον, μεγίστῳ δὲ τῷ Κύρῳ, ὃς τὴν ἀρχὴν ἔχων ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας, εἰσβαλὼν εὐθὺς εἰς τὸ πεδλίον τὸ λεχθέν, παραλαβὼν καὶ τὸν Ἄραγον ἐκ τοῦ Καυκάσου 10 ῥέοντα καὶ ἄλλα ὕδατα διὰ στενῆς ποταμίας εἰς τὴν Ἀλβανίαν ἐκπίπτει· μεταξὺ δὲ ταύτης τε καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐνεχθεῖς πολὺς διὰ πεδίων εὐβοτουμένων σφόδρα, δεξιόμενος καὶ [ἄλλους] πλείους ποταμούς, ὧν ἐστὶν ὁ τε Ἀλαζόνιος καὶ ὁ Σανδοβάνης καὶ ὁ Ροιτάκης 15 καὶ Χάνης πλωτοὶ πάντες εἰς τὴν Κασπίαν ἐμβάλλει θάλατταν. ἐκαλεῖτο δὲ πρότερον Κόρος.

3 Τὸ μὲν οὖν πεδλίον τῶν Ἰβήρων οἱ γεωργικώτεροι καὶ πρὸς εἰρήνην νευενκότες οἰκοῦσιν ἀρμενιστὶ τε καὶ 20 μηδιστὶ ἐσκευασμένοι, τὴν δ' ὄρεινὴν οἱ πλείους καὶ μάχιμοι κατέχουσι Σκυθῶν δίκην ζῶντες καὶ Σαρματῶν, ὧν περ καὶ ὄμοροι καὶ συγγενεῖς εἰσιν· ἄπτονται δ' ὅμως καὶ γεωργίας, πολλὰς τε μυριάδας συνάγουσιν καὶ ἐξ ἑαυτῶν καὶ ἐξ ἐκείνων, ἐπειδάν τι συμπέσῃ θορυβῶδες. 25

4 Τέτταρες δ' εἰσὶν εἰς τὴν χώραν εἰσβολαί· μία μὲν διὰ Σαραπανῶν φρουρίου Κολχικοῦ καὶ τῶν κατ' αὐτὸ στενῶν, δι' ὧν ὁ Φᾶσις γεφύραις ἑκατὸν καὶ εἴκοσι περατὸς γινόμενος διὰ τὴν σκολιότητα καταρρεῖ τρα- 30 χὺς καὶ βίαιος εἰς τὴν Κολχίδα, πολλοὺς χειμάρροις κατὰ τὰς ἐπομβρίας ἐκχαραδρουμένων τῶν τόπων. γεννᾶται δ' ἐκ τῶν ὑπερκειμένων ὄρων πολλαῖς συμ-

πληρούμενος πηγαῖς, ἐν δὲ τοῖς πεδίοις καὶ ἄλλους
 προσλαμβάνει ποταμούς, ὧν ἐστὶν ὁ τε Γλαῦκος καὶ
 ὁ Ἴππος· πληρωθεὶς δὲ καὶ γενόμενος πλωτὸς ἐξίησιν
 εἰς τὸν Πόντον καὶ ἔχει πόλιν ὁμώνυμον ἐφ' αὐτῷ καὶ
 5 λίμνην πλησίον. ἡ μὲν οὖν ἐκ τῆς Κολχίδος εἰς τὴν
 Ἰβηρίαν ἐμβολὴ τοιαύτη, πέτραις καὶ ἐρύμασι καὶ πο-
 ταμοῖς χαραδρῶδεσι διακεκλεισμένη.

Ἐκ δὲ τῶν πρὸς ἄρκτον νομάδων ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας 5
 ἀνάβασις χαλεπή, καὶ μετὰ ταύτην ποταμία στενὴ ἐπὶ
 10 τοῦ Ἀράγου ποταμοῦ τεττάρων ἡμερῶν ὁδὸν ἔχουσα
 ἐφ' ἑνα, φρουρεῖ δὲ τὸ πέρας τῆς ὁδοῦ τεῖχος δύσμα-
 χον· ἀπὸ δὲ τῆς Ἀλβανίας διὰ πέτρας πρῶτον λατο-
 μητὴ εἰσοδος, εἶτα διὰ τέλματος ὃ ποιεῖ ὁ ποταμὸς
 [Ἀλαξόνιος] ἐκ τοῦ Κανκάσου καταπίπτων. ἀπὸ δὲ τῆς
 15 Ἀρμενίας τὰ ἐπὶ τῷ Κύρῳ στενὰ καὶ τὰ ἐπὶ τῷ * Ἀρά-
 γῳ· πρὶν γὰρ εἰς ἀλλήλους συμπεσεῖν, ἔχουσιν ἐπικει-
 μένας πόλεις ἐρυμνάς ἐπὶ πέτραις διεχούσαις ἀλλήλων 501
 ὅσον ἐκκαίδεκα σταδίους, ἐπὶ μὲν τῷ Κύρῳ τὴν Ἀρμο-
 ξικὴν ἐπὶ δὲ θατέρῳ Σευσάμορα. ταύταις δὲ ἐχρήσατο
 20 ταῖς εἰσβολαῖς πρότερον Πομπήιος ἐκ τῶν Ἀρμενίων
 ὁρμηθεὶς, καὶ μετὰ ταῦτα Κανίδιος.

Τέτταρα δὲ καὶ γένη τῶν ἀνθρώπων οἰκεῖ τὴν 6
 χώραν· ἐν μὲν καὶ πρῶτον ἐξ οὗ τοὺς βασιλέας καθι-
 στᾶσι κατ' ἀγχιστεῖαν τε καὶ ἡλικίαν τὸν πρεσβύτα-
 25 τον, ὃ δὲ δεύτερος δικαιοδοτεῖ καὶ στρατηλατεῖ. δεύ-
 τερον δὲ τὸ τῶν λερέων οἱ ἐπιμελοῦνται καὶ τῶν πρὸς
 τοὺς ὁμόρους δικαίων. τρίτον δὲ τὸ τῶν στρατενομέ-
 νων καὶ γεωργούντων. τέταρτον δὲ τὸ τῶν λαῶν, οἱ βα-
 σιλικοὶ δοῦλοὶ εἰσι καὶ πάντα διακονοῦνται τὰ πρὸς τὸν
 30 βίον. κοιναὶ δ' εἰσὶν αὐτοῖς αἱ κτήσεις κατὰ συγγένει-
 αν, ἄρχει δὲ καὶ ταμιεύει ἐκάστην ὁ πρεσβύτατος. τοι-
 οῦτοι μὲν οἱ Ἰβηρες καὶ ἡ χώρα αὐτῶν.

1 Ἀλβανοὶ δὲ ποιμενικώτεροι καὶ τοῦ νομαδικοῦ γένους ἐγγυτέρω, πλὴν ἄλλ' οὐκ ἄγριοι· ταύτῃ δὲ καὶ πολεμικοὶ μετρίως. οἰκοῦσι δὲ μεταξὺ τῶν Ἰβήρων καὶ τῆς Κασπίας θαλάττης, πρὸς ἕω μὲν ἀπτόμενοι τῆς θαλάττης, πρὸς δύσιν δὲ ὁμοροῦντες τοῖς Ἰβηρσι· τῶν 5 δὲ λοιπῶν πλευρῶν τὸ μὲν βόρειον φρουρεῖται τοῖς Κανκασίοις ὄρεσι (ταῦτα γὰρ ὑπέρκνεται τῶν πεδίων, καλεῖται δὲ τὰ πρὸς τῇ θαλάττῃ μάλιστα Κεραύνια), τὸ δὲ νότιον ποιεῖ ἡ Ἀρμενία παρήκουσα, πολλὴ μὲν πεδιάς πολλή δὲ καὶ ὄρεινῇ, καθάπερ ἡ Καμβυσηνὴ, 10 καθ' ἣν ἅμα καὶ τοῖς Ἰβηρσι καὶ τοῖς Ἀλβανοῖς οἱ Ἀρμένιοι συνάπτουσιν.

2 Ὁ δὲ Κῦρος ὁ διαρρέων τὴν Ἀλβανίαν καὶ οἱ ἄλλοι ποταμοὶ οἱ πληροῦντες ἐκείνον ταῖς μὲν τῆς γῆς ἀρεταῖς προσλαμβάνουσι, τὴν δὲ θάλατταν ἀλλοτρι- 15 οῦσιν. ἡ γὰρ χοῦς προσπίπτουσα πολλὴ πληροῖ τὸν πόρον, ὥστε καὶ τὰς ἐπικειμένας νησιδας ἐξηπειροῦσθαι καὶ τενάγῃ ποιεῖν ἀνώμαλα καὶ δυσφύλακτα· τὴν δ' ἀνωμαλίαν ἐπιτείνουσιν αἱ ἐκ τῶν πλημμυρίδων ἀνακοπαί. καὶ δὴ καὶ εἰς στόματα δώδεκά φασι μεμε- 20 ρίσθαι τὰς ἐκβολάς, τὰ μὲν τυφλὰ τὰ δὲ παντελῶς *ἐπιγελῶντα καὶ μηδὲ ὕφορμον ἀπολείποντα· ἐπὶ πλείους γοῦν ἢ ἐξήκοντα σταδίους ἀμφικλύστου τῆς ἡόνος οὔσης τῇ θαλάττῃ καὶ τοῖς ποταμοῖς, ἅπαν εἶναι μέρος αὐτῆς ἀπροσπέλαστον, τὴν δὲ χοῦν καὶ μέχρι πεντα- 25 κοσίων παρήκειν σταδίων θινώδη ποιοῦσαν τὸν αἰγιάλόν. πλησίον δὲ καὶ ὁ Ἀράξης ἐμβάλλει τραχὺς ἐκ τῆς Ἀρμενίας ἐκπίπτων· ἣν δὲ ἐκεῖνος προωθεῖ χοῦν πορευτὸν ποιῶν τὸ δεῖθρον, ταύτην ὁ Κῦρος ἀναπληροῖ.

3 Τάχα μὲν οὖν τῷ τοιοῦτῳ γένει τῶν ἀνθρώπων 30 C.502 οὐδὲν δεῖ θαλάττης· οὐδὲ γὰρ τῇ γῇ χρῶνται κατ' ἀξίαν, πάντα μὲν ἐκφερούσῃ καρπὸν καὶ τὸν ἡμερώτατον,

πᾶν δὲ φυτόν· καὶ γὰρ τὰ ἀειθαλῆ φέρει· τυγχάνει δ'
 ἐπιμελείας οὐδὲ μικρᾶς „ἀλλὰ τάγ' ἄσπαρτα καὶ ἀνή-
 „ροτα πάντα φύονται,“ καθάπερ οἱ στρατεύσαντες
 φασι, Κυκλώπειόν τινα διηγούμενοι βίον· πολλαχοῦ
 5 γὰρ σπαρεῖσαν ἅπαξ δις ἐκφέρειν καρπὸν ἢ καὶ τρεῖς,
 τὸν δὲ πρῶτον καὶ πεντηκοντάχουν, ἀνέαστον καὶ
 ταῦτα οὐδὲ σιδήρῳ τμηθεῖσαν ἀλλ' αὐτοξύλῳ ἀρότρῳ.
 ποτίζεται δὲ πᾶν τὸ πεδλίον τοῦ Βαβυλωνίου καὶ τοῦ
 Αἰγυπτίου μᾶλλον τοῖς ποταμοῖς καὶ τοῖς ἄλλοις ὕδα-
 10 σιν ὥστ' αἰὲ ποώδῃ φυλάττειν τὴν ὄψιν· διὰ δὲ τοῦτο
 καὶ εὐβοτόν ἐστι· πρόσσεστι δὲ καὶ τὸ εὐάερον ἐκείνων
 μᾶλλον. ἄσκαφοι δ' αἱ ἄμπελοι μένουσαι διὰ τέλους,
 τεμνόμεναι δὲ διὰ πενταετηρίδος, νέαι μὲν διετεῖς ἐκ-
 φέρουσιν ἤδη καρπὸν, τέλειαι δ' ἀποδιδόασιν τοσοῦτον
 15 ὥστ' ἀφιαῖσιν ἐν τοῖς κλήμασι πολὺ μέρος. εὐερνῇ δ'
 ἐστὶ καὶ τὰ βοσκήματα παρ' αὐτοῖς τὰ τε ἡμέρα καὶ τὰ
 ἄγρια.

Καὶ οἱ ἄνθρωποι κάλλει καὶ μεγέθει διαφέροντες, 4
 ἄπλοι δὲ καὶ οὐ καπηλικοί· οὐδὲ γὰρ νομίσματι τὰ
 20 πολλὰ χρῶνται, οὐδὲ ἀριθμὸν ἴσασι μείζω τῶν ἑκατόν,
 ἀλλὰ φορτίοις τὰς ἀμοιβὰς ποιοῦνται· καὶ πρὸς τᾶλλα
 δὲ τὰ τοῦ βίου ῥαθυμῶς ἔχουσιν. ἄπειροι δ' εἰσὶ καὶ
 μέτρων τῶν ἐπ' ἀκριβὲς καὶ σταθμῶν, καὶ πολέμου δὲ
 καὶ πολιτείας καὶ γεωργίας ἀπρονοήτως ἔχουσιν· ὅμως
 25 δὲ καὶ πεζοὶ καὶ ἄφ' ἵππων ἀγωνίζονται, ψилоὶ τε καὶ
 κατάφρακτοι, καθάπερ Ἀρμένιοι. στέλλουσι δὲ μείζω 5
 τῆς Ἰβήρων στρατιάν. ὀπλίζουσι γὰρ καὶ ἔξ μυριάδας
 πεζῶν, ἱππέας δὲ μυρίους καὶ δισχιλίους, ὅσοις πρὸς
 Πομπήιον διεκινδύνευσαν. καὶ τούτοις δὲ συμπολε-
 30 μοῦσιν οἱ νομάδες πρὸς τοὺς ἔξωθεν, ὥσπερ τοῖς Ἰβη-
 ρσι, κατὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας. ἄλλως δ' ἐπιχειροῦσι τοῖς ἀν-
 θρώποις πολλάκις ὥστε καὶ γεωργεῖν κωλύουσιν. ἀκον-

τισται δὲ εἰσι καὶ τοξόται, θώρακας ἔχοντες καὶ θυρεοὺς, περίκρानα δὲ θήρεια παραπλησίως τοῖς Ἰβηρσιν.

Ἔστι δὲ τῆς Ἀλβανῶν χώρας καὶ ἡ Κασπιανή, τοῦ Κασπίου ἔθνους ἐπάνυμος, οὗπερ καὶ ἡ θάλαττα, ἀφανοὺς ὄντος νυνί. ἡ δ' ἐκ τῆς Ἰβηρίας εἰς τὴν Ἀλβανίαν εἰσβολὴ διὰ τῆς Καμβυσηνῆς ἀνύδρου τε καὶ τραχείας ἐπὶ τὸν Ἀλαξόνιον ποταμόν.

* Θηρευτικοὶ δὲ καὶ αὐτοὶ καὶ οἱ κύνες αὐτῶν εἰς ὑπερβολήν, οὐ τέχνη μᾶλλον ἢ σπουδῇ τῇ περὶ τοῦτο.

C.503 6 Διαφέρουσι δὲ καὶ οἱ βασιλεῖς· νυνὶ μὲν οὖν εἰς 10 ἀπάντων ἄρχει, πρότερον δὲ καὶ καθ' ἑκάστην γλῶτταν ἰδίᾳ ἐβασιλεύοντο ἕκαστοι. γλῶτται δ' εἰσὶν ἕξ καὶ εἴκοσιν αὐτοῖς διὰ τὸ μὴ εὐεπίμικτον πρὸς ἀλλήλους.

Φέρει δ' ἡ γῆ καὶ τῶν ἐρπετῶν ἓνια τῶν θανασίμων καὶ σκορπίους καὶ φαλάγγια· τῶν δὲ φαλαγγίων 15 τὰ μὲν ποιεῖ γελῶντας ἀποθνήσκειν, τὰ δὲ κλαίοντας πόθῳ τῶν οἰκείων.

7 Θεοὺς δὲ τιμῶσιν ἥλιον καὶ δία καὶ σελήνην, διαφερόντως δὲ τὴν σελήνην. ἔστι δ' αὐτῆς τὸ ἱερὸν τῆς Ἰβηρίας πλησίον· ἱερᾶται δ' ἀνὴρ ἐντιμότητος 20 μετὰ γε τὸν βασιλέα, προεστὼς τῆς ἱερᾶς χώρας, πολλῆς καὶ εὐάνδρου, καὶ αὐτῆς καὶ τῶν ἱεροδούλων, ὧν ἐνθουσιῶσι πολλοὶ καὶ προφητεύουσιν· ὃς δ' ἂν αὐτῶν ἐπὶ πλέον κατάσχετος γενόμενος πλανᾶται κατὰ τὰς ὕλας μόνος, τοῦτον συλλαβὼν ὁ ἱερεὺς ἀλύσει δῆ- 25 σας ἱερᾷ τρέφει πολυτελεῶς τὸν ἐνιαυτὸν ἐκεῖνον, ἔπειτα προαχθεὶς εἰς τὴν θυσίαν τῆς θεοῦ, σὺν ἄλλοις ἱερείοις θύεται μυρισθεῖς. τῆς δὲ θυσίας ὁ τρόπος οὗτος· ἔχων τις ἱερὰν λόγχην ἥπερ ἔστι νόμος ἀνθρωποθνεῖν, παρελθὼν ἐκ τοῦ πλήθους παίει διὰ τῆς 30 πλευρᾶς εἰς τὴν καρδίαν, οὐκ ἄπειρος τοιούτου· πεσόντος δὲ σημειοῦνται μαντεῖά τινα ἐκ τοῦ πτώματος

καὶ εἰς τὸ κοινὸν ἀποφαίνουσι, κομισθέντος δὲ τοῦ σώματος εἰς τι χωρίον ἐπιβαίνουσιν ἅπαντες καθαρσίῳ χρώμενοι.

Ὑπερβαλλόντως δὲ τὸ γῆρας τιμῶσιν Ἀλβανοὶ καὶ 8
5 τὸ τῶν ἄλλων, οὐ τῶν γονέων μόνον· τεθνηκότων δὲ οὐχ ὅσιον φροντίζειν οὐδὲ μεμνησθαι. συγκατορύν-
τουσι μέντοι τὰ χρήματα αὐτοῖς, καὶ διὰ τοῦτο πένη-
τες ζῶσιν οὐδὲν πατρῶον ἔχοντες. ταῦτα μὲν περὶ
Ἀλβανῶν.

10 Λέγεται δ' Ἰάσωνα μετὰ Ἀρμένου τοῦ Θετταλοῦ
κατὰ τὸν πλοῦν τὸν ἐπὶ τοὺς Κόλχους ὁρμῆσαι μέχρι
τῆς Κασπίας θαλάττης, καὶ τὴν τε Ἰβηρίαν καὶ τὴν Ἀλ-
βανίαν ἐπελθεῖν καὶ πολλὰ τῆς Ἀρμενίας καὶ τῆς Μη-
δίας, ὥς μαρτυρεῖ τὰ τε Ἰασόνια καὶ ἄλλα ὑπομνήματα
15 πλείω. τὸν δὲ Ἀρμενον εἶναι ἐξ Ἀρμενίου πόλεως τῶν
περὶ τὴν Βοιβηίδα λίμνην μεταξὺ Φερῶν καὶ Λαρίσης,
τοὺς σὺν αὐτῷ τε οἰκίσαι τὴν τε Ἀκισισηνὴν καὶ τὴν
Συσπιρίτιν ἕως Καλαχανῆς καὶ Ἀδιαβηνῆς, καὶ δὴ καὶ
τὴν Ἀρμενίαν ἐπαύνυμον καταλιπεῖν.

20 Ἐν δὲ τοῖς ὑπὲρ τῆς Ἀλβανίας ὄρεσι καὶ τὰς Ἀμα- 5
ζόνας οἰκεῖν φασί. Θεοφάνης μὲν οὖν ὁ συστρατεύσας
τῷ Πομπηίῳ καὶ γενόμενος ἐν τοῖς Ἀλβανοῖς, μεταξὺ
τῶν Ἀμαζόνων καὶ τῶν Ἀλβανῶν φησι Γήλας οἰκεῖν
καὶ Αἰήτας Σκύθας, καὶ δεῖν ἐνταῦθα τὸν Μερμάδαλιν
25 ποταμὸν τούτων τε καὶ τῶν Ἀμαζόνων ἀνὰ μέσον. ἄλ- 504
λοι δέ, ὧν καὶ ὁ Σκήψιος Μητροδωρος καὶ Ὑψικράτης,
οὐδὲ αὐτοὶ ἄπειροι τῶν τόπων γεγονόνες, Γαργαρεῦ-
σιν ὁμόρους αὐτὰς οἰκεῖν φασιν ἐν ταῖς ὑπαρξείαις ταῖς
πρὸς ἄρκτον τῶν Κανκασίων ὁρῶν ἃ καλεῖται Κεραύ-
30 νια, τὸν μὲν ἄλλον χρόνον καθ' αὐτάς, αὐτουργοῦσας
ἕκαστα τὰ τε πρὸς ἄροτον καὶ φυτουργίαν καὶ τὰ πρὸς

τὰς νομὰς καὶ μάλιστα τῶν ἵππων, τὰς δ' ἀλκιμωτάτας
 κυνηγεσίαις πλεονάζειν καὶ τὰ πολέμια ἀσκεῖν· ἀπά-
 σας δ' ἐπικεκαῦσθαι τον δεξιὸν μαστὸν ἐκ νηπίων,
 ὥστε εὐπετῶς χρῆσθαι τῷ βραχίονι πρὸς ἐκάστην χρεΐ-
 αν, ἐν δὲ τοῖς πρώτοις πρὸς ἀκοντισμὸν· χρῆσθαι δὲ 6
 καὶ τόξῳ καὶ σαγάρει καὶ πέλτῃ, δορὰς δὲ θηρίων ποι-
 εῖσθαι περίκρανά τε καὶ σκεπάσματα καὶ διαζώματα·
 δύο δὲ μῆνας ἐξαιρέτους ἔχειν τοῦ ἔαρος, καθ' οὓς ἀνα-
 βαίνουσιν εἰς τὸ πλησίον ὄρος τὸ διορίζον αὐτάς τε καὶ
 τοὺς Γαργαρέας. ἀναβαίνουσι δὲ ἀκκεῖνοι κατὰ ἔθος 10
 τι παλαιόν, συνθύσοντές τε καὶ συνεσόμενοι ταῖς γυν-
 ναιξὶ τεκνοποιίας χάριν ἀφανῶς τε καὶ ἐν σκότει, ὃ τυ-
 χὼν τῇ τυχούσῃ, ἐγκύμονας δὲ ποιήσαντες ἀποπέμ-
 πουσιν· αἱ δ' ὅτι μὲν ἂν θῆλυ τέκωσι κατέχουσιν αὐ-
 ταί, τὰ δ' ἄρρενα κομίζουσιν ἐκείνοις ἐκτρέφειν· ὥκει- 15
 ωται δ' ἕκαστος πρὸς ἕκαστον νομίζων υἱὸν διὰ τὴν
 ἄγνοιαν.

- 2 Ὁ δὲ Μερμόδας καταράττων ἀπὸ τῶν ὁρῶν διὰ
 τῆς τῶν Ἀμαζόνων καὶ τῆς Σираκηνῆς καὶ ὅση μεταξὺ
 ἔρημος, εἰς τὴν Μαιῶτιν ἐκδίδωσι. τοὺς δὲ Γαργαρέας 20
 συναναβῆναι μὲν ἐκ Θεμισκύρας φασὶ ταῖς Ἀμαζόσιν
 εἰς τοὺςδε τοὺς τόπους, εἰτ' ἀποστάντας αὐτῶν πολε-
 μεῖν μετὰ Θρακῶν καὶ Εὐβοέων τινῶν πλανηθέντων
 μέχρι δεῦρο πρὸς αὐτάς, ὕστερον δὲ καταλυσαμένους
 τὸν πρὸς αὐτάς πόλεμον ἐπὶ τοῖς λεχθεῖσι ποιήσασθαι 25
 συμβάσεις, ὥστε τέκνων συγκοινωνεῖν μόνον, ζῆν δὲ
 καθ' αὐτοὺς ἐκατέρους.

- 3 Ἴδιον δέ τι συμβέβηκε τῷ λόγῳ [τῷ] περὶ τῶν Ἀμα-
 ζόνων· οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι τὸ μυθῶδες καὶ τὸ ἱστορικὸν
 διωρισμένον ἔχουσι· τὰ γὰρ παλαιὰ καὶ ψευδῆ καὶ τε- 30

1. post ἀλκιμωτάτας : τῶν ἵππων

ρατωδῇ μῦθοι καλοῦνται, ἡ δ' ἱστορία βούλεται τᾶλη-
 θές, ἃν τε παλαιὸν ἃν τε νέον, καὶ τὸ τερατῶδες ἢ οὐκ
 ἔχει ἢ σπάνιον· περὶ δὲ τῶν Ἀμαζόνων τὰ αὐτὰ λέγε-
 ται καὶ νῦν καὶ πάλαι, τερατώδῃ τε ὄντα καὶ πίστεως
 5 πόρρω. τίς γὰρ ἂν πιστεύσειεν, ὥς γυναικῶν στρατὸς
 ἢ πόλις ἢ ἔθνος συσταίῃ ἂν ποτε χωρὶς ἀνδρῶν; καὶ οὐ
 μόνον γε συσταίῃ, ἀλλὰ καὶ ἐφόδους ποιήσαιο ἐπὶ τὴν
 ἄλλοτριάν καὶ κρατήσειεν οὐ τῶν ἐγγὺς μόνον ὥστε
 καὶ μέχρι τῆς νῦν Ἰωνίας προσελθεῖν, ἀλλὰ καὶ διαπόν- C.500
 10 τιον στείλαιο στρατείαν μέχρι τῆς Ἀττικῆς; τοῦτο γὰρ
 ὅμοιον ὥς ἂν εἴ τις λέγοι, τοὺς μὲν ἄνδρας γυναικας
 γεγονέναι τοὺς τότε τὰς δὲ γυναικας ἄνδρας. ἀλλὰ μὴν
 ταῦτά γε αὐτὰ καὶ νῦν λέγεται περὶ αὐτῶν. ἐπιτείνει
 δὲ τὴν ιδιότητα καὶ τὸ πιστεῦσθαι τὰ παλαιὰ μᾶλλον
 15 ἢ τὰ νῦν· κτίσεις γοῦν πόλεων καὶ ἐπωνυμίαι λέγον- 4
 ται, καθάπερ Ἐφέσου καὶ Σμύρνης καὶ Κύμης καὶ
 Μυρίνης, καὶ τάφοι καὶ ἄλλα ὑπομνήματα· τὴν δὲ Θε-
 μίσκυραν καὶ τὰ περὶ τὸν Θερμῶδοντα πεδία καὶ τὰ
 ὑπερκείμενα ὄρη ἅπαντες Ἀμαζόνων καλοῦσι, καὶ φα-
 20 σιν ἐξελαθῆναι αὐτὰς ἐνθένδε. ὅπου δὲ νῦν εἰσὶν, ὀλί-
 γοι τε καὶ ἀναποδείκτως καὶ ἀπίστως ἀποφαίνονται·
 καθάπερ καὶ περὶ Θαληστρίας, ἣν Ἀλεξάνδρῳ συμμῆ-
 ξαί φασιν ἐν τῇ Τρκανίᾳ καὶ συγγενέσθαι τεκνοποιίας
 χάριν, δυναστεύουσαν τῶν Ἀμαζόνων· οὐ γὰρ ὁμο-
 25 λογεῖται τοῦτο· ἀλλὰ τῶν συγγραφέων τοσοῦτων ὄν-
 των οἱ μάλιστα τῆς ἀληθείας φροντίσαντες οὐκ εἰρή-
 κασιν, οὐδ' οἱ πιστευόμενοι μάλιστα οὐδενὸς μέμνηνται
 τοιούτου, οὐδ' οἱ εἰπόντες τὰ αὐτὰ εἰρήκασιν· Κλεί-
 ταρχος δὲ φησι τὴν Θαληστρίαν ἀπὸ Κασπίων πυλῶν
 30 καὶ Θερμῶδοντος ὁρμηθεῖσαν· ἐλθεῖν πρὸς Ἀλέξαν-
 δρον· εἰσὶ δ' ἀπὸ Κασπίας εἰς Θερμῶδοντα στάδιοι
 πλείους ἑξακισχιλίων.

- 5 Καὶ τὰ πρὸς τὸ ἐνδοξον θρυληθέντα οὐκ ἀνωμο-
 λόγηται παρὰ πάντων, οἱ δὲ πλάσαντες ἦσαν οἱ κολα-
 κείας μᾶλλον ἢ ἀληθείας φροντίζοντες· οἷον τὸ τὸν
 Καύκασον μετενεγκεῖν εἰς τὰ Ἰνδικὰ ὄρη καὶ τὴν πλη-
 σιάζουσαν ἐκείνοις ἐφ' αὐτὴν θάλατταν ἀπὸ τῶν ὑπερκει- 5
 μένων τῆς Κολχίδος καὶ τοῦ Εὐξείνου ὁρῶν· ταῦτα
 γὰρ οἱ Ἕλληνες καὶ Καύκασον ὠνόμαζον, διέχοντα τῆς
 Ἰνδικῆς πλείους ἢ τρισμυρίους σταδίους, καὶ ἐνταῦθα
 ἐμύθευσαν τὰ περὶ Προμηθεά καὶ τὸν δεσμὸν αὐτοῦ·
 ταῦτα γὰρ τὰ ὕστατα πρὸς ἑω ἐγνώριζον οἱ τότε. ἡ δὲ 10
 ἐπὶ Ἰνδοῦς στρατεία Διονύσου καὶ Ἡρακλέους ὅστε-
 ρογενῇ τὴν μυθοποιίαν ἐμφαίνει, ὅτε τοῦ Ἡρακλέ-
 οὺς καὶ τὸν Προμηθεά λῦσαι λεγομένου χιλιάσιν ἐτῶν
 ὕστερον. καὶ ἦν μὲν ἐνδοξότερον τὸ τὸν Ἀλέξανδρον
 μέχρι τῶν Ἰνδικῶν ὁρῶν καταστρέψασθαι τὴν Ἀσίαν 15
 ἢ μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ Εὐξείνου καὶ τοῦ Καυκάσου·
 ἀλλ' ἡ δόξα τοῦ ὄρους καὶ τοῦνομα καὶ τὸ τοὺς περὶ
 Ἰάσονα δοκεῖν μακροτάτην στρατείαν τελέσαι τὴν μέ-
 C.506 χρι τῶν πλησίον Καυκάσου καὶ τὸ τὸν Προμηθεά πα-
 ραδεδόσθαι δεδεμένον ἐπὶ τοῖς ἐσχάτοις τῆς γῆς ἐν τῷ 20
 Καυκάσῳ χαριεῖσθαι τι τῷ βασιλεῖ ὑπέλαβον
 τοῦνομα τοῦ ὄρους μετενέγκαντες εἰς τὴν Ἰνδικήν.
- 6 Τὰ μὲν οὖν ὑψηλότατα τοῦ ὄντως Καυκάσου τὰ
 νοτιώτατά ἐστι τὰ πρὸς Ἀλβανίαν καὶ Ἰβηρίαν καὶ Κόλ-
 χους καὶ Ἠνιόχους· οἰκοῦσι δὲ οὓς εἶπον τοὺς συνερχο- 25
 μένους εἰς τὴν Διοσκουριάδα· συνέρχονται δὲ τὸ πλεῖ-
 στον ἁλῶν χάριν. τούτων δ' οἱ μὲν τὰς ἀκρωρείας κα-
 τέχουσιν, οἱ δὲ ἐν νάπαις αὐλίζονται καὶ ζῶσιν ἀπὸ
 θηρείων σαρκῶν τὸ πλεόν καὶ καρπῶν ἀγρίων καὶ γά-
 λακτος. αἱ δὲ κορυφαὶ χειμῶνος μὲν ἄβατοι, θέρους 30
 δὲ προσβαίνουσιν ὑποδούμενοι κεντρωτὰ ὠμοβόρινα
 δίκην τυμπάνων πλατεῖα διὰ τὰς χιόνας καὶ τοὺς κρυ-

στάλλους. καταβαίνουνσι δ' ἐπὶ δορᾶς κείμενοι σὺν τοῖς φορτίοις καὶ κατολισθαίνοντες, ὅπερ καὶ κατὰ τὴν Ἀτροπατίαν Μηδίαν καὶ κατὰ τὸ Μάσιον ὄρος τὸ ἐν Ἀρμενίᾳ συμβαίνει· ἐνταῦθα δὲ καὶ τροχίσκοι ξύλινοι 5 κεντρωτοὶ τοῖς πέλμασιν ὑποτίθενται. τοῦ γοῦν Καυκάσου τὰ μὲν ἄκρα τοιαῦτα. καταβαίνουντι δ' εἰς τὰς 7 ὑπωρείας ἀρκτικώτερα μὲν ἐστὶ τὰ κλίματα, ἡμερώτερα δέ· ἤδη γὰρ συνάπτει τοῖς πεδίοις τῶν Σιράκων. εἰσὶ δὲ καὶ τρωγλοδύται τινὲς ἐν φωλεοῖς οἰκοῦντες 10 διὰ τὰ ψύχῃ, παρ' οἷς ἤδη καὶ ἀλφίτων ἐστὶν εὐπορία· μετὰ δὲ τοὺς τρωγλοδύτας καὶ χαμαικοῖται καὶ πολυφάγοι τινὲς καλούμενοι καὶ αἱ τῶν Εἰσαδίκων κῶμαι, δυναμένων γεωργεῖν διὰ τὸ μὴ παντελῶς ὑποπεπτω- κέναι ταῖς ἄρκτοις.

15 Οἱ δ' ἐφεξῆς ἤδη νομάδες οἱ μεταξὺ τῆς Μαιώτι- 8 δος καὶ τῆς Κασπίας Ναβιανοὶ καὶ * Πανξανοὶ καὶ ἡδη τὰ τῶν Σιράκων καὶ Ἀόρσων φύλα. δοκοῦσι δ' οἱ Ἄορσοι καὶ οἱ Σίρακες φυγάδες εἶναι τῶν ἀνωτέρω . . . καὶ προσάρκτιοι μᾶλλον Ἀόρσων. Ἀβέακος μὲν οὖν ὁ τῶν 20 Σιράκων βασιλεὺς, ἡνίκα Φαρνάκης τὸν Βόσπορον εἶχε, δύο μυριάδας ἱππέων ἔστειλε, Σπαδίνης δ' ὁ τῶν Ἀόρσων καὶ * εἴκοσιν, οἱ δὲ ἄνω Ἄορσοι καὶ πλείονας· καὶ γὰρ ἐπεκράτουν πλείονος γῆς καὶ σχεδόν τι τῆς Κασπίων παραλίας τῆς πλείστης ἥρχον, ὥστε καὶ ἐνε- 25 πορεύοντο καμήλοις τὸν Ἰνδικὸν φόρτον καὶ τὸν Βαβυλώνιον παρὰ τε Ἀρμενίων καὶ Μήδων διαδεχόμενοι· ἐχρυσοφόρουν δὲ διὰ τὴν εὐπορίαν. οἱ μὲν οὖν Ἄορσοι τὸν Τάναϊν παροικοῦσιν, οἱ Σίρακες δὲ τὸν Ἀχαρδέον, ὃς ἐκ τοῦ Καυκάσου ῥέων ἐκδίδωσιν εἰς τὴν 30 Μαιώτιν.

Ἡ δὲ δευτέρα μερὶς ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῆς Κασπίας 6 θαλάττης, εἰς ἣν κατέπαιεν ἡ προτέρα· καλεῖται δ' ἡ C.507

αὐτὴ θάλαττα καὶ Ῥοκανία. δεῖ δὲ περὶ τῆς θαλάττης εἰπεῖν πρότερον ταύτης καὶ τῶν προσοίκων ἐθνῶν. ἔστι δ' ὁ κόλπος ἀνέχων ἐκ τοῦ ὠκεανοῦ πρὸς μεσημβρίαν κατ' ἀρχὰς μὲν ἱκανῶς στενός, ἐνδοτέρω δὲ πλατύνεται προϊών, καὶ μάλιστα κατὰ τὸν μυχὸν ἐπὶ σταδίου 5 πον καὶ πεντακισχιλίους· ὁ δ' εἰσπλους μέχρι τοῦ μυχοῦ μικρῷ πλειόνων ἂν εἴη συνάπτων πως ἤδη τῇ ἀοικήτῳ. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης τὸν ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων γνωριζόμενον περίπλουν τῆς θαλάττης ταύτης τὸν μὲν παρὰ τοὺς Ἀλβανούς καὶ τοὺς Καδουσίους εἶναι πεν- 10 τακισχιλίων καὶ τετρακοσίων, τὸν δὲ παρὰ τὴν Ἀναριακῶν καὶ Μάρδων καὶ Ῥοκανῶν μέχρι τοῦ στόματος τοῦ Ὠέου ποταμοῦ τετρακισχιλίων καὶ ὀκτακοσίων· ἐνθεν δ' ἐπὶ τοῦ Ἰαξάρτου διςχιλίων τετρακοσίων. δεῖ δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ μερίδι ταύτῃ καὶ τοῖς ἐπὶ τοσοῦτον 5 ἐκτετοπισμένοις ἀπλούστερον ἀκούειν, καὶ μάλιστα περὶ τῶν διαστημάτων.

- 2 Εἰσπλέοντι δ' ἐν δεξιᾷ μὲν τοῖς Εὐρωπαίοις οἱ συνεχεῖς Σκύθαι νέμονται καὶ Σαρμάται οἱ μεταξὺ τοῦ Τανάιδος καὶ τῆς θαλάττης ταύτης, νομάδες οἱ πλεί- 20 ουσ, περὶ ὧν εἰρήκαμεν· ἐν ἀριστερᾷ δ' οἱ πρὸς ἑω Σκύθαι, νομάδες καὶ οὔτοι, μέχρι τῆς ἐφ' ἑαυτῶν θαλάττης καὶ τῆς Ἰνδικῆς παρατείνοντες. ἅπαντας μὲν δὴ τοὺς προσβόρους κοινῶς οἱ παλαιοὶ τῶν Ἑλλήνων συγγραφεῖς Σκύθας καὶ Κελτοσκύθας ἐκάλουν· οἱ δ' ἔτι 25 πρότερον διελόντες τοὺς μὲν ὑπὲρ τοῦ Εὐξείνου καὶ Ἰστροῦ καὶ τοῦ Ἀδρίου κατοικοῦντας Ὑπερβορέους ἔλεγον καὶ Σαυρομάτας καὶ Ἀριμασπούς, τοὺς δὲ πέραν τῆς Κασπίας θαλάττης τοὺς μὲν Σάκας τοὺς δὲ Μασσαγέτας ἐκάλουν, οὐκ ἔχοντες ἀκριβὲς λέγειν περὶ 30 αὐτῶν οὐδέν, καίπερ πρὸς Μασσαγέτας τοῦ Κύρου πόλεμον ἱστοροῦντες. ἀλλ' οὔτε περὶ τούτων οὐδέν

ἠκριβωτο πρὸς ἀλήθειαν, οὔτε τὰ παλαιὰ τῶν Περσικῶν οὔτε τῶν Μηδικῶν ἢ Συριακῶν ἐς πίστιν ἀφικνεῖτο μεγάλην διὰ τὴν τῶν συγγραφέων ἀπλότητα καὶ τὴν φιλομυθίαν.

- 5 Ὅρωντες γὰρ τοὺς φανερωῶς μυθογράφους εὐδο-
κιμοῦντας ᾤκηθησαν καὶ αὐτοὶ παρέξεσθαι τὴν γραφὴν
ἠδεῖαν, ἐὰν ἐν ἱστορίας σχήματι λέγωσιν ἃ μηδέποτε
[μήτε] εἶδον μήτε ἤκουσαν ἢ οὐ παρὰ γε ἰδόντων, σκο-
ποῦντες δὲ αὐτὸ μόνον τοῦτο ὅτι ἀκρόασιν ἠδεῖαν ἔχει
10 καὶ θαυμαστήν. ῥᾶον δ' ἄν τις Ἡσιόδῳ καὶ Ὀμήρῳ πι-
στεύσειεν ἠρωολογοῦσι καὶ τοῖς τραγικοῖς ποιηταῖς ἢ
Κτησίᾳ τε καὶ Ἡροδότῳ καὶ Ἑλλανίκῳ καὶ ἄλλοις τοι-
ούτοις. οὐδὲ τοῖς περὶ Ἀλεξάνδρου δὲ συγγράψασιν 4
ῥᾶδιον πιστεύειν τοῖς πολλοῖς· καὶ γὰρ οὗτοι ῥαδιουργ-
15 γοῦσι διὰ τε τὴν δόξαν τὴν Ἀλεξάνδρου καὶ διὰ τὸ τὴν
στρατείαν πρὸς τὰς ἐσχατιὰς γεγενῆσθαι τῆς Ἀσίας πόρ-
ρω ἀφ' ἡμῶν· τὸ δὲ πόρρω δυσέλεγκτον. ἢ δὲ τῶν
Ῥωμαίων ἐπικράτεια καὶ ἡ τῶν Παρθυαίων πλεῖον τι
προσεκκαλύπτει τῶν παραδεδομένων πρότερον· οἱ γὰρ
20 περὶ ἐκείνων συγγράφοντες καὶ τὰ χωρία καὶ τὰ ἔθνη,
ἐν οἷς αἱ πράξεις, πιστότερον λέγουσιν ἢ οἱ πρὸ αὐτῶν·
μᾶλλον γὰρ κατωπτεύκασιν.

- Τοὺς δ' οὖν ἐν ἀριστερᾷ εἰσπλέοντι τὸ Κάσπιον 7
πέλαγος παροικοῦντας νομάδας Δάας οἱ νῦν προσαγο-
25 ρεῖουσιν τοὺς ἐπονομαζομένους Πάρνους· εἴτ' ἔρημος
πρόκειται μεταξὺ, καὶ ἐφεξῆς ἡ Ὀρκανία, καθ' ἣν ἡδη
πελαγίζει μέχρι τοῦ συνάψαι τοῖς Μηδικοῖς ὄρεσι καὶ
τοῖς Ἀρμενίων. τούτων δ' ἐστὶ μηχανοειδὲς τὸ σχῆμα
κατὰ τὰς ὑπωρείας, αἱ τελευτῶσαι πρὸς θάλατταν ποι-
30 οῦσι τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου. οἰκεῖ δὲ τὴν παρώρειαν

ταύτην μέχρι τῶν ἄκρων ἀπὸ θαλάττης ἀρξαμένοις ἐπὶ μικρὸν μὲν τῶν Ἀλβανῶν τι μέρος καὶ τῶν Ἀρμενίων, τὸ δὲ πλεόν Γῆλαι καὶ Καδούσιοι καὶ Ἀμαρδοὶ καὶ Οὐτίοι καὶ Ἀναριάκai. φασὶ δὲ Παρρασίων τινὰς συνοικῆσαι τοῖς Ἀναριάκαις, οὓς καλεῖσθαι νῦν Παρσίους· 5 Αἰνιᾶνας δ' ἐν τῇ Οὐντιά τειγίσαι πόλιν ἣν * Αἰνιάννα καλεῖσθαι, καὶ δείκνυσθαι ὅπλα τε Ἑλληνικὰ ἐνταῦθα καὶ σκευὴ χαλκᾷ καὶ ταφάς· ἐνταῦθα δὲ καὶ πόλιν Ἀναριάκην, ἐν ἣ, φασί, δείκνυνται μαντεῖον ἐγκοιμωμένων καὶ ἄλλα τινὰ ἔθνη ληστρικὰ καὶ μάχιμα 10 μάλλον ἢ γεωργικά· ποιεῖ δὲ τοῦτο ἡ τραχύτης τῶν τόπων. τὸ μέντοι πλεόν τῆς περὶ τὴν ὀρεινὴν παραλίας Καδούσιοι νέμονται, σχεδὸν δέ τι ἐπὶ πεντακισχιλίουσ σταδίοις, ὥς φησι Πατροκλῆς, ὃς καὶ πάρισον ἡγεῖται τὸ πέλαγος τοῦτο τῷ Ποντικῷ. ταῦτα μὲν οὖν τὰ χω- 15 ρία λυπρά.

- 2 Ἡ δ' Ὑρκανία σφόδρα εὐδαίμων καὶ πολλὴ καὶ τὸ πλεόν πεδιάς πόλεσί τε ἀξιολόγοις διειλημμένη, ᾧν ἔστι Ταλαβρόκη καὶ Σαμαριανὴ καὶ Κάρτα καὶ τὸ βασιλῆιον Τάπη, ὃ φασὶ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἰδρυν- 20 μένον διέχειν τῶν Κασπίων πυλῶν σταδίους χιλίους τετρακοσίους. σημεία δὲ τῆς εὐδαιμονίας· ἡ μὲν γὰρ ἄμπελος μετρητὴν οἴνου φέρει, ἡ δὲ συκὴ μεδίμνους ἐξήκοντα, ὃ δὲ σῖτος ἐκ τοῦ ἐκπεσόντος καρ- C.509ποῦ τῆς καλᾶμης φύεται, ἐν δὲ τοῖς δένδροις σμηνουρ- 25 γεῖται καὶ τῶν φύλλων ἀπορρεῖ μέλι· τοῦτο δὲ γίνεται καὶ τῆς Μηθίας ἐν τῇ Ματιανῇ καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐν τῇ Σακασηνῇ καὶ τῇ Ἀραξηνῇ. τῆς μέντοι προσηκούσης ἐπιμελείας οὐκ ἔτυχεν οὔτε αὐτὴ οὔτε ἡ ἐπὶ ὠνυμος αὐτῇ θάλαττα ἄπλους τε οὔσα καὶ ἀργός· νῆσοί τέ εἰσιν 30 οἰκείσθαι δυνάμεναι, ὥς δ' εἰρήκασί τινες καὶ χρουστίν ἐχουσαι γῆν. αἴτιον δ' ὅτι καὶ οἱ ἡγεμόνες οἱ τ' ἐξ

ἀρχῆς ἐτύγγανον βάρβαροι ὄντες οἱ τῶν Ἑρκανῶν,
 Μηδοί τε καὶ Πέρσαι καὶ οἱ ὕστατοι Παρθυαῖοι, χεί-
 ρους ἐκείνων ὄντες, καὶ ἡ γείτων ἅπανσα χώρα ληστῶν
 καὶ νομάδων μεστή καὶ ἐρημίας. Μακεδόνες δ' ὀλίγον
 5 μὲν χρόνον ἐπῆρξαν, ἀλλ' ἐν πολέμοις ὄντες καὶ τὰ
 πόρρω σκοπεῖν οὐ δυνάμενοι. φησὶ δ' Ἀριστόβουλος
 ὑλώδη οὖσαν τὴν Ἑρκανίαν δοῦν ἔχειν, πύκην δὲ
 καὶ ἐλάτην καὶ πίτυν μὴ φύειν, τὴν δ' Ἰνδικὴν πλη-
 θύνειν τούτοις. τῆς δὲ Ἑρκανίας ἐστὶ καὶ ἡ Νησαία· τι-
 10 νὲς δὲ καὶ καθ' αὐτὴν τιθέασιν τὴν Νησαίαν.

Διαρρεῖται δὲ καὶ ποταμοῖς ἡ Ἑρκανία τῷ τε Ὄρχῳ 3
 καὶ Ὄξῳ μέχρι τῆς εἰς θάλατταν ἐκβολῆς, ὧν ὁ Ὄχος
 καὶ διὰ τῆς Νησαίας ῥεῖ· ἔνιοι δὲ τὸν Ὄχον εἰς τὸν
 Ὄξον ἐμβάλλειν φασίν. Ἀριστόβουλος δὲ καὶ μέγιστον
 15 ἀποφαίνει τὸν Ὄξον τῶν ἑωραμένων ὑφ' ἑαυτοῦ κατὰ
 τὴν Ἀσίαν πλὴν τῶν Ἰνδικῶν· φησὶ δὲ καὶ εὐπλοῦν
 εἶναι καὶ οὗτος καὶ Ἑρατοσθένης παρὰ Πατροκλέους
 λαβών, καὶ πολλὰ τῶν Ἰνδικῶν φορτίων κατάγειν εἰς
 τὴν Ἑρκανίαν θάλατταν, ἐντεῦθεν δ' εἰς τὴν Ἀλβα-
 20 νίαν περαιοῦσθαι καὶ διὰ τοῦ Κύρου καὶ τῶν ἐξῆς τό-
 πων εἰς τὸν Εὐξείνιον καταφέρεσθαι. οὐ πάνυ δὲ ὑπὸ
 τῶν παλαιῶν ὁ Ὄχος ὀνομάζεται· Ἀπολλόδωρος μέν-
 τοι ὁ τὰ Παρθικὰ γράψας συνεχῶς αὐτὸν ὀνομάζει ὡς
 ἐγγυτάτω τοῖς Παρθυαίοις ῥέοντα.

25 Προσεδοξάσθη δὲ καὶ περὶ τῆς θαλάττης ταύτης 4
 πολλὰ ψευδῆ διὰ τὴν Ἀλεξάνδρου φιλοτιμίαν· ἐπειδὴ
 γὰρ ὁμολόγητο ἐκ πάντων ὅτι διείργει τὴν Ἀσίαν ἀπὸ
 τῆς Εὐρώπης ὁ Τάναϊς ποταμός, τὸ δὲ μεταξὺ τῆς θα-
 λάττης καὶ τοῦ Τανάιδος πολὺ μέρος τῆς Ἀσίας ὃν
 30 οὐχ ὑπέπιπτε τοῖς Μακεδόσι, στρατηγεῖν δ' ἔγνωστο
 ὥστε τῇ φήμῃ γε ἀκείνων δόξα τῶν μερῶν κρατεῖν

τὸν Ἀλέξανδρον, εἰς ἔν συνήγον τήν τε Μαιῶτιν λί-
μνην τήν δεχομένην τὸν Τάναϊν καὶ τὴν Κασπίαν θά-
λατταν, λίμνην καὶ ταύτην καλοῦντες καὶ συντετρη-
σθαι φάσκοντες πρὸς ἀλλήλας ἀμφοτέρως, ἑκατέραν
δὲ εἶναι μέρος τῆς ἑτέρας. Πολύκλειτος δὲ καὶ πίστεις 5
προφέρεται περὶ τοῦ λίμνην εἶναι τὴν θάλατταν ταύ-
5.510την, ὅφεις τε γὰρ ἐκτρέφειν καὶ ὑπόγλυκιν εἶναι τὸ
ὔδωρ· ὅτι δὲ καὶ οὐχ ἑτέρα τῆς Μαιώτιδος ἐστὶ, τεκμαι-
ρόμενος ἐκ τοῦ τὸν Τάναϊν εἰς αὐτὴν ἐμβάλλειν· ἐκ
γὰρ τῶν αὐτῶν ὁρῶν τῶν Ἰνδικῶν ἐξ ὧν ὁ τε Ὠχρος 10
καὶ ὁ Ὠξος καὶ ἄλλοι πλείους φέρεται καὶ ὁ Ἰαξάρτης
ἐκδίδωσί τε ὁμοίως ἐκείνοις εἰς τὸ Κάσπιον πέλαγος
πάντων ἀρκτικώτατος. τοῦτον οὖν ὠνόμασαν Τά-
ναϊν, καὶ προσέθεσάν γε τούτῳ πίστιν, ὥς εἴη Τά-
ναϊς ὃν εἶρηκεν ὁ Πολύκλειτος· τὴν γὰρ περαιάν τοῦ 15
ποταμοῦ τούτου φέρειν ἐλάτην καὶ οἰστοῖς ἐλατίνοις
χρησθαι τοὺς ταύτῃ Σκύθας· τοῦτο δὲ καὶ τεκμήριον
τοῦ τὴν χώραν τὴν πέραν τῆς Εὐρώπης εἶναι, μὴ τῆς
Ἀσίας· τὴν γὰρ Ἀσίαν τὴν ἄνω καὶ τὴν πρὸς ἑω μὴ
φύειν ἐλάτην. Ἐρατοσθένης δὲ φησι καὶ ἐν τῇ Ἰνδικῇ 20
φύεσθαι ἐλάτην καὶ ἐντεῦθεν ναυπηγήσασθαι τὸν
στόλον Ἀλέξανδρον· πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα τοιαῦτα συγ-
κρούειν Ἐρατοσθένης πειρᾶται, ἡμῖν δ' ἀποχρώντως
εἰρησθῶ περὶ αὐτῶν.

6 Καὶ τοῦτο δ' ἐκ τῶν κατὰ τὴν Ἱερικανίαν ἱστορου- 25
μένων παραδόξων ἐστὶν ὑπὸ Εὐδόξου καὶ ἄλλων, ὅτι
πρόκεινται τινες ἀκταὶ τῆς θαλάττης ὕπαντροι, τού-
των δὲ μεταξὺ καὶ τῆς θαλάττης ὑπόκειται ταπεινὸς
αἰγιαλός, ἐκ δὲ τῶν ὑπερθεῖν κρημνῶν ποταμοὶ ῥέον-
τες τοσαύτῃ προφέρονται βία ὥστε ταῖς ἀκταῖς συνά- 30

ψαντες εξακοντίζουσι τὸ ὕδωρ εἰς τὴν θάλατταν, ἄρ-
ραντον φυλάττοντες τὸν αἰγιαλὸν ὥστε καὶ στρατοπέ-
δοις ὁδεύσιμον εἶναι σκεπαζομένοις τῷ ρεύματι, οἱ δ'
ἐπιχώριοι κατάγονται πολλάκις εὐωχίας καὶ θυσίας
5 χάριν εἰς τὸν τόπον, καὶ ποτὲ μὲν ὑπὸ τοῖς ἄντροις
κατακλίνονται, ποτὲ δ' ὑπ' αὐτῷ τῷ ρεύματι ἡλια-
ζόμενοι ἄλλως ἄλλοι τέρπονται, παραφαινομένης ἅμα
καὶ τῆς θαλάττης ἐκατέρωθεν καὶ τῆς ἡόνος ποώδους
καὶ ἀνθηρᾶς οὔσης διὰ τὴν ἰκμάδα.

- 10 Ἀπὸ δὲ τῆς Ὀρκανίας θαλάττης προΐοντι ἐπὶ τὴν **8**
ἕω δεξιὰ μὲν ἐστὶ τὰ ὄρη μέχρι τῆς Ἰνδικῆς θαλάττης
παρατείνοντα, ἅπερ οἱ Ἕλληνες ὀνομάζουσι Ταῦρον,
ἀρξάμενα ἀπὸ τῆς Παμφυλίας καὶ τῆς Κιλικίας καὶ
μέχρι δεῦρο προΐοντα ἀπὸ τῆς ἐσπέρας συνεχῇ καὶ
15 τυγχάνοντα ἄλλων καὶ ἄλλων ὀνομάτων. προσοικουῖσι
δ' αὐτοῦ τὰ προσάρκτια μέρη πρῶτοι μὲν οἱ Γῆλαι
καὶ Καδούσιοι καὶ Ἀμαρδοί, καθάπερ εἴρηται, καὶ
τῶν Ὀρκανίων τινές, ἔπειτα τὸ τῶν Παρθυαίων ἔθνος
καὶ τὸ τῶν Μαργιανῶν καὶ τῶν Ἀρίων καὶ ἡ ἔρημος,
20 ἣν ἀπὸ τῆς Ὀρκανίας ὀρίζει ὁ Σάριος ποταμὸς πρὸς **511**
ἕω βαδίζουσι καὶ ἐπὶ τὸν Ὄχον. καλεῖται δὲ τὸ μέχρι
δεῦρο ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας διατεῖνον ἢ μικρὸν ἀπολει-
πον Παραχοάθρας. ἐστὶ δὲ ἀπὸ τῆς Ὀρκανίας θαλάτ-
της εἰς τοὺς Ἀρίους περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους· εἰδ'
25 ἡ Βακτριανὴ ἐστὶ καὶ ἡ Σογδιανή, τελευταῖοι δὲ Σκύ-
θαι νομάδες. τὰ δ' ὄρη Μακεδόνες μὲν ἅπαντα τὰ
ἐφεξῆς ἀπὸ Ἀρίων Κούκασον ἐκάλεσαν, παρὰ δὲ τοῖς
βαρβάροις * τὰ τε ἄκρα καὶ τοῦ Παροπαμίσου τὰ προσ-
βόρεια καὶ τὰ Ἡμωδὰ καὶ τὸ Ἰμακον καὶ ἄλλα τοιαῦτα
30 ὀνόματα ἐκάστοις μέρεσιν ἐπέκειτο.

Ἐν ἀριστερᾷ δὲ τούτοις ἀντιπαράκειται [τὰ] Σκυ- 2
θικὰ ἔθνη καὶ τὰ νομαδικὰ ἅπασαν ἐκπληροῦντα τὴν
STRABO II.

βόρειον πλευράν. οἱ μὲν δὴ πλείους τῶν Σκυθῶν ἀπὸ τῆς Κασπίας θαλάττης ἀρξάμενοι Δαῖα προσαγορεύονται, τοὺς δὲ προσεφούς τούτων μᾶλλον Μασσαγέτας καὶ Σάκας ὀνομάζουσιν, τοὺς δ' ἄλλους κοινῶς μὲν Σκύθας ὀνομάζουσιν ἰδίᾳ δ' ὥς ἐκάστους· 5 ἅπαντες δ' ὥς ἐπὶ τὸ πολὺ νομάδες. μάλιστα δὲ γνώριμοι γέγονασιν τῶν νομάδων οἱ τοὺς Ἑλληνας ἀφελόμενοι τὴν Βακτριανήν, Ἄσιοι καὶ * Πασιανοὶ καὶ Τόχαροι καὶ Σακάρανλοι, ὁρμηθέντες ἀπὸ τῆς περαίας τοῦ Ἰαξάρτου τῆς κατὰ Σάκας καὶ Σογδιανούς, ἣν 10 κατεῖχον Σάκαι. καὶ τῶν Δαῶν οἱ μὲν προσαγορεύονται Ἀπαρνοὶ οἱ δὲ Ξάνθιοι οἱ δὲ Πίσσουροι. οἱ μὲν οὖν Ἀπαρνοὶ πλησιαίτατα τῇ Ἐρκανίᾳ παράκεινται καὶ τῇ κατ' αὐτὴν θαλάττῃ, οἱ δὲ λοιποὶ διατείνουσι καὶ με- 15 χροὶ τῆς ἀντιπαρηκούσης τῇ Ἀρίᾳ.

3 Μεταξὺ δ' αὐτῶν καὶ τῆς Ἐρκανίας καὶ τῆς Παρθυαίας μέχρι Ἀρίων ἔρημος πρόκειται πολλή καὶ ἄνυδρος, ἣν διεξιόντες μακραῖς ὁδοῖς κατέτρεχον τὴν τε Ἐρκανίαν καὶ τὴν Νησαίαν καὶ τὰ τῶν Παρθυαίων πεδία· οἱ δὲ συνέθεντο φόρους· φόρος δ' ἦν τὸ ἐπι- 20 τρέπειν τακτοῖς τισι χρόνοις τὴν χώραν κατατρέχειν καὶ φέρεσθαι λείαν. ἐπιπολαζόντων δ' αὐτῶν παρὰ τὰ συγκεείμενα ἐπολεμεῖτο, καὶ πάλιν διαλύσεις καὶ ἀναπολεμήσεις ὑπῆρχον. τοιοῦτος δὲ καὶ ὁ τῶν ἄλλων νομάδων βίος, αἰεὶ τοῖς πλησίον ἐπιτιθεμένων 25 τοτὲ δ' αὖ διαλλαττομένων.

4 Σάκαι μέντοι παραπλησίας ἐφόδους ἐποιήσαντο τοῖς Κιμμερίοις καὶ Τρήρεσι, τὰς μὲν μακροτέρας τὰς δὲ καὶ ἐγγύθεν· καὶ γὰρ τὴν Βακτριανήν κατέσχον καὶ τῆς Ἀρμενίας κατεκτήσαντο τὴν ἀρίστην γῆν, ἣν καὶ 30 ἐπώνυμον ἐαυτῶν κατέλιπον τὴν Σακασηνήν, καὶ μέ-

C.512 χοὶ Καππαδόκων καὶ μάλιστα τῶν πρὸς Εὐξείνῳ οὐς

- Ποντικούς νῦν καλοῦσι, προῆλθον. ἐπιθέμενοι δ' αὐτοῖς πανηγυρίζουσιν ἀπὸ τῶν λαφύρων οἱ ταύτη τότε τῶν Περσῶν στρατηγοὶ νύκτωρ ἄρδην αὐτοὺς ἠφάνισαν. ἐν δὲ τῷ πεδίῳ πέτραν τινὰ προσχώματι
 5 συμπληρώσαντες εἰς βουνοειδὲς σχῆμα ἐπέθηκαν τεῖχος καὶ τὸ τῆς Ἀναλτιδος καὶ τῶν συμβῶμων θεῶν ἱερὸν ἰδρύσαντο, Ὁμανοῦ καὶ Ἀναδάτου Περσικῶν δαιμόνων, ἀπέδειξάν τε πανήγυριν κατ' ἔτος ἱερὰν, τὰ Σάκαια, ἣν μέχρι νῦν ἐπιτελοῦσιν οἱ τὰ Ζῆλα ἔχον-
 10 τες· οὕτω γὰρ καλοῦσι τὸν τόπον· ἔστι δὲ ἱεροδούλων πόλισμα τὸ πλεόν· Πομπήιος δὲ προσθεὶς χώραν ἀξιόλογον καὶ τοὺς ἐν αὐτῇ συνοικίσας εἰς τὸ τεῖχος μίαν τῶν πόλεων ἀπέφηνεν ὧν διέταξε μετὰ τὴν Μιθριδάτου κατὰλυσιν.
- 15 Οἱ μὲν [οὖν] οὕτω λέγουσι περὶ τῶν Σακῶν, οἱ δ' ὅτι Κῦρος ἐπιστρατεύσας τοῖς Σάκαις ἠττηθεὶς τῇ μάχῃ φεύγει, στρατοπεδευσάμενος δ' ἐν ᾧ χωρίῳ τὰς παρασκευὰς ἀπολελοίπει πλήρεις ἀφθονίας ἀπάσης καὶ μάλιστα οἴνου, διαναπαύσας μικρὰ τὴν στρατιάν,
 20 ἤλανθεν ἀφ' ἐσπέρας ὡς φεύγων, πλήρεις ἀφελὲς τὰς σκηνάς· προελθὼν δ' ὅσον ἐδόκει συμφέρειν ἰδρύθη· ἐπιόντες δ' ἐκεῖνοι καὶ καταλαβόντες ἔρημον ἀνδρῶν τὸ στρατόπεδον τῶν δὲ πρὸς ἀπόλυσιν μεστόν, ἀνέδην ἐνεπίμπλαντο· ὁ δ' ὑποστρέψας ἐξοίνους κατέλαβε
 25 καὶ παραπλήγας, ὥσθ' οἱ μὲν ἐν κάρῳ κείμενοι καὶ ὕπνῳ κατεκόπτοντο, οἱ δ' ὀρχούμενοι καὶ βακχεύοντες γυμνοὶ περιέπιπτον τοῖς τῶν πολεμίων ὅπλοις, ὀλίγου δ' ἀπώλουντο ἅπαντες. ὁ δὲ θεὸν νομίσας τὸ εὐτύχημα, τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἀνιερώσας τῇ πατρίῳ
 30 θεῷ προσηγόρευσε Σάκαια· ὅπου δ' αὖν ἡ τῆς θεοῦ ταύτης ἱερὸν, ἐνταῦθα νομίζεται καὶ ἡ τῶν Σακαίων ἑορτὴ βακχεία τις μεθ' ἡμέραν καὶ νύκτωρ, διεσκεν-

ασμένων σκυθιστί, πινόντων ἅμα καὶ πληκτιζομένων
πρὸς ἀλλήλους ἅμα τε καὶ τὰς συμπινούσας γυναῖκας.

6 Μασσαγέται δ' ἐδήλωσαν τὴν σφετέραν ἀρετὴν
ἐν τῷ πρὸς Κῦρον πολέμῳ, περὶ οὗ θρυλοῦσι πολλοί,
καὶ δεῖ πυνθάνεσθαι παρ' ἐκείνων. λέγεται δὲ καὶ 5
τοιαῦτα περὶ τῶν Μασσαγетῶν, ὅτι κατοικοῦσιν οἱ
μὲν ὄρη τινὲς δ' αὐτῶν πεδία οἱ δὲ ἔλη ἃ ποιοῦσιν
οἱ ποταμοί, οἱ δὲ τὰς ἐν τοῖς ἔλεσι νήσους. μάλιστα δέ
φασι τὸν Ἀράξην ποταμὸν κατακλύζειν τὴν χώραν
πολλαχῇ σχιζόμενον, ἐκπίπτοντα δὲ τοῖς μὲν ἄλλοις 10

C.513 στόμασιν εἰς τὴν ἄλλην τὴν πρὸς ἄρκτοις θάλατταν,
ἐνὶ δὲ μόνῳ πρὸς τὸν κόλπον τὸν Τρκάνιον. θεὸν δὲ
ἥλιον μόνον ἡγοῦνται, τούτῳ δὲ ἱποθυτοῦσι· γαμεῖ
δ' ἕκαστος μίαν, χρῶνται δὲ καὶ ταῖς ἀλλήλων οὐκ
ἀφανῶς, ὁ δὲ μιννύμενος τῇ ἀλλοτριᾷ τὴν φαρ- 15
τρὰν ἐξαρετήσας ἐκ τῆς ἀμάξης φανερῶς μίγνυται·
θάνατος δὲ νομίζεται παρ' αὐτοῖς ἄριστος, ὅταν γη-
ράσαντες κατακοπῶσι μετὰ προβατείων κρεῶν καὶ
ἀναμῖξ βρωθῶσι· τοὺς δὲ νόσφ' θανόντας δρίπτουσιν
ὥς ἀσεβεῖς καὶ ἀξίους ὑπὸ θηρίων βεβρωῆσθαι. ἀγα- 20
θοὶ δὲ ἱππόται καὶ πεξοί, τόξοις δὲ χρῶνται καὶ μαχαί-
ραις καὶ θώραξι καὶ σαγάρεσι χαλκαῖς, ζῶναι δὲ αὐ-
τοῖς εἰσι χρυσαῖ καὶ διαδήματα ἐν ταῖς μάχαις· οἳ τε
ἵπποι χρυσοχάλινοι, καὶ μασχαλιστῆρες δὲ χρυσοῖ· ἄρ-
γυρος δ' οὐ γίνεται παρ' αὐτοῖς, σίδηρος δ' ὀλίγος, 25
χαλκὸς δὲ καὶ χρυσὸς ἄφθονος.

7 Οἱ μὲν οὖν ἐν ταῖς νήσοις οὐκ ἔχοντες σπόριμα
ῥιζοφαγοῦσι καὶ ἀγρίοις χρῶνται καρποῖς, ἀμπέχονται
δὲ τοὺς τῶν δένδρων φλοιούς (οὐδὲ γὰρ βοσκήματα
ἔχουσι), πίνουσι δὲ τὸν ἐκ τῶν δένδρων καρπὸν ἐκ- 30
θλίβοντες· οἱ δ' ἐν τοῖς ἔλεσιν ἰχθυοφαγοῦσιν, ἀμπέ-
χονται δὲ τὰ τῶν φωκῶν δέρματα τῶν ἐκ θαλάττης

ἀνατρεχουσῶν· οἱ δ' ὄρειοι τοῖς ἀγρίοις τρέφονται
καὶ αὐτοὶ καρποῖς· ἔχουσι δὲ καὶ πρόβατα ὀλίγα ὥστ'
οὐδὲ κατακόπτουσι φειδόμενοι τῶν ἐρίων χάριν καὶ
τοῦ γάλακτος· τὴν δ' ἐσθῆτα ποικίλλουσιν ἐπιχρί-
5 στοῖς φαρμάκοις δυσεξίτηλον ἔχουσι τὸ ἄνθος. οἱ δὲ
πεδινοὶ καίπερ ἔχοντες χώραν οὐ γεωργοῦσιν, ἀλλὰ
ἀπὸ προβάτων καὶ ἰχθύων ζῶσι νομαδικῶς καὶ Σκυ-
θικῶς. ἔστι γάρ τις καὶ κοινὴ δίαίτα πάντων τῶν τοι-
ούτων ἣν πολλάκις λέγω, καὶ ταφαὶ δ' εἰσὶ παραπλή-
10 σιαι καὶ ἦθη καὶ ὁ σύμπας βίος, αὐθέκαστος μὲν σκαι-
ὸς τε καὶ ἄγριος καὶ πολεμικός, πρὸς δὲ τὰ συμβό-
λαια ἀπλοῦς καὶ ἀκάπηλος.

Τοῦ δὲ τῶν Μασσαγετῶν καὶ τῶν Σακῶν ἔθνους 8
καὶ οἱ Ἀττάσιοι καὶ οἱ Χωράσμιοι, εἰς οὓς ἀπὸ τῶν
15 Βακτριανῶν καὶ τῶν Σογδιανῶν ἔφυγε Σπιταμένης,
εἰς ἐκ τῶν ἀποδράντων Περσῶν τὸν Ἀλέξανδρον, κα-
θάπερ καὶ Βῆσσος· καὶ ὕστερον δὲ Ἀρσάκης τὸν Καλ-
λίνικον φεύγων Σέλευκον εἰς τοὺς Ἀπασιάκας ἐχώ-
ρησε. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης τοὺς Ἀραχωτοὺς καὶ Μασ-
20 σαγέτας τοῖς Βακτρίοις παρακεῖσθαι* πρὸς δύσιν παρὰ
τὸν Ὠξον, καὶ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανούς τοῖς ὅλοις
ἐδάφεσιν ἀντικείμεναι τῇ Ἰνδικῇ, Βακτρίους δ' ἐπ' ὀλί-
γον· τὸ γὰρ πλεον τῷ Παροπαμισῷ παρακεῖσθαι· δι-
C.514
εἰργεῖν δὲ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανούς τὸν Ἰαξάρτην,
25 καὶ Σογδιανούς δὲ καὶ Βακτριανούς τὸν Ὠξον, μεταξὺ
δὲ Ὑρκανῶν καὶ Ἀρίων Ταπύρους οἰκεῖν· κύκλω δὲ
περὶ τὴν θάλατταν μετὰ τοὺς Ὑρκανοὺς Ἀμάρδους τε
καὶ Ἀναριάκας καὶ Καδουσίους καὶ Ἀλβανούς καὶ
Κασπίους καὶ Οὐτιτίους, τάχα δὲ καὶ ἑτέρους μέχρι
30 Σκνθῶν, ἐπὶ θάτερα δὲ μέρη τῶν Ὑρκανῶν Δέρβικας,
τοὺς δὲ Καδουσίους συμψαύειν Μήδων καὶ Ματιανῶν
ὑπὸ τὸν Παραχοάθραν.

9 Τὰ δὲ διαστήματα οὕτω λέγει· ἀπὸ μὲν τοῦ Κασπίου ἐπὶ τὸν Κῦρον ὡς χιλίους ὀκτακοσίους σταδίους, ἐνθεν δ' ἐπὶ Κασπίας πύλας πεντακισχιλίους ἑξακοσίους, εἴτ' εἰς Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Ἀρίοις ἑξακισχιλίους τετρακοσίους, εἴτ' εἰς Βάκτραν τὴν πόλιν, ἣ καὶ 5 Ζαριάσπα καλεῖται, τρισχιλίους ὀκτακοσίους ἑβδομήκοντα, εἴτ' ἐπὶ τὸν Ἰαξάρτην ποταμόν, ἐφ' ὃν Ἀλέξανδρος ἦκεν, ὡς πεντακισχιλίους· ὁμοῦ δισμύριοι δισχίλιοι ἑξακόσιοι ἑβδομήκοντα. λέγει δὲ καὶ οὕτω τὰ διαστήματα ἀπὸ Κασπίων πυλῶν εἰς Ἰνδούς· εἰς 10 μὲν Ἑκατόμπυλον χιλίους ἑνακοσίους ἐξήκοντά φασιν, εἰς δ' Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Ἀρίοις τετρακισχιλίους πεντακοσίους τριάκοντα, εἴτ' εἰς Προφθασίαν τὴν ἐν Δραγγῇ χιλίους ἑξακοσίους, οἱ δὲ πεντακοσίους, εἴτ' εἰς Ἀραχωτοὺς τὴν πόλιν τετρακισχιλίους ἑκατὸν εἴκο- 15 σιν, εἴτ' εἰς Ὀρτόσπανα ἐπὶ τὴν ἐκ Βάκτρων τρίοδον δισχίλιους, εἴτ' εἰς τὰ ὄρια τῆς Ἰνδικῆς χιλίους· ὁμοῦ μύριοι πεντακισχίλιοι τριακόσιοι. ἐπ' εὐθείας δὲ τῷ διαστήματι τούτῳ τὸ συνεχὲς δεῖ νοεῖν, τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ μέχρι τῆς ἐφ' αὐτῇ θαλάττης μῆκος τῆς Ἰνδικῆς. 20 ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς Σάκας.

9 Ἡ δὲ Παρθυαία πολλή μὲν οὐκ ἔστι· συνετέλει γοῦν μετὰ τῶν Ὀρκανῶν [κατὰ] τὰ Περσικὰ καὶ μετὰ ταῦτα τῶν Μακεδόνων κρατούντων ἐπὶ χρόνον πολύν. πρὸς δὲ τῇ σμικρότητι δασεῖα καὶ ὄρεινὴ ἔστι καὶ ἄπο- 25 ρος, ὥστε διὰ τοῦτο δρόμῳ διεξιᾶσι τὸν ἑαυτῶν οἱ βασιλεῖς ὄχλον, οὐ δυναμένης τρέφειν τῆς χώρας οὐδ' ἐπὶ μικρόν· ἀλλὰ νῦν ηὔξεται. μέρη δ' ἔστι τῆς Παρθυηνῆς ἣ τε Κωμισσηνὴ καὶ ἡ Χωρήνη, σχεδὸν δέ τι καὶ τὰ μέχρι πυλῶν Κασπίων καὶ Ραγῶν καὶ Ταπύρων 30 ὄντα τῆς Μηδίας πρότερον. ἔστι δ' Ἀπάμεια καὶ Ἡράκλεια, πόλεις περὶ τὰς Ῥάγας. εἰσὶ δ' ἀπὸ Κασπίων

πυλῶν εἰς μὲν Ῥάγας στάδιοι πεντακόσιοι, ὥς φησιν
 Ἀπολλόδωρος, εἰς δ' Ἑκατόμπυλον τὸ τῶν Παρθυαίων
 βασιλείον χίλιοι διακόσιοι ἐξήκοντα· τοῦνομα δὲ ταῖς
 Ῥάγαις ἀπὸ τῶν γενομένων σεισμῶν γενέσθαι φασίν,
 5 ὅφ' ὧν πόλεις τε συχνὰ καὶ κῶμαι δισχίλιναι, ὥς Ποσει-
 δώνιος φησι, ἀνετράπησαν. τοὺς δὲ Ταπύρους οἰκεῖν
 φασι μεταξὺ Δερβίκων τε καὶ Ὑρκανῶν. ἱστοροῦσι δὲ
 περὶ τῶν Ταπύρων ὅτι αὐτοῖς εἰηνόμιμον τὰς γυναικας 0,515
 ἐκδιδόναι τὰς γαμετὰς ἑτέροις ἀνδράσιν, ἐπειδὰν ἐξ
 10 αὐτῶν ἀνέλωνται δύο ἢ τρία τέκνα, καθάπερ καὶ Κά-
 των Ὀρτησίῳ δεηθέντι ἐξέδωκε τὴν Μαρκίαν ἐφ' ἡμῶν
 κατὰ παλαιὸν Ῥωμαίων ἔθος.

Νεωτερισθέντων δὲ τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου διὰ τὸ 2
 πρὸς ἄλλοις εἶναι τοὺς τῆς Συρίας καὶ τῆς Μηδίας βα-
 15 σιλέας τοὺς ἔχοντας καὶ ταῦτα, πρῶτον μὲν τὴν Βακ-
 τριανὴν ἀπέστησαν οἱ πεπιστευμένοι καὶ τὴν ἐγγὺς
 αὐτῆς πᾶσαν οἱ περὶ Εὐθύδημον. ἐπειτ' Ἀρσάκης
 ἀνὴρ Σκύθης τῶν Δαῶν τινὰς ἔχων τοὺς Πάρνους
 καλουμένους νομάδας παροικοῦντας τὸν Ὠχον, ἐπῆλ-
 20 θεν ἐπὶ τὴν Παρθυαίαν καὶ ἐκράτησεν αὐτῆς. κατ' ἀρ-
 χὰς μὲν οὖν ἀσθενὴς ἦν διαπολεμῶν πρὸς τοὺς ἀφαι-
 ρεθέντας τὴν χώραν καὶ αὐτὸς καὶ οἱ διαδεξάμενοι
 ἐκείνον, ἐπειθ' οὕτως ἴσχυσαν ἀφαιρούμενοι τὴν πλη-
 σίον αἰὶ διὰ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις κατορθώσεις ὥστε
 25 τελευτῶντες ἀπάσης τῆς ἐντὸς Εὐφράτου κύριοι κα-
 τέστησαν. ἀφείλοντο δὲ καὶ τῆς Βακτριανῆς μέρος
 βιασάμενοι τοὺς Σκύθας καὶ ἔτι πρότερον τοὺς περὶ
 Εὐκρατίδαν, καὶ νῦν ἐπάρχουσι τοσαύτης γῆς καὶ το-
 σούτων ἔθνων ὥστε ἀντίπαλοι τοῖς Ῥωμαίοις τρόπον
 30 τινὰ γεγόνασιν κατὰ μέγεθος τῆς ἀρχῆς. αἴτιος δ' ὁ
 βίος αὐτῶν καὶ τὰ ἔθνη τὰ ἔχοντα πολὺ μὲν τὸ βάρβα-

ρον καὶ τὸ Σκυθικόν, πλέον μέντοι τὸ χρήσιμον πρὸς ἡγεμονίαν καὶ τὴν ἐν τοῖς πολέμοις κατόρθωσιν.

- 3 Φασὶ δὲ τοὺς Πάρνους Δάας μετανάστας εἶναι ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς Μαιώτιδος Δαῶν, οὓς Ξανδίους ἢ Παρίους καλοῦσιν· οὐ πάννυ δ' ὠμολόγηται Δάας εἶ-
5 ναί τινας τῶν ὑπὲρ τῆς Μαιώτιδος Σκυθῶν· ἀπὸ τούτων δ' οὖν ἔλκειν φασὶ τὸ γένος τὸν Ἀρσάκην, οἱ δὲ Βακτριανὸν λέγουσιν αὐτόν, φεύγοντα δὲ τὴν αὖ-
ξησιν τῶν περὶ Διόδοτον ἀποστῆσαι τὴν Παρθυαίαν. εἰρηκότες δὲ πολλὰ περὶ τῶν Παρθικῶν νομίμων ἐν 10
τῇ ἔκτῃ τῶν ἱστορικῶν ὑπομνημάτων βίβλῳ, δευτέρᾳ δὲ τῶν μετὰ Πολύβιον, παραλείψομεν ἐνταῦθα μὴ ταυτολογεῖν δόξωμεν, τοσοῦτον εἰπόντες μόνον ὅτι τῶν Παρθυαίων συνέδριόν φησιν εἶναι Ποσειδώνιος διττόν, τὸ μὲν συγγενῶν τὸ δὲ σοφῶν καὶ μάγων, ἐξ 15
ᾧ ἀμφοῖν τοὺς βασιλεῖς καθίστασθαι.

- 10 Ἡ δ' Ἀρία καὶ ἡ Μαργιανὴ κράτιστα χωρία ἐστὶ ταύτῃ, τῇ μὲν ὑπὸ τῶν ὀρῶν ἐγκλειόμενα τῇ δ' ἐν πε-
δίοις τὰς οἰκήσεις ἔχοντα. τὰ μὲν οὖν ὄρη νέμονται σκηνῆται τινες, τὰ δὲ πεδία ποταμοῖς διαρρεῖται· πο-
20 τίξουσιν δ' αὐτὰ τὰ μὲν τῷ Ἀρίῳ τὰ δὲ Μάρῳ. ὁμορεῖ
C.516 δὲ ἡ Ἀρία τῇ Βακτριανῇ * καὶ τὴν ὑποστᾶσαν ὄρει τῷ ἔχοντι τὴν Βακτριανήν· διέχει δὲ τῆς Ὀρκανίας περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους. συντελής δ' ἦν αὐτῇ καὶ ἡ Δραγγιανὴ μέχρι Καρμανίας, τὸ μὲν πλέον τοῖς νο-
25 τίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπεπτωκυῖα, ἔχουσα μέντοι τινὰ τῶν μερῶν καὶ τοῖς ἀρκτικοῖς πλησιάζοντα τοῖς κατὰ τὴν Ἀρίαν· καὶ ἡ Ἀραχωσία δὲ οὐ πολὺ ἄπωθεν ἐστὶ, καὶ αὕτη τοῖς νοτίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπε-
πτωκυῖα καὶ μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τεταμένη, μέ-
30 ρος οὖσα τῆς Ἀριανῆς. μῆκος δὲ τῆς Ἀρίας ὅσον δις-
χίλιοι στάδιοι, πλάτος δὲ τριακόσιοι τοῦ πεδίου· πό-

λεις δὲ Ἀρτακάηνα καὶ Ἀλεξάνδρεια καὶ Ἀχαΐα, ἐπώ-
 νυμοι τῶν κτισάντων. εὐοινεῖ δὲ σφόδρα ἡ γῆ· καὶ
 γὰρ εἰς τριγούριαν παραμένει ἐν ἀπιττώτοις ἄγγεσι.

Παραπλησία δ' ἐστὶ καὶ ἡ Μαργιανή, ἐρημίαις δὲ 2
 5 περιέχεται τὸ πεδίον. θαυμάσας δὲ τὴν εὐφύαν ὁ
 Σωτήρ Ἀντίοχος τεῖχει περιέβαλε κύκλον ἔχοντι χιλίων
 καὶ πεντακοσίων σταδίων, πόλιν δὲ ἔκτισεν Ἀντιό-
 χειαν. εὐάμπελος δὲ καὶ αὕτη ἡ γῆ· φασὶ γοῦν τὸν
 πυθμένα εὐρίσκεσθαι πολλάκις θυσὶν ἀνδράσι περι-
 10 ληπτόν, τὸν δὲ βότρυν δίπληχυν.

Τῆς δὲ Βακτρίας μέρη μὲν τινα τῇ Ἀρίᾳ παραβέ- 11
 βληται πρὸς ἄρκτον, τὰ πολλὰ δ' ὑπέρκειται πρὸς ἕω·
 πολλὴ δ' ἐστὶ καὶ πάμφορος πλὴν ἐλαίου. τοσοῦτον
 δὲ ἰσχυσαν οἱ ἀποστήσαντες Ἕλληνες αὐτὴν διὰ τὴν
 15 ἄρετήν τῆς χώρας ὥστε τῆς τε Ἀριανῆς ἐπεκράτουν
 καὶ τῶν Ἰνδῶν, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος ὁ Ἀρταμιτη-
 νός, καὶ πλείω ἔθνη κατεστρέψαντο ἢ Ἀλέξανδρος,
 καὶ μάλιστα Μένανδρος (εἰ γε καὶ τὸν Ὑπαννιν διέβη
 πρὸς ἕω καὶ μέχρι τοῦ Ἰμάου προῆλθε) τὰ μὲν αὐτὸς
 20 τὰ δὲ Δημήτριος ὁ Εὐθυδήμου υἱὸς τοῦ Βακτρίων βα-
 σιλέως· οὐ μόνον δὲ τὴν Παταληνὴν κατέσχον ἀλλὰ
 καὶ τῆς ἄλλης παραλίας τὴν τε Σαραόστου καλουμέ-
 νην καὶ τὴν Σιγέρδιδος βασιλείαν. καθ' ὅλου δὲ φησιν
 ἐκεῖνος τῆς συμπάσης Ἀριανῆς πρόσχημα εἶναι τὴν
 25 Βακτριανήν· καὶ δὴ καὶ μέχρι Σηρῶν καὶ Φρυνῶν
 ἐξέτεινον τὴν ἀρχήν.

Πόλεις δ' εἶχον τὰ τε Βάκτρα ἥνπερ καὶ Ζαριά- 2
 σπαν καλοῦσιν, ἣν διαρρεῖ ὁμώνυμος ποταμὸς ἐκ-
 βάλλων εἰς τὸν Ὠξον, καὶ Ἀδραψα καὶ ἄλλας πλείους·
 30 τουτων δ' ἦν καὶ ἡ Εὐκρατίδεια τοῦ ἄρξαντος ἐπώνυ-

μος. οἱ δὲ κατασχόντες αὐτήν Ἕλληνες καὶ εἰς σατρα-
 0.517 πείας διηγήκασιν, ὧν τὴν τε Ἀσπιώνου καὶ τὴν Τα-
 πυρίαν ἀφῆρηντο Εὐκρατίδην οἱ Παρθυαῖοι. ἔσχον
 δὲ καὶ τὴν Σογδιανὴν ὑπερκειμένην πρὸς ἕω τῆς Βακ-
 τριανῆς μεταξὺ τοῦ τε Ὠξου ποταμοῦ, ὃς ὀρίζει τὴν 5
 τε τῶν Βακτριῶν καὶ τὴν τῶν Σογδιῶν, καὶ τοῦ Ἰα-
 ξάρτου· οὗτος δὲ καὶ τοὺς Σογδίους ὀρίζει καὶ τοὺς
 νομάδας.

3 Τὸ μὲν οὖν παλαιὸν οὐ πολὺ διέφερον τοῖς βίοις
 καὶ τοῖς ἔθεσι τῶν νομάδων οἳ τε Σογδιανοὶ καὶ οἱ 10
 Βακτριανοί, μικρὸν δ' ὅμως ἡμερώτερα ἦν τὰ τῶν Βακ-
 τριανῶν, ἀλλὰ καὶ περὶ τούτων οὐ τὰ βέλτιστα λέ-
 γουσιν οἱ περὶ Ὀνησίκριτον· τοὺς γὰρ ἀπειρηκότας
 διὰ γῆρας ἢ νόσον ζῶντας παραβάλλεσθαι τρεφομέ-
 νοις κυσὶν ἐπίτηδες πρὸς τοῦτο, οὓς ἐνταφιαστὰς κα- 15
 λείσθαι τῇ πατρῷᾳ γλώττῃ, καὶ ὀρᾶσθαι τὰ μὲν ἕξω
 τείχους τῆς μητροπόλεως τῶν Βάκτρων καθαρὰ, τῶν
 δ' ἐντὸς τὸ πλεόν ὀστέων πλήρες ἀνθρωπίνων· κατα-
 λῦσαι δὲ τὸν νόμον Ἀλέξανδρον. τοιαῦτα δὲ πως καὶ
 τὰ περὶ τοὺς Κασπίους ἱστοροῦσι· τοὺς γὰρ γονέας, 20
 ἐπειδὴν ὑπὲρ ἑβδομήκοντα ἔτη γεγονότες τυγχάνωσιν,
 ἐγκλεισθέντας λιμοκτονεῖσθαι. τοῦτο μὲν οὖν ἀνε-
 κτότερον καὶ τῷ Κείων νόμῳ παραπλήσιον καίπερ
 ὃν σκυθικόν, πολὺ μέντοι σκυθικώτερον τὸ τῶν
 Βακτριανῶν. καὶ δὴ διαπορεῖν ἄξιον ἦν, ἥνικα Ἀλέ- 25
 ξανδρος τοιαῦτα κατελάμβανε τάνταῦθα, τί χρὴ * ποι-
 εῖν τὰ ἐπὶ τῶν πρώτων Περσῶν καὶ τῶν ἔτι πρότε-
 ρον ἡγεμόνων ὅποια εἰκὸς ἦν παρ' αὐτοῖς νευομίσθαι.

4 Φασὶ δ' οὖν ὀκτὼ πόλεις τὸν Ἀλέξανδρον ἐν τε
 τῇ Βακτριανῇ καὶ τῇ Σογδιανῇ κτίσαι, τινὰς δὲ κατα- 30
 σκάψαι, ὧν Καριάτας μὲν τῆς Βακτριανῆς, ἐν ᾗ Καλλι-
 σθένης συνελήφθη καὶ παρεδόθη φυλακῇ, Μαράκανδα

δὲ τῆς Σογδιανῆς καὶ τὰ Κῦρα, ἐσχατον ὃν Κύρου
κτίσμα ἐπὶ τῷ Ἰαξάρτῃ ποταμῷ κείμενον, ὅπερ ἦν
ὄριον τῆς Περσῶν ἀρχῆς· κατασκάψαι δὲ τὸ κτίσμα
τοῦτο καίπερ ὄντα φιλόκυρον διὰ τὰς πυκνὰς ἀπο-
5 στάσεις· ἔλεῖν δὲ καὶ πέτρας ἐρυμνὰς σφόδρα ἐκ προ-
δοσίας τὴν τε ἐν τῇ Βακτριανῇ τὴν Σισιμίδρου ἐν
ᾗ εἶχεν Ὀξυάρτης τὴν θυγατέρα Ῥωξάνην, καὶ τὴν ἐν
τῇ Σογδιανῇ τὴν τοῦ Ὁξου, οἱ δ' Ἀριαμάρχου φασί.
τὴν μὲν οὖν Σισιμίδρου πεντεκαίδεκα σταδίων ἴστο-
10 ροῦσι τὸ ὕψος, ὀγδοήκοντα δὲ τὸν κύκλον, ἄνω δ'
ἐπίπεδον καὶ εὐγεων ὅσον πεντακοσίους ἄνδρας τρέ-
φειν δυναμένην, ἐν ᾗ καὶ ξενίας τυχεῖν πολυτελοῦς
καὶ γάμους ἀγαγεῖν Ῥωξάνης τῆς Ὀξυάρτου θυγατρὸς
τὸν Ἀλέξανδρον· τὴν δὲ τῆς Σογδιανῆς διπλασίαν τὸ
15 ὕψος φασί. περὶ τούτους δὲ τοὺς τόπους καὶ τὸ τῶν
Βραγχιδῶν ἄστει ἀνελεῖν, οὓς ἔερεξην μὲν ἰδρῦσαι C.518
αὐτόθι συναπάραντας αὐτῷ ἐκόντας ἐκ τῆς οἰκείας διὰ
τὸ παραδοῦναι τὰ χρήματα τοῦ θεοῦ τὰ ἐν Αἰδύμοις
καὶ τοὺς θησαυρούς, ἐκεῖνον δ' ἀνελεῖν μυσαττόμε-
20 νον τὴν ἱεροσυλίαν καὶ τὴν προδοσίαν.

Τὸν δὲ διὰ τῆς Σογδιανῆς ῥέοντα ποταμὸν * καὶ 5
..... Πολυντίμητον Ἀριστόβουλος, τῶν Μακεδόνων
[τοῦνομα] θεμένων, καθάπερ καὶ ἄλλα πολλὰ τὰ μὲν
καινὰ ἐθεσαν τὰ δὲ παρωνόμασαν· ἄρδοντα δὲ τὴν χά-
25 ραν ἐκπίπτειν εἰς ἔρημον καὶ ἀμμώδη γῆν καταπίνε-
σθαι τε εἰς τὴν ἄμμον, ὥς καὶ τὸν Ἄριον τὸν δι'
Ἀρίων ῥέοντα. τοῦ δὲ Ὁχοῦ ποταμοῦ πλησίον ὀρύτ-
τοντας εὑρεῖν ἐλαίου πηγὴν λέγουσιν· εἰκὸς δέ, ὥσπερ
νιτρώδη τινὰ καὶ στύφοντα ὑγρὰ καὶ ἀσφαλτώδη καὶ
30 θειώδη διαρρεῖ τὴν γῆν, οὕτω καὶ λιπαρὰ εὑρίσκε-
σθαι, τὸ δὲ σπάνιον ποιεῖ τὴν παραδοξίαν. ῥεῖν δὲ
τὸν Ὁχον οἱ μὲν διὰ τῆς Βακτριανῆς φασιν οἱ δὲ παρ'

αὐτήν, καὶ οἱ μὲν ἕτερον τοῦ Ὠξου μέχρι τῶν ἐκβο-
λῶν νοτιώτερον ἐκείνου, ἀμφοτέρων δ' ἐν τῇ Ἵρ-
κανίᾳ τὰς εἰς τὴν θάλατταν ὑπάρχειν ἐκρύψεις, οἱ δὲ
κατ' ἀρχὰς μὲν ἕτερον συμβάλλειν δ' εἰς ἓν τὸ τοῦ
Ὠξου ῥεῖθρον, πολλαχοῦ καὶ ἔξ καὶ ἐπὶ σταδίων 5
ἔχοντα τὸ πλάτος. ὁ μὲντοι Ἰαξάρτης ἀπ' ἀρχῆς μέχρι
τέλους ἕτερός ἐστι τοῦ Ὠξου, καὶ εἰς μὲν τὴν αὐτὴν
τελευτῶν θάλατταν, αἱ δ' ἐμβολαὶ διέχουσιν ἀλλήλων,
ὥς φησι Πατροκλῆς, παρασάγγας ὡς ὀγδοήκοντα· τὸν
δὲ παρασάγγην τὸν περσικὸν οἱ μὲν ἐξήκοντα στα- 10
δίων φασίν, οἱ δὲ τριάκοντα ἢ τετραράκοντα. ἀνα-
πλέοντων δ' ἡμῶν τὸν Νεῖλον ἄλλοτ' ἄλλοις μέτροις
χρώμενοι τὰς σχολίους ὠνόμαζον ἀπὸ πόλεως ἐπὶ πό-
λιν, ὥστε τὸν αὐτὸν τῶν σχολίων ἀριθμὸν ἀλλαχοῦ
μὲν μείζω παρέχειν πλοῦν ἀλλαχοῦ δὲ βραχύτερον· 15
οὕτως ἔξ ἀρχῆς παραδεδομένον καὶ φυλαττόμενον μέ-
χρι νῦν.

- 6 Μέχρι μὲν δὴ τῆς Σογδιανῆς πρὸς ἀνίσχοντα
ἥλιον ἰόντι ἀπὸ τῆς Ἵρκανίας γνώριμα ὑπῆρξε τὰ ἔθνη
καὶ τοῖς Πέρσαις πρότερον τὰ εἶσω τοῦ Ταύρου καὶ 20
τοῖς Μακεδόσι μετὰ ταῦτα καὶ τοῖς Παρθυαίοις. τὰ δ'
ἐπέκεινα ἐπ' εὐθείας ὅτι μὲν Σκυθικά ἐστιν, ἐκ τῆς
ὁμοειδεῖας εἰκάζεται, στρατεῖαι δ' οὐ γέγονασιν ἐπ' αὐ-
τοὺς ἡμῖν γνώριμοι, καθάπερ οὐδὲ ἐπὶ τοὺς βορειο-
τάτους τῶν νομάδων, ἐφ' οὓς ἐπεχείρησε μὲν ὁ Ἀλέ- 25
ξανδρος ἄγειν στρατεῖαν, ὅτε τὸν Βῆσσον μετήει καὶ
τὸν Σπιταμένην, ζωγρία δ' ἀναχθέντος τοῦ Βῆσσου,
τοῦ δὲ Σπιταμένους ὑπὸ τῶν βαρβάρων διαφθαρέν-
τος, ἐπαύσατο τῆς ἐπιχειρήσεως. οὐχ ὁμολογοῦσι δ'
ὅτι περιέπλευσαν τινες ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὴν Ἵρ- 30
κανίαν· ὅτι δὲ δυνατόν, Πατροκλῆς εἶρηκε.

καλοῦσιν Ἰμαιον, τῇ Ἰνδικῇ θαλάττῃ ξυνάπτον, οὐδὲν
οὔτε προὔχει πρὸς ἕω τῆς Ἰνδικῆς μᾶλλον οὔτ' εἰσέχει·
παριόντι δ' εἰς τὸ βόρειον πλευρὸν ἀέι τι τοῦ μή-
κους ὑφαιρεῖ καὶ τοῦ πλάτους ἢ θάλαττα, ὥστ' ἀπο-
5 φαίνειν μύουρον πρὸς ἕω τὴν νῦν ὑπογραφομένην
μερίδα τῆς Ἀσίας, ἣν ὁ Ταῦρος ἀπολαμβάνει πρὸς τὸν
ᾠκεανὸν τὸν πληροῦντα τὸ Κάσπιον πέλαγος. μῆκος
δ' ἐστὶ ταύτης τῆς μερίδος τὸ μέγιστον ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς
10 τρισημυρίων πον σταδίων, παρὰ τὴν ὀρεινὴν τοῦ Ταύ-
ρου τῆς πορείας οὔσης, πλάτος δ' ἔλαττον τῶν μυρίων.
εἴρηται γὰρ ὅτι περὶ τετρακισμυρίους σταδίους ἐστὶ
τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰσσυκίου κόλπου μέχρι τῆς ἐφ' ἑαυτὴν θαλάττης
τῆς κατὰ Ἰνδοῦς, ἐπὶ δ' Ἰσσοῦν ἀπὸ τῶν ἐσπερίων ἄκρων
15 τῶν κατὰ στήλας ἄλλοι τρισμύριοι· ἐστὶ δὲ ὁ μυχὸς τοῦ
Ἰσσυκίου κόλπου μικρὸν ἢ οὐδὲν Ἀμισοῦ ἐωθινώτερος,
τὸ δὲ ἀπὸ Ἀμισοῦ ἐπὶ τὴν Ἰνδικὴν γῆν περὶ μυρίους
ἐστὶ σταδίους, παράλληλον ὃν τῷ ἀπὸ τοῦ Ἰσσοῦ λε-
χθῆντι ἐπὶ τοὺς Ἰνδοῦς. λείπεται δὴ τὸ λεχθὲν μῆκος
20 ἐπὶ τὴν ἕω τῆς περιωδευμένης νυνὶ μερίδος οἱ τρισμύ-
ριοι στάδιοι. πάλιν δὲ τοῦ πλάτους τοῦ μεγίστου τῆς
οἰκουμένης ὅντος περὶ τρισμυρίους σταδίους, χλαμυ-
δοειδοῦς οὔσης, τὸ διάστημα τοῦτο ἐγγὺς ἂν εἴη τοῦ
μεσημβρινοῦ τοῦ διὰ τῆς Ἰνδικῆς θαλάττης γραφο-
25 μένου καὶ τῆς Περσικῆς, εἴπερ ἐστὶ τὸ μῆκος τῆς οἰ-
κουμένης ἐπὶ μυριάδες· εἰ οὖν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ
Ἀρτεμίταν τὴν ἐν τῇ Βαβυλωνίᾳ στάδιοι εἰσιν ὀκτα-
κισχίλιοι, καθάπερ εἴρηκεν Ἀπολλόδωρος ὁ ἐκ τῆς Ἀρ-
τεμίτας, ἐκεῖθεν δ' ἐπὶ τὸ στόμα τῆς κατὰ Πέρσας θα-
30 λάττης ἄλλο τοσοῦτόν ἐστι, καὶ πάλιν τοσοῦτον ἢ
μικρὸν ἀπολείπον εἰς τὰ ἀνταίροντα τοῖς ἄκροις τῆς
Αἰθιοπίας, λοιπὸν ἂν εἴη τοῦ πλάτους τῆς οἰκουμένης

τοῦ λεχθέντος ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τῆς Ἰρκανίας θαλάττης ἐπὶ τοῦ στόματος αὐτῆς ὅσον εἰρήκαμεν. μυούρου δ' ὄντος τοῦ τμήματος τούτου τῆς γῆς ἐπὶ τὰ πρὸς ἑω μέρη, γίνουιτ' ἂν τὸ σχῆμα προσόμοιον μαγειρικῇ κοπίδι, τοῦ μὲν ὅρους ἐπ' εὐθείας ὄντος καὶ νοουμένου 5 κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς κοπίδος, τῆς δ' ἀπὸ τοῦ στόματος τοῦ Ἰρκανίου παραλίας ἐπὶ Τάμαρον κατὰ θάτερον πλευρὸν εἰς περιφερῇ καὶ μύουρον γραμμὴν ἀπολῇγον.

- 8 Ἐπιμνηστέον δὲ καὶ τῶν παραδόξων ἐνίων ἃ θρυ- 10
λουῖσι περὶ τῶν τελέως βαρβάρων, οἷον τῶν περὶ τὸν
Καύκασον καὶ τὴν ἄλλην ὀρεινὴν. τοῖς μὲν γὰρ νόμι-
C.520μον εἶναι φασι τὸ τοῦ Εὐριπίδου „τὸν φύντα θρηνεῖν
„εἰς ὅς' ἔρχεται κακά, τὸν δ' αὖ θανόντα καὶ πόνων
„πεπαυμένον χαίροντας εὐφημοῦντας ἐκπέμπειν δό- 15
„μυν.“ ἑτέροις δὲ μηδὲνα ἀποκτείνειν τῶν ἑξαμαρ-
τόντων τὰ μέγιστα, ἀλλ' ἐξορίζειν μόνον μετὰ τῶν τέ-
κνων, ὑπεναντίως τοῖς Δέρβιξι· καὶ γὰρ ἐπὶ μικροῖς
οὔτοι σφάττουσι. σέβονται δὲ γῆν οἱ Δέρβικες· θύ-
ουσι δ' οὐδὲν θῆλυ οὐδὲ ἐσθίουσι· τοὺς δὲ ὑπὲρ ἑβδο- 20
μήκοντα ἔτη γεγονότας σφάττουσιν, ἀναλίσκουσι δὲ
τὰς σάρκας οἱ ἄγχιστα γένους· τὰς δὲ γράϊας ἀπάγχου-
σιν, εἴτα θάπτουσι· τοὺς δὲ ἐντὸς ἑβδομήκοντα ἐτῶν
ἀποθανόντας οὐκ ἐσθίουσιν ἀλλὰ θάπτουσι. Σίγιννοι
δὲ τᾶλλα μὲν περσίξουσιν, ἱππαρίοις δὲ χρῶνται μι- 25
κροῖς διασέσιν, ἅπερ ἱππότην ὀχεῖν μὲν οὐ δύναται,
τέθριππα δὲ ζευγνύουσιν· ἡνιοχοῦσι δὲ γυναῖκες ἐκ
παίδων ἡσκημέναι, ἥ δ' ἄριστα ἡνιοχοῦσα συνοικεῖ ᾧ
βούλεται· τινὰς δ' ἐπιτηδεύειν φασὶν ὅπως ὥς μακρο-
κεφαλώτατοι φανοῦνται καὶ προπεπτωκότες τοῖς με- 30
τώποις ὥσθ' ὑπερκύπτειν τῶν γενείων. Ταπύρων δ'
ἔστι καὶ τὸ τους μὲν ἄνδρας μελανειμονεῖν καὶ μακρο-

κομῆν, τὰς δὲ γυναῖκας λευχειμονεῖν καὶ βραχυκομῆν. καὶ ὁ ἀνδρειότατος κριθεὶς γαμειῖ ἢν βούλεται. Κάσπιοι δὲ τοὺς ὑπὲρ ἑβδομήκοντα ἔτη λιμοκτονήσαντες εἰς τὴν ἐρημίαν ἐκτιθέασιν, ἅπωθεν δὲ σκοπεύουσιν 5 *τες* ἐὰν μὲν ὑπ' ὀρυζίων κατασπαμένους ἀπὸ τῆς κλί-
νης ἴδωσιν, εὐδαιμονίζουσιν, ἐὰν δὲ ὑπὸ θηρίων ἢ κυ-
νῶν, ἡττον, ἐὰν δ' ὑπὸ μηδενός, κακοδαιμονίζουσι.

Ἐπεὶ δὲ τὰ βόρεια μέρη τῆς Ἀσίας ποιεῖ ὁ Ταῦρος, 12
ἃ δὴ καὶ ἐντὸς τοῦ Ταύρου καλοῦσιν, εἶπεῖν προειλό-
10 μεθα πρῶτον [περὶ τούτων]. τούτων δ' ἐστὶ καὶ τὰ ἐν
τοῖς ὄρεσιν αὐτοῖς ἢ ὅλα ἢ τὰ πλεῖστα. ὅσα μὲν [οὖν]
τῶν Κασπίων πυλῶν ἐωθινώτερά ἐστιν, ἀπλουστέραν
ἔχει τὴν περιήγησιν διὰ τὴν ἀργιότητα, οὐ πολὺ τε ἂν
διαφέρει τοῦδε ἢ τοῦδε τοῦ κλίματος συγκαταλεχθέν-
15 τα· τὰ δ' ἐσπέρια πάντα δίδωσιν εὐπορίαν τοῦ λέγειν
περὶ αὐτῶν, ὥστε δεῖ προάγειν ἐπὶ τὰ παρακείμενα
ταῖς Κασπίαις πύλαις. παράκειται δὲ ἡ Μηδία πρὸς
δύσιν, χώρα καὶ πολλὴ καὶ δυναστεύσασά ποτε καὶ ἐν
μέσῳ τῷ Ταύρῳ κειμένη, πολυσχιδεῖ κατὰ ταῦτα ὑπάρ-
20 χοντι τὰ μέρη καὶ ἀνάλωνας ἐμπεριλαμβάνοντι μεγά-
λους, καθάπερ καὶ τῇ Ἀρμενίᾳ τοῦτο συμβέβηκε.

Τὸ γὰρ ὅρος τοῦτο ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῆς Καρίας 2
καὶ Λυκίας, ἀλλ' ἐνταῦθα μὲν οὔτε πλάτος οὔτε ὕψος
ἀξιόλογον δείκνυσιν· ἐξαίρεται δὲ πολὺ πρῶτον κατὰ
25 τὰς Χελιδονίας (αὗται δ' εἰσὶ νῆσοι κατὰ τὴν ἀρχὴν
τῆς Παμφύλων παραλίας), ἐπὶ δὲ τὰς ἀνατολὰς ἔκτει- C.521
νόμενον ἀνάλωνας μακροὺς ἀπολαμβάνει τοὺς τῶν Κι-
λίκων· εἴτα τῇ μὲν τὸ Ἀμανὸν ἀπ' αὐτοῦ σχίζεται τῇ
δὲ ὁ Ἀντίταυρος, ἐν ᾧ τὰ Κόμανα ἴδρυται τὰ ἐν τοῖς
30 ἄνω λεγομένοις Καππάδοξιν. οὗτος μὲν οὖν ἐν τῇ Κα-

2. post βραχυκομῆν: οἰκοῦσι δὲ μεταξὺ Λεγβίκων καὶ Τρ-
κανῶν

ταονία τελευτᾷ, τὸ δὲ Ἀμανὸν ὄρος μέχρι τοῦ Εὐφράτου καὶ τῆς Μελιτηνῆς πρόεισι, καθ' ἣν ἡ Κομμαγηνὴ τῇ Καππαδοκίᾳ παράκειται· ἐκδέχεται δὲ τὰ πέραν τοῦ Εὐφράτου ὄρη, συνεχῇ μὲν τοῖς προειρημένοις πλήν ὅσον διακόπτει ῥέων διὰ μέσων ὁ ποταμός, πολλὴν δ' ἐπίδοσιν λαμβάνει εἰς τὸ ὕψος καὶ τὸ πλάτος καὶ τὸ πολυσχιδές. τὸ δ' οὖν νοτιώτατον μάλιστα ἐστὶν ὁ Ταῦρος ὁρίζων τὴν Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Μεσοποταμίας.

- 3 Ἐντεῦθεν δὲ ἀμφοτέροις ῥέουσιν οἱ τὴν Μεσοποταμίαν ἐγκυκλούμενοι ποταμοὶ καὶ συνάπτοντες ἀλλή-
 10 τοις ἐγγὺς κατὰ τὴν Βαβυλωνίαν, εἴτα ἐκδιδόντες εἰς τὴν κατὰ Πέρσας θάλατταν, ὃ τε Εὐφράτης καὶ Τίγρις. ἔστι δὲ καὶ μείζων ὁ Εὐφράτης καὶ πλείω διεξιεισι
 χώραν σκολιῶ τῷ ῥεῖθρῳ, τὰς πηγὰς ἔχων ἐν τῷ προσ-
 βορείῳ μέρει τοῦ Ταύρου, ῥέων δ' ἐπὶ δύσιν διὰ τῆς 15
 Ἀρμενίας τῆς μεγάλης καλουμένης μέχρι τῆς μικρᾶς, ἐν δεξιᾷ ἔχων ταύτην ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἀκιλισηνήν·
 εἴτ' ἐπιστρέφει πρὸς νότον, συνάπτει δὲ κατὰ τὴν ἐπι-
 στροφὴν τοῖς Καππαδόκων ὁρίοις· δεξιᾷ δὲ ταῦτα
 ἀφείς καὶ τὰ τῶν Κομμαγηνῶν, ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἀκι- 20
 λισηνήν καὶ Σωφηνήν τῆς μεγάλης Ἀρμενίας πρόεισιν
 ἐπὶ τὴν Συρίαν καὶ λαμβάνει πάλιν ἄλλην ἐπιστροφὴν
 εἰς τὴν Βαβυλωνίαν καὶ τὸν Περσικὸν κόλπον. ὁ δὲ
 Τίγρις ἐκ τοῦ νοτίου μέρους τοῦ αὐτοῦ ὄρους ἐνεχθεὶς
 ἐπὶ τὴν Σελεύκειαν συνάπτει τῷ Εὐφράτῃ πλησίον 25
 καὶ ποιεῖ τὴν Μεσοποταμίαν πρὸς αὐτόν, εἴτ' ἐκδίδωσι
 καὶ αὐτὸς εἰς τὸν αὐτὸν κόλπον. διέχουσι δὲ ἀλλήλων
 αἱ πηγαὶ τοῦ τε Εὐφράτου καὶ τοῦ Τίγριος περὶ δισχι-
 λίους καὶ πεντακοσίους σταδίους.

- 4 Ἀπὸ δ' οὖν τοῦ Ταύρου πρὸς ἄρκτον ἀποσχίδες 30
 πολλαὶ γεγόνασι, μία μὲν ἡ τοῦ καλουμένου Ἀντιταύρου· καὶ γὰρ ἐνταῦθα οὕτως ὠνομάζετο ὁ τὴν Σωφη-

νὴν ἀπολαμβάνων ἐν αὐλῶνι μεταξὺ κειμένῳ αὐτοῦ
 τε καὶ τοῦ Ταύρου. πέραν δὲ τοῦ Εὐφράτου κατὰ τὴν
 μικρὰν Ἀρμενίαν ἐφεξῆς τῷ Ἀντιταύρῳ πρὸς ἄρκτον
 ἐπεκτείνεται μέγα ὄρος καὶ πολυσχιδές· καλοῦσι δὲ τὸ
 5 μὲν αὐτοῦ Παρυάδρην τὸ δὲ Μοσχικὰ ὄρη τὸ δ' ἄλ-
 λους ὀνόμασι· ταῦτα δ' ἀπολαμβάνει τὴν Ἀρμενίαν
 ὅλην μέχρι Ἰβήρων καὶ Ἀλβανῶν. εἰτ' ἄλλ' ἐπανίστα-
 ται πρὸς ἑω, τὰ ὑπερκείμενα τῆς Κασπίας θαλάττης
 μέχρι Μηδίας τῆς τε Ἀτροπατίου καὶ τῆς μεγάλης· κα-
 10 λοῦσι δὲ καὶ ταῦτα τὰ μέρη πάντα τῶν ὄρων Παραχο-
 ἀθραν καὶ τὰ μέχρι τῶν Κασπίων πυλῶν καὶ ἐπέκεινα
 ἔτι πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς τὰ συνάπτοντα τῇ Ἀρίᾳ. τὰ
 μὲν δὴ πρόσβορρα ὄρη οὕτω καλοῦσι, τὰ δὲ νότια τὰ
 πέραν τοῦ Εὐφράτου τῆς Καππαδοκίας καὶ τῆς Κομ-
 15 μαγηνῆς πρὸς ἑω τείνοντα κατ' ἀρχὰς μὲν αὐτὸ τοῦτο
 καλεῖται Ταῦρος, διορίζων τὴν Σωφηνην καὶ τὴν ἄλ-
 λην Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Μεσοποταμίας· τινὲς δὲ Γορ-
 δυαῖα ὄρη καλοῦσιν. ἐν δὲ τούτοις ἐστὶ καὶ τὸ Μάσιον,
 τὸ ὑπερκείμενον τῆς Νισίβιος ὄρος καὶ τῶν Τυγρανο-
 20 κέρτων. ἔπειτα ἐξαίρεται πλέον καὶ καλεῖται Νιφάτης·
 ἐνταῦθα δὲ πού καὶ τοῦ Τίγριος πηγὰ κατὰ τὸ νότιον
 τῆς ὄρεινῆς πλευρόν· εἰτ' ἀπὸ τοῦ Νιφάτου μᾶλλον
 ἔτι καὶ μᾶλλον ἢ ῥάχιδι ἐκτεινομένη τὸ Ζάργιον ὄρος
 ποιεῖ τὸ διορίζον τὴν Μηδίαν καὶ τὴν Βαβυλωνίαν·
 25 μετὰ δὲ τὸ Ζάργιον ἐκδέχεται ὑπὲρ μὲν τῆς Βαβυλω-
 νίας ἢ τε τῶν Ἐλυμαίων ὄρεινῇ καὶ ἢ τῶν Παραϊτακη-
 νῶν, ὑπὲρ δὲ τῆς Μηδίας ἢ τῶν Κοσσαίων· ἐν μέσῳ
 δ' ἐστὶν ἡ Μηδία καὶ ἡ Ἀρμενία, πολλὰ μὲν ὄρη περι-
 λαμβάνουσα πολλὰ δὲ ὄροπέδια, ὡσαύτως δὲ πεδία καὶ
 30 αὐλῶνας μεγάλους, συχνὰ δὲ καὶ ἔθνη τὰ περιιοκούν-
 τα, μικρὰ ὄρεινὰ καὶ ληστρικά τὰ πλείω. οὕτω μὲν τοί-

νυν τίθεμεν ἐντὸς τοῦ Ταύρου τὴν τε Μηδίαν, ἣς εἰσι
καὶ αἱ Κάσπιοι πύλαι, καὶ τὴν Ἀρμενίαν.

- 5 Καθ' ἡμᾶς μὲν τοίνυν προσάρκτια ἂν εἴη τὰ ἔθνη
ταῦτα, ἐπειδὴ καὶ ἐντὸς τοῦ Ταύρου, Ἐρατοσθένους δὲ
πεπονημένος τὴν διαίρεισιν εἰς τὰ νότια μέρη καὶ τὰ 5
προσάρκτια καὶ τὰς ὑπ' αὐτοῦ λεγομένας σφραγίδας,
τὰς μὲν βορείους καλῶν τὰς δὲ νοτίους, ὅρια ἀποφαί-
νει τῶν κλιμάτων ἀμφοῖν τὰς Κάσπιους πύλας· εἰκό-
τως οὖν τὰ νοτιώτερα τῶν Κάσπιων πυλῶν νότια ἂν
ἀποφαίνοι, ὧν ἐστὶ καὶ ἡ Μηδία καὶ ἡ Ἀρμενία, τὰ δὲ 10
βορειότερα πρόσβορρα, κατ' ἄλλην καὶ ἄλλην διάτα-
ξιν τούτου συμβαίνοντος. τάχα δὲ οὐκ ἐπέβαλε τούτῳ,
διότι ἔξω τοῦ Ταύρου πρὸς νότον οὐδὲν ἐστὶν οὔτε τῆς
Ἀρμενίας μέρος οὔτε τῆς Μηδίας.

- 13 Ἡ δὲ Μηδία δίχα διήρηται· καλοῦσι δὲ τὴν μὲν 15
μεγάλην, ἣς μητρόπολις τὰ Ἐκβάτανα, μεγάλη πόλις
καὶ τὸ βασίλειον ἔχουσα τῆς Μήδων ἀρχῆς· διατελοῦσι
δὲ καὶ νῦν οἱ Παρθυαῖοι τούτῳ χρώμενοι βασιλεύω,
καὶ θερίζουσὶ γε ἐνταῦθα οἱ βασιλεῖς· ψυχρὰ γὰρ ἡ
Μηδία· τὸ δὲ χειμάδιόν ἐστὶν αὐτοῖς ἐν Σελευκείᾳ τῇ 20
ἐπὶ τῷ Τίγριδι πλησίον Βαβυλῶνος. ἡ δ' ἑτέρα μερίς
C.523 ἐστὶν ἡ Ἀτροπάτις Μηδία· τοῦνομα δ' ἔσχεν ἀπὸ τοῦ
ἡγεμόνος Ἀτροπάτου, ὃς ἐκώλυσεν ὑπὸ τοῖς Μακεδόσι
γίνεσθαι καὶ ταύτην μέρος οὔσαν μεγάλης Μηδίας·
καὶ δὴ καὶ βασιλεὺς ἀναγορευθεὶς ἰδίᾳ συνέταξε καθ' 25
αὐτὴν τὴν χώραν ταύτην, καὶ ἡ διαδοχὴ σώζεται μέχρι
νῦν ἐξ ἐκείνου, πρὸς τε τοὺς Ἀρμενίων βασιλέας ποιη-
σαμένων ἐπιγαμίας τῶν ὕστερον καὶ Σύρων καὶ μετὰ
2 ταῦτα Παρθυαίων. κεῖται δὲ ἡ χώρα τῇ μὲν Ἀρμενίᾳ

9. post νοτιωτερα: πρὸς ἔω τείνοντα 29. post Ἀρμενία:
καὶ τῇ Ματιανῇ

πρὸς ἕω τῇ δὲ μεγάλη Μηδία πρὸς δύσιν, πρὸς ἄρκτον
 δ' ἀμφοτέραις· τοῖς δὲ περὶ τὸν μυχὸν τῆς Ὑρκανίας
 θαλάττης καὶ τῇ Ματιανῇ ἀπὸ νότου παρᾷκειται. ἔστι
 δ' οὐ μικρὰ κατὰ τὴν δύναμιν, ὥς φησιν Ἀπολλωνί-
 5 δης, ἥ γε καὶ * κατὰ μυρίους ἱππέας δύναται παρέχε-
 σθαι, πεζῶν δὲ τέτταρας μυριάδας. λίμνην δ' ἔχει τὴν
 * Σπαῦταν, ἐν ἣ ἄλλες ἐπανθοῦντες πῆττονται· εἰσὶ δὲ
 κνησμώδεις καὶ ἐπαλγεῖς· ἔλαιον δὲ τοῦ πάθους ἄκος,
 ὕδωρ δὲ γλυκὺ τοῖς καπυρωθεῖσιν ἱματίοις, εἴ τις κατ'
 10 ἄγνοιαν βάψειεν εἰς αὐτὴν πλύσεως χάριν. ἔχουσι δ'
 ἰσχυροὺς γείτονας τοὺς Ἀρμενίους καὶ τοὺς Παρθυαί-
 οὺς, ὑφ' ὧν περικόπτονται πολλάκις· ἀντέχουσι δ'
 ὅμως καὶ ἀπολαμβάνουσι τὰ ἀφαιρεθέντα, καθάπερ
 τὴν Συμβάκην ἀπέλαβον παρὰ τῶν Ἀρμενίων ὑπὸ Ῥω-
 15 μαίοις γεγονότων, καὶ αὐτοὶ προσεληλύθασιν τῇ φιλίᾳ
 τῇ πρὸς Καίσαρα· θεραπεύουσι δ' ἅμα καὶ τοὺς Παρ-
 θυαίους.

Βασίλειον δ' αὐτῶν θερινὸν μὲν ἐν πεδίῳ ἰδρυμέ- 3
 νον Γάξακα, [χειμερινὸν δὲ] ἐν φρουρίῳ ἐρυμνῷ ὕερα,
 20 ὅπερ Ἀντώνιος ἐπολιόρησε κατὰ τὴν ἐπὶ Παρθυαίους
 στρατείαν. διέχει δὲ τοῦτο τοῦ Ἀράξου ποταμοῦ τοῦ
 ὀρίζοντος τὴν τε Ἀρμενίαν καὶ τὴν Ἀτροπατηνὴν στα-
 δίους δισχιλίους καὶ τετρακοσίους, ὥς φησιν ὁ Ἀέλλιος
 ὁ τοῦ Ἀντωνίου φίλος, συγγράψας τὴν ἐπὶ Παρθυαί-
 25 οὺς αὐτοῦ στρατείαν ἐν ἣ παρῆν καὶ αὐτὸς ἡγεμονίαν
 ἔχων. ἔστι δὲ τῆς χώρας ταύτης τὰ μὲν ἄλλα εὐδαίμονα
 χωρία, ἥ δὲ προσάρκτιος ὀρεινὴ καὶ τραχεῖα καὶ ψυχρά,
 Καδουσίων κατοικία τῶν ὀρεινῶν καὶ Ἀμάρδων καὶ
 Ταπύρων καὶ Κυρτίων καὶ ἄλλων τοιούτων, οἳ μετα-
 30 νάσται εἰσὶ καὶ ληστρικοί. καὶ γὰρ ὁ Ζάγρος καὶ ὁ Νι-
 φάτης κατεσπαρμένα ἔχουσι τὰ ἔθνη ταῦτα, καὶ οἱ ἐν
 τῇ Περσίδι Κύρτιοι καὶ Μάρδοι (καὶ γὰρ οὕτω λέγον-

ται οἱ Ἀμαρδοὶ) καὶ οἱ ἐν τῇ Ἀρμενίᾳ μέχρι νῦν ὁμω-
νύμως προσαγορευόμενοι τῆς αὐτῆς εἰσὶν ἰδέας.

4 Οἱ δ' οὖν Καδούσιοι πλήθει τῷ πεζῷ μικρὸν ἀπο-
λείπονται τῶν Ἀριανῶν, ἀκοντισταὶ δ' εἰσὶν ἄριστοι,
ἐν δὲ τοῖς τραχέσιν ἀνθ' ἱππέων πεζοὶ διαμάχονται. 5
C.524 Ἀντωνίῳ δὲ χαλεπὴν τὴν στρατείαν ἐποίησεν οὐχ ἡ τῆς
χωρᾶς φύσις, ἀλλ' ὁ τῶν ὁδῶν ἡγεμῶν, ὁ τῶν Ἀρμε-
νίων βασιλεὺς Ἀρταβάσδης, ὃν εἰκὴ ἐκεῖνος ἐπιβου-
λεύοντα αὐτῷ σύμβουλον ἐποιεῖτο καὶ κύριον τῆς περι-
τοῦ πολέμου γνώμης· ἐτιμωρήσατο μὲν οὖν αὐτόν, 10
ἀλλ' ὅψε', ἥνίκα πολλῶν αἷτιος κατέστη κακῶν Ῥωμαί-
οις καὶ αὐτὸς καὶ ἐκεῖνος, ὅστις τὴν ἀπὸ τοῦ Ζεύγμα-
τος ὁδὸν τοῦ κατὰ τὸν Εὐφράτην μέχρι τοῦ ἄψασθαι
τῆς Ἀτροπατηνῆς ὀκτακισχιλίων σταδίων ἐποίησε,
πλέον ἢ διπλασίαν τῆς εὐθείας, διὰ ὁρῶν καὶ ἀνοδιῶν 15
καὶ κυκλοπορίας.

5 Ἡ δὲ μεγάλη Μηθία τὸ μὲν παλαιὸν τῆς Ἀσίας
ἡγήσατο πάσης καταλύσασα τὴν τῶν Σύρων ἀρ-
χήν· ὕστερον δ' ὑπὸ Κύρου καὶ Περσῶν ἀφαιρεθεῖ-
σα τὴν τῷ αὐτῷ ἐξουσίαν ἐπὶ Ἀστυάγου διεφύλαττεν 20
ὅμως πολὺ τοῦ πατρίου ἀξιώματος, καὶ ἦν τὰ Ἐκβά-
τανα * χειμᾶδιον τοῖς Πέρσαις· ὁμοίως δὲ καὶ τοῖς ἐκεῖ-
νους καταλύσασι Μακεδόσι τοῖς τὴν Συρίαν ἔχουσι,
καὶ νῦν ἔτι τοῖς Παρθυαίων βασιλεῦσι τὴν αὐτὴν πα-
ρέχεται χρεῖαν τε καὶ ἀσφάλειαν. 25

6 Ὁρίζεται δ' ἀπὸ μὲν τῆς ἕως τῇ τε Παρθυαίᾳ καὶ
τοῖς Κοσσαίων ὄρεσι ληστρικῶν ἀνθρώπων, οἱ τοξότας
μυρίους καὶ τρισχιλίους παρέσχοντό ποτε Ἐλυμαίοις
συνμαχοῦντες ἐπὶ Σουσίους καὶ Βαβυλωνίους. Νέαρχος
δὲ φησι τεττάρων ὄντων ληστρικῶν ἔθνων, ὧν Μάρ- 30
δοι μὲν Πέρσαις προσεχεῖς ἦσαν, Οὔξιοι δὲ καὶ Ἐλυ-
μαῖοι τοῦτοις τε καὶ Σουσίοις, Κοσσαῖοι δὲ Μήδοις, πάν-

τας μὲν φόρους πράττεσθαι τοὺς βασιλέας, Κοσσαίους
 δὲ καὶ δῶρα λαμβάνειν, ἥνίκα ὁ βασιλεὺς θερίσας ἐν
 Ἐκβατάνοις εἰς τὴν Βαβυλωνίαν καταβαίνοι· καταλῦ-
 5 σαι δ' αὐτῶν τὴν πολλὴν τόλμαν Ἀλέξανδρον ἐπιθέμε-
 νον χειμῶνος. τούτοις τε δὴ ἀφορίζεται πρὸς ἔω καὶ ἐτι
 τοῖς Παραιτακηνοῖς, οἳ συνάπτουσι Πέρσαις ὀρεινοὶ
 καὶ αὐτοὶ καὶ ληστρικοί· ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων τοῖς ὑπερ-
 οικοῦσι τῆς Ὑρκανίας θαλάττης Καδουσίους καὶ τοῖς
 ἄλλοις, οὓς ἄρτι διήλθομεν· πρὸς νότον δὲ τῇ Ἀπολ-
 10 λωνιάτιδι, ἣν Σιτακηνὴν ἐκάλουν οἱ παλαιοί, καὶ τῇ
 Ζάγγῳ, καθ' ὃ ἡ Μασσαβατικὴ κεῖται τῆς Μηδίας
 οὔσα, οἱ δὲ τῆς Ἑλυμαίας φασί· πρὸς δύσιν δὲ τοῖς
 Ἀτροπατίοις καὶ τῶν Ἀρμενίων τισίν. εἰσὶ δὲ καὶ Ἑλ-
 ληνίδες πόλεις κτίσματα τῶν Μακεδόνων ἐν τῇ Μη-
 15 δίᾳ, ὧν Λαοδίκειά τε καὶ Ἀπάμεια καὶ ἡ πρὸς Ῥάγαις
 [Ἡράκλεια] καὶ αὐτὴ Ῥάγα, τὸ τοῦ Νικάτορος κτίσμα,
 ὃ ἐκεῖνος μὲν Εὐρωπὸν ὠνόμασε, Πάρθοι δὲ Ἀρσα-
 κίαν, νοτιωτέραν οὔσαν τῶν Κασπίων πυλῶν πεντα-
 κοσίους πού σταδίους, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος Ἀρτε-
 20 μιτηνός.

Ἡ πολλὴ μὲν οὖν ὑψηλὴ ἐστὶ καὶ ψυχρά· τοιαῦτα γ
 δὲ καὶ τὰ ὑπερκείμενα τῶν Ἐκβατάνων ὄρη καὶ τὰ περὶ
 τὰς Ῥάγας καὶ τὰς Κασπίους πύλας καὶ καθόλου τὰ
 προσάρκτια μέρη τὰ ἐντεῦθεν μέχρι πρὸς τὴν Ματια-
 25 νὴν καὶ τὴν Ἀρμενίαν. ἡ δ' ὑπὸ ταῖς Κασπίους πύλαις
 ἐν ταπεινοῖς ἐδάφεσι καὶ κοίλοις οὔσα εὐδαίμων σφό-
 δρα ἐστὶ καὶ πάμπορος πλὴν ἐλαίας· εἰ δὲ καὶ φύεται
 πού, ἀλιπὴς τέ ἐστὶ καὶ ξηρά· ἱππόβοτος δὲ καὶ αὕτη
 ἐστὶ διαφερόντως καὶ ἡ Ἀρμενία· καλεῖται δὲ τις καὶ
 30 λειμῶν ἱππόβοτος, ὃν καὶ διεξίασιν οἱ ἐκ τῆς Περσίδος
 καὶ Βαβυλῶνος εἰς Κασπίους πύλας ὁδεύοντες, ἐν ᾧ
 πέντε μυριάδας ἱππων θηλείων νέμεσθαι φασιν ἐπὶ

τῶν Περσῶν, εἶναι δὲ τὰς ἀγέλας ταύτας βασιλικάς. τοὺς δὲ Νησαίους ἵππους, οἷς ἐχρῶντο οἱ βασιλεῖς ἀρίστοις οὖσι καὶ μεγίστοις, οἱ μὲν ἐνθένδε λέγουσι τὸ γένος, οἱ δ' ἐξ Ἀρμενίας· ιδιόμορφοι δέ εἰσιν, ὥσπερ καὶ οἱ Παρθικοὶ λεγόμενοι νῦν, παρὰ τοὺς Ἑλλαδικοὺς 5 καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς παρ' ἡμῖν. καὶ τὴν βοτάνην δὲ τὴν μάλιστα τρέφουσιν τοὺς ἵππους ἀπὸ τοῦ πλεονάζειν ἐνταῦθα ἰδίως μῆδικην καλοῦμεν. φέρει δὲ καὶ σίλφιον ἢ χῶρα, ἀφ' οὗ ὁ Μηδικὸς καλούμενος ὀπός, πολὺ λειπόμενος τοῦ Κυρηναϊκοῦ· ἔστι δ' ὅτε καὶ δια- 10 φέρων ἐκείνου, εἴτε παρὰ τὰς τῶν τόπων διαφορὰς εἴτε τοῦ φυτοῦ κατ' εἶδος ἐξαλλάττοντος, εἴτε καὶ παρὰ τοὺς ὀπίζοντας καὶ σκευάζοντας ὥστε συμμένειν πρὸς τὴν ἀπόθεσιν καὶ τὴν χρεῖαν.

8 Τοιαύτη μὲν τις ἡ χῶρα· τὸ δὲ μέγεθος πάρισός 15 πῶς ἔστιν εἰς πλάτος καὶ μῆκος· δοκεῖ δὲ μέγιστον εἶναι μῆκος τῆς Μηδίας τὸ ἀπὸ τῆς τοῦ Ζάγρου ὑπερθέσεως, ἥπερ καλεῖται Μηδικὴ πύλη, εἰς Κασπίους πύλας διὰ τῆς Σιγριανῆς σταδίων τετρακισχιλίων ἑκατόν. τῷ δὲ μεγέθει καὶ τῇ δυνάμει τῆς χῶρας ὁμολογεῖ καὶ 20 ἡ περὶ τῶν φόρων ἱστορία· τῆς γὰρ Καππαδοκίας παρεχούσης τοῖς Πέρσαις κατ' ἐνιαυτὸν πρὸς τῷ ἀργυρικοῦ τέλει ἵππους χιλίους καὶ πεντακοσίους, ἡμίονους δὲ διςχιλίους, προβάτων δὲ πέντε μυριάδας, διπλάσια σχεδόν τι τούτων ἐτέλουν οἱ Μῆδοι. 25

9 Ἐθῆ δὲ τὰ πολλὰ μὲν τὰ αὐτὰ τούτοις τε καὶ τοῖς Ἀρμενίοις διὰ τὸ καὶ τὴν χῶραν παραπλησίαν εἶναι. τοὺς μέντοι Μῆδους ἀρχηγέτας εἶναί φασι καὶ τούτοις καὶ ἔτι πρότερον Πέρσαις τοῖς ἔχουσιν αὐτοὺς καὶ δια- 30 δεξαμένοις τὴν τῆς Ἀσίας ἐξουσίαν. ἡ γὰρ νῦν λεγομένη Περσικὴ στολὴ καὶ ὁ τῆς τοξικῆς καὶ ἱππικῆς ζῆλος καὶ ἡ περὶ τοὺς βασιλέας θεραπεία καὶ κόσμος καὶ

σεβασμὸς θεοπρεπὴς παρὰ τῶν ἀρχομένων εἰς τοὺς C.526
 Πέρσας παρὰ Μήδων ἀφίεται. καὶ ὅτι τοῦτ' ἀληθὲς ἐκ
 τῆς ἐσθῆτος μάλιστα δῆλον· τιάρᾳ γάρ τις καὶ κίταρις
 καὶ πῖλος καὶ χειριδωτοὶ χιτῶνες καὶ ἀναξυρίδες ἐν μὲν
 5 τοῖς ψυχροῖς τόποις καὶ προσβόροισι ἐπιτήδειά ἐστι
 φορήματα, οἷοί εἰσιν οἱ Μηδικοί, ἐν δὲ τοῖς νοτίοις
 ἥκιστα· οἱ δὲ Πέρσαι τὴν πλείστην οἴκησιν ἐπὶ τῇ Ἐρυ-
 θρᾷ θαλάττῃ κέκτηνται, μεσημβρινώτεροι καὶ Βαβυ-
 λωνίων ὄντες καὶ Σουσίων· μετὰ δὲ τὴν κατάλυσιν
 10 τὴν τῶν Μήδων προσεκτήσαντό τινα καὶ τῶν προσ-
 απτομένων Μηδία. ἀλλ' οὕτως ἐφάνη σεμνὰ καὶ τοῦ
 βασιλικοῦ προσχήματος οἰκεῖα τὰ ἔθνη τοῖς νικήσασιν τὰ
 τῶν νικηθέντων, ὥστ' ἀντὶ γυμνητῶν καὶ ψιλῶν θη-
 λυστολεῖν ὑπέμειναν, καὶ κατηρεφεῖς εἶναι τοῖς σκε-
 15 πάσμασι.

Τινὲς δὲ Μήδειαν καταδείξαι τὴν ἐσθῆτα ταύτην 10
 φασὶ δυναστεύσασαν ἐν τοῖς τόποις, καθάπερ καὶ Ἰάσο-
 να, καὶ ἐπικρυπτομένην τὴν ὄψιν ὅτε ἀντὶ τοῦ βασιλέως
 ἐξίοι· τοῦ μὲν [οὗν] Ἰάσονος ὑπομνήματα εἶναι τὰ Ἰα-
 20 σόνια ἡρῶα τιμώμενα σφόδρα ὑπὸ τῶν βαρβάρων (ἐστι
 δὲ καὶ ὄρος μέγα ὑπὲρ τῶν Κασπίων πυλῶν ἐν ἀριστε-
 ρᾷ καλούμενον Ἰασόνιον), τῆς δὲ Μηδείας τὴν ἐσθῆτα
 καὶ τοῦνομα τῆς χώρας. λέγεται δὲ καὶ Μῆδος υἱὸς αὐ-
 τῆς διαδέξασθαι τὴν ἀρχὴν καὶ τὴν χώραν ἐπώνυμον
 25 αὐτοῦ καταλιπεῖν. ὁμολογεῖ δὲ τούτοις καὶ τὰ κατὰ
 τὴν Ἀρμενίαν Ἰασόνια καὶ τὸ τῆς χώρας ὄνομα καὶ
 ἄλλα πλείω περὶ ὧν ἐροῦμεν.

Καὶ τοῦτο δὲ Μηδικὸν τὸ βασιλεῖα αἰρεῖσθαι τὸν 11
 ἀνδρειότατον, ἀλλ' οὐ πᾶσιν ἀλλὰ τοῖς ὀρεοῖς· μάλ-
 30 λον δὲ τὸ τοῖς βασιλεῦσιν πολλὰς εἶναι γυναῖκας· τοῖς

δ' ὀρείοις τῶν Μήδων καὶ πᾶσιν ἔθος τοῦτο, ἐλάτ-
τους δὲ τῶν πέντε οὐκ ἔξεστιν· ὥς δ' αὐτως τὰς γυ-
ναϊκάς φασιν ἐν καλῷ τίθεσθαι ὅτι πλείστας * νέμειν
ἄνδρας, τῶν πέντε δὲ ἐλάττους συμφορὰν ἡγεῖσθαι.
τῆς δ' ἄλλης Μηδίας εὐδαιμονούσης τελέως λυπρὰ 5
ἐστὶν ἢ προσάρκτιος ὀρεινῇ· σιτοῦνται γοῦν ἀπὸ ἀκρο-
δρύων, ἐκ τε μῆλων ξηρῶν κοπέντων ποιοῦνται μά-
ζας, ἀπὸ δ' ἀμυγδάλων φωχθέντων ἄρτους, ἐκ δὲ ῥι-
ζῶν τινων οἶνον ἐκθλίβουσι, κρέασι δὲ χρῶνται θη-
ρείοις, ἡμερὰ δὲ οὐ τρέφουσι θρέμματα. τοσαῦτα καὶ 10
περὶ Μήδων φασιν· περὶ δὲ τῶν νομίμων κοινῇ τῆς
συμπάσης Μηδίας, ἐπειδὴ ταῦτά τοις Περσικοῖς γεγέ-
νηται διὰ τὴν τῶν Περσῶν ἐπικράτειαν, ἐν τῷ περὶ
ἐκείνων λόγῳ φήσομεν.

14 Τῆς δ' Ἀρμενίας τὰ μὲν νότια προβέβληται τὸν 15
Ταῦρον, διείργοντα αὐτὴν ἀφ' ὅλης τῆς μεταξὺ Εὐ-
6.527φράτου καὶ τοῦ Τίγριος, ἣν Μεσοποταμίαν καλοῦσι,
τὰ δὲ ἑωθινὰ τῇ Μηδίᾳ συνάπτει τῇ μεγάλῃ καὶ τῇ
Ἀτροπατηνῇ· προσάρκτια δὲ ἐστὶ τὰ ὑπερκείμενα τῆς
Κασπίας θαλάττης ὅρη τὰ τοῦ Παραχοάθρα καὶ Ἀλβα- 20
νοὶ καὶ Ἰβηρες καὶ ὁ Καύκασος ἐγκυκλούμενος τὰ ἔθνη
ταῦτα καὶ συνάπτων τοῖς Ἀρμενίοις, συνάπτων δὲ καὶ
τοῖς Μοσχοῖς ὅρεσι καὶ Κολχικοῖς μέχρι τῶν καλου-
μένων Τιβαρανῶν· ἀπὸ δὲ τῆς ἐσπέρας ταῦτά ἐστὶ τὰ
ἔθνη καὶ ὁ Παρνάδρης καὶ ὁ Σκυδίσσης μέχρι τῆς μικρᾶς 25
Ἀρμενίας καὶ τῆς τοῦ Εὐφράτου ποταμίας, ἣ διείργει
τὴν Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Καππαδοκίας καὶ τῆς Κομμα-
γηνῆς.

2 Ὁ γὰρ Εὐφράτης ἀπὸ τῆς βορείου πλευρᾶς τοῦ
Ταύρου τὰς ἀρχὰς ἔχων τὸ μὲν πρῶτον ρεῖ πρὸς δύσιν 30
διὰ τῆς Ἀρμενίας, εἴτ' ἐπιστρέφει πρὸς νότον καὶ δια-
κόπτει τὸν Ταῦρον μεταξὺ τῶν Ἀρμενίων τε καὶ Καπ-

παδόκων καὶ Κομμαγηνῶν, ἐκπεσὼν δ' ἔξω καὶ γε-
 νόμενος κατὰ τὴν Συρίαν ἐπιστρέφει πρὸς χειμερι-
 νὰς ἀνατολὰς μέχρι Βαβυλῶνος καὶ ποιεῖ τὴν Μεσοπο-
 ταμίαν πρὸς τὸν Τίγριν· ἀμφότεροι δὲ τελευτῶσιν εἰς
 5 τὸν Περσικὸν κόλπον. τὰ μὲν δὴ κύκλῳ τοιαῦτα, ὁρει-
 νὰ σχεδὸν τι πάντα καὶ τραχέα πλὴν τῶν πρὸς τὴν
 Μηδίαν κεκλιμένων ὀλίγων. πάλιν δὲ τοῦ λεχθέντος
 Ταύρου τὴν ἀρχὴν λαμβάνοντος ἀπὸ τῆς περαιῆς τῶν
 Κομμαγηνῶν καὶ τῶν Μελιτηνῶν ἣν ὁ Εὐφράτης ποιεῖ,
 10 Μάσιον μὲν ἐστὶ τὸ ὑπερκείμενον ὄρος τῶν ἐν τῇ Με-
 σοποταμίᾳ Μυργδόνων ἐκ νότου, ἐν οἷς ἡ Νίσιβις ἐστίν·
 ἐκ δὲ τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν ἡ Σωφηνὴ κεῖται μεταξὺ
 τοῦ τε Μασίου καὶ τοῦ Ἀντιταύρου. οὗτος δ' ἀπὸ τοῦ
 Εὐφράτου καὶ τοῦ Ταύρου τὴν ἀρχὴν λαβὼν τελευτᾷ
 15 πρὸς τὰ ἑῷα τῆς Ἀρμενίας ἀπολαμβάνων μέσῃ τὴν
 Σωφηνήν, ἐκ θατέρου δὲ μέρους ἔχων τὴν Ἀκισσηνὴν
 μεταξὺ ἰδρυμένην τοῦ Ταύρου τε καὶ τῆς τοῦ Εὐφρά-
 του ποταμίας πρὶν ἢ κάμπτειν αὐτὴν ἐπὶ νότον. βα-
 σίλειον δὲ τῆς Σωφηνῆς Καρκαθιόκερτα. τοῦ δὲ Μα-
 20 σίου ὑπέρεκειται πρὸς ἑὸ πολὺ κατὰ τὴν Γορδυνηνὴν ὁ
 Νιφάτης, εἰδ' ὃ Ἄβος, ἀφ' οὗ καὶ ὁ Εὐφράτης ρεῖ καὶ
 ὁ Ἀράξης, ὁ μὲν πρὸς δύσιν ὁ δὲ πρὸς ἀνατολὰς· εἰδ'
 ὁ Νίβαρος μέχρι τῆς Μηδίας παρατείνει.

Ὁ μὲν οὖν Εὐφράτης εἴρηται ὃν τρόπον ρεῖ· ὁ δὲ 3
 25 Ἀράξης πρὸς τὰς ἀνατολὰς ἐνεχθεὶς μέχρι τῆς Ἀτρο-
 πατηνῆς κάμπτει πρὸς δύσιν καὶ πρὸς ἄρκτους καὶ πα-
 ραρρεῖ τὰ Ἄζαρα πρῶτον, εἴτ' Ἀρτάξατα, πόλεις Ἀρ-
 μενίων· ἔπειτα διὰ τοῦ Ἀραξηνοῦ πεδίου πρὸς τὸ Κά-
 σπιον ἐκδίδωσι πέλαγος.

30 Ἐν αὐτῇ δὲ τῇ Ἀρμενίᾳ πολλὰ μὲν ὄρη πολλὰ δὲ ^{C.528}
 ὄροπέδια, ἐν οἷς οὐδ' ἄμπελος φύεται ῥαδίως, πολλοὶ
 δ' αὐλῶνες οἱ μὲν μέσως οἱ δὲ καὶ σφόδρα εὐδαίμονες 4

καθάπερ τὸ Ἀραξηνὸν πεδίον, δι' οὗ ὁ Ἀράξης ποτα-
 μὸς ῥέων εἰς τὰ ἄκρα τῆς Ἀλβανίας καὶ τὴν Κασπίαν
 ἐκπίπτει θάλατταν, καὶ μετὰ ταῦτα ἡ Σακασηνὴ καὶ
 αὐτὴ τῇ Ἀλβανίᾳ πρόσχωρος καὶ τῷ Κύρῳ ποταμῷ,
 εἰθ' ἡ Γωγαρηνή· πᾶσα γὰρ ἡ χώρα αὕτη καρποῖς τε 5
 καὶ τοῖς ἡμέροις δένδροις καὶ τοῖς ἀειθαλέσι πληθύνει,
 φέρει δὲ καὶ ἐλαίαν. ἔστι δὲ καὶ ἡ * Φανηνὴ τῆς Ἀρμε-
 νίας ἐπαρχία καὶ ἡ Κωμισηνὴ καὶ Ὀρχιστηνὴ πλείστην
 ἱππείαν παρέχουσα· ἡ δὲ Χορξηνὴ καὶ Καμβυσηνὴ
 προσβορρόταται εἰσι καὶ νιφόβολοι μάλιστα, συνά- 10
 πτουςαι τοῖς Κανκασίοις ὄρεσι καὶ τῇ Ἰβηρίᾳ καὶ τῇ
 Κολχίδι· ὅπου φασὶ κατὰ τὰς ὑπερβολὰς τῶν ὀρέων
 πολλάκις καὶ συνοδίας ὅλας * τῶν ὀρέων ἐν τῇ χιόνι κα-
 ταπίνεσθαι νιφετῶν γινομένων ἐπὶ πλεόν· ἔχειν δὲ
 καὶ βακτηρίας πρὸς τοὺς τοιούτους κινδύνους, [ἀς] πα- 15
 ρεξαίροντας εἰς τὴν ἐπιφάνειαν ἀναπνοῆς τε χάριν καὶ
 τοῦ διαμηνύειν τοῖς ἐπιοῦσιν ὥστε βοηθείας τυγχά-
 νειν, ἀνορύττεσθαι καὶ σώζεσθαι. ἐν δὲ τῇ χιόνι βώ-
 λους πηγνυσθαί φασι κοίλας περιεχούσας χρηστὸν
 ὕδωρ ὡς ἐν χιτῶνι, καὶ ζῶα δὲ ἐν αὐτῇ γεννᾶσθαι· 20
 καλεῖ δὲ σκώληκας Ἀπολλωνίδης, Θεοφάνης δὲ θρι-
 πας· καὶ τούτοις ἀπολαμβάνεσθαι χρηστὸν ὕδωρ, πε-
 ρισχισθέντων δὲ τῶν χιτῶνων πίνεσθαι· τὴν δὲ γένεσιν
 τῶν ζώων τοιαύτην εἰκάξουσιν οἷαν τὴν τῶν κωνώπων
 ἐκ τῆς ἐν τοῖς μετάλλοις φλογὸς καὶ τοῦ φεψάλου. 25

5 Ἰστοροῦσι δὲ τὴν Ἀρμενίαν μικρὰν πρότερον οὗ-
 σαν αὐξηθῆναι διὰ τῶν περὶ Ἀρταξίαν καὶ Ζαρίαδριν,
 οἳ πρότερον μὲν ἦσαν Ἀντιόχου τοῦ μεγάλου στρατη-
 γοί, βασιλεύσαντες δ' ὕστερον μετὰ τὴν ἐκείνου ἡτ-
 ταν ὁ μὲν τῆς Σωφηνῆς καὶ τῆς * Ἀκισηνῆς καὶ Ὀδο- 30
 μαντίδος καὶ ἄλλων τινῶν ὁ δὲ τῆς περὶ Ἀρτάξατα,
 συνηύξησαν ἐκ τῶν περικειμένων ἐθνῶν ἀποτεμόμενοι

μέρη, ἐκ Μήδων μὲν τὴν τε Κασπιανὴν καὶ Φανν-
 τιν καὶ Βασοροπέδαν, Ἰβήρων δὲ τὴν τε παρῳρείαν τοῦ
 Παρναύδρου καὶ τὴν Χορζηνὴν καὶ Γωγαρηνὴν, πέραν
 οὖσαν τοῦ Κύρου, Χαλύβων δὲ καὶ Μοσυνοίκων Κα-
 5 ρηνῖτιν καὶ Ξερξήνην, ἃ τῇ μικρᾷ Ἀρμενίᾳ ἐστὶν ὁμορα
 ἢ καὶ μέρος αὐτῆς ἐστὶ, Καταόνων δὲ Ἀκιλισηνὴν καὶ
 τὴν περὶ τὸν Ἀντίταυρον, Σύρων δὲ Ταρωνῖτιν, ὥστε
 πάντας ὁμογλώττους εἶναι.

Πόλεις δ' εἰσὶν τῆς Ἀρμενίας Ἀρτάξατά τε (ἦν 6
 10 καὶ Ἀρταξιάσατα καλοῦσιν, Ἀννίβα κτίσαντος Ἀρταξία
 τῷ βασιλεῖ) καὶ Ἀρξάτα, ἀμφοτέραι ἐπὶ τῷ Ἀράξῃ, ἢ C.529
 μὲν Ἀρξάτα πρὸς τοῖς ὄροις τῆς Ἀτροπατίας, ἢ δὲ Ἀρ-
 τάξατα πρὸς τῷ Ἀραξηνῷ πεδίῳ συμφυεμένη καλῶς
 καὶ βασιλῆιον οὖσα τῆς χώρας. κεῖται δ' ἐπὶ χειρρονησι-
 15 ἀζοντος ἀγκῶνος τὸ τεῖχος [ἔχουσα] κύκλῳ προβεβλη-
 μένον τὸν ποταμὸν πλὴν τοῦ ἰσθμοῦ, τὸν ἰσθμὸν δ' ἔχει
 τάφρῳ καὶ χάρακι κεκλεισμένον. οὐ πολὺ δ' ἄπωθεν
 τῆς πόλεως ἐστὶ τὰ Τιγράνου καὶ Ἀρτασιάνου γαζοφυ-
 λάκια, φρούρια ἐρυμνά, Βάβυρσά τε καὶ Ὀλανή· ἦν δὲ
 20 καὶ ἄλλα ἐπὶ τῷ Εὐφράτῃ. Ἀρτάγειρα δὲ ἀπέστησε μὲν
 Ἄδων ὁ φρούραρχος, ἐξέειλον δ' οἱ Καίσαρος στρατηγοὶ
 πολιορκήσαντες πολὺν χρόνον, καὶ τὰ τεῖχη περιείλον.

Ποταμοὶ δὲ πλείους μὲν εἰσὶν ἐν τῇ χώρᾳ, γνωρι- 7
 μώτατοι δὲ Φᾶσις μὲν καὶ Λύκος εἰς τὴν Ποντικὴν ἐκ-
 25 πίπτοντες θάλατταν (Ἐρατοσθένους δ' ἀντὶ τοῦ Λύκου
 τίθησι Θερμάδοντα οὐκ εὖ), εἰς δὲ τὴν Κασπίαν Κύ-
 ρος καὶ Ἀράξης, εἰς δὲ τὴν Ἐρυθρὰν ὅ τε Εὐφράτης
 καὶ ὁ Τίγρις.

Εἰσὶ δὲ καὶ λίμναι κατὰ τὴν Ἀρμενίαν μεγάλαι, 8
 30 μίᾳ μὲν ἡ Μαντιανή, Κυανὴ ἐρμηνευθεῖσα, μεγίστη,
 ὥς φασι, μετὰ τὴν Μαιῶτιν, ἄλμυροῦ ὕδατος, διήκουσα
 μέχρι τῆς Ἀτροπατίας, ἔχουσα καὶ ἀλοπήγια· ἢ δὲ Ἀρ-

σηνή, ἣν καὶ *Θωπίτιν* καλοῦσιν· ἔστι δὲ νιτρίτις, τὰς δ' ἐσθῆτας ῥήττει καὶ διαξαίνει· διὰ δὲ τοῦτο καὶ ἄπο-
τόν ἐστι τὸ ὕδωρ. φέρεται δὲ δι' αὐτῆς ὁ *Τίγρις* ἀπο-
τῆς κατὰ τὸν *Νιφάτην* ὀρεινῆς ὀρηθεῖς, ἅμικτον φυ-
λάττων τὸ ρεῦμα διὰ τὴν ὀξύτητα, ἀφ' οὗ καὶ τοῦνομα, 5
Μήδων τίγριν καλοῦντων τὸ τόξενμα· καὶ οὗτος μὲν
ἔχει πολυειδεῖς ἰχθύς, οἱ δὲ λιμναῖοι ἐνὸς εἰδους εἰσί·
κατὰ δὲ τὸν μυχὸν τῆς λίμνης εἰς βάραθρον ἐμπεσὼν
ὁ ποταμὸς καὶ πολὺν τόπον ἐνεχθεῖς ὑπὸ γῆς ἀνατέλ-
λει κατὰ τὴν *Χαλωνίτιν*· ἐκεῖθεν δ' ἤδη πρὸς τὴν 10
Ῥοπιν καὶ τὸ τῆς *Σεμιράμιδος* καλούμενον διατειχισμα
ἐκεῖνός τε καταφέρεται τοὺς *Γορδυαίους* ἐν δεξιᾷ
ἀφελὲς καὶ τὴν *Μεσοποταμίαν* ὅλην, καὶ ὁ *Εὐφράτης*
τοῦναντίον ἐν ἀριστερᾷ ἔχων τὴν αὐτὴν χώραν· πλη-
σιάσαντες δὲ ἀλλήλοις καὶ ποιήσαντες τὴν *Μεσοποτα*· 15
μίαν ὁ μὲν διὰ *Σελευκείας* φέρεται πρὸς τὸν *Περσικὸν*
κόλπον, ὁ δὲ διὰ *Βαβυλῶνος*, καθάπερ εἴρηται πού ἐν
τοῖς πρὸς *Ἑρατοσθένην* καὶ *Ἰππαρχον* λόγοις.

9 *Μέταλλα* δ' ἐν μὲν τῇ *Συσπιρίτιδι* ἐστὶ χρυσοῦ
κατὰ τὰ *Κάβαλλα*, ἐφ' ἃ *Μένωνα* ἐπεμψεν *Ἀλέξανδρος* 20
μετὰ στρατιωτῶν, ἀπήγχθη δ' ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων· καὶ
ἄλλα δ' ἐστὶ μέταλλα, καὶ δὴ τῆς σάνδικος καλουμένης,
ἣν δὴ καὶ *Ἀρμένιον* καλοῦσι χρῶμα, ὅμοιον κάλῃ·
οὕτω δ' ἐστὶν ἱπποβότος σφόδρα ἡ χώρα καὶ οὐχ ἥτ-
C.530 τον τῆς *Μηδίας*, ὥστε οἱ *Νησαῖοι* ἵπποι καὶ ἐνταῦθα 25
γίνονται, οἷσπερ οἱ *Περσῶν* βασιλεῖς ἐχρῶντο, καὶ ὁ
σατραπῆς τῆς *Ἀρμενίας* τῷ *Πέρσῃ* κατ' ἔτος δισμυρί-
ους πάλους τοῖς * *Μιθρακίνοις* ἐπεμπευ. *Ἀρταξά-*
σδης δὲ *Ἀντωνίῳ* χωρὶς τῆς ἄλλης ἱππέας αὐτὴν τὴν
κατάφρακτον ἐξακισχιλίαν ἵππον ἐκτάξας ἐπέδειξεν, 30
ἥνικα εἰς τὴν *Μηδίαν* ἐνέβαλε σὺν αὐτῷ. ταύτης δὲ
τῆς ἱππέας οὐ *Μῆδοι* μόνοι καὶ *Ἀρμένιοι* ζηλωταί

γερόνασιν, ἀλλὰ καὶ Ἀλβανοί· καὶ γὰρ ἐκεῖνοι κατα-
φράκτοις χρῶνται.

Τοῦ δὲ πλούτου καὶ τῆς δυνάμεως τῆς χώρας ση- 10
μεῖον οὐ μικρὸν ὅτι Πομπηίου Τιγράνη τῷ πατρὶ τῷ
5 Ἀρταξιάσδου τάλαντα ἐπιγράψαντος ἑξακισχίλια ἄρ-
γυρίου, διένειμεν αὐτίκα ταῖς δυνάμεσι τῶν Ῥωμαίων,
στρατιώτῃ μὲν κατ' ἄνδρα πεντήκοντα δραχμὰς ἑκα-
τοντάρχῃ δὲ χιλίας ἑπάρχῃ δὲ καὶ χιλιάρχῃ τάλαντον.

Μέγεθος δὲ τῆς χώρας Θεοφάνης ἀποδίδωσιν εὐ- 11
10 ρος μὲν σχοίνων ἑκατὸν μῆκος δὲ διπλάσιον, τιθεὶς τὴν
σχοῖνον τετταράκοντα σταδίων· πρὸς ὑπερβολὴν δ'
εἰρηκεν· ἐγγυτέρω δ' ἐστὶ τῆς ἀληθείας μῆκος μὲν θέ-
σθαι τὸ ὑπ' ἐκείνου λεχθὲν [εὖρος], εὖρος δὲ τὸ ἥμισυ
ἢ μικρῷ πλεῖον. ἢ μὲν δὴ φύσις τῆς Ἀρμενίας καὶ δύ-
15 ναμὶς τοιαύτη.

Ἀρχαιολογία δὲ τίς ἐστὶ περὶ τοῦ ἔθνους τοῦδε 12
τοιαύτη· Ἀρμενος ἐξ Ἀρμενίου πόλεως Θετταλικῆς,
ἢ κεῖται μεταξὺ Φερῶν καὶ Λαρίσης ἐπὶ τῇ Βοίβῃ, κα-
θάπερ εἰρηται, συνεστράτευσεν Ἰάσου εἰς τὴν Ἀρμε-
20 νίαν· τούτου φασὶν ἐπώνυμον τὴν Ἀρμενίαν οἱ περὶ
Κυρσίλον τὸν Φαρσάλιον καὶ Μήδιον τὸν Λαρισαῖον,
ἄνδρες συνεστρατευκότες Ἀλεξάνδρῳ· τῶν δὲ μετὰ
τοῦ Ἀρμένου τοὺς μὲν τὴν Ἀκισσηνὴν οἰκῆσαι τὴν
ὑπὸ τοῖς Σωφηνοῖς πρότερον οὖσαν, τοὺς δὲ ἐν τῇ Συ-
25 σπιδίτιδι ἕως τῆς Καλαχηνῆς καὶ τῆς Ἀδιαβηνῆς ἕξω
τῶν Ἀρμενικῶν ὄρων. καὶ τὴν ἐσθῆτα δὲ τὴν Ἀρμε-
νιακὴν Θετταλικὴν φασιν, οἶον τοὺς βαθεῖς χιτῶνας
οὓς καλοῦσιν Θετταλικοὺς ἐν ταῖς τραγῳδίαις, καὶ ζων-
νύουσι περὶ τὰ στήθη καὶ ἐφαπτίδας, ὥς καὶ τῶν τρα-
30 γῳδῶν μιμησαμένων τοὺς Θετταλοὺς· ἔδει μὲν γὰρ

αὐτοῖς ἐπιθέτου κόσμου τοιούτου τινός, οἱ δὲ Θετταλοὶ
 μάλιστα βαθυστολοῦντες, ὥς εἰκός, διὰ τὸ πάντων εἶ-
 ναι Ἑλλήνων βορειοτάτους καὶ ψυχροτάτους νέμεσθαι
 τόπους ἐπιτηδαιοτάτην παρέσχοντο μίμησιν τῇ τῶν
 ὑποκριτῶν διασκευῇ ἐν τοῖς ἀναπλάσμασιν· καὶ τὸν 5
 C.531 τῆς Ἰππικῆς ξηλὸν φασιν εἶναι Θετταλικὸν καὶ τούτοις
 ὁμοίως καὶ Μήδοις. τὴν δὲ Ἰάσονος στρατείαν καὶ τὰ
 Ἰασόνια μαρτυρεῖ, ὃν τινα οἱ δυνάσται κατεσκεύασαν
 παραπλησίως ὥσπερ τὸν ἐν Ἀβδήροις νεῶν τοῦ Ἰάσο-
 νος Παρμενίων.

10

13. Τὸν δὲ Ἀράξην κληθῆναι νομίζουσι κατὰ τὴν
 ὁμοιότητα τὴν πρὸς τὸν Πηνειὸν ὑπὸ τῶν περὶ τὸν
 Ἀρμενον ὁμωνύμως ἐκείνῳ· καλεῖσθαι γὰρ Ἀράξην
 κακεῖνον διὰ τὸ ἀπαράξει τὴν Ὅσσαν ἀπὸ τοῦ Ὀλύμ-
 που ρήξαντα τὰ Τέμπη· καὶ τὸν ἐν Ἀρμενίᾳ δὲ ἀπὸ 15
 τῶν ὄρων καταβάντα πλατύνεσθαι φασὶ τὸ παλαιόν,
 καὶ πελαγίζειν ἐν τοῖς ὑποκειμένοις πεδίοις οὐκ ἔχοντα
 διεξοδον, Ἰάσονα δὲ μιμησάμενον τὰ Τέμπη ποιῆσαι
 τὴν διασφάγα, δι' ἧς καταράττει νυνὶ τὸ ὕδωρ εἰς τὴν
 Κασπίαν θάλατταν· ἐκ δὲ τούτου γυμνωθῆναι τὸ 20
 Ἀράξηνδον πεδίον, δι' οὗ τυγχάνει ῥέων ἐπὶ τὸν κα-
 ταράκτην ὁ ποταμός. οὗτος μὲν οὖν ὁ λόγος περὶ τοῦ
 Ἀράξου ποταμοῦ λεγόμενος ἔχει τι πιθανόν, ὃ δὲ Ἡρο-
 δότειος οὐ πάνυ· φησὶ γὰρ ἐκ Ματινηῶν αὐτὸν ῥέον-
 τα εἰς τετταράκοντα ποταμοὺς σχίζεσθαι, μερίζειν δὲ 25
 Σκύθας καὶ Βακτριανούς· καὶ Καλλισθένης δὲ ἡκο-
 λούθησεν αὐτῷ.

14. Λέγονται δὲ καὶ τῶν Αἰνιάνων τινὲς οἱ μὲν τὴν
 Οὐιτίαν οἰκῆσαι οἱ δ' ὑπερθε τῶν Ἀρμενίων ὑπὲρ
 τὸν Ἄβον καὶ τὸν Νίβαρον (μέρη δ' ἐστὶ τοῦ Ταύρου 30
 ταῦτα), ὃν ὁ Ἄβος ἐγγύς ἐστι τῆς ὁδοῦ τῆς εἰς Ἐκβάτα-
 να φερούσης παρὰ τὸν τῆς Βάριδος νεῶν. φασὶ δὲ καὶ

Θρακῶν τινας, τοὺς προσαγορευομένους Σαραπάρας οἷον κεφαλοτόμους, οἰκῆσαι ὑπὲρ τῆς Ἀρμενίας πλησίον Γουρανίων καὶ Μήδων, θηριώδεις ἀνθρώπους καὶ ἀπειθεῖς ὀρεινοὺς περισκυθιστάς τε καὶ ἀποκε-
 5 φαλιστάς· τοῦτο γὰρ δηλοῦσιν οἱ Σαραπάραι. εἰρηται δὲ καὶ τὰ περὶ τῆς Μηδείας ἐν τοῖς Μηδικοῖς· ὥστ' ἐκ πάντων τούτων εἰκάξουσι καὶ τοὺς Μήδους καὶ Ἀρμενίους συγγενεῖς πως τοῖς Θετταλοῖς εἶναι καὶ τοῖς ἀπὸ Ἰάσονος καὶ Μηδείας.

- 10 Ὁ μὲν δὴ παλαιὸς λόγος οὗτος, ὁ δὲ τούτου νεώ- 15
 τερος καὶ κατὰ Πέρσας εἰς τὸ ἐφεξῆς μέχρι εἰς ἡμᾶς ὡς ἐν κεφαλαίῳ πρόποι ἂν μέχρι τοσούτου λεχθεὶς, ὅτι κατεῖχον τὴν Ἀρμενίαν Πέρσαι καὶ Μακεδόνες, μετὰ ταῦτα οἱ τὴν Συρίαν ἔχοντες καὶ τὴν Μηδίαν· τελευ-
 15 ταῖος δ' ὑπῆρξεν Ὀρόντης ἀπόγονος Ὑδάρνου τῶν ἐπὶ Περσῶν ἐνός· εἶθ' ὑπὸ τῶν Ἀντιόχου τοῦ μεγάλου στρατηγῶν τοῦ πρὸς Ῥωμαίους πολεμήσαντος διη-
 20 ρέθη δίχα, Ἀρταξίου τε καὶ Ζαριάδριος· καὶ ἦρχον οὗτοι τοῦ βασιλέως ἐπιτρέψαντος· ἡττηθέντος δ' ἐκεί-
 20 νου προσθέμενοι Ῥωμαίοις καθ' αὐτοὺς ἐτάττοντο βασιλεῖς προσαγορευθέντες. τοῦ μὲν οὖν Ἀρταξίου 532
 Τιγράνης ἦν ἀπόγονος καὶ εἶχε τὴν ἰδίως λεγομένην Ἀρμενίαν (αὕτη δ' ἦν προσεχὴς τῇ τε Μηδίᾳ καὶ Ἀλ-
 βανοῖς καὶ Ἰβηρσι μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς ἐπὶ τῷ Εὐ-
 25 ξείνῳ Καππαδοκίας), τοῦ δὲ Ζαριάδριος ὁ Σωφηνὸς Ἀρτάνης ἔχων τὰ νότια μέρη καὶ τούτων τὰ πρὸς δύ-
 σιν μᾶλλον. κατελύθη δ' οὗτος ὑπὸ τοῦ Τιγράνου, καὶ πάντων κατέστη κύριος ἐκεῖνος. τύχαις δ' ἐχρή-
 30 σατο ποικίλαις· κατ' ἀρχὰς μὲν γὰρ ὠμήρευσσε πα-
 ρὰ Πάρθοις, ἔπειτα δι' ἐκείνων ἔτυχε καθόδου, λα-
 βόντων μισθὸν ἑβδομήκοντα ἀλῶνας τῆς Ἀρμενίας·
 αὐξηθεὶς δὲ καὶ ταῦτα ἀπέλαβε τὰ χωρία καὶ τὴν ἐκεί-

νων ἐπόρθησε τήν τε περὶ Νίνον καὶ τήν περὶ Ἀρβηλα ὑπηκόους δ' ἔσχε καὶ τὸν Ἀτροπατηνὸν καὶ τὸν Γορδυναῖον, μεθ' ὧν καὶ τήν λοιπὴν Μεσοποταμίαν, ἔτι δὲ τήν Συρίαν αὐτὴν καὶ Φοινίκην διαβάς τὸν Εὐφράτην ἀνὰ κράτος εἴλεν. ἐπὶ τοσοῦτον δ' ἑξαρθεῖς 5 καὶ πόλιν ἔκτισε πλησίον τῆς * Ἰβηρίας μεταξὺ ταύτης τε καὶ τοῦ κατὰ τὸν Εὐφράτην Ζεύγματος, ἣν ὠνόμασε Τυγρανόκερτα, ἐκ δώδεκα ἐρημωθεῖσων ὑπ' αὐτοῦ πόλεων Ἑλληνίδων ἀνθρώπους συναγαγών. ἔφθη δ' ἐπελθὼν Λεύκολλος ὁ τῷ Μιθριδάτῃ πολεμήσας 10 καὶ τοὺς μὲν οἰκήτορας εἰς τὴν οἰκίαν ἐκάστου ἀπέλυσε, τὸ δὲ κτίσμα ἡμιτελὲς ἔτι ὃν κατέσπασε προσβαλὼν καὶ μικρὰν κώμην κατέλιπεν, ἐξήλασε δὲ καὶ τῆς Συρίας αὐτὸν καὶ τῆς Φοινίκης. διαδεξάμενος δ' Ἀρταξιάδης ἐκείνους τέως μὲν ἡυτὺνχει φίλος ὧν Ῥω- 15 μαίοις, Ἀντώνιον δὲ προδιδούς Παρθυαίοις ἐν τῷ πρὸς αὐτοὺς πολέμῳ δίκας ἔτισεν· ἀναχθεῖς γὰρ εἰς Ἀλεξάνδρειαν ὑπ' αὐτοῦ, δέσμιος πομπευθεὶς διὰ τῆς πόλεως τέως μὲν ἐφρουρεῖτο, ἔπειτ' ἀνηρέθη συνάπτουτος τοῦ Ἀκτιακοῦ πολέμου. μετ' ἐκείνους δὲ πλείους 20 ἐβασίλευσαν ὑπὸ Καίσαρι καὶ Ῥωμαίοις ὄντες· καὶ νῦν ἔτι συνέχεται τὸν αὐτὸν τρόπον.

- 16 Ἄπαντα μὲν οὖν τὰ τῶν Περσῶν ἱερὰ καὶ Μῆδοι καὶ Ἀρμένιοι τετιμήκασιν, τὰ δὲ τῆς Ἀναττιδος διαφερόντως Ἀρμένιοι, ἐν τε ἄλλοις ἰδρυσάμενοι τόποις 25 καὶ δὴ καὶ ἐν τῇ Ἀκιλισηνῇ. ἀνατιθέασιν δ' ἐνταῦθα δούλους καὶ δούλας· καὶ τοῦτο μὲν οὐ θαυμαστόν, ἀλλὰ καὶ θυγατέρας οἱ ἐπιφανέστατοι τοῦ ἔθνους ἀνιερουσί παρθένους, αἷς νόμος ἐστὶ καταπορνευθεῖσαις πολὺν χρόνον παρὰ τῇ θεῷ μετὰ ταῦτα δίδοσθαι πρὸς 30 γάμον, οὐκ ἀπαξιούντος τῇ τοιαύτῃ συνοικεῖν οὐδε-
C.533νός. τοιοῦτον δέ τι καὶ Ἡρόδοτος λέγει τὸ περὶ τὰς

Λυδάς· πορνεύειν γὰρ ἀπάσας. οὕτω δὲ φιλοφρόνως
 χρῶνται τοῖς ἐρασταῖς ὥστε καὶ ξενίαν παρέχουσι καὶ
 δῶρα ἀντιδιδόασιν πλείω πολλάκις ἢ λαμβάνουσιν, ἅτ'
 ἐξ εὐπόρων οἰκῶν ἐπιχορηγοῦμεναι· δέχονται δὲ οὐ
 5 τοὺς τυχόντας τῶν ξένων, ἀλλὰ μάλιστα τοὺς ἀπὸ
 ἴσου ἀξιώματος.

— IB —

- 10 καὶ ἡ Καππαδοκία δ' ἐστὶ πολυμερὴς τε **1**
 καὶ συχνὰς δεδεγμένη μεταβολάς. οἱ δ' οὖν ὁμόγλωτ-
 τοι μάλιστά εἰσιν οἱ ἀφοριζόμενοι πρὸς νότον μὲν τῷ
 Κιλικίῳ λεγομένῳ Ταύρῳ, πρὸς ἑὸν δὲ τῇ Ἀρμενίᾳ καὶ
 τῇ Κολχίδι καὶ τοῖς μεταξὺ ἑτερογλώττοις ἔθνεσιν, πρὸς
 15 ἄρκτον δὲ τῷ Εὐξείνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἄλφους,
 πρὸς δύσιν δὲ τῷ τε τῶν Παφλαγόνων ἔθνει καὶ Γα-
 λατῶν τῶν τὴν Φρυγίαν ἐποικησάντων μέχρι Ἀνκαό-
 νων καὶ Κιλικίων τῶν τὴν τραχεῖαν Κιλικίαν νεμο-
 μένων.
- 20 Καὶ αὐτῶν δὲ τῶν ὁμογλώττων οἱ παλαιοὶ τοὺς 2
 Κατάοντας καθ' αὐτοὺς ἔταττον, ἀντιδιαιροῦντες τοῖς
 Καππάδοξιν ὡς ἑτεροεθνέσιν, καὶ ἐν τῇ διαριθμήσει
 τῶν ἐθνῶν μετὰ τὴν Καππαδοκίαν ἐτίθεσαν τὴν Κα-
 ταονίαν, εἰτα τὸν Εὐφράτην καὶ τὰ πέραν ἔθνη, ὥστε
 25 καὶ τὴν Μελιτηνὴν ὑπὸ τῇ Καταονίᾳ τάττειν, ἣ με-
 ταξὺ κεῖται ταύτης τε καὶ τοῦ Εὐφράτου συνάπτουσα
 τῇ Κομμαγενῇ, μέρος τε τῆς Καππαδοκίας ἐστὶ δέ-
 κατον κατὰ τὴν εἰς δέκα στρατηγίας διαίρεσιν τῆς χώ-
 ρας. οὕτω γὰρ δὴ οἱ καθ' ἡμᾶς βασιλεῖς οἱ πρὸ Ἀρ-
 30 χελάου διατεταγμένην εἶχον τὴν ἡγεμονίαν τῆς Καπ-
 παδοκίας· δέκατον δ' ἐστὶ μέρος καὶ ἡ Καταονία. καθ'
 ἡμᾶς δὲ εἶχε στρατηγὸν ἑκατέρω ἰδιον· οὔτε δ' ἐκ τῆς

διαλέκτου διαφορᾶς τινος ἐν τούτοις πρὸς τοὺς ἄλλους Καππάδοκας ἐμφαινομένης οὔτε ἐκ τῶν ἄλλων ἐθνῶν, θαναμαστὸν πῶς ἡφάνισται τελέως τὰ σημεῖα τῆς ἄλλοεθνίας. ἦσαν δ' οὖν διωρισμένοι, προσεκτήσατο δ' αὐτοὺς Ἀριαράθης ὁ πρῶτος προσαγορευθεὶς 5 Καππαδόκων βασιλεύς.

- 3 "Ἐστι δ' ὥσπερ χερρονήσον μεγάλης ἰσθμὸς οὗτος, σφιγγόμενος θαλάτταις δυεὶ τῇ τε τοῦ Ἰσσηκοῦ κόλπου μέχρι τῆς τραχείας Κιλικίας καὶ τῇ τοῦ Εὐξείνου μεταξὺ Σινώπης τε καὶ τῆς τῶν Τιβαρηνῶν παρα- 10 λίας· ἐντὸς δὲ τοῦ ἰσθμοῦ λέγομεν χερρόνησον τὴν προσεσπέριον τοῖς Καππάδοξιν ἄπασαν, ἣν Ἡρόδοτος μὲν ἐντὸς Ἄλνους καλεῖ· αὕτη γὰρ ἔστιν ἥς ἤρξεν ἀπάσης Κροῖσος· λέγει δ' αὐτὸν ἐκεῖνος τύραννον ἐθνέων τῶν ἐντὸς Ἄλνους ποταμοῦ. οἱ δὲ νῦν τὴν ἐντὸς 15 τοῦ Ταύρου καλοῦσιν Ἀσίαν, ὁμωνύμως τῇ ὅλῃ ἡπείρῳ ταύτην Ἀσίαν προσαγορεύοντες. περιέχεται δ' ἐν αὐτῇ πρῶτα μὲν ἔθνη τὰ ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς Παφλαγόνες τε καὶ Φρύγες καὶ Λυκάονες, ἔπειτα Βιθυνοὶ καὶ Μυσοὶ καὶ ἡ Ἐπικτήτος, ἔτι δὲ Τρῳᾶς καὶ Ἑλλησ- 20 ποντία, μετὰ δὲ τούτους ἐπὶ θαλάττῃ μὲν Ἑλλήνων οἷ τε Αἰολεῖς καὶ Ἴωνες τῶν δ' ἄλλων Κᾶρες τε καὶ Λύκιοι, ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ Λυδοί.

- 4 Περὶ μὲν οὖν τῶν ἄλλων ἐροῦμεν ὕστερον. τὴν δὲ Καππαδοκίαν εἰς δύο σατραπείας μερισθεῖσαν ὑπὸ 25 τῶν Περσῶν παραλαβόντες Μακεδόνες περιεῖδον τὰ μὲν ἐκόντες τὰ δ' ἄκοντες εἰς βασιλείας ἀντὶ σατραπειῶν περιστάσαν· ὧν τὴν μὲν ἰδίως Καππαδοκίαν ὠνόμασαν καὶ πρὸς τῷ Ταύρῳ καὶ νῇ Δία μεγάλην Καππαδοκίαν, τὴν δὲ Πόντον, οἱ δὲ τὴν πρὸς τῷ 30

Πόντῳ Καππαδοκίαν. τῆς δὲ μεγάλης Καππαδοκίας
 νῦν μὲν οὐκ ἴσμεν πῶς τὴν διάταξιν· τελευτήσαντος
 γὰρ τὸν βίον Ἀρχελαίου τοῦ βασιλεύσαντος, ἔγνω Καί-
 σάρ τε καὶ ἡ σύγκλητος ἐπαρχίαν εἶναι Ῥωμαίων αὐ-
 5 τήν. ἐπ' ἐκείνου δὲ καὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ βασιλέων εἰς
 δέκα στρατηγίας διηρημένης τῆς χώρας, πέντε μὲν
 ἐξητάζοντο αἱ πρὸς τῷ Ταύρῳ, Μελιτηνὴ Καταονία
 Κιλικία Τυανῆτις Γαρσαυρῆτις, πέντε δὲ λοιπαὶ Λασι-
 ανσηνὴ Σαργαραυσηνὴ Σαρακενὴ Χαμανηνὴ Μορι-
 10 μηνή. προσεγένετο δ' ὕστερον παρὰ Ῥωμαίων ἐκ τῆς
 Κιλικίας τοῖς πρὸ Ἀρχελαίου καὶ ἐνδεκάτῃ στρατηγία,
 ἡ περὶ Καστάβαλά τε καὶ Κύβιστρα μέχρι τῆς Ἀντιπά-C.535
 τρου τοῦ ληστοῦ Δέρβης, τῷ δὲ Ἀρχελάῳ καὶ ἡ τρα-
 χεῖα περὶ Ἐλαιοῦσαν Κιλικία καὶ πᾶσα ἡ τὰ πειρατή-
 15 ρια συστημαμένη.

Ἔστι δ' ἡ μὲν Μελιτηνὴ παραπλησίᾳ τῇ Κομμα- 2
 γηνῇ· πᾶσα γάρ ἐστι τοῖς ἡμέροις δένδροις κατάφυ-
 τος, μόνῃ τῆς ἄλλης Καππαδοκίας, ὥστε καὶ ἔλαιον
 φέρειν καὶ τὸν Μοναρίτην οἶνον τοῖς Ἑλληνικοῖς ἐνά-
 20 μίλλον· ἀντίκειται δὲ τῇ Σωφηνῇ, μέσον ἔχουσα τὸν
 Εὐφράτην ποταμὸν καὶ αὐτὴ [καὶ] ἡ Κομμαγηνὴ ὁμο-
 ρος οὖσα. ἔστι δὲ φρούριον ἀξιόλογον τῶν Καππαδό-
 κων ἐν τῇ περαίᾳ Τόμισα· τοῦτο δ' ἐπράθη μὲν τῷ
 Σωφηνῷ ταλάντων ἑκατόν, ὕστερον δὲ ἐδωρήσατο
 25 Λεύκολλος τῷ Καππαδόκι συστρατεύσαντι ἀριστεῖον
 κατὰ τὸν πρὸς Μιθριδάτην πόλεμον.

Ἡ δὲ Καταονία πλατὺ καὶ κοῖλόν ἐστι πεδίον πάμ- 2
 φορον πλὴν τῶν αἰεθλαῶν. περὶκειται δ' ὄρη ἄλλα τε
 καὶ Ἀμανὸς ἐκ τοῦ πρὸς νότον μέρους ἀπόσπασμα ὃν
 30 τοῦ Κιλικίου Ταύρου, καὶ ὁ Ἀντίταυρος εἰς τὰναντία
 ἀπερρωγός. ὁ μὲν γὰρ Ἀμανὸς ἐπὶ τὴν Κιλικίαν καὶ
 τὴν Συριακὴν ἐκτείνεται θάλατταν πρὸς τὴν ἐσπέραν

ἀπὸ τῆς Καταονίας καὶ τὸν κότον· τῇ δὲ τοιαύτῃ δια-
στάσει περικλείει τὸν Ἴσικὸν κόλπον ἅπαντα καὶ τὰ
μεταξὺ τῶν Κιλικῶν πεδία πρὸς τὸν Ταῦρον· ὁ δ'
Ἀντίταυρος ἐπὶ τὰς ἄρκτους ἐγκέκλιται καὶ μικρὸν ἐπι-
λαμβάνει τῶν ἀνατολῶν, εἴτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν τε- 5
λευτᾷ.

- 3 Ἐν δὲ τῷ Ἀντιταύρῳ τούτῳ βαθεῖς καὶ στενοί
εἰσιν αὐλῶνες, ἐν οἷς ὕδρυνται τὰ Κόμᾶνα καὶ τὸ τῆς
Ἐννοῦς ἱερὸν ἦν ἐκεῖνοι Μᾶ ὀνομάζουσι· πόλις δ'
ἐστὶν ἀξιόλογος, πλεῖστον μέντοι τὸ τῶν θεοφορήτων 10
πληθὺς καὶ τὸ τῶν ἱεροδούλων ἐν αὐτῇ. Κατάουες δέ
εἰσιν οἱ ἐνοικοῦντες, ἄλλως μὲν ὑπὸ τῷ βασιλεῖ τεταγ-
μένοι, τοῦ δὲ ἱερέως ὑπακούοντες τὸ πλεον· ὁ δὲ τοῦ
Θ' ἱεροῦ κύριός ἐστι καὶ τῶν ἱεροδούλων, οἳ κατὰ τὴν
ἡμετέραν ἐπιδημίαν πλείους ἦσαν τῶν ἑξακισχιλίων, 15
ἄνδρες ὁμοῦ γυναιξί. πρόσκειται δὲ τῷ ἱερῷ καὶ χώρα
πολλή, καρποῦται δ' ὁ ἱερεὺς τὴν πρόσοδον, καὶ
ἔστιν οὗτος δεύτερος κατὰ τιμὴν [ἐν] τῇ Καππαδοκίᾳ
μετὰ τὸν βασιλέα· ὥς δ' ἐπὶ τὸ πολὺ τοῦ αὐτοῦ γέ-
νους ἦσαν οἱ ἱερεῖς τοῖς βασιλεῦσι. τὰ δὲ ἱερὰ ταῦτα 20
δοκεῖ Ὀρέστης μετὰ τῆς ἀδελφῆς Ἰφιγενείας κομίσαι
δεῦρο ἀπὸ τῆς Ταυρικῆς Σκυθίας, τὰ τῆς Ταυροπό-
λου Ἀρτέμιδος, ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν πένθιμον κόμην
ἀποθέσθαι, ἀφ' ἧς καὶ τοῦνομα τῇ πόλει. διὰ μὲν οὖν
C.536 τῆς πόλεως ταύτης ὁ Σάρος ρεῖ ποταμός, καὶ διὰ τῶν 25
συναγκειῶν τοῦ Ταύρου διεκπεραιοῦται πρὸς τὰ τῶν
- 4 Κιλικῶν πεδία καὶ τὸ ὑποκείμενον πέλαγος. διὰ δὲ
τῆς Καταονίας ὁ Πύραμος, πλωτός, ἐκ μέσου τοῦ πε-
δίου τὰς πηγὰς ἔχων· ἔστι δὲ βόθρος ἀξιόλογος, δι'
οὗ καθορᾶν ἔστι τὸ ὕδωρ ὑποφερόμενον κρυπτῶς μέ- 30
χρι πολλοῦ διαστήματος ὑπὸ γῆς, εἴτ' ἀνατέλλει εἰς
τὴν ἐπιφάνειαν· τῷ δὲ καθιέντι ἀκόντιον ἄνωθεν εἰς

τὸν βόθρον ἢ βία τοῦ ὕδατος ἀντιπράττει τοσοῦτον
 ὥστε μόλις βαπτίζεσθαι· ἀπλέτω δὲ βάθει καὶ πλάτει
 πολὺς ἐνεχθεὶς ἐπειδὴν συνάψῃ τῷ Ταύρῳ, παράδο-
 ξον λαμβάνει τὴν συναγωγὴν· παράδοξος δὲ καὶ ἡ δια-
 5 κοπή τοῦ ὅρους ἐστὶ δι' ἧς ἄγεται τὸ ρεῖθρον· καθάπερ
 γὰρ ἐν ταῖς ῥῆγμα λαβούσαις πέτραις καὶ σχισθείσαις
 δίχα τὰς κατὰ τὴν ἑτέραν ἐξοχὰς ὁμολόγους εἶναι
 συμβαίνει ταῖς κατὰ τὴν ἑτέραν εἰσοχαῖς ὥστε καὶ συν-
 αρμοσθῆναι δύνασθαι, οὕτως εἶδομεν καὶ τὰς ὑπερ-
 10 κειμένας τοῦ ποταμοῦ πέτρας ἐκατέρωθεν σχεδὸν τι
 μέχρη τῶν ἀκρωρειῶν ἀνατεινούσας ἐν διαστάσει δυ-
 εῖν ἢ τριῶν πλέθρων ἀντικείμενα ἐχούσας τὰ κοῖλα
 ταῖς ἐξοχαῖς· τὸ δὲ ἕδαφος τὸ μεταξὺ πᾶν πέτρινον,
 βαθύ τι καὶ στενὸν τελέως, ἔχον διὰ μέσου ῥῆγμα ὥστε
 15 καὶ κύναι καὶ λαγὼ διάλλεσθαι. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ρεῖ-
 θρον τοῦ ποταμοῦ ἄχρη χεῖλους πληῆρες, ὅχετ' ἢ πλατεῖ
 προσεικός, διὰ δὲ τὴν σκολιότητα καὶ τὴν ἐκ τοσοῦ-
 του συναγωγὴν καὶ τὸ τῆς φάραγγος βάθος εὐθὺς
 τοῖς πόρρωθεν προσιοῦσιν ὁ ψόφος βροντῇ προσπί-
 20 πτει παραπλήσιος· διεκβαίνων δὲ τὰ ὄρη τοσαύτην κα-
 τάγει χοῦν ἐπὶ θάλατταν, τὴν μὲν ἐκ τῆς Καταονίας
 τὴν δὲ ἐκ τῶν Κιλίκων πεδίων, ὥστε ἐπ' αὐτῷ καὶ
 χρησμὸς ἐκπεπτωκὸς φέρεται τοιοῦτος „ἔσσειται ἐς-
 „σομένοις, ὅτε Πύραμος ἀργυροδίνης ἡϊόνα προχέων
 25 „λερὴν ἐς Κύπρον ἵκηται.“ παραπλήσιον γάρ τι καὶ κατὰ
 συμβαίνει καὶ ἐν Αἰγύπτῳ, τοῦ Νείλου προσεξηπει-
 ροῦντος αἰετὶ τὴν θάλατταν τῇ προσχώσει· καθὼ καὶ
 Ἡρόδοτος μὲν δῶρον τοῦ ποταμοῦ τὴν Αἰγυπτον εἶ-
 πεν, ὁ ποιητὴς δὲ τὴν Φάρον πελαγίαν ὑπάρχει πρό-
 30 τερον οὐχ ὡς νυνὶ πρόσγειον οὔσαν τῇ Αἰγύπτῳ.

C.537

5

Πόλιν δ' οὔτε τὸ τῶν Καταόνων ἔχει πεδίον οὔθ' ἢ Μελιτηνή, φρούρια δ' ἐρυμνὰ ἐπὶ τῶν ὄρων τὰ τε Ἀξάμορα καὶ τὸ Δάσταρkon, ὃ περιρρεῖται τῷ Καρμάλα ποταμῷ. ἔχει δὲ καὶ ἱερὸν τὸ τοῦ Κατάουος Ἀπόλλωνος καθ' ὅλην τιμώμενον τὴν Καππαδοκίαν, 5 ποιησαμένων ἀφιδρύματα ἀπ' αὐτοῦ. οὐδὲ αἱ ἄλλαι στρατηγίαι πόλεις ἔχουσι πλὴν δυεῖν· τῶν δὲ λοιπῶν στρατηγιῶν ἐν μὲν τῇ Σαργαραυσηνῇ πολίχμιόν ἐστιν Ἡρκα καὶ ποταμὸς Καρμάλας, ὃς καὶ αὐτὸς εἰς τὴν Κιλικίαν ἐκδίδωσιν· ἐν δὲ ταῖς ἄλλαις ὃ τε Ἄργος ἐρ- 10 μα ὑψηλὸν πρὸς τῷ Ταύρῳ, καὶ τὰ Νῶρα δ' νῦν καλεῖται Νηροασσός, ἐν ᾧ Εὐμένης πολιορκούμενος ἀντέσχε πολὺν χρόνον· καθ' ἡμᾶς δὲ Σισίνου ὑπῆρξε χρηματοφυλάκιον τοῦ ἐπιθεμένου τῇ Καππαδόκῳ ἀρχῇ. τούτου δ' ἦν καὶ τὰ Κάδηναι, βασίλειον καὶ πό- 15 λεως κατασκευὴν ἔχον· ἔστι δὲ καὶ ἐπὶ τῶν ὄρων τῶν Λυκαονικῶν τὰ Γαρσαύιρα καμύπολις· λέγεται δ' ὑπάρχει ποτὲ καὶ αὕτη μητρόπολις τῆς χώρας. ἐν δὲ τῇ Μοριμηνῇ τὸ ἱερὸν τοῦ ἐν' Ὀηνάσοις Διὸς, ἱεροδούλων κατοικίαν ἔχον τρισχίλιων σχεδόν τι καὶ χώραν 20 ἱερὰν εὐκαρπον, παρέχουσιν πρόσδοτον ἐνιαύσιον τάλαντων πεντεκαίδεκα τῷ ἱερῷ· καὶ οὗτος δ' ἐστὶ διὰ βίου, καθάπερ καὶ ὁ ἐν Κομάνοις, καὶ δευτερεύει κα- 6 τὰ τιμὴν μετ' ἐκείνου. τρίτη δ' ἐστὶν ἱερωσύνη Διὸς Ἀσβαμαίου λειπομένη ταύτης, ἀξιόλογος δ' ὅμως. ἐν- 25 ταῦθα δ' ἐστὶ λάκκος ἀλμυροῦ ὕδατος, ἀξιολόγου λίμνης ἔχων περίμετρον, ὃφρῦσι κλειόμενος ὑψηλαῖς τε καὶ ὀρθταῖς ὥστ' ἔχειν κατάβασιν κλιμακώδη· τὸ δ' ὕδωρ οὔτ' αὖξισθαί φασιν οὔτ' ἀπόρρυσιν ἔχειν οὐ- 30 δαμοῦ φανεράν.

7 Δύο δὲ μόναι στρατηγίαι πόλεις ἔχουσιν, ἡ μὲν Τυαντίτις τὰ Τύανα ὑποπεπτωκυῖαν τῷ Ταύρῳ τῷ κα-

τὰ τὰς Κιλικίας πύλας, καθ' ἃς εὐπετέσται καὶ κοι-
 νόταται πᾶσιν εἰσιν αἱ εἰς τὴν Κιλικίαν καὶ τὴν Συ-
 ρίαν ὑπερβολαί· καλεῖται δὲ Εὐσέβεια ἡ πρὸς τῷ
 Ταύρῳ..... ἀγαθὴ δὲ καὶ πεδιάς ἡ πλείστη. τὰ δὲ
 5 Τύανα ἐπικεῖται χώματι Σεμιράμιδος τετειχισμένῳ
 καλῶς. οὐ πολὺ δ' ἄπωθεν ταύτης ἐστὶ τὰ τε Καστά-
 βαλα καὶ τὰ Κύβιστρα, ἔτι μᾶλλον τῷ ὄρει πλησιά-
 ζοντα πολίσματα· ὧν ἐν τοῖς Κασταβάλοις ἐστὶ τὸ τῆς
 Περσείας Ἀρτέμιδος ἱερὸν, ὅπου φασὶ τὰς ἱερείας γυ-
 10 μνοῖς τοῖς ποσὶ δι' ἀνθρακιᾶς βαδίζειν ἀπαθεῖς· κἀν-
 ταῦθα δὲ τινες τὴν αὐτὴν θρυλοῦσιν ἱστορίαν τὴν
 περὶ τοῦ Ὁρέστου καὶ τῆς Ταυροπόλου, Περσείαν
 κεκληῖσθαι φάσκοντες διὰ τὸ πέραθεν κοιμισθῆναι. ἐν
 μὲν δὴ τῇ Τυανίτιδι στρατηγία τῶν λεχθεῖσων δέκα
 15 ἐστὶ πόλισμα τὰ Τύανα (τὰς δ' ἐπικτήτους οὐ συνα-
 ριθμῶ ταύταις, τὰ Καστάβαλα καὶ τὰ Κύβιστρα καὶ
 τὰ ἐν τῇ τραχείᾳ Κιλικίᾳ, ἐν ἣ τὴν Ἐλαιουῦσσαν νησίον
 εὐκαρπον συνέκτισεν Ἀρχέλαος ἀξιολόγως, καὶ τὸ
 πλεόν ἐνταῦθα διέτριβεν), ἐν δὲ τῇ Κιλικίᾳ καλου-
 20 μένη τὰ Μάξακα ἡ μητρόπολις τοῦ ἔθνους· καλεῖται 0.538
 δ' Εὐσέβεια καὶ αὕτη ἐπικλησιν ἡ πρὸς τῷ Ἀργαίῳ·
 κεῖται γὰρ ὑπὸ τῷ Ἀργαίῳ ὄρει πάντων ὑψηλοτάτῳ
 καὶ ἀνέκλειπτον χιόνι τὴν ἀκρώρειαν ἔχοντι, ἀφ' ἧς
 φασιν οἱ ἀναβαίνοντες (οὗτοι δ' εἰσὶν ὀλίγοι) κατο-
 25 πτεύεσθαι ταῖς αἰθρῇσις ἄμφω τὰ πελάγη τό τε Πον-
 τικὸν καὶ τὸ Ἰστικόν. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἀφυῆ πρὸς συν-
 οικισμόν ἔχει πόλεως· ἀνυδρός τε γὰρ ἐστὶ καὶ ἀνώ-
 χυρος διὰ τὴν ὀλιγωρίαν τῶν ἡγεμόνων καὶ ἀτειχιστος,
 τάχα δὲ καὶ ἐπίτηδες, ἵνα μὴ ὡς ἐρύματι πεποιθότες
 30 τῷ τείχει σφόδρα ληστεύοιεν πεδίον οἰκοῦντες λόφους
 ὑπερδεξίους ἔχον* καὶ ἐμβλεῖς. καὶ τὰ κύκλῳ δὲ χω-
 ρία ἔχει τελέως ἄφορα καὶ ἀγεώργητα καίπερ ὄντα πε-

δινά, ἀλλ' ἔστιν ἀμυώδη καὶ ὑπόπετρα. μικρὸν δ' ἔτι προϋῶσι καὶ πυρίληπτα πεδία καὶ μεστὰ βόθρων πυρὸς ἐπὶ σταδίους πολλοὺς ὥστε πόρρωθεν ἢ κομιδὴ τῶν ἐπιτηδείων, καὶ τὸ δοκοῦν δὲ πλεονέκτημα παρακείμενον ἔχει κίνδυνον· ἀξύλου γὰρ ὑπαρχούσης σχε- 5 δόν τι τῆς συμπάσης Καππαδοκίας ὁ Ἀργαῖος ἔχει περικείμενον δρυμὸν ὥστε ἐγγύθεν ὁ ξυλισμὸς πάρεστιν, ἀλλ' οἱ ὑποκείμενοι τῷ δρυμῷ τόποι καὶ αὐτοὶ πολλαχοῦ πυρὰ ἔχουσιν, ἅμα δὲ καὶ ὕψυδροί εἰσι ψυχρῷ ὕδατι, οὔτε τοῦ πυρὸς οὔτε τοῦ ὕδατος εἰς τὴν 10 ἐπιφάνειαν ἐκκύπτοντος, ὥστε καὶ ποιάζειν τὴν πλείστην· ἔστι δ' ὅπου καὶ ἐλῶδές ἐστι τὸ ἔδαφος καὶ νύκτωρ ἐξάπτονται φλόγες ἀπ' αὐτοῦ. οἱ μὲν οὖν ἔμπειροι φυλαττόμενοι τὸν ξυλισμὸν ποιοῦνται, τοῖς δὲ πολλοῖς κίνδυνός ἐστι, καὶ μάλιστα τοῖς κτήνεσιν ἐμ- 15 πίπτουσιν εἰς ἀδήλους βόθρους πυρὸς.

- 8 "Ἔστι δὲ καὶ ποταμὸς ἐν τῷ πεδίῳ τῷ πρὸ τῆς πόλεως Μέλας καλούμενος, ὅσον τετταράκοντα σταδίους διέχων τῆς πόλεως, ἐν ταπειντέρῳ τῆς πόλεως χωρίῳ τὰς πηγὰς ἔχων. ταύτῃ μὲν οὖν ἄχρηστος αὐτοῖς 20 ἔστιν οὐχ ὑπερδέξιον ἔχων τὸ ῥεῦμα, εἰς ἔλη δὲ καὶ λίμνας διαχεόμενος κακοῖ τὸν ἄερα τοῦ θέρους τὸν περὶ τὴν πόλιν, καὶ τὸ λατομεῖον δὲ ποιεῖ δύσχρηστον καίπερ εὐχρηστον ὄν· πλαταμῶνες γὰρ εἰσίν, ἀφ' ὧν τὴν λιθείαν ἔχειν ἄφθονον συμβαίνει τοῖς Μαζακηνοῖς 25 πρὸς τὰς οἰκοδομίας, καλυπτόμεναι δ' ὑπὸ τῶν ὑδάτων αἱ πλάκες ἀντιπράττουσι. καὶ ταῦτα δ' ἔστι τὰ ἔλη πανταχοῦ πυρίληπτα. Ἀριαράθης δ' ὁ βασιλεὺς τοῦ Μέλανος κατὰ τινα στενὰ ἔχοντος τὴν εἰς τὸν "Αλυν διέξοδον ἐμφράξας ταῦτα λίμνην πελαγίαν ἀπέ- 30 δειξε τὸ πλησίον πεδίου, ἐνταῦθα δὲ νησιδᾶς τινὰς ὥς τὰς Κυκλάδας ἀπολαβόμενος διατριβὰς ἐν αὐταῖς

ἐποιεῖτο μειριακιώδεις· ἐκραγὲν δ' ἀθρόως τὸ ἔμφραγ-0.539
μα ἐξέκλυσε πάλιν τὸ ὕδωρ, πληρωθεὶς δ' ὁ Ἄλυσ
τῆς τε τῶν Καππαδόκων πολλὴν παρέσυρε καὶ κατοικί-
ας καὶ φυτείας ἠφάνισε πολλὰς τῆς τε τῶν Γαλα-
5 τῶν τῶν τὴν Φρυγίαν ἐχόντων οὐκ ὀλίγην ἐλυμήνατο·
ἀντὶ δὲ τῆς βλάβης ἐπράξαντο ζημίαν αὐτὸν τάλαντα
τριακόσια Ῥωμαίοις ἐπιτρέψαντες τὴν κρίσιν. τὸ δ'
αὐτὸ συνέβη καὶ περὶ Ἡρπα· καὶ γὰρ ἐκεῖ τὸ τοῦ Καρ-
μάλα ρεῦμα ἐνέφραξεν, εἴτ' ἐκραγέντος τοῦ στομίου
10 καὶ τῶν Κιλικίων τινὰ χωρία τὰ περὶ Μαλλὸν διαφθεί-
ραντος τοῦ ὕδατος, δίκας ἔτισεν τοῖς ἀδικηθεῖσιν.

Ἀφνὲς δ' οὖν κατὰ πολλὰ τὸ τῶν Μαζακηνῶν χω- 9
ρίον ὃν πρὸς κατοικίαν μάλιστα οἱ βασιλεῖς ἐλῆσθαι
δοκοῦσιν, ὅτι τῆς χώρας ἀπάσης τόπος ἦν μεσαλίτατος
15 οὗτος τῶν ξύλα ἐχόντων ἅμα καὶ λίθον πρὸς τὰς οἰκο-
δομίας καὶ χόρτον, οὗ πλεῖστον ἐδέοντο κτηνοτρο-
φοῦντες· τρόπον γὰρ τινα στρατόπεδον ἦν αὐτοῖς ἡ
πόλις. τὴν δ' ἄλλην ἀσφάλειαν τὴν αὐτῶν τε καὶ σω-
μάτων καὶ τῶν χρημάτων εἶχον ἐν τοῖς φρουρίοις, ἃ
20 πολλὰ ὑπάρχει τὰ μὲν βασιλικά τὰ δὲ τῶν φίλων. ἀφέ-
στηκε δὲ τὰ Μάξακα τοῦ μὲν Πόντου περὶ ὀκτακοσίους
σταδίους πρὸς νότον, τοῦ δ' Εὐφράτου μικρὸν ἐλάτ-
τους ἢ διπλασίους, τῶν Κιλικίων δὲ πυλῶν ὁδὸν ἡμε-
ρῶν ἕξ καὶ τοῦ Κύρου στρατοπέδου διὰ Τυάνων· κατὰ
25 μέσσην δὲ τὴν ὁδὸν κεῖται τὰ Τύανα, διέχει δὲ Κυβίσ-
τρων τριακοσίους σταδίους. χρῶνται δὲ οἱ Μαζακη-
νοὶ τοῖς Χαρώνδα νόμοις, αἰρούμενοι καὶ νομοφδόν,
ὅς ἐστιν αὐτοῖς ἐξηγητὴς τῶν νόμων, καθάπερ οἱ πα-
ρὰ Ῥωμαίοις νομικοί. διέθηκε δὲ φάύλως αὐτοὺς Τι-
30 γράνης ὁ Ἀρμένιος, ἥνίκα τὴν Καππαδοκίαν κατέδρα-
μεν· ἅπαντας γὰρ ἀναστάτους ἐποίησεν εἰς τὴν Μεσο-
ποταμίαν, καὶ τὰ Τιγρὰνόμερτα ἐκ τούτων συνώκισε

τὸ πλέον· ὕστερον δ' ἐπανῆλθον οἱ δυνάμενοι μετὰ τὴν τῶν Τιγρανοκέρτων ἄλωσιν.

10 Μέγεθος δὲ τῆς χώρας κατὰ πλάτος μὲν τὸ ἀπὸ τοῦ Πόντου πρὸς τὸν Ταῦρον ὅσον χίλιοι καὶ ὀκτακόσιοι στάδιοι, μῆκος δὲ ἀπὸ τῆς Λυκαονίας καὶ Φρυγίας μέχρι Εὐφράτου πρὸς τὴν ἕω καὶ τὴν Ἀρμενίαν περὶ τρισχιλίους. ἀγαθὴ δὲ καρποῖς, μάλιστα δὲ σίτῳ καὶ βοσκήμασι παντοδαποῖς· νοτιωτέρα δ' οὕσα τοῦ Πόντου ψυχροτέρα ἐστίν· ἡ δὲ Βαγαδανία καίπερ πεδιάς οὕσα καὶ νοτιωτάτῃ πασῶν (ὑποπέπτωκε γὰρ 10 τῷ Ταύρῳ) μόλις τῶν καρπίμων τι φέρει δένδρων, ὀναγροβότος δ' ἐστὶ καὶ αὕτη καὶ ἡ πολλὴ τῆς ἄλλης, C.540 καὶ μάλιστα ἡ περὶ Γαρσαύιρα καὶ Λυκαονίαν καὶ Μοριμνηνὴν. ἐν δὲ τῇ Καππαδοκίᾳ γίνεται καὶ ἡ λεγομένη Σινωπικὴ μίλτος ἀρίστη τῶν πασῶν· ἐνάμιλλος δ' 15 ἐστὶν αὐτῇ καὶ ἡ Ἰβηρικὴ· ὠνομάσθη δὲ Σινωπικὴ διότι κατάγειν ἐκείσε εἰώθεσαν οἱ ἔμποροι πρὶν ἢ τὸ τῶν Ἐφεσίων ἐμπόριον μέχρι τῶν ἐνθάδε ἀνθρώπων διῆχθαι. λέγεται δὲ καὶ κρυστάλλου πλάκας καὶ ὀνυχίτου λίθου πλησίον τῆς τῶν Γαλατῶν ὑπὸ τῶν Ἀρ- 20 χελάου μεταλλευτῶν εὐρῆσθαι. ἦν δέ τις τόπος καὶ λίθου λευκοῦ τῷ ἐλέφαντι κατὰ τὴν χροάν ἐμφεροῦς ὥσπερ ἄκονας τινὰς οὐ μεγάλας ἐκφέρων, ἐξ ὧν τὰ λαβία τοῖς μαχαιρίοις κατεσκεύαζον· ἄλλος δὲ εἰς διόπτρας βώλους μεγάλας ἐκδιδούς, ὥστε καὶ ἕξω κομί- 25 ζεσθαι. ὄριον δ' ἐστὶ τοῦ Πόντου καὶ τῆς Καππαδοκίας ὄρεινὴ τις παράλληλος τῷ Ταύρῳ, τὴν ἀρχὴν ἔχουσα ἀπὸ τῶν ἐσπερίων ἄκρων τῆς Χαμμανηνῆς, ἐφ' ἧς ἰδρυταὶ φρούριον ἀπότομον Δασμένδα, μέχρι τῶν ἐωθινῶν τῆς Λασιανσηνῆς στρατηγλαί δ' εἰσὶ τῆς Καπ- 30 παδοκίας ἢ τε Χαμμανηνῆ καὶ ἡ Λασιανσηνῆ.

11 Συνέβη δέ, ἡνίκα πρῶτον Ῥωμαῖοι τὰ κατὰ τὴν

Ἀσίαν διώκουν νικήσαντες Ἀντίοχον, καὶ φιλίας καὶ
 συμμαχίας ἐποιοῦντο πρὸς τε τὰ ἔθνη καὶ τοὺς βασι-
 λέας, τοῖς μὲν ἄλλοις βασιλεῦσιν αὐτοῖς καθ' ἑαυτοὺς
 δοθῆναι τὴν τιμὴν ταύτην, τῷ δὲ Καππάδοκι καὶ
 5 αὐτῷ δὲ τῷ ἔθνει κοινῇ. ἐκλιπόντος δὲ τοῦ βασιλικοῦ
 γένους οἱ μὲν Ῥωμαῖοι συνεχώρουν αὐτοῖς αὐτονο-
 μεῖσθαι κατὰ τὴν συγκειμένην φιλίαν τε καὶ συμμα-
 χίαν πρὸς τὸ ἔθνος, οἱ δὲ πρεσβευσάμενοι τὴν μὲν
 ἐλευθερίαν παρηγοῦντο (οὐ γὰρ δύνασθαι φέρειν αὐ-
 10 τὴν ἔφασαν), βασιλεῖα δ' ἡξίουσαν αὐτοῖς ἀποδειχθῆναι.
 οἱ δὲ θαυμάσαντες εἴ τινες οὕτως εἶεν ἀπειρηκότες
 πρὸς τὴν ἐλευθερίαν ἐπέτρεψαν δ' οὖν αὐτοῖς ἐξ
 ἑαυτῶν ἐλέσθαι κατὰ χειροτονίαν ὃν ἂν βούλωνται· καὶ
 εἵλοντο Ἀριοβαρζάνην· εἰς τριγωνίαν δὲ προελθόντος
 15 τοῦ γένους ἐξέλιπε, κατεστάθη δ' ὁ Ἀρχέλαος οὐδὲν
 προσήκων αὐτοῖς Ἀντωνίου καταστήσαντος. ταῦτα
 καὶ περὶ τῆς μεγάλης Καππαδοκίας· περὶ δὲ τῆς τρα-
 χείας Κιλικίας τῆς προστεθείσης αὐτῇ βέλτιόν ἐστιν ἐν
 τῷ περὶ τῆς ὅλης Κιλικίας λόγῳ διελθεῖν.

20 Τοῦ δὲ Πόντου καθίστατο μὲν Μιθριδάτης ὁ Εὐ- 3
 πάτωρ βασιλεύς. εἶχε δὲ τὴν ἀφοριζομένην τῷ Ἄλνι
 μέχρι Τιβαρανῶν καὶ Ἀρμενίων καὶ τῆς ἐντὸς Ἄλνιος
 τὰ μέχρι Ἀμάστρεως καὶ τινῶν τῆς Παφλαγονίας με-0.541
 ρῶν. προσεκτέησατο δ' οὗτος καὶ τὴν μέχρι Ἡρακλείας
 25 παραλίαν ἐπὶ τὰ δυσμικὰ μέρη, τῆς Ἡρακλείδου τοῦ
 Πλατωνικοῦ πατρίδος, ἐπὶ δὲ τὰναντία μέχρι Κολχί-
 δος καὶ τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας, ἃ δὴ καὶ προσέθηκε τῷ
 Πόντῳ. καὶ δὴ καὶ Πομπήιος καταλύσας ἐκεῖνον ἐν
 τούτοις τοῖς ὅροις οὔσαν τὴν χώραν ταύτην παρέλα-
 30 βε· τὰ μὲν πρὸς Ἀρμενίαν καὶ τὰ περὶ τὴν Κολχίδα
 τοῖς συναγωνισαμένοις δυνάσταις κατένειμε, τὰ δὲ
 λοιπὰ εἰς ἑνδεκα πολιτείας διεῖλε καὶ τῇ Βιθυνίᾳ προσ-

ἐδθηκεν ὥστ' ἐξ ἀμφοῖν ἐπαρχίαν γενέσθαι μίαν· μεταξὺ δὲ τῶν Παφλαγόνων τῶν μεσογαίων τινὰς βασιλεύεσθαι παρέδωκε τοῖς ἀπὸ Πυλαιμένους, καθάπερ καὶ τοὺς Γαλάτας τοῖς ἀπὸ γένους τετράρχαις. ὅστερον δ' οἱ τῶν Ῥωμαίων ἡγεμόνες ἄλλους καὶ ἄλλους 5 ἐποιήσαντο μερισμούς, βασιλέας τε καὶ δυνάστας καθιστάντες καὶ πόλεις τὰς μὲν ἐλευθεροῦντες τὰς δὲ ἐργχειρίζοντες τοῖς δυνάσταις τὰς δ' ὑπὸ τῷ δήμῳ τῷ Ῥωμαίων ἐῶντες. ἡμῖν δ' ἐπιούσι τὰ καθ' ἕκαστα ὡς νῦν ἔχει λεγέσθω, μικρὰ καὶ τῶν προτέρων ἐφαπτο- 10 μένοισι ὅπου τοῦτο χρήσιμον. ἀρξόμεθα δὲ ἀπὸ Ἡρακλείας, ἥπερ δυσμικωτάτη ἐστὶ τούτων τῶν τόπων.

2 Εἰς δὴ τὸν Εὐξείνιον πόντον εἰσπλέουσιν ἐκ τῆς Προποντίδος ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὰ προσεχῇ τῷ Βυζαντίῳ κεῖται· Θρακῶν δ' ἐστὶ, καλεῖται δὲ τὰ ἀριστερὰ 15 τοῦ Πόντου· ἐν δεξιᾷ δὲ τὰ προσεχῇ Χαλκηδόνι· Βιθυνῶν δ' ἐστὶ τὰ πρῶτα, εἴτα Μαριανδυνῶν (τινὲς δὲ καὶ Καυκῶνων φασίν), εἴτα Παφλαγόνων μέχρι Ἄλνους, εἴτα Καππαδόκων τῶν πρὸς τῷ Πόντῳ καὶ τῶν ἐξῆς μέχρι Κολχίδος· ταῦτα δὲ πάντα καλεῖται τὰ δεξιὰ τοῦ 20 Εὐξείνου πόντου. ταύτης δὲ τῆς παραλίας ἀπάσης ἐπῆρξεν Εὐπάτωρ ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς Κολχίδος μέχρι Ἡρακλείας, τὰ δ' ἐπέκεινα τὰ μέχρι τοῦ στόματος καὶ τῆς Χαλκηδόνος τῷ Βιθυνῶν βασιλεῖ συνέμενε. καταλυθέντων δὲ τῶν βασιλέων ἐφύλαξαν οἱ Ῥωμαῖοι 25 τοὺς αὐτοὺς ὅρους, ὥστε τὴν Ἡράκλειαν προσκεῖσθαι τῷ Πόντῳ, τὰ δ' ἐπέκεινα Βιθυνοῖς προσχωρεῖν.

3 Οἱ μὲν οὖν Βιθυνοὶ διότι πρότερον Μυσοὶ ὄντες μετωνομάσθησαν οὕτως ἀπὸ τῶν Θρακῶν τῶν ἐποικησάντων, Βιθυνῶν τε καὶ Θυνῶν, ὁμολογεῖται παρὰ 30 τῶν πλείστων, καὶ σημεῖα τίθενται τοῦ μὲν τῶν Βιθυνῶν ἔθνους τὸ μέχρι νῦν ἐν τῇ Θράκῃ λέγεσθαι τι-

νας Βιθυνούς, τοῦ δὲ τῶν Θυνῶν τὴν Θυνιάδα ἀκτὴν
τὴν πρὸς Ἀπολλωνίᾳ καὶ Σαλμυδησσῶ. καὶ οἱ Βέβρυ-
κες δὲ οἱ τούτων προεποιήσαντες τὴν Μυσίαν Θρά-
κες, ὥς εἰκάσω ἐγώ. εἴρηται δ' ὅτι καὶ αὐτοὶ οἱ Μυσοὶ C.54
5 Θρακῶν ἄποικοι εἰσι τῶν νῦν λεγομένων Μοισῶν.

Ταῦτα μὲν οὕτω λέγεται. τοὺς δὲ Μαριανδυνούς 4
καὶ τοὺς Καύκωνας οὐχ ὁμοίως ἅπαντες λέγουσι· τὴν
γὰρ δὴ Ἡράκλειαν ἐν τοῖς Μαριανδυνοῖς ἰδρῦσθαί φασι
Μιλησίων κτίσμα· τίνες δὲ καὶ πόθεν οὐδενὶ εἴρηται·
10 οὐδὲ διάλεκτος οὐδ' ἄλλη διαφορὰ ἐθνικὴ περὶ τοὺς ἀν-
θρώπους φαίνεται, παραπλήσιοι δ' εἰσὶ τοῖς Βιθυνοῖς·
ἔοικεν οὖν καὶ τοῦτο Θράκιον ὑπάρξει τὸ φύλον. Θεό-
πομπος δὲ Μαριανδυνόν φησι μέρους τῆς Παφλαγονίας
ἄρξαντα ὑπὸ πολλῶν δυναστευομένης, ἐπελθόντα τὴν
15 τῶν Βεβρύκων κατασχεῖν, ἣν δ' ἐξέλιπεν ἐπώνυμον
ἐαυτοῦ καταλιπεῖν. εἴρηται δὲ καὶ τοῦτο ὅτι πρῶτοι
τὴν Ἡράκλειαν κτίσαντες Μιλήσιοι τοὺς Μαριανδυ-
νοὺς εἰλωτεύειν ἠνάγκασαν τοὺς προκατέχοντας τὸν
τόπον, ὥστε καὶ πιπράσκεσθαι ὑπ' αὐτῶν, μὴ εἰς τὴν
20 ὑπερορίαν δέ (συμβῆναι γὰρ ἐπὶ τούτοις), καθάπερ
Κρησὶ μὲν ἐθήτευεν ἡ Μινώα καλουμένη σύνοδος, Θετ-
ταλοῖς δὲ οἱ Πενέσται.

Τοὺς δὲ Καύκωνας, οὓς ἱστοροῦσι τὴν ἐφεξῆς οἰ- 5
κῆσαι παραλίαν τοῖς Μαριανδυνοῖς μέχρι τοῦ Παρθε-
25 νίου ποταμοῦ πόλιν ἔχοντας τὸ Τίειον, οἱ μὲν Σκύθας
φασὶν οἱ δὲ τῶν Μακεδόνων τινὰς οἱ δὲ τῶν Πελασγῶν·
εἴρηται δέ που καὶ περὶ τούτων πρότερον. Καλλισθέ-
νης δὲ καὶ ἔγραφε τὰ ἔπη ταῦτα εἰς τὸν διάκοσμον,
μετὰ τὸ „Κρωμνάν τ' Αἰγιαλὸν τε καὶ ὑψηλοὺς Ἑρυ-
30 „θίνους“ τιθεῖς „Καύκωνας δ' αὐτ' ἤγε Πολυκλῆος
„υἱὸς ἀμύμων, οἷ περὶ Παρθένιον ποταμὸν κλυτὰ δώ-
„ματ' ἔναιον.“ παρήκειν γὰρ ἄφ' Ἡρακλείας καὶ Μα-

ριανδυνῶν μέχρι Λευκοσύρων, οὓς ἡμεῖς Καππάδοκας προσαγορεύομεν, τό τε τῶν Καυκῶνων γένος τὸ περὶ τὸ Τίειον μέχρι Παρθένιου καὶ τὸ τῶν Ἑνετῶν τὸ συνεχὲς μετὰ τὸν Παρθένιον τῶν ἐχόντων τὸ Κύτωρον· καὶ νῦν δ' ἔτι Καυκωνίτας εἶναι τινὰς περὶ τὸν 5 Παρθένιον.

6 Ἡ μὲν οὖν Ἡράκλεια πόλις ἐστὶν εὐλίμενος καὶ ἄλλως ἀξιόλογος, ἥ γε καὶ ἀποικίας ἔστειλλεν· ἐκείνης γὰρ ἡ τε Χερρόνησος ἀποικος καὶ ἡ Κάλλατις· ἦν τε αὐτόνομος, εἴτ' ἐτυραννήθη χρόνους τινάς, εἴτ' ἡλευθέ- 10 ρωσεν ἑαυτὴν πάλιν· ὕστερον δ' ἐβασιλεύθη γενομένη ὑπὸ τοῖς Ῥωμαίοις· ἐδέξατο δ' ἀποικίαν Ῥωμαίων ἐπὶ μέρει τῆς πόλεως καὶ τῆς χώρας. λαβὼν δὲ παρ' Ἀν- C.543 τωνίου τὸ μέρος τοῦτο τῆς πόλεως Ἀδιατόριξ ὁ Διομνε- κλείου τετράρχου Γαλατῶν υἱός, ὃ κατεῖχον οἱ Ἡρα- 15 κλειῶται, μικρὸν πρὸ τῶν Ἀκτιακῶν ἐπέθετο νύκτωρ τοῖς Ῥωμαίοις καὶ ἀπέσφαξεν αὐτούς, ἐπιτρέψαντος, ὡς ἔφασκεν ἐκεῖνος, Ἀντωνίου· θριαμβευθεὶς δὲ μετὰ τὴν ἐν Ἀκτίῳ νύκην ἐσφάγη μεθ' υἱοῦ· ἡ δὲ πόλις ἐστὶ τῆς Ποντικῆς ἐπαρχίας τῆς συντεταγμένης τῇ 20 Βιθυνίᾳ.

7 Μεταξὺ δὲ Χαλκηδόνος καὶ Ἡρακλείας ῥέουσι πο- ταμοὶ πλείους, ὧν εἰσιν ὅ τε Ψίλλις καὶ ὁ Κάλπας καὶ ὁ Σαγγάριος οὗ μέμνηται καὶ ὁ ποιητής. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς κατὰ Σαγγίαν κόμην ἀφ' ἑκατὸν καὶ πεντήκον- 25 τὰ που σταδίων οὗτος Πεσσινοῦντος· διέξεισι δὲ τῆς ἐπικτήτου Φρυγίας τὴν πλείω, μέρος δέ τι καὶ τῆς Βι- θυνίας ὥστε καὶ τῆς Νικομηδείας ἀπέχειν μικρὸν πλείους ἢ τριακοσίους σταδίους, καθ' ὃ συμβάλλει πο- ταμὸς αὐτῷ Γάλλος ἐκ Μόδρων τὰς ἀρχὰς ἔχων τῆς ἐφ' 30 Ἑλλησπόντῳ Φρυγίας. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ ἐπι- κτήτῳ, καὶ εἶχον αὐτὴν οἱ Βιθυνοὶ πρότερον. αὐξηθεὶς

δὲ καὶ γενόμενος πλωτός, καίπερ πάλαι ἄπλωτος ὢν, τὴν Βιθυνίαν ὁρίζει πρὸς ταῖς ἐκβολαῖς. πρόκειται δὲ τῆς παραλίας ταύτης καὶ ἡ Θυνία νῆσος. ἐν δὲ τῇ Ἡρακλειώτιδι γίνεται τὸ ἀκόνιτον· διέχει δὲ ἡ πό-
 5 λιν αὕτη τοῦ ἱεροῦ τοῦ Χαλκηδονίου σταδίους χιλίους πον καὶ πεντακοσίους, τοῦ δὲ Σαγγαρίου πεντακοσίους.

Τὸ δὲ Τίειόν ἐστι πολίχνιον οὐδὲν ἔχον μνήμης 8
 ἄξιον πλὴν ὅτι Φιλέταιρος ἐντεῦθεν ἦν, ὁ ἀρχηγέτης
 10 τοῦ τῶν Ἀτταλικῶν βασιλέων γένους· εἰδ' ὁ Παρθένιος ποταμὸς διὰ χωρίων ἀνθηρῶν φερόμενος καὶ διὰ τοῦτο τοῦ ὀνόματος τούτου τετυχηκώς, ἐν αὐτῇ τῇ Παφλαγονίᾳ τὰς πηγὰς ἔχων· ἔπειτα ἡ Παφλαγονία καὶ οἱ Ἑνετοί. ζητοῦσι δὲ τίνας λέγει τοὺς Ἑνετοὺς ὁ ποι-
 15 ητής ὅταν φῇ „Παφλαγόνων δ' ἡγεῖτο Πυλαιμένεος „λάσιον κῆρ ἐξ Ἑνετῶν, ὅθεν ἡμιόνων γένος ἀγροτε-
 „ράων.“ οὐ γὰρ δείκνυσθαί φασιν νῦν Ἑνετοὺς ἐν τῇ Παφλαγονίᾳ· οἱ δὲ κώμην ἐν τῷ Αἰγριαλῷ φασιν δέκα σχοίνους ἀπὸ Ἀμάστρεως διέχουσιν. Ζηνόδοτος δὲ „ἐξ
 20 „Ἑνετῆς“ γράφει, καὶ φησὶ δηλοῦσθαι τὴν νῦν Ἀμισόν· ἄλλοι δὲ φῦλόν τι τοῖς Καππάδοξιν ὁμορον στρατεῦσαι μετὰ Κιμμερίων, εἴτ' ἐκπεσεῖν εἰς τὸν Ἀδρίαν. τὸ δὲ μάλισθ' ὁμολογούμενόν ἐστιν ὅτι ἀξιολογώτατον ἦν τῶν Παφλαγόνων φῦλον οἱ Ἑνετοί, ἐξ οὗ ὁ Πυλαι-
 25 μένης ἦν· καὶ δὴ καὶ συνεστράτευσαν οὗτοι αὐτῷ πλείστοι, ἀποβαλόντες δὲ τὸν ἡγεμόνα διέβησαν εἰς τὴν Θράκην μετὰ τὴν Τροίαν ἄλωσιν, πλανώμενοι δ' εἰς τὴν νῦν Ἑνετικὴν ἀφίκοντο. τινὲς δὲ καὶ Ἀντήνορα καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ κοινωνῆσαι τοῦ στόλου τούτου C.544
 30 φασὶ καὶ ἰδρυθῆναι κατὰ τὸν μυχὸν τοῦ Ἀδρίου, καθάπερ ἐμνήσθημεν ἐν τοῖς Ἰταλικοῖς. τοὺς μὲν οὖν

Ἐνετοὺς διὰ τοῦτ' ἐκλιπεῖν εἰκὸς καὶ μὴ δεῖκνυσθαι ἐν τῇ Παφλαγονίᾳ.

- 9 Τοὺς δὲ Παφλαγόνους πρὸς ἔω μὲν ὀρίζει ὁ Ἄλυσ ποταμός „[ὅς] ῥέων ἀπὸ μεσημβρίας μεταξὺ Σύρων „τε καὶ Παφλαγόνων ἐξίει“ κατὰ τὸν Ἡρόδοτον „ἔς 5 „τὸν Εὐξείνου καλεόμενον πόντον,“ Σύρους λέγοντα τοὺς Καππάδοκας· καὶ γὰρ ἔτι καὶ νῦν Λευκόσυροι καλοῦνται, Σύρων καὶ τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου λεγομένων· κατὰ δὲ τὴν πρὸς τοὺς ἐντὸς τοῦ Ταύρου σύγκρισιν, ἐκείνων ἐπικεκαυμένων τὴν χροάν τούτων δὲ 10 μὴ, τοιαύτην τὴν ἐπωνυμίαν γενέσθαι συνέβη· καὶ Πίνδαρός φησιν ὅτι αἱ Ἀμαζόνες „Σύριον εὐρναίχμαν „δίεπον στρατόν,“ τὴν ἐν τῇ Θεμισκύρᾳ κατοικίαν οὕτω δηλῶν. ἡ δὲ Θεμισκυρά ἐστίν τῶν Ἀμισηνῶν, αὕτη δὲ Λευκοσύρων τῶν μετὰ τὸν Ἄλυν. πρὸς ἔω 15 μὲν τοίνυν ὁ Ἄλυσ ὄριον τῶν Παφλαγόνων, πρὸς νότον δὲ Φρύγες καὶ οἱ ἐποικήσαντες Γαλάται, πρὸς δύσιν δὲ Βιθυννοὶ καὶ Μαριανδυνοὶ (τὸ γὰρ τῶν Κανκῶνων γένος ἐξέφθαρται τελέως πάντοθεν), πρὸς ἄρκτον δὲ ὁ Εὐξείνους ἐστι. τῆς δὲ χώρας ταύτης διηρημένης 20 εἰς τε τὴν μεσόγαιαν καὶ τὴν ἐπὶ θαλάττῃ διατείνουσιν ἀπὸ τοῦ Ἄλως μέχρι Βιθυνίας, ἐκατέραν τὴν μὲν παραλίαν ἕως τῆς Ἡρακλείας εἶχεν ὁ Εὐπάτωρ, τῆς δὲ μεσογαίας τὴν μὲν ἐγγυτάτῳ ἔσχευ, ἧς τινα καὶ πέραν τοῦ Ἄλως διέτεινε (καὶ μέχρι δεῦρο τοῖς Ῥωμαίοις ἡ 25 Ποντικὴ ἐπαρχία ἀφώρισται), τὰ λοιπὰ δ' ἦν ὑπὸ δυνάσταις καὶ μετὰ τὴν Μιθριδάτου κατάλυσιν. περὶ μὲν δὴ τῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ Παφλαγόνων ἐροῦμεν ὕστερον τῶν μὴ ὑπὸ τῷ Μιθριδάτῃ, νῦν δὲ πρόκειται τὴν ὑπ' ἐκείνῳ χώραν, κληθεῖσαν δὲ Πόντον, διελθεῖν. 30

- Μετὰ δὴ τὸν Παρθένιον ποταμὸν ἔστιν Ἀμα- 10
στρις ὁμώνυμος τῆς συμφικινίας πόλις· Ἰδρυται δ'
ἐπὶ χειρρονήσου λιμένας ἔχουσα τοῦ ἰσθμοῦ ἑκατέρω-
θεν· ἦν δ' ἡ Ἀμαστρις γυνὴ μὲν Διονυσίου τοῦ Ἡρα-
5 κλείας τυράννου, θυγάτηρ δὲ Ὀξυάδρου τοῦ Δαρείου
ἀδελφοῦ τοῦ κατὰ Ἀλέξανδρον. ἐκείνη μὲν οὖν ἐκ τετ-
τάρων κατοικιῶν συνώκισε τὴν πόλιν, ἐκ τε Σησάμου
καὶ Κυτῶρου καὶ Κρωμνῆς (ὧν καὶ Ὅμηρος μέμνηται
ἐν τῷ Παφλαγονικῷ διακόσμῳ), τετάρτης δὲ τῆς Τίου·
10 ἀλλ' αὕτη μὲν ταχὺ ἀπέστη τῆς κοινωνίας, αἱ δὲ ἄλλαι
συνέμειναν, ὧν ἡ Σήσαμος ἀκρόπολις τῆς Ἀμάστρεως
λέγεται. τὸ δὲ Κυτῶρον ἐμπόριον ἦν ποτε Σινωπέων,
ὠνόμασται δ' ἀπὸ Κυτῶρου τοῦ Φοῖβου παιδός, ὡς
Ἐφορός φησι. πλείστη δὲ καὶ ἀρίστη πύξος φύεται κατὰ C.545
15 τὴν Ἀμαστριανήν, καὶ μάλιστα περὶ τὸ Κυτῶρον. ὁ δὲ
Αἰγιαλὸς ἔστι μὲν ἡὼν μακρὰ πλειόνων ἢ ἑκατὸν στα-
δίων, ἔχει δὲ καὶ κώμην ὁμώνυμον, ἧς μέμνηται ὁ ποι-
ητὴς ὅταν φῇ „Κρωμνάν τ' Αἰγιαλὸν τε καὶ ὑψηλοὺς
„Ἐρυθίνους.“ γράφουσι δὲ τινες „Κρωμναν Κωβιάλόν
20 „τε.“ Ἐρυθίνους δὲ λέγεσθαί φασι τοὺς νῦν Ἐρυθρί-
νους ἀπὸ τῆς χροῆς· δύο δ' εἰσὶ σκόπελοι. μετὰ δὲ Αἰ-
γιαλὸν Κάραμβις, ἄκρα μεγάλη πρὸς τὰς ἄρκτους ἀνα-
τεταμένη καὶ τὴν Σκυθικὴν χειρρόνησον. ἐμνήσθημεν
δ' αὐτῆς πολλάκις καὶ τοῦ ἀντικειμένου αὐτῇ Κριοῦ με-
25 τῶπου, διθάλαττον ποιοῦντος τὸν Εὐῒξεινον πόντον.
μετὰ δὲ Κάραμβιν Κίνωλις καὶ Ἀντικίνωλις καὶ Ἀβώ-
νου τεῖχος πολίχνη, καὶ Ἀρμένη ἐφ' ἣ παροϊμιάζον-
ται „ὅστις ἔργον οὐδὲν εἶχεν Ἀρμένην ἐτείχισεν.“ ἔστι
δὲ κώμη τῶν Σινωπέων ἔχουσα λιμένα.
- 30 Εἴτ' αὐτῇ Σινώπη, σταδίους πεντήκοντα τῆς Ἀρ- 11

μένης διέχουσα, ἀξιολογωτάτη τῶν ταύτῃ πόλεων. ἐκτισαν μὲν οὖν αὐτὴν Μιλήσιοι, κατασκευασαμένη δὲ ναυτικὸν ἐπῆρχε τῆς ἐντὸς Κυανέων θαλάττης, καὶ ἔξω δὲ πολλῶν ἀγώνων μετείχε τοῖς Ἑλλησιν· αὐτονομηθεῖσα δὲ πολὺν χρόνον οὐδὲ διὰ τέλους ἐφύλαξε 5 τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλ' ἐκ πολιορκίας ἑάλω καὶ ἐδούλευσε Φαρνάκῃ πρῶτον, ἔπειτα τοῖς διαδεξαμένοις ἐκείνῳ μέχρι τοῦ Εὐπάτορος καὶ τῶν καταλυσάντων Ῥωμαίων ἐκείνῳ. ὁ δὲ Εὐπάτωρ καὶ ἐγεννήθη ἐκεῖ καὶ ἐτράφη· διαφερόντως δὲ ἐτίμησεν αὐτὴν μητρόπολιν 10 τε τῆς βασιλείας ὑπέλαβεν. ἔστι δὲ καὶ φύσει καὶ προνοίᾳ κατασκευασμένη καλῶς· Ἰδρυται γὰρ ἐπὶ αὐχένι χερρονήσου τινός, ἐκατέρωθεν δὲ τοῦ ἰσθμοῦ λιμένες καὶ ναύσταθμα καὶ πηλαμυδεῖα θναυμαστά, περὶ ὧν εἰρήκαμεν ὅτι δευτέραν θήραν οἱ Σινωπεῖς ἔχουσι, τρί- 15 την δὲ Βυζάντιοι· καὶ κύκλῳ δ' ἡ χερρόνησος προβέβληται ῥαχιώδεις ἀκτὰς ἐχούσας καὶ κοιλάδας τινὰς ὥσανεὶ βόθρους πετρίνους, οὓς καλοῦσι χοινικίδας· πληροῦνται δὲ οὗτοι μετεωρισθείσης τῆς θαλάττης, ὥς καὶ διὰ τοῦτο οὐκ εὐπρόσιτον τὸ χωρίον καὶ δια 20 τὸ πᾶσαν τὴν τῆς πέτρας ἐπιφάνειαν ἐκινώδη καὶ ἀνεπίβατον εἶναι γυμνῷ ποδί· ἄνωθεν μέντοι καὶ ὑπὲρ τῆς πόλεως εὐγεῶν ἔστι τὸ ἔδαφος καὶ ἀγροκηπίοις κε- C.546 κόσμηται πυκνοῖς, πολὺ δὲ μᾶλλον τὰ προάστεια. αὐτὴ δ' ἡ πόλις τετελείχεται καλῶς, καὶ γυμνασίῳ δὲ καὶ ἀγο- 25 ρᾷ καὶ στοαῖς κεκόσμηται λαμπρῶς. τοιαύτη δὲ οὖσα δις ὅμως ἑάλω, πρότερον μὲν τοῦ Φαρνάκου παρὰ δόξαν αἰφνιδίως ἐπιπεσόντος, ὕστερον δὲ ὑπὸ Λευκόλου καὶ τοῦ ἐγκαθημένου τυράννου καὶ ἐντὸς ἅμα καὶ ἐκτὸς πολιορκουμένη· ὁ γὰρ ἐγκατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ 30 βασιλέως φρούραρχος Βακχίδης ὑπονοῶν αἰετὶνα προδοσίαν ἐκ τῶν ἐνδοθεν καὶ πολλὰς αἰκίας καὶ σφα-

γὰς ποιῶν, ἀπαγορεῦσαι τοὺς ἀνθρώπους ἐποίησε
 πρὸς ἄμφω μὴτ' ἀμύνασθαι δυναμένους γενναίως
 μήτε προσθέσθαι κατὰ συμβάσεις. ἐάλωσαν δ' οὖν·
 καὶ τὸν μὲν ἄλλον κόσμον τῆς πόλεως διεφύλαξεν ὁ
 5 Λεύκολλος, τὴν δὲ τοῦ Βιλλάρου σφαῖραν ἦρε καὶ τὸν
 Αὐτόλυκον, Σθένιδος ἔργον, ὃν ἐκεῖνοι οἰκιστὴν ἐνό-
 μιζον καὶ ἐτίμων ὡς θεόν· ἦν δὲ καὶ μαντεῖον αὐτοῦ·
 δοκεῖ δὲ τῶν Ἰάσονι συμπλευσάντων εἶναι καὶ κατα-
 σχεῖν τοῦτον τὸν τόπον. εἴθ' ὕστερον Μιλήσιοι τὴν
 10 εὐφυΐαν ἰδόντες καὶ τὴν ἀσθένειαν τῶν ἐνοικούντων
 ἐξιτιάσαντο καὶ ἐποίκους ἔστειλαν· νυνὶ δὲ καὶ Ῥω-
 μαίων ἀποικίαν δέδεκται, καὶ μέρος τῆς πόλεως καὶ τῆς
 χώρας ἐκείνων ἐστί. διέχει δὲ τοῦ μὲν Ἱεροῦ τρισχιλί-
 ους καὶ πεντακοσίους, ἀφ' Ἡρακλείας δὲ δισχιλίους,
 15 Καράμβεως δὲ ἑπτακοσίους σταδίου. ἄνδρας δὲ ἐξή-
 νεγκεν ἀγαθοὺς, τῶν μὲν φιλοσόφων Διογένη τὸν κυ-
 νικὸν καὶ Τιμόθεον τὸν Πατρίωνα, τῶν δὲ ποιητῶν
 Δίφιλον τὸν κωμικόν, τῶν δὲ συγγραφέων Βάτωνα
 τὸν πραγματευθέντα τὰ Περσικά.
 20 Ἐντεῦθεν δ' ἐφεξῆς ἡ τοῦ Ἄλως ἐκβολὴ ποτα- 12
 μοῦ· ὠνόμασται δ' ἀπὸ τῶν ἁλῶν ἃς παραρρεῖ· ἔχει
 δὲ τὰς πηγὰς ἐν τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ τῆς Ποντικῆς
 πλησίον κατὰ τὴν Καμισσηνὴν, ἐνεχθεὶς δ' ἐπὶ δύοσιν
 πολὺς, εἴτ' ἐπιστρέψας πρὸς τὴν ἄρκτον διὰ τε Γαλα-
 25 τῶν καὶ Παφλαγόνων ὁρίζει τούτους τε καὶ τοὺς Λευ-
 κοσύρους. ἔχει δὲ καὶ ἡ Σινωπῆτις καὶ πᾶσα ἡ μέχρι
 Βιθυνίας ὀρεινὴ ἡ ὑπερκειμένη τῆς λεχθείσης παρα-
 λίας ναυπηγήσιμον ὕλην ἀγαθὴν καὶ εὐκατακόμιστον.
 ἡ δὲ Σινωπῆτις καὶ σφένδαμνον φύει καὶ ὀροκάρουν,
 30 ἐξ ὧν τὰς τραπέζας τέμνουσιν· ἅπαντα δὲ καὶ ἐλαιόφυ-
 τὸς ἐστίν ἡ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης γεωργουμένη.

Μετὰ δὲ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἄλως ἡ Γαζηλωνίτις 13
 24*

ἔστι μέχρι τῆς Σαραμηνῆς, εὐδαίμων χώρα καὶ πεδιάς
 πᾶσα καὶ πάμφορος· ἔχει δὲ καὶ προβατεῖαν ὑποδι-
 φθέρου καὶ μαλακῆς ἐρέας, ἥς καθ' ὅλην τὴν Καππα-
 δοκίαν καὶ τὸν Πόντον σφόδρα πολλὴ σπάνις ἐστὶ· γί-
 C.547νονται δὲ καὶ ζόρκες, ὧν ἀλλαχοῦ σπάνις ἐστὶ. ταύτης 5
 δὲ τῆς χώρας τὴν μὲν ἔχουσιν Ἀμισηνοί, τὴν δ' ἔδωκε
 Ἀθιοτάρῳ Πομπήιος, καθάπερ καὶ τὰ περὶ Φαρνακίαν
 καὶ τὴν Τραπεζουσίαν μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς μικρᾶς
 Ἀρμενίας· καὶ τούτων ἀπέδειξεν αὐτὸν βασιλέα, ἔχοντα
 καὶ τὴν πατρῶαν τετραρχίαν τῶν Γαλατῶν, τοὺς Το- 10
 λιστοβωγίους. ἀποθανόντος δ' ἐκείνου πολλὰ διαδο-
 χὰι τῶν ἐκείνου γεγόνασι.

14 Μετὰ δὲ τὴν Γαζηλῶνα ἡ Σαραμηνὴ καὶ Ἀμισὸς
 πόλις ἀξιόλογος, διέχουσα τῆς Σινώπης περὶ ἑνακο-
 σίους σταδίους. φησὶ δ' αὐτὴν Θεόπομπος πρῶτους 15
 Μιλησίους κτίσαι. Καππαδόκων ἄρχοντα, τρί-
 τον δ' ὑπ' Ἀθηνοκλέους καὶ Ἀθηναίων ἐποικισθεῖσαν
 Πειραιᾶ μετονομασθῆναι. καὶ ταύτην δὲ κατέσχον οἱ
 βασιλεῖς, ὁ δ' Εὐπάτωρ ἐκόσμησεν ἱεροῖς καὶ προσέ-
 κτισε μέρος. Δεύκολλος δὲ καὶ ταύτην ἐπολιόρκησεν, 20
 εἰθ' ὕστερον Φαρνάκης ἐκ Βοσπόρου διαβάς· ἔλευθε-
 ρωθείσαν δ' ὑπὸ Καίσαρος τοῦ θεοῦ παρέδωκεν Ἀν-
 τώνιος βασιλεῦσιν· εἰθ' ὁ τύραννος Στράτων κακῶς
 αὐτὴν διέθηκεν· εἰτ' ἠλευθερώθη πάλιν μετὰ τὰ Ἀκτι-
 ακὰ ὑπὸ Καίσαρος τοῦ Σεβαστοῦ, καὶ νῦν εὖ συνέ- 25
 στηκεν. ἔχει δὲ τὴν τε ἄλλην χώραν καλὴν καὶ τὴν Θε-
 μίσκυραν τὸ τῶν Ἀμαζόνων οἰκητήριον, καὶ τὴν Σι-
 δήνην.

15 Ἔστι δὲ ἡ Θεμίσκυρα πεδίον τῇ μὲν ὑπὸ τοῦ πε-
 λάγους κλυζόμενον, ὅσον ἐξήκοντα σταδίους τῆς πό- 30
 λεως διέχον, τῇ δ' ὑπὸ τῆς ὀρεινῆς εὐδένδρου καὶ δι-
 αρρύτου ποταμοῖς αὐτόθεν τὰς πηγὰς ἔχουσιν. ἐκ μὲν

- οὖν τούτων πληρουμένος ἀπάντων εἰς ποταμὸς δι-
 ἐξεισι τὸ πεδῖον Θερμῶδων καλούμενος· ἄλλος δὲ τού-
 τῳ πᾶριςος ῥέων ἐκ τῆς καλουμένης Φαναροίας τὸ αὐτὸ
 διέξεισι πεδῖον· καλεῖται δὲ Ἴρις. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς ἐν
 5 αὐτῷ τῷ Πόντῳ, ὅυεις δὲ διὰ πόλεως μέσης Κομάνων
 τῶν Ποντικῶν καὶ διὰ τῆς Δαξιμωνίτιδος εὐδαίμονος
 πεδίου πρὸς δύσιν, εἴτ' ἐπιστρέφει πρὸς τὰς ἄρκτους
 παρ' αὐτὰ τὰ Γαζίουρα, παλαιὸν βασίλειον, νῦν δ'
 ἔρημον· εἴτα ἀνακάμπει πάλιν πρὸς ἕω παραλαβὼν
 10 τὸν τε Σκύλακα καὶ ἄλλους ποταμούς, καὶ παρ' αὐτὸ
 τὸ τῆς Ἀμασειας ἐνεχθεὶς τεῖχος, τῆς ἡμετέρας πατρί-
 δος, πόλεως ἐρυμνοτάτης, εἰς τὴν Φανάροϊαν πρόει-
 σιν· ἐνταῦθα δὲ συμβαλὼν ὁ Λύκος αὐτῷ τὰς ἀρχὰς
 ἐξ Ἀρμενίας ἔχων γίνεται καὶ αὐτὸς Ἴρις· εἴθ' ἡ Θε-
 15 μίσκυρα ὑποδέχεται τὸ ῥεῦμα καὶ τὸ Ποντικὸν πέλα-
 γος. διὰ δὲ τοῦτο ἐνδροσὸν ἐστὶ καὶ ποάξον ἀεὶ τὸ πε-
 δῖον τοῦτο τρέφειν ἀγέλας βοῶν τε ὁμοίως καὶ ἵππων
 δυνάμενον, σπόρον δὲ πλεῖστον δέχεται τὸν ἐκ τῆς ἐλύ-
 μου καὶ κέγχρου, μᾶλλον δὲ ἀνέκλειπτον· αὐχμοῦ γάρ
 20 ἐστὶ κρείττων ἢ εὐνδρία παντός, ὥστ' οὐδὲ λιμὸς κα-C.548
 θινκεῖται τῶν ἀνθρώπων τούτων οὐδ' ἄπαξ· τοσαύ-
 την δ' ὁπώραν ἐκδίδωσιν ἢ παρόρειος τὴν αὐτοφυῆ
 καὶ ἀγρίαν σταφυλῆς τε καὶ ὄχνης καὶ μήλου καὶ τῶν
 καρπωδῶν ὥστε κατὰ πᾶσαν τοῦ ἔτους ὥραν ἀφθόνως
 25 εὐπορεῖν τοὺς ἐξιόντας ἐπὶ τὴν ὕλην, τοτὲ μὲν ἔτι κρε-
 μαμένων τῶν καρπῶν ἐν τοῖς δένδροις, τοτὲ δ' ἐν τῇ
 πεπτωκυῖα φυλλάδι καὶ ὑπ' αὐτῇ κειμένων βαθεία καὶ
 πολλῇ κεχυμένη. συχνὰ δὲ καὶ θῆραι παντοίων ἀγρευ-
 μάτων διὰ τὴν εὐπορίαν τῆς τροφῆς.
- 30 Μετὰ δὲ τὴν Θεμίσκυράν ἐστὶν ἡ Σιδήνη, πεδῖον 16
 εὐδαιμον, οὐχ ὁμοίως δὲ κατάρρυντον, ἔχον χωρία
 ἐρυμνὰ ἐπὶ τῇ παραλίᾳ, τὴν τε Σίδην ἀφ' ἧς ὠνομά-

σθη Σιδήνη, καὶ Χάβακα καὶ Φάβδα· μέχρι μὲν δὴ δεῦρο Ἀμισσηνῇ. ἄνδρες δὲ γεγόνασιν ἄξιοι μνήμης κατὰ παιδείαν ἐνταῦθα μαθηματικοὶ μὲν Δημήτριος ὁ τοῦ Ῥαθηνοῦ καὶ Διονυσόδωρος ὁ μώνυμος τῷ Μηλίῳ γεωμέτρῃ, γραμματικὸς δὲ Τυραννίων οὗ ἡμεῖς ἤκροασάμεθα.

- 17 Μετὰ δὲ τὴν Σιδήνην ἡ Φαρνακία ἐστὶν ἐρυμνὸν πόλισμα, καὶ μετὰ ταῦτα ἡ Τραπεζοῦς πόλις Ἑλληνίς, εἰς ἣν ἀπὸ τῆς Ἀμισοῦ περὶ δισχιλλοὺς καὶ διακοσίους σταδίους ἐστὶν ὁ πλοῦς· εἴτ' ἐνθεν εἰς Φᾶσιν χίλιοι 10 πον καὶ τετρακόσιοι, ὥστε οἱ σύμπαντες ἀπὸ τοῦ Ἱεροῦ μέχρι Φάσιδος περὶ ὀκτακισχιλλοὺς σταδίους εἰσὶν ἢ μικρῷ πλείους ἢ ἐλάττους. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ ταύτῃ ἀπὸ Ἀμισοῦ πλέουσιν ἡ Ἡράκλειος ἄκρα πρῶτον ἐστίν, εἴτ' ἄλλη ἄκρα Ἰασόνιον καὶ ὁ Γενήτης, εἴτα Κοτύωρα 15 πολίχνη ἐξ ἧς συνωκίσθη ἡ Φαρνακία, εἴτ' Ἰσχοπόλις κατερηριμμένη, εἴτα κόλπος ἐν ᾧ Κερασσοῦς τε καὶ Ἑρμῶναςσα κατοικίαι μέτραι, εἴτα τῆς Ἑρμῶναςσης πλησίον ἡ Τραπεζοῦς, εἴθ' ἡ Κολχίς· ἐνταῦθα δὲ πον ἐστὶ καὶ Ζυγόπολις τις λεγομένη κατοικία. περὶ μὲν 20 οὖν τῆς Κολχίδος εἴρηται καὶ τῆς ὑπερκειμένης παραλίας.

- 18 Τῆς δὲ Τραπεζοῦντος ὑπέρκεινται καὶ τῆς Φαρνακίας Τιβαρανοὶ τε καὶ Χαλδαῖοι καὶ Σάννοι, οὓς πρότερον ἐκάλουν Μάκρωνας, καὶ ἡ μικρὰ Ἀρμενία· 25 καὶ οἱ Ἀππᾶται δὲ πῶς πλησιάζουσιν τοῖς χωρίοις τούτοις οἱ πρότερον Κερκῖται. διήκει δὲ διὰ τούτων ὃ τε Σκυδίσσης ὄρος τραχύτατον συνάπτει τοῖς Μοσχικοῖς ὅρεσι τοῖς ὑπὲρ τῆς Κολχίδος, οὗ τὰ ἄκρα κατέχουσιν οἱ Ἑπτακωμήται, καὶ ὁ Παρναύτης ὁ μέχρι τῆς μικρᾶς 30 Ἀρμενίας ἀπὸ τῶν κατὰ Σιδήνην καὶ Θεμισκυραν τόπων διατείνων καὶ ποιῶν τὸ ἐωθινὸν τοῦ Πόντου πλε-

ρόν. εἰσὶ δ' ἅπαντες μὲν οἱ ὄρειοι τούτων ἄγριοι τε-C.549
 λέως, ὑπερβέβληνται δὲ τοὺς ἄλλους οἱ Ἑπτακωμῆται·
 τινὲς δὲ καὶ ἐπὶ δένδρεσιν ἢ πυργίοις οἰκοῦσι, διὸ καὶ
 Μοσυνοίκους ἐκάλουν οἱ παλαιοί, τῶν πύργων μωσύ-
 5 νων λεγομένων. ζῶσι δ' ἀπὸ θηρέων σαρκῶν καὶ τῶν
 ἀκροδρόων, ἐπιτίθενται δὲ καὶ τοῖς ὁδοιποροῦσι κα-
 ταπηδήσαντες ἀπὸ τῶν ἱκρίων. οἱ δὲ Ἑπτακωμῆται
 τρεῖς Πομπηίου σπείρας κατέκοψαν διεξιούσας τὴν
 ὄρεινὴν, κεράσαντες κρατῆρας ἐν ταῖς ὁδοῖς τοῦ μαι-
 10 νομένου μέλιτος, ὃ φέρουσιν οἱ ἀκρεμόνες τῶν δέν-
 δρων· πιοῦσι γὰρ καὶ παρακόψασιν ἐπιθέμενοι ῥα-
 δίως διεχειρίσαντο τοὺς ἀνθρώπους. ἐκαλοῦντο δὲ
 τούτων τινὲς τῶν βαρβάρων καὶ Βύζηρες.

Οἱ δὲ νῦν Χαλδαῖοι Χάλυβες τὸ παλαιὸν ὠνομά- 19
 15 ζοντο, καθ' οὓς μάλιστα ἡ Φαρνακία ἰδρυται, κατὰ
 θάλατταν μὲν ἔχουσα εὐφυῖαν τὴν ἐκ τῆς πηλαμυδείας
 (πρώτιστα γὰρ ἀλίσκεται ἐνταῦθα τὸ ὄψον τοῦτο), ἐκ
 δὲ τῆς γῆς τὰ μέταλλα νῦν μὲν σιδήρου πρότερον δὲ
 καὶ ἀργύρου. ὅλως δὲ κατὰ τοὺς τόπους τούτους ἡ πα-
 20 ραλία στενὴ τελέως ἐστίν· ὑπέρκειται γὰρ εὐθύς τὰ
 ὄρη μετὰλλων πλήρη καὶ δρυμῶν, γεωργεῖται δ' οὐ
 πολλά· λείπεται δὴ τοῖς μὲν μεταλλευταῖς ἐκ τῶν με-
 τάλλων ὁ βίος, τοῖς δὲ θαλαττουργοῖς ἐκ τῆς ἀλιείας
 καὶ μάλιστα τῶν πηλαμύδων καὶ τῶν δελφίνων· ἐπακο-
 25 λουθοῦντες γὰρ ταῖς ἀγέλαις τῶν ἰχθύων, κορδύλης τε
 καὶ θύννης καὶ αὐτῆς τῆς πηλαμύδος, πιαίνονται τε καὶ
 εὐάλωτοι γίνονται διὰ τὸ πλησιάζειν τῇ γῇ προαλέστε-
 ρον δελεαζόμενοι * οὓς μόνοι οὗτοι κατακόπτουσι τοὺς
 δελφίνας καὶ τῷ στέατι πολλῷ χρῶνται πρὸς ἅπαντα.
 30 Τούτους οὖν οἶμαι λέγειν τὸν ποιητὴν Ἀλιζώνους 2C
 ἐν τῷ μετὰ τοὺς Παφλαγόνους καταλόγῳ „αὐτὰρ Ἀλι-
 „ζώνων Ὀδῖος καὶ Ἐπίστροφος ἤρχου τηλόθεν ἐξ Ἀλύ-

„βῆς, ὅθεν ἀργύρου ἐστὶ γενέθλη.“ ἤτοι τῆς γραφῆς
 μετατεθείσης ἀπὸ τοῦ „τηλόθεν ἐκ Χαλύβης,“ ἢ τῶν
 ἀνθρώπων πρότερον Ἀλύβων λεγομένων ἀντὶ Χαλύ-
 βων· οὐ γὰρ νῦν μὲν δυνατὸν γέρονεν ἐκ Χαλύβων
 Χαλδαίους λεχθῆναι, πρότερον δ' οὐκ ἐνῆν ἀντὶ Ἀλύ- 5
 βων Χάλυβας, καὶ ταῦτα τῶν ὀνομάτων μεταπτώσεις
 πολλὰς δεχομένων καὶ μάλιστα ἐν τοῖς βαρβάροις·
 Σίντιες γὰρ ἐκαλοῦντο τινες τῶν Θρακῶν, εἴτα Σιντοί,
 εἴτα Σάιοι, παρ' οἷς φησιν Ἀρχίλοχος τὴν ἀσπίδα ῥι-
 ψαι „ἀσπίδα μὲν Σαίων τις ἀνείλετο, τὴν παρὰ θά- 10
 „μυρ ἐντος ἀμώμητον κάλλιπον οὐκ ἐθέλων.“ οἱ δ'
 C.550 αὐτοὶ οὗτοι Σαπαῖοι νῦν ὀνομάζονται· πάντες γὰρ
 οὗτοι περὶ Ἀβδηρα τὴν οἰκησιν εἶχον καὶ τὰς περὶ Αἴ-
 μνον νήσους· ὁμοίως δὲ καὶ Βρύγοι καὶ Βρύγες καὶ
 Φρύγες οἱ αὐτοί, καὶ Μυσοὶ καὶ Μαίονες καὶ Μήονες· 15
 οὐ χρεῖα δὲ πλεονάζειν. ὑπονοεῖ δὲ καὶ ὁ Σκήψιος τὴν
 τοῦ ὀνόματος μετάπτωσιν ἐξ Ἀλύβων εἰς Χάλυβας, τὰ
 δ' ἐξῆς καὶ τὰ συνωδὰ οὐ νοῶν, καὶ μάλιστα ἐκ τίνος
 Ἀλιζώνους εἰρηκε τοὺς Χάλυβας, ἀποδοκιμάζει τὴν
 δόξαν· ἡμεῖς δ' ἀντιπαραθέντες τῇ ἡμετέρᾳ τὴν ἐκεί- 20
 21 νου καὶ τὰς τῶν ἄλλων ὑπολήψεις σκοπῶμεν. οἱ μὲν
 [οὖν] μεταγράφουσιν „Ἀλαζώνων“ οἱ δ' „Ἀμαζώνων“
 ποιοῦντες, τὸ δ' „ἐξ Ἀλύβης“ „ἐξ Ἀλόπης“ ἢ „ἐξ Ἀλό-
 „βῆς,“ τοὺς μὲν Σκύθας Ἀλαζώνας φάσκοντες ὑπὲρ
 τὸν Βορυσθένη καὶ Καλλιπίδας καὶ ἄλλα ὀνόματα, 25
 ἅπερ Ἑλλάνικός τε καὶ Ἡρόδοτος καὶ Εὐδόξος κατε-
 φλυάρησαν ἡμῶν, τοὺς δ' Ἀμαζώνας μεταξὺ Μυσίας
 καὶ Καρίας καὶ Αὐδίας, καθάπερ Ἐφορος νομίζει, πλη-
 σίον Κύμης τῆς πατρίδος αὐτοῦ· καὶ τοῦτο μὲν ἔχε-
 ταί τινος λόγου τυχὸν ἴσως· εἴη γὰρ ἂν λέγων τὴν ὑπὸ 30

τῶν Αἰολέων καὶ Ἰώνων οἰκισθεῖσαν ὕστερον, πρότερον δ' ὑπὸ Ἀμαζόνων, [ᾧν] καὶ ἐπωνύμους πόλεις τινὰς εἶναι φασί· καὶ γὰρ Ἐφεσον καὶ Σμύρναν καὶ Κύμην καὶ Μύριναν. ἡ δὲ Ἀλύβη ἢ ὥς τινες Ἀλόπη ἢ Ἀλόβη πῶς ἂν ἐν τοῖς τόποις τούτοις ἐξητάζετο; πῶς δὲ τηλόθεν; πῶς δ' ἡ τοῦ ἀργύρου γενέσθλη;

Ταῦτα μὲν ἀπολύεται τῇ μεταγραφῇ· γράφει γὰρ 22 οὕτως „αὐτὰρ Ἀμαζόνων Ὀδῖος καὶ Ἐπίστροφος ἤρχον, ἐλθόντ' ἐξ Ἀλόπης, ὅθ' Ἀμαζονίδων γένος ἐστί.“

10 ταῦτα δ' ἀπολυσάμενος εἰς ἄλλο ἐμπέπτωκε πλάσμα· οὐδαμοῦ γὰρ ἐνθάδε εὐρίσκεται Ἀλόπη· καὶ ἡ μεταγραφὴ δὲ παρὰ τὴν τῶν ἀντιγράφων τῶν ἀρχαίων πίστιν καινοτομουμένη ἐπὶ τοσοῦτον σχεδιασμῷ ἔοικεν. ὁ δὲ Σκήψιος οὔτε τὴν τούτου δόξαν ἔοικεν ἀποδεξά-

15 μένος οὔτε τῶν περὶ τὴν Παλλήνην τοὺς Ἀλιζώνους ὑπολαβόντων, ᾧν ἐμνήσθημεν ἐν τοῖς Μακεδονικοῖς. ὁμοίως διαπορεῖ καὶ πῶς ἐκ τῶν ὑπὲρ τὸν Βορουσθένην νομάδων ἀφῆχθαι συμμαχίαν τοῖς Τρωσὶ τις νομίσειεν, ἐπαινεῖ δὲ μάλιστα τὴν Ἑκαταίου τοῦ Μιλησίου καὶ

20 Μενεκράτους τοῦ Ἐλαΐτου τῶν Ξενοκράτους γνωρίμων ἀνδρὸς δόξαν καὶ τὴν Παλαιφάτου, ᾧν ὁ μὲν ἐν γῆς περιόδῳ φησὶν „ἐπὶ δ' Ἀλαζία πόλι ποταμὸς Ὀδρύσης ῥέων διὰ Μυγδονίης πεδίου ἀπὸ δύσιος ἐκ τῆς „λίμνης τῆς Δασκυλίτιδος ἐς Πύνδακον ἐσβάλλει.“ ἔρη-C.551

25 μόν δὲ εἶναι νῦν τὴν Ἀλαζίαν λέγει, κώμας δὲ πολλὰς τῶν Ἀλαζόνων οἰκεῖσθαι, δι' ᾧν Ὀδρύσης ῥεῖ, ἐν δὲ ταύταις τὸν Ἀπόλλωνα τιμᾶσθαι διαφερόντως, καὶ μάλιστα κατὰ τὴν ἐφορίαν τῶν Κυζικηνῶν. ὁ δὲ Μενεκράτης ἐν τῇ Ἑλλησποντιακῇ περιόδῳ ὑπερκεῖσθαι

30 λέγει τῶν περὶ τὴν Μύρλειαν τόπων ὀρεινὴν συνεχῆ· ἣν κατῴκει τὸ τῶν Ἀλιζόνων ἔθνος· δεῖ δέ, φησί, γραφεῖν ἐν τοῖς δύο λάβδα, τὸν δὲ ποιητὴν ἐν τῷ ἐν

γράφειν διὰ τὸ μέτρον. ὁ δὲ Παλαίφατος φησιν ἐξ Ἀλα-
ζώνων τῶν ἐν τῇ Ἀλόπῃ οἰκούντων, νῦν δὲ Ζελεία, τὸν
Ὀδίων καὶ τὸν Ἐπίστροφον στρατεῦσαι. τί οὖν ἄξιον
ἐπαινεῖν τὰς τούτων δόξας; χωρὶς γὰρ τοῦ τὴν ἀρχαίαν
γραφὴν καὶ τούτους κινεῖν οὔτε τὰ ἀργυρεῖα δεικνύ- 5
ουσιν, οὔτε ποῦ τῆς Μυρλεάτιδος Ἀλόπῃ ἐστίν, οὔτε
πῶς οἱ ἐνθένδε ἀφιγμένοι εἰς Ἴλιον τηλόθεν ἦσαν, εἰ
καὶ δοθείη Ἀλόπῃν τινὰ γεγονέναι ἢ Ἀλαζίαν· πολὺ
γὰρ δὴ ταῦτα ἐγγυτέρω ἐστὶ τῇ Τρωάδι ἢ τὰ περὶ Ἐφε-
σον. ἀλλ' ὅμως τοὺς περὶ Πύγελα λέγοντας τοὺς Ἀμα- 10
ζῶνας μεταξὺ Ἐφέσου καὶ Μαγνησίας καὶ Πριήνης
φλυαρεῖν φησὶν ὁ Δημήτριος· τὸ γὰρ „τηλόθεν“ οὐκ
ἐφαρμόττειν τῷ τόπῳ· πόσω οὖν μᾶλλον οὐκ ἐφαρ-
μόττει τῷ περὶ Μυσίαν καὶ Τευθρανίαν;

- 23 Νῆ Δία, ἀλλὰ φησι δεῖν ἔνια καὶ ἀκύρως προστι- 15
θέμενα δέχεσθαι, ὥς καὶ „τῇλ' ἐξ Ἀσκανίης“ καὶ „Ἀρ-
„ναῖος δ' ὄνομ' ἔσκε, τὸ γὰρ θέτο πότνια μήτηρ,“ καὶ
„εἴλετο δὲ κληῖδ' εὐκαμπέα χειρὶ παχείῃ Πηνελόπῃ.“
δεδόσθω δὴ καὶ τοῦτο· ἀλλ' ἐκεῖνα οὐ δοτέα, οἷς προσ-
έχων ὁ Δημήτριος οὐδὲ τοῖς ὑπολαβούσι δεῖν ἀκούειν 20
„τηλόθεν ἐκ Χαλύβης“ πιθανῶς ἀντεῖρηκε. συγχωρή-
σας γὰρ ὅτι, εἰ καὶ μὴ ἔστι νῦν ἐν τοῖς Χάλυψι τὰ ἀρ-
γυρεῖα, ὑπάρξαι γε ἐνεδέχετο, ἐκεῖνό γε οὐ συγχωρεῖ
ὅτι καὶ ἐνδοξα ἦν καὶ ἄξια μνήμης, καθάπερ τὰ σιδη-
ρεῖα. τί δὲ κωλύει, φράη τις ἄν, καὶ ἐνδοξα εἶναι, καθά- 25
περ καὶ τὰ σιδηρεῖα; ἢ σιδήρου μὲν εὐπορία τόπον ἐπι-
φανῆ δύναται ποιεῖν, ἀργύρου δ' οὐ; τί δ' εἰ μὴ κατὰ
τοὺς ἥρωας, ἀλλὰ καθ' Ὅμηρον εἰς δόξαν ἀφῆκτο τὰ
ἀργυρεῖα, ἅρα μέμψαιτό τις ἄν τὴν ἀπόφασιν τοῦ ποι-
ητοῦ; πῶς οὖν εἰς τὸν ποιητὴν ἢ δόξα ἀφίκετο; πῶς 30

- δ' ἡ τοῦ ἐν τῇ Τεμέσῃ χαλκοῦ τῇ Ἰταλιώτιδι; πῶς δ' ἡ τοῦ Θηβαϊκοῦ πλούτου τοῦ κατ' Αἴγυπτον; καίτοι διπλάσιον σχεδόν τι διέχοντα τῶν Αἰγυπτίων Θηβῶν ἢ τῶν Χαλδαίων. ἀλλ' οὐδ' οἷς συνηγορεῖ, τούτοις
 5 ὁμολογεῖ· τὰ γὰρ περὶ τὴν Σκῆψιν τοποθετῶν τὴν C.552
 ἑαυτοῦ πατρίδα, πλησίον τῆς Σκήψεως καὶ τοῦ Αἰσῆ-
 που Νέαν κώμην καὶ Ἀργυρίαν λέγει καὶ Ἀλαξούριαν.
 ταῦτα μὲν οὖν εἰ καὶ ἔστι, πρὸς ταῖς πηγαῖς ἂν εἴη τοῦ
 Αἰσῆπου. ὁ δὲ Ἑκαταίος λέγει ἐπέκεινα τῶν ἐκβολῶν
 10 αὐτοῦ, ὅ τε Παλαίφατος πρότερον μὲν Ἀλόπην οἰκεῖν
 φήσας νῦν δὲ Ζέλειαν, οὐδὲν ὅμοιον λέγει τούτοις.
 εἰ δ' ἄρα ὁ Μενεκράτης, καὶ οὐδ' οὗτος τὴν Ἀλόπην ἢ
 Ἀλόβην ἢ ὅπως ποτὲ βούλονται γράφειν φράζει ἥτις
 ἐστίν, οὐδ' αὐτὸς ὁ Δημήτριος.
- 15 Πρὸς Ἀπολλόδωρον δὲ περὶ τῶν αὐτῶν ἐν τῷ 24
 Τρωικῷ διακόσμῳ διαλεγόμενον πολλὰ μὲν εἴρηται
 πρότερον, καὶ νῦν δὲ λεκτέον. οὐ γὰρ οἴεται δεῖν δέχε-
 σθαι τοὺς Ἀλιζώνους ἐκτὸς τοῦ Ἄλλος· μηδεμίαν γὰρ
 συμμαχίαν ἀφῖχθαι τοῖς Τρωσὶν ἐκ τῆς περαιᾶς τοῦ
 20 Ἄλλος. πρῶτον τοίνυν ἀπαιτήσομεν αὐτὸν τίνες εἰσὶν
 οἱ ἐντὸς τοῦ Ἄλλος Ἀλιζῶνοι, οἱ καὶ „τηλόθεν ἐξ Ἀλύ-
 „βης, ὅθεν ἀργύρου ἐστὶ γενέθλη.“ οὐ γὰρ ἔξει λέγειν·
 ἔπειτα τὴν αἰτίαν δι' ἣν οὐ συγχωρεῖ καὶ ἐκ τῆς περαιᾶς
 ἀφῖχθαί τινα συμμαχίαν· καὶ γὰρ εἰ τὰς ἄλλας ἐντὸς εἰ-
 25 ναι τοῦ ποταμοῦ πάσας συμβαίνει πλὴν τῶν Θρακῶν,
 μίαν γε ταύτην οὐδὲν ἐκώλυε πέραθεν ἀφῖχθαι ἐκ τῆς
 ἐπέκεινα τῶν Λευκοσύρων. ἢ πολεμήσοντας μὲν ἦν
 δυνατὸν διαβαίνειν ἐκ τῶν τόπων τούτων καὶ τῶν ἐπέ-
 κεινα, καθάπερ τὰς Ἀμαζόνας καὶ Τρῆρας καὶ Κιμμε-
 30 ρίους φασί, συμμαχήσοντας δ' ἀδύνατον; αἱ μὲν οὖν
 Ἀμαζόνες οὐ συνεμάχουν διὰ τὸ τὸν Πρίαμον πολεμή-
 σαι πρὸς αὐτὰς συμμαχοῦντα τοῖς Φρυγῶν „ἡματι τῷ

„ὅτε τ' ἦλθον Ἀμαζόνες ἀντιάνειραι“ φησὶν ὁ Προίαμος
 „καὶ γὰρ ἐγὼν ἐπίκουρος ἐὼν μετὰ τοῖσιν ἐλέγμην.“
 οἱ δ' ὁμοροῦντες αὐταῖς, οὔθ' οὔτως ἄπωθεν ὄντες
 ὥστε χαλεπὴν εἶναι τὴν ἐκείθεν μετὰπεμψιν οὔτ' ἐχ-
 θρας ὑποκειμένης, οὐδὲν ἐκωλύοντο οἶμαι συμμαχεῖν. 5

25 Ἀλλ' οὐδὲ δόξαν ἔχει τοιαύτην τῶν παλαιῶν εἰ-
 πεῖν ὥς συμφωνούντων ἀπάντων μηδένας ἐκ τῆς πε-
 ραίας τοῦ Ἄλφους κοινωσῆσαι τοῦ Τρωικοῦ πολέμου.
 πρὸς τὸνναντίον δὲ μῖλλον εὖροι τις ἂν μαρτυρίας·
 Μαιάνδριος γοῦν ἐκ τῶν Λευκοσύρων φησὶ τοὺς Ἑνε- 10
 τοὺς ὀρμηθέντας συμμαχῆσαι τοῖς Τρωσίν, ἐκείθεν
 δὲ μετὰ τῶν Θρακῶν ἀπᾶραι καὶ οἰκῆσαι περὶ τὸν τοῦ
 Ἀδρίου μυχόν, τοὺς δὲ μὴ μετασχόντας τῆς στρατείας
 Ἑνετοὺς Καππάδοκας γενέσθαι. συνηγορεῖν δ' ἂν
 δόξειε τῷ λόγῳ τούτῳ, διότι πᾶσα ἡ πλησίον τοῦ Ἄλφ- 15

0.5530ς Καππαδοκία ὅση παρατείνει τῇ Παφλαγονίᾳ ταῖς
 δυοὶ χρεῖται διαλέκτοις καὶ τοῖς ὀνόμασι πλεονάζει τοῖς
 Παφλαγονικοῖς, Βάγας καὶ Βιάσας καὶ Αἰνιάτης καὶ
 Ῥατώτης καὶ Ζαρδῶκης καὶ Τίβιος καὶ Γάσυς καὶ Ὀλί-
 γαςυς καὶ Μάνης· ταῦτα γὰρ ἐν τε τῇ Φαξημωνίτιδι 20
 καὶ τῇ Πιμωλίσίτιδι καὶ τῇ Γαξηλωνίτιδι καὶ Γαζακηνηῇ
 καὶ ἄλλαις πλείσταις χώραις ἐπιπολάζει τὰ ὀνόματα.
 αὐτὸς δὲ ὁ Ἀπολλόδωρος παρατίθησι τὸ τοῦ Ζηνοδό-
 του ὅτι γράφει „ἐξ Ἑνετῆς, ὅθεν ἡμιόνων γένος
 „ἀγροτεράων.“ ταύτην δὲ φησιν Ἐκαταλὸν τὸν Μι- 25
 λήσιον δέχεσθαι τὴν Ἀμισόν· ἢ δ' Ἀμισὸς εἴρηται διότι
 τῶν Λευκοσύρων ἐστὶ καὶ ἐκτὸς τοῦ Ἄλφους.

26 Εἴρηται δ' αὐτῷ που καὶ διότι ὁ ποιητὴς ἱστορίαν
 εἶχε τῶν Παφλαγόνων τῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ παρὰ τῶν
 πεξῇ διελθόντων τὴν χώραν, τὴν παραλλαν δ' ἡγνόει, 30
 καθάπερ καὶ τὴν ἄλλην τὴν Ποντικήν· ὠνόμαξε γὰρ
 [ἂν] αὐτήν. τὸνναντίον δ' ἔστιν ἀναστρέψαντα εἰπεῖν

ἐκ τῆς περιοδείας ὁρμηθέντα τῆς ἀποδοθείσης νυνί,
 ὥς τὴν μὲν παραλίαν πᾶσαν ἐπελήλυθε καὶ οὐδὲν τῶν
 ὄντων τότε ἀξίων μνήμης παραλέλοιπεν· εἰ δ' Ἡρά-
 κλειαν καὶ Ἀμαστριν καὶ Σινώπην οὐ λέγει τὰς μήπω
 5 συνωκισμένας οὐδὲν θαυμαστόν· τὴν δὲ μεσόγαιαν
 οὐδὲν ἄτοπον εἰ μὴ εἴρηκε. καὶ τὸ μὴ ὀνομάζειν δὲ
 πολλὰ τῶν γνωρίμων οὐκ ἀγνοίας ἐστὶ σημεῖον, ὅπερ
 καὶ ἐν τοῖς ἔμπροσθεν ἐπεσημηνάμεθα· ἀγνοεῖν γὰρ
 αὐτὸν πολλὰ τῶν ἐνδόξων ἔφη περὶ τὸν Πόντον, οἷον
 10 ποταμοὺς καὶ ἔθνη· ὀνομάσαι γὰρ ἄν. τοῦτο δ' ἐπὶ
 μὲν τινων σφόδρα σημειωδῶν δοίη τις ἄν, οἷον Σκύ-
 θας καὶ Μαιῶτιν καὶ Ἰστρον. οὐ γὰρ διὰ σημείων μὲν
 τοὺς νομάδας εἴρηκε γαλακτοφάγους ἀβίους τε, δι-
 καιοτάτους ἀνθρώπους, καὶ ἐτι ἀγανοὺς ἱππημολγούς,
 15 Σκύθας δὲ οὐκ ἂν εἶπεν ἢ Σαυρομάτας ἢ Σαρμάτας, εἰ
 δὴ οὕτως ὠνομάζοντο [τότε] ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων· οὐδ'
 ἂν Θρακῶν τε καὶ Μυσιῶν μνησθεὶς τῶν πρὸς τῷ Ἰστρῳ
 αὐτὸν παρεσίγησε μέγιστον τῶν ποταμῶν ὄντα, καὶ ἄλ-
 λως ἐπιφόρως ἔχων πρὸς τὸ τοῖς ποταμοῖς ἀφορίζεσθαι
 20 τοὺς τόπους, οὐδ' ἂν Κιμμερίους λέγων παρήκε τὸν
 Βόσπορον ἢ τὴν Μαιῶτιν.

Ἐπὶ δὲ τῶν μὴ οὕτω σημειωδῶν ἢ μὴ τότε ἢ μὴ 27
 πρὸς τὴν ὑπόθεσιν τί ἂν τις μέμφοιτο; οἷον τὸν Τά-
 ναϊν δι' οὐδὲν ἄλλο γνωριζόμενον ἢ διότι τῆς Ἀσίας
 25 καὶ τῆς Εὐρώπης ὄριόν ἐστιν· ἀλλ' οὔτε τὴν Ἀσίαν 0.554
 οὔτε τὴν Εὐρώπην ὠνόμαζόν πω οἱ τότε, οὐδὲ διή-
 ρητο οὕτως εἰς τρεῖς ἡπείρους ἢ οἰκουμένην· ὠνόμασε
 γὰρ ἄν που διὰ τὸ λίαν σημειῶδες, ὥς καὶ τὴν Λιβύην
 καὶ τὸν λίβη τὸν ἀπὸ τῶν ἐσπερίων τῆς Λιβύης πνέ-
 30 οντα· τῶν δ' ἡπείρων μήπω διωρισμένων οὐδὲ τοῦ
 Ταναΐδος ἔδει καὶ τῆς μνήμης αὐτοῦ. πολλὰ δὲ καὶ
 ἀξιολομημόνευτα μὲν, οὐχ ὑπέδραμε δέ· πολὺ γὰρ δὴ

καὶ τὸ ἐπελευστικὸν εἶδος ἐν τε τοῖς λόγοις καὶ ἐν ταῖς
 πράξεσιν ἐστίν. ἐκ πάντων δὲ [τούτων καὶ] τῶν τοι-
 ούτων δηλὸν ἐστίν ὅτι μοχθηρῶ σημείῳ χρῆται πᾶς ὁ
 ἐκ τοῦ μὴ λέγεσθαι τι ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ τὸ ἀγνοεῖσθαι
 ἐκεῖνο ὑπ' αὐτοῦ τεκμαιρόμενος. καὶ δεῖ διὰ πλείο- 5
 νων παραδειγμάτων ἐξελέγχειν αὐτὸ μοχθηρὸν ὄν.
 πολλῶ γὰρ αὐτῷ κέχρηται πολλοί. ἀνακρουστέον
 οὖν αὐτοὺς προφέροντας τὰ τοιαῦτα, εἰ καὶ ταυτολο-
 γήσομεν· οἷον ἐπὶ τῶν ποταμῶν εἴ τις λέγοι τῷ μὴ
 ὠνομάσθαι ἀγνοεῖσθαι εὐήθῃ φήσομεν τὸν λόγον· 10
 ὅπου γε οὐδὲ Μέλητα τὸν παρὰ τὴν Σμύρναν ῥέοντα
 ὠνόμακε ποταμόν, τὴν ὑπὸ τῶν πλείστων λεγομένην
 αὐτοῦ πατρίδα, Ἑρμον ποταμόν καὶ Ἰλλον ὀνομάζων,
 οὐδὲ Πακτωλὸν τὸν εἰς ταῦτό τούτοις ρεῖθρον ἐμβάλ-
 λοντα, τὴν δ' ἀρχὴν ἀπὸ τοῦ Τιμώλου ἔχοντα οὐ μέ- 15
 μνηται· οὐδ' αὐτὴν Σμύρναν λέγει, οὐδὲ τὰς ἄλλας
 τῶν Ἰώνων πόλεις καὶ τῶν Αἰολέων τὰς πλείστας, Μί-
 λητον λέγων καὶ Λέσβον καὶ Τένεδον, οὐδὲ Αἰθαῖον
 τὸν παρὰ Μαγνησίαν ῥέοντα οὐδὲ δὴ Μαρσύαν τοὺς
 εἰς τὸν Μαίανδρον ἐκδιδόντας, ἐκεῖνον ὀνομάζων καὶ 20
 πρὸς τούτοις „Ρῆσόν θ' Ἐπτάπορόν τε Κάρησόν τε
 „Ροδίον τε,“ καὶ τοὺς ἄλλους, ὧν οἱ πλείους ὀχρεῶν
 οὐκ εἰσι μέλεις. πολλὰς τε χώρας ὀνομάζων καὶ πό-
 λεις τότε μὲν καὶ τοὺς ποταμοὺς καὶ ὄρη συγκατα-
 λέγει τότε δ' οὐ· τοὺς γοῦν κατὰ τὴν Αἰτωλίαν καὶ τὴν 25
 Ἀττικὴν οὐ λέγει οὐδ' ἄλλους πλείους· ἔτι δὲ καὶ τῶν
 πόρρω μεμνημένος τῶν ἐγγὺς σφόδρα οὐ μέμνηται,
 οὐ δῆπου ἀγνοῶν αὐτοὺς γνωρίμους τοῖς ἄλλοις ὄν-
 τας· οὐδὲ δὴ τοὺς ἐγγὺς ἐπίσης, ὧν τοὺς μὲν ὀνομά-
 ζει τοὺς δὲ οὐ, οἷον Αὐκίους μὲν καὶ Σολύμους, Μι- 30

9. post ταυτολογήσομεν: τὸν λόγον. 18. post λέγων: καὶ
 Σάμω

λύας δ' οὐ, οὐδὲ Παμφύλους οὐδὲ Πισίδας· και Πα-
φλαγόνας μὲν και Φρύγας και Μυσούς, Μαριανδυ-
νούς δ' οὐ, οὐδὲ Θυνούς οὐδὲ Βιθυνούς οὐδὲ Βέ-
βρυκας· Ἀμαζόνων τε μέμνηται, Λευκοσύρων δ' οὐ,
5 οὐδὲ Σύρων οὐδὲ Καππαδόκων οὐδὲ Λυκαόνων, Φοί-
νικας και Αἰγυπτίους και Αἰθίοπας θρυλῶν· και Ἀλή-C.555
ιον μὲν πεδίου λέγει και Ἀρίμους, τὸ δὲ ἔθνος ἐν ᾧ
ταῦτα σιγᾷ. ὁ μὲν δὴ τοιοῦτος ἔλεγχος ψευδῆς ἐστίν,
ὁ δ' ἀληθῆς, ὅταν δείκνυνται ψεῦδος λεγόμενόν τι. ἀλλ'
10 οὐδ' ἐν τῷ τοιούτῳ κατορθῶν ἐδείχθη, ὅτε γε ἐθάρ-
ρησε πλάσματα λέγειν τοὺς ἀγανούς ἱππημολγούς
[και] γαλακτοφάγους. τοσαῦτα και πρὸς Ἀπολλόδω-
ρον· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν ἐξῆς περιήγησιν.

Ἵπὲρ μὲν δὴ τῶν περὶ Φαρνακίαν και Τραπε- 28
15 ζοῦντα τόπων οἱ Τιβαρηνοὶ και Χαλδαῖοι μέχρι τῆς μι-
κρᾶς Ἀρμενίας εἰσίν. αὕτη δ' ἐστὶν εὐδαίμων ἱκανῶς
χώρα· δυνασται δ' αὐτὴν κατεῖχον αἰεὶ, καθάπερ τὴν
Σωφηνήν, τοτὲ μὲν φίλοι τοῖς ἄλλοις Ἀρμενίοις ὄντες
τοτὲ δὲ ἰδιοπραγοῦντες· ὑπηκόους δ' εἶχον και τοὺς
20 Χαλδαίους και Τιβαρηνούς, ὥστε μέχρι Τραπεζοῦν-
τος και Φαρνακίας διατείνειν τὴν ἀρχὴν αὐτῶν. αὕξη-
θεις δὲ Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ και τῆς Κολχίδος κα-
τέστη κύριος και τούτων ἀπάντων, Ἀντιπάτρου τοῦ
Σίσιδος παραχωρήσαντος αὐτῷ. ἐπεμελήθη δὲ οὕτω
25 τῶν τόπων τούτων ὥστε πέντε και ἑβδομήκοντα φρού-
ρια ἐν αὐτοῖς κατεσκευάσατο, οἷσπερ τὴν πλείστην
γάξαν * ἐνεχείρισε. τούτων δ' ἦν ἀξιολογώτατα ταῦ-
τα, Ἵθαρα και Βασγοιδάριζα και Σινορία, ἐπιπεφυ-
κὸς τοῖς ὀρίοις τῆς μεγάλης Ἀρμενίας χωρίον, διόπερ
10 Θεοφάνης Σινορίαν παρωνόμασεν. ἡ γὰρ τοῦ Παρυ-
άδρου πᾶσα ὄρεινὴ τοιαύτας ἐπιτηδειότητας ἔχει πολ-
λὰς εὐνδρός τε οὖσα και ὑλώδης και ἀποτόμοις φά

ραγξι καὶ κρημνοῖς διειλημμένη πολλαχόθεν· ἐτετεί-
χιστο γοῦν ἐνταῦθα τὰ πλείστα τῶν γαζοφυλακίων,
καὶ δὴ καὶ τὸ τελευταῖον εἰς ταύτας κατέφυγε τὰς ἐσχα-
τίας τῆς Ποντικῆς βασιλείας ὁ Μιθριδάτης ἐπιόντος
Πομπηίου, καὶ τῆς Ἀκισσηνῆς κατὰ Δάστειρα εὖν- 5
δρον ὄρος καταλαβόμενος (πλησίον δ' ἦν καὶ ὁ Εὐ-
φράτης ὁ διορίζων τὴν Ἀκισσηνὴν ἀπὸ τῆς μικρᾶς
Ἀρμενίας) διέτριψε τέως ἕως πολιορκούμενος ἡναγ-
κάσθη φυγεῖν διὰ τῶν ὄρων εἰς Κολχίδα ἀνακείμενος εἰς
Βόσπορον. Πομπήιος δὲ περὶ τὸν τόπον τοῦτον πόλιν 10
ἔκτισεν ἐν τῇ μικρᾷ Ἀρμενίᾳ Νικόπολιν, ἣ καὶ νῦν
συμμένει καὶ οἰκεῖται καλῶς.

29 Τὴν μὲν οὖν μικρὰν Ἀρμενίαν ἄλλοι ἄλλων
ἐχόντων, ὥς ἐβούλοντο Ῥωμαῖοι, τὸ τελευταῖον εἶχεν
ὁ Ἀρχέλαος. τοὺς δὲ Τιβαρηνοὺς καὶ Χαλδαίους μέ- 15
χρι Κολχίδος καὶ Φαρνακίας καὶ Τραπεζοῦντος ἔχει
Πυθοδώρις, γυνὴ σάφρων καὶ δυνατὴ προῖστασθαι
πραγμάτων. ἔστι δὲ θυγάτηρ Πυθοδώρου τοῦ Τραλ-
C.556 λιανοῦ, γυνὴ δ' ἐγένετο Πολέμωνος καὶ συνεβασίλευ-
σεν ἐκείνῳ χρόνον τινα, εἴτα διεδέξατο τῆς ἀρχῆς, 20
τελευτήσαντος ἐν τοῖς Ἀσπουργιανοῖς καλουμένοις τῶν
περὶ τὴν Σινδικὴν βαρβάρων· θυεῖν δ' ἐκ τοῦ Πολέ-
μωνος ὄντων υἱῶν καὶ θυγατρὸς ἣ μὲν ἐδόθη Κότυϊ
τῷ Σαπαίῳ, δολοφονηθέντος δὲ ἐχέρευσεν παῖδας ἔχου-
σα ἐξ αὐτοῦ· δυναστεύει δ' ὁ πρεσβύτατος αὐτῶν· 25
τῶν δὲ τῆς Πυθοδωρίδος υἱῶν ὁ μὲν ἰδιώτης συνδιώ-
κει τῇ μητρὶ τὴν ἀρχήν, ὁ δὲ νεωστὶ καθέσταται τῆς
μεγάλης Ἀρμενίας βασιλεύς. αὐτὴ δὲ συνώκησεν Ἀρ-
χελάῳ καὶ συνέμεινεν ἐκείνῳ μέχρι τέλους, νῦν δὲ
χηρεῖται, τὰ τε λεχθέντα ἔχουσα χωρία καὶ ἄλλα ἐκεί- 30
νων χαριέστερα, περὶ ὧν ἐφεξῆς ἐροῦμεν.

30 Τῇ γὰρ Φαρνακίᾳ συνεχῆς ἐστὶν ἡ Σιδήνη καὶ ἡ

Θεμισκυρα. τούτων δ' ἡ Φανάροια ὑπέρεκκεται μέρος
 ἔχουσα τοῦ Πόντου τὸ κράτιστον· καὶ γὰρ ἐλαιόφυτος
 ἐστὶ καὶ εὖοινος καὶ τὰς ἄλλας ἔχει πάσας ἀρετάς, ἐκ
 μὲν τῶν ἐφ' ὧν μερῶν προβεβλημένη τὸν Παρυάδρην
 5 παράλληλον αὐτῇ κατὰ μῆκος, ἐκ δὲ τῶν πρὸς δύσιν
 τὸν Αἰθρον καὶ τὸν Ὀφλιμον. ἔστι δ' αὐλὼν καὶ μῆ-
 κος ἔχων ἀξιόλογον καὶ πλάτος· διαρρεῖ δ' αὐτὴν ἐκ
 μὲν τῆς Ἀρμενίας ὁ Λύκος, ἐκ δὲ τῶν περὶ Ἀμάσειαν
 στενῶν ὁ Ἴρις· συμβάλλουσι δ' ἀμφοτέρωι κατὰ μέ-
 10 σον πρὸς τὸν αὐλῶνα, ἐπὶ τῇ συμβολῇ δ' ἴδρυνται πόλεις,
 ἣν ὁ μὲν πρῶτος ὑποβεβλημένος Εὐπατορίαν ἀφ' αὐ-
 τοῦ προσηγόρευσε, Πομπήιος δ' ἡμιτελὴ καταλαβὼν,
 προσθεὶς χώραν καὶ οἰκήτορας Μαγνόπολιν προσεῖ-
 πεν. αὕτη μὲν οὖν ἐν μέσῳ κεῖται τῷ πεδίῳ, πρὸς
 15 αὐτῇ δὲ τῇ παρωρεῖα τοῦ Παρυάδρου Κάβειρα ἴδρυ-
 ται, σταδίοις ἑκατὸν καὶ πεντήκοντά· που νοτιωτέρα
 τῆς Μαγνοπόλεως, ὅσον καὶ Ἀμάσεια δυσμικωτέρα
 αὐτῆς ἐστίν· ἐν δὲ τοῖς Καβείοις τὰ βασιλεία Μιθρι-
 δάτου κατεσκεύαστο καὶ ὁ ὑδραλέτης καὶ τὰ ζωγρεῖα
 20 καὶ αἱ πλησίον θῆραι καὶ τὰ μέταλλα.

Ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸ Καινὸν χωρίον προσαγορευ- 31
 θέν, ἐρυμνὴ καὶ ἀπότομος πέτρα, διέχουσα τῶν Κα-
 βείρων ἑλαττον ἢ διακοσίους σταδίους· ἔχει δ' ἐπὶ τῇ
 κορυφῇ πηγὴν ἀναβάλλουσαν πολὺ ὕδωρ, πρὸς τε
 25 τῇ ρίζῃ ποταμὸν καὶ φάραγγα βαθεῖαν· τὸ δ' ὕψος
 ἐξαισίον τῆς πέτρας ἐστὶ * τοῦ αὐχένος, ὥστ' ἀπολιόρ-
 κητός ἐστι· τετελείσται δὲ θαυμαστῶς πλὴν ὅσον οἱ
 Ῥωμαῖοι κατέσπασαν· οὕτω δ' ἐστὶν ἅπαντα ἡ κύκλῳ
 κατάδρυμος καὶ ὄρεινὴ καὶ ἄνυδρος, ὥστ' ἐντὸς ἑκα-
 30 τὸν καὶ εἰκοσι σταδίων μὴ εἶναι δυνατόν στρατοπεδεύ-
 σασθαι. ἐνταῦθα μὲν ἦν τῷ Μιθριδάτῃ τὰ τιμιώτατα C.557
 τῶν κειμηλίων, ἃ νῦν ἐν τῷ Καπιτωλίῳ κεῖται Πομ-

πηλίου ἀναθέντος. ταύτην δὴ τὴν χώραν ἔχει πᾶσαν ἡ Πυθοδοῶρις προσεχῇ οὖσαν τῇ βαρβάρῳ τῇ ὑπ' αὐτῆς κατεχομένη, καὶ τὴν Ζηλῆτιν καὶ Μεγαλοπολίτιν. τὰ δὲ Κάβειρα Πομπηίου σκευάσαντος εἰς πόλιν καὶ καλέσαντος Διόσπολιν, ἐκεῖνη προσκατεσκέυασε καὶ Σε- 5 βαστὴν μετωνόμασε, βασιλείῳ τε τῇ πόλει χρῆται. ἔχει δὲ καὶ τὸ ἱερὸν Μηνὸς Φαρνάκου καλούμενον, τὴν Ἀμερίαν κωμόπολιν πολλοὺς ἱεροδούλους ἔχουσιν καὶ χώραν ἱερὰν, ἣν ὁ ἱερόμενος ἀεὶ καρποῦται. ἐτίμησαν δ' οἱ βασιλεῖς τὸ ἱερὸν τοῦτο οὕτως εἰς ὑπερβολὴν 10 ὥστε τὸν βασιλικὸν καλούμενον ὄρκον τοῦτον ἀπέφηναν „τύχην βασιλέως“ καὶ „Μῆνα Φαρνάκου.“ ἔστι δὲ καὶ τοῦτο τῆς σελήνης τὸ ἱερόν, καθάπερ τὸ ἐν Ἀλβανοῖς καὶ τὰ ἐν Φρυγίᾳ, τό τε τοῦ Μηνὸς ἐν τῷ ὁμωνύμῳ τόπῳ καὶ τὸ τοῦ Ἀσκαίου τὸ πρὸς Ἀντιοχείᾳ τῇ 15 πρὸς Πισιδίᾳ καὶ τὸ ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἀντιοχέων.

32 Ὑπὲρ δὲ τῆς Φαναροίας ἔστι τὰ Κόμανα τὰ ἐν τῷ Πόντῳ, ὁμώνυμα τοῖς ἐν τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ καὶ τῇ αὐτῇ θεῷ καθιερωμένα, ἀφιδρυνθέντα ἐκείθεν, σχεδὸν δέ τι καὶ τῇ ἀγωγῇ παραπλησίᾳ κεχρημένα τῶν τε 20 ἱερουργιῶν καὶ τῶν θεοφοριῶν καὶ τῆς περὶ τοὺς ἱερέας τιμῆς, καὶ μάλιστα ἐπὶ τῶν πρὸ τοῦ βασιλέων, ἡνίκα δις τοῦ ἔτους κατὰ τὰς ἐξόδους λεγομένας τῆς θεοῦ διάδημα φορῶν ἐτύγχανεν ὁ ἱερεὺς, καὶ ἦν δεύτερος κατὰ τιμὴν μετὰ τὸν βασιλέα. 25

33 Ἐμνήσθημεν δὲ πρότερον Δορυλάου τε τοῦ τακτικοῦ, ὅς ἦν πρόπαππος τῆς μητρὸς ἡμῶν, καὶ ἄλλου Δορυλάου, ὅς ἦν ἐκείνου ἀδελφιδοῦς υἱὸς δὲ Φιλεταίρου, καὶ διότι ἐκεῖνος τῶν ἄλλων τιμῶν παρὰ τοῦ Εὐπάτορος τῶν μεγίστων τυχὼν καὶ δὴ καὶ τῆς ἐν 30 Κομάνοις ἱερωσύνης ἐφωράθη τὴν βασιλείαν ἀφιστάς Ῥωμαίοις· καταλυθέντος δ' ἐκείνου συνδιεβλήθη καὶ

τὸ γένος. ὁπὲ δὲ Μοαφέρωνης ὁ θεῖος τῆς μητρὸς ἡμῶν
 εἰς ἐπιφάνειαν ἦλθεν ἥδη πρὸς καταλύσει τῆς βασι-
 λείας, καὶ πάλιν τῷ βασιλεῖ συνητύχησαν καὶ αὐτὸς
 καὶ οἱ ἐκείνου φίλοι, πλὴν εἴ τινες ἐφθησαν προαπο-
 5 στάντες αὐτοῦ, καθάπερ ὁ πάππος ἡμῶν ὁ πρὸς αὐ-
 τῆς, ὅς ἰδὼν τὰ τοῦ βασιλέως κακῶς φερόμενα ἐν τῷ
 πρὸς Λεύκολλον πολέμῳ, καὶ ἅμα ἡλλοτριωμένος αὐ-
 τοῦ δι' ὀργήν, ὅτι ἀνέψιδον αὐτοῦ Τίβιον καὶ νιδὸν ἐκεί-
 νου Θεόφιλον ἐτύγχανεν ἀπεκτονῶς νεωστί, ὥρμησε
 10 τιμωρεῖν ἐκείνοις τε καὶ ἑαυτῷ, καὶ λαβὼν παρὰ τοῦ
 Λευκόλλου πίστεις ἀφίστησιν αὐτῷ πεντεκαίδεκα φρού-C.558
 ρια· καὶ ἐπαγγελίαι μὲν ἐρένοντο ἀντὶ τούτων μεγά-
 λαι, ἐπελθὼν δὲ Πομπήιος ὁ διαδεξάμενος τὸν πόλε-
 μον πάντας τοὺς ἐκείνῳ τι χαρισαμένους ἐχθροὺς ὑπέ-
 15 λαβε διὰ τὴν γενομένην αὐτῷ πρὸς ἐκείνον ἀπέχθειαν,
 διαπολεμήσας δὲ καὶ ἐπανελθὼν οἴκαδε ἐξευέκνησεν
 ὥστε τὰς τιμὰς, ἃς ὑπέσχετο ὁ Λεύκολλος τῶν Ποντι-
 κῶν τισι, μὴ κυρῶσαι τὴν σύγκλητον· ἄδικον γὰρ
 εἶναι κατορθώσαντος ἐτέρου τὸν πόλεμον τὰ βρα-
 20 βεῖα ἐπ' ἄλλῳ γενέσθαι καὶ τὴν τῶν ἀριστείων δια-
 νομήν.

Ἐπὶ μὲν οὖν τῶν βασιλέων οὕτω τὰ Κόμανα διω- 34
 κεῖτο ὥς εἴρηται, παραλαβὼν δὲ Πομπήιος τὴν ἐξου-
 σίαν Ἀρχέλαον ἐπέστησεν ἱερέα καὶ προσώρισεν αὐτῷ
 25 χώραν δίσχοινον κύκλῳ (τοῦτο δ' ἔστιν ἐξήκοντα στά-
 διοι) πρὸς τῇ ἱερᾷ, προστάξας τοῖς ἐνοικοῦσι πειθαρ-
 χεῖν αὐτῷ· τούτων μὲν οὖν ἡγεμῶν ἦν καὶ τῶν τὴν
 πόλιν οἰκούντων ἱεροδούλων κύριος πλὴν τοῦ πιπρά-
 σκειν· ἦσαν δὲ οὐκ ἐλάττους οὐδ' ἐνταῦθα τῶν ἐξα-
 30 κισχιλίων. ἦν δ' οὗτος Ἀρχέλαος υἱὸς μὲν τοῦ ὑπὸ

Σύλλα καὶ τῆς συγκλήτου τιμηθέντος, φίλος δὲ Γά-
 βινίου τῶν ὑπατικῶν τινος. ἐκείνου δὲ πεμφθέντος
 εἰς Συρίαν ἦκε καὶ αὐτὸς ἐπ' ἐλπίδι τοῦ κοινωυήσειν
 αὐτῷ παρασκευαζομένῳ πρὸς τὸν Παρθικὸν πόλεμον,
 οὐκ ἐπιτρεπούσης δὲ τῆς συγκλήτου ταύτην ἀφείλ τὴν 5
 ἐλπίδα ἄλλην εὗρατο μείζω. ἐτύγχανε γὰρ Πτολεμαῖος
 ὁ τῆς Κλεοπάτρας πατὴρ ὑπὸ τῶν Αἰγυπτίων ἐκβε-
 βλημένος, θυγάτηρ δ' αὐτοῦ κατεῖχε τὴν βασιλείαν,
 ἀδελφὴ πρεσβυτέρα τῆς Κλεοπάτρας· ταύτη ζητου-
 μένου ἀνδρὸς βασιλικοῦ γένους ἐνεχείρισεν ἑαυτὸν 10
 τοῖς συμπράττουσι, προσποιησάμενος Μιθριδάτου τοῦ
 Εὐπάτορος υἱὸς [εἶναι], καὶ παραδεχθεὶς ἐβασίλευσεν
 ἕξ μῆνας. τοῦτον μὲν οὖν ὁ Γαβίνιος ἀνείλεν ἐν πα-
 35 ρατάξει κατὰγων τὸν Πτολεμαῖον. υἱὸς δ' αὐτοῦ
 τὴν ἱερωσύνην παρέλαβεν· εἰθ' ὕστερον Λυκομήδης, 15
 ᾧ καὶ τετράσχοινος ἄλλη προστετέθη· καταλυθέντος δὲ
 καὶ τούτου νῦν ἔχει Δύτευτος υἱὸς Ἀδιατόριγος, ὃς
 δοκεῖ ταύτης τυγχάνειν τῆς τιμῆς παρὰ Καίσαρος τοῦ
 Σεβαστοῦ δι' ἀρετὴν. ὁ μὲν γὰρ Καῖσαρ θριαμβεύ-
 σας τὸν Ἀδιατόριγα μετὰ παίδων καὶ γυναικὸς ἔγνω 20
 ἀναιρεῖν μετὰ τοῦ πρεσβυτάτου τῶν παίδων (ἦν δὲ
 πρεσβυτάτος οὗτος), τοῦ δὲ δευτέρου τῶν ἀδελφῶν
 αὐτοῦ φήσαντος εἶναι πρεσβυτάτου πρὸς τοὺς ἀπά-
 γοντας στρατιώτας, ἕρις ἦν ἀμφοτέροις πολὺν χρό-
 C.559νον ἕως οἱ γονεῖς ἐπεισαν τὸν Δύτευτον παραχωρῆ- 25
 σαι τῷ νεωτέρῳ τῆς νίκης· αὐτὸν γὰρ ἐν ἡλικίᾳ μάλ-
 λον ὄντα ἐπιτηδειότερον κηδεμόνα τῇ μητρὶ ἔσεσθαι
 καὶ τῷ λειπομένῳ ἀδελφῷ· οὕτω δὲ τὸν μὲν συναπο-
 θανεῖν τῷ πατρὶ, τοῦτον δὲ σωθῆναι καὶ τυχεῖν τῆς
 τιμῆς ταύτης. αἰσθόμενος γάρ, ὥς ἔοικε, Καῖσαρ 30
 ἤδη τῶν ἀνθρώπων ἀνηρημένων ἡχθέσθη, καὶ τοὺς

γε σωζομένους εὐεργεσίας καὶ ἐπιμελείας ἀξιόλους ὑπέλαβε δοὺς αὐτοῖς ταύτην τὴν τιμὴν.

Τὰ μὲν οὖν Κόμανα εὐανδρεῖ καὶ ἔστιν ἐμπόριον 36
τοῖς ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας ἀξιόλογον· συνέρχονται δὲ κα-
5 τὰ τὰς ἐξόδους τῆς θινοῦ πανταχόθεν ἐκ τε τῶν πόλεων
καὶ τῆς χώρας ἄνδρες ὁμοῦ γυναιξὶν ἐπὶ τὴν ἐορτήν·
καὶ ἄλλοι δὲ κατ' εὐχὴν αἰεὶ τινες ἐπιδημοῦσι θυσίας
ἐπιτελοῦντες τῇ θιῷ. καὶ εἰσιν ἄβροδίται οἱ ἐνοι-
κοῦντες, καὶ οἰνόφυτα τὰ κτήματα αὐτῶν ἔστι πάντα,
10 καὶ πληθὺς γυναικῶν τῶν ἐργαζομένων ἀπὸ τοῦ σώ-
ματος, ὧν αἱ πλείους εἰσὶν ἱεραί. τρόπον γὰρ δὴ τινα
μικρὰ Κόρινθος ἔστιν ἡ πόλις· καὶ γὰρ ἐκεῖ διὰ τὸ
πληθὺς τῶν ἐταίρων, αὐτῆς Ἀφροδίτης ἦσαν ἱεραί,
πολὺς ἦν ὁ ἐπιδημῶν καὶ ἐνεορτάζων τῷ τόπῳ· οἱ δ'
15 ἐμπορικοὶ καὶ στρατιωτικοὶ τελέως ἔξανηλίσκοντο, ὥστ'
ἐπ' αὐτῶν καὶ παροιμίαν ἐκπέσειν τοιαύτην „οὐ παν-
„τὸς ἀνδρὸς εἰς Κόρινθόν ἐσθ' ὁ πλοῦς.“ τὰ μὲν δὴ
Κόμανα τοιαῦτα.

Τὴν δὲ κύκλῳ πᾶσαν ἔχει Πυθιοδορίς, ἥς ἥ τε 37
20 Φανάροια ἔστι καὶ ἡ Ζηλῆτις καὶ ἡ Μεγαλοπολίτις.
περὶ μὲν Φαναροίας εἴρηται· ἡ δὲ Ζηλῆτις ἔχει πόλιν
Ζῆλα ἐπὶ χώματι Σεμιράμιδος τετειχισμένην, ἔχουσαν
τὸ ἱερὸν τῆς Ἀναΐτιδος, ἣν περ καὶ οἱ Ἀρμένιοι σέβον-
ται. αἱ μὲν οὖν ἱεροποιαὶ μετὰ μεζονος ἀγιστείας
25 ἐνταῦθα συντελοῦνται, καὶ τοὺς ὄρκους περὶ τῶν με-
γίστων ἐνταῦθα Ποντικοὶ πάντες ποιοῦνται· τὸ δὲ
πληθὺς τῶν ἱεροδούλων καὶ αἱ τῶν ἱερέων τιμαὶ παρὰ
μὲν τοῖς βασιλεῦσι τὸν αὐτὸν εἶχον τύπον ὅν περ προ-
είπομεν, νυνὶ δὲ ἐπὶ τῇ Πυθιοδορίδι πάντ' ἔστιν. ἐκά-
30 κωσαν δὲ πολλοὶ καὶ ἐμείωσαν τό τε πληθὺς τῶν ἱερο-
δούλων καὶ τὴν ἄλλην εὐπορίαν. ἐμειώθη δὲ καὶ ἡ
παρακειμένη χώρα μερισθεῖσα εἰς πλείους δυναστείας.

ἡ λεγομένη Ζηλῆτις. τὸ παλαιὸν μὲν γὰρ οἱ βασιλεῖς οὐχ ὥς πόλιν ἀλλ' ὥς ἱερὸν διώκουν τῶν Περσικῶν θεῶν τὰ Ζήλα, καὶ ἦν ὁ ἱερεὺς κύριος τῶν πάντων· ὥκειτο δ' ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἱεροδούλων καὶ τοῦ ἱερέως ὄντος ἐν περιουσίᾳ μεγάλη, καὶ * τοῖς περὶ αὐ- 5
 C.560 ρέως. Πομπήιος δὲ πολλὰς ἐπαρχίας προσώρισε τῷ τόπῳ καὶ πόλιν ὠνόμασε καὶ ταύτην καὶ τὴν Μεγαλόπολιν, συνθεὶς ταύτην τε εἰς ἓν τὴν τε Κουλουπηνήν καὶ τὴν Καμισσηνήν, ὁμόρους οὖσας τῇ τε μικρᾷ Ἀρμενίᾳ καὶ 10
 τῇ Λασιανσηνῇ, ἐχούσας ὄρυκτους ἄλας καὶ ἔρυμα ἀρχαῖον τὰ Κάμισα νῦν κατεσπασμένον· οἱ δὲ μετὰ ταῦτα ἡγεμόνες τῶν Ῥωμαίων τῶν θυεῖν πολιτευμάτων τούτων τὰ μὲν τοῖς Κομάνων ἱερεῦσι προσένειμαν, τὰ δὲ τῷ Ζήλων ἱερεῖ, τὰ δ' Ἀτεπόριγι, δυνάστη τινὶ 15
 τοῦ τετραρχικοῦ γένους τῶν Γαλατῶν ἀνδρί· τελευτήσαντος δ' ἐκείνου ταύτην μὲν τὴν μερίδα οὐ πολλὴν οὖσαν ὑπὸ Ῥωμαίοις εἶναι συμβάλει καλουμένην ἐπαρχίαν (καὶ ἔστι σύστημα καθ' αὐτὸ τὸ πολίχνιον συνοικισάντων τὰ Κάρανα, ἀφ' οὗ καὶ ἡ χώρα Καρα- 20
 νῆτις λέγεται), τὰ δὲ λοιπὰ ἔχει Πυθοδώρις καὶ ὁ Δύ-
 τευτος.

38 Δεῖπεται δὲ τοῦ Πόντου [τὰ] μεταξὺ ταύτης τε τῆς χώρας καὶ τῆς Ἀμισσηνῶν καὶ Σινωπέων, πρὸς τε τὴν Καππαδοκίαν συντείνοντα καὶ Γαλάτας καὶ Πα- 25
 φλαγόνας. μετὰ μὲν οὖν τὴν Ἀμισσηνῶν μέχρι τοῦ Ἄλνους ἡ Φαξημωνίτις ἔστιν, ἣν Πομπήιος Νεαπολί-
 τιν' ὠνόμασε κατὰ Φαξημῶνα κώμην, [πόλιν] ἀποδείξας τὴν κατοικίαν καὶ προσαγορεύσας Νεάπολιν. ταύτης δὲ τῆς χώρας τὸ μὲν προσάρκτιον πλευρὸν ἢ 30

1. post Ζηλῆτις: ἡ ἔχει πόλιν Ζήλα ἐπὶ χώματι

Γαζηλωνῖτις συγκλείει καὶ ἡ τῶν Ἀμισσηνῶν, τὸ δὲ ἐσπέριον ὁ Ἄλυσ, τὸ δ' ἐφ' ὃν ἡ Φανάροια, τὸ δὲ λοιπὸν ἡ ἡμετέρα χώρα ἡ τῶν Ἀμασέων, πολὺ πασῶν πλείστη καὶ ἀρίστη. τὸ μὲν οὖν πρὸς τῇ Φαναροίᾳ μέ-
 5 ρος τῆς Φαξημωνίτιδος λίμνη κατέχει πελαγία τὸ μέ-
 γεθος ἡ Στιφάνη καλουμένη, πολύοπος καὶ κύκλω
 νομὰς ἀφθόλους ἔχουσα καὶ παντοδαπὰς· ἐπὶκειται δ'
 αὐτῇ φρούριον ἐρυμνὸν ἐρημον νῦν Ἰκίξари, καὶ
 πλησίον βασιλείου κατεσκαμμένον· ἡ δὲ λοιπὴ ψιλὴ τὸ
 10 πλέον καὶ σιτοφόρος χώρα. ὑπέρεκειται δὲ τῆς τῶν Ἀμα-
 σέων τὰ τε θερμὰ ὕδατα τῶν Φαξημωνιτῶν ὑγρὴν ἀ-
 σφόδρα, καὶ τὸ Σαγύλιον ἐπὶ ὄρους ὀρθίου καὶ ὑψη-
 λοῦ πρὸς ὀξείαν ἀνατείνοντος ἄκραν ἔρυμα ἰδρυμένον
 ἔχον καὶ ὑδρεῖον θαψιλές, ὃ νῦν ὀλιγώρηται, τοῖς δὲ
 15 βασιλεῦσιν ἦν χρήσιμον εἰς πολλὰ. ἐνταῦθα δὲ ἐάλω
 καὶ διεφθάρη ὑπὸ τῶν Φαρνάκου τοῦ βασιλέως παλ-
 δων Ἀρσάκης, δυναστεύων καὶ νεωτερίζων, ἐπιτρέ-
 ψαντος οὐδενὸς τῶν ἡγεμόνων· ἐάλω δὲ οὐ βίᾳ τοῦ
 ἐρύματος ληφθέντος ὑπὸ Πολέμωνος καὶ Λυκομήδους,
 20 βασιλέων ἀμφοῖν, ἀλλὰ λιμῶ· ἀνέφυγε γὰρ εἰς τὸ
 ὄρος παρασκευῆς χωρὶς εἰργόμενος τῶν πεδίων, εὗρε
 δὲ καὶ τὰ ὑδρεῖα ἐμπεφραγμένα πέτραις ἡλιβάτοις·
 οὕτω γὰρ διετέτακτο Πομπήιος, κατασπᾶν κελεύσας C.561
 τὰ φρούρια καὶ μὴ εἶναι χρήσιμα τοῖς ἀναφεύγειν εἰς
 25 αὐτὰ βουλομένοις λησθηρίων χάριν. ἐκείνος μὲν οὖν
 οὕτω διέταξε τὴν Φαξημωνίτιν, οἱ δ' ὕστερον βασι-
 λεῦσι καὶ ταύτην ἐνεῖμαν.

Ἡ δ' ἡμετέρα πόλις κεῖται μὲν ἐν φάραγγι βαθύᾳ 39
 καὶ μεγάλῃ, δι' ἧς ὁ Ἴρις φέρεται ποταμός, κατεσκευ-
 30 ασται δὲ θαυμαστῶς προνοία τε καὶ φύσει, πόλεως τε
 ἅμα καὶ φρουρίου παρέχεσθαι χρεῖαν δυναμένη· πέ-
 τρα γὰρ ὑψηλὴ καὶ περικύρημνος κατεργασμένη ἐπὶ τὸν

ποταμόν, τῇ μὲν ἔχουσα τὸ τεῖχος ἐπὶ τῷ χεῖλει τοῦ
 ποταμοῦ καθ' ὃ ἡ πόλις συνώνησται, τῇ δ' ἀνατρέχον
 ἐκατέρωθεν ἐπὶ τὰς κορυφάς· δύο δ' εἰσὶ συμφυεῖς
 ἀλλήλαις πεφυρωμέναι παγκάλως· ἐν δὲ τῷ περι-
 βόλῳ τούτῳ βασιλεία τ' ἐστὶ καὶ μνήματα βασιλέων· 5
 αἱ κορυφαὶ δ' ἔχουσιν ἀνέχονα παντάπασιν στενόν, πέντε
 ἢ ἕξ σταδίων ἐκατέρωθεν τὸ ὕψος ἀπὸ τῆς ποταμίας
 ἀναβαίνουντι καὶ τῶν προαστείων· ἀπὸ δὲ τοῦ ἀνέχονος
 ἐπὶ τὰς κορυφάς ἄλλη σταδιαία λείπεται πρόσβασις
 ὀξεῖα καὶ πάσης βίας κρείττων· ἔχει δὲ καὶ ὕδρεϊα ἐν- 10
 τὸς ἀναφαίρετα, συρίγγων τετμημένων δυεῖν, τῆς
 μὲν ἐπὶ τὸν ποταμόν τῆς δ' ἐπὶ τὸν ἀνέχονα· ἐπέξευ-
 νται δὲ γέφυρα τῷ ποταμῷ μία μὲν ἀπὸ τῆς πόλεως
 ἐπὶ τὸ προάστειον, ἄλλη δ' ἀπὸ τοῦ προαστείου πρὸς
 τὴν ἕξω χώραν· κατὰ γὰρ τὴν γέφυραν ταύτην ἀπο- 15
 λήγει τὸ ὄρος τὸ τῆς πέτρας ὑπερκείμενον. αὐτὸν δ'
 ἐστὶν ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ διήκων οὐ πλατὺς τὸ πρῶτον
 τελέως, ἔπειτα πλατύνεται καὶ ποιεῖ τὸ Χιλιόκωμον
 καλούμενον πεδίον· εἰδ' ἡ Διακοπηνὴ καὶ ἡ Πιμω-
 λισηνὴ χώρα πᾶσα εὐδαίμων μέχρι τοῦ Ἄλφους. ταῦτα 20
 μὲν τὰ ἄρκτικὰ μέρη τῆς τῶν Ἀμασέων χώρας, μῆκος
 ὅσον πεντακοσίων σταδίων· ἔπειθ' ἐξῆς ἡ λοιπὴ πολὺ
 ταύτης ἐπιμηκεστέρα μέχρι τοῦ Βαβανόμου καὶ τῆς
 Ξιμήνης, ἥπερ καὶ αὐτὴ καθήκει μέχρι πρὸς τὸν
 Ἄλφον· τοῦτο μὲν δὴ τὸ μῆκος, πλάτος δὲ τὸ ἀπὸ τῶν 25
 ἄρκτων πρὸς νότον ἐπὶ τε τὴν Ζηλῆτιν καὶ τὴν μεγά-
 λην Καππαδοκίαν μέχρι τῶν Τροκμῶν. εἰσὶ δ' ἐν τῇ
 Ξιμήνῃ ἄλαι ὀρυκτῶν ἁλῶν, ἀφ' ὧν εἰκάξουσιν εἰ-
 ρῆσθαι Ἄλφον τὸν ποταμόν. ἔστι δὲ καὶ ἐρύματα πλείω
 κατεσκαμμένα ἐν τῇ ἡμετέρᾳ χώρᾳ καὶ ἔρημος γῆ πολ- 30
 λὴ διὰ τὸν Μιθριδατικὸν πόλεμον. ἔστι μέντοι πᾶσα
 μὲν εὐδενδρος, ἡ δ' ἐπιπόβητος καὶ τοῖς ἄλλοις θρεμ-

μασι προσφορος· ἅπασα δ' οἰκήσιμος καλῶς. ἐδόθη δὲ καὶ ἡ Ἀμάσεια βασιλεῦσι, νῦν δ' ἐπαρχία ἐστὶ.

Λοιπὴ δ' ἐστὶν ἡ ἐκτὸς Ἄλνυος χώρα τῆς Ποντικῆς 40
ἐπαρχίας ἡ περὶ τὸν Ὀλγασσυν, συναφῆς τῇ Σινωπίδι. C. 562
5 ἐστὶ δ' ὁ Ὀλγασσυν ὅρος σφόδρα ὑψηλὸν καὶ δύσβα-
τον· καὶ ἰερὰ τοῦ ὅρους τούτου πανταχοῦ καθιδρυ-
μένα ἔχουσιν οἱ Παφλαγόνες. περικεῖται δ' ἱκανῶς
χώρα ἀγαθὴ ἢ τε Βλαηνὴ καὶ ἡ Δομανῆτις, δι' ἧς
Ἀμνίας ρεῖ ποταμός. ἐνταῦθα Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ
10 τὰς Νικομήδους τοῦ Βιθυνοῦ δυνάμεις ἄρδην ἠφάνι-
σεν, οὐκ αὐτὸς παρατυχὼν ἀλλὰ διὰ τῶν στρατηγῶν·
καὶ ὁ μὲν φεύγων μετ' ὀλίγων εἰς τὴν οἰκείαν ἐσώθη
κἀκεῖθεν εἰς Ἰταλίαν ἐπλευσεν, ὁ δ' ἠκολούθησε καὶ
τὴν τε Βιθυνίαν εἴλεν ἐξ ἐφόδου καὶ τὴν Ἀσίαν κατέ-
15 σχε μέχρ' ἱ Καρίας καὶ Λυκίας. κἀνταῦθα δ' ἀπεδείχθη
πόλις ἡ Πομπηιοῦπολις· ἐν δὲ τῇ πόλει ταύτῃ τὸ σαν-
δαρακουργεῖον οὐ πολὺ ἄπωθεν Πιμωλίσων, φρου-
ρίου βασιλικοῦ κατεσκευασμένου, ἀφ' οὗ ἡ χώρα ἡ ἐκα-
τέρωθεν τοῦ ποταμοῦ καλεῖται Πιμωλισσηνή. τὸ δὲ
20 σανδαρακουργεῖον ὅρος κοῖλόν ἐστιν ἐκ τῆς μεταλλείας,
ὑπεληλυθότων αὐτὸ τῶν ἐργαζομένων διωρῶξι μεγά-
λαις· εἰργάζονται δὲ δημοσιῶναι μεταλλευταῖς χρῶ-
μενοι τοῖς ἀπὸ κακουργίας ἀγοραζομένοις ἀνδραπό-
δοις· πρὸς γὰρ τῷ ἐπιπόνῳ τοῦ ἔργου καὶ θανάσιμον
25 καὶ δύσοιστον εἶναι τὸν ἄερα φασὶ τὸν ἐν τοῖς μετάλ-
λοις διὰ τὴν βαρύτητα τῆς τῶν βάλων ὀδμῆς, ὥστε
ὠκύμορα εἶναι τὰ σώματα. καὶ δὴ καὶ ἐκλείπεσθαι
συμβαίνει πολλάκις τὴν μεταλλείαν διὰ τὸ ἀλυσιτελές,
πλειόνων μὲν ἢ διακοσίων ὄντων τῶν ἐργαζομένων,
30 συνεχῶς δὲ νόσοις καὶ φθοραῖς δαπανωμένων. τοσαῦ-
τα καὶ περὶ τοῦ Πόντου εἰρήσθω.

Μετὰ δὲ τὴν Πομπηιοῦπολιν ἡ λοιπὴ τῆς Παφλα- 41

γονίας ἐστὶ τῆς μεσογαίας μέχρι Βιθυνίας ἰούσι πρὸς
 δύσιν. ταύτης δὲ καίπερ ὀλίγης οὔσης μικρὸν μὲν πρὸ
 ἡμῶν ἦρχον πλείους, νῦν δ' ἔχουσι Ῥωμαῖοι τοῦ γέ-
 νους τῶν βασιλέων ἐκλιπόντος. ὀνομάζουσι δ' οὖν
 τὴν ὁμορον τῇ Βιθυνίᾳ Τιμωνίτιν καὶ τὴν Γεξατόριγος 5
 καὶ Μαρωλίτιν τε καὶ Σανισηνὴν καὶ Ποταμίαν· ἣν
 δέ τις καὶ Κιμιατηνὴ, ἐν ἣ τὰ Κιμίατα, φρούριον ἐρυ-
 μνόν, ὑποκείμενον τῇ τοῦ Ὀλγάσσους ὀρεινῇ, ᾧ χρη-
 σάμενος ὁρμητηγῶ Μιθριδάτης ὁ κτίστης προσαγο-
 ρευθεὶς κατέστη τοῦ Πόντου κύριος, καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ 10
 τὴν διαδοχὴν ἐφύλαξαν μέχρι τοῦ Εὐπάτορος. ὕστα-
 τος δὲ τῆς Παφλαγονίας ἦρξε Δηϊόταρος, Κάστορος
 υἱὸς ὁ προσαγορευθεὶς φιλάδελφος, τὸ Μορξέου βασι-
 λειον ἔχων τὰ Γάγγρα πολισμάτιον ἅμα καὶ φρούριον.

42 Εὐδοξος δ' ὀρυκτοὺς ἰχθυῖς ἐν Παφλαγονίᾳ λέ- 15
 C.563 γων ἐν ξηροῖς τόποις οὐ διορίζει τὸν τόπον, ἐν ὑγροῖς
 δὲ περὶ τὴν Ἀσκανίαν λίμνην φησὶ τὴν ὑπὸ Κίῳ, λέ-
 γων οὐδὲν σαφές.

Ἐπεὶ δὲ καὶ τὴν ὁμορον τῷ Πόντῳ Παφλαγονίαν
 ἐκτιθέμεθα, τοῖς δὲ Παφλαγόσιν ὁμοροῦσιν οἱ Βιθυ- 20
 νοὶ πρὸς δύσιν, πειρασόμεθα καὶ τὰ τούτων ἐπελθεῖν·
 ἔπειτα λαβόντες ἀρχὴν ἄλλην ἔκ τε τούτων καὶ τῶν
 Παφλαγόνων τὰ ἐξῆς τούτων τὰ πρὸς νότον μέχρι τοῦ
 Ταύρου συνυφανοῦμεν τὰ παράλληλα τῷ Πόντῳ καὶ
 τῇ Καππαδοκίᾳ· τοιαύτην γάρ τινα ὑπογράφει τάξιν 25
 καὶ μερισμὸν ἢ τῶν τόπων φύσις.

4 Τὴν δὲ Βιθυνίαν ἀπὸ μὲν τῆς ἀνατολῆς ὀρίζουσι
 Παφλαγόνες τε καὶ Μαριανδυνοὶ καὶ τῶν Ἐπικτήτων
 τινές, ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων ἢ Ποντικῇ θάλαττα ἢ ἀπὸ
 τῶν ἐκβολῶν τοῦ Σαγγαρίου μέχρι τοῦ στόματος τοῦ 30
 κατὰ Βυζάντιον καὶ Χαλκηδόνα, ἀπὸ δὲ δύσεως ἢ Προ-
 ποντίς, πρὸς νότον δ' ἣ τε Μυσία καὶ ἡ ἐπὶ κτητος κα-

λουμένη Φρυγία, ἣ δ' αὐτὴ καὶ Ἑλλησποντιακὴ Φρυγία καλουμένη.

Ταύτης δ' ἐπὶ μὲν τῷ στόματι τοῦ Πόντου Χαλ- 2
κηδὼν ἴδρυνται, Μεγαρέων κτίσμα, καὶ κόμη Χρυσό-
5 πολις καὶ τὸ ἱερὸν τὸ Χαλκηδόνιον, ἔχει δ' ἡ χώρα μι-
κρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης κρήνην * Ἀζαριτίαν, τρέφου-
σαν κροκοδείλους μικρούς· ἐπεὶ ἐκδέχεται τὴν τῶν
Χαλκηδονίων ἡύονα ὁ Ἀστακηνὸς καλούμενος κόλπος,
μέρος αὖν τῆς Προποντίδος, ἐν ᾧ ἡ Νικομήδεια ἐκτι-
10 σται ἐπάνυμος ἐνὸς τῶν Βιθυνικῶν βασιλέων τοῦ
κτίσαντος αὐτήν· πολλοὶ δ' ὁμωνύμως ὠνομάσθησαν,
καθάπερ Πτολεμαῖοι διὰ τὴν τοῦ πρώτου δόξαν. ἦν δ'
ἐν αὐτῷ τῷ κόλπῳ καὶ Ἀστακὸς πόλις, Μεγαρέων κτί-
σμα καὶ Ἀθηναίων καὶ μετὰ ταῦτα Δοιδαλσοῦ, ἀφ'
15 ἧς καὶ ὁ κόλπος ὠνομάσθη· κατεσκάφη δ' ὑπὸ Λυσι-
μάχου· τοὺς δ' οἰκήτορας μετήγαγεν εἰς Νικομήδειαν
ὁ κτίσας αὐτήν.

Τῷ δ' Ἀστακηνῷ κόλπος ἄλλος συνεχῆς ἐστίν, 3
εἰσέχων μᾶλλον πρὸς ἀνίσχοιτα ἥλιον, ἐν ᾧ Προυσιάς
20 ἔστιν ἡ Κίος πρότερον ὠνομασθεῖσα· κατέσκαψε δὲ
τὴν Κίον Φίλιππος, ὁ Δημητρίου μὲν υἱὸς Περσέως
δὲ πατήρ, ἔδωκε δὲ Προυσίᾳ τῷ Ζήλᾳ, συγκатаσκά-
ψαντι καὶ ταύτην καὶ Μύρλειαν ἀστυγείτονα πόλιν,
πλησίον δὲ καὶ Προύσης οὖσαν· ἀναλαβὼν δ' ἐκεῖνος
25 ἐκ τῶν ἐρειπίων αὐτὰς ἐπωνόμασεν ἀφ' ἑαυτοῦ μὲν
Προυσιάδα πόλιν τὴν Κίον, τὴν δὲ Μύρλειαν Ἀπά-
μειαν ἀπὸ τῆς γυναικός. οὗτος δ' ἔστιν ὁ Προυσίας
ὁ καὶ Ἀννίβαν δεξάμενος ἀναχωρήσαντα δεῦρο μετὰ
τὴν Ἀντιόχου ἦτταν, καὶ τῆς ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγίας
30 ἀναστὰς κατὰ συμβάσεις τοῖς Ἀτταλικοῖς, ἦν οἱ μὲν
πρότερον ἐκάλουν μικρὰν Φρυγίαν, ἐκεῖνοι δ' ἐπί-
κτητον ὠνόμασαν· ὑπέρκειται δὲ τῆς Προυσιάδος ὄρος C.564

ὃ καλοῦσιν Ἀργανθώνιον. ἐνταῦθα δὲ μυθεύουσι τὸν Ἵλαν ἕνα τῶν Ἡρακλέους ἐταίρων συμπλεύσαντα ἐπὶ τῆς Ἀργοῦς αὐτῷ ἐξιόντα δὲ ἐπὶ ὑδρείαν ὑπὸ νυμφῶν ἀρπαγῆναι. Κίον δὲ καὶ τοῦτον Ἡρακλέους ἐταίρου καὶ σύμπλουν ἐπανελθόντα ἐκ Κόλχων αὐτόθι κατα- 5 μείναι καὶ κτίσαι τὴν πόλιν ἐπάννυμον αὐτοῦ. καὶ νῦν δ' ἔτι ἐορτὴ τις ἄγεται παρὰ τοῖς Προυσιεῦσιν καὶ ὀρεβασία θιασευόντων καὶ καλούντων Ἵλαν, ὥς ἂν κατὰ ζήτησιν τὴν ἐκείνου πεποιημένων τὴν ἐπὶ τὰς ὕλας ἔξοδον. πολιτευσάμενοι δὲ πρὸς Ῥωμαίους οἱ Πρου- 10 σιεῖς εὐνοικῶς ἐλευθερίας ἔτυχον. οἱ δ' Ἀπαμειῖς ἀποικίαν ἐδέξαντο Ῥωμαίων. Προῦσα δὲ ἐπὶ τῷ Ὀλύμπῳ ἴδρυνται τῷ Μυσίῳ, πόλις εὐνομουμένη, τοῖς τε Φρυγῖν ὁμορος καὶ τοῖς Μυσοῖς, κτίσμα Προυσίου τοῦ πρὸς * Κροῖσον πολεμήσαντος.

15

- 4 Διορίσαι δὲ τοὺς ὄρους χαλεπὸν τοὺς τε Βιθυνῶν καὶ Φρυγῶν καὶ Μυσῶν καὶ ἔτι Δολιόνων τῶν περὶ Κύζικον καὶ Μυγδόνων καὶ Τρώων· καὶ διότι μὲν εἶναι δεῖ ἕκαστον φῦλον χωρὶς ὁμολογεῖται (καὶ ἐπὶ γε τῶν Φρυγῶν καὶ τῶν Μυσῶν καὶ παροιμιάζονται 20 „χωρὶς τὰ Μυσῶν καὶ Φρυγῶν ὀρίσματα“), διορίσαι δὲ χαλεπόν. αἴτιον δὲ τὸ τοὺς ἐπήλυδας βαρβάρους καὶ στρατιώτας ὄντας μὴ βεβαίως κατέχειν τὴν κρατηθεῖσαν, ἀλλὰ πλανήτας εἶναι τὸ πλεόν ἐκβάλλοντας καὶ ἐκβαλλομένους. ἅπαντα δὲ τὰ ἔθνη ταῦτα Θράκιά 25 τις εἰκάξει ἂν διὰ τὸ τὴν περαιάν νέμεσθαι τούτους καὶ διὰ τὸ μὴ πολὺ ἐξαλλάττειν ἀλλήλων ἐκατέρους.
- 5 ὅμως δ' ἐφ' ὅσον εἰκάξειν οἶόν τε, τῆς μὲν Βιθυνίας μέσην ἂν τις θεῖη καὶ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Αἰσήπου τὴν Μυσίαν, ἀπτομένην τῆς θαλάττης καὶ διήκουσαν 30 μέχρι τοῦ Ὀλύμπου σχεδόν [τι] παντός· κύκλῳ δὲ τὴν Ἐπικτητον κειμένην ἐν τῇ μεσογαίᾳ, θαλάττης οὐδα-

μοῦ ἀπομένην διατεινουσαν δὲ μέχρι τῶν ἐφῶν με-
 ρῶν τῆς Ἀσκανίας λίμνης τε καὶ χώρας· ὁμωνύμως
 γὰρ τῇ λίμνῃ καὶ ἡ χώρα ἐλέγετο, καὶ ἦν αὐτῆς τὸ μὲν
 Φρύγιον τὸ δὲ Μύσιον ἀπωτέρω δὲ τῆς Τροίας τὸ Φρύ-
 5 γιον· καὶ δὴ καὶ οὕτω δεκτέον τὸ παρὰ τῷ ποιητῇ ὅταν
 φῇ „Φόρκυς δ' αὖ Φρύγας ἦγε καὶ Ἀσκάνιος θεοειδής,
 „τῆλ' ἐξ Ἀσκανίης,“ τῆς Φρυγιακῆς, ὥς οὔσης ἐγγυ-
 τέρω ἄλλης Ἀσκανίας Μυσιακῆς τῆς πρὸς τῇ νῦν Νι-
 καίᾳ, ἣς μέμνηται ὅταν φῇ „Πάλμυν τ' Ἀσκάνιον τε
 10 „Μόρυν θ', υἱ' Ἰπποτίωνος, Μυσῶν ἀρχεμάχων ἡγή- C.565
 „τορα, οἳ ῥ' ἐξ Ἀσκανίης ἐριβόλακος ἦλθον ἀμοι-
 „βολί.“ οὐ θαυμαστὸν δ' εἰ τῶν Φρυγῶν εἰπῶν τινα
 ἡγεμόνα Ἀσκάνιον καὶ ἐξ Ἀσκανίας ἦκοντα, καὶ Μυ-
 σῶν τινα λέγει ἡγεμόνα Ἀσκάνιον καὶ ἐξ Ἀσκανίας
 15 ἦκοντα· πολλὴ γὰρ ἡ ὁμωνυμία παρ' αὐτῷ καὶ ἡ ἀπὸ
 τῶν ποταμῶν καὶ λιμνῶν καὶ χωρίων ἐπίκλησις.

Καὶ τὸν Αἰσηπον δὲ τῶν Μυσῶν ὄριον παραδί- 6
 δωσιν αὐτὸς ὁ ποιητής· τὴν γὰρ ὑπὲρ τοῦ Ἰλίου πα-
 ρώρειαν τῆς Τροίας καταλέξας τὴν ὑπ' Αἰνείᾳ ἦν Δαρ-
 20 δανίαν ἐκάλεσε, τίθησιν ἐφεξῆς πρὸς ἄρκτον καὶ τὴν
 Αὐκίαν τὴν ὑπὸ Πανδάρῳ ἐν ἣ ἡ Ζέλεια· καὶ φησὶν
 „οἳ δὲ Ζέλειαν ἐναιον ὑπαὶ πόδα νεάτοιν Ἰδης, ἀφνει-
 „οί, πίνοντες ὕδωρ μέλαν Αἰσήποιο Τρῶες.“ τῇ δὲ Ζε-
 λείᾳ ὑποπέπτωκε πρὸς θαλάττῃ ἐπίταδε τοῦ Αἰσήπου
 25 τὸ τῆς Ἀδραστείας πεδίου καὶ Τήρεια καὶ ἡ Πιτύα καὶ
 καθόλου ἡ νῦν Κυζικηνή ἡ πρὸς Πριάπῳ ἦν ἐφεξῆς
 καταλέγει, εἰτα ἀνὰκάμπτει πάλιν ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη
 καὶ τὰ ἐπέκεινα, ὥστε ἐμφαίνει τὴν μέχρι Αἰσήπου πέ-
 ρας ἡγούμενος τῆς Τρωάδος τὸ ἀρκτικὸν καὶ ἐφῶν.
 30 ἀλλὰ μὴν μετὰ γε τὴν Τρωάδα ἡ Μυσία ἐστὶ καὶ ὁ
 Ὀλυμπος.

Ἡ μὲν οὖν παλαιὰ μνήμη τοιαύτην τινὰ ὑπαγο-

ρεύει τὴν τῶν ἐθνῶν θέσιν. αἱ δὲ νῦν μεταβολαὶ τα
πολλὰ ἐξήλλαξαν, ἄλλοι ἄλλων ἐπικρατούντων καὶ
τὰ μὲν συγγενόντων τὰ δὲ διασπώντων. καὶ γὰρ Φρύ-
γες ἐπεκράτησαν καὶ Μυσοὶ μετὰ τὴν Τροίας ἄλωσιν,
εἰδ' ὅστερον Ἀνδοὶ καὶ μετ' ἐκείνων Αἰολεῖς καὶ Ἰω- 5
νες, ἔπειτα Πέρσαι καὶ Μακεδόνες, τελευταῖοι δὲ Ῥω-
μαῖοι, ἐφ' ὧν ἤδη καὶ τὰς διαλέκτους καὶ τὰ ὀνόματα
ἀποβεβλήκασιν οἱ πλείστοι, γεγονότος ἑτέρου τινὸς
μερισμοῦ τῆς χώρας, οὐ μᾶλλον φροντίσαι δεῖ τὰ νῦν
οἷ' ἔστι λέγοντας, τῇ δὲ ἀρχαιολογίᾳ μετρίως προσ- 10
έχοντας.

7 Ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ τῆς Βιθυνίας τό τε Βιθυνίον
ἔστιν ὑπερκείμενον τοῦ Τιτίου καὶ ἔχον τὴν περὶ Σά-
λωνα χώραν ἀρίστην βουβοσίοις, ὅθεν ἔστιν ὁ Σαλω-
νίτης τυρός, καὶ Νίκαια ἡ μητρόπολις τῆς Βιθυνίας 15
ἐπὶ τῇ Ἀσκανίᾳ λίμνῃ (περίκειται δὲ κύκλῳ πεδίου
μέγα καὶ σφόδρα εὐδαίμον, οὐ πάνυ δὲ ὑγρινόν τοῦ
θέρους), κτίσμα Ἀντιγόνου μὲν πρῶτον τοῦ Φιλίπ-
που, ὃς αὐτὴν Ἀντιγόνειαν προσεῖπεν, εἰτα Ἀνσιμά-
χου, ὃς ἀπὸ τῆς γυναικὸς μετωνόμασε Νίκαιαν· ἦν δ' 20
αὕτη θυγάτηρ Ἀντιπάτρου. ἔστι δὲ τῆς πόλεως ἑκκαί-
δεκαστάδιος ὁ περίβολος ἐν τετραγώνῳ σχήματι· ἔστι
δὲ καὶ τετράπυλος ἐν πεδίῳ κείμενος ἐρρυμοτομημένος
C.566 πρὸς ὀρθὰς γωνίας, ὥστ' ἀφ' ἐνὸς λίθου κατὰ μέσον
ἰδρυμένον τὸ γυμνάσιον τὰς τέτταρας ὁρᾶσθαι πύλας. 25
μικρὸν δ' ὑπὲρ τῆς Ἀσκανίας λίμνης Ὀτροία πόλιν ἔχει,
πρὸς τοῖς ὅροις ἤδη τῆς Βιθυνίας τοῖς πρὸς ἑω· εἰκά-
ζουσι δ' ἀπὸ Ὀτρέως Ὀτροίαν καλεῖσθαι * πρῶτερον.

8 Ὅτι δ' ἦν κατοικίῳ Μυσῶν ἡ Βιθυνία πρῶτον
μαρτυρήσει Σκύλαξ ὁ Καρυανδεὺς φήσας περιοικεῖν 30
τὴν Ἀσκανίαν λίμνην Φρύγας καὶ Μυσούς, ἔπειτα
Διονύσιος ὁ τὰς κτίσεις συγγράψας, ὃς τὰ κατὰ Χαλ-

κηδόνα καὶ Βυζάντιον στενά, ἃ νῦν Θράκιος Βόσπορος καλεῖται, πρότερόν φησι Μύσιον Βόσπορον προσαγορεύεσθαι· τοῦτο δ' ἂν τις καὶ τοῦ Θράκας εἶναι τοὺς Μυσοὺς μαρτύριον θεῖη· ὃ τε Εὐφορίων „Μυσοῖο 5 „παρ' ὕδασι ν' Ἀσκανίῳ“ λέγων, καὶ ὁ Αἰτωλὸς Ἀλέξανδρος „οἱ καὶ ἐπ' Ἀσκανίων δώματ' ἔχουσι ῥοῶν „λίμνης Ἀσκανίης ἐπὶ χεῖλεσιν, ἔνθα Δολίων νίδος Σιληνοῦ νάσσατο καὶ Μελῆς,“ τὸ αὐτὸ ἐκμαρτυροῦσιν, οὐδαμοῦ τῆς Ἀσκανίας λίμνης εὐρισκομένης ἀλλ' 10 ἐνταῦθα μόνον.

Ἄνδρες δ' ἀξιόλογοι κατὰ παιδείαν γερόνασιν ἐν 9 τῇ Βιθυνίᾳ Ξενοκράτης τε ὁ φιλόσοφος καὶ Διονύσιος ὁ διαλεκτικὸς καὶ Ἰππαρχος καὶ Θεοδόσιος καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ μαθηματικοὶ Κλεοχάρης τε ῥήτωρ ὃ [τε] 15 Μυρλεανὸς Ἀσκληπιάδης [γραμματικὸς] ἰατρός [τε] ὁ Προυσιεύς.

Πρὸς νότον δ' εἰς τοῖς Βιθυνοῖς οἱ περὶ τὸν 10 Ὀλυμπον Μυσοὶ (οὓς Ὀλυμπηνοὺς καλοῦσιν τινες, οἱ δ' Ἑλλησποντίους) καὶ ἡ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγία, 20 τοῖς δὲ Παφλαγόσι Γαλάται· ἀμφοτέρων τε τούτων ἔτι πρὸς νότον ἡ μεγάλη Φρυγία καὶ Ἀνκαονία μέχρι τοῦ Ταύρου τοῦ Κιλικίου καὶ τοῦ Πισιδικοῦ. ἐπεὶ δὲ τὰ τῇ Παφλαγονίᾳ συνεχῇ παράκειται τῷ Πόντῳ καὶ τῇ Καππαδοκίᾳ καὶ τοῖς ἤδη περιωδευμένοις ἔθνεσιν, 25 οἵκειον ἂν εἶη τὰ τούτοις γειτονοῦντα μέρη προσαποδοῦναι πρῶτον, ἔπειτα τοὺς ἐξῆς τόπους παραδειξαι.

Πρὸς νότον τοίνυν εἰς τοῖς Παφλαγόσι Γαλάται· 3 τούτων δ' ἐστὶν ἔθνη τρία, δύο μὲν τῶν ἡγεμόνων ἐπώνυμα, Τροκμοὶ καὶ Τολιστοβῶγιοι, τὸ τρίτον δ' 30 ἀπὸ τοῦ ἐν Κελτικῇ ἔθνους Τεκτόσαγες. κατέσχον δὲ τὴν χώραν ταύτην οἱ Γαλάται πλανηθέντες πολὺν χρόνον καὶ καταδραμόντες τὴν ὑπὸ τοῖς Ἀτταλικοῖς βασι-

λεῦσι χώραν καὶ τοῖς Βιθυνοῖς, ἕως παρ' ἐκόντων ἑλα-
 βον τὴν νῦν Γαλατίαν καὶ Γαλλογραικίαν λεγομένην.
 ἀρχηγὸς δὲ δοκεῖ μάλιστα τῆς περαιώσεως τῆς εἰς τὴν
 C.567 Ἀσίαν γενέσθαι Λεοννόριος. τριῶν δὲ ὄντων ἔθνων
 ὁμογλώττων καὶ κατ' ἄλλο οὐδὲν ἐξηλλαγμένων, ἕκα- 5
 στον διελόντες εἰς τέτταρας μερίδας τετραρχίαν ἐκά-
 στην ἐκάλεσαν, τετράρχην ἔχουσιν ἴδιον καὶ δικαστὴν
 ἕνα καὶ στρατοφύλακα ἕνα ὑπὸ τῷ τετράρχῃ τεταγμέ-
 νους, ὑποστρατοφύλακας δὲ δύο. ἡ δὲ τῶν δώδεκα
 τετραρχῶν βουλὴ ἄνδρες ἦσαν τριακόσιοι, συνήγοντο 10
 δὲ εἰς τὸν καλούμενον Ἀρυνέμετον. τὰ μὲν οὖν φονικὰ
 ἡ βουλὴ ἔκρινε, τὰ δὲ ἄλλα οἱ τετράρχαι καὶ οἱ δικα-
 σταί. πάλαι μὲν οὖν ἦν τοιαύτη τις ἡ διάταξις, καθ'
 ἡμᾶς δὲ εἰς τρεῖς, εἴτ' εἰς δύο ἡγεμόνας, εἴτα εἰς ἕνα
 ἦκεν ἡ δυναστεία, εἰς Ἀγιόταρον, εἴτα ἐκεῖνον διεδέ- 15
 ξατο Ἀμύντας· νῦν δ' ἔχουσι Ῥωμαῖοι καὶ ταύτην καὶ
 τὴν ὑπὸ τῷ Ἀμύντᾳ γενομένην πᾶσαν εἰς μίαν συνα-
 γαγόντες ἐπαρχίαν.

- 2 Ἐχουσι δὲ οἱ μὲν Τροκμοὶ τὰ πρὸς τῷ Πόντῳ καὶ
 τῇ Καππαδοκίᾳ· ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ κράτιστα ὧν νέμον- 20
 ται Γαλάται· φρούρια δ' αὐτοῖς τετείχισται τρία, Τά-
 σιον, ἐμπόριον τῶν ταύτης, ὅπου ὁ τοῦ Αἰὸς κολοσσὸς
 χαλκοῦς καὶ τέμενος αὐτοῦ ἄστυλον, καὶ Μιθριδάτιον,
 ὃ ἔδωκε Πομπήιος * Βογοδιατάρῳ τῆς Ποντικῆς βασι-
 λείας ἀφορίσας, τρίτον δὲ πῶ Δανάλα, ὅπου τὸν σύλ- 25
 λογον ἐποιήσαντο Πομπηίος τε καὶ Δεύκολλος, ὁ μὲν
 ἦκων ἐπὶ τὴν τοῦ πολέμου διαδοχὴν ὁ δὲ παραδιδούς
 τὴν ἐξουσίαν καὶ ἀπαίρων ἐπὶ τὸν θρόνον. Τροκμοὶ
 μὲν δὴ ταῦτ' ἔχουσι τὰ μέρη, Τεκτόσαργες δὲ τὰ πρὸς
 τῇ μεγάλῃ Φρυγίᾳ τῇ κατὰ Πεσσινοῦντα καὶ Ὀρκαόρ- 30
 κους· τούτων δ' ἦν φρούριον Ἄγκυρα ὁμώνυμος τῇ
 πρὸς Ἀνδία περὶ Βλαῦδον πολίχνῃ Φρυγιακῇ. Τολι-

στοβώγιοι δὲ ὄμοροι Βιθυνοῖς εἰσι καὶ τῇ Ἐπικτήτῳ
καλουμένῃ Φρύγῃ· φρούρια δ' αὐτῶν ἐστὶ τό τε
* Βλούκιον καὶ τὸ Πήιον, ὧν τὸ μὲν ἦν βασιλείον Αἰ-
ιοτάρου, τὸ δὲ γαζοφυλάκιον.

- 5 Πεσσινοῦς δ' ἐστὶν ἐμπόριον τῶν ταύτῃ μέγιστον, 3
ἱερὸν ἔχον τῆς μητρὸς τῶν θεῶν σεβασμοῦ μεγάλου
τυγγάνον· καλοῦσι δ' αὐτὴν Ἀγδιστιν. οἱ δ' ἱερεῖς τὸ
παλαιὸν μὲν δυνάσται τινὲς ἦσαν, ἱερωσύνην καρπού-
μενοι μεγάλην, νυνὶ δὲ τούτων μὲν αἱ τιμαὶ πολὺ με-
10 μείωνται, τὸ δὲ ἐμπόριον συμμένει· κατεσκεύασται
δ' ὑπὸ τῶν Ἀτταλικῶν βασιλέων ἱεροπρεπῶς τὸ τέμε-
νος ναῶ τε καὶ στοαῖς λευκολίθοις· ἐπιφανὲς δ' ἐποίη-
σαν Ῥωμαῖοι τὸ ἱερόν, ἀφίδρυμα ἐνθένδε τῆς θεοῦ με-
ταπεμφάμενοι κατὰ τοὺς τῆς Σιβύλλης χρησμούς, κα-
15 θάπερ καὶ τοῦ Ἀσκληπιοῦ τοῦ ἐν Ἐπιδαύρῳ. ἐστὶ δὲ
καὶ ὄρος ὑπερκείμενον τῆς πόλεως τὸ Δίνδυμον, ἀφ'
οὔ ἢ Δινδυμηνή, καθάπερ ἀπὸ τῶν Κυβέλων ἢ Κυ-
βέλη. πλησίον δὲ καὶ ὁ Σαγγάριος ποταμὸς ποιεῖται
τὴν ῥύσιν· ἐπὶ δὲ τούτῳ τὰ παλαιὰ τῶν Φρυγῶν οἱ-0.568
20 κητήρια Μίδου καὶ ἔτι πρότερον Γορδίου καὶ ἄλλων
τινῶν, οὐδ' ἔχνη σώζοντα πόλεων, ἀλλὰ κῶμαι μικρῶ
μείζους τῶν ἄλλων, οἷόν ἐστι τὸ Γόρδιον καὶ Γορβε-
οῦς, τὸ τοῦ Κάστορος βασιλείον τοῦ Σαωκονδάρου,
ἐν ᾧ γαμβρόν ὄντα τοῦτον ἀπέσφαξε Αἰγιόταρος καὶ
25 τὴν θυγατέρα τὴν ἑαυτοῦ· τὸ δὲ φρούριον κατέσπασε
καὶ διελυμήνατο τὸ πλεῖστον τῆς κατοικίας.

- Μετὰ δὲ τὴν Γαλατίαν πρὸς νότον ἣ τε λίμνη 4
ἐστὶν ἡ Τάττα, παρακειμένη τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ
τῇ κατὰ τοὺς Μοριμηνούς, μέρος δ' οὐσα τῆς μεγάλης
30 Φρυγίας, καὶ ἡ συνεχὴς ταύτῃ μέχρι τοῦ Ταύρου, ἥς
τὴν πλείστην Ἀμύντας εἶχεν. ἡ μὲν οὖν Τάττα ἀλοπή-
γιόν ἐστὶν αὐτοφυές, οὕτω δὲ περιπλήττεται ῥαδίως

τὸ ὕδωρ παντὶ τῷ βαπτισθέντι εἰς αὐτὸ ὥστε στεφάνους ἁλῶν ἀνέλκουσιν, ἐπειδὴν καθῶσι κύκλον σχολῆνινον, τὰ τε ὄρνεα ἀλλίσκεται τὰ προσαψάμενα τῷ πτερώματι τοῦ ὕδατος παραχρηῖμα πίπτοντα διὰ τὴν περιπῆξιν τῶν ἁλῶν. 5

6 Ἡ τε δὴ Τάττα [τοιαύτη] ἐστὶ, καὶ τὰ περὶ Ὀρκαόρκους καὶ Πιτνισσὸν καὶ τὰ τῶν Λυκαόνων ὄροπέδια ψυχρὰ καὶ ψιλὰ καὶ ὀναγρόβοτα, ὑδάτων δὲ σπάνις πολλή· ὅπου δὲ καὶ εὐρεῖν δυνατόν, βαθύτατα φρέατα τῶν πάντων, καθάπερ ἐν Σοάτροις, ὅπου καὶ πύ- 10 πράσκειται τὸ ὕδωρ (ἔστι δὲ κωμόπολις Γαρσαούρων πλησίον)· ὅμως δὲ καίπερ ἄνυδρος οὕσα ἡ χώρα πρόβατα ἐκτρέφει θανυμαστῶς, τραχείας δὲ ἐρέας, καὶ τίνες ἐξ αὐτῶν τούτων μερίστους πλούτους ἐκτήσαντο· Ἀμύντας δ' ὑπὲρ τριακοσίας ἔσχε ποιμένας ἐν τοῖς τό- 15 ποῖς τούτοις. εἰσεὶ δὲ καὶ λίμναι, Κάραλις μὲν ἡ μείζων ἡ δ' ἐλάττω Τρωγίτις. ἐνταῦθα δέ που καὶ τὸ Ἰκόνιον ἔστι, πολίχνιον εὖ συνωκισμένον καὶ χώραν εὐτυχεστέραν ἔχον τῆς λεχθείσης ὀναγροβότου· τοῦτο δ' εἶχε Πολέμων. πλησιάζει δ' ἡδη τούτοις τοῖς τόποις ὁ Ταῦ- 20 ρος ὁ τὴν Καππαδοκίαν ὀρίζων καὶ τὴν Λυκαονίαν πρὸς τοὺς ὑπερκειμένους Κίλικας τοὺς Τραχειώτας. Λυκαόνων τε καὶ Καππαδόκων ὄριόν ἐστι τὸ μεταξὺ Κοροπασσοῦ κώμης Λυκαόνων, καὶ Γαρσαούρων πολίχνιου Καππαδόκων· ἔστι δὲ τὸ μεταξὺ διάστημα τῶν 25 φρουρίων τούτων ἑκατὸν εἴκοσί που στάδιοι.

2 Τῆς δὲ Λυκαονίας ἐστὶ καὶ ἡ Ἰσανρικὴ πρὸς αὐτῷ τῷ Ταύρῳ ἡ τὰ Ἰσανρα ἔχουσα κώμας δύο ὁμωνύμους, τὴν μὲν παλαιὰν καλουμένην, [τὴν δὲ νέαν,] εὐερκῇ· ὑπήκοοι δ' ἦσαν ταύταις καὶ ἄλλαι κῶμαι συχναί, λη- 30 στῶν δ' ἅπασαι κατοικίαι. παρέσχον δὲ καὶ Ῥωμαίοις πράγματα καὶ τῷ Ἰσανρικῷ προσαγορευθέντι Πουβλίῳ

Σερβιλίῳ, ὃν ἡμεῖς εἰδομεν, ὃς καὶ ταῦτα ὑπέταξε Ρω-
μαίοις καὶ τὰ πολλὰ τῶν πειρατῶν ἐρύματα ἐξεῖλε τὰ C. 569
ἐπὶ τῇ θαλάττῃ.

Τῆς δ' Ἰσαυρικῆς ἔστιν ἐν πλευραῖς ἡ Δέρβη, μά- 3
5 λιστα τῇ Καππαδοκίᾳ ἐπιπεφυκὸς τοῦ Ἀντιπάτρου τυ-
ραννεῖον τοῦ Δερβήτου· τοῦ δ' ἦν καὶ τὰ Λάρανδα·
ἐφ' ἡμῶν δὲ καὶ τὰ Ἰσαυρα καὶ τὴν Δέρβην Ἀμύντας
εἶχεν, ἐπιθέμενος τῷ Δερβήτῃ καὶ ἀνελὼν αὐτόν, τὰ δ'
Ἰσαυρα παρὰ τῶν Ρωμαίων λαβὼν· καὶ δὴ βασιλείον
10 ἑαυτῷ κατεσκεύαζεν ἐνταῦθα, τὴν παλαιὰν Ἰσαυραν
ἀνατρέψας. ἐν δὲ τῷ αὐτῷ χωρίῳ καινὸν τεῖχος οἰκο-
δομῶν οὐκ ἔφθη συντελέσας, ἀλλὰ διέφθειραν αὐτὸν
οἱ Κίλικες ἐμβαλόντα εἰς τοὺς Ὀμοναδεῖς καὶ ἐξ ἐνέ-
δρας ληφθέντα.

15 Τὴν γὰρ Ἀντιόχειαν ἔχων τὴν πρὸς τῇ Πισιδίᾳ 4
μέχρι Ἀπολλωνιάδος τῆς πρὸς Ἀπαμείᾳ τῇ Κιβωτῷ καὶ
τῆς παρωρείου τινα καὶ τὴν Λυκαουλίαν ἐπειράτο τοὺς
ἐκ τοῦ Ταύρου κατατρέχοντας Κίλικας καὶ Πισίδας τὴν
χώραν ταύτην Φρυγῶν οὖσαν ἐξαιρεῖν, καὶ πολλὰ χω-
20 ρία ἐξεῖλεν ἀπόρθητα πρότερον ὄντα, ὧν καὶ Κρήμνα·
τὸ δὲ Σανδάλιον οὐδ' ἐνεχείρησε βίᾳ προσάγεσθαι,
μεταξὺ κείμενον τῆς τε Κρήμνης καὶ Σαγαλασσοῦ.

Τὴν μὲν οὖν Κρήμναν ἄποικοι Ρωμαίων ἔχουσιν, 5
ἡ Σαγαλασσὸς δ' ἐστὶν ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι τῶν Ρω-
25 μαίων ὑφ' ᾧ καὶ ἡ Ἀμύντου βασιλεία πᾶσα· διέχει δ'
Ἀπαμείας ἡμέρας ὁδόν, κατὰ βασιν ἔχουσα σχεδόν τι
καὶ τριάκοντα σταδίων ἀπὸ τοῦ ἐρύματος· καλοῦσι δ'
αὐτὴν καὶ Σεληγισόν· ταύτην δὲ τὴν πόλιν καὶ Ἀλέ-
ξανδρος εἶλεν. ὁ δ' οὖν Ἀμύντας τὴν μὲν Κρήμναν
30 εἶλεν, εἰς δὲ τοὺς Ὀμοναδεῖς παρελθὼν, οἱ ἐνομίζοντο

ἀληπιότατοι, καὶ καταστάς ἤδη κύριος τῶν πλείστων χωρίων ἀνελὼν καὶ τὸν τύραννον αὐτῶν ἐξ ἀπάτης ἐλήφθη διὰ τῆς τοῦ τυράννου γυναικός. καὶ τοῦτον μὲν ἐκεῖνοι διέφθειραν, ἐκείνους δὲ Κυρίνιος ἐξεπόρθησε λιμῶ καὶ τετρακισχιλίους ἀνδρας ἐξώγρησε καὶ 5 συνώκισεν εἰς τὰς ἐγγὺς πόλεις, τὴν δὲ χώραν ἀπέλιπεν ἔρημον τῶν ἐν ἀκμῇ. ἔστι δὲ ἐν ὑψηλοῖς τοῦ Ταύρου μέρεσι, κρημνοῖς ἀποτόμοις σφόδρα καὶ τὸ πλεον ἁβάτοις, ἐν μέσῳ κοῖλον καὶ εὐγεων πεδίον εἰς αὐλῶνας πλείους διηρημένον· τοῦτο δὲ γεωργοῦντες ὥκουν 10 ἐν ταῖς ὑπερκειμέναις ὀφρύσιν ἢ σπηλαίοις, τὰ πολλὰ δ' ἐνοπλοὶ ἦσαν καὶ κατέτρεχον τὴν ἀλλοτρίαν ἔχοντες ὄρη τειχίζοντα τὴν χώραν αὐτῶν.

7 Συναφεῖς δ' εἰσὶ τούτοις οἱ τε ἄλλοι Πισιδαι καὶ οἱ Σελγεῖς, οἵπερ εἰσὶν ἀξιολογώτατοι τῶν Πισιδῶν. 15 τὸ μὲν οὖν πλεον αὐτῶν μέρος τὰς ἀκρωρείας τοῦ Ταύρου κατέχει, τινὲς δὲ καὶ ὑπὲρ Σίδης καὶ Ἀσπένδου
 C.570 Παμφυλικῶν πόλεων κατέχουσι γεῶλοφα χωρία ἐλαϊόφυτα πάντα, τὰ δ' ὑπὲρ τούτων ἤδη ὄρεινά, Κατεννεῖς ὄμοροι Σελγεῦσι καὶ Ὀμοναδεῦσι, Σαγαλασσεῖς 20 δ' ἐπὶ τὰ ἐντὸς τὰ πρὸς τῇ Μιλυάδι.

2 Φησὶ δ' Ἀρτεμίδωρος τῶν Πισιδῶν πόλεις εἶναι Σέλγην Σαγαλασσὸν Πετνηλισσὸν Ἀδαδα Τυμβριάδα Κρημναν Πιτνασσὸν Ἀμβλαδα Ἀνάβουρα Σίνδα Ἀρασσὸν Ταρβασσὸν Τερμησσόν· τούτων δ' οἱ μὲν εἰσὶ 25 τελέως ὄρεινοί, οἱ δὲ καὶ μέχρι τῶν ὑπωρείων καθήκοντες ἐφ' ἑκάτερα, ἐπὶ τε τὴν Παμφυλίαν καὶ τὴν Μιλυάδα, Φρυγί καὶ Λυδοῖς καὶ Καρσίν ὄμοροι, πᾶσιν ἐρηνικοῖς ἔθνεσι καίπερ προσβόροισι οὖσιν. οἱ δὲ Πάμφυλοι πολὺ τοῦ Κιλικίου φύλου μετέχοντες οὐ τελέως 30 ἀφείνται τῶν ληστρικῶν ἐργων, οὐδὲ τοὺς ὁμόρους ἐῷσι καθ' ἡσυχίαν ξῆν καίπερ τὰ νότια μέρη τῆς ὑπω-

ρείας τοῦ Ταύρου κατέχοντες. εἰσὶ δὲ τοῖς Φρυξίν ὁμο-
ροι καὶ τῇ Καρίᾳ Τάβαι καὶ Σίνδα καὶ Ἀμβλαδα, ὅθεν
καὶ ὁ Ἀμβλαδεὺς οἶνος ἐκφέρεται πρὸς διαίτας ἰατρι-
κὰς ἐπιτήδεις.

- 5 Τῶν δ' οὖν ὄρεινῶν οὓς εἶπον Πισιδῶν οἱ μὲν ἄλ-
λοι κατὰ τυραννίδας μεμερισμένοι, καθάπερ οἱ Κίλι-
κες, ληστρικῶς ἤσκηνται· φασὶ δ' αὐτοῖς τῶν Λελέ-
γων συγκαταμιχθῆναι τινὰς τὸ παλαιόν, πλάνητας ἀν-
θρώπους, καὶ συμμεῖναι διὰ τὴν ὁμοιοτροπίαν αὐ-
10 τόθι. Σέληγῃ δὲ ἐξ ἀρχῆς μὲν ὑπὸ Λακεδαιμονίων ἐκτί-
σθη πόλις, καὶ ἔτι πρότερον ὑπὸ Κάλχαντος· ὕστε-
ρον δὲ καθ' αὐτὴν ἔμεινεν αὐξηθεῖσα ἐκ τοῦ πολιτεύ-
εσθαι νομίμως, ὥστε καὶ δισμυρίανδρός ποτε εἶναι.
θαυμαστὴ δ' ἐστὶν ἡ φύσις τῶν τόπων· ἐν γὰρ ταῖς
15 ἀκρωρείαις τοῦ Ταύρου χώρα μυριάδας τρέφειν δυνα-
μένη σφόδρα εὐκαρπὸς ἐστίν, ὥστε καὶ ἐλαιόφυτα εἶ-
ναι πολλὰ χωρία καὶ εὐάμπελα, νομάς τε ἀφθόνους
ἀνεῖσθαι παντοδαποῖς βοσκήμασι· κύκλω δ' ὑπέρκειν-
ται δρυμοὶ ποικίλης ὕλης. πλείστος δ' ὁ στύραξ φύεται
20 παρ' αὐτοῖς, δένδρον οὐ μέγα* ὀρθηλόν, ἀφ' οὗ καὶ
τὰ στυράκινα ἀκοντίσματα, εἰκότα τοῖς κρानεῖνοις·
ἐγγίνεται δ' ἐν τοῖς στελέχεσι ξυλοφάγον τι σκώληκος
εἶδος, ὃ μέχρι τῆς ἐπιφανείας διαφαγὸν τὸ ξύλον τὸ
μὲν πρῶτον πιτύροις ἢ πρίσμασιν εἰκότως τι ψῆγμα
25 προχεῖ, καὶ σωρὸς συνίσταται πρὸς τῇ ῥίζῃ, μετὰ δὲ
ταῦτα ἀπολείβεται τις ὑγρασία δεχομένη πῆξιν ῥαδίαν
παραπλησίαν τῇ κόμμει· ταύτης δὲ τὸ μὲν ἐπὶ τὸ ψῆγ-
μα πρὸς τῇ ῥίζῃ κατενεχθὲν ἀναμίγνυται τούτῳ τε
καὶ τῇ γῇ, πλὴν ὅσον ἐπιπολῆς συστὰν διαμένει κα-
30 θαρόν, τὸ δ' ἐν τῇ ἐπιφανείᾳ τοῦ στελέχους καθ' ἣν C.571

ρεῖ πῆττεται, καὶ τοῦτο καθαρὸν· ποιοῦσι δὲ καὶ ἐκ
 τοῦ μὴ καθαροῦ μῆγμα ξυλομιγές τι καὶ γεωμιγές, εὐ-
 ωδέστερον τοῦ καθαροῦ, τῇ δ' ἄλλῃ δυνάμει λειπόμε-
 νον (λανθάνει δὲ τοὺς πολλούς), ᾧ πλείστω χρῶνται
 θυμιάματι οἱ δεισιδαίμονες. ἐπαινεῖται δὲ καὶ ἡ Σελ- 5
 γικὴ ἱοῖς καὶ τὸ ἀπ' αὐτῆς ἄλειμμα. ἔχει δ' ὀλίγας προσ-
 βάσεις [τὰ] περὶ τὴν πόλιν καὶ τὴν χώραν τὴν Σελ-
 γέων, ὁρεινὴν κρημνῶν καὶ χαραδρῶν οὕσαν πλήρη,
 ἃς ποιοῦσιν ἄλλοι τε ποταμοὶ καὶ ὁ Εὐρυμέδων καὶ ὁ
 Κέστρος ἀπὸ τῶν Σελγικῶν ὁρῶν εἰς τὴν Παμφυλίαν 10
 ἐκπίπτοντες θάλατταν· γέφυραι δ' ἐπὶ κείνται ταῖς
 ὁδοῖς. διὰ δὲ τὴν ἐρυμνότητα οὔτε πρότερον οὔθ' ὕστε-
 ρον οὐδ' ἅπαξ οἱ Σελγεῖς ἐπ' ἄλλοις ἐγένοντο, ἀλλὰ
 τὴν μὲν ἄλλην χώραν ἀδεῶς ἐκαρποῦντο, ὑπὲρ δὲ τῆς
 κάτω τῆς τε ἐν τῇ Παμφυλίᾳ καὶ τῆς ἐντὸς τοῦ Ταύρου 15
 διεμάχοντο πρὸς τοὺς βασιλεῖς αἰεὶ· πρὸς δὲ τοὺς Ῥω-
 μαίους ἐπὶ τακτοῖς τισι κατέχον τὴν χώραν· πρὸς Ἀλέ-
 ξανδρον δὲ πρεσβευσάμενοι δέχεσθαι τὰ προστάγματα
 εἶπον κατὰ φιλίαν· νῦν δὲ ὑπήκοοι τελέως γεγόνασι,
 καὶ εἰσιν ἐν τῇ ὑπὸ Ἀμύντᾳ τεταγμένη πρότερον. 20

8 Τοῖς δὲ Βιθυνοῖς ὁμοροῦσι πρὸς νότον, ὥς ἔφην,
 οἱ περὶ τὸν Ὀλυμπον τὸν Μύσιον προσαγορευόμενον
 Μυσοί τε καὶ Φρύγες· ἐκάτερον δὲ τὸ ἔθνος διττόν
 ἐστι. Φρυγία τε γὰρ ἡ μὲν καλεῖται μεγάλη, ἥς ὁ Μί-
 δας ἐβασίλευσε καὶ ἥς μέρος οἱ Γαλάται κατέσχον, ἡ δὲ 25
 μικρὰ ἡ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ καὶ ἡ περὶ τὸν Ὀλυμπον ἡ
 καὶ Ἐπικτήτος λεγομένη. Μυσία τε ὁμοίως ἡ τε Ὀλυμ-
 πηνή συνεχρῆς οὕσα τῇ Βιθυνίᾳ καὶ τῇ Ἐπικτήτῳ, ἣν
 ἔφην Ἀρτεμίδωρος ἀπὸ τῶν πέραν Ἰστρου Μυσῶν ἀπρω-
 κίσθαι, καὶ ἡ περὶ τὸν Κάικον καὶ τὴν Περγαμηνήν 30
 μέχρι Τευθρανίας καὶ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ.

2 Οὕτω δ' ἐνήλλακται ταῦτα ἐν ἀλλήλοις, ὥς πολ-

λάκις λέγομεν, ὥστε καὶ τὴν περὶ Σίπυλον Φρυγίαν
οἱ παλαιοὶ καλοῦσιν, ἄδηλον εἴτε τῆς μεγάλης εἴτε τῆς
μικρᾶς μέρος οὖσαν, ἥ καὶ τὸν Τάνταλον Φρύγα καὶ
τὸν Πέλοπα καὶ τὴν Νιόβην· ὅποτερός δ' ἂν ἔχη, ἥ
5 γε ἐπάλλαξις φανερά. ἡ γὰρ Περγαμηνή καὶ ἡ Ἐλαῖ-
τις, καθ' ἣν ὁ Κάικος ἐκπίπτει, καὶ ἡ μεταξὺ τούτων
Τευθρανία, ἐν ἣ Τεύθρας καὶ ἡ τοῦ Τηλέφου ἐκτρο-
φή, ἀνὰ μέσον ἐστὶ τοῦ τε Ἑλλησπόντου καὶ τῆς περὶ
Σίπυλον καὶ Μαγνησίαν τὴν ὑπ' αὐτῷ χώρας· ὥσθ'
10 ὅπερ ἔφην ἔργον διορίσαι, χωρὶς τὰ Μυσῶν καὶ Φρυ-0.572
γῶν ὁρίσματα.“

Καὶ οἱ Λυδοὶ καὶ οἱ Μαίονες, οὓς Ὅμηρος καλεῖ 3
Μήονας, ἐν συγχύσει πῶς εἰσι καὶ πρὸς τούτους καὶ
πρὸς ἀλλήλους, ὅτι οἱ μὲν τοὺς αὐτοὺς οἱ δ' ἑτέρους
15 φασί· πρὸς δὲ τούτους, ὅτι τοὺς Μυσοὺς οἱ μὲν Θρά-
κας οἱ δὲ Λυδοὺς εἰρήκασιν, κατ' αἰτίαν παλαιὰν ἱστο-
ροῦντες, ἣν Ξάνθος ὁ Λυδὸς γράφει καὶ Μενεκράτης
ὁ Ἐλαίτης, ἐτυμολογοῦντες καὶ τὸ ὄνομα τὸ τῶν Μυ-
σῶν ὅτι τὴν ὀξύην οὕτως ὀνομάζουσιν οἱ Λυδοί· πολλή
20 δ' ἡ ὀξύη κατὰ τὸν Ὀλυμπον, ὅπου ἐκτεθῆναί φασιν
τοὺς δεκατευθέντας, ἐκείνων δὲ ἀπογόνους εἶναι τοὺς
ὑστερον Μυσοὺς, ἀπὸ τῆς ὀξύης οὕτω προσαγορευ-
θέντας· μαρτυρεῖν δὲ καὶ τὴν διάλεκτον· μιξολύδιον
γάρ πως εἶναι καὶ μιξοφρύγιον· τέως μὲν γὰρ οἰκεῖν
25 αὐτοὺς περὶ τὸν Ὀλυμπον, τῶν δὲ Φρυγῶν ἐκ τῆς
Θράκης περαιωθέντων [ἀν]ελόντων τε τῆς Τροίας ἄρ-
χοντα καὶ τῆς πλησίον γῆς, ἐκείνους μὲν ἐνταῦθα οἰ-
κῆσαι τοὺς δὲ Μυσοὺς ὑπὲρ τὰς τοῦ Καΐκου πηγὰς
πλησίον Λυδῶν.

30 Συνεργεῖ δὲ πρὸς τὰς τοιαύτας μυθοποιίας ἡ τε 4

σύγχυσις τῶν ἐνταῦθα ἐθνῶν καὶ ἡ εὐδαιμονία τῆς χώ-
 ρας τῆς ἐντὸς Ἄλφειος, μάλιστα δὲ τῆς παραλίας, δι' ἣν
 ἐπιθέσεις ἐγένοντο αὐτῇ πολλαχόθεν καὶ διὰ παντὸς ἐκ
 τῆς περαίας, ἣ καὶ ἐπ' ἀλλήλους ἰόντων τῶν ἐγγύς.
 μάλιστα μὲν οὖν κατὰ τὰ Τρωικὰ καὶ μετὰ ταῦτα τὰς 5
 ἐφόδους γενέσθαι καὶ τὰς μεταναστάσεις συνέβη, τῶν
 τε βαρβάρων ἅμα καὶ τῶν Ἑλλήνων ὁρμητίνι χρησα-
 μένων πρὸς τὴν τῆς ἀλλοτρίας κατάκτησιν· ἀλλὰ καὶ
 πρὸ τῶν Τρωικῶν ἦν ταῦτα. τό τε γὰρ τῶν Πελασγῶν
 ἦν φύλον καὶ τὸ τῶν Κανκῶνων καὶ Αελέγων· εἰρη- 10
 ται δ' ὅτι πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης τὸ παλαιὸν ἐτύγ-
 χανε πλανώμενα, ἅπερ ποιεῖ τοῖς Τρωσὶ συμμαχοῦντα
 ὁ ποιητής, οὐκ ἐκ τῆς περαίας. τά τε περὶ τῶν Φρυγῶν
 καὶ τῶν Μυσῶν λεγόμενα πρεσβύτερα τῶν Τρωικῶν
 ἔστιν· οἱ δὲ διπτοὶ Λύκιοι τοῦ αὐτοῦ γένους ὑπόνοιαν 15
 παρέχουσιν, ἣ τῶν Τρωικῶν ἢ τῶν πρὸς Καρία τοὺς
 ἐτέρους ἀποικισάντων. τάχα δὲ καὶ ἐπὶ τῶν Κιλικίων
 τὸ αὐτὸ συνέβη· διπτοὶ γὰρ καὶ οὗτοι· οὐ μὲν ἔχομέν
 γε τοιαύτην λαβεῖν μαρτυρίαν ὅτι καὶ πρὸ τῶν Τρωι-
 κῶν ἦσαν ἤδη οἱ νῦν Κίλικες· ὁ τε Τήλεφος ἐκ τῆς 20
 Ἀρκαδίας ἀφίχθαι νομίζοιτ' ἂν μετὰ τῆς μητρὸς, γάμοι
 δὲ τῷ ταύτης ἐξοικειωσάμενος τὸν ὑποδεξάμενον αὐ-
 τὸν Τεύθραντα ἐνομίσθη τε ἐκείνου καὶ παρέλαβε τὴν
 Μυσῶν ἀρχήν.

6 Καὶ οἱ Κᾶρες δὲ νησιῶται πρότερον ὄντες καὶ Λέ- 25
 C.573 λεγες, ὥς φασιν, ἡπειρῶται γεγόνاسι, προσλαβόντων
 Κρητῶν, οἱ καὶ τὴν Μίλητον ἔκτισαν ἐκ τῆς Κρητικῆς
 Μιλήτου Σαρπηδόνα λαβόντες κτίστην· καὶ τοὺς Τερ-
 μίλλας κατώκισαν ἐν τῇ νῦν Λυκίᾳ· τούτους δ' ἀγαγεῖν
 ἐκ Κρήτης ἀποίκους Σαρπηδόνα, Μίνω καὶ Ῥαδαμάν- 30
 θυος ἀδελφὸν ὄντα, καὶ ὀνομάσαι Τερμίλλας τοὺς πρό-
 τερον Μιλύας, ὥς φησιν Ἡρόδοτος, ἔτι δὲ πρότερον

Σολύμους, ἐπελθόντα δὲ τὸν Πανδίωνος Λύκον ἀφ' ἑαυτοῦ προσαγορεύσαι τοὺς αὐτοὺς Λυκίους. οὗτος μὲν οὖν ὁ λόγος ἀποφαίνει τοὺς αὐτοὺς Σολύμους τε καὶ Λυκίους, ὁ δὲ ποιητὴς χωρίζει· Βελλεροφόντης 5 γοῦν ὠρμημένος ἐκ τῆς Λυκίας „Σολύμοισι μαχέσδατο „κνυδαλίμοισι.“ Πείσανδρόν τε ὡσαύτως υἱὸν αὐτοῦ Ἄρης ὧς φησι „μαρνάμενον Σολύμοισι κατέκτανε.“ καὶ τὸν Σαρπηδόνα δὲ ἐπιχωρίον τινα λέγει.

Ἄλλὰ τό γε ἄθλον προκείμενον κοινὸν τὴν ἀρετὴν 6 10 τῆς χώρας ἧς λέγω τοῖς ἰσχύουσιν ἐκ πολλῶν βεβαι- οῦνται [καὶ πρὸ τῶν Τρωικῶν] καὶ μετὰ τὰ Τρωικά· ὅπου καὶ Ἀμαζόνες κατεθάρρησαν αὐτῆς, ἐφ' ἧς ὁ τε Πρίαμος στρατεῦσαι λέγεται καὶ ὁ Βελλεροφόντης· πόλεις τε παλαιαὶ ὁμολογοῦνται ἐπώνυμοι αὐτῶν· ἐν 15 δὲ τῷ Ἰλιακῷ πεδίῳ κολώνη τις ἔστιν „ἦν ἦτοι ἄνδρες „Βατίειαν κικλήσκουσιν, ἀθάνατοι δὲ τε σῆμα πολυ- „σκάρθμοιο Μυρίνης,“ ἣν ἱστοροῦσι μίαν εἶναι τῶν Ἀμαζόνων ἐκ τοῦ ἐπιθέτου τεκμαιρόμενοι· εὐσκάρθ- μους γὰρ ἵππους λέγεσθαι διὰ τὸ τάχος· κἄκείνην οὖν 20 πολὺσκαρθμον διὰ τὸ ἀπὸ τῆς ἡνιοχείας τάχος· καὶ ἡ Μύρινα οὖν ἐπώνυμος ταύτης λέγεται. καὶ αἱ ἐγγυὲς δὲ νῆσοι ταῦτ' ἔπαθον διὰ τὴν ἀρετὴν, ὧν Ῥόδος καὶ Κῶς ὅτι πρὸ τῶν Τρωικῶν ἤδη ὑφ' Ἑλλήνων ᾠκοῦν- το καὶ ὑφ' Ὀμήρου σαφῶς ἐκμαρτυρεῖται.

25 Μετὰ δὲ τὰ Τρωικά αἱ τε τῶν Ἑλλήνων ἀποικίαι 7 καὶ αἱ Τηρηῶν καὶ αἱ Κιμμερίων ἔφοδοι καὶ Λυδῶν καὶ μετὰ ταῦτα Περσῶν καὶ Μακεδόνων τό [τε] τελευταῖον Γαλατῶν ἐτάραξαν πάντα καὶ συνέχεαν. γέγονε δὲ ἡ ἀσάφεια οὐ διὰ τὰς μεταβολὰς μόνον ἀλλὰ καὶ διὰ τὰς 30 τῶν συγγραφέων ἀνομολογίας περὶ τῶν αὐτῶν οὐ τὰ αὐτὰ λεγόντων, τοὺς μὲν Τρωῆας καλούντων Φρύγας καθάπερ οἱ τραγικοί, τοὺς δὲ Λυκίους Κᾶρας καὶ

ἄλλους * οὕτως. οἱ δὲ Τρῶες οὕτως ἐκ μικρῶν ἀνέ-
 0.574 θέντες ὥστε καὶ βασιλεῖς βασιλέων εἶναι, παρέσχον
 καὶ τῷ ποιητῇ λόγον τίνα χρῆ καλεῖν Τροίαν, καὶ τοῖς
 ἐξηγουμένοις ἐκείνον. λέγει μὲν γὰρ καὶ κοινῶς ἅπαν-
 τας Τρῶας τοὺς συμπολεμήσαντας αὐτοῖς, ὥσπερ καὶ 5
 Δαναοὺς καὶ Ἀχαιοὺς τοὺς ἐναντίους· ἀλλ' οὐ δήπου
 Τροίαν καὶ τὴν Παφλαγονίαν ἐροῦμεν· νῆ Δία, οὐδὲ
 τὴν Καρίαν ἢ τὴν Ὀμορον αὐτῇ Λυκίαν. λέγω δ' ὅταν
 οὕτω φῇ „Τρῶες μὲν κλαγγῇ τ' ἐνοπῇ τ' ἴσαν“, ἐκ δὲ
 τῶν ἐναντίων „οἱ δ' ἄρ' ἴσαν σιγῇ μένεα πνεύοντες Ἀχαι- 10
 οί.“ καὶ ἄλλως δὲ λέγει πολλαχῶς. ὅμως δὲ καί περ τοιού-
 των ὄντων πειρατέον διαιτᾶν ἕκαστα εἰς δύναμιν· ὅ-
 τι δ' ἂν διαφύγη τῆς παλαιᾶς ἱστορίας, τοῦτο μὲν ἐα-
 τέον (οὐ γὰρ ἐνταῦθα τὸ τῆς γεωγραφίας ἔργον), τὰ
 δὲ νῦν ὄντα λεκτέον.

15

- 8 Ἔστι τοίνυν ὄρη δύο ὑπερκείμενα τῆς Προποντί-
 δος ὅ τε Ὀλυμπος ὁ Μύσιος καὶ ἡ Ἰδη. τῷ μὲν οὖν
 Ὀλύμπῳ τὰ τῶν Βιθυνῶν ὑποπέπτωκε, τῆς δὲ Ἰδης με-
 ταξὺ καὶ τῆς θαλάττης ἡ Τροία κεῖται συνάπτουσα τῷ
 ὄρει· περὶ μὲν οὖν ταύτης ἐροῦμεν ὕστερον καὶ τῶν 20
 συνεχῶν αὐτῇ πρὸς νότον, νῦν δὲ περὶ τῶν Ὀλυμπη-
 νῶν καὶ τῶν ἐφεξῆς μέχρι τοῦ Ταύρου παραλλήλων
 τοῖς προεφωδευμένοις λέγωμεν. ἔστι τοίνυν ὁ Ὀλυμ-
 πος κύκλῳ μὲν εὖ συνοικούμενος, ἐν δὲ τοῖς ὕψει
 δρυμοὺς ἐξαισίους ἔχων καὶ ληστήρια δυναμένους ἐκ- 25
 τρέφειν τόπους εὐερεῖς, ἐν οἷς καὶ τύραννοι συνί-
 στανται πολλάκις δυνάμενοι συμμεῖναι πολὺν χρόνον,
 καθάπερ Κλέων ὁ καθ' ἡμᾶς τῶν λησθηρίων ἡγεμῶν.
- 9 Οὗτος δ' ἦν μὲν ἐκ Γορδίου κόμης, ἦν ὕστερον
 ἀνέξῃσας ἐποίησε πόλιν καὶ προσηγόρευσεν Ἰουλιόπο- 30
 λιν· λησθηρίῳ δ' ἐχρῆτο καὶ ὀρμητηρίῳ κατ' ἀρχὰς τῷ
 καρτερωτάτῳ τῶν χωρίων ὄνομα Καλλυδίῳ. ὑπῆρξε

δ' Ἀντωνίῳ μὲν χρήσιμος ἐπελθὼν ἐπὶ τοὺς ἀργυρο-
 λογοῦντας Λαβιηνῶ καθ' ὃν χρόνον ἐκεῖνος τὴν Ἀσί-
 αν κατέσχε, καὶ κωλύσας τὰς παρασκευάς· ἐν δὲ τοῖς
 Ἀκτιακοῖς ἀποστάς Ἀντωνίου τοῖς Καίσαρος προσέ-
 5 θετο στρατηγοῖς, καὶ ἐτιμήθη πλέον ἢ κατ' ἀξίαν
 προσλαβὼν τοῖς παρ' Ἀντωνίου δοθεῖσι καὶ τὰ παρα-
 τοῦ Καίσαρος, ὥστ' ἀντὶ ληστοῦ δυνάστου περιέκειτο
 σχῆμα, ἱερεὺς μὲν ὢν τοῦ Ἀβρεττηνοῦ Διός, Μυσίου
 θεοῦ, μέρος δ' ἔχων ὑπήκοον τῆς Μωρηνῆς (Μυσία
 10 δέ ἐστι καὶ αὕτη, καθάπερ ἡ Ἀβρεττηνὴ), λαβὼν δὲ
 ὕστατα καὶ τὴν ἐν τῷ Πόντῳ τῶν Κομάνων ἱερωσύνην,
 εἰς ἣν κατελθὼν ἐντὸς μηνιαίου χρόνου κατέστρεψε
 τὸν βίον· νόσος δ' ἐξήγαγεν αὐτὸν ὀξεῖα, εἰτ' ἄλλως C.575
 ἐπιπεσοῦσα ἐκ τῆς ἁδην πλησμονῆς εἶδ', ὥς ἔφασαν
 15 οἱ περὶ τὸ ἱερόν, κατὰ μῆνιν τῆς θεοῦ· ἐν γὰρ τῷ πέ-
 ριβόλῳ τοῦ τεμένους ἢ οἴκησιν ἐστὶν ἢ τε τοῦ ἱερέως
 καὶ τῆς ἱερείας, τὸ δὲ τέμενος χωρὶς τῆς ἄλλης ἀγιστεί-
 ας διαφανέστατα τῆς τῶν ὑείων κρεῶν βρώσεως κα-
 θαρεύει, ὅπου γε καὶ ἡ ὅλη πόλις, οὐδ' εἰσάγεται εἰς
 20 αὐτὴν ὕς· ὁ δ' ἐν τοῖς πρώτοις τὸ ληστρικὸν ἥθος
 ἐπεδείξατο εὐθύς κατὰ τὴν πρώτην εἴσοδον τῇ παρα-
 βάσει τούτου τοῦ ἔθνους ὥσπερ οὐχ ἱερεὺς εἰσεληλυ-
 θὼς ἀλλὰ διαφθορεὺς τῶν ἱερῶν.

Ὁ μὲν δὴ Ὀλυμπος τοιόσδε, περιρικεῖται δὲ πρὸς 10
 25 ἄρκτον μὲν ὑπὸ τῶν Βιθυνῶν καὶ Μυγδόνων καὶ Δο-
 λίωνων, τὸ δὲ λοιπὸν ἔχουσι Μυσοὶ καὶ Ἐπίκτητοι.
 Δολιόνας μὲν οὖν μάλιστα καλοῦσι τοὺς περὶ Κύζικον
 ἀπὸ Αἰσῆπου ἕως Πυνθάκου καὶ τῆς Δασκυλίτιδος λί-
 μνης, Μυγδόνας δὲ τοὺς ἐφεξῆς τούτοις μέχρι τῆς
 30 Μυρλειανῶν χώρας· ὑπέρκεινται δὲ τῆς Δασκυλίτι-
 δος ἄλλαι δύο λίμναι μεγάλαι ἢ τε Ἀπολλωνιᾶτις ἢ
 τε Μιλητοπολίτις· πρὸς μὲν οὖν τῇ Δασκυλίτιδι Δα-

σκύλιον πόλις, πρὸς δὲ τῇ Μιλητοπολίτιδι Μιλητού-
πολις, πρὸς δὲ τῇ τρίτῃ Ἀπολλωνία ἢ ἐπὶ Πυνδάκῳ
λεγομένη· τὰ πλείστα δὲ τούτων ἐστὶ Κυζικηνῶν νυνί.

- 11 Ἔστι δὲ νῆσος ἐν τῇ Προποντίδι ἢ Κύζικος συν-
πομένη γεφύραις δυσὶ πρὸς τὴν ἡπειρον, ἀρετῇ μὲν 5
κρατίστη μεγέθει δὲ ὅσον πεντακοσίων σταδίων τὴν
περίμετρον· ἔχει δὲ ὁμώνυμον πόλιν πρὸς αὐταῖς ταῖς
γεφύραις καὶ λιμένας δύο κλειστοὺς καὶ νεωσοίκους
πλείους τῶν διακοσίων· τῆς δὲ πόλεως τὸ μὲν ἐστὶν
ἐν ἐπιπέδῳ τὸ δὲ πρὸς ὄρει· καλεῖται δ' Ἀρκτων ὄρος· 10
ὑπέρκειται δ' ἄλλο Δίνδυμον μονοφυές, ἱερὸν ἔχον
τῆς Δινδυμήνης μητρὸς θεῶν, ἰδρυμα τῶν Ἀργοναυ-
τῶν. ἔστι δ' ἐνάμιλλος ταῖς πρώταις τῶν κατὰ τὴν
Ἀσίαν ἢ πόλις μεγέθει τε καὶ κάλλει καὶ εὐνομίᾳ πρὸς
τε εἰρήνην καὶ πόλεμον· ἔοικέ τε τῷ παραπλησίῳ τύ- 15
πῳ κοσμεῖσθαι ὥσπερ ἡ τῶν Ῥοδίων καὶ Μασσαλιω-
τῶν καὶ Καρχηδονίων τῶν πάλοι. τὰ μὲν οὖν πολλὰ
ἔω, τρεῖς δ' ἀρχιτέκτονας τοὺς ἐπιμελουμένους οἰκο-
δομημάτων τε δημοσίων καὶ ὀργάνων, τρεῖς δὲ καὶ
θησαυροὺς κέκτηται, τὸν μὲν ὅπλων τὸν δ' ὀργάνων 20
τὸν δὲ σίτου· ποιεῖ δὲ τὸν σῖτον ἄσηπτον ἢ Χαλκιδικὴ
γῆ μιγνυμένη. ἐπεδείξαντο δὲ τὴν ἐκ τῆς παρασκευῆς
ταύτης ὠφέλειαν ἐν τῷ Μιθριδατικῷ πολέμῳ. ἐπελ-
θόντος γὰρ αὐτοῖς ἀδοκῆτως τοῦ βασιλέως πεντεκαί-
δεκα μυριάσι καὶ ἱππῶ πολλῇ καὶ κατασχόντος τὸ ἀν- 25
τικείμενον ὄρος ὃ καλοῦσιν Ἀδραστείας καὶ τὸ προά-
στειον, ἔπειτα καὶ διάραντος εἰς τὸν ὑπὲρ τῆς πόλεως
C.576 ἀνχένα καὶ προσμαχομένου πεξῇ τε καὶ κατὰ θάλατ-
ταν τετρακοσίαις ναυσίν, ἀντέσχον πρὸς ἅπαντα οἱ
Κυζικηνοί, ὥστε καὶ ἐγγὺς ἦλθον τοῦ ξωγρία λαβεῖν 30
τὸν βασιλέα ἐν τῇ διώρυγι ἀντιδιορύττοντες, ἀλλ'
ἔφθη φυλαξάμενος καὶ ἀναλαβὼν ἑαυτὸν ἔξω τοῦ

ὀρύγματος· ὅψε δὲ ἰσχυσεν εἰσπέμψαι τινὰς νύκτωρ
 ἐπικούρους ὁ τῶν Ῥωμαίων στρατηγὸς Λεύκολλος·
 ὤννησε δὲ καὶ λιμὸς τῷ τοσούτῳ πλήθει τῆς στρατιᾶς
 ἐπιπεσών, ὃν οὐ προείδετο ὁ βασιλεύς, ὥς ἀπῆλθε
 5 πολλοὺς ἀποβαλὼν. Ῥωμαῖοι δ' ἐτίμησαν τὴν πόλιν,
 καὶ ἔστιν ἐλευθέρα μέχρι νῦν καὶ χώραν ἔχει πολλήν
 τὴν μὲν ἐκ παλαιοῦ τὴν δὲ τῶν Ῥωμαίων προσθέντων.
 καὶ γὰρ τῆς Τρωάδος ἔχουσι τὰ πέραν τοῦ Αἰσῆπου τὰ
 περὶ τὴν Ζέλειαν καὶ τὸ τῆς Ἀδραστείας πεδίου· καὶ
 10 τῆς Δασκυλίτιδος λίμνης τὰ μὲν ἔχουσιν ἐκεῖνοι τὰ δὲ
 Βυζάντιοι· πρὸς δὲ τῇ Δολιονίδι καὶ τῇ Μυγδονίδι
 νέμονται πολλὴν μέχρι τῆς Μιλητοπολίτιδος λίμνης
 καὶ τῆς Ἀπολλωνιάτιδος αὐτῆς, δι' ὧν χωρίων καὶ ὁ
 Ῥύνδακος ρεῖ ποταμὸς τὰς ἀρχὰς ἔχων ἐκ τῆς Ἀξανί-
 15 τιδος, προσλαβὼν δὲ καὶ ἐκ τῆς Ἀβρεττηνῆς Μυσίας
 ἄλλους τε καὶ Μέγεστον ἀπ' Ἀγκύρας τῆς Ἀβαετίτιδος
 ἐκδίδωσιν εἰς τὴν Προποντίδα κατὰ Βέσβικον νῆσον.
 ἐν ταύτῃ δὲ τῇ νήσῳ τῶν Κυζικηνῶν ὄρος ἐστὶν εὐ-
 δενδρον Ἀρτάκη· καὶ νησίον ὁμώνυμον πρόκειται
 20 τούτου, καὶ πλησίον ἀκρωτήριον Μέλανος καλούμε-
 νον ἐν παράπλῳ τοῖς εἰς Πρίαπον κομιζομένοις ἐκ τῆς
 Κυζίκου.

Τῆς δ' ἐπικτήτου Φρυγίας Ἀξανοὶ τέ εἰσι καὶ Να- 12
 κολία καὶ Κοτιάειον καὶ Μιδάειον καὶ Δορυλάειον πό-
 25 λεις καὶ Κάδοι· τοὺς δὲ Κάδους ἔνιοι τῆς Μυσίας φα-
 σίν. ἡ δὲ Μυσία κατὰ τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς Ὀλυμ-
 πηνῆς ἐπὶ τὴν Περγαμηνὴν καθήκει καὶ τὸ Καῖκου
 λεγόμενον πεδίου, ὥστε μεταξὺ κείσθαι τῆς τε Ἰδης
 καὶ τῆς Κατακεκαυμένης, ἣν οἱ μὲν Μυσίαν οἱ δὲ
 30 Μαιονίαν φασίν.

Ὑπὲρ δὲ τῆς Ἐπικτήτου πρὸς νότον ἐστὶν ἡ με- 13
 γάλῃ Φρυγία, λείπουσα ἐν ἀριστερᾷ τὴν Πεσσινοῦντα

καὶ τὰ περὶ Ὀρκαόρκους καὶ Λυκαονίαν, ἐν δεξιᾷ δὲ Μαίονας καὶ Λυδοὺς καὶ Κᾶρας· ἐν ἣ ἔστιν ἢ τε παρῳρεῖος λεγομένη Φρυγία καὶ ἢ πρὸς Πισιδίᾳ καὶ τὰ περὶ Ἀμόριον καὶ Εὐμένειαν καὶ Σύνναδα, εἴτα Ἀπάμεια ἢ Κιβωτὸς λεγομένη καὶ Λαοδίκεια, αἵπερ εἰσὶν 5 μέγιστα τῶν κατὰ τὴν Φρυγίαν πόλεων· περικείται δὲ ταύταις πολίσματα καὶ..... Ἀφροδισιάς Κολοσσαί Θεμισώνιον Σαναὸς Μητρόπολις Ἀπολλωνιάς, ἔτι δὲ ἀπωτέρω τούτων Πέλται Τάβαι Εὐκαρπία Λυσιάς.

C.577

10

14

Ἡ μὲν οὖν παρῳρεῖα ὄρεινὴν τινα ἔχει ῥάχιν ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς ἐκτεινομένην ἐπὶ δύοσιν· ταύτῃ δ' ἐκατέρωθεν ὑποπέπτωκέ τι πεδίον μέγα, καὶ πόλεις πλησίον αὐτῆς πρὸς ἄρκτον μὲν Φιλομήλιον, ἐκ θατέρου δὲ μέρους Ἀντιόχεια ἢ πρὸς Πισιδίᾳ καλουμένη, ἣ 15 μὲν ἐν πεδίῳ κειμένη πᾶσα ἢ δ' ἐπὶ λόφον ἔχουσα ἀποικίαν Ῥωμαίων· ταύτην δ' ὥκισαν Μάγνητες· οἱ πρὸς Μαιάνδρῳ. Ῥωμαῖοι δ' ἠλευθέρωσαν τῶν βασιλέων, ἥνίκα τὴν ἄλλην Ἀσίαν Εὐμένει παρέδοσαν τὴν ἐντὸς τοῦ Ταύρου· ἦν δὲ ἐνταῦθα καὶ ἱερωσύνη τις 20 Μηνὸς Ἀρκαίου, πλήθος ἔχουσα ἱεροδούλων καὶ χωρίων ἱερῶν· κατελύθη δὲ μετὰ τὴν Ἀμύντου τελευτήν ὑπὸ τῶν πεμφθέντων ἐπὶ τὴν ἐκείνου κληρονομίαν. Σύνναδα δ' ἔστιν οὐ μεγάλη πόλις· πρόκειται δ' αὐτῆς ἐλαιόφυτον πεδίον ὅσον ἐξήκοντα σταδίων· ἐπέ- 25 κεινα δ' ἔστι Λοκιμία κόμη, καὶ τὸ λατόμιον Συναδικοῦ λίθου (οὕτω μὲν Ῥωμαῖοι καλοῦσιν, οἱ δ' ἐπιχώριοι Λοκιμίτην καὶ Λοκιμαῖον), κατ' ἀρχὰς μὲν μικροὺς βώλους ἐκδιδόντος τοῦ μετάλλου, διὰ δὲ τὴν νυνὶ πολυτέλειαν τῶν Ῥωμαίων κίονες ἐξαιροῦνται 30 μονόλιθοι μεγάλοι, πλησιάζοντες τῷ ἀλαβαστρίτῃ λίθῳ κατὰ τὴν ποικιλίαν, ὥστε καίπερ πολλῆς οὔσης

τῆς ἐπὶ θάλατταν ἀγωγῆς τῶν τηλικούτων φορτίων ὅμως καὶ κίονες καὶ πλάκες εἰς Ῥώμην κομίζονται θανάσται κατὰ τὸ μέγεθος καὶ κάλλος.

- Ἀπάμεια δ' ἐστὶν ἐμπορίον μέγα τῆς ἰδίας λεγο- 15
 5 μένης Ἀσίας, δευτερεῦον μετὰ τὴν Ἐφεσον· αὕτη γὰρ καὶ τῶν ἀπὸ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Ἑλλάδος ὑποδοχείον κοινόν ἐστιν. Ἰδρυται δὲ ἡ Ἀπάμεια ἐπὶ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Μαρσίου ποταμοῦ, καὶ ᾗ διὰ μέσης τῆς πόλεως ὁ ποταμὸς τὰς ἀρχὰς ἀπὸ τῆς πόλεως ἔχων· κατενε-
 10 χθεὶς δ' ἐπὶ τὸ προάστειον σφοδρῶ καὶ καταφερεῖ τῷ ρεύματι συμβάλλει πρὸς τὸν Μαιάνδρον, προσειληφότα καὶ ἄλλον ποταμὸν Ὀργᾶν δι' ὁμαλοῦ φερόμενον πρᾶον καὶ μαλακόν· ἐντεῦθεν δ' ἤδη γενόμενος Μαι-
 15 ἀνδρος τέως μὲν διὰ τῆς Φρυγίας φέρεται, ἔπειτα διο- ρίζει τὴν Καρίαν καὶ τὴν Λυδίαν κατὰ τὸ Μαιάνδρου καλούμενον πεδῖον, σκολιὸς ὢν εἰς ὑπερβολὴν ὥστε ἐξ ἐκείνου τὰς σκολιότητας ἀπάσας μαιάνδρους κα-
 20 λεῖσθαι· τελευτῶν δὲ καὶ τὴν Καρίαν αὐτὴν διαρρεῖ τὴν ὑπὸ τῶν Ἰώνων νῦν κατεχομένην, καὶ μεταξὺ
 20 Μιλήτου καὶ Πριήνης ποιεῖται τὰς ἐκβολὰς. ἄρχεται δὲ ἀπὸ Κελαινῶν, λόφου τινός, ἐν ᾧ πόλις ἦν ὁμά-
 νυμος τῷ λόφῳ· ἐντεῦθεν δ' ἀναστήσας τοὺς ἀνθρώ-
 25 πους ὁ Σωτὴρ Ἀντίοχος εἰς τὴν νῦν Ἀπάμειαν τῆς C.578
 μητρὸς ἐπώνυμον τὴν πόλιν ἐπέδειξεν Ἀπάμας, ἡ
 25 θυγάτηρ μὲν ἦν Ἀρταβάξου δεδομένη δ' ἐτύγχανε
 πρὸς γάμον Σελεύκῳ τῷ Νικάτορι. ἐνταῦθα δὲ μυ-
 θεύεται τὰ περὶ τὸν Ὀλυμπον καὶ τὸν Μαρσίαν καὶ
 τὴν ἔριν ἣν ἤρισεν ὁ Μαρσύας πρὸς Ἀπόλλωνα. ὑπέρ-
 30 κειται δὲ καὶ λίμνη φύουσα κάλαμον τὸν εἰς τὰς γλάτ-
 30 τας τῶν αὐλῶν ἐπιτήδειον, ἐξ ἧς ἀπολείβεισθαι φασὶ
 τὰς πηγὰς ἀμφοτέρως τὴν τε τοῦ Μαρσίου καὶ τὴν
 τοῦ Μαιάνδρου.

- 16 Ἡ δὲ Λαοδίκεια μικρὰ πρότερον οὕσα αὗξησιν
 ἔλαβεν ἐφ' ἡμῶν καὶ τῶν ἡμετέρων πατέρων, καίτοι
 κακωθεῖσα ἐκ πολιορκίας ἐπὶ Μιθριδάτου τοῦ Εὐπά-
 τορος· ἀλλ' ἡ τῆς χώρας ἀρετὴ καὶ τῶν πολιτῶν τινες
 εὐτυχήσαντες μεγάλην ἐποίησαν αὐτὴν, Ἰέρων μὲν 5
 πρότερον, ὃς πλειόνων ἢ δισχιλίων ταλάντων κληρο-
 νομίαν κατέλιπε τῷ δήμῳ πολλοῖς τ' ἀναθήμασιν ἐκό-
 σμησε τὴν πόλιν, Ζήνων δὲ ὁ ῥήτωρ ὕστερον καὶ ὁ
 υἱὸς αὐτοῦ Πολέμων, ὃς καὶ βασιλείας ἡξιώθη διὰ τὰς
 ἀνδραγαθίας ὑπ' Ἀντωνίου μὲν πρότερον ὑπὸ Καί- 10
 σαρος δὲ τοῦ Σεβαστοῦ μετὰ ταῦτα. φέρει δ' ὁ περὶ τὴν
 Λαοδίκειαν τόπος προβάτων ἀρετὰς οὐκ εἰς μαλακό-
 τητα μόνον τῶν ἐρίων, ἥ καὶ τῶν Μιλησίων διαφέ-
 ρει, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν κοραξὴν χροάν, ὥστε καὶ προσ-
 οδεύονται λαμπρῶς ἀπ' αὐτῶν, ὥσπερ καὶ οἱ Κολοσ- 15
 σηνοὶ ἀπὸ τοῦ ὁμωνύμου χρώματος πλησίον οἰκοῦν-
 τες. ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ Κάπρος καὶ ὁ Λύκος συμβάλλει
 τῷ Μαιάνδρῳ ποταμῷ, ποταμὸς εὐμεγέθης, ἀφ' οὗ
 καὶ ἡ πρὸς τῷ Λύκῳ Λαοδίκεια λέγεται. ὑπέρκειται
 δὲ τῆς πόλεως ὄρος Κάδμος, ἐξ οὗ καὶ ὁ Λύκος ῥεῖ καὶ 20
 ἄλλος ὁμώνυμος τῷ ὄρει. τὸ πλεόν δ' οὗτος ὑπὸ γῆς
 ῥυεῖς εἶτ' ἀνακύψας συνέπεσεν εἰς ταὐτὸ τοῖς ἄλλοις
 ποταμοῖς, ἐμφαίνων ἅμα καὶ τὸ πολύτερτον τῆς χώ-
 ρας καὶ τὸ εὖσειστον· εἰ γάρ τις ἄλλη, καὶ ἡ Λαοδί-
 κεια εὖσειστος, καὶ τῆς πλησιοχώρου δὲ Κάρουρα. 25
- 17 Ὅριον δὲ ἐστὶ τῆς Φρυγίας καὶ τῆς Καρίας τὰ Κά-
 ρουρα· κώμη δ' ἐστὶν αὕτη πανδοχεῖα ἔχουσα καὶ ξε-
 στῶν ὑδάτων ἐκβολάς, τὰς μὲν ἐν τῷ ποταμῷ Μαιάν-
 δρῳ τὰς δ' ὑπὲρ τοῦ χεΐλους. καὶ δὴ ποτὲ φασὶ πορ-
 νοβοσκὸν αὐλισθέντα ἐν τοῖς πανδοχείοις σὺν πολλῷ 30
 πλήθει γυναικῶν νύκτωρ γενομένου σεισμοῦ συνα-
 φανισθῆναι πάσαις. σχεδὸν δὲ τι καὶ πᾶσα εὖσειστός


ἔστιν ἡ περὶ τὸν Μαίανδρον χώρα καὶ ὑπόνομος πυροί
 τε καὶ ὕδατι μέχρι τῆς μεσογαίας. διατέτακε γὰρ ἀπὸ 0.579
 τῶν πεδίων ἀρξαμένη πᾶσα ἡ τοιαύτη κατασκευὴ τῆς
 χώρας εἰς τὰ Χαρώνια, τό τε ἐν Ἱερὰπόλει καὶ τὸ ἐν
 5 Ἀχαράκοις τῆς Νυσαΐδος καὶ τὸ περὶ Μαγνησίαν καὶ
 Μυοῦντα· εὐθρυπτός τε γὰρ ἔστιν ἡ γῆ καὶ ψαθυρὰ
 πλήρης τε ἁλμυρίδων καὶ εὐεκπύρωτός ἐστι· τάχα δὲ
 καὶ ὁ Μαίανδρος διὰ τοῦτο σκολιὸς ὅτι πολλὰς μετα-
 πτώσεις λαμβάνει τὸ ῥεῖθρον, καὶ πολλὴν χοῦν κατὰ-
 10 γων ἄλλοι· ἄλλω μέρει τῶν αἰγιαλῶν προστίθῃσι τὸ δὲ
 πρὸς τὸ πέλαγος βιασάμενος ἔξωθῇ. καὶ δὴ καὶ τὴν
 Πριήνην ἐπὶ θαλάττῃ πρότερον οὖσαν μεσόγειον πε-
 ποίηκε τετταράκοντα σταδίων προσχώματι.

Καὶ ἡ Κατακεκαυμένη δέ, ἥπερ ὑπὸ Λυδῶν καὶ 18
 15 Μυσῶν κατέχεται, διὰ τοιαῦτά τινα τῆς προσηγορίας
 τετύχηκε ταύτης· ἥ τε Φιλαδέλφεια, ἡ πρὸς αὐτῇ πό-
 λις, οὐδὲ τοὺς τοίχους ἔχει πιστούς, ἀλλὰ καθ' ἡμέ-
 ραν τρόπον τινὰ σαλεύονται καὶ διίστανται· διατε-
 λούσι δὲ προσέχοντες τοῖς πάθεσι τῆς γῆς καὶ ἀρχιτε-
 20 κτονοῦντες πρὸς αὐτά. καὶ τῶν ἄλλων δὲ πόλεων
 Ἀπάμεια μὲν καὶ πρὸ τῆς Μιθριδάτου στρατείας ἐσεί-
 σθη πολλάκις, καὶ ἔδωκεν ἐπελθὼν ὁ βασιλεὺς ἑκα-
 τὸν τάλαντα εἰς ἐπανόρθωσιν, ὁρῶν ἀνατετραμμένην
 τὴν πόλιν. λέγεται δὲ καὶ ἐπ' Ἀλεξάνδρου παραπλή-
 25 σια συμβῆναι· διόπερ εἰκὸς ἐστὶ καὶ τὸν Ποσειδῶ τι-
 μᾶσθαι παρ' αὐτοῖς καίπερ μεσογαίοις οὖσι, καὶ ἀπὸ
 Κελαινοῦ τοῦ Ποσειδῶνος ἐκ Κελαινοῦς, μιᾶς τῶν
 Δαναίδων, γενομένου κεκληῖσθαι τὴν πόλιν ἐπάνυ-
 μον, ἥ διὰ τῶν λίθων τὴν ἀπὸ τῶν ἐκπυρώσεων με-
 30 λανίαν. καὶ τὰ περὶ Σίπυλον δὲ καὶ τὴν ἀνατροπὴν
 αὐτοῦ μῦθον οὐ δεῖ τίθεσθαι· καὶ γὰρ νῦν τὴν Μα-
 γνησίαν τὴν ὑπ' αὐτῷ κατέβαλον σεισμοί, ἡνίκα καὶ
 Σάρδεις καὶ τῶν ἄλλων τὰς ἐπιφανεστάτας κατὰ πολ-
 λὰ μέρη διελυμήναντο· ἐπηνώρθωσε δ' ὁ ἡγεμὼν χρή-
 35 ματα ἐπιδούς, καθάπερ καὶ πρότερον ἐπὶ τῆς γενο-
 μένης συμφορᾶς Τραλλιανοῖς (ἡνίκα τὸ γυμνάσιον καὶ
 ἄλλα μέρη συνεπέσεν) ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ τούτοις καὶ
 Λαοδικεῦσιν.

- 19 Ἀκούειν δ' ἔστι καὶ τῶν παλαιῶν συγγραφέων οἷά φησιν ὁ τὰ Λύδια συγγράψας Ξάνθος, διηγούμενος οἷαι μεταβολαὶ κατέσχον πολλάκις τὴν χώραν ταύτην, ὧν ἐμνήσθημένον που καὶ ἐν τοῖς πρόσθεν. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ τὸν Τυφῶνα πάθη ἐνταῦθα μυθεύουσι 5 καὶ τοὺς Ἀρίμους, καὶ τὴν Κατακεκαυμένην ταύτην εἶναι φασιν· οὐκ ὀκνοῦσι δὲ καὶ τὰ μεταξὺ Μαιάνδρου καὶ Ἀνδῶν ἅπανθ' ὑπονοεῖν τοιαῦτα καὶ διὰ τὸ C.580 πλῆθος τῶν λιμνῶν καὶ ποταμῶν καὶ τοὺς πολλαχοῦ κευθμῶνας τῆς γῆς. ἡ δὲ μεταξὺ Λαοδικείας καὶ Ἀπα- 10 μείας λίμνη καὶ βορβορώδη καὶ ὑπονόμου τὴν ἀποφορὰν ἔχει πελαγία οὐσα· φασὶ δὲ καὶ δίκας εἶναι τῷ Μαιάνδρῳ μεταφέροντι τὰς χώρας ὅταν περικροσθῶσιν οἱ ἀγκῶνες, ἀλόντος δὲ τὰς ζημίας ἐκ τῶν πορθμικῶν διαλύεσθαι τελῶν. 15
- 20 Μεταξὺ δὲ τῆς Λαοδικείας καὶ τῶν Καρούρων ἱερὸν ἔστι Μηνὸς Κάρου καλούμενον τιμώμενον ἀξιολόγως. συνέστη δὲ καθ' ἡμᾶς διδασκαλεῖον Ἡροφιλείων ἱατρῶν μέγα ὑπὸ Ζεύξιδος, καὶ μετὰ ταῦτα Ἀλεξάνδρου τοῦ Φιλαλήθους, καθάπερ ἐπὶ τῶν πα- 20 τέρων τῶν ἡμετέρων ἐν Σμύρνῃ τὸ τῶν Ἑρασιστρατείων ὑπὸ Ἰκεσίλου· νῦν δὲ οὐχ ὁμοίως ἔτι συμμένει.
- 21 Λέγεται δὲ τινα φῦλα Φρύγια οὐδαμοῦ δεικνύμενα, ὥσπερ οἱ Βερέκυντες. καὶ Ἀλκμᾶν λέγει „Φρύ- 25 „γιον ἠΰλησε μέλος τὸ Κερβήσιον.“ καὶ βόθυνός τις λέγεται Κερβήσιος ἔχων ὀλεθρούς ἀποφοράς· ἀλλ' οὗτός γε δείκνυται, οἱ δ' ἄνθρωποι οὐκέθ' οὕτω λέγονται. Αἰσχύλος δὲ συγγεῖ ἐν τῇ Νιόβῃ· φησὶ γὰρ ἐκείνη μνησθήσεσθαι τῶν περὶ Τάνταλον „οἷς ἐν Ἰδαίῳ „πάγω Διὸς πατρῶου βωμός ἐστι.“ καὶ πάλιν „Σί- 30 „πυλον Ἰδαίαν ἀνὰ χθόνα.“ καὶ ὁ Τάνταλος λέγει „σπείρω δ' ἄρουραν δῶδεχ' ἡμερῶν ὁδόν, Βερέκυντα „χῶρον, ἐνθ' Ἀδραστείας ἔδος Ἴδη τε μνησθμοῖσι καὶ „βρυχήμασι πρόπουσι μήλων, πᾶν δ' ἔρεχθεῖ πέδον.“

Wissenschaftliche Ausgaben griechischer und lateinischer Schriftsteller

im Verlage von

B. G. Teubner  in Leipzig.

Sammlung wissenschaftlicher Commentare
zu griechischen und römischen Schriftstellern.
Sophokles Elektra. Von G. Kaibel. geh. n. M 6.—, in Leinw.
geb. n. M 7.—
Lucret Buch III. Von R. Heinze. geh. n. M 4.—, in Leinw.
geb. n. M 5.—
Aetna. Von S. Sudhaus. geh. n. M 6.—, in Leinw. geb.
n. M 7.—

Kritische und kommentierte Ausgaben.

Neue Erscheinungen 1895—1898.

Commentar zu der Hippo-
erausgegeben von Her-
ichtdruck. 4. n. M 10.—
Ed. II cur. K. Zacher.

"II." I: Iphigenia Taurica. n. M 2.40.
[Lucas.] Acta Apostolorum s. L. ad Theophilum lib. alter. Sec.
formam quae vid. Romanam rec. Fr. Blass. n. M 2.—
[—] Evangelium sec. Lucam s. L. ad Theoph. lib. prior. Sec.
formam quae vid. Romanam rec. Fr. Blass. n. M 4.—
Miscellanea Tironiana. A. d. Ood. Vat. Lat. Reg. Christ. 846
(fol. 99—114) hrsg. v. W. Schmitz. Mit 32 Tafeln in Licht-
druck. 4. In Mappo. n. M 20.—
W. Christ. n. M 14.—
10.
Ilmer. n. M 16.—
v. d. Philol. Gesellsch.
I. n. M 10.—

Unter der Presse und in Vorbereitung befinden sich:
Didascaliae apostolorum Latine redditae fragmenta Veronensia
ed. E. Hauler.
Fabulae Aesopicae edd. Kn811 et Hausrath.
Itineraria Romana edd. O. Cuntz et W. Kubitschek.

Bibliotheca Scriptorum Graecorum et Romanorum Teubneriana.

Neue Erscheinungen.

- et Biese. P. II: Carm. epigr.
n. M. 5.20.
cur. E. Hiller(-O. Crusius).
- n. M. 3.—
Apulei M. ed. v. d. Vliet. n. M. 3.—
Aristoteles. W. Biehl. M. 1.80.
Atheniensium. num. I. XIII. rec. P. Knab. M. 2.70.
Babrii tabulae rec. O. Crusius. Acc. fab. dact. et iamb. rell.
Ignatii al. tetrast. rec. O. F. Müller. Ed. mai. n. M. 8.40.
Ed. min. n. M. 4.—
- n. M. 2.40.
Vol. III. 1. B. Alex. B. Afr.
—, 60. Vol. III. 2. B. Hisp.
- Ciceronis opera ed. O. F. W. Mueller. Pars III. Epistulae.
Vol. I. M. 8.60. (= Nr. 19—22 & M.—, 90, Nr. 23 M.—, 60.)
— Vol. II. M. 4.20. (= No. 24—27 & M. 1.—, No. 28
M.—, 60.)
- VI. VII. jen. M. 5.—
ed. A. Ludwig.
- n. M. 4.—
Firmicus Maternus edd. W. Kroll et F. Skutsch. Fasc. I. n. M. 4.—
Gemini elementa astronomiae rec. Manitius. n. M. 8.—
Heronis Alexandrini opera. Vol. I. Pneumatica. Automata ed.
W. Schmidt. [U. d. Pr.]
- Vol. VI. (Schluss.) n. M. 4.—
opersunt ed. Bremer. P. I.
- n. M. 5.—
Lactantius Placidus: s. Statius. Vol. III.
Lydi, Laurentii, I. de ostentis et Calendaria Graeca omnia ed. O.
Wachsmuth. Ed. II. n. M. 6.—
Musci scriptores Graeci rec. O. Ianus. n. M. 9.—
Mythographi Graeci. Vol. III. Fasc. I. Pseudo-Eratosthenis
—, Ieri. n. M. 1.20.
—, Iani, opus agriculturae rec. J. O.
—, graeco, latine, syriace, coptica,
H. Gelzer, H. Hilgenfeld,
- O. Cuntz. n. M. 6.—
- P. Papinius. n. M. 4.—



RECEIVED.

cat.
M.O. 26/5/78
2

"A book that is shut is but a block"

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY

GOVT. OF INDIA
Department of Archaeology
NEW DELHI.

Please help us to keep the book
clean and moving.